# भूमिका

इस खण्डमे जिस अवधि (२५ अप्रैलसे ३० सितम्वर, १९३५)की सामग्री दी जा रही है उसके दौरान राजनीतिक क्षेत्रमे कोई विशेष सरगरमी नही रही। केन्द्रीय विधान-समामे कांग्रेस सरकारी कार्रवाइयोके प्रति राष्ट्रका विरोध प्रकट करने के लिए जो-कुछ कर रही थी, उसके सिवाय कोई सार्वजनिक प्रवृत्ति नही दिखाई दे रही थी। जवाहरलाल नेहरू जेलमे थे, और "सरकारकी ओरसे ऐसी हठधर्मी पहले कभी" नही की गई थी जैसी उन दिनों "देखने मे आ रही" थी (पृ० २२)। *सविनय अवज्ञाका स्थगन भी इस वातका एक कारण था कि* "सर्वत्र निराशा-ही-निराशा छा गई" थी (पृ० ९४)। लेकिन गाधीजी की जोरदार अपीलके परिणामस्वरूप सरकारने जर्मनीकी एक आरोग्यशालामे रोग-शय्यापर पड़ी अपनी पत्नी कमला नेहरूसे मिलने के लिए जवाहरलाल नेहरूको ३ सितम्वरको विना शर्त रिहा कर दिया। सरकारके इस सद्भावनापूर्ण कार्यको कृतज्ञताके भावसे स्वीकार करते हुए अगाथा हैरिसनके नाम अपने पत्रमे गांधीजी ने लिखा कि जवाहर-लालकी रिहाई "अन्धकार और अवसादके वीच . . . एक प्रकाश-विन्दुके समान चमक रही है" (पृ० ४६२)। स्वय गांधीजी उस चतुर्दिक अवसादसे अछूते रहकर ग्राम-सेवामे निमग्न थे। उनकी ऐसी श्रद्धा थी कि "अगर हमारे मनमें सच्चा प्रेम अर्थात् अहिंसा है तो सव ठीक ही होगा" (पृ० २२)। वे मात्र राजनीतिक धरातलपर सरकारसे लडने से अधिक महत्त्व आन्तरिक शक्तिके विकासको देते थे। इसलिए जव "पूरा रचनात्मक कार्यक्रम" लोगोके "सामने पडा हुआ" था, तव वे निराश और किंकर्त्तव्यविमूढ क्यो हो, यह वात उनकी समझमे नही आती थी (पृ० ९४)। यह कार्य "इतने अधिक श्रमकी अपेक्षा" रखनेवाला और "इतना दुष्कर" था कि अगर गाधीजी का वस चलता तो वे "सभी किस्मका लिखना वन्द करके, अपने-आपको किसी एक गाँवमे खपा" देते "और अपनी सामर्थ्य-भर वही काम" करते रहते (पृ० ३९७)। विगत कई महीनोसे "ग्रामोद्योग संघका" यह "कार्य सुनिश्चित ढंगसे चल रहा" था, लेकिन "उसके सम्वन्धमे वताने को कोई वहुत वडी वात" नही थी (पृ० ९१)। इसके लिए ऐसे समर्पित कार्यकर्त्ताओंकी आवश्यकता थी, जो वाधाओको देखकर भागे नही, इतना ही नही, वल्कि दृढताके साथ उनका सामना करे। किन्तु गाधीजी को दिखाई यह दे रहा था कि "हम सवमें क्षात्रवृत्तिकी अत्यधिक कमी है। हमारे मनमे तुरन्त कायरता आ जाती है" (४६८)।

ग्राम-सेवकोके लिए गाधीजी ने जो एक विशेष कठिन शर्त रखी वह यह थी कि उन्हे गाँवोमे अपना पसीना वहाकर अपनी रोटी कमानी चाहिए। "गाँवोकी

ओर जाने का अर्थ" गाधीजी की दृष्टिमे यह था कि "शरीर-श्रमके धर्मको, उसके सारे फलितार्थोंके साथ, स्वीकार कर लिया जाये।" उनका विश्वास था कि "शरीर-श्रमके नियमपर चलने से" "अस्तित्वके निमित्त सघर्षके स्थानपर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा" और "पाशविक नियम" के स्थानपर "मानवी नियम" की प्रतिष्ठा होगी और इस तरह "समाजमे एक शान्तिमय क्रान्ति पैदा होगी" (पृ० २२६)। एक ग्राम-सेवकने गाधीजी के सामने अपनी परेशानी रखते हुए बताया था कि "अपनी रोटी शरीर-श्रमसे कमाने" के नियमका पालन करने के फलस्वरूप स्वयसेवकोके पास ग्रामवासियोकी अन्य उपयोगी सेवा करने का समय ही नही बच पाता। इसका उत्तर देते हुए उन्होने लिखा कि "बुद्धिपूर्वक किया गया श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारकी सेवा है। कारण यह है कि यदि कोई मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी उपयोगी सम्पत्तिमे वृद्धि करता है तो उससे उत्तम और हो ही क्या सकता है?" उन्होने इस सिद्धान्तके मर्मको आगे समझाते हुए बताया कि "'होना' . . . ही 'करना' है।" "सदा सन्मार्गपर चलकर" सेवक अपनी "सेवाकी सुगन्ध" आसपास फैलायेगे और "वह सक्रामक सिद्ध होगी। कालान्तरमे यह सेवा-भावना समस्त भारतमें और फिर अखिल विश्वमे व्याप्त हो जायेगी।' इसलिए "इस सेवामे एकके कल्याणमे सबका कल्याण निहित है।" व्यावहारिक दृष्टिकोणसे भी गाधीजी ने समाधानोन्मेषी कार्यकर्त्ताको आश्वस्त किया कि "ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेगे, तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमे वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेगे, और हरिजन-सेवा तथा किसी दूसरे काममें वे अपनी शक्तिको बिना किसी बाधाके लगा सकेंगे" (पृ० १३५-३६)।

जब अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघका कार्यक्रम गति पकडने लगा तब गाधीजी के सामने हर वर्गके ग्रामीण कारीगरके लिए मानक मजदूरी तय करने की समस्या आ खड़ी हुई। वर्षोंसे वे इस बातको एक आदर्शकी तरह लोगोके सामने रखते आये थे कि हर प्रकारके श्रमको समान रूपसे मूल्यवान मानना चाहिए और उसका पारिश्रमिक भी तदनुसार दिया जाना चाहिए। इसलिए उन्होने आग्रहपूर्वक कहा कि "अब वह समय आ गया है जब सघको उसकी देख-रेखमें किये जानेवाले सभी प्रकारके श्रमके पारिश्रमिकको . . . एक-सा . . . बना . . . देना चाहिए" (पृ० २५१)। उनका विचार था कि "अखिल भारतीय चरखा सघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोपकारी संस्थाओके लिए इस व्यापारिक नियमका अनुसरण करना ठीक नही है कि सबसे सस्ता खरीदें और सबसे सस्ता बेचें।" क्योकि ग्रामोद्योग सघका उद्देश्य यह नही था कि "गाँवकी चीजे सस्तेसे-सस्तेमे तैयार की जाये", बल्कि यह था कि "जीने के लिए काफी मजदूरीपर बेकार ग्रामवासियोको काम दिया जाये।" सघ जो करना चाहता था वह था "झूठे और मानव-कल्याणका खयाल न करनेवाले अर्थशास्त्रके स्थान पर सच्चे और मानव-हित का खयाल करनेवाले अर्थशास्त्र" का प्रतिष्ठापन। और गाधीजी का कहना था कि यदि हर कारीगरको निर्वाह-योग्य मजदूरी देना "अव्याव-

हारिक दिखाई देता हो तो सबका प्रयत्न उसे व्यावहारिक बनाने का होना चाहिए।" इसे व्यावहारिक नहीं बनाया जा सकता हो, यह मानने को गाधीजी तैयार नही थे, क्योकि यह एक सत्य था और "सत्य सदा व्यावहारिक होता है।" आवश्यकता सिर्फ इस बातकी थी कि ग्राहकोको सही स्थिति समझाकर अनुकूल लोकमत तैयार किया जाये (पृ० २६९-७०)। इस प्रस्तावको व्यावहारिक बनाने के लिए सबसे जरूरी कार्यकर्त्ताओके अन्दर इस बोधका उदय होना था कि "वे अधभूखी अवस्थामे" रहनेवाले "या ठीक भोजन न पानेवाले कारीगरो और मजदूरोके एक विशाल परिवारके ही मामूली सदस्य है" (पृ० ३०८)। गाधीजी ने खरीदारोसे भी यह याद रखने का अनुरोध किया कि "वे उस महान् ट्रस्ट", अर्थात् अखिल भारतीय चरखा संघ, "के सदस्य है, भले ही उनका नाम कागजपर दर्ज न हो।" उन्होने उनसे सदा इस सत्यको ध्यानमे रखने को कहा कि "कत्तिनोंका हर तरहसे खयाल रखना उनका धर्म है" (पृ० ३४९)। ग्रामोद्योग कार्यक्रमकी सार्थकताके प्रति शकालु और बडे पैमानेके औद्योगीकरणके हिमायती एक समाजवादी मित्रको उत्तर देते हुए उन्होने अपना वह चिर-परिचित वाक्य दुहराया कि "हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोमे फैले हुए ग्रामीण जन-रूपी करोड़ो जीवित यन्त्रोके विरुद्ध इन जड यन्त्रोको प्रतिद्वन्द्वितामे नही लाना चाहिए" (पृ० ४४९)। वे यन्त्र-मात्रके विरोधी कदापि नही थे। उनका कहना था कि "मनुष्य-मात्रके लाभके लिए विज्ञानके जो आविष्कार है, उन सबको मै अत्यन्त मूल्यवान समझता हूँ।" सच तो यह है कि "सार्वजनिक उपयोगके जो काम मनुष्यके हाथकी मेहनतसे नही हो सकते उनके लिए भारी मशीनोके उपयोग" पर भी उन्हे कोई आपत्ति नही थी, बशर्ते कि उन मशीनोपर "आधिपत्य सरकारका" हो और "उनका उपयोग केवल लोक-कल्याणके लिए" किया जाये (पृ० २००)।

गांधीजी को इस बातकी बडी चिन्ता थी कि जब भारत स्वतन्त्र हो तब उसके पास अपनी एक सम्पर्क-भाषा हो—ऐसी सम्पर्क-भाषा जो जनसाधारण तथा विशिष्ट वर्गोके बीच भेदकी दीवार न खडी करे। इसलिए उन्होने अन्तर्प्रान्तीय व्यवहारकी भाषाके रूपमे उत्तरके आम लोगो द्वारा बोली जानेवाली हिन्दीकी हिमायत की। २०-२३ अप्रैलको इन्दौरमे सम्पन्न अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन (खण्ड ६०)के बाद सम्पर्क-भाषाकी समस्या एक ज्वलन्त प्रश्न बन गई। अधिवेशन ने, गांधीजी के शब्दोमे, "दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव" पास किये थे। इनमे से एक मे हिन्दीकी ऐसी व्यापक परिभाषा की गई थी जिससे उसमे वह भाषा भी शामिल हो जाती थी "जो लिखी तो उर्दू लिपिमे जाती है, पर जिसे मुसलमान और हिन्दू दोनो ही समझ लेते है।" इस प्रस्तावमे यह तथ्य निर्दशित कराया गया था कि "हिन्दी प्रान्तीय भाषाओको नष्ट नही करना चाहती, बल्कि उनकी पूरक बनना चाहती है" (पृ० ३३)।

धर्मान्तरण-जैसी किसी भी चीजको असम्भव मानते हुए उन्होने स्पष्ट शब्दोमें घोषणा की, "जिस प्रकार मै खुद अपना धर्म बदलने की कल्पना नही कर सकता,

उसी प्रकार किसी ईसाई या यहूदीसे अपना धर्म बदलने को कहने की सोच भी नही सकता। . . .अपने आचरणको अपनी श्रद्धाकी ऊँचाई तक ले जाने मे [ही] मेरी सामर्थ्यकी कसौटी हो रही है . . ." (पृ० ४९४)। स्वदेशी और स्वधर्म के सामान्य सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखते हुए गाधीजी को यही प्रतीत होता था कि हर व्यक्तिका धर्म उसके लिए "काफी अच्छा" है (पृ० ४९३)। इसलिए उन्हे श्रेयस्कर मार्ग यह लगता था कि "बडी-बडी और समृद्ध ईसाई धर्मप्रचारक सस्थाएँ . . . अपनी प्रवृत्तियाँ केवल मानव-दयासे प्रेरित सेवा-कार्य तक ही सीमित" रखें और "भारतको या कमसे-कम भारतके भोले-भाले ग्रामीण लोगोको ईसाई बना लेने" के प्रच्छन्न उद्देश्यको त्याग दे, अन्यथा "वे उसके . . . सामाजिक ढाँचेको ध्वस्त कर देंगे . . ." (पृ० ४९४)।

गाधीजी की बोरसद-यात्रा समापनपर थी कि तभी क्वेटामे भारी भूकम्प हुआ। जैसा व्यापक और भयकर विनाश हुआ उसे "देखकर मानव-बुद्धि स्तम्भित रह" गई। पलक झपकते पचास हजार लोग जीते-जी जमीदोज हो गये। इस दारुण विपत्तिकी वेलामे भी गाधीजी क्वेटा-वासियोको सहायता और सान्त्वना देने उस तरह वहाँ नही पहुँच सकते थे जिस तरह १९३४ के भूकम्पके बाद बिहार-वासियोकी पुकारपर पहुँचे थे, क्योकि सरदार पटेल और गाधीजी-जैसे लोगोको क्वेटामें प्रवेश करने की अनुमति नही थी। किन्तु गाधीजी यह मानते थे कि कुछ ऐसे भी अवसर होते हैं जब व्यवहारत. सहायता पहुँचाना न पर्याप्त होता है और न सम्भव, जब भयकर विनाश और विध्वस हमें हमारी स्थितिका स्मरण कराते है, हमें प्रार्थनामे प्रवृत्त होने और विनम्र बनने की प्रेरणा देते है तथा आत्म-शुद्धि एव आत्म-निरीक्षणके लिए तत्पर करते है (पृ० १४८)। उनका विश्वास था कि भौतिक विपत्तियाँ व्यक्तियो तथा राष्ट्रो दोनोके लिए दैवी दण्ड-रूप होती है, और "समझदार मनुष्य" को "विनम्र होकर भगवान्का स्मरण करने" की प्रेरणा देती है (पृ० १७२)। किन्तु इसका मतलब यह नही कि ऐसे समयमे प्रार्थना और प्रभु-स्मरण ही मनुष्यके कर्त्तव्यकी इति है। सच तो यह है कि "सच्ची प्रार्थनासे अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नही होती। उससे तो निरन्तर निष्काम कर्म करने के लिए शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न होता है" (पृ० १७२)। लेकिन साथ ही वे यह स्वीकार करते थे कि "जिस प्रयत्नके पीछे ईश्वरका आशीर्वाद न हो, वह कितना ही अच्छा क्यो न हो, निष्फल होता है" (पृ० १४८)।

सेवा-कार्यकी ही तरह, अपने आदर्शोके आचरणमे भी गांधीजी मानव-प्रयत्नोकी मर्यादासे अवगत थे। उन्हे यह मानने मे कोई सकोच नही था कि "साँप, बिच्छू, बाघ और प्लेगके चूहो तथा पिस्सुओसे" उन्हे डर लगता था। किन्तु इसीलिए वे अपने अहिंसाके उच्चादर्शका त्याग करनेवाले नही थे, क्योकि "जीवन एक उच्चाकाक्षा है। उसका ध्येय पूर्णता अर्थात् आत्म-साक्षात्कारके लिए प्रयत्न करना है। अपनी निर्बलताओ या अपूर्णताओके कारण हमे अपना आदर्श नीचा नही करना

चाहिए।" इसलिए एक ओर तो उन्होने महामारी-ग्रस्त बोरसदमे चूहो और पिस्सुओके विनाशकी अनुमति ही नही, इस कार्यको बढावा भी दिया, लेकिन दूसरी ओर पूर्ण अहिंसा और जीव-मात्रकी अनघ्यता तथा बन्धुत्वमे भी अपनी आस्था दुहराई। श्रद्धा और आचरण के बीच इस विरोधको स्वीकार करते हुए, उन्होनें विनाशके क्षेत्रको सीमित करने और जीवन तथा प्रेमकी परिधिको विस्तृत करने का प्रयत्न किया। उन्हे असफलता भी अवश्य मिलती रही, किन्तु इसकी चिन्ता उन्हे नही थी, क्योकि उनकी "प्रत्येक असफलता" उन्हे "उस सिद्धान्तके पूर्ण आचरणके अधिकसे-अधिक समीप ले जाती थी" (पृ० २०४)।

अपने आदर्शमे न कोई शिथिलता आने देने और न उसका त्याग करने के संकल्पके कारण ही गांधीजी अपने पुत्र हरिलाल गांधीको हृदयसे अपना नही सके और न उनकी पुनर्विवाहकी इच्छाका अनुमोदन कर सके। हरिलाल काफी भटकने के बाद अगस्त १९३४मे गाधीजी के पास लौट आये थे और उन्होने अपनेको सुधारने की भी आशा दिलाई थी। किन्तु अब वे पुनर्विवाह करना चाहते थे, जिस पर गाधीजी की प्रतिक्रिया इन शब्दोमे व्यक्त हुई, "मुझे लगता है कि ऐसा नही हो सकता है कि वह विवाह करके मेरे साथ रहे। उसका विवाह मै सहन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसका स्वागत नही कर सकता, उसे पसन्द नही कर सकता" (पृ० ३९)। और जब आगे उन्हे यह भी लगने लगा कि हरिलालने दरअसल अपनेमे कोई सुधार नही किया है तो उन्होने नारणदास गाधीको स्पष्ट शब्दोमे लिखा, "रक्त-सम्बन्ध . . . हमे अनीतिकी ओर प्रवृत्त करे, यह नही होने देना चाहिए। . . जहाँ जितना अधिक रक्त-सम्बन्ध हो वहाँ सख्ती भी उतनी ही अधिक बरती जानी चाहिए। ऐसा करके ही हम शुद्ध न्याय कर सकते है" (पृ० २२१)। इस प्रकार पिता-पुत्रके अचिर पुनर्मिलनका दु:खद अन्त हुआ। हरिलालकी भटकन एक बार फिर शुरू हो गई, लेकिन जो कोमल भावनाएँ और हर्षकी अनुभूतियाँ पिताके रूपमे गाधीजी के अन्दर वर्ष-भर पूर्व जाग्रत हुई थी उन्हे उन्होने पूर्णत. दमित कर दिया और नारणदास गाधीको लिखा, "उसका जो होना होगा सो होगा" (पृ० २६२)।

अपनोकी चूकोके प्रति गाधीजी के असहिष्णु रुखका परिचय हरिलाल गाधीके पुत्र कान्तिलाल गाधीको लिखे इन शब्दोमे भी मिलता है, "कडवे शब्दोके पीछे प्रेम भरा था, यह तू नही देख सका तो यह दोष तेरा है या मेरा? अहिसाका पुजारी होने के नाते मुझे दोष अपना मानना पड़ता है, किन्तु पिता होने के नाते तेरा मानता हूँ" (पृ० ३७)। इस प्रकार अपने आदर्शकी अहिंसाका आचरण गाधीजी के लिए एक सतत सघर्ष था। एक प्रश्नकर्त्ताको उन्होने निस्सकोच बताया, "यह बात तो नही है कि क्रोध नही आता। बात यह है कि मै क्रोधको प्रकट नही होने देता। धैर्यके गुणका मै अक्रोधके रूपमे अभ्यास करता रहता हूँ, और साधारणतया उसमे मुझे सफलता भी मिली है" (पृ० ४७)। जान पड़ता है, सार्वजनिक जीवनमे गांधीजी ने धैर्यके गुणको पूर्णत सिद्ध कर लिया था, क्योकि

सम्भवत. अपने अनुभवके आधारपर ही उन्होने प्रोफेसर मलकानीको निम्न सुझाव दिया होगा, "तुमको जब-तब अनेक मालिकोसे मिलनेवाली निराशा और झिड़कियोके बीच भी अपनी शान्ति कायम रखनी होगी और विनोदशीलता बनाये रखनी पडेगी। . . . फटकारे सुननी-सहनी पड़ेगी और उसपर भी कहना पड़ेगा : 'धन्यवाद, श्रीमान्!'" (पृ० ३५३)।

इस खण्डसे सम्बन्धित अवधिमे गांधीजी ने जो एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया वह उनके पूर्ण ब्रह्मचर्यके आदर्शके विषयमें था। भारतीय परम्परामे पत्नीके अतिरिक्त किसी भी स्त्रीके साथ पुरुषका सम्पर्क आपत्तिजनक माना जाता रहा है। किन्तु गाधीजी "ऐसे ब्रह्मचर्यमे विश्वास नही" करते थे "जिसके निर्वाहके लिए स्त्रीका पुरुषके स्पर्शसे और पुरुषका स्त्रीके स्पर्शसे बराबर बचते रहना आवश्यक हो।" इसलिए आश्रमकी वयस्क लड़कियोंके कन्धोपर हाथ रखकर घूमने में उन्हे कोई दोष दिखाई नही देता था। किन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि आश्रमका "एक तेजस्वी छात्र एकान्तमें एक लड़कीके साथ", जो उसके प्रभावमे थी, "तरह-तरहका अमर्यादित व्यवहार करता" था तब वे विचारमे पड गये, और अन्तमें उन्होने अपनी इस आदतको छोड़ दिया, क्योकि अपने आचरणके समर्थनके लिए कोई इस चीजका एक बहानेकी तरह दुरुपयोग भी कर सकता था। अपने इस निर्णयका स्पष्टीकरण देते हुए गाधीजी ने लिखा, "मेरे हर कामपर हजारो स्त्री-पुरुषोकी निगाह लगी रहती है, क्योकि मै एक ऐसा प्रयोग कर रहा हूँ जिसके लिए लगातार चौकसी रखना जरूरी है। मुझे ऐसा काम करने से बचना चाहिए जिसका औचित्य सिद्ध करने के लिए दलील देने की जरूरत पड़े" (पृ० ४३७)। इस विषयको लेकर आगे गाधीजी के मनमें काफी ऊहापोह चलता रहा।

गाधीजी का ज्ञान और कर्मका समन्वय इतना अधिक मौलिक था कि "या तो यह सही है या वह"—इस प्रकारकी विभेदकारी बुद्धिकी पकडमे वह आता ही नही था। जगत्में फैले पापकी समस्याकी चर्चाके दौरान गांधीजी को निरुत्तर करने को सचेष्ट एक वेदान्तीको उन्होने "ग्रामीणका"-सा उत्तर देते हुए कहा, "जगत्मे प्रकाश है तो अन्धकार भी है। इसी तरह जहाँ पुण्य है, वहाँ पाप होगा ही।" किन्तु पाप और पुण्य-जैसे भेद तो मनुष्यकी सीमित बुद्धि करती है। "ईश्वरके आगे तो पाप और पुण्य-जैसी कोई चीज ही नही है।" वेदान्तकी यह व्याख्या भी कि "जगत् मायारूप है . . ." गाधीजी के अनुसार, "अपूर्ण मानवकी तोतली वाणीमें ही किया गया निरूपण है।" वे ऐसी बातोमे पड़ते ही नही थे। उनका कहना था, "मै तो, मेरे आगे जो कर्त्तव्य है, उसे करके ही सन्तोष मानता हूँ। जो-कुछ है या रहा है, वह क्यो और कैसे, इन सब प्रश्नोकी चिन्तामे मैं क्यों पड़ूँ?" मनकी ऐसी वृत्तिका आधार उनकी यह श्रद्धा थी कि "मनुष्य जो-कुछ अच्छा काम करता है, उसमे ईश्वर निरन्तर उसके साथ रहता है।" अपनी मनोवृत्तिकी इस व्याख्याको भी गाधीजी ने "ग्रामवासीका ही निरूपण" बताया (पृ० ४२३-२४)। और यह श्रद्धा कहाँसे प्राप्त होती है? गांधीजी ने इसका समाधान करते हुए लिखा, "श्रद्धा बुद्धिकी पकड़में आनेवाली चीज नही है, वह मन स्थिति है जिसतक हमे उठना, विकास करना होता है। और यह विकास अन्तरसे प्रस्फुटित होता है" (पृ० ३१)।

# आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओ, व्यक्तियो, पुस्तकोके प्रकाशको तथा पत्र-पत्रिकाओके आभारी है :

सस्थाएँ. साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास एव सग्रहालय (साबरमती आश्रम प्रिजर्वेशन ऐण्ड मेमोरियल ट्रस्ट), नवजीवन न्यास तथा गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद, भारत कला-भवन, वाराणसी, आन्ध्र प्रदेश सरकार; उत्तर प्रदेश सरकार, गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

व्यक्ति : राजकुमारी अमृतकौर, शिमला; श्री आनन्द टी० हिंगोरानी, इलाहाबाद; श्रीमती एफ० मेरी बार, श्री एल० आर० डूचा, हैदराबाद, श्रीमती एस० अम्बुजम्माल, मद्रास, श्री क० मा० मुशी, बम्बई, श्री कान्तिलाल गाधी, बम्बई; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता, श्री जयरामदास दौलतराम, नई दिल्ली, श्री जी० एन० कानिटकर, पूना, श्री जी० सीताराम शास्त्री, गुटूर; श्रीमती तहमीना खम्भाता, बम्बई, श्री नारणदास गाधी, राजकोट, श्री नारायण देसाई, वाराणसी, श्री नारायण जेठालाल सम्पत, अहमदाबाद; श्री परशुराम मेहरोत्रा, नई दिल्ली, श्री परीक्षितलाल ल० मजमूदार, अहमदाबाद; श्री पुरुषोत्तम एल० बाविशी, ग्वालियर, श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली; श्री प्रभुदास गाधी, राजकोट; श्रीमती प्रेमाबहन कटक, सासवड़, श्री बनारसीलाल बजाज, वाराणसी, श्री भगवानजी ए० मेहता, राजकोट, श्री भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या, वर्धा, श्रीमती मनुबहन मशरूवाला, बम्बई; श्री महेश पट्टणी, बम्बई, श्रीमती मीराबहन, आस्ट्रिया; डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, पटना; श्री रामनारायण एन० पाठक, अहमदाबाद; श्री रामस्वामी अय्यगार, श्री लालचन्द जे० वोरा, श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई, श्रीमती वनमाला देसाई, नई दिल्ली, श्रीमती वसुमती पण्डित, सूरत, श्री वालजी गो० देसाई, पूना, श्रीमती विजयाबहन पचोली, सनोसरा, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, बम्बई, श्री शिवाभाई जी० पटेल, बोचासण; श्री श्रीपाद दा० सातवलेकर, पार्डी तथा श्रीमती सुशीला गाधी, बम्बई।

पत्र-पत्रिकाएँ 'अमृतबाजार पत्रिका', 'गुजराती', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'लीडर', 'वीणा' (श्रद्धाजलि अक), 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु', 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू'।

पुस्तकें . 'गांधी ऐण्ड द अमेरिकन सीन', 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद', 'बापुना पत्रो – २ . सरदार वल्लभभाईने', 'बापुना पत्रो – ४ . मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो – ६ . गं० स्व० गंगाबहेनने', 'बापुनी प्रसादी', 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष १९३२-४८', 'बापूज लेटर्स टु मीरा' एवं 'महात्मा गांधी और जबलपुर'।

अनुसन्धान व सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओंके लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इण्डियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग (रिसर्च ऐण्ड रेफरेंस डिवीजन), राष्ट्रीय अभिलेखागार और प्यारेलाल, नई दिल्ली, हमारे धन्यवादके पात्र हैं। प्रलेखोंकी फोटो-नकल तैयार करने में मदद देने के लिए हम सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग (नई दिल्ली)के आभारी हैं।

# पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमे गांधीजी के स्वाक्षरोमे मिली है, उसे अविकल रूपमे दिया गया है। किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमे हिज्जोकी स्पष्ट भूलोको सुधारकर दिया गया है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करने मे अनुवादको मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। छापेकी स्पष्ट भूले सुधारने के बाद अनुवाद किया गया है, और मूलमे शब्दोके सक्षिप्त रूप यथासम्भव पूरे करके दिये गये है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारण मे संशय था उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजी ने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठको मे दी गई सामग्री सम्पादकीय है। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अश मूल रूपमे उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमे छापा गया है, लेकिन यदि कोई ऐसा अंश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइप मे छापा गया है। भाषणकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषण और भेट की रिपोर्टोके उन अंशोमे, जो गांधीजी के नही है, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि जहाँ उपलब्ध है वहाँ दाये कोनेमे ऊपर दे दी गई है। परन्तु जहाँ वह उपलब्ध नही है वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे चौकोर कोष्ठकोमे की गई है, और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ, वहाँ प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

इस ग्रंथमालामे प्रकाशित प्रथम खडका जहाँ-जहाँ उल्लेख किया गया है वह जून १९७० का सस्करण है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' संकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोका, 'एम० एम० यू०' मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिटका; 'एस० जी०' सेवाग्राममे सुरक्षित सामग्रीका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा सगृहीत पत्रोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये है। अन्तमे साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

# विषय-सूची

## १. पत्र : रा० रं० दिवाकरको

२५ अप्रैल, १९३५

हाँ, यदि हम अहिंसाकी कला सीखना चाहते हैं, तो हमें कड़ेसे-कड़े आदेशोंको[1] भी मानना पड़ेगा। और इसीलिए हमें प्रफुल्लित मन और विवेकशीलताके साथ उनको मानना पड़ेगा।

[अंग्रेजीसे]
महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य: नारायण देसाई

## २. पत्र : अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२५ अप्रैल, १९३५

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा पत्र मिला। 'हरिजन'की अतिरिक्त प्रतियाँ तुम्हें भेज दी जायेंगी। लन्दनके दक्षिण-पूर्वमें हुई सभाका तुम्हारा वर्णन मनोरंजक है।

मुझसे तुम दूसरी आत्मकथा लिखनेकी उम्मीद मत रखो; हाँ काफी लम्बे अर्सेके लिए मुझे जेल भिजवा दो और वहाँ बैठकर उसे लिखनेकी आवश्यक अनुमति भी दिला दो तो दूसरी बात है। सामग्रीका संकलन तथा प्रकाशन अवश्य ही किया जा सकता है। महादेव इस कामको सबसे अच्छी तरह कर सकता है। लेकिन उसपर कामका बोझ बहुत अधिक है। फिर भी मैं देखूँगा कि क्या-कुछ करना सम्भव है।

उम्मीद है कि एन्ड्रचूज अपनी बहनोंके पास पहुँच गये होंगे। हाँ, यह अच्छा ही है कि वे वहाँ दो सप्ताहके लिए रुकनेकी सोचते थे। उनके तारके अनुसार, वे इस पत्रके तुम्हारे पास पहुँचनेके पहले ही रवाना हो चुके होंगे। अगर वही हो, तो उनसे कह देना कि वे चाहें तो कुछ समय और वहाँ रुक सकते हैं। फिलहाल मैंने अपने-आपको खुलेमें जीवन बितानेके लिए राजी कर लिया है।

मीरा सुबहसे लेकर शामको काफी देरतक बगीचेके काममें ही खोई रहती है। अभी कुछ समयतक उससे पत्रकी अपेक्षा मत रखना। देख ही रही हो कि हम ग्रामवासी बननेकी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अभी इस लक्ष्यसे बहुत दूर हैं। हम सबके बीच वही एक ऐसी है जो जिस कामको भी लेती है, उसमें प्राणपणसे जुट जाती है।

१. जिलाधीशके आदेशसे अकोला-जिलेमें उनका प्रवेश वर्जित कर दिया गया था।

[पुनश्च :]

पत्र लौटा रहा हूँ।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३०) से; सौजन्य. अमृतकौर। जी० एन० ६३३९ से भी

## ५. पत्र : नारणदास गांधीको

२६ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ मैथ्यूका पत्र है। मैंने उसे लिखा है कि उसे फिलहाल तो ६५ रुपयेकी आशा न रखनी चाहिए। मैंने जितना कहा है उससे ज्यादा नही दिया जा सकता। और अभी तो उसे यहाँ आकर मजदूरकी तरह ही काम करना होगा। उसमे वह योग्य सिद्ध हुआ और परिस्थितियाँ अनुकूल हुई तो विचार किया जायेगा। यह भी कहा है कि यदि यहाँ उसका कोई पैसा बाकी हुआ तो वह उसे भेज दिया जायेगा अन्यथा रेल-भाड़ेका पैसा भी उसे वहीसे जुटाना होगा।

एक लाख रुपयेका इनाम किसीको दिया नही गया, किन्तु हम जैसा चाहते है वैसा चरखा मिला तो यह इनाम दिया जा सकता है। निर्णयकी नकल अभी मेरे पास नही आई। उसमे मुख्य मुद्दे तीन है इसे 'हैंडी' नही कहा जा सकता। 'हैंडी' तो उसे ही कह सकते है जो इतना छोटा हो कि गाँवके घरोमें आसानीसे बैठाया जा सके, और जिसे रोज उठाकर यहाँ-वहाँ रखा जा सके। फिर, यह ऐसा है कि १५० रुपयेमें नही बन सकता और यह सवाल भी है कि क्या समय-समयपर उसकी मरम्मत करनी होगी? और क्या मरम्मत करवानेका खर्च प्रतिवर्ष उसकी कीमतके ५ प्रतिशतसे भी अधिक होगा? विनोबा और काकासाहबने इस [यन्त्र]के खिलाफ विशेष आपत्तियाँ उठाई हैं उनकी नकल मैं इसके साथ भेज रहा हूँ। यदि केशू[1] उन दोषोको दूर कर सके तो करे। कालेका यन्त्र मेरे पास नही है। वह अहमदाबाद भेजा गया था। मैंने उसे वापस मँगवाया है। लेकिन शायद वापस नही आयेगा और इसलिए मै उसे नही देख पाऊँगा। केशू वहाँ रहकर अपना प्रयोग करता रहे, यह अच्छा है। तुम्हारे ही पास रहे। प्रयोगोंमे होनेवाले खर्चकी सीमा बाँध ले। यदि वह मेरे पास आना चाहता हो तो अवश्य आ जाये। किन्तु मैं उसे ज्यादा न बता सकूँगा और न इस काममें उसका कोई मार्गदर्शन कर सकूँगा। इस प्रयोगके बारेमे कहनेके लिए और कुछ नही रह जाता। उसका प्रयोग एक लाखके इनामके योग्य न हो तो भी वह जिन सुधारो की खोज करेगा वे तो हमारे लिए उपयोगी होगे ही।

१. केशव गांधी, मगनलाल गांधीके पुत्र।

पूनियाँ बनानेका यन्त्र भी यदि सुसम्पूर्ण हो गया हो तो यह भी बहुत अच्छी बात है। इस यन्त्रमें उसने कहाँतक प्रगति की है, इसका वर्णन वह मुझे विस्तारसे लिख भेजे। इस विषयपर मुझे जो कहना था वह सब मैंने यही कह दिया है इस-लिए अब मैं उसे अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ।

शालाके विषयमे अब तुम्हें जो भी व्यवस्था करनी हो सो करना। यदि शाला हमारे कामके लिए उपयोगी टेक्निकल इंस्टीट्यूट बन जाये तो यह उत्तम होगा। भाषाका ज्ञान भिन्न दृष्टिकोणसे दिया जाना चाहिए। अभी वह साहित्यकी दृष्टिसे दिया जाता है। हम तो यह शिक्षा भाषा सिखानेकी हदतक ही दे। भाषाओमे गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी ही रखे। इनके साथ यदि सरल सस्कृत भी रख दी जाये तो पर्याप्त है। उर्दू लिपि सिखानी चाहिए। ये सब विषय आसान ढग से सिखाये जाने चाहिए। विद्यार्थियोको उद्योगका शिक्षण देते हुए इतना किया जा सकता है। और उद्योग ऐसा होना चाहिए कि जिनसे बालक अर्थोपाजन कर सके। फीस न रखी जाये। फीसके बजाय बालक जो उद्योग करे वही उनकी फीस मानी जाये। एक निश्चत सीमाके बाद अपने उद्योग से वे जो-कुछ उत्पादन करे वह विद्यार्थियोका माना जाना चाहिए। फीसमें सब खर्चोका समावेश होना चाहिए।

ये सारे परिवर्तन तुम बिना किसी आडम्बरके या घोषणाके धीरे-धीरे कर सकते हो। सम्भव हो तो शिक्षक और कार्यकर्त्ता वही ढूंढ निकालो। कोई ज्यादा वेतन लेनेवाला न हो। कुसुम,[1] लीलावती[2] आदि जो भी लोग सीखकर तैयार हो गये है वे ही तुम्हारे कार्यकर्त्ता है। केशू इसमें यदि तुम्हारी मदद करे तो क्या कहना! इस सुझावपर विचार करना। मेरे साथ और विचार-विमर्श करना हो तो करना।

टाइटसके[3] कामके निरीक्षणकी बात जल्दी निपटा देना।

[पुनश्च :]

बापूके आशीर्वाद

इसके साथ यन्त्र-चरखाके विषयमे विनोबाकी राय भेज रहा हूँ। रघुनाथ शास्त्री को लिख रहा हूँ।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८४३९ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. कुसुम गांधी।

२. लीलावती आसर।

३. आश्रम दुग्धशालाके प्रबन्धक, टी० टाइटस।

इस अत्यन्त नाजुक प्रश्नके सम्बन्धमें, बहुत दिन हुए, युवक-सघके मन्त्री ने मुझे लिखा था। उनका पत्र आनेपर मैंने डॉ० गोपीचन्दके[1] साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। और उनसे यह मालूम हुआ कि सघके मन्त्रीने जो बातें अपने पत्रमें लिखी है वे सब सच्ची हैं। लेकिन मुझे यह स्पष्ट नही सूझ रहा था कि इस प्रश्नकी 'हरिजन' या किसी दूसरे पत्रमें चर्चा करूँ या नही। इस दुराचारका मुझे पता था, मगर मुझे इस बातका विश्वास नही था कि अखबारोमें इसकी चर्चा करनेसे कोई लाभ हो सकेगा या नही। विश्वास अब भी नही है। किन्तु कॉलिजके प्रिंसिपल साहबने जो प्रार्थना की है उसकी मैं अवहेलना नही करना चाहता।

यह दुराचार नया नही है। यह बहुत दूर-दूर तक फैला हुआ है। चूंकि उसे गुप्त रखा जाता है, इसलिए वह आसानीसे पकडमे नही आ सकता। जहाँ विलासपूर्ण जीवन होगा वहाँ यह दुराचार होगा। प्रिंसिपल साहबके बताये हुए किस्सेसे तो यह प्रकट होता है कि अध्यापक ही अपने विद्यार्थियोको भ्रष्ट करनेके दोषी हैं। बाड जब खुद ही खेतको चर जाये तो फिर रखवालीकी आशा किससे करे? बाइबिलमें कहा है कि नमक जब खुद अलोना हो जाये तब कौन-सी चीज उसे नमकीन बना सकती है?

यह प्रश्न ऐसा है कि इसे न तो कोई जाँच-कमेटी हल कर सकती है, न सरकार ही। यह तो एक नैतिक सुधारका काम है। माता-पिताओके दिलमे अपने उत्तरदायित्वका भाव पैदा करना चाहिए। विद्यार्थियोको शुद्ध-स्वच्छ रहन-सहनके घनिष्ठ सम्पर्कमें लाना चाहिए। सदाचार और निर्विकार जीवन ही सच्ची शिक्षाका आधार-स्तम्भ है, इस विचारका गम्भीरताके साथ प्रचार करना चाहिए। शिक्षण-संस्थाओंके न्यासियोको अध्यापकोंके चुनावमे बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए, और अध्यापकोको चुननेके बाद भी उनके आचरणका ध्यान रखा जाना चाहिए। मैंने तो थोडे-से उपाय बतलाये। इन उपायोके सहारे यह भयकर दुराचार निर्मूल न हो तो कमसे-कम काबूमें तो आ ही सकता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-४-१९३५

१. डॉ० गोपीचन्द भार्गव, पंजाबके कांग्रेसी नेता और बादमें मंत्री।

## ९. पत्र : जी० वी० गुरजलेको

वर्धा
२७ अप्रैल, १९३५

प्रिय गुरजले,[1]

अपनी पत्नीसे कुछ गोपनीय मत रखो। भली-भाँति समझ लो कि उसके प्रति वफादारी रखना ही तुम्हारा सबसे अचूक कवच है। तुम अवश्य विजयी होगे।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३८१) से।

## १०. पत्र : जमनालाल बजाजको

२७ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

कमलनयन[2] यहाँसे इलाहाबादकी ओर रवाना हुआ है। मैंने . . .[3]को लिखा है कि अगर वह यहाँ आ जाये तो अच्छा हो। सम्बन्ध जुड़नेके पहले मैं उससे मिल लूँ। रामकृष्ण[4] मेरे साथ इन्दौर आया था। वहाँ उसे दो-तीन दिनके लिए गुलाबने रोक लिया है। उज्जैन और आसपासके अन्य स्थान देख लेगा। आज उन दोनोंको आना चाहिए।

प्रभावतीके[5] नाम व्रजकिशोर बाबूका[6] पत्र है। उन्होंने लिखा है कि जब वे कहें तब विहार जायें। इसलिए सम्भव है, छुट्टीके दिनोंके अलावा भी जाना पड़ जाये। प्रभावतीने लिखा दिया है कि जब वे बुलायेंगे तब जानेके लिए तैयार रहेगी।

चौधरी यहाँ आया है। [7]और तुम्हारे बीच क्या बात हुई, मुझे पता नहीं है। उसके तथा वालुंजकरके कहनेसे मैं समझा हूँ कि उसकी पत्नीको सूतिका-गृहका काम करनेके लिए तुम उसे सौ रुपये देनेको तैयार हो। इस सम्बन्धमें तुम्हारे साथ मेरी बात हुई हो, ऐसा याद नहीं है। चौधरीने मुझसे कहा था, यह याद है।

१. भिक्षु निर्मलानंदके नामसे भी जाने जाते हैं।
२ और ४. जमनालाल बजाजके पुत्र।
३. नाम नहीं दिया जा रहा है।
५. जयप्रकाश नारायणकी पत्नी।
६. प्रभावतीके पिता।
७. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

अथवा जैसे मैंने कहा ज्यादा चीज थी वह छोड़ जाना था। न भगवानजी को आना था न किशोरप्रसादको। दोनो काममे थे लेकिन दोनो सामान उठानेके लिये गये। किशोरप्रसादके नाम खत थां सो तो अलग बात है। तुमारे दुखी होनेका तनिक भी कारण नही था। शिक्षा पानेका था। जब भी पाये हो तो यह हादसा भले ही हुआ। मेरा खत चला गया है।[1]

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमारा खत वापिस जाता है।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १५६-५७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

## १४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

[२८ अप्रैल, १९३५ के पूर्व][2]

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। उसे पढकर टाइटसको तार किया है कि तुरन्त तुम्हें चार्ज सौंपे, तथा नारणदासके आनेतक वहाँ रुके, और उसके बाद यहाँ आये।

मैंने उन्हे पत्र भी लिखा है। तुम्हे उसकी प्रामाणिकताके बारेमे सन्देह है क्या? हो सके तो मेरा उसे निबाह ले जानेका इरादा है। अत तुम मेरा मार्गदर्शन करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

वनमालाकी[3] तबीयत कैसी है? तुम्हारी तबीयत कैसी है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७७) से।

१. साधन-सूत्रमें हीरालाल शर्मा बताते हैं कि पत्र बैटल क्रीकके डॉ० के० एच० केलॉगको लिखा गया था।

२. टाइटसके उल्लेखसे; देखिए अगले दो शीर्षक भी।

३. नरहरि परीखकी पुत्री।

## १५. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२८ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

जीवनलाल आदि शालाके सम्बन्धमे मुझसे जरूर मिल जाये। मै बाहर गया तो थोडे ही दिनोके लिए जाऊँगा। केवल बोरसद जानेकी बात वल्लभभाई की इच्छापर निर्भर है। गया तो १५ मईके बाद ही जाऊँगा।

थरपारकरका पैसा तो जैसा तुमने लिखा है उसी तरह बाँट दिया गया है। वह पैसा तुम जिस खातेसे निकालना चाहो निकाल लेना।

मैथ्यूके विषयमे मै तुम्हें लिख चुका हूँ। टाइटसको साबरमतीसे मुक्त कर दिया गया है। नरहरिको उसकी शक्तिमे बिलकुल विश्वास नही है। मैंने उसे यहाँ बुलाया है; आयेगा तो रखूंगा और उसकी जाँच करूँगा। तुम उसके हिसाबकी जाँच कर ही आना। केशूका पत्र स्वच्छ मनसे लिखा गया है। उसे ३०० रुपये और दे देना। लेकिन अब सीमा निर्धारित करना। उसका पत्र अच्छा है।

जमनाको[1] लिखे हुए पत्रमे मैंने आपसे भोजन पकानेके विषयमे संकेत किया था। यह सुझाव सावधानीसे विचार करने योग्य है। हम यहाँ किस तरह करते है यह तुम्हे कनु बतायेगा। यह बहुत आसान है और बहुत सस्ता पडता है। नये बरतनोकी कोई जरूरत नही होती। ब्राह्मण लोग क्यो आयेगे? जिस तरह भगीका कोई धन्धा नही होता उसी तरह रसोइयेका भी नही हो सकता। ब्राह्मण ही रसोइया होना चाहिए यह बात अज्ञानजन्य है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४० से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

१. नारणदास गांधीकी पत्नी।

## २०. पत्र : विजया गांधीको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० विजया,[1]

कल जमनाका पत्र मिला। उससे मालूम हुआ कि तू अच्छी तरह बीमारीसे पार पा गई है। अब स्वस्थ रहनेकी कला सीख ले। खाना दवा समझकर खाना चाहिए, स्वादके लिए नही। फैक्टरीकी शक्कर तो खानी ही नही चाहिए। रोज मेथी-जैसी किसी भाजीके कोमल पत्ते (की कोपले) भोजनके साथ खानी चाहिए। नारंगी, अंगूर-जैसे रसभरे फल खाने चाहिए। साँस लेना सीखना चाहिए। जितना बने, खुली हवामे रहना चाहिए।

पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० विजयाबहन
मार्फत श्री हरकचन्द मोतीचन्द
चोरवड
सोनगढ रियासत, काठियावाड

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## २१. पत्र : वसुमती पण्डितको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० वसुमती,

तू मुझसे लम्बे पत्रकी आशा करती है, भला यह कैसे सधेगा? भणसाली यहाँ है। कच्चा आटा और नीमकी पत्तियाँ खाता है। खूब कातता है। अमतुस्सलाम यहाँ आई है। अच्छी तरह है। बाकी, लोगोका आना-जाना तो लगा ही रहता है। हाँ, इस बारका काम जरा ज्यादा मुश्किल कर लिया है। किसीको रहनेके लिए अलग कोठरी मिलती ही नही।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६४५)से, सौजन्य : वसुमती पण्डित। एस० एन० ९३९९ से भी

१. पुरुषोत्तम गांधीकी पत्नी और नारणदास गांधीकी पुत्रवधू।

## २२. पत्र : विजयाबहन पटेलको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० विजया,

तेरा पत्र मिला। मेरे-पास अलग कोठरी नही है। पूरे दिनकी मजूरी है। बिना मसालेका खाना है। यह सब बर्दाश्त हो तो आ जाना। आये तो पहनने-ओढनेके कपड़े तथा थाली, कटोरा, लोटा लेती आना। अगर समझे कि काम नही कर सकेगी, तो मत आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७०५९) से। सी० डब्ल्यू० ४५५१ से भी, सौजन्य: विजयाबहन एम० पचोली

## २३. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

२८ अप्रैल, १९३५

चि० गगाबहन,

तुम्हारी बात समझ गया। अधिकाधिक सेवा करती जाओ। पाँच वर्षतक एक स्थानपर स्थिर होकर रहनेकी तुम्हारी प्रतिज्ञा फलवती हो। हकीमजी तुम्हें कौन-सी सादी दवाएँ सिखा गये?

मैत्रीके[1] भी ठिकाने लग जानेकी बात सुनी। दोनोंका विवाह कब होगा? इस कुटुम्बको तो, कहा जा सकता है, तुम्हीने पार उबारा।

तुम्हारा शरीर तो ठीक रहता है न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने, पृ० ८४

१. मैत्री गिरि।

## २४. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको

२८ अप्रैल, १९३५

भाई बनारसीदास,

तुमारा खत मिला था। समिति तो करे लेकिन काम कौन करेगा? स्थायी समितिमें विचार करेंगे। उसमें आओगे?

बापुके आशीर्वाद

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
१२०/२ अपर सर्कुलर रोड
कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५६८) से।

## २५. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धागंज
२९ अप्रैल, १९३५

सेठ जमनालालजी
भुवाली

मदालसाको उबला हुआ दूध और मक्खन, चोकरयुक्त आटेकी पाव रोटी या चपाती लेनी चाहिए अगर वह पचा सके।

बापू

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० १५८

## २६. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

२९ अप्रैल, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

जिसने हरिभाईको[1] सचीनके पास मकान बनानेकी सलाह दी, लगता है, उसने उसका हित नहीं किया। जो हरिभाई ८०० भी नही जुटा सके वे २०० की मदद पाकर क्या कर सकेंगे? किस प्रकार अपनी हालत सुधारेंगे? वहाँ रहकर अपना बनाया हुआ कितना सामान बेच सकेंगे? मुझे पूरी बात समझाइये।

बापूके आशीर्वाद

श्री परीक्षितलाल
हरिजन आश्रम
साबरमती

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९५५) से।

## २७. पत्र : मूलचंद अग्रवालको

२९ अप्रैल, १९३५

भाई मूलचद,

तुमको इन्दौरमे नही मिल सका उसका मुझे दु:ख रह गया है। मेरे पास समय ही नही था। तुमने जो लिखा है सब मैं जानता था। आज तो ओर डर बरदास्त करनेके सिवाय और कुछ नही कह सकता हूँ। हाँ स्टटको सब लिख सकते है। रीगसका काम अब कौन देखेगा?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७६०) से।

१. एक हरिजन कार्यकर्ता; देखिए खण्ड ६०, पृ० ३५२-५३।

## २८. एक पत्र

३० अप्रैल, १९३५

यह ठीक है कि ईश्वर तक पहुँचनेके कई मार्ग है लेकिन सबका मूल स्रोत एक ही है। हो सकता है कि अस्पृश्यता-निवारणके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति उस व्यक्तिकी अपेक्षा अधिक प्रभावशाली काम कर रहा हो जो हरिजनोके बीच काम करता है। मेरे कहनेका मतलब यह है कि सेवा-कार्यके विना मात्र प्रार्थना करना लाखो व्यक्तियोके लिए एक मौखिक प्रयत्न-भर है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

## २९. पत्र : हुकमचन्दको

वर्धा
३०-अप्रैल, १९३५

श्री हुकमचन्दजी,[1]

अबतक आपके-तरफसे मुझे कुछ नही मिला। यह दुःखकी बात है। अब भी मैं अवश्य आशा रखूगा कि हिन्दी-प्रचारके लिए मुझे एक अच्छी हुडी मिल जायेगी।

इसके साथ मजदूरोने दिया हुआ खत भेजता हूँ। यदि इस पत्रमें लिखी हुई बात सही है तो उसका इलाज भी शीघ्र करना आवश्यक और उचित समझता हूँ। कोई कारण नही कि आपके यहाँ आदर्श स्थापित न हो।

आपका,
मो० क० गांधी

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल-मई १९६९

१. स्वागताध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर।

## ३०. पत्र : जौहरीलाल मित्तलको

३० अप्रैल, १९३५

भाईश्री मित्तल,

मैं नित्य आपके तरफसे कुछ खतकी और कुछ हुंडीकी प्रतीक्षा करता हूँ। गुजरातीके ५०० और वडवासके १०१ के [सिवा] यहाँ तो कुछ भी अबतक मुझे नही मिला है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री प्रधान मन्त्री
स्वा० समिति
हिं० सा० सम्मेलन
इन्दौर

वीणा, श्रद्धांजलि अक, अप्रैल-मई १९६९

## ३१. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
१ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे मालूम नही कि तुम्हारे पास कौन-से मित्र आये थे और न मुझे इस बातकी ही कोई जानकारी है कि तुमको हाथका बना कागज दरकार है। तुमने किसे लिखा था? लडकियाँ छुट्टीपर गई हुई हैं। छोटेलाल[1] मधुमक्खी-पालनका तरीका सीखने दक्षिण गया है। जबतक मुझे तुम्हारी तरफसे कोई सूचना नही मिलती, मैं तुमको कुछ भी नही भेजूँगा। डकन चार दिन यहाँ रहा। वह अब भी बिलकुल ठीक ढगसे काम नही कर रहा था।

१. छोटेलाल जैन, वर्धा आश्रमके प्रबन्धक।

उम्मीद है कि तुम धीरे-धीरे प्रगति कर रही हो।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४३) से। सी० डब्ल्यू० ३३७३ से भी; सौजन्य: एफ़० मेरी बार

## ३२. पत्र : अगाथा हैरिसनको

१ मई, १९३५

प्रिय अगाथा,

तुम्हारी खातिर अगर किसीको लन्दन भेजना सम्भव होता, तो मैं भेज देता। लेकिन मैं देखता हूँ कि इस समय ऐसा करना मुमकिन नहीं है। राजाजी ऐसे प्रस्तावपर[1] विचार नहीं करेंगे, कोई और भी नहीं करेगा। आज जैसी देखनेमें आ रही है, सरकारकी ओरसे ऐसी हठधर्मी पहले कभी की गई हो, ऐसा याद नहीं पड़ता। इस समय भारतके सीनेपर एक नंगी तलवार रख दी गई है। मैं तो समझता हूँ कि इस तरह ईश्वर हमारी परीक्षा ले रहा है। अगर हमारे मनमें सच्चा प्रेम अर्थात् अहिंसा है तो सब ठीक ही होगा। अगर प्रेम सचमुच हमारे अन्दर नहीं है और हम मात्र प्रदर्शनके लिए उसे ऊपरसे ओढ़ रहे हैं, तो हम इस नंगी तलवारके ही योग्य हैं। जो भी हो, लोग उसी तरह सोचते हैं जैसा मैंने बतलाया है और इसलिए सरकारकी इस नीतिके कायम रहते बड़े-बड़े नेताओंमें से तो कोई भी इंग्लैंड जानेकी बात सोचेगातक नहीं।

मैंने सर सेम्युअलकी बीमारीका समाचार जरूर पढ़ा था। लेकिन उस समाचार में उनकी बीमारीको कोई गम्भीर नहीं माना गया था। इसीलिए मैंने उन्हें न तो पत्र लिखा और न तार ही दिया।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९०) से।

१. अगाथा हैरिसनने गांधीजीको सुझाव दिया था कि इंग्लैंडवाले स्थितिको ठीक समझ सकें, इसके लिए उन्हें तथ्योंसे अवगत करानेके लिए किसीको वहाँ भेजा जाये। देखिए खण्ड ६०, पृ० ४२५-२६।

## ३३. पत्र : बालूकाका कानिटकरको

१ मई, १९३५

प्रिय बालूकाका,

आपने अपनी पुस्तिकाएँ पढनेके लिए आमन्त्रित करके मुझसे एक ऐसा काम करनेके लिए कहा है जिसे कर पाना आज मेरे लिए सम्भव नही है। मुझे उम्मीद है कि आप तीनो गाँवोमे अपने प्रयत्नोमे सफलता प्राप्त करेगे।

मो० क० गांधी

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९६६) से, सौजन्य · जी० एन० कानिटकर

## ३४. पत्र : अमृतकौरको

१ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

मै तुम्हे पत्र लिख चुका था, तब शम्मीका[1] पत्र मुझे प्राप्त हुआ। उसने जो जानकारी[2] मुझे दी है, उसका मै खासा उपयोग करनेवाला हूँ। मै चाहूँगा कि वह इमलीके बीज तथा अन्य खाद्य फलोके बीजोके सम्बन्धमे भी इसी प्रकारकी जाँच-पड़ताल करे।

मै अभी तुरन्त तुम्हारे पास खास तौरसे बनाये गये लिफाफे और पत्र लिखनेके कागज भेजने जा रहा हूँ।

जब भी तुम्हे पूनियाँ चाहिए, मुझे थोडा पहले लिख देना।

हाँ, हमने बडी महारानीसे भेट की थी, लेकिन उनसे बातचीत करनेका अवसर नही मिला।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६३४० से भी।

१. अमृतकौरके भाई कुँवर शमशेरसिंह।

२. जानकारी संभवत: अमरूदके बीजों और दंत-मंजनमें कोयलेके प्रयोगके बारेमें थी। यह हरिजन, १८-५-१९३५ के अंकमें "उपयोगी सुझाव" (यूजफुल हिन्ट्स) शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

## ३५. पत्र : पद्मावतीको

१ मई, १९३५

प्रिय बहन,

मैंने रामचन्द्रनको पत्र लिखा है; वह तुमको दिखा देगा। कान्ति तुमको कुछ भाने लगा है। मुझे आशा है, वह इसके योग्य सिद्ध होगा। मैं कान्तिके साथ तुम्हारी पुत्रीके विवाहका स्वागत करूँगा, यदि वह विवाहका समय आनेपर अपनेको उसके योग्य सिद्ध कर देगा। बीचका समय दोनो पक्षोके लिए एक पवित्र कार्यकी तैयारीका समय बन जाना चाहिए। हाँ, एक आग्रह मेरा है। लड़कीको हमारे इरादोके बारेमें कुछ भी पता न चले। उसे वयस्कता प्राप्त करनेपर स्वय अपना चुनाव करनेके लिए बिलकुल स्वतन्त्र रहना चाहिए।

मैं जानता हूँ कि कान्तिके साथ तुम्हारा पत्र-व्यवहार बहुधा चलता रहा है। रामचन्द्रनसे इसके बारेमे कुछ भी छिपाना नही है। कान्ति यदि लड़कीके सम्बन्धमें कुछ करता है या रामचन्द्रनसे छिपाकर तुमसे पत्र-व्यवहार करता है तो वह विश्वास भंग करनेका दोषी होगा। अगर ऐसा कुछ भी हुआ तो मैं स्वयको कभी क्षमा नही कर पाऊँगा।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४१) से, सौजन्य कान्तिलाल गांधी

## ३६. पत्र : जी० रामचन्द्रनको

१ मई, १९३५

प्रिय रामचन्द्रन,

मैने जान-बूझकर कान्तिके सम्बन्धमे तुम्हारे पत्रका उत्तर अवतक नही दिया था। अब मैं तुम्हारे पत्रका उत्तर दे सकता हूँ। लडकी जवतक पूर्ण वयस्क नही हो जाती, उसे हमारे इरादोके सम्बन्धमे कुछ भी ज्ञात नही होना चाहिए। कान्ति ऐसा इरादा रख सकता है लेकिन उसके वयस्क होनेके पहले उसके साथ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नही कर सकता है।[1] वह तुम्हारी बहनको पत्र लिख सकता है, जैसाकि वह करता ही रहा है, लेकिन उसका कुछ भी तुमसे छिपा नही रहना चाहिए। जब और जिस समय तुम चाहो, उसके सब पत्र तुम्हारे देखनेके लिए सुलभ रहने चाहिए। दोनोमे से प्रत्येकको एक-दूसरेके योग्य बनना है। इसलिए, यदि लड़कीको कान्तिके योग्य बनाना है, तो कान्तिको भी स्वयको लड़कीके और तुम्हारे योग्य बनाने की तैयारी करनी पडेगी। और विवाहका समय आनेपर यदि कान्ति इस दिशामे की गई अपनी प्रगतिमे अयोग्य साबित हो, तो तुम यह मानकर लडकीको उसके सम्पर्कसे निश्चय ही अलग रख सकते हो कि वयस्कता प्राप्त करनेपर वह तुम्हारी बात सुन-समझकर मान लेगी। तुम और मैं इस प्रस्तावित सम्बन्धको तभी सहन कर सकेंगे, जब यह दूसरोके लिए अनुकरणीय बन जाये। इसलिए इसे सेवा-भावनासे ही विकसित होना चाहिए। इस तरह विकसित होनेका मतलब है, अपेक्षाकृत अधिक सादगी, अधिक आत्म-त्याग, सत्य और अहिंसाकी ओर अपेक्षाकृत अधिक प्रगति और मन, वचन तथा कर्मसे पूर्ण ब्रह्मचर्यका पालन। कान्तिके लिए लडकीके बारेमे सोचनेका मतलब ही यह होना चाहिए कि यौन-भावनाकी तुष्टिके लिए अन्य किसी स्त्रीका ध्यान भी उसके मनमे न आये।

अगर ये शर्ते पूरी कर दी जाती है, तो मैं इस गठ-बन्धनका स्वागत करूँगा। मुझे तो लगता है कि इस सम्बन्धमे आरम्भसे कोई दोष नही रहा है। कान्तिने इस लडकीके प्रति आकर्षण अनुभव करते ही पूरी ईमानदारीसे वह-सब स्वीकार कर लिया था। बादका उसका आचरण भी मुझे ऐसा नही लगता जिसपर उँगली उठाई जा सके।

इस पत्रको कान्ति देखेगा और बादमे तुम्हारे पास भेज देगा। अगर पत्रमें ऐसी कोई बात हो जिससे तुम सहमत न होओ, तो मुझे बताना। मै कान्तिको इस पत्रकी

१. साधन-सूत्रमें यह वाक्य अधूरा लगता है; उसका अर्थ स्पष्ट करनेके लिए कुछ शब्द जोड़े जा रहे हैं।

एक प्रति देवदासको भेजनेके लिए भी लिख रहा हूँ। महादेव और हीरालाल भी इसे पढ़ेंगे ही। साथका पत्र[1] तुम्हारी बहनके लिए है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४२) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

## ३७. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

१ मई, १९३५

चि० कान्ति,

रोज लिखनेकी सोचता था, लेकिन यह तय नहीं कर पाता था कि रामचन्द्रनको लिखूं क्या। तू क्या कर रहा है, यह तो मैंने पूछा ही नहीं। अब ये दोनों पत्र पढ़।[2] और तुझे ठीक लगें, तो रामचन्द्रनको भेज दे। उसके साथ पत्र भी लिखना और मुझे बताना। महादेव और हरिलालको भी दिखाना। प्रतिलिपि देवदासको भेजना। यह सम्बन्ध आदर्श सम्बन्ध हो जाये, ऐसी मेरी इच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

रोकड़ मैं पढ़ गया हूँ। तू रोज खाताबही पूरी कर लेता होगा, यह मैं माने लेता हूँ। कहाँतक पहुँचा है, बताना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९५) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. देखिए पिछले दो शीर्षक।

## ३८. पत्र : डॉ० हरिप्रसाद देसाईको

१ मई, १९३५

भाई हरिप्रसाद,[1]

आपका पत्र मिला। जिनके लिए मुझे आपका नुस्खा चाहिए था, वे तीन-एक बार पूछ चुके थे। अब वे खुश हो जायेंगे।

मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आपके पत्रका अच्छेसे-अच्छा उपयोग यही था कि उसे सरदारको भेज दिया जाये।

मेरा आपने जो वर्णन किया है, वह मुझे अच्छा लगा। सारे यूरोपके लोग मुझे जितना पहचानते हैं, उससे अधिक अपने देशके लोग पहचानते हैं। हरिभाईसे कहिए कि यूरोपसे जो ज्ञान लेकर आये हो, उसका उपयोग यहाँके गाँववालोंके लिए करें।

बापूके वन्देमातरम्

डॉ० हरिप्रसाद देसाई
११, प्रीतमनगर
एलिसब्रिज, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३७) से।

## ३९. पत्र : अयोध्याप्रसादको

१ मई, १९३५

भाई अयोध्याप्रसाद,

अवधेश पर[2] तुमारा पत्र है सो मैंने सुना। यदि उसको मेरे पास ही रखना है तो थोडे दिनोंके लिये अपने पास बुलानेका मोह छोड दिया जाय। ऐसे करनेसे कार्यमें बाधा आती है और पैसे बरबाद होते हैं।

मो० क० गांधीके व० मा०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१६) से।

१. अहमदाबादके एक सामाजिक कार्यकर्ता और चिकित्सक।
२. अर्थात् अवधेशके नाम।

# ४०. प्रस्तावना : 'गुजरात एंड इट्स लिटरेचर' की

[२ मई, १९३५ के पूर्व][1]

श्री मुंशी-जैसे लेखकके साहित्यिक ग्रंथकी भूमिका लिखने के लिए मुझसे कहनेका केवल एक ही कारण हो सकता है कि मै 'महात्मा' कहलाता हूँ। मै किसी भी प्रकार साहित्यिक होनेका दावा नही कर सकता। इसमे मेरा कोई दोष नही है कि गुजरातीके साहित्यसे, बल्कि दरअसल किसी भी भाषाके साहित्यसे मेरा परिचय लगभग शून्य है। लगभग किशोरावस्थासे ही कर्म-क्षेत्रमे व्यस्त हो जानेके कारण दक्षिण आफ्रिका और भारतमें सिवा जेलोके मुझे पढनेका अवसर ही नही मिल पाया। गुजराती साहित्यके श्री मुंशी द्वारा किये गये इस सर्वेक्षणको पढनेमें मुझे आनन्द आया है। लेखकोके जो सक्षिप्त शब्द-चित्र उन्होने खीचे है, पाठकोको उनसे उनकी रचनाओकी पर्याप्त झाँकी मिल जाती है।

श्री मुशीने हमारी साहित्यिक उपलब्धियोका जो मूल्याकन किया है, वह मुझे बहुत प्रामाणिक लगता है। स्वभावत. सर्वेक्षणका क्षेत्र वह गुजराती भाषा है जो मध्यमवर्गके लोगोके बीच बोली और समझी जाती है। आत्म-सन्तुष्ट और व्यापारी-वृत्तिके होनेके कारण इनकी भाषा 'कोमल और रसीली' है। जन-भाषाके बारेमें तो हम लगभग कुछ नही जानते। हम उनकी बोली शायद ही समझ पाते है। हम मध्यम वर्गके लोगो और उनके बीच जो खाई है वह इतनी चौडी है कि हम उन्हें नही जानते और हम जो सोचते या कहते है उसे वे तो और भी कम जानते है।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थीके सौम्य आग्रहके कारण मैंने लोकगीतोके उनके विशिष्ट सग्रह को थोडा-बहुत देखा है जो उन्होने विभिन्न प्रान्तोमें घूम-घूमकर तैयार किया है। इस लेखकसे मिलनेकी याद तो मुझे नही है। लोकगीत ही लोगोका साहित्य है। ये गीत जिन प्रान्तोके है, उन प्रान्तोके मध्यमवर्गीय लोगोका इनसे उसी प्रकार कोई नाता नही है, जिस प्रकार गुजरातके मध्यमवर्गीय लोगोका लोकगीतो अर्थात् गुजरातकी जनताकी भाषासे सम्पर्क नही है। सौराष्ट्रके मेघाणीने काठियावाड़की लोककथाओको लेकर शोध-कार्य किया है। इस शोध-कार्यसे जनभाषा और हमारी भाषाके बीच जो खाई है, वह स्पष्ट होती है।

किन्तु लोककथा आदि उस व्यवस्थाके अंग है जो यदि विलीन नही हो गई है तो तेजीसे विलीन होती जा रही है। जनतामें एक जागृति आ रही है। उनमे परिवर्तनका प्रारम्भ विचारसे नही कर्मसे हुआ है। मेरी समझमे जनताका तरीका ही यह है। उसकी भाषाको निश्चित स्वरूप ग्रहण करना बाकी है। यह रूप थोडा-बहुत

१. देखिए "पत्र : क० मा० मुशीको", ८० ३०-१।

समाचार-पत्रोमे ढल रहा है; किताबोमे नही। इसलिए कहा जा सकता है जो कृति मेरे सामने है, उससे श्री मुशीका काम शुरू-भर होता है। वह आवश्यक था। किन्तु इस सुन्दर प्रारम्भके वाद उन्हे इसे आगे बढाते रहना है। अपने कामके प्रति आवश्यक लगन उनमे है। यदि स्वास्थ्य साथ दे तो अब उन्हें सीधे जनताके बीच जाना चाहिए और समझना चाहिए कि वह किस तरह सोच रही है। फिर उन्हें चाहिए कि वे उन विचारोको अभिव्यक्ति दे। गुजराती भाषा सम्पन्न बेशक नही है किन्तु यह तो उस जनताकी गरीबीका चिह्न ही है। पर वास्तवमे कोई भी भाषा दरिद्र नही होती। हमने जबसे काम करना शुरू किया है, तबसे बोलनेका तो मानो हमे समय ही नही मिला। सारे भारतकी तरह गुजरात भी सोचमे डूबा है। भाषा स्वरूप ग्रहण कर रही है। हमारे इस लेखककी तरह और लेखकोके सामने भी पर्याप्त काम पड़ा हुआ है।

मुंशी ने पारसी-गुजरातीका उल्लेख किया है, सो तो है। यह एक दुर्भाग्यकी बात है कि पारसी-गुजराती-जैसी चीज है। यह भाषा बारह आना सीरीजके सनसनीखेज उपन्यासो और कहानियोतक सीमित है। उनका उद्देश्य खाली समय काटना है। उनमे भाषापर बलात्कार करके उसका स्वरूप विकृत कर दिया जाता है। पारसी-गुजरातीकी तरह, भले ही काफी छोटे पैमानेपर क्यो न हो, मुस्लिम-गुजराती भी है। इन धाराओकी उपेक्षा नही की जा सकती। ये दूषित धाराएँ है, जिनमे गुजराती साहित्यका निर्मल जल नही मिल सकता। लेकिन गुजराती साहित्यका कोई भी समीक्षक ऐसी पुस्तकोकी उपेक्षा नही कर सकता जिन्हें हजारो नही तो कमसे-कम सैकडो पारसी और मुसलमान पाठक पढते हो और जिन्हें पढकर वे अशत. ही सही अपना आचरण ढालते हो।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गुजरात ऐंड इट्स लिटरेचर

## ४१. एक पत्र[1]

२ मई, १९३५

फोडे-फुंन्सियोको हम जितना छेडते है, वे उतने ही विगड़ते जाते है। हिन्दू-मुस्लिम तनाव ऐसा ही एक फोड़ा है। इसीलिए मै इसके समाधान के लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ। मै इसके वारेमे कुछ भी कहना नही चाहता।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य: नारायण देसाई

१. पत्र-लेखक ने लिखा था कि चूंकि हिन्दू-मुस्लिम एकताके बिना स्वराज्य सम्भव नहीं है, इसलिए गांधीजी को केवल इसी समस्याके समाधानपर अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिए।

## ४२. एक पत्र[1]

२ मई, १९३५

प्रेमकी कोई सीमा नही होती। मेरे राष्ट्र-प्रेममे विश्वके सभी राष्ट्रोके प्रति मेरा प्रेम सम्मिलित है, उनके अपने धार्मिक विश्वास चाहे कुछ भी हो।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

## ४३. पत्र : क० मा० मुंशीको

वर्धा
२ मई, १९३५

भाई मुंशी,

तुम्हारा पत्र मिला था। भूमिका[2] भेज दी गई है।

समाजवादी तो अपना काम करते ही रहेंगे। जबतक जवाहरलाल वहाँसे निकल नही जाते, तबतक हमे यह सब बर्दाश्त करना ही पडेगा। उन्हें बार-बार जवाब क्या देना है? मुझे तो लगता है कि उनके साथ हमारे जो तात्त्विक मतभेद हैं, उन्हे स्पष्ट बताकर हमारा चुप हो जाना ही ठीक होगा।

जितने अंशसे हमारा मतभेद नही है, उतने अशमें उनका काम भले आगे बढा करे। जहाँ मतभेद है, वहाँ उनका काम आगे बढेगा ही नही; ऐसी श्रद्धा हम क्यो न सँजोये?

राजाजी को मैंने बहुत समझाया। मुझे लगता है, उन्हें अभी आराम करने देना ही ठीक होगा। तुम जो सोचते हो, वह कारण तो बहुत करके नही है। इसका विश्वास उन्होंने मुझे दिलाया है। कोई वजह नही कि हम उनकी बात न मानें। बुरा माना होता, तो मुझसे तो नही ही छिपाते।

बापूके आशीर्वाद

१. यह पत्र एक अमरीकीको लिखा गया था। साधन-सूत्रमें उसका नाम नहीं दिया गया है।
२. देखिए पृ० २८-९।

[पुनश्च :]

क्या तुमने देखा कि हमारे मनमे जो प्रस्ताव[1] था, वह हिन्दी सम्मेलनमे पारित कर दिया गया?

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७२) से; सौजन्य: क० मा० मुंशी

## ४४. एक पत्र

३ मई, १९३५

श्रद्धा बुद्धिकी पकडमे आनेवाली चीज नही है; वह मन स्थिति है जिसतक हमे उठना, विकास करना होता है। और यह विकास अन्तरसे प्रस्फुटित होता है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी; सौजन्य: नारायण देसाई

## ४५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

३ मई, १९३५

चि० प्रेमा,

अभी तेरा पत्र मिला। सारे वर्णन सुन्दर है।[2] तू बहुत-सी बाते तो निबटा ही लेगी। 'कुरान' का अनुवाद उर्दूमे हुआ है, वह तुझे पढ लेना चाहिए। तब तुझे उसकी ध्वनि मिलेगी। और उर्दू पाठावलियाँ भी पढ लेनी चाहिए। वे पजाबसे प्रकाशित हुई है। हैदराबादमे भी होगी।

तेल छाननेकी बात समझ ली। यहाँ तो घानी है। थोडी मात्रामे तेल निकालना हो तो तेरी रीति काम देगी। आजमाऊँगा।

शायद ६ तारीखको मुझे यहाँसे बोरसद जाना पडेगा। यहाँ १७ तारीखको वापस आनेका विचार है। बीचमे १६ तारीखको कुछ घटे बम्बईमे बीतेंगे।[3] यह सब निश्चित हो जायेगा तो तू अखबारोसे भी जान लेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (१०३९१) से। सी० डब्ल्यू० ६८१० से भी, सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक।

१. देखिए पृ० ३३-४।

२. प्रेमाबहन हैदराबादकी मुस्लिम महिलाओंके बीच काम कर रही थीं और उन्हें कुरानका मराठी अनुवाद पढ़कर सुनाया करती थीं।

३. वास्तवमें गांधीजी २१ मईको वर्धासे रवाना हुए थे। वे महीनेके अन्ततक बोरसदमें रहे।

## ४६. पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

३ मई, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,[1]

आपका पत्र आज ही मिला। आज ही मै अहमदाबादसे आया। आपका भेजा लेख पढ गया। उसके अन्तमे डाले गये आँसू- उचित नही है। सरकार जाग्रत है तो हम भी उसी तरह क्यो न जागें? जगानेवाले आप-जैसे चाहिए। किन्तु आप ही यदि दूसरेसे आशा करें, तो क्या यही नही कहा जायेगा कि समुद्र ही अपना खारापन खो बैठा है और अब रोता है? आप जाये, रास्ता दिखायें तो दूसरे भी पीछे चलेगे।

'एक्सचेंज' वगैरा 'हाई फिनेन्स' कहा जाता है। उसमें काग्रेस क्या कर सकती है? उस विषयको जाननेवाले इसमे शामिल नही होते, शामिल हो भी नही सकते। जो इसमे है, स्वाभाविक है कि उनमें से बहुत-से इस विषयकी बातें नही जानते। यह काम ही पैसेवालोंका है। उन्हे इसके लिए एक विशेष सस्थाकी स्थापना करके आवश्यक कदम उठाना चाहिए।

(उस) लेखकका कहना है कि जब देश स्वर्णमानसे अलग हुआ, तब यदि हिन्दुस्तान जाग्रत होता तो यह न हो पाता। तब क्या करना चाहिए था?

आज क्या करे कि सही नीति व्यवहारमें लाई जा सके?

क्या आप समझते है कि ग्रामोद्योगका इस समस्याके साथ कोई सम्बन्ध है? सही नीतिका व्यवहार हो या न हो, गाँवोको स्वच्छ-साफ तो होना ही पड़ेगा न? उचित खुराकका ज्ञान प्राप्त करना ही पडेगा न? यदि वहाँके उद्योगोका पुनरुद्धार हो सकता हो, तो वह होना चाहिए न? यह काम चलता रहे, तो क्या करेन्सीका काम रुक जायेगा? करेन्सीके विशेषज्ञ तो शायद ही कोई इस काममे अटके हो। यदि अटके भी हो, तो इसमे रहते हुए भी वे दूसरा काम कर सकते है।

यह बोझ यदि पैसेवाले नही उठाते, तो इसका क्या उपाय है? उन्हे कौन जगायेगा? इस विषयका मेरा ज्ञान इतना नही है कि मै उन्हें जगा सकूँ।

सीमेंटकी बात समझा। अर्जी भेजनेके लिए बापाको[2] लिख रहा हूँ।

मोहनदासके व० मा०

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स : फाइल नं० १५९/१९३५; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. अर्थशास्त्री और इंडियन सेंट्रल बैंकिंग इन्क्वाइरी कमेटीके उपाध्यक्ष।

२. अमृतलाल वि० ठक्कर।

## ४७. पत्र : हीरालाल शर्माको[1]

३ मई, १९३५

मै डाक्टर गोपीचन्दको लिख रहा हूँ। यहाँ तुमारे हिसाबमे ५३ रुपया निकलते है। ४२ रुपया रेल किराये का है। मुझे सब स्मरण नही है। मेरी सलाह है भले १०० रुपया ऐसे ही रहें।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १५७-५८

## ४८. दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

इन्दौरके अ० भा० हिन्दी साहित्य-सम्मेलनमें कुछ खास उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुए। एकमें तो हिन्दी भाषाकी परिभाषा बताई गई है, और दूसरेमे यह मत प्रकट किया गया है कि उन समस्त भाषाओको देवनागरी लिपिमे ही लिखना चाहिए, जो या तो सस्कृतसे निकली हैं या जिनपर सस्कृतका बहुत अधिक प्रभाव है।

पहला प्रस्ताव इस तथ्यपर जोर देता है कि हिन्दी प्रान्तीय भाषाओको नष्ट नही करना चाहती, वल्कि उनकी पूरक वनना चाहती है, और अखिल भारतीय स्तरपर सेवा करनेवाले जो लोग इसे बोलते है उनके ज्ञान तथा उपयोगिताको बढाती है। वह भाषा भी हिन्दी ही है जो लिखी तो उर्दू लिपिमे जाती है, पर जिसे मुसलमान और हिन्दू दोनो ही समझ लेते है,—इस बातको स्वीकार करके सम्मेलनने इस सन्देहको दूर कर दिया है कि उर्दू लिपिके प्रति सम्मेलनकी कोई दुर्भावना है। तो भी सम्मेलन की प्रामाणिक लिपि तो देवनागरी ही रहेगी। पजाब तथा दूसरे प्रान्तोके हिन्दुओके बीच देवनागरी लिपिका प्रचार अब भी जारी रहेगा। यह प्रस्ताव किसी भी प्रकारसे देवनागरी लिपिके महत्त्वको कम नही करता। वह तो मुसलमानोके इस अधिकारको स्वीकार करता है कि अबतक जिस उर्दू लिपिमें वे हिन्दुस्तानी भाषा लिखते आ रहे है उसमे अब भी लिख सकते है।

दूसरे प्रस्तावको व्यावहारिक रूप देनेकी दृष्टिसे एक समिति बना दी गई है, जिसके अध्यक्ष और सयोजक काकासाहब कालेलकर है। इस समितिका काम देवनागरी

१. महादेव देसाई द्वारा हीरालाल शर्माको लिखे पत्रके अन्तमें गांधीजी ने ये पंक्तियाँ लिखी थी। उक्त पत्रमें महादेव देसाईने लाहौरकी एक दुकानका पता देते हुए लिखा था कि गांधीजी की जरूरतकी वे पुस्तकें डॉ० गोपीचन्दके द्वारा खरीदी जायें, ताकि उनकी कीमतोंपर कुछ रिआयत मिल जाये।

लिपिमें ऐसे परिवर्तन और परिवर्धन दाखिल करनेकी सम्भावनाका पता लगाना और तदनुसार ऐसे परिवर्तन और परिवर्धन करना होगा जो उसे और भी आसानीके साथ लिखनेके लिए आवश्यक होगे, और मौजूदा अक्षरोसे जो शब्द-ध्वनि व्यक्त नही हो सकती उसे व्यक्त करनेके लिए देवनागरी लिपिको और भी पूर्ण बनायेंगे।

हमे अगर अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्कको बढाना है, और अगर हिन्दीको प्रान्तोके आपसी सम्बन्धका माध्यम बनाना है तो उसमे इस प्रकारका परिवर्तन आवश्यक है। इस दूसरी बातको तो हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके सिद्धान्तोमें विश्वास रखनेवाले लोग गत पच्चीस वर्षोसे मानकर चल रहे है। लिपि-सम्बन्धी प्रश्नपर चर्चा तो अक्सर हुई, पर गम्भीरता-पूर्वक वह कभी हाथ मे नही लिया गया। फिर भी यह पहली मान्यताका स्वाभाविक परिणाम प्रतीत होता है। [एक लिपि हो जानेपर] भगिनी-भाषाओको सीखना अत्यधिक सरल और आसान हो जाता है। बगला लिपिमें लिखी हुई 'गीताजलि' को सिवा बगालियोके और पढेगा ही कौन? अगर वह देवनागरी लिपिमें लिखी जाये तो उसे सभी लोग पढ सकते है। सस्कृतके तत्सम और तद्भव शब्द उसमें बहुत अधिक है, जिन्हें दूसरे प्रान्तोके लोग आसानीसे समझ सकते है। मेरे इस कथनकी सत्यताको हरएक जाँच सकता है। हमे अपने बालकोको विभिन्न प्रान्तीय लिपियोको सीखनेका व्यर्थ कष्ट नही देना चाहिए। यह निर्दयता नही तो क्या है कि तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, उड़िया और बगला सीखनेकी इच्छा रखनेवालोसे देवनागरीके अलावा इन छह लिपियोको — और अगर वे अपने मुसलमान भाइयोके चिन्तन और कार्योको उनके लेखो आदिसे जानना चाहे तो उर्दू लिपिको भी — सीखनेकी अपेक्षा की जाये? जो अपने देश या मनुष्य-मात्रका प्रेमी है उसके सामने मैंने यह कोई बडा प्रचण्ड कार्यक्रम नही रख दिया है। आज तो अगर कोई प्रान्तीय भाषाएँ सीखना चाहे और कोई प्रान्तीय भाषा-भाषी हिन्दी पढना चाहे तो यह लिपियोका अभेद्य प्रतिबन्ध ही उसके मार्गमे कठिनाई उपस्थित करता है। काकासाहबकी यह समिति एक ओर तो इस सुधारके पक्षमे लोकमत तैयार करेगी, और दूसरी ओर उसे प्रयोगमे लाकर उसकी इस महान् उपयोगिताको प्रत्यक्ष करके दिखायेगी कि जो लोग हिन्दी या प्रान्तीय भाषाओको सीखना चाहते है, उनका समय और उनकी शक्ति इससे बच सकती है। किसीको भूलकर भी यह कल्पना नही करनी चाहिए कि यह लिपि-सुधार प्रान्तीय भाषाओके महत्त्वको कम कर देगा। सच पूछिए तो वह तो उनकी उसी प्रकार श्रीवृद्धि करेगा, जिस प्रकार कि एक सामान्य लिपि स्वीकार कर लेनेके फलस्वरूप प्रान्तीय व्यवहार-विनिमय सरल हो जानेसे यूरोपकी तमाम भाषाएँ समृद्ध हो गई है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ४-५-१९३५

## ४९. आय दूनी कैसे की जाये?

चरखेका आन्दोलन यद्यपि सत्रह सालसे चल रहा है, और उससे हर साल एक लाख बीस हजार स्त्रियोको थोडी किन्तु स्थायी आमदनी हो जाती है, तो भी हमारे कार्यकर्त्ताओके कताई-विज्ञानके शोचनीय अज्ञानके कारण आमदनी जितनी होनी चाहिए उससे वहुत कम होती है। खराब रुईको अनाडीपनेसे धुनेगे, और फिर हिलते-डुलते चरखेपर तकुएके चक्करोका खयाल रखे बगैर कातेंगे, तो सूत तो कम निकलेगा ही। एक-एक चीजपर ध्यान दिया जाये तो सहज ही सूत दूना उतरे और इससे आमदनी भी दूनी बढ जाये। कपास ठीक तरहसे चुनी जाये, हाथसे ओटी जाये और फिर रुईको अच्छी तरह धुना जाये तो सूत तो अधिक उतरेगा ही, वह ज्यादा मजबूत और इकसार भी होगा। तकुएके चक्करोपर, अर्थात् चरखेके पहियेके प्रत्येक घुमावसे तकुआ जितने चक्कर खाता है, इसपर सूत निकलनेकी गति, सूतकी मजबूती, समानता तथा अंक शायद सबसे अधिक निर्भर करते है। इसका हिसाब लगानेका आसान तरीका यह है कि तकुएकी गरारीपर एक खड़ी लकीर खीच दी जाये, और पहिया इतना धीरे-धीरे घुमाया जाये कि जिससे तकुएके चक्कर आसानीसे गिने जा सके। पहियेके एक चक्करके मुकाबले तकुएके सौ चक्करसे कम तो होने ही नही चाहिए। किन्तु श्री शकरलाल बैंकरने यह रिपोर्ट दी है कि उन्होने अपने दौरेमे सिर्फ ३५ ही चक्कर लगानेवाले तकुए देखे है। अब अगर सूत बहुत ही कम और कच्चा तथा रोएँदार उतरे तो इसमे कोई अचरजकी बात नही। तकुएके चक्कर बढ़ानेकी तरकीब यह है कि मालको अपनी ठीक जगहपर रखनेवाली तकुएकी साडीकी मोटाई कम कर दी जाये। स्थानीय कार्यकर्त्ताओको अपने गाँवके प्रत्येक चरखेकी जाँच-पडताल करके उसके तकुए तथा दूसरे हिस्सोमे, जहाँ आवश्यक जान पडे वहाँ, हेरफेर कर देना चाहिए। यह भी सम्भव है कि अन्तमे तकली सूतकी उत्पत्तिका सबसे बढिया साधन साबित हो। इसमे कमसे-कम ध्यान देनेकी जरूरत रहती है, और तकली चलानेकी नई पद्धति से प्रति घटा औसतन २०० तार अर्थात् २६६ गज सूत कतता है और ४४० तार तककी गति बढ़ सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ४-५-१९३५

## ५०. पत्र : नारायणदास मलकानीको

वर्धा
४ मई, १९३५

प्रिय मलकानी[1],

हमारी बातचीतके तुमने जो नोट तैयार किये है, उनको जाँचनेमे मुझे काफी समय लगाना पडा। तुम देखोगे कि मैने काफी रद्दोबदल की है और कुछ पूरे-के-पूरे पैरे हटा दिये है। दूसरोके बारेमे किये गये सभी उल्लेख हटा दिये गये है, होना भी यही चाहिए था।

उम्मीद है, तुम्हारा कलकत्ता-प्रवास उपयोगी रहा होगा।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९) से।

## ५१. पत्र : कान्ति गांधीको

४ मई, १९३५

चि० कान्ति,

जैसा मूर्खतासे भरा पत्र तूने लिखा है, वैसा ही कनुने लिखा था। उसका समाधान एक क्षणमे हो गया, वैसे ही तेरा भी हो जायेगा। मनुष्य बिना मौतके रोज मरता है, और जब सच्ची मौत आती है तब दु:खी होता है। मनुष्य अपने-आप ही दु:ख पाता है। मै तुम दोनोमे से एकको भी यहाँ दफन करना नही चाहता। इस बार भी महादेवने जवाब क्यो दिया, मुझे नही मालूम। मैने जान-बूझकर तुम दोनोमें से एकको भी रसोईघरका काम न सौंपनेका निश्चय किया है, जिससे जब मै सचमुच सफरपर जाऊँ तब दोमे से एकको साथ ले जा सकूँ। यो मेरी इच्छा तो दोनोको ले जानेकी है। समय और कामकी मजबूरीसे अगर कुछ न कर सकूँ, तो तुम दोनो समझ जाओगे। इस बरस तो मुझे सफर नही ही करना है। यहीका सब काम व्यवस्थित करना है। जिन्दा रहा, तो अगले वर्ष सफर करना है — जिन्दा दोनो अर्थोमे, जेल जाना एक प्रकारका मरण ही कहलाता है न? अग्रेजीमें इसे 'सिविल-डेथ'[2] कहते है, अर्थात् सार्वजनिक नागरिक जीवनकी दृष्टिसे मरण। यह तो मेरे भाग्यमें बदा ही है न?

१. हरिजन सेवक संघके संयुक्त मन्त्री।
२. मूलमें ये दो शब्द अंग्रेजीमें हैं।

तुझे जैसे उलाहना दिया, वैसे ही बालको भी दिया है। वह मुझसे पत्र चाहता है, इसलिए उसे मिलते हैं। तूने मुझे पत्रोका उत्तर देनेसे मुक्त कर दिया है, इसलिए तुझे कम लिखे हैं। देवदासको कितने लिखता हूँ? मैं पत्र लोगोकी आवश्यकताके अनुसार भेजता हूँ।

मेरी बातोसे तू 'सन्न' रह जाता है, इसका अर्थ तू समझता है? इसका अर्थ तो यह हुआ कि तू अपनेको मुझसे हजारो योजन दूर मानता है। कडवे शब्दोके पीछे प्रेम भरा था, यह तू नही देख सका, तो यह दोष तेरा है या मेरा? अहिंसाका पुजारी होनेके नाते मुझे दोष अपना मानना पडता है, किन्तु पिता होनेके नाते तेरा मानता हूँ। तुझसे बोलते हुए मुझे नाप-तोलकर बोलना पडे, और भाषापर नियन्त्रण रखना पडे कि कही तू नाराज न हो जाये, तो यह कैसी विचित्र बात है?

तुझमे शुरूसे ही एक प्रकारका उजड्डपन अथवा अविवेक रहा है। वह तूने बहुत-कुछ कम कर लिया है। फिर भी अभी उसके कुछ छीटे तो है ही। मुझे लिखे इस पत्रमे तो कुछ भी नही है। हाँ, उस रोज छतपर थे। यो मैंने तो अपना समाधान कर ही लिया था। आश्चर्यकी बात है, हरिलाल समझता है कि तू मेरी नजरोसे गिर गया है। मुझे इसका थोडा दुःख भी है। कारण यह है कि तू तो जानता है, मेरी नजरमे तेरी कीमत बहुत है। मेरा मन तो कहता है, मैं तेरी सार-सँभाल एक फूलके समान कर रहा हूँ। तेरे कामसे मुझे सन्तोष ही हुआ है। तेरी होशियारी तेरे चेहरेसे झलकती है। देवदासको मैं तो समझा रहा हूँ कि वह कुछ भूल कर रहा है। रामचन्द्रनको जो पत्र लिखा है, वह भी क्या सिद्ध करता है? मेरी नजरमें तेरी कीमत बहुत है, यह समझ ले। मेरे पास आनेमे तुझे संकोच होता है, यह मेरे और तेरे दोनोके लिए शर्मकी बात है। इस प्रकारकी शर्मका कोई कारण तो नही है।

इलायची, तेल और टूथपेस्ट, इन तीनमे से एककी भी जरूरत नहीं है। जले कडोकी मैदा-जैसी महीन राख और नमक अथवा नीमकी दातौन दाँतोको उम्दा रखते हैं। खोपरेका तेल बालोके लिए सबसे बढिया होता है। उसमे नीबूके रसकी कुछ बूँदे डाल दी जाये, तो वह और बढिया हो जाता है। इलायचीकी अपेक्षा नीमकी पत्तियाँ अधिक अच्छी होती है, गाँववाले उन्हें मुख-शुद्धिके लिए काममे लाते है।

जहाँ तुझे शादी[1] करनी है, वहाँ भरतके चारित्र्यकी आवश्यकता है। तेरा विवाह संयमका उदाहरण प्रस्तुत करेगा, मै ऐसी आशा सँजोये हुए हूँ।

तुझे किसी भी प्रकारका असन्तोष नही होना चाहिए, अध्ययन-सम्बन्धी भी नही। यहाँके क्लेश सहन कर गया, तो आदमी बन जायेगा। नही सहन कर सका, तो भी दुनियादार तो बन ही जायेगा। मेरे पास रहते हुए पृथुराज सूख कर काँटा हो गया था, और रुपए-पैसेकी इफरात होते ही उसका वजन बढ़कर १३५ पौंड हो गया। इस सबसे मुझे तो बहुत-कुछ सीखनेको मिलता है। तू मेरे पास पूर्ण

१. देखिए पृ० २४-६ भी।

आनन्दमें रहना। अपना शरीर क्षीण करके रहे, इससे तो मुझे यह बर्दाश्त होगा कि तू मुझसे दूर रहे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यह दुबारा नही पढा है। समझमें न आये, तो फिर पूछना। कुछ छूट गया हो तो पूरा कराना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९६) से, सौजन्य: कान्ति गांधी

## ५२. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
५ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा तार मिला। २५ तारीखको मैं वहाँ[1] पहुँच जाऊँगा। यदि २३ तारीखको पहुँचूँ तो हर्ज तो नही है न? अगर २२ तारीखको बम्बईमे कमलासे मिला, तो शायद २३ तारीखको सवेरे वहाँ पहुँचूँगा। लिखना, वहाँ कितने दिन रोकनेका विचार है। कमसे-कम दिन रोकना।

राजाजी की थकावटका पार नही है। इसमें उनका दोष भी क्या बताया जाये? जिसका मन थक जाये, उसे क्या जबरन् रखा जा सकता है?[2] तुम और राजेन्द्रबाबू वगैरा किसे त्यागपत्र दोगे? जो हैं वे जबतक काम चले, चलाये। किसी दलसे किया जा सके तो वह खुशीसे कांग्रेसपर कब्जा कर ले।[3]

जयप्रकाशने तुमको जो पत्र भेजा है, उसकी नकल मुझे दिखानेके लिए उसने प्रभावतीको भेजी है। वह किस बारेमें है? तुम ऐसा क्या बोले हो?

आठवले यहाँ आये थे। वे चले गये। मुझसे भी उन्होने वही बात कही थी, जो तुमको लिखी है।

अब तो प्लेगका जोर कम हो गया होगा। क्या तुममे ताकत आ गई?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६५

१. बोरसद।
२. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ११ मई, १९३५ को अस्थायी तौरपर सक्रिय राजनीतिसे अलग हो गये थे।
३. अपने २ मईके पत्रमें वल्लभभाई पटेलने लिखा था कि एकके-बाद-एक सदस्यके कांग्रेस छोड़ते चले जानेसे उन्हें कितनी कठिनाई हो रही थी।

## ५३. पत्र : नारणदास गांधीको

५ मई, १९३५

चि० नारणदास,

चि० हरिलाल फिर राजकोट वापस जा रहा है। उसे ब्याह तो करना ही है। योग्य संगिनी मिलनेकी शर्त जरूर रखी है। मुझे लगता है कि ऐसा नही हो सकता है कि वह विवाह करके मेरे साथ रहे। उसका विवाह मैं सहन तो कर सकता हूँ, लेकिन उसका स्वागत नही कर सकता, उसे पसन्द नही कर सकता। उसका विवाहित जीवन सुखी हो, ऐसी कामना तो करता ही हूँ। हमारी अनेक प्रवृत्तियोमे से किसीमे लगकर वह अपना गुजारा करे, इसमें तो कोई आपत्ति नही हो सकती, बल्कि यह मुझे अच्छा ही लगेगा। लेकिन मैं उसकी सिफारिश नही कर सकता। हरिलालकी इच्छा फिलहाल तो तुम्हारे दिये कमरेमे ही रहनेकी है। अगर तुम्हें यह ठीक लगे तो मुझे कोई आपत्ति नही है। लेकिन यह उचित है या अनुचित, इसका विचार तुम्हीको करना है। मैं परिस्थिति तो जानता ही नही। अब तुम्हे हरिलालको मासिक खर्चके लिए कुछ नही देना है, लेकिन १०० रुपयेतक एक मुश्त या जैसे वह कहे वैसे दे देना। इससे ज्यादाकी जरूरत होगी तो वह खुद कमा लेगा। उसका विचार कोई नौकरी ढूंढने अथवा व्यापार करनेका है। मुझे कुछ सूझ नही रहा। उसका यहाँ रहना मुझे अच्छा लगता था। यथाशक्ति काम करता था। सबके साथ घुल-मिलकर-रहता रहा। कहता है कि उसकी शराबकी लत छूट गई है। और मैंने यह समझा है कि विवाह तो वह करना चाहेगा किन्तु विषय-भोगकी वासनासे वह मुक्त हो गया है। इस सम्बन्धमें उससे कोई खोद-खोदकर पूछताछ नहीं की है। धूम्रपानका व्यसन उसे अब भी है और मुझसे अनुमति लेकर वह रोज तीन बीडियाँ पीता है। मैं मानता हूँ कि वह तीनकी सीमाकी रक्षा करता रहा है।

तो यह रही हरिलालकी कथा। अब भाग्य उसे जिधर ले जाये, ले जाये। आया धन खो न जाये तो भी ईश्वरकी कृपा मानूंगा।

मैथ्यूके सामने जो शर्तें[1] रखी गई है, उनपर वह आनेको तैयार है। अब वह वर्धा आश्रमसे पैसा माँग रहा है, ताकि उसमे से वह यात्रा-व्यय निकाल सके। मैं आश्रमको स्थिति बतानेको लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४१ से भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

१. देखिए पृ० ४ भी।

## ५४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

५ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुमारा खत मिला। पिताजी के स्वास्थ्यके वारेमें मुझे खबर देते रहो।

तुमने चावल भेजे वह बहुत अच्छे थे। लेकिन थोडे पोलिश थे। पोलिश विलकुल नहीं होने चाहिये।

क्रिश्नास्वामी[2] के लिये लड़की ढुंढनेकी कोशीश अवश्य करो। लेकिन उसकी चिंता कैसे? चितासे लडकी थोड़े ही मिलनेवाली है। वह तो प्रयत्नसे ही मिलेगी।

व्रतक श्लोक यह है :

> अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह,
> शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन।
> सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना[3],
> ही एकादश सेवावी नम्रत्व व्रत निश्चये[4]॥

यह पढ सकती है?

साथका पत्र पिताजी का देना।

बापुके आशीर्वाद

मूलपत्रसे : अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. एस० श्रीनिवास अय्यंगारकी पुत्री। वे बालिका उच्च विद्यालय, मद्रासकी प्रधान थीं।

२. एस० अम्बुजम्मालके पुत्र।

३. अस्पृश्यताके प्रति सही दृष्टिकोण।

४. ये दो संस्कृत श्लोक विनोबा भावेने रचे थे और आश्रमकी प्रार्थनामें इनका गायन किया जाता था।

## ५५. पत्र : हीरालाल शर्माको

५ मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमको कल एक खत भेजा[1]। अब स्टीमरके बारेमे उत्तर[2] आ गया है, सो उसके पीछे है,[2] ठीक है ना ? . [3] कार्गो वोटकी मुसाफिरी बिलकुल खराब नही है। मै मुवईसे सीलोन तक कार्गो वोटमे ही गया था।[4] मुझे ज्यादा अच्छा लगा था। एकान्त थी।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १५८

## ५६. पत्र : बलीबहन एम० अडालजाको

६ मई, १९३५

चि० वली,

मेरे पत्रमे क्रोध नही था। हरिलालने मुझसे ऊँच-नीच कुछ नही कहा। मनुके पत्रके आधारपर ही मैंने वह-सव पूछा था; सो भी अपनी जानकारीके लिए। हरिलाल भी अगर इसमे वीचमे पडता है, तो मुझे क्या लेना-देना है? रामीकी सगाई भी तूने और हरिलालने की थी। विवाह कर देना तो फिर मेरे सिरपर आ पड़ा था, क्योकि हरिलालका उस समय दिमाग ठिकाने नही था। मनुका विवाह तू और हरिलाल कर दे, इसमे मुझे कोई एतराज नही है। यदि मुझे करना पड़े, तो मनुको मेरे पास होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४२) से, सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

१. घनश्यामदास बिड़लाका।

२. अर्थात् पत्रके पीछे। दरअसल गांधीजी ने यह पत्र घनश्यामदास बिड़लासे प्राप्त उत्तरकी दूसरी ओर लिखा था।

३. साधन-सूत्रके अनुसार।

४. नवम्बर १९२७ में; देखिए खण्ड ३५।

## ५७. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धा
६ मई, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुमारे खत मिले हैं। १७-१८ के नजदीक आ जाओगे तो अच्छा होगा। १६ उससे भी अच्छा। १८ को हिन्दी-सम्मेलनकी स्थायी समितिकी सभा होगी तो भी समय तो निकालुंगा। २१ को मुझे भी मुंबई जाना होगा। कमला नेहरूको मिलनेके लिये। वह तुमारी ही जहाजमें जायेंगी। एसफेल्ट लाइनकी स्टीमर कलकत्तेसे जाती है। सीधी न्यूयार्क जाती है?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मीराबहनकी मधुमाखीकी किताब वापिस चाहिये।

मूल (सी० डब्ल्यू० ८०१०) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

## ५८. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

७ मई, १९३५

चि० अवधेश,

तुलसीदासने ही कहा है ना कि रामसे नाम बड़ा है। अर्थात् देहधारी रामसे देहातीत अरूपी, अनामी राम बड़ा है। दशरथनन्दन सीतापति राम सही तदपि हमारी कल्पनाके पूर्ण पुरुषोत्तम राम क्योंकि [अव्यक्त हैं, अतः] अव्यक्त भी व्यक्तसे भिन्न नहीं है। अव्यक्तकी ही यह सब माया है। राम शब्द पर मेरा कोई आग्रह नहीं। भले ओंकार, कृष्ण, ईश्वर क्यों नहीं।

क्रोध तो आता है, उस पर क्रोध करता हूं। पूर्ण विजय आत्म-दर्शन से ही सम्भव है।

हमको कोई कैसे भी नीच माने उनपर प्रेम करें, वही अहिंसा, वाकी सब माया।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१२) से।

## ५९. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा

८ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

बहुत दिन बाद तुम्हारा पत्र मिला है। तुम्हारे खिलाफ शिकायत तो आई थी, पर उसमे मुझे लिखनेकी कोई बात नजर नही आयी। जीवणलालके यहाँ आने पर कुछ लिखने लायक होगा तो लिखूँगा। तुमने क्या सेवा-धर्म किसीकी खातिर अपनाया है? जबतक चल सके, चलाओ। तुम निश्चिन्त रहना। आखिरमे यदि कुछ करनेकी जरूरत जान पड़ी तो करेगे। तुम्हारा मानभंग नही होने दूँगा। तुम अपने काममे तन्मय रहना। व्यर्थका उद्वेग न करना।

आशा है, रमा[1] और बच्चे मजेमे होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२९) से।

## ६०. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

८ मई, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

हरिभाईके सम्बन्धकी बात ठीक समझ गया। उसे एक पैसा भी देना मै अनुचित समझता हूँ। उसका भला इसीमे है कि उसे उसके प्रयत्नोपर छोड दिया जाये। यदि जमीन बेचकर वह वहाँसे आ जाये, तो उसे आगे बढानेमे कोई कठिनाई नही होगी। उसका सचीनके पास पडे रहना तो चाबुक बनानेके लिए भैसकी जान लेने-जैसा है। तुम्हारा कर्त्तव्य भी यही है कि उसे सचीनसे[2] अलग करो।

गुजरातके खर्चवाला तुम्हारा दूसरा पत्र ध्यानपूर्वक पढकर उसपर विचार कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९५९) से।

१. छगनलाल जोशीकी पत्नी।

२. देखिए पृ० १९।

## ६१. पत्र : उदयप्रसादको

८ मई, १९३५

भाई उदयप्रसाद,[1]

आपके पद्य कुछ याद तो आते हैं। मैंने पढे नही क्योकि भाई किशोरलाल व काकासाहेबने कहा उसमे पढनेके लायक कुछ बहुत नही है। १५ मिनिट भी कहाँसे?

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५३) से।

## ६२. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा

९ मई, १९३५

चि० मेरी,

डॉ० टैण्डीका[2] लिखा पत्र नत्थी कर रहा हूँ। उनका बिल ८७ रुपयेका बना है। मैंने इसे चुकता करनेको कह दिया है।

तुमने मिरज जानेकी उनकी सलाहके बारेमे क्या सोचा है? अगर तुम पूरी तरह आराम करो और ठीक पौष्टिक आहार लेती रहो तो शायद और कुछ करनेकी जरूरत ही न पडे। मुझे सविस्तार लिखना।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

मैंने तुम्हे लिखा था या नही कि छोटेलाल मधुमक्खी-पालनका कार्य सीखनेको कोयम्बटूर गया है? देखता हूँ कि मनीआर्डर तुम्हे भेज दिया गया है। मुझे अफसोस है। डॉ० टैण्डीको वह राशि अब तुमको ही भेजनी पडेगी।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४०) से। सी० डब्ल्यू० ३३७२ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१. बोडेगाँव, मध्य प्रान्तके।

२. डॉ० टैण्डी एफ० मेरी बारका इलाज कर रही थीं।

## ६३. पत्र : नारणदास गांधीको

९ मई, १९३५

चि० नारणदास,

साथमें भगवानजीका[1] पत्र है। इनकी सहायता करनेके लिए तुम जाना या किसी और को भेजना। आसपासके गाँवोमें जाना कोई बड़ी बात नहीं है। जाकर इनसे मिलना। वे सज्जन व्यक्ति हैं और बहुत-कुछ करनेकी इच्छा रखते हैं। यदि शालाको समय देनेकी इच्छा प्रकट करें तो उनकी सेवा स्वीकार करना। अलबत्ता, तुम्हारा अनुभव विपरीत हो तो छोड़ देना।

लीलावतीका पत्र साथमें है। केशूकी क्या खबर है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४३ से भी; सौजन्य . नारणदास गांधी

## ६४. पत्र : नारणदास गांधीको

९ मई, १९३५

टाइटसके बारेमें तुम्हारा पत्र मिला। अगर आश्रममें गोशाला कायम न ही रह सके तो वह [टाइटस] बखूबी चला जाये।

बापू

[पुनश्च :]

मैथ्यूको फिर लिखना ही है।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ९ : श्री नारणदास गांधीने, भाग-२, पृ० १९०। सी० डब्ल्यू० ८४४२ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. राजकोटके एक वकील भगवानजी अनूपचन्द मेहता।

## ६५. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

९ मई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। क्या गायके बिना हरिजन आश्रम चल सकता है? मेरी धारणा यह है कि आश्रममें गायके साथ साँड रखना चाहिए, बाकीके ढोर पिंजरा-पोलको सौंप देने चाहिए। बीडजका क्या करना चाहिए, यह सोच लेना। यदि सम्भव हो, तो मुझसे बिना पूछे, मगर ट्रस्टियोंसे पूछकर, ढोर बेखटके रामभाईको सौंप देना। क्या वे इतनी कीमत देंगे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७८) से।

## ६६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

९ मई, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

तुमारा उद्देश तो आत्म-दर्शन है। उसके लिये एकादश व्रत[1] जिसका चितवन हम नित्य करते हैं, आवश्यक हैं। इसलिए आज तुमारे रास्तेमें थोडी [असुविधा] है। कौटुंबिक कर्ज भरनेका एक हदतक फर्ज बन गया सा है। सरल प्रयत्नसे यह भर दिया जा सकता है तो किया जाय। इसके लिये भी तुमारे पंच महाव्रत[2] तो आवश्यक है। मेरी आशा है कि प्रफुल्लित [चित्तसे] सब व्रतो पर कायम रहोगे।

एक वर्ष तक अभ्यास छोड़कर शरीरको अच्छा बना लो और बुद्धिको ताजा कर दो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२९८) से।

---

१. देखिए "पत्र: कृष्णचन्द्रको", पृ० ९७।

२. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

## ६७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

वर्धा
१० मई, १९३५

चि० ठक्कर बापा,[1]

चन्द्रशेखरको लिखा आपका पत्र पढा। मेरे किस पत्रसे आपने यह निष्कर्ष निकाला? ३,७४२-३-८ रुपये बट्टे खातेमे डाल दिये। इतना रुपया बट्टेखातेमे डाल देनेका मतलब हुआ कि 'हरिजन' ने दिवाला निकाला दिया। क्या यह रुपया 'हरिजन' कोडवाकमको भेट कर दे? जहाँतक मुझे याद है, मेरी आपके साथ कोडपत्रके बारेमे चर्चा हुई है। 'हरिजन' को जारी रखनेके लिए आप तो मुझे पैसा देनेको तैयार थे। अब आप 'हरिजन' पर बोझ डालना चाहते हैं? उसके पास पैसा हो जाये, तो जरूर डालिए।

४,००० रुपयेका नुकसान भुगताइयेगा, तो 'हरिजन' बन्द करनेकी नौबत आ जायेगी। ग्राहक बढानेके लिए किसीको कुछ न लिखे, यह मै ठीक ही समझता हूँ। उसमें कुछ सार होगा, तो लोग खरीदेगे। अन्यथा खत्म होता है तो हो जाये।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५६)से।

## ६८. भेंट : एक मिशनरी नर्सको[2]

[११ मई, १९३५ के पूर्व]

**[नर्स :] मैंने सुना है कि आपको कभी क्रोध नहीं आता। क्या यह बात ठीक है?**

[गाधीजी :] यह बात तो नही है कि मुझे क्रोध नही आता। बात यह है कि मै क्रोधको प्रकट नही होने देता। धैर्यके गुणका मै अक्रोधके रूपमे अभ्यास करता रहता हूँ, और साधारणतया उसमे मुझे सफलता भी मिली है। पर वास्तवमे जब क्रोध आता है, तब मै उसे दवा-भर देता हूँ। यह पूछना व्यर्थ ही होगा कि मै किस तरह उसे दबा पाता हूँ। अभ्याससे यह आदत प्रत्येक मनुष्य डाल सकता है और निरन्तर अभ्याससे उसमे उसे सफलता भी मिल सकती है।

**आपने अपने अन्तरमें दीन-दुखियोंके प्रति प्रेमका अनुभव कब किया? क्या आप मुझे वह समय अथवा प्रसंग बतला सकेंगे?**

१. हरिजन सेवक संघके महामंत्री।
२. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

आदिसे ही दीन-दुखियोके प्रति प्रचुर प्रेम मेरे जीवनका अभिन्न अंग रहा है। अपने अतीत कालके जीवनमें से दृष्टान्त देने बैठूं तो मै बतला सकता हूँ कि मेरा यह स्वभाव एक जन्मजात वस्तु है। यह मैंने कभी माना नही कि मेरे और गरीबोके बीचमें किसी तरहका कोई भेद है। उन्हें सदा अपना सगा-सम्बन्धी ही माना है।

**गन्दगी और कूड़ा-करकट क्या आपके मनमें घृणा पैदा नहीं करते?**

मेरे मनमें गन्दे लोगोके लिए तो घृणाकी भावना पैदा नही होती, पर गन्दगी देखकर मै काँप जाता हूँ। मै गन्दी थालीमें नही खा सकता, न गन्दा चम्मच या रूमाल छू सकता हूँ। पर कचरेको उसके योग्य स्थानपर ले जाकर डाल देना मै ठीक समझता हूँ। वहाँ वह कचरा कचरा नही रहता।[1]

यह मुझे जरूर लगता है कि भिक्षावृत्तिको प्रोत्साहन देना अच्छा नही; तो भी मैं भिखारीसे काम लेकर उसे भोजन दिये बिना नही जाने दूँगा। अगर वह काम न करे तो उसे भूखा चला जाने दूंगा। जो अपग है, लूले-लँगड़े या अन्धे है उनकी परवरिश सरकार को करनी चाहिए। पर अन्धेपनके ढोगके नामपर या सचमुचके अन्धेपनके नामपर आज भारी दगाबाजी चल रही है। कितने ही अधे अनुचित रीतिसे पैसा पैदा करके धनी बन गये है। उन्हें इस लोभ-पकमे फँसानेसे तो यह कही अच्छा है कि उन्हे किसी अनाथाश्रममें भरती कर दिया जाये।

**क्या आप लोगोंका धर्मान्तरण करनेके लिए मिशनरियोंके भारत-आगमनपर रोक लगा देना चाहेंगे?**

उन्हें रोकनेवाला मै कौन होता हूँ? अगर मेरे हाथमे सत्ता हो और मै कानून बना सकूं तो मै धर्मान्तरणका यह सारा कारोबार ही बन्द करा दूं। इससे वर्ग-वर्गके बीच निश्चय ही निरर्थक कलह और मिशनरियोके बीच बेकारका द्वेष बढता है। यो किसी भी राष्ट्रके लोग शुद्ध सेवा-भावसे आये तो मै उनका स्वागत करूँगा। हिन्दू-कुटुम्बोमें मिशनरीके प्रवेशसे वेश-भूषा, रीति-रिवाज, भाषा और खानपानतक में परिवर्तन हो गया है और इस सबका नतीजा यह हुआ है कि सुन्दर हरे-भरे कुटम्ब छिन्न-भिन्न हो गये।

**आप जो कहते है वह तो पुराने जमानेकी बात है। अब धर्म-परिवर्तनके साथ इन सब चीजोंका सम्बन्ध नहीं है।**

बाह्य स्थिति शायद बदल गई होगी, पर आन्तरिक स्थिति तो अधिकतर अब भी वैसी ही है। हिन्दू-धर्मकी निन्दा दबी जबानसे आज भी की जाती है। मिशनरियो की दृष्टिमे अगर आमूल परिवर्तन हो गया होता तो क्या आज भी मिशनोकी दुकानो पर मरडोककी किताबे बिकने दी जाती? क्या मिशनरियोंके सघोने किताबोके बेचे जानेकी मनाही कर दी है? इन किताबोमे सिवा हिन्दू-धर्मकी निन्दाके और है ही क्या? आप कहती है कि उस पुरानी कल्पनाके लिए अब स्थान नही रहा। अभी कुछ ही दिन हुए, एक मिशनरी एक दुर्भिक्ष-पीड़ित अचलमें पैसा लेकर पहुँच गया, अकाल-पीड़ितोको उसने पैसा बाँटा, उन्हे ईसाई बनाया; फिर उनका मन्दिर हथिया

१. यहाँ महादेव देसाई लिखते हैं कि इसके बाद मुलाकातीने भिखारियोंकी समस्याकी चर्चा छेड़ी।

लिया, और उसे तुड़वा डाला। यह अत्याचार नही तो क्या है? जिन हिन्दुओने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था उनका अधिकार तो उस मन्दिरपर रहा नही था, और ईसाई मिशनरीका भी उसपर कोई हक नही था। पर वह मिशनरी वहाँ पहुँचता है, और जो लोग कुछ ही समय पहले यह मानते थे कि उस मन्दिरमे ईश्वरका वास है, उन्हीके हाथसे उसे तुड़वा डालता है।

**पर गांधीजी, आप धर्म-परिवर्तन-मात्रके विरुद्ध क्यों हैं? हम तो लोगोंको और भी अच्छा जीवन बितानेके लिए आमन्त्रण देते हैं; क्या उसके लिए बाइबिलमें प्रमाण नहीं है?**

हाँ, है; पर उसका यह अर्थ नही है कि उन्हें आप ईसाई धर्ममे दीक्षित कर ले। आप अगर अपने धर्मवचनोका ऐसा अर्थ करने लग जाये जैसाकि किया जा रहा है तो इसका यह मतलव हुआ कि आप लोग मानव-समाजके उस विशाल हिस्सेको पतित मानते है जिसका विश्वास वैसा नही है जैसा आपका है। ईसा मसीह यदि आज पृथ्वीपर पुन. अवतीर्ण हो तो ईसाई धर्मके नामपर जो बाते आज हो रही है उनमे से वहुत-सी वातोको वे निषिद्ध ठहरा दे। जो मुखसे 'प्रभो, प्रभो' उच्चारण करता है, वह ईसाई नही है; सच्चा ईसाई वह है जो "प्रभुकी इच्छाके अनुसार आचरण करता है"। जिस मनुष्यने ईसा मसीहका नाम नही सुना, क्या वह प्रभुकी इच्छाके अनुसार आचरण नही कर सकता?

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, ११-५-१९३५

## ६९. घोर दुर्व्यवहार

करीव चार महीनेसे मै हरिजन सेवक सघकी ओरसे एक वस्तीमे काम कर रहा था। मेरे काम शुरू करनेसे पहले नैतिक अपराध करनेपर एक हरिजनको वस्तीसे निकाल दिया गया था। एक दिन वह हरिजन अपने लडकेको, जो हमारी पाठशालामे पढ रहा था, देखने वस्तीमें वापस आया। मैने उसे अपने साथ ठहरा लिया। रातमे वह पाठशालाके ओसारेमे पड़ा हुआ था। मै किसी कामसे वाहर गया था। इस वीच जिसे उसने फुसलाया था उस औरतके पाँच नजदीकी नातेदार और कुछ तथाकथित सवर्ण हिन्दू-वहाँ चढ आये, और विवाहित स्त्रीको फुसलानेके उस पुराने अपराधपर उस हरिजनको उन लोगोने वहुत वुरी तरह पीटा, और घसीटकर उसे ओसारेसे वाहर कर दिया। ज्यो ही मुझे इसका पता लगा, मै उन लोगोके पास पहुँचा, जिन्होने कानूनको अपने हाथमे ले लिया था। मैने उनके उस दुर्व्यवहारका विरोध किया, और उस हरिजनको फिरसे वस्तीमे दाखिल कर लेनेके लिए उनसे कहा। उन्होने साफ इन्कार कर दिया। इसलिए मैने वहाँ रहना ठीक नही समझा, और उस गाँवको छोड़कर चला आया।

एक लम्बे पत्रका यह बहुत ही संक्षिप्त रूप है। इस बयानकी सत्यताका मैं कोई दावा नही कर सकता। किन्तु जैसा कहा गया है, वह यदि सही है, तो निश्चय ही लोगोका उस हरिजनको उस तरह पीटना एकदम अनुचित था। अगर उसने कोई जुर्म किया था तो उसपर मुकदमा चलाना चाहिए था। पर इस तरह कानूनको खुद अपने हाथमे ले लेनेका, खुद ही मुसिफ बन जानेका किसीको कोई अधिकार नही था। जो बस्ती इतना मामूली-सा इन्साफ करनेको भी तैयार नही थी, वहाँ इस हरिजन-सेवकने न रहना मुनासिब समझा तो अच्छा ही किया। मैं आशा करता हूँ कि यह मामला स्थानीय संघके आगे रखा गया होगा और संघने इस बातका प्रयत्न किया होगा कि लोग उस हरिजनके प्रति सद्व्यवहार करने लगे। इस सारे मामलेकी तहकीकात बहुत अच्छी तरह होनी चाहिए। ऐसे मामले शायद अक्सर और काफी तादादमें होते रहते है। यह हरिजन-सेवकोका काम है कि एक ओर तो वे अत्याचार-पीडितोकी रक्षा करे, और दूसरी ओर जहाँ उनके चरित्रमे कोई दोष देखे वहाँ उन्हे सदाचारका मार्ग दिखाये। अपराधियोकी कोई खास जाति नही होती। दूधका धोया कोई नही है। अपराधियोके हृदयपर केवल सुयोग्य और सच्चरित्र जन-सेवकोका ही प्रभाव पड सकता है।

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, ११-५-१९३५

## ७०. हरिजनोंके लिए कुएँ

बम्बई-सरकारने बम्बई सूबेमे हरिजनोके लिए कुएँ बनवानेका जो निर्णय किया है, उसके लिए उसे धन्यवाद दिया जाना चाहिए। कामको देखते हुए तो उसके लिए रकम बहुत ही कम रखी गई है। यह तो हम सबको भलीभाँति विदित है कि वर्षोसे कांग्रेस द्वारा स्थापित भूतपूर्व अस्पृश्यता-निवारक बोर्डकी तरफसे, और अब सन् १९३२ से हरिजन सेवक संघकी ओरसे गुजरातमें हरिजनोके लिए कुएँ बनवाये जा रहे हैं। संघका कूप-निर्माणका कार्यक्रम काफी व्यापक है। चुपचाप काम करनेवाले महान् जन-सेवक श्रीयुत जूथाभाईने भी इस सुन्दर धर्म-कार्यपर ध्यान देनेका निश्चय किया है। क्या ही अच्छा हो कि इस एक ही उद्देश्यको लेकर काम करनेवाली भिन्न-भिन्न संस्थाओमें पूरा-पूरा सहयोग रहे। अगर सहकारी प्रयत्न सम्भव न हो, तो कमसे-कम श्रम और कार्यक्षेत्रका विभाजन तो होना ही चाहिए। किसी भी अवस्थामें जो-कुछ भी काम किया जाये उसमे यह ध्यान रहे कि काम शीघ्रता से हो, अच्छा हो, और पैसा कमसे-कम खर्च हो। सस्तेसे-सस्ता काम तो तभी हो सकता है, जब हरिजन हिन्दू या सवर्ण हिन्दू अथवा दोनो ही स्वेच्छापूर्वक इस धर्म-कार्यमे अपने शारीरिक श्रमका योग दें।

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, ११-५-१९३५

## ७१. एक ग्राम-सेवकके प्रश्न

एक ग्राम-सेवक लिखता है:

१. सौ-एक घरके एक छोटे-से गाँवमें मैं काम कर रहा हूँ। आपने कहा है कि दवा-दारू देनेके पहले ग्राम-सेवकोंको स्वच्छतापर ध्यान देना चाहिए। लेकिन जब कोई ज्वर-पीड़ित ग्रामवासी मदद माँगने आये, तब ग्राम-सेवकका क्या कर्त्तव्य है? अबतक तो मैं उन्हें गाँवकी दुकानोंमें मिलनेवाली देशी जड़ी-बूटियोंको ही काममें लानेकी सलाह देता आया हूँ।

२. बरसातके दिनोंमें मैलेका क्या करना चाहिए?

३. मैला क्या सभी फसलोंमें काम दे सकता है?

४. शक्करके बजाय गुड़ खानेमें क्या लाभ है?

जहाँ ज्वर, कब्ज या इसी प्रकारके सामान्य रोगोके रोगी ग्राम-सेवकोकी मदद लेने आये, वहाँ वे उनकी जो मदद कर सके, जरूर करे। रोगका निदान अगर सही हो गया हो तो बेशक गाँवमे उस रोगकी सस्तीसे-सस्ती और अच्छीसे-अच्छी दवा मिल जायेगी। दवाइयाँ कोई अपने पास रखना ही चाहता है तो अण्डीका तेल, कुनैन और उबला हुआ गरम पानी सबसे बढ़िया दवाइयाँ है। अण्डीका तेल सभी जगह मिल सकता है। सनायकी पत्तीसे भी वही काम निकल सकता है। कुनैनका कम ही उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक प्रकारके ज्वरमे कुनैन देनेकी जरूरत नही और न प्रत्येक ज्वर कुनैनसे काबूमे आता ही है। अधिकांश ज्वर तो पूर्ण या अर्ध-उपवाससे ही शान्त हो जाते हैं। अन्न और दूधको छोड़ देना और फलोका रस अथवा मुनक्के का उबला हुआ पानी लेना और नीबूके ताजे रस या इमलीके साथ गुडका उबला हुआ पानी लेना भी अर्ध-उपवास है। उबला हुआ पानी तो रामबाण औषधि है। आँतोको वह खलबला डालता है और पसीना लाता है, जिससे बुखारका जोर कम हो जाता है। यह एक ऐसी रोगाणुनाशक औषध है, जिसमे किसी भी तरहकी जोखिम नही और सस्ती इतनी कि एक कौड़ी भी खर्च नही होती। हर हालतमे जब भी पानी पीना हो तो उसे कुछ सिराकर पीना चाहिए। उतना ही गरम पीना चाहिए जितना अच्छी-तरह सहन हो सके। उबालनेका मतलब सिर्फ गरम करना नही है। पानीमे जब बुलबुले उठने लगे और उससे भाप निकलने लगे, तभी उसे उबला हुआ समझना चाहिए।

जहाँ ग्राम-सेवक खुद किसी निश्चयपर न पहुँचें वहाँ रोगीको पूरी तरह स्थानीय वैद्य पर छोड़ देना चाहिए। जहाँ वैद्य न हो अथवा हो तो भरोसेका न हो और ग्राम-सेवक पड़ोसके किसी परमार्थी डॉक्टरको जानते हों, तो उससे जरूर मदद लेनी चाहिए।

पर वे देखेंगे कि रोगके उपचारमें भी स्वच्छताका स्थान सबसे महत्त्वका है। उन्हे यह याद रखना चाहिए कि सर्वश्रेष्ठ वैद्य तो प्रकृति ही है। इस बातका वे विश्वास रखे कि मनुष्य जिसे बिगाड़ देता है, प्रकृति उसे सँवारती रहती है। लाचार तो वह उस समय मालूम पडती है जब मनुष्य लगातार उसकी अवहेलना करता है। तब जो असाध्य हो जाता है, उसे नष्ट कर डालनेके लिए वह अपने अन्तिम और अटल दूत मृत्युको भेजती है और उस देहधारीको नया चोला पहना देती है।

२. बरसातके दिनोमें भी गाँववालोको ऐसी जगहोपर शौच करना चाहिए जहाँ मनुष्यके आने-जानेका रास्ता न हो। मैलेको गाड जरूर देना चाहिए। पर ग्रामवासियो को परम्परासे जो भ्रामक शिक्षा मिली है, उसके कारण मैलेको गाडनेका यह प्रश्न सबसे कठिन है। सिंदी गाँवमें हम लोगोको यह समझानेका प्रयत्न कर रहे हैं कि वे सडकोपर पाखाना न करे बल्कि पासके खेतोमें जाये और अपने पाखानेपर सूखी-साफ मिट्टी डाल दिया करे। दो महीनेकी लगातार मेहनत और नगरपालिकाके सदस्यो तथा दूसरे लोगोके सहयोगका इतना परिणाम तो हुआ है कि वे साधारणतया सड़कोको खराब नही करते। इसके बजाय पासके खेतोमे चले जाते हैं और उन खेतोके मालिकोने भी उन्हे इसके लिए अपने खेतोके इस्तेमालकी इजाजत देनेकी भलमनसाहत दिखाई है। मगर लोगोसे कितना ही क्यो न कहा जाये, मिट्टी तो वे अब भी अपने मल-मूत्रपर नही डालते। पूछिए तो यह जवाब देते हैं कि यह तो भगीका ही काम है, मैलेको देखना ही पाप है, फिर उसपर मिट्टी डालना, यह तो घोर पाप हुआ। उन्हे शिक्षा ही ऐसी मिली है। यह विचित्र विश्वास उसी शिक्षाका फल है। इसलिए ग्राम-सेवकोको सिर्फ नव-संस्कारकी ही रचना नही करनी है। ग्रामवासियोके हृदयपर नया संस्कार जमानेके पहले ग्राम-सेवकोको उनके इन रूढिगत संस्कारोको एकदम मिटा देना होगा। अगर हमारा अपने कार्यक्रममें दृढ़ विश्वास है, अगर हममे नित्य सवेरे झाड़ू आदि लगानेका काम चलाते रहनेका पर्याप्त धैर्य है और सबसे बडी बात यह कि अगर हम गाँव-वालोके इन कुसंस्कारोपर चिढते नही है, तो उनके ये सब मिथ्या विश्वास इस प्रकार लुप्त हो जायेंगे, जिस प्रकार सूर्यके प्रकाशसे कोहरा नष्ट हो जाता है। युगोका यह वज्र-अज्ञान कही आपके दो-चार महीनेके पदार्थ-पाठसे दूर हो सकता है?

सिंदी गाँवमे हम वर्षाका सामना करनेकी भी तैयारी कर रहे हैं। अपनी खेतीकी रखवाली तो किसान करेंगे ही। तब इस तरह वे लोगोको शौचके लिए अपने खेतोमें थोड़े ही आने देंगे, जिस तरह अभी आने देते है। हमने लोगोके सामने यह तजवीज रखी है कि वे खेतीकी हदबन्दीके अन्दर कुछ जमीनको बिलकुल अलग करके उसमे बाड़ लगाये। वे जो चन्द फुट जमीन छोड देंगे उसमे चौमासेके अन्तमें काफी खाद तैयार हो जायेगी। वह वक्त आ रहा है जब खेती करनेवाले खुद ही लोगोसे अपने खेतोमे शौच करनेको कहेंगे। अगर डॉ० फाउलरके हिसाबको मान ले तो किसी भी खेतमे बिला नागा शौच-क्रिया करनेवाला मनुष्य वर्षमें दो रुपयेकी खाद उस खेतको दे देता है। ठीक दो ही रुपयेकी खाद हासिल होती है या कुछ कम-ज्यादा, इसमें सन्देह हो सकता है; पर इसमें जरा भी सन्देह नही कि मल-मूत्रके सचयसे खेतको फायदा होता है।

३. यह सलाह तो किसीने दी नही है कि मैला ज्यो-का-त्यो सभी फ़सलोके लिए बतौर खादके काममे आ सकता है। मतलब सिर्फ इतना है कि मैला मिट्टीके साथ मिलकर एक नियत समयके बाद सुन्दर खादमे परिणत हो जाता है। मिट्टीमे मिलनेके बाद मैला कई प्रक्रियाओसे गुजरता है; तभी वह जमीन जोतने-बोने लायक होती है। जहाँ मैला दबाया गया हो, उस जमीनको नियत समयके बाद खोदनेपर अगर मिट्टीसे कोई दुर्गन्ध न आती हो और उसमे मैलेका नामोनिशानतक न हो तो समझ लेना चाहिए कि उस जमीनमे अब बीज बोया जा सकता है। मै पिछले तीस सालसे इसी प्रकार मैलेकी खादका उपयोग हर तरहकी फसलके लिए करता रहा हूँ और इससे अधिकसे-अधिक लाभ हुआ है।

४. इस बातको सभी विशेषज्ञ एक स्वरसे मानते है कि शक्करसे गुड़ अधिक ताकतवर है, क्योकि गुडमे जो क्षार और विटामिन है, वे शक्करमे नही है। जिस प्रकार मिलके 'पिसे-छने आटेसे चक्कीका बिना छना आटा अथवा पालिशदार चावलसे बिना कुटा, बिना पालिशका चावल अच्छा होता है, उसी प्रकार शक्करके मुकाबले गुड तो अच्छा होगा ही।

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, ११-५-१९३५

## ७२. पत्र : टी० प्रकाशम्‌को

वर्धा
११ मई, १९३५

प्रिय प्रकाशम्,

मैंने आपकी टिप्पणी पढ ली है। मै वस्तु-विनिमय-प्रणालीमे विश्वास करता हूँ। वह केवल ग्रामीण समाजपर लागू हो सकती है। प्रणाली है ही कुछ इस ढगकी कि वह छोटे-छोटे मानव-समुदायोके बीच ही चल सकती है। ग्राम-आन्दोलन अगर सफल होता है[१] तो उसका यही परिणाम निकलना चाहिए कि गाँवोके लोग अपनी-अपनी वस्तुओका परस्पर विनिमय करने लगे। इसका प्रचार केवल उपदेश देनेसे नही, बल्कि जहाँ भी मुमकिन हो, इसे अमली रूप देनेसे ही होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२४५) से।

१. मूलमें इस वाक्यांशके कुछ शब्द पढे नहीं जा सके। इसे अनुमानसे पूरा करके अनुवाद किया गया है।

## ७३. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

११ मई, १९३५

प्रिय जयरामदास,

यह सब क्या है? आनन्दका[1] क्या रहा? तुम्हारा कैसा चल रहा है? क्या तुम चाहते हो कि मैं आनन्दको अदायगी करना फिर शुरू कर दूँ? तुम अपने कार्य-कलापकी जानकारी मुझे अवश्य देते रहना।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मलकानी यहीं है। साँपके काटनेकी बातको लेकर चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं।[2]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९७१४) से, सौजन्य: जयरामदास दौलतराम

## ७४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

११ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुम अपने लडकेकी शादीकी चिन्ता बेकार ही करती जान पडती हो। यह तो बिलकुल ऐसा मामला है जो तुम्हे पूरी तरह माता-पितापर छोड देना चाहिए। वे जैसा ठीक समझेंगे वैसा करेंगे। यह बात कठिन है। लेकिन लगता है, उन्होंने हर कठिनाईपर पार पा लिया है। तुम्हे चिन्तासे बचना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजीसे: अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. आनन्द टी० हिंगोरानी।

२. देखिए "पत्र: अमृतलाल वि० ठक्करको", ११-५-१९३५ और "पत्र: जमनालाल बजाजको", १३-५-१९३५।

## ७५. पत्र : जमनालाल बजाजको

[११ मई, १९३५][1]

चि० जमनालाल,

तुम्हारे पत्र मिले। महादेव वल्लभभाईके बुलाने पर बोरसद गया है। दो-चार दिनमें वापस आयेगा। मेरीबहन बहुत बीमार हो गई थी। इटारसीके अस्पतालमें थी। उसका ८७ रुपयेका बिल मैंने चुका दिया है। सम्भव है, उसे क्षय हो गया हो। इटारसीकी डाक्टरनी कहती है, उसे मिरज भेजना चाहिए। अभी तो वह बैतूलमें है।

मुझे शायद २४को बोरसद जाना पड़ेगा। कमलासे मिलने बम्बई तो जाना ही होगा, सो २१को यहाँसे रवाना हो जाऊँगा।

किशोरलाल और गोमती कल आये। गोमतीको थोड़ा बुखार आया, इससे कमजोर हो गई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठक १८को यहीं रखी गई है।

रामकृष्णका काम चल रहा है। लगता है, ओम[2] अपने काममें डूबी हुई है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सम्मेलनमें एक लाख नहीं मिला, यह तो जानते हो न? जिसे ठीक समझो, उसे लिखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६८) से।

१. जमनालाल बजाजने साधन-सूत्रमें इस पत्रकी प्राप्ति-तिथि १४-५-१९३५ दी है। किशोरलाल मशरूवाला और उनकी पत्नी वर्धा १० मई, १९३५को पहुँची थीं। देखिए "पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको", १३-५-१९३५ भी।

२. उमा, जमनालाल बजाजकी पुत्री।

# ७६. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको[1]

११ मई, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

. . .[2] के बारेमे मुझे तो पहलेसे ही सन्देह था। मुझे उसका काम साफ नही लगा। ढोरोसे जो मिला, उसमे से शुक्ल आदिकी राय विरुद्ध होते हुए भी कुछ देना शायद ठीक नही होगा। अत यदि आपको उसके ऊपर पूरा भरोसा हो, तो जो दूसरा पैसा मेरे नाम पडा है, उसमे से दे दीजिए।

मलकानीके सम्बन्धमे कल ही तो तार किया था। आज दूसरा करना पड़ा। वह नालवाडी काम देखने गया था। वहाँसे लौटते हुए अँधेरेमे किसीने[3] काट लिया। साथमें . . आदि थे। उन्होने . . . स्थानपर रखा। वाहन मिलनेपर अस्पताल ले गये। वहाँ चीरा लगाकर लहू निकाला गया। . . . रात ठीक बीती। . . . दो-एक दिन तो अस्पतालमे लगेंगे ही। इसके सिवा मुझे लगता है कि आप दोनोमें से कोई दिल्लीमें न हो, यह ठीक नही है। आप देख आये हो उस . . परसे जो अमलमे लाना हो . . आपकी गैरहाजिरीमे जो हुआ हो . . योजना बनाई जाये, आदि बहुत आवश्यक है। कुएँका एक . तो है ही। ऐसे अन्य भी बहुत काम होने चाहिए। . . अत. मेरे सुझावोपर विचार कीजिएगा। मैंने तो मलकानीसे भी कल यही कहा था, और फिर आपको तार किया। किन्तु इसमे आपको कोई वैचारिक दोष दिखाई दे, तो मुझसे पूछिएगा।

चन्द्रशकरको आपने जो जवाब लिखा है, उससे सम्बद्ध अपना विचार[4] मैने आपको कल भेजा है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २२७६५) से।

१. पेन्सिलसे लिखे इस पत्रकी फोटो-नकल बहुत धुँधली है और उसमें कुछ शब्द पढ़े नहीं जाते। फोटो-नकलके साथ पत्रकी एक अपूर्ण प्रतिलिपि भी नत्थी है। यह प्रतिलिपि शायद मूलके आधारपर तैयार की गई है। अनुवाद उसी प्रतिलिपिसे किया गया है। इसी कारण अनुवादमें यत्र-तत्र स्थान रिक्त छोड़ने पड़े हैं।

२. नाम छोड़ दिया गया है।

३. साँप; देखिए "पत्र : जयरामदास दौलतरामको", ११-५-१९३५।

४. देखिए "पत्र : अमृतलाल वि० ठक्कर को", १०-५-१९३५।

## ७७. पत्र : कासिम अलीको

११ मई, १९३५

भाई कासिम अली,

'शिवा बावनी'[1] के बारेमे मैंने तजवीज की थी अवी भी हो रही है।

ग्राम उद्योग सघके तरफसे तुमको उत्तर दे दिया है। ग्राम उद्योगके काममे किसीको रुकावट तो है ही नही।

दरमाह तो दिया नही जाता है।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५१) से।

## ७८. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
१२ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारे पत्र पढ गया — मेरे नाम लिखा पत्र, ठक्कर बापाको लिखा पत्र और 'रोशनी'[2] मे लिखा लेख भी। भाई जीवणलालसे[3] भी बात की। उस समय भाई नानालाल उपस्थित थे। बापाको लिखा तुम्हारा पत्र और 'रोशनी' मे लिखा तुम्हारा लेख मुझे ठीक नही लगा।

तुम्हारे कामकी मर्यादा तय कर दिये जानेकी जरूरत मै मानता हूँ। तुम्हारी स्वतन्त्रताकी रक्षा होनी चाहिए। जो वैमनस्य चल रहा है, उसका कारण मुझे केवल लोगोके स्वभावकी भिन्नता दिखाई देती है। सघसे तुम्हारे निकल जानेमे मुझे कोई लाभ दिखाई नही देता और न भाई जीवणलालके निकल जानेमे ही। अमीर और गरीब साथ मिलकर काम न कर सके, यह हमारे लिए शर्मकी बात है। भाई जीवण-

१. शिवाजी की प्रशस्ति में लिखा भूषणका काव्य-ग्रन्थ।

२. उन दिनों सौराष्ट्रसे प्रकाशित होनेवाला एक गुजराती साप्ताहिक।

३. जीवणलाल मोतीचन्द शाह; कलकत्ताके एक उद्योगपति, जिन्होंने गांधीजी को खादी और हरिजन-विषयक प्रवृत्तियोंके लिए आर्थिक सहायता दी थी।

लाल तुम्हे सहन करें और तुम उन्हें सहन करो, ऐसा होना चाहिए। भाई जीवणलालसे सलाह किये बिना तुम कुछ करना चाहते हो, ऐसा तो मुझे मालूम नही होता। और मुझे यह भी नही लगता कि जीवणलाल तुम्हारे साथ सलाह-मशविरा नही करना चाहते। इसलिए आज तो मैं इतना ही लिखकर निवटाना चाहता हूँ कि तुम दोनों यह निश्चय कर लो कि जिस तरह सगे भाई साथ मिलकर काम करते हैं उसी तरह तुम दोनोको भी साथ मिलकर ही काम करना है। मैंने भाई जीवणलालसे भी यही कहा है। यह पत्र भी उन्हें दिखा दिया है। इसकी नकल ठक्कर बापाको भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३०) से।

## ७९. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

१२ मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुमारा खत और रु० ११० मिले। कृष्णाके लिये चिंता कुछ भी न की जाय। मुझे ठंडे प्रदेशमे जानेकी आवश्यकता नही है। और यहा काम इतना पड़ा है कि मैं निकल भी नही सकता।

एकादश व्रत है वह देश सेवाके साधन है। इसलिये देश सेवा व्रतमें नही रखी गई।[1]

पिताजी को शीघ्र पहाड़में ले जाओ।

बापुके आशीर्वाद

मूल से. अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य. नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए पृ० ४०।

## ८०. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
१३ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मैंने सी० एफ० ए[न्ड्रयूज]को दिखा दिया है। वे शायद इस महीनेकी २५ तारीखसे पहले तुम्हारे यहाँ नही पहुँच सकेंगे। सेरेसोल[1] तथा विलकिन्सन[2] १६ तारीखको यहाँ आ रहे हैं। वे २३ तारीखको समुद्री मार्ग द्वारा यूरोपके लिए रवाना होंगे।

तुमने जो दो किस्मके नमूने यहाँ छोड़े थे वैसे कुछ और लिफाफे तथा पत्र लिखनेके कागज मैं बनवा रहा हूँ। अगर तुम्हे और भी किसी किस्मके चाहिए तो उसके नमूने भेज दो। मैं तुम्हे और अधिक तभी भेजूंगा जब तुम्हारा ऑर्डर आयेगा। मैं तुम्हारे लिए उनका स्टाक रखूंगा। जो पैकेट तुम्हे भेजा गया है, उसके दाम तुम यहाँ आनेपर अदा करोगी।

आशा है, मैं कुछ ही दिनोमे काफी मात्रामे पूनियाँ भेज दूंगा।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६३४१ से भी

१. पियरे सेरेसोल, स्विट्जरलैंडके एक इंजीनियर और इंटरनेशनल वॉलंटरी सर्विस (अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल) के अध्यक्ष। १९३४ में सी० एफ० एन्ड्रयूजकी अपीलपर बिहारके भूकम्प-पीड़ितोंके लिए राहत-कार्य करनेके लिए ये भारत आ गये थे।

२. जो विलकिन्सन भी सी० एफ० एन्ड्रयूजके कहनेपर ही भारत आये थे।

## ८१. पत्र : जमनालाल बजाजको

१३ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

राधाकृष्णके[1] नाम तुम्हारा पत्र मिला है। मेरा विश्वास है कि तुम्हे इस तरहके काममें पड़नेकी कोई जरूरत नही है। यह काम अब लगभग समाप्त हो गया जान पड़ता है। तुम्हारा कर्त्तव्य वहाँ रहकर शरीरको पूरी तौरसे स्वस्थ कर लेना है। जूनके अन्ततक नीचे उतरना ही नही है। जो-कुछ हुआ है, वह विपरीत तो हुआ है, पर उसमे ऐसी उलझने है कि बीचमे पड़नेसे बहुत सार नही निकल सकता। जो-कुछ हो रहा है, सो होते रहने देना ठीक है। दूर बैठकर जो सलाह दी जा सकती है, सो हम दे।

इन्दौरसे कुछ नही मिला, यह लिख चुका हूँ।[2] अब तुम्हे जिनको लिखना हो उन्हे लिखो।

. . . की[3] बात समझता हूँ। उसे लिखा मेरा पत्र तुम्हे मिल गया होगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठक यहाँ १८ तारीखको होगी। सदस्योको बँगलेमे ठहरानेके लिए राधाकृष्णसे कह दिया है।

एन्ड्रचूज यही है। उन्हे मगनवाडीमे ठहराया है। मलकानी भी यही है। उसे साँपने काट लिया था। वह भी अब ठीक है, क्योकि तुरन्त उपचार किया जा सका था।

[पुनश्च]

मदालसाका पत्र नियमित रूपसे मिलना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६७) से।

१. राधाकृष्ण बजाज; जमनालाल बजाजके भतीजे।

२. देखिए पृ० ५५।

३. नाम छोड़ दिया गया है।

# ८२. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१३ मई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। आखिर मेरे सूतका कपड़ा समयपर तैयार नही ही हुआ। किसी दिन तो हो ही जायेगा।

फीनिक्ससे मैंने जिस तरह रोगको निकाल बाहर किया, उसी तरह तुम भी कर सकते हो। केवल भोजनमे और खेतकी उपजमें रद्दोबदल कर देनेसे रोग चला गया था। मलेरिया तो शायद ही कभी होता था। उन दिनो दूध तो हम लोग लेते ही नही थे।

तुम्हे क्या रद्दोबदल करनी चाहिए, यह तो तुम्हीको सोचना पडेगा। किशोर-लाल, गोमती और अनसूया[1] तीन दिन पहले ही यहाँ आये है। छुट्टी पूरी होने पर अनसूया चली जायेगी। सफरमे किशोरलालकी तबीअत कुल मिलाकर ठीक ही रही।

रामदास बम्बईमे बस जाने के लिए खट रहा है। उसने भी छापाखानेमे काम करना शुरू कर दिया है।

हरिलालको पुनर्विवाह करना है, इसलिए वह राजकोट गया है। वहाँ प्रयत्न करेगा और कोई कन्या भी खोजेगा। और तरहसे तो वह ठीक लगता है।

कान्ति,[2] कनु[3] अभीतक तो यही है। एन्ड्रूयूज परसो आये। देवदास दिल्लीमे है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

ठक्करबापा ने गोकलदास गराचको पहुँच भेजी होगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३७)से।

१. हरिलाल गांधीकी दौहित्री।

२. हरिलाल गांधीके पुत्र।

३. नारणदास गांधीके पुत्र।

## ८३. पत्र : महावीर गिरिको

१३ मई, १९३५

चि० महावीर,

तेरे पत्रको विवाहका निमन्त्रण मानूं न? मैत्री,[1] दुर्गा,[2] सत्यदेवीके[3] पत्र भी मिले हैं। सबको अलग-अलग जवाब देनेका समय नहीं है। दुर्गा और उसके पति दीर्घायु हों, सादा और सेवामय जीवन वितायें तथा आश्रमका नाम ऊंचा करें, यही मेरी इच्छा और आशीर्वाद है। शादीके बाद दुर्गा मुझे भूल न जाये।

मैत्रीको अपना कब्ज दूर करना चाहिए। उसका ब्याह कब होगा? रक्तके सगे न हों, तो चिन्ता मत करना। हमें तो सबको अपना सगा समझना चाहिए। सगा और पराया, ये सब भेद मनकी मान्यता है।

सत्यदेवीने मेरा अच्छा मजाक उड़ाया है। लगता है, मैं जब उसकी हस्तलिपि की आलोचना करता था, उसकी याद दिला रही है। ऐसा लिखकर उसने मुझे हरा दिया, मुझसे यही कहलाना चाहती है न? मैं तो चाहता हूं, इसी प्रकार सब मुझे हरायें। वह जैसी चतुर है, वैसी ही पवित्र बने और रहे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं २२ तारीखको बम्बईमें रहूंगा, उस समय तुम सब मुझसे मिनट-दो मिनटके लिए मिल सकोगे। उसी रात मैं बोरसदके लिए रवाना हो जाऊंगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२४२) से।

१, २ व ३. महावीर गिरिकी बहनें।

## ८४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१३ मई, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। उपाय यह हो सकता है कि गहने अथवा उनके पैसे तेरे लिए पिताजी मुझे सौंप दें।[1] इसका अर्थ यह हुआ कि उससे जो मासिक आय हो वह मैं तेरे लिए काममें लूं। तेरी मृत्युके बाद आश्रमके ट्रस्टी उसका उपयोग आश्रमके लिए करें। ऐसा करनेमें तुझपर कोई दोष नहीं आता। तू तो अपना जीवन ईश्वर पर ही अवलम्बित रखती है। पिताजी के और मेरे बीच जो समझौता हो उसके प्रति तू अलिप्त रह सकती है। मीराबहनका यही तो होता है। उसके लिए १५० से २०० पौंड आते हैं। वे आश्रमके खातेमें जाते हैं। उसका खर्च आश्रम उठाता है। मेरे सुझावसे पिता निर्भय रह सकते हैं, और तू अलिप्त रह सकती है।

मैं वहाँ २२ तारीखको आऊँगा। उसी रातको बोरसदके लिए रवाना हो जाऊँगा। तू बम्बईमें तो मिलेगी ही। परन्तु बोरसद आना हो तो आ सकती है। वर्धा तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

क्या किसन[2] घोड़ेकी तरह मजबूत हो गई? सुशी[3] . . .[4] दिखाई पड़ती है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७२) से। सी० डब्ल्यू० ६८११ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक

१. प्रेमाबहन कंटकके पिता और पितामहकी इच्छा थी कि माँ के छोड़े गहनोंका न्यास बनाकर प्रेमाबहनके लिए नियमित आमदनीका प्रबन्ध कर दिया जाये। प्रेमाबहन यह नहीं चाहती थीं। वे गहनोंकी बिक्रीसे प्राप्त होनेवाली पूरी राशि गांधीजी को दे देना चाहती थीं।

२. किसन घुमतकर।

३. सुशीला पै।

४. साधन-सूत्रमें अस्पष्ट है।

## ८५. पत्र : ठाकुरप्रसाद शर्माको

१३ मई, १९३५

भाई ठाकुरप्रसाद शर्मा,

दोष छुपाकर हम इत्तेफाक नही वढा सकते है। यदि दोनो पक्ष मिलकर पच नियत करे तो अदालत छोडे। यदि ऐसे नही हो सकता है तो अदालती न्याय लेनेकी कोशीश करनेमे कोई दोष नही माना। ऐसे कामोमे कोई निश्चित सिद्धान्त नही हो सकता है। प्रत्येक केसका निर्णय उसके गुण-दोषपर निर्भर रहता है।

मो० क० गांधी

श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा
जालपा देवी
वनारस सिटी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १५६) से। सी० डब्ल्यू० ९७५४ से भी; सौजन्य : भारत कला भवन

## ८६. पत्र : हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मन्त्रीको

वर्धा
१४ मई, १९३५

प्रधान मन्त्रीजी,

आपका पत्र मिला है। मैंने स्वतन्त्रतया ऐसे तो नही कहा है कि समिति बन्धन-मुक्त है। मैंने ऐसे कहा था कि यदि हरिभाऊ व कोतवालने आपको यह कहा कि आप इन्दौरके विश्वविद्यालयका धन भी एक लाखमें गिन सकते है तो आप बन्धन-मुक्त है। लेकिन मैं इस वहसमे न पडना चाहता हू न आपको तकलीफ देना चाहता हू। आखरमे जिम्मेवारी तो शेठ जमनालालजी ने ली है। वे चाहे सो करे। टण्डनजी ने जो कहा और किया उसमें उनका दोष मैंने नही पाया। वाहिरके आन्दोलनको रोकनेकी मेरी न शक्ति थी, न इच्छा थी। अन्तमे जो मैंने किया उससे दूसरा करना मेरे लिये असम्भवित था।

आपका,
मो० क० गांधी

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३७५

## ८७. पत्र : रामस्वामी अय्यंगारको

१४ मई, १९३५

प्रिय रामस्वामी,

आपने जो बड़ा काम हाथमें लिया है, मैं उसकी सफलताकी कामना करता हूँ। इस बातका ध्यान रखिए कि जिस कामको शुरू किया है, उसे बीचमें नहीं छोड़ना है।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९२३४) से; सौजन्य: रामस्वामी अय्यंगार

## ८८. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

[१४ मई, १९३५][1]

प्रिय सीताराम शास्त्री,

मैं चीजके बदले चीज देकर व्यापार करनेकी पुरानी प्रणालीपर निबन्ध आमन्त्रित करनेके सुझावका समर्थन करता हूँ। मगर उसके लिए जो पुरस्कार निश्चित किया गया है वह आकर्षक नहीं है। उसके निर्णयकर्त्ता कौन होंगे? वे विशेष [योग्यता][2] वाले [व्यक्ति][3] होने चाहिए। [मैं][4] अभी उनके [सम्बन्धमें][5] कुछ विचार नहीं कर पाऊँगा।

हृदयसे आपका,
बापू

श्री जी० सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
गुंटूर जिला, पो० आ० चंदोल

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९१७५) से; सौजन्य: आन्ध्र प्रदेश सरकार

१. डाककी मोहरसे।
२ से ५. ये स्थल मूल प्रतिमें फटे हुए हैं।

## ८९. पत्र : जमनालाल बजाजको

१४ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हें इन्दौरके बारेमें वहाँ[1] बैठे हुए भी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहाँसे कुछ मिलेगा, ऐसा नहीं लगता। साथका पत्र पढ लेना। मैं अपने जवाबकी[2] नकल भेज रहा हूँ। वहाँ मेरी तो किसीसे जान-पहचान है नहीं; तुम्हारे ऊपर ही सब छोड़ दिया है। उसमें भी यदि कुछ नहीं हो सका तो समझ लेंगे सुलट गया। तुम्हे इसके लिए चिन्तामे नहीं पड़ना है। वहाँ बैठे-बैठे कुछ हो सके या किसीको लिख सको तो लिखकर काम कर देना। फिलहाल यदि ऐसा न हो सके तो इसे भूल जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६९) से।

## ९०. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

१४ मई, १९३५

भाई मूलचद,

सब चीज 'हरिजन' में आनेसे दुरुस्त हो सकती है, ऐसा मानना भ्रम है। बाल-विवाहकी कुप्रथाको दूर करनेके लिये बहुत परिश्रमकी आवश्यकता रहेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५६) से।

१. भुवाली।

२. देखिए "पत्र : हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मन्त्रीको", १४-५-१९३५।

## ९१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१४ मई, १९३५

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन, सर्वधर्मी, समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये।

'गीता' तुम्हारी जीवन-दोरी बनो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फ़ोटो-नकल (जी० एन० ४२६९) से। एस० जी० ४३ से भी

## ९२. पत्र : समीरमलको

१४ मई, १९३५

भाई समीरमल,

तुमारी और श्री वायुलालकी उम्मर कितनी है, शरीर दोनोका कैसा है, अभ्यास कहाँतक है, अपना खर्च दे सकते है? इ० हकीकत भेजो। यहाँ मजदुरीका ही कार्य है।

मो० क० गांधी

श्री समीरमल
दफरिया
जावरा, मालवा

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९२) से।

## ९३. तार : रामेश्वरदास पोद्दारको

वर्धा
१५ मई, १९३५

सेठ रामेश्वरदास
धूलिया

गंगाके[1] पुत्री हुई है। दोनों सकुशल है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४१) से।

## ९४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

'दिल्लीके कौवे कितने' वाला मजाक मैं ठीक नही मानता। इससे लोगोको कुछ मिलता नही है। अभी लड़ाई तो चल नही रही है।

अमृतलालका[2] पत्र मिल गया। मैंने लिखा है कि यदि वह अपने अखबारमें खेद प्रकट करे तो अच्छा होगा।

बाकी तुम महादेवके पत्रसे जानोगे। इस वक्त तो काममें खूब व्यस्त हूं। एन्ड्रचूज यहाँ है। सेरेसोल और विलकिन्सन कल आये है। और लोग भी आ रहे है। मैं २१ तारीखको मुश्किलसे तैयार हो पाऊँगा। महादेवको साथ लाना असम्भव दीखता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६७

१. रामेश्वरदास पोद्दारकी पत्नी।
२. अमृतलाल सेठ, बम्बईसे प्रकाशित होनेवाले दैनिक जन्मभूमिके सम्पादक।

## ९५. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

१५ मई, १९३५

चि० अवधेश,

अपना देश सब नैतिक बातमे सर्वोत्कृष्ट बने और रहे। मनुष्यका स्वाभिमान है कि वह आत्मोन्नति करे और करनेमे मृत्युसे भी न डरे।।

स्वाभिमान और गौरवकी रक्षाके लिये अथवा कुचेष्टा दूर करनेके लिये क्रोध क्यो चाहिये। मुझे कोई कहता है नाक घसीटो। मै क्रोध न करूं लेकिन नाक न रगडु, इसके लिये जो दण्ड मिले उसे प्रसन्नतासे सहन करूं।

धर्म उसे कहते है जो आत्माको ऊंचे ले जाता है। ईश्वर सत्यका नाम है। सत्य रूप है ऐसी कल्पना करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१७) से।

## ९६. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा

१६ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कही भी रहो, पूरी तरहसे आराम करना जरूरी है। अपने हाथकी बात न रह जाये, उससे पहले ही क्यो नही करती? मिरजकी बजाय तुम बम्बईमे ही स्वास्थ्यकी जाँच क्यो नही करा लेती? मिरज जाते हुए तुम बम्बईके पाससे ही तो गुजरोगी। बम्बईमे जाँच भी हो जायेगी और पैसे भी खर्च नही होगे। बम्बईमें सबसे योग्य चिकित्सक मौजूद है। जो भी हो, तुम्हे शीघ्र स्वस्थ हो जाना चाहिए।[1]

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४१) से। सी० डब्ल्यू० ३३७० से भी; सौजन्य: एफ० मेरी बार।

१. देखिए "पत्र : जमनालाल बजाजको", ११-५-१९३५ भी।

## ९७. पत्र : ग्लेडिस ओवेनको

१६ मई, १९३५

प्रिय ग्लेडिस,

मुझे आपका पत्र [पढ़कर प्रसन्नता][1] हुई। यह आज ही मुझे दिया गया और अभी . . . पियरे सेरेसोलके पहुँचनेके बाद। उनसे सम्बन्धित अंश मैंने उन्हें सुना दिया। इससे वे प्रसन्न हुए। वे निश्चय ही . . . यह काम . . . हाथमें लेंगे . . . मार्ग . . . उनके सम्मुख है।

हम सभीको . . . से प्रसन्नता होगी और म्यूरियलके साथ 'आपका स्वागत करेंगे। सी० एफ० एन्ड्रयूज . . . मेरे साथ . . .।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१९१) से।

## ९८. पत्र : एस० सत्यमूर्तिको[2]

१६ मई, १९३५

आप ललचानेमें बड़े कुशल हैं। लेकिन मुझे लालचमें नहीं पड़ना है। मेरे आशीर्वादके बिना भी आपका काम ठीक चलता रहेगा। आपने ठीक ही कहा है कि यदि आपमें सफल होनेकी योग्यता होगी तो आप सफलता प्राप्त कर ही लेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २०-५-१९३५

१. साधन-सूत्रमें ये शब्द, बहुत अस्पष्ट हैं और कई स्थानोंपर लिखावट पढ़ी नहीं जाती।

२. सत्यमूर्तिने तमिलनाडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीका अध्यक्ष बननेपर गांधीजी का आशीर्वाद माँगा था।

## ९९. पत्र : निर्मलकुमार बोसको

१६ मई, १९३५

प्रिय निर्मलबाबू,

इतना ही है कि मेरे पास काम बहुत ज्यादा रहा है। पुनरीक्षण समाप्त करते ही मैं पाडुलिपि लौटा दूंगा। आप बखूबी उसे 'मॉडर्न रिव्यू' को भेज सकते हैं।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री निर्मलकुमार बोस
६/१ ए, ब्रिटिश इंडियन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५२०) से।

## १००. पत्र : क० मा० मुंशीको

१६ मई, १९३५

भाई मुंशी,

आपका पत्र मिला। वहीं[1] रहकर स्वास्थ्य सुधारना ठीक होगा। स्थायी समितिकी बैठक १८को है। देखूं, उसमें क्या होता है। जीजी माँ ने[2] ठीक याद किया; उन्हें मेरे नमन।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७३) से, सौजन्य : क० मा० मुंशी

१. पंचगनी।
२. क० मा० मुंशीकी माता।

# १०१. चर्चा: पियरे सेरेसोल और जो विल्किन्सन से[1]

[१६ मई, १९३५][2]

फिर सेरेसोल उन पुस्तकोंके विषयमें कहने लगे जो उन्होंने उन्हीं दिनों पढ़ी थीं। उन्होंने एक पुस्तक 'इंडिया इन दि डार्क वुड' के बारेमें बताया कि . . . इसमें कहा गया है कि "हिन्दू दर्शनका मुख्य ढांचा तोड़ डालना चाहिए।" उन्होंने दूसरी एक भिन्न प्रकारकी पुस्तक फ्रैंक लौनवुड कृत 'जीसस लॉर्ड और लीडर' की बात की और बताया कि उसमें इस बात का खण्डन किया गया है कि ईसाई धर्म ही अन्तिम धर्म है, और कहा गया है कि "आज जहाँतक हम पहुँचे हैं उससे भी अधिक पूर्ण और उच्च धर्म अभी आयेगा; और . . . ईश्वर . . . अन्य धर्मों तथा अनेक जातियों द्वारा आविष्कृत सत्यों और संस्थाओंका भी उपयोग करके मनुष्य जातिकी विचार-सम्पत्तिको और समृद्ध बनायेगा।" उन्होंने बताया कि बाइबिल जो प्रेरणा देती है वह दूसरी प्रेरणाओंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है, इस दावेको छोड़ देनेमें उक्त लेखक निश्चित लाभ देखता है, और कहता है कि "मैं उन लोगोंमें से हूँ जो ईसा मसीहको एक सद्गुरु मानते हैं, परमप्रभु नहीं।" गांधीजी ने कहा:

ऐसा लगता है कि चढावके बाद अब उतारकी क्रिया चल रही है। हमारे यहाँ एक ईसाई सज्जन हैं जो कहते हैं कि बाइबिलके 'न्यू टेस्टामेंट' का उपदेश जीवनमें किस प्रकार उतारा जा सकता है, यह बात मुझे 'गीता' में मिली है, और 'न्यू टेस्टामेंट' के कितने ही वचन जो मुझे गूढ मालूम होते थे उनका अर्थ अब 'गीता' के अध्ययनसे खुलता जा रहा है।

तो भी सेरेसोल यह महसूस करते हैं कि प्रत्येक मनुष्यको अपने ही धर्मसे समाधान मिलना चाहिए। हमारी प्रातः और सायंकालकी प्रार्थनाओंमें वे नियमित रूपसे आते थे। किन्तु एक दिन साँझको कहने लगे, "एक ही चीजका जो यह बार-बार पाठ होता है वह मेरे कानोंको कुछ रुचता नहीं। हो सकता है कि यह मेरे बुद्धिवादी, गणितीय स्वभावका दोष हो, लेकिन चाहे जिस कारणसे भी हो, पुनरावृत्ति मुझे पसन्द नहीं आ सकती।" . . .

गांधीजी: पर आपके गणितमें क्या पुनरावृत्ति दशमलव नहीं होता?

पियरे सेरेसोल: किन्तु प्रत्येक दशमलव से एक नवीन ही वस्तु निकलती है।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। अपने लेखमें महादेव देसाई बताते हैं: "पियरे सेरेसोल और जो विल्किन्सन बिहारके भूकम्प-पीड़ित क्षेत्रका दौरा करके लौटे थे और रास्तेमें वे वर्धामें रुके थे।"

२. गांधीजी: १९१५-१९४८—ए डिटेल्ड क्रॉनोलॉजी से।

गा० : इसी प्रकार प्रत्येक जपमें नूतन अर्थ रहता है। प्रत्येक जप मनुष्यको भगवान्‌के अधिक समीप ले जाता है। यह बिलकुल सच्ची बात है, और जब मैं आपसे यह कहता हूँ तब आपको यह जानना चाहिए कि आप किसी सिद्धान्तवादीसे नही वल्कि एक ऐसे व्यक्तिसे बात कर रहे हैं जिसने इस वस्तुका अनुभव जीवनके प्रत्येक क्षणमे किया है। मैं तो यहाँतक कहूँगा कि किसी बार यह तो हो सकता है कि मेरे हृदयका स्पन्दन एकाएक रुक जाये पर इस अविराम-क्रियाका बन्द हो जाना इतना आसान नही है। यह हमारी आत्माकी भूख है।

**पि० से० : मैं इसे अच्छी तरह समझ सकता हूँ, पर साधारण मनुष्यके लिए तो यह एक अर्थशून्य विधि है।**

गां० : मैं मानता हूँ, पर अच्छीसे-अच्छी चीजका भी दुरुपयोग हो सकता है। इसम चाहे जितने दम्भके लिए गुंजाइश हो, पर वह दम्भ भी तो सदाचारकी स्तुति ही है न! और मै यह जानता हूँ कि अगर दस हजार दम्भी मनुष्य मिलते है तो ऐसे करोड़ो सरल श्रद्धालु भी होगे जिन्हे ईश्वरके इस नाम-रटनसे शान्ति मिलती होगी। मकान वनाते समय पाड़ बाँधनेकी जरूरत पड़ती है न — यह ठीक वैसी ही चीज है।

**पि० से० : मगर मैं आपकी दी हुई इस उपमाको जरा और आगे ले जाऊँ तो आप यह मान लेंगे न कि जब मकान तैयार हो जाये तब उस पाड़को गिरा देना चाहिए?**

गां० . हाँ, जब शरीर-पात हो जायेगा तब वह भी दूर हो जायेगी।

**पि० से० : यह क्यों?**

**जो विलकिन्सन : यह इसलिए कि हम निरन्तर निर्माण ही करते रहते हैं।**

गा० : इसलिए कि हम निरन्तर पूर्णताके लिए प्रयत्न करते रहते हैं। केवल ईश्वर ही पूर्ण है, मनुष्य कभी पूर्ण नही होता।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २५-५-१९३५

## १०२. पत्र : आर० बी० ग्रेगको

वर्धा
१७ मई, १९३५

प्रिय गोविन्द,

बेशक, मैं जानता हूँ कि पत्र न आनेका मतलब यह नहीं है कि हमारे प्रेममें कोई कमी आ गई है। मैं जानता हूँ कि तुम प्रेम-धर्मके प्रसारके लिए क्या कर रहे हो। तुमको अपनी समूची शक्ति खपानी पड़ रही होगी।

अगर अमरीकी लोग अपने यहाँ खादीके समान ही किसी वस्तुको अपना सकें, तो यह एक बड़ी बात होगी।

एन्ड्रयूज, पियरे सेरेसोल तथा उनके साथी जो विलकिन्सन, अभी इस समय यहीं हैं। एन्ड्रयूज कविगुरुके साथ कुछ [महीने][1] भारतमें ही रहेंगे। सेरेसोल यूरोपके लिए २३ तारीखको प्रस्थान करेंगे।

ग्रामोद्योगका कार्य चल रहा है।

हीरालाल शर्मा एक प्राकृतिक चिकित्सक हैं। वे अपने ज्ञानको अधिक पूर्ण बनानेके लिए बैटल क्रीक जाना चाहते हैं। वे अपने ज्ञानका उपयोग विशुद्ध परमार्थके लिए करना चाहते हैं। मैं उनके लिए एक वजीफेका प्रबन्ध कर रहा हूँ। वहाँ अगर वे कुछ समय काम करके अपने खाने और रहनेका खर्च निकाल सकें, तो अच्छा रहेगा। क्या उनके सम्बन्धमें तुम कोई सलाह दे सकते हो?

तुमको और राधाको स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६६६) से।

१. साधन-सूत्रमें बहुत अस्पष्ट है।

## १०३. पत्र : अमृतकौरको

१७ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

पत्रका तुम्हारा कागज साटनकी तरह चिकना लगता है।

दलीपसिंहका[1] पत्र अच्छा है।

अभी इस समय हमारा परिवार बहुत भरा-पूरा है। सी० एफ० एन्ड्रयूज, सेरेसोल, विलकिन्सन, मलकानी, श्रीमती मलकानी, उनके मित्र और एक पुत्र तथा दो छात्र -- खासी वृद्धि है न! और तुम्हे याद ही होगा कि हमारे पास थालो और प्यालियोकी कितनी कमी है। लेकिन हम काम चला लेते है; खुश रहते है।

हाँ, यहाँ गर्मी काफी पड़ रही है।

लिफाफो पर लगा गोद बगीचेके एक वृक्षकी छाल का है। मैं देखूंगा कि आगे और लिफाफोके लिए क्या प्रबन्ध हो सकता है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६३४२ से भी

## १०४. अपील : नगरपालिकाओंसे

हरिजन सेवक संघके संयुक्त-मंत्री आचार्य मलकानी द्वारा नगरपालिकाओंके लिए निम्न अपील जारी की गई:[2]

आशा करनी चाहिए कि नगरपालिकाएँ इसके उत्तर मे कारगर ढगसे कार्रवाई करेगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १८-५-१९३५

१. अमृतकौरके भाई।

२. अपील यहाँ उद्धृत नहीं की जा रही है; उसमें नगरपालिकाओंको सुझाव दिया गया था कि मेहतरों तथा सफाई आदि करनेवाले कर्मचारियोंको निवास-सम्बन्धी सुविधाएँ, बेहतर सेवाके अवसर, बीमारी, आकस्मिक तथा प्रसव आदिकी छुट्टियाँ दी जानी चाहिए।

## १०५. हरिजनोंकी शिक्षा

माध्यमिक और कॉलेजकी शिक्षासे प्राथमिक शिक्षाका प्रश्न अनेक दृष्टियोसे कही अधिक कठिन है। और हरिजनोकी शिक्षा तो सबसे अधिक कठिन है। भले ही वह कच्चा हो, पर कुछ-न-कुछ सस्कार तो हरिजनेतर बालकको घरपर मिलता ही है। हरिजन बालकको ऐसा सस्कार बिलकुल ही नही मिलता, क्योकि समाजके साथ उनका सम्पर्क नही रहता। इसलिए जब तमाम प्राथमिक पाठशालाएं हरिजन बालकोके लिए खुल जायेगी — देर-सबेर उन्हे खुलना तो है ही, और मेरी रायमे देरसे नही, सबेरे ही उन्हें खुलना है — तब भी, यदि हरिजन बालकोको पिछड़ी हुई दशामें नही रखा जाना है तो उनके लिए प्राथमिक पाठशालाओकी आवश्यकता तो पडेगी ही। यह प्रारम्भिक शिक्षा-प्रणाली किस प्रकारकी होनी चाहिए, इसकी खोज-बीनकी जा सकती है, और हरिजन सेवक सघोकी ओरसे समस्त भारतवर्षमें जो सैकड़ो हरिजन पाठशालाएँ चल रही है, उनमें उस प्रणालीका परीक्षण भी हो सकता है। हरिजन बालकोकी इस प्रारम्भिक शिक्षामें शिष्टाचार, सुन्दर वाणी और सद्व्यवहारका समावेश अवश्य होना चाहिए। हरिजन बालकको आज बैठने-उठने, कपडा पहननेका सलीका नही होता। उसकी आँखो, कानो, दाँतो और नाखूनोमें अक्सर मैल भरा रहता है। बहुतेरोको तो यह भी पता नही कि नहाना-धोना किसे कहते है। मुझे सन् १९१५की वह बात आज भी याद है कि जब मैं ट्राकीबारसे एक हरिजन लडकेको कोचरबके आश्रममे लाया था। सबसे पहले मैंने उसका मुण्डन कराया, फिर अच्छी तरह नहलाया और पहननेको उसे सादी, साफ धोती, कुरता और टोपी दी। चन्द मिनटोमे ही वह मैला-कुचैला लडका सस्कारी घरके किसी भी बालकसे जरा भी भिन्न मालूम नही पडता था। उसका सिर, आँखे, कान-नाक सब खूब अच्छी तरह साफ कर दिये गये थे। उसके नाखूनोमे मैल-ही-मैल भरा हुआ था। उन्हें मैंने कटवाकर साफ कराया। उसके पैर, जिनपर धूलकी तहे जम गई थी, रगड-रगडकर साफ कराये गये। जरूरत पड़े तो पाठशालाओमे आनेवाले हरिजन बालकोके पूरे शरीरकी सफाई नित्य इसी तरह करनी चाहिए। तीन महीने तक तो उन्हे स्वच्छताकी शिक्षा देनी चाहिए, हालाँकि यह वाक्य लिखते हुए मुझे उड़ीसाकी पैदल यात्राका[1] एक दृश्य याद आ रहा है। उस यात्रामें कुछ-एक स्थानोंपर हरिजन बालको और वयस्कोको भोजन कराया गया था; उन्होने औरोकी अपेक्षा अधिक स्वच्छतासे खाया था। दूसरे लोग सानने-सूननेमें उँगलियाँ खराब कर लेते थे, और जहाँ-तहाँ जूठन छोडकर जगह गन्दी करके उठते थे। हरिजन अपनी पत्तल या थालीमे कुछ भी नही छोडते

१. १९३४ में।

थे, उसे बिलकुल साफ कर देते थे। भोजनके समय हर कौरपर वे अपनी उँगलियोको चाटकर साफ कर लेते थे। यह मैं जानता हूँ कि मैंने जिनका यह वर्णन किया है, सब हरिजन बालक उनकी-जैसी स्वच्छतासे नही खाते।

अगर इस प्रारम्भिक शिक्षाका आयोजन समस्त हरिजन पाठशालाओमे करना है, तो अध्यापकोके लिए उनकी भाषामे विस्तृत आदेशोकी पत्रिकाएँ तैयार करके बँटवानी चाहिए। साथ ही पाठशालाओके निरीक्षकोको यह आदेश दे दिया जाये कि वे पाठशालाओका मुआइना करते समय अध्यापको तथा विद्यार्थियो की इस विषयमे परीक्षा लिया करे और इस दिशामे जो प्रगति हो उसकी पूरी-पूरी रिपोर्ट भेज दिया करे।

नये अध्यापकोकी नियुक्ति तथा वर्तमान अध्यापकोके प्रशिक्षणपर ध्यान रखनेसे ही यह कार्यक्रम सफल हो सकेगा। मगर सघको यदि उन हजारो हरिजन बालकोके प्रति अपना फर्ज अदा करना है, जिनकी सार-सँभालका दायित्व उसने ले रखा है, तो उसे इस सबपर ध्यान देना ही होगा।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १८-५-१९३५

## १०६. पत्र : नारणदास गांधीको

१८ मई, १९३५

चि० नारणदास,

धीरूका[1] क्या समाचार है? उसका खर्च कौन चलाता है? उसकी प्रगति कैसी है? उसका अध्ययन कबतक पूरा होगा? उसने जो लिखकर दिया है, वह क्या तुम्हारे पास है?

हरिलाल कैसा है?

पाठशालाके बारेमे तो सब तय कर लिया है। सब यह मानते है कि तुम्हारी योजना बिलकुल ठीक है।

पुरुषोत्तम[2] कैसा है? क्या उसको चोरवाड माफिक आया?

जमनाको मैंने यह लिखा है या नही कि विजयाको पत्र लिख दिया था?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं २३ से ३१ मईतक बोरसदमें रहूँगा।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८४४४ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. धीरू गांधी, व्रजलाल गांधीके पुत्र। ये शान्तिनिकेतनमें चित्रकलाकी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।
२. नारणदास गांधीके पुत्र।

## १०७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
१८ मई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

जबतक महादेव तुम्हारे पास थे, तबतक मैंने पत्र लिखनेमें ढिलाई की। फिर उनके आनेमें मजबूरन दो दिन लग गये। इसलिए यहाँके पत्रोमें गडबडी हो गई।

मोहनलाल पड्याके बारेमें तुम्हारा लिखना यथार्थ है।[1] पिछले सस्मरण ठीक वैसे ही है। परन्तु दुःख माननेसे क्या होता है? साथी आते है और जाते है। तुमको लगता है कि साथी जाते ही है, आते नही। यदि ऐसा हो तो भी क्या? ईश्वर तो नही जाता न? वह है तो सब हैं। यदि वह न हो तो और सब किस कामके? — जीवरहित देह? इसलिए तुमको साथीके वियोगका दुखडा नही रोना चाहिए। हमसे तो जो हो सके, सो कर दें।

मैं २१ तारीखसे पहले नही छूट सकता। २२ को सुबह बम्बई पहुँचूँगा। २० तारीखको सोमवार है। २१ को मुझे यहाँ रहना ही चाहिए। साथमे बहुत करके अकेली बा होगी। मजबूर हो जाने पर ही मीराबहन रहेगी। वह आनेका हठ करेगी, तो लाचारीमे ही उसे लाऊँगा और शायद एक आदमी और होगा। मेरे लिए तो बकरीके दूधके अतिरिक्त नीमके पत्ते और स्थानीय फल काफी होगे। बम्बईसे कुछ मत मँगवाना। यहाँ भी ऐसा ही चल रहा है। नीबूके बदले मैं इमलीका रस और हरी भाजीके बदले नीमके पत्ते पीसकर लेता हूँ। आजकल यहींके बगीचेकी अमियाँ लेता हूँ। बम्बईकी तो चखीतक नही। ऐसा मैं बम्बईमे करूँगा, बोरसदमे हरगिज नही।

महादेवको यहाँ छोडनेके सिवा कोई चारा नही। यदि जरूरत हुई तो मेरे यहाँ लौटनेपर महादेवको भेज दूँगा। शेष सब मिलनेपर।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६८-६९

१. देखिए "भाषण : बाल-मन्दिरके उद्घाटनके अवसरपर", ३१-५-१९३५।

## १०८. पत्र : बलवंतसिहको

१८ मई, १९३५

चि० बलवंतसिह,

मेरे मनमे थोडा-सा भी शक नही है कि तुमारे किसी देहातमे स्थिर होना उत्तम वस्तु है। वहाँ रहकर श्रमसे अपना निर्वाह करना और मनसे, वाचासे, कर्मसे ग्रामवासीयोकी सेवा करना, उसके लिये एकादश व्रतका पालन करना। घडीकी कोई आवश्यकता नही है। और है तो पानी या रेतसे घडी वना सकते हो। उसमे एक कोडी-का भी खर्च नही है। हाँ, जव मेरे पास आनेका जी चाहे तव आनेकी इजाजत है लेकिन याद रखो हमारे पास रेलका किराया व्यर्थ खर्चनेके लिये पैसे नही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७६) से।

## १०९. पत्र : कुँवरजी के० पारेखको

१९ मई, १९३५

चि० कुँवरजी,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ तो हरिलालके व्यवहारके विषयमे कहने-जैसी कोई बात नही दिखी। यदि तुम्हारा शक ठीक ठहरे तो दु.खकी वात है। मनुको उसके हाथमें सौपनेकी कोई वात ही नही है। आशा है, तुम सव कुशल होगे।

बा और मै बुधवारको वहाँ होगे। आ सको तो कुछ मिनट दे दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२१) से।

१. हरिलाल गांधीके दामाद और रामीके पति।

## ११०. पत्र : मनु गांधीको[1]

१९ मई, १९३५

चि० मनु,

तेरा पत्र मिला। मै वुधवारको वम्वईमे रहूंगा। वा भी होगी। आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२१) से।

## १११. पत्र : डाह्याभाई एम० पटेलको

वर्धा
१९ मई, १९३५

भाई डाह्याभाई,

तुम्हारे २५-६-३५ के[2] पत्रपर इतने दिन विचार करनेके वाद आखिर थककर इस पत्रसे यह प्रकरण समाप्त करता हूं। तुम्हारा पत्र मिलनेके वाद ऐसी घटनाएँ और जगहोपर भी हुई है। लिख-लिखकर थक गया। उसका कुछ असर हुआ होगा, लेकिन नही के बराबर। इन मामलोमें प्रत्येक स्थानीय व्यक्तिको अपनी शक्तिके अनुसार जो वने करते रहना चाहिए। हां, मुझ-जैसोको सम्वन्धित समाचार तो देते ही रहना चाहिए। हमे अपनी मर्यादा समझनी चाहिए, हम सुधारक है, पुलिसके सिपाही नही। पुलिस हमे वनना भी नही है। सुधारक मरकर सुधार कराता है, पुलिस मारकर। एक ही व्यक्ति दोनो नीतियां साथ-साथ नही अपना सकता, इसीसे राजतन्त्रकी उत्पत्ति होती है। किन्तु हम राजतन्त्रको सहयोग नही देते, इसलिए उसकी मदद हमे थोडे ही मिल सकती है। बिना अपमानित हुए जहां हम ऐसी मदद ले सकते हो, वहां ले।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २७०६) से; सौजन्य : डाह्याभाई एम० पटेल

१. यह पत्र पिछले शीर्षक "पत्र : कुंवरजी के० पारेखको" के पीछे लिखा पाया गया है; देखिए पिछला शीर्षक।

२. मूलके अनुसार।

## ११२. पत्र : शालिग्राम वर्माको

१९ मई, १९३५

भाई शालिग्राम वर्मा,

मैंने जो-कुछ कहा वह निर्दोष भावसे था। जो दलील पेश की गई थी उसे सुनकर मेरेपर जो असर हुआ मैंने कह दिया। उसमे किसीपर आक्षेप तो हो ही नही सकता था। मैंने राय ली उस वारेमें मैं कह चुका था कि वह 'इनफोर्मल' थी। मैं तो वादमे समझ भी गया था कि प्रकाशकोको मत्रीपदसे मुक्त ही रखना योग्य नही होगा। आपको सवध छोड़नेका कोई कारण नही है। मेरी आशा है कि आप इस्तीफा भेजनेका इरादा छोड़ देंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२१९) से। सी० डब्ल्यू० ५६३४से भी

## ११३. पत्र : हीरालाल शर्माको[1]

वर्धा
२० मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारी टिकिटका ओर्डर तो आ गया। लेकिन पासपोर्टमें मुश्किल है। पासपोर्टके लिये अर्जी प्रत्येक मनुष्यको अपने लिये करनी पडती है। इसलिये तुमारे शायद दिल्ली जाना पड़े। सभव है कि खुर्जाके मजिस्ट्रेट के यहा अर्जीका फार्म मिल सके। तुमारी अर्जी जानेके वादमे लिख सकूंगा। यदि आवश्यकता होगी तो। पासपोर्ट मिलनेकें बाद कलकत्तेके अमेरिकन कोनसलका प्रमाणपत्र चाहियेगा। वह तो मैं ले सकूंगा ऐसी उम्मीद रखता हूं। अव तो तुमारे पासपोर्टका तजवीज करना है।

साथके खत वापिस किये जाये। मैं कल वोरसद जाता हूं। २ जूनको वापस। वोरसद — वाया — आनन्द। वी० वी० ऐंड सी० आई० रेलवे। ठिकाना २३ तारीखसे ३१ तक समझो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६०-६१

१. यह पत्र सुबह तीन बजे लिखा गया था, देखिए "पत्र : हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

## ११४. पत्र: अमृतकौरको

२० मई, १९३५

प्रिय अमृत,

पिछले पाँच दिनोसे मै तुम्हें पत्र नही लिख सका। मेहमानोने मेरा सारा समय ले लिया।

चार्लीका तार अभी-अभी आया है। तुम्हारा पत्र मुझे मिलनेसे पहले हममें से कोई भी नही समझ पाया था कि तुम किस तरह बाल-बाल बची। तुमने अबतक जो सेवाएँ की हैं, उनसे भी बड़ी सेवाएँ तुम्हें करनी है। दुर्घटना घातक जान पड़ती थी और उससे तुम्हारी रक्षा करनेमे ईश्वरकी यही इच्छा मुझे दिखाई देती है। इस दुर्घटनासे हमें यही सीख लेनी चाहिए कि ईश्वर हमे जीवनके जो भी क्षण प्रदान करता है, हम उन सबका सदुपयोग करे।

मै तुम्हारे लिए पूनियाँ और पत्र लिखनेके कागज तैयार करवा रहा हूँ। उनको यथासमय तुम्हारे पास भेज दिया जायेगा।

मेरा खयाल है कि तुम पुरीको काफी अर्सेसे जानती हो। अगर तुम्हे वह भरोसेके लायक लगा हो, तो उससे तुमको काफी मदद मिल सकती है। वह वहाँ क्या कर रहा है?

क्या शम्मीको फालसा नामक फलके वृक्षकी जानकारी है? फल बेरकी जातिका है और मटरके दानेके आकारका होता है। क्या वह मुझे उसके गूदे और बीजोंके गुणोका विवरण दे सकता है? इसका वनस्पतिशास्त्रीय नाम क्या है? मै इन सर्व-सुलभ फलो और इनकी पत्तियोकी आहार-सम्बन्धी उपयोगिता समझनेकी कोशिश कर रहा हूँ। मुझे उनमे काफी बड़ी सम्भावनाएँ नजर आती है। मै चाहूँगा कि शम्मी इस कार्य-विशेषमे विशेषज्ञता प्राप्त कर ले। विशेषज्ञोतक उसकी जितनी पहुँच है, उतनी चन्द ही लोगोकी है।

तुम तीनोको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३४) से, सौजन्य: राजकुमारी अमृतकौर। जी० एन० ६३४३ से भी

## ११५. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२० मई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। रामजीभाईको गाय भेजनेके बारेमें मैं तो तुम्हें पूरी आज़ादी दे चुका हूँ।[1] जो तुम्हारा मन कहे, वही करना। इस मामलेमें अपनी इच्छाका मैं कोई मूल्य नही मानता। काम करो तुम और मरजी मेरी चले, इसका क्या मतलब?

पारनेरकरको[2] जो मवेशी बेचना ठीक समझो, बेच देना। मतलब यह कि इस सम्बन्धमें तुम्हें पूरी आज़ादी है। जो करोगे वह मेरे कानमें तो डालोगे ही, यह मैं माने लेता हूँ।

वनूकी[3] बीमारी भी कैसी लम्बी चली? मुझे २३ को बोरसद पहुँचना है। मणि[4] की दाढ़के कारण तुम्हें भड़ौच भी जाना पड़ेगा, यह कैसी झंझट है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७९) से।

## ११६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२० मई, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

तुम्हारे बारेमें विचार बना ही रहता है। काका अभी यहीं हैं। उनके हाथमें सब-कुछ सौंपकर महादेवको साथ ला रहा हूँ। मुझे यह खयाल परेशान कर रहा था कि तुमको यदि अभी काम है, तो बादमें उन्हें भेजकर क्या करूँगा। इसलिए मैंने काकासे बात की और उन्होंने भार उठाना स्वीकार कर लिया।

१. देखिए "पत्र : नरहरि द्वा० परीखको", ९-५-१९३५।

२. यशवन्त महादेव पारनेरकर।

३. वनमाला परीख, नरहरि परीखकी कन्या।

४. मणिबहन परीख, नरहरि परीखकी पत्नी।

और बाते तो हम जब मिलेंगे तब या ठेठ बोरसदमे करेंगे। बुधवारके दिन तो शायद लोग तुम्हें और मुझे बाते करनेका जरा भी वक्त ही न दे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६९

## ११७. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

२० मई, १९३५

चि० अम्बुजम,

जितनी शीघ्रतासे पिताजी पहाडोपर जा सके उतना अच्छा रहेगा। लेकिन समयका निर्णय तो डाक्तर ही कर सकता है। हम सब प्रार्थना करे कि पिताजी को शीघ्र पूर्ण आराम हो जाय।

कृष्णस्वामीकी शादीकी बात हो गई सो अच्छा हुआ। हम आशा करे कि यह संबंध दोनोको सुखदायक होगा।

अब [अभी] तो वादाम है। मै यहासे कल निकलूगा। २ जुन वापिस आऊगा। ठिकाना बोरसद वाया आनन्द बी० बी० ऐंड० सी० आई० आर०[1] किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूलसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ११८. पत्र : समीरमलको

२० मई, १९३५

भाई समीरमल,

ता० १० जुनके बाद मुझे खबर देकर दोनो आ सकते है। मेरे पास एक भी कमरा नही है। बरादेमे पडा रहना पडता है। नित्य मजदूरी ही करनी पडती है। यदि आओ तो साथमे बिस्तरके उपरांत थाली, लोटा, कटोरा, गमछा इ० ले आना। निकम्मा सामान नही लाना। संदूक अनावश्यक है।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९१) से।

१. यह पता अंग्रेजीमें है।

## ११९. पत्र : हीरालाल शर्माको

२० मई, १९३५

चि० शर्मा,

साथका खत[1] तो प्रातःकाल तीन बजे लिखा। दोपहर तुमारा खत आया। उसी डाकसे खबर आई कि तुमने गवाही देनेके लिए रु० ५,००० मागा था।[2] मैंने इस बातपर वजन नही दिया। इतनेमे तुमारा खत पढा। उसमे उसी बारेमे और बात। तुमको निराशा कैसे हुई? जजको कैसे निराशा हुई? क्यो, खुर्जा क्यो छोड़ना? दुनिया कुछ भी कहे इससे क्या? . .[3] जोइंट पोलीसीके बारेमे मुझको पूरा समझा दोगे तो मै अवश्य कुछ छापूगा। अबतक मै समझा नही हू। तुम तो जानते हो मै बीमा करानेका विरोधी हू। लेकिन खास जोइटका क्यो? बीमामे जहर देनेका तो अकसर हुआ ही करता है। जोइटमे कुछ विशेषता मै नहीं पाता।

तुमको फोड़े कहा है? मिट्टीसे शीघ्र आराम न हो तो उसे छोड़ना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च.]

कोई बात आवेशमे न की जाय।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६२

१. देखिए "पत्र: हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

२. बीमेके दावेके एक मामलेमें।

३. साधन-सूत्रके अनुसार।

## १२०. भेंट: एक ईसाई विद्यार्थीको[1]

[२१ मई, १९३५ या उसके पूर्व][2]

गांधीजी: जिस सेवा-कार्यमें स्वार्थकी लेश-मात्र गन्ध न हो, वह तो स्वय ही परम धर्म है।

**विद्यार्थी: किन्तु मनुष्यकी क्या किसी एकके प्रति निष्ठा होनी ही चाहिए?**

हाँ, अवश्य। सत्यके प्रति उसकी निष्ठा होनी चाहिए। मै सिवा सत्यके और किसीका भक्त नही हूँ और सत्यके सिवा मै किसी और का अनुशासन नही मानता।

**पर इस सामान्य कल्पनासे मनुष्यको प्रेरणा कैसे मिल सकती है?**

इसका यही अर्थ हुआ कि तुम एक ऐसे ईश्वरको चाहते हो जिसका कि कोई आकार हो, और सत्य तुम्हारे लिए एक अत्यन्त अमूर्त वस्तु है। बात यह है कि मूर्ति-पूजा मानव-प्रकृतिका मानों एक अभिन्न अंग है। किन्तु यदि तुम सत्यको ईश्वरके रूपमें नही पूज सकते तो ईश्वरको सत्यके रूपमें पूज सकते हो। ईश्वर सत्य तो है ही, किन्तु ईश्वरके और भी अनेक रूप है। इसीसे मै यह कहना पसन्द करता हूँ कि सत्य ही ईश्वर है। लेकिन तुम्हें मेरा यह कथन शायद रहस्यवादियोकी गूढोक्तियो-जैसा लगेगा, इसलिए तुम उसे समझनेकी झंझटमे मत पडो। तुम तो केवल उसीको पूजो जो तुम्हें सत्य जान पड़े, क्योकि सत्य सापेक्ष रूपमे ही भासित होता है। केवल यह स्मरण रखो कि सत्य उन अनेक गुणोमे से एक नही है जिनके हम नाम लेते हैं। सत्य तो ईश्वरका साक्षात् स्वरूप है, और यही जीवन है, और मै सत्यको पूर्णतम जीवनके रूपमे देखता हूँ, और इसी कारण वह साकार बन जाता है; क्योकि यह समस्त सृष्टि, यह सारी हस्ती ही ईश्वर है, और जो-कुछ भी है, जो-कुछ भी 'सत्य' है, उस सबकी सेवा ईश्वरकी ही सेवा है।

**पर हम ईसाई विद्यार्थी गाँवोंमें किस तरह जायें? शायद वे लोग हमसे दूर रहें, हमसे बचें, क्योंकि हम लोग ईसाई जो हैं।**

तुम लोग उनसे कहो कि 'हम बेशक ईसाई है, पर तुम्हें हमसे डरनेकी जरूरत नही। जिस तरह तुम्हारे हिन्दू होनेसे हम तुमसे नही डरते, उसी तरह तुम भी

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इस भेंटका प्रसंग बताते हुए महादेव देसाई कहते हैं: एक ईसाई विद्यार्थीने जो आजकल हमारे साथ ग्रामोंकी स्थितिका अध्ययन कर रहा है, और अपनेको ग्रामसेवा-कार्यके योग्य बना रहा हैं, एक दिन गाधीजी से पूछा कि क्या बगैर धर्मके भी कोई सेवा हो सकती है?

२. गांधीजी बोरसद जानेके लिए २१-५-१९३५ को बम्बई रवाना हुए थे।

हमसे मत डरो। तुम्हारे पास हम कोई स्वार्थपूर्ण हेतु लेकर नही आये है, और हम जानते हैं कि हमारे प्रति तुम्हारे दिलमे कोई दुरभिसन्धि नही है। हम चाहते है कि तुम और भी अच्छे हिन्दू बनो, जिस तरह कि तुम्हारे संसर्गमे आनेसे हम और भी अच्छे ईसाई बन जायेंगे।' उनके पास जाकर उनकी सेवा करनेका यह तरीका है। ईसाई धर्म-प्रचारकोका यह कहना कि वे लोगोको ईश्वरके पक्षमे खीच रहे है, बिलकुल व्यर्थ है। अरे, सर्वशक्तिमान् ईश्वर क्या इतना असहाय है कि वह मनुष्योंको अपनी ओर नही खीच सकता? प्रत्येक मनुष्यका धर्म उसकी अपनी चीज है। मैं हिन्दू-धर्मका उपदेश नही कर सकता, मैं तो केवल उसपर आचरण ही कर सकता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

*हरिजन*, २५-५-१९३५

## १२१. बातचीत : जयरामदास दौलतरामसे

[२१][1] मई, १९३५ [या उसके पूर्व]

यह तो बिलकुल जवाहरलाल नेहरू-जैसी ही बात है। उसका इसमें कोई खास मतलब नही है। वेस्टमिन्स्टरके कानूनके सम्बन्धमें मेरे विचारोंपर उसने कोई चर्चा आमन्त्रित नही की थी। लेकिन हम उसका मिजाज जानते हैं। और इसलिए हमें उसको खुशी-खुशी बरदाश्त करना सीखना चाहिए।

मैंने आनन्दको पत्र लिखा है। उसने अपना यह दुःख आप ही मोल लिया है। उसके पिताको राजी करनेका सबसे अच्छा तरीका उसे भुला देना है। उसको सान्त्वना देने और उसकी सेवा करनेका भी सबसे अच्छा तरीका यही है। उसे अपनी माँ से दृढतापूर्वक कहना चाहिए कि उसे यह वियोग सहना ही है। उसे लोगों या समाजकी चर्चाकी परवाह नही करनी चाहिए। हो सकता है कि वह उसकी बात न सुने। लेकिन उसके यह सलाह देनेके बाद भी यदि उसकी माँ अपना दुःख पालती रहे तो आनन्दको उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। जहाँतक विद्याका प्रश्न है मैं इस बातमे विश्वास नही करता कि अस्तित्वको चाहे जिस कीमतपर और बिना किसी प्रयोजनके कायम रखा जाये। तथाकथित विज्ञानमें अत्यन्त कृत्रिम ढंगकी जो सहायता सुलभ करा रखी है, उसकी उपेक्षा करके जल्दी ही मृत्युको प्राप्त हो जाना तिल-तिल कर मरनेकी अपेक्षा अच्छा है। मैंने आनन्दको इस लहजेमे पत्र लिखा है। उसे शरीर-रक्षाके सम्बन्धमे मेरे इस विचारको सुनकर शायद कुछ आघात भी लगेगा लेकिन मेरा यह विचार वर्षोंसे रहा है और मैं इसपर अमल भी करता

१. गांधीजी वर्धासे बम्बईके लिए इसी दिन रवाना हुए थे।

रहा हूँ। जब मीरा और नानावटीके शरीरके विषयमें कहा गया था कि उनके शरीर बिलकुल छीजते जा रहे हैं तब उनके सम्बन्धमें भी यही किया था।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म से; सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

## १२२. पत्र: छगनलाल जोशीको

वर्धा
२१ मई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हें कुएँके बारेमें अनुमति मिल गई होगी। अब देखो कि क्या होता है। धीरजका फल मीठा होता है। तुम्हें अनुमति नहीं मिली, यह तो मैं कबका जान गया था। मैं तो भूल भी गया था। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुमसे मिलनेके लिए मुझे ईश्वर किसी बहाने उधर ले जाये?

भाई नानजीको[1] अभी कुछ नहीं लिख रहा हूँ। जरूरत पड़ी तो बादमें देखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३१) से।

## १२३. पत्र: कृष्णचंद्रको

२१ मई, १९३५

चि० कृष्णचंद्र,

तुमारी सब शुभेच्छा पूर्ण हो। मैंने तो तुमको कबसे अपना रखा है। लेकिन कहां तक रहोगे सो तो तुम जानो या प्रभु जानता है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७१) से।

१. पोरबन्दर-निवासी नानजी कालीदास मेहता।

# १२४. चर्चा : पियरे सेरेसोलसे[1]

[२१ मई, १९३५]

पियरे सेरेसोल : धनिकोंके लिए उनके रहन-सहनका कोई नियम क्या हम निश्चित कर सकते है? अर्थात्, क्या यह निश्चित किया जा सकता है कि धनिकोंका अधिकार कितने धनपर है और कितनेपर नहीं?

गांधीजी . हाँ, यह निश्चित किया जा सकता है। धनी मनुष्य अपने खर्चके लिए ५ प्रतिशत या १० प्रतिशत अथवा १५ प्रतिशत ले सकता है।

पर ८५ प्रतिशत नहीं?

मै तो २५ प्रतिशततक जानेका विचार कर रहा था। पर ८५ प्रतिशतकी वात तो किसी शोषकको भी नही सोचनी चाहिए।

यही साम्यवादियोके साथ मेरा मतभेद है।[2] मेरे लिए तो अहिंसा ही अन्तिम कसौटी है। हमे यह हमेशा याद रखना चाहिए कि एक दिन हम लोग भी धनियो-जैसी ही स्थितिमे थे। हमे अपनी सम्पत्तिका त्याग करना आसान नही मालूम पड़ता था। हमने जिस तरह अपने प्रति धीरज रखा, उसी तरह दूसरोके प्रति भी रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त मुझे यह मान लेनेका कोई हक नही कि मै सही हूँ और वह गलत। जवतक मै उसके गले अपनी वात नही उतार सकता, तवतक मुझे राह देखनी ही चाहिए। इस वीच अगर वह कहे कि 'मै २५ प्रतिशत अपने लिए रखकर वाकी ७५ प्रतिशत परोपकारी कामोमे लगानेको तैयार हूँ', तो मै उसकी वात मान लूँगा। क्योकि मै जानता हूँ कि सगीनके भयसे दिये हुए १०० फीसदी धनसे स्वेच्छापूर्वक दिया हुआ ७५ फीसदीका यह दान कही अच्छा है। ऐसा करके हम सवके साथ न्याय करते है। अहिंसाका अंचल तो हम दोनोको ही पकड़े रहना चाहिए।

इसपर शायद आप यह कहें कि जो मनुष्य आज जोर-जवर्दस्तीसे अपना धन सुपुर्द कर देता है वह इस स्थितिको कल अपनी इच्छासे स्वीकार कर लेगा। यह सम्भावना मुझे वहुत दूरकी मालूम देती है, और इसपर मै अधिक निर्भर नही करता।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। यह चर्चा रेलगाडीमें हुई थी। गांधीजी वर्धासे बम्बई जा रहे थे और सेरेसोल, जो २३ मईको वहाँसे यूरोपके लिए रवाना होनेवाले थे, इस यात्रामें उनके साथ थे।

२. एक साम्यवादी लेखकने यह मत व्यक्त किया था कि गरीबोंके प्रति गांधीजी की सहानुभूति "धनिकोंके प्रति उनकी सच्ची सहानुभूतिका आवरण-मात्र" थी। महादेव देसाईके अनुसार सेरेसोलकी असल कठिनाई यह थी कि धनिकोंके गले यह बात उतारनेके लिए हमें कबतक राह देखनी चाहिए।

इतनी बात पक्की है कि यदि मैं आज हिंसाका प्रयोग करता हूँ, तो कल निश्चय ही मुझे भारी हिंसाका सामना करना पड़ेगा। अहिंसाको अगर हम नियम बना लेते हैं तो इसमें सन्देह नहीं कि जीवनमें हमें अनेक समझौते करने पड़ेंगे। किन्तु अनन्त-अखंड कलहकी अपेक्षा यह स्थिति अच्छी है।

**धनाढ्य मनुष्यकी न्यायसम्मत स्थितिका वर्णन एक शब्दमें आप किस प्रकार करेंगे?**

वह ट्रस्टी है। मैं ऐसे कितने ही मित्रोंको जानता हूँ जो गरीबोंके लिए पैसा कमाते और खर्च करते हैं, और अपनेको अपनी सम्पत्तिका स्वामी नहीं, किन्तु ट्रस्टी मानते हैं।

**मेरे भी कुछ अमीर और गरीब मित्र हैं। मेरी अपनी कोई सम्पत्ति नहीं है, पर मेरे धनी मित्र जो धन मुझे देते हैं, उसे मैं स्वीकार कर लेता हूँ। इस बातको मैं किस तरह न्यायसंगत मानूँ?**

आप खुद अपने लिए कुछ भी स्वीकार न करें। सैर-सपाटेकी गर्जसे स्विट्जरलैंड जानेके लिए आप चेक स्वीकार न करें, पर हरिजनोंके लिए कुएँ या स्कूल अथवा औषधालय बनवानेके लिए आप उनके लाख रुपये भी स्वीकार कर लें। स्वार्थकी भावना खत्म हुई कि यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता है।

**पर मेरा निजी खर्च कैसे चलेगा?**

आपको इस सिद्धान्तके अनुसार चलना होगा कि हरएक मजदूरको उसकी मजदूरी मिलनी चाहिए। आपको अपनी न्यूनतम मजदूरी लेनेमें कोई संकोच नहीं होना चाहिए। हम सब यही तो करते हैं। भणसालीकी मजदूरी केवल गेहूँका आटा और नीमकी पत्तियाँ हैं। हम सब भणसाली तो हो नहीं सकते, मगर वे जैसी जिन्दगी बसर कर रहे हैं, उसके नजदीक पहुँचनेका प्रयत्न तो हम कर सकते हैं। मैं अपनी आजीविका प्राप्त होनेपर सन्तोष मान लूँगा, पर मैं किसी धनी आदमीसे यह सिफारिश नहीं कर सकता कि वह मेरे लडकेको अपने यहाँ किसी अच्छी-सी जगह रख ले। मुझे तो इतनी ही चिन्ता रखनेकी जरूरत है कि जबतक समाज-सेवा करता रहूँ तबतक यह शरीर टिका रहे।

**किन्तु जबतक मैं किसी धनवानके यहाँसे अपने निर्वाहका खर्च लेता हूँ तब तक निरन्तर उससे यह कहते रहना क्या मेरा कर्त्तव्य नहीं है कि उसकी स्थिति बहुत स्पृहणीय नहीं है और यह कि सिर्फ उसके गुजारेके लिए जितना जरूरी हो उसे छोड़कर बाकीकी सम्पत्तिसे उसे अपना स्वामित्व उठा लेना चाहिए?**

हाँ, अवश्य, यह आपका कर्त्तव्य है।

**पर ये धनी मनुष्य भी सब एक-जैसे नहीं होते? उनमें से कुछएक तो शराबके व्यापारसे मालामाल बने होते हैं।**

हाँ, भेद आप अवश्य करें। आप खुद कलवारका पैसा न लें, पर आपने अगर किसी सेवा-कार्यके अर्थ धनकी अपील निकाली हो तो आप क्या करेंगे? लोगोंसे क्या आप यह कहते फिरेंगे कि जिन्होंने न्याय-पथपर चलकर पैसा कमाया हो, केवल

वे ही उस कोषमे दान दे? मै तो इस शर्तपर पैसा मिलनेकी आशा रखनेके बजाय अपीलको ही वापस ले लेना पसन्द करूँगा। यह निर्णय कौन करेगा कि अमुक मनुष्य न्याय-परायण है और अमुक नही। और यह न्याय भी तो एक सापेक्ष वस्तु है। हम अपने ही दिलसे पूछे तो यह पता चलेगा कि हम अपने तमाम जीवनमे धर्म या न्यायका अनुकरण करके नही चले। 'गीता'मे कुछ ऐसा कहा है कि सबका एक ही लेखा है; इसलिए दूसरोके गुण-दोष देखते फिरने के बजाय दुनियामे अलिप्त बनकर रहो। अहंभावका नाश ही सच्चा जीवन-रहस्य है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-६-१९३५

## १२५. भेंट: 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिको

[२२ मई, १९३५][1]

**भेंट-वार्त्ता प्रारम्भ होनेसे पहले हमारे प्रतिनिधिने गांधीजी से कहा कि मुझे हिदायत कर दी गई है कि मैं आपसे राजनीतिसे सम्बन्धित कोई भी प्रश्न न पूछूँ। गांधीजी ने कहा:**

गांधीजी: बिलकुल सही है। तो क्या आपके पास प्रश्न तैयार है? आप मुझसे क्या कहनेको कहते हैं?

**प्रतिनिधि: सर्वप्रथम तो मैं चाहूँगा कि आप अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके बारेमें मुझे कुछ बतायें। जब दस माह पूर्व उसकी स्थापना हुई, तबसे यह क्या काम करता रहा है?**

ग्रामोद्योग संघका कार्य सुनिश्चित ढंगसे चल रहा है। उसके सम्बन्धमे बतानेको कोई बहुत बडी बात नही है। लेकिन इसके आरम्भके समय जो भी कार्यक्रम निर्धारित किया गया था, उसे लागू करनेकी कोशिश हर क्षण की जा रही है। हालाँकि हमारे सम्मुख प्रत्याशित और अप्रत्याशित सभी प्रकारकी बाधाएँ आ रही है, लेकिन अब भी मूल कार्यक्रममे मेरी आस्था पूरी तरह बनी हुई है। मै मानता हूँ कि दुनियामे मानव-शरीरसे अच्छा प्रगतिका कोई भी साधन नही है और अगर मानव-शरीर ही दुर्बल है, और आन्तरिक तथा बाहरी कारणोंसे दिन-दिन और भी दुर्बल होता जा रहा है तो हम बडे परिणामोकी आशा नही कर सकते। इसलिए हम भोजन और स्वास्थ्य-सफाईके प्रश्नोको हल करनेकी कोशिश कर रहे हैं। और क्योकि पहले घरमे चिराग जलाया जाता है, फिर अन्यत्र, इसलिए हम केन्द्रमें वह सब कर रहे है जिसे बादमे हम भारतके प्रत्येक गाँवमे होते देखना चाहेंगे।

इसके साथ-साथ हमने अपने केन्द्रके सबसे समीपके एक गाँवको इस प्रयोगके लिए चुन लिया है। मै चाहूँगा कि समाचार-पत्र इस आन्दोलनके गम्भीर महत्त्वको

१. यह भेंट-वार्त्ता कलकत्ता मेलमें उस समय हुई थी जब गाड़ी सुबहके वक्त बम्बई पहुँचनेको थी।

पहचानें और इसे अपना विवेकपूर्ण समर्थन दे। विवेकपूर्ण समर्थन देनेसे मेरा मतलब है कि महत्त्वपूर्ण समाचार-पत्र अपने कर्मचारियोमे विशेषज्ञोकी नियुक्ति करे, जो ऐसे शिक्षाप्रद लेख लिखें जिनसे पाठक फायदा उठा सके। आप देखेंगे कि इस कार्यक्रमके बारेमें, जो सतही तौरपर देखनेवालो को नीरस लगेगा किन्तु जो वास्तवमें बहुत रुचिकर है, मतभेदकी कोई गुंजाइश नही है। सारे पक्षों और सब व्यक्तियोको इस प्राथमिक आवश्यकताको समझना चाहिए कि भारतके करोडो लोगोको पौष्टिक भोजन या डॉ० तिलकके शब्दोमे 'युक्ताहार' और स्वास्थ्यप्रद परिवेश प्राप्त होना चाहिए। मेरा खयाल है कि हमे दिन-दिन खोखला बनाती जा रही हमारी गरीबीके बावजूद ये दोनो वस्तुएँ सुलभ कराना सम्भव है।

**जब गांधीजी को यह बताया गया कि इस संघको स्थापित हुए दस माह बीत चुकनेपर भी इसकी ओरसे शायद वर्धा और पनबेलमें किये जानेवाले कामको छोड़कर उसके बारेमें कुछ सुनाई नहीं देता, तब उन्होंने कहा कि सारे देशमें मूक रूपसे काम किया जा रहा है। इसके कार्यकर्त्ता इस बातका पता लगा रहे है कि इसका कार्य किस गहराईतक ले जाया जा सकता है। समाचार-पत्रोंको प्रतिदिन या प्रति सप्ताह बताने लायक कार्य नहीं हो रहा है। जैसे-जैसे उपयुक्त कार्यकर्त्ता मिलते जा रहे हैं, विभिन्न प्रश्नोंको हल करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।**

**यह पूछे जानेपर कि संघके उद्देश्य तथा कार्यको विस्तार देनेके लिए क्या गांधीजी के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे निकट भविष्यमें सारे भारतका दौरा करें, उन्होंने कहा कि मेरे विचारसे अभी यह जरूरी नहीं है। उन्होंने आगे कहा :**

अभी तो सारे भारतका दौरा इस कार्यको गहराईमे ले जानेके बजाय इसे विस्तार देनेके लिए ही किया जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा करनेसे धन प्राप्त होगा और मै कार्यके सम्बन्धमे सतही ढगसे निर्देश भी दे पाऊँगा, मगर वह निर्देश भी, ग्रामसेवकोके सम्मुख जो कठिनाइयाँ आती है, उन्हे जाने बिना ही दे पाऊँगा।

इस समय मै केन्द्र तथा आसपासके गाँवोमें ही अपना प्रयत्न केन्द्रित करनेकी कोशिश कर रहा हूँ ताकि खुद मुझे और साथी कार्यकर्त्ताओको भी अनुभवपर आधारित निर्देश प्राप्त हो सके। अन्य केन्द्रोमे दूसरे कार्यकर्त्ता भी इसी प्रकारसे कार्य कर रहे है। जब हम प्राथमिक प्रशिक्षण ग्रहण कर लेगे तब अगर आवश्यक हुआ तो मै सारे भारतका दौरा करूँगा। याद रखिए कि यह एक प्रकारसे सामूहिक रूपसे प्रौढोको शिक्षित बनानेका ही काम है, यह हमारे बिना पहलेसे तैयारी किये नही किया जा सकता। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके बारेमें मुझे जो-कुछ कहना है वह सब मैंने कह दिया है। बस।

**हमारे प्रतिनिधिने कहा कि वह उनसे एक या दो छोटे-से सवाल और पूछेगा, और उसके बाद वह उन्हें और कोई कष्ट नहीं देगा। गांधीजी को ग्रामीणकला तथा अ० भा० ग्रा० सं० के बारेमें डॉ० ठाकुरके भेजे उस सन्देशका स्मरण दिलाया**

गया जिसमें कविने कहा था कि संघ द्वारा जिस केन्द्रीय संग्रहालयकी स्थापना की जानेवाली है, उसे केवल ग्रामोद्योगोंतक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। उन्होंने कहा था : . . . "किसी राष्ट्रका आर्थिक जीवन, जैसा महात्माजी सोचते हैं, उस तरह से उसके जीवनके अन्य पहलुओसे सर्वथा अलग-थलग चीज नहीं है। आज आर्थिक दीनताके साथ-साथ हम सांस्कृतिक रूपसे भी दीन हैं। यह दीनता हमारे लिए लज्जास्पद है। और जब हम यह सोचते हैं कि एक समय हम सांस्कृतिक दृष्टिसे कितने समृद्ध थे तो उससे हमारी यह दीनताजनित लज्जा कुछ कम नही हो जाती। आज हमारी कलाके नमूने विदेशोके संग्राहालयोंमें पड़े हुए हैं और हमारे ग्राम-कलाकार मिटते जा रहे हैं। . . . महात्माजी से कहिए कि कला कोई श्रीसम्पन्न लोगोकी विलासिता का साधन नहीं है। गरीबोंको भी इसकी उतनी ही जरूरत है।" . . .

डॉ० ठाकुरकी ओरसे आनेवाले हर सन्देशपर मै आवश्यक रूपसे ध्यानपूर्वक विचार करता हूँ। मै भी यह मानता हूँ कि ग्रामीण कलाका ध्यान रखा जाना चाहिए और जब उनकी सहायता मिलेगी तो हम उसकी भी उपेक्षा नही होने देंगे। अगर हम अपना कर्त्तव्य भूल जायें, तब भी वे इसकी उपेक्षा हमें नही करने देंगे। उन्होंने श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ कर की सहायता प्रदान भी की है। श्रीयुत कर वस्तु-स्थितिको प्रारम्भिक तौरपर देख लेनेके विचारसे एक बार यहाँ हो भी गये हैं और इधर मैं दीनबन्धु सी० एफ० एन्ड्रयूजके साथ पूरे विषयपर चर्चा कर चुका हूँ। अब वे इस सम्बन्धमे गुरुदेवसे बातें करेंगे।[1]

गांधीजी से पूछा गया कि क्या वे ऐसा चाहते हैं कि जन-व्यवहारकी भाषा हिन्दुस्तानी, देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जाये। गांधीजी ने कहा :

स्वाभाविक है कि एक विशाल जन-समाज हिन्दुस्तानीको देवनागरी लिपिमे लिखेगा, लेकिन मुसलमान लोग एक अर्सेतक या शायद हमेशा इसे उर्दू लिपिमे ही लिखना चाहेगे। इसीलिए इसकी परिभाषा देते समय हमने लिखा है कि हिन्दुस्तानी उत्तर भारतके लोगो द्वारा बोली जानेवाली भाषा है और देवनागरी अथवा उर्दू लिपि मे लिखी जाती है। लेकिन मुझे यह उम्मीद है कि जब धार्मिक मतभेद समाप्त हो जायेगा और धार्मिक मेलजोल पुख्ता हो जायेगा तथा हिन्दुओ और मुसलमानोके बीच हार्दिक सौहार्दकी भावना स्थापित हो जायेगी, तब दुनियाकी सब लिपियोसे अधिक वैज्ञानिक देवनागरी लिपिको उसका उचित गौरव अवश्य प्राप्त होगा, अर्थात् इसे सारे भारतमे सर्वत्र अपना लिया जायेगा।[2]

"मैं जानता हूँ कि मुझे जो हिदायतें दी गई है उनके तहत मुझे यह प्रश्न तो नहीं पूछना चाहिए, क्योंकि यह निश्चित रूपसे एक राजनीतिक प्रश्न है।" गांधीजी ने कहा :

१. साधन-सूत्रके अनुसार "गाड़ी अबतक कल्याण पहुँच चुकी थी और रामदास गांधी तथा कुछ और लोग डिब्बेमें आ गये थे।" . . .

२. इसके बाद महादेव देसाईने भेंटकर्त्ताको समय समाप्त हो चुकनेका स्मरण दिलाया तो उन्होंने एक और अन्तिम प्रश्न पूछनेकी इजाजत माँगते हुए कहा : . . .

नही, नही, पूछिए।

[प्र० :] श्रीयुत भूलाभाई देसाईने अभी कुछ ही दिन हुए कहा था कि प्रत्येक व्यक्तिको यह प्रयत्न करना चाहिए कि गांधीजी कांग्रेस और राजनीतिमें वापस लौट आयें। आप कांग्रेसमें वापस कब आ रहे है?

अगर आपकी परमात्मातक सीधी पहुँच है, तो यह प्रश्न आप उसीसे पूछिए कि मैं कांग्रेसमे कब आऊँगा। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि मुझे स्वयं ही यह मालूम नही है।[1]

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २३-५-१९३५

## १२६. भाषण: प्रार्थना-सभामें[2]

बम्बई
२२ मई, १९३५

आप लोगोंको आश्चर्य होगा कि जब अनेक मनुष्योंके लिए ईश्वरका अस्तित्व भी सन्देहका विषय हो रहा है, तब मैंने बम्बईमे प्रार्थना-सभा करनेके लिए क्यो हामी भर दी। ऐसे भी लोग है, जिनका यह कहना है कि "अगर ईश्वरका वास प्रत्येकके हृदयमे है, तो फिर कौन किसकी प्रार्थना करे और कौन किसका नाम-स्मरण?" मैं यहाँ इन दिमागी पहेलियोंको सुलझाने नही आया हूँ। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि मेरे बचपनसे ही यह प्रार्थना मुझे सान्त्वना और बल प्रदान करती आ रही है।

मुझसे लोग कहते हैं कि जबसे जेल जानेकी मनाही कर दी गई, तबसे सर्वत्र निराशा-ही-निराशा छा गई है। मैंने सुना है कि लोग किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। न जाने क्यो उन्हे अपना कर्त्तव्य नही सूझ रहा है, जबकि पूरा रचनात्मक कार्यक्रम उनके सामने पडा हुआ है। जब जेल जानेका कार्यक्रम चल रहा था, तब दम्भ, जोर-जबरदस्ती और हिंसाके लिए स्थान था। मौजूदा रचनात्मक कार्यक्रममे इन चीजों के लिए कोई गुंजाइश ही नही है। और न इसमे हताश होनेका ही कोई कारण है। फिर भी लोग संशयग्रस्त और हताश हो रहे हैं। ऐसे लोगोंके लिए ईश्वरका नाम ही सहारा है। प्रभुका यह वचन है कि जो भी अपनेको निर्बल और असहाय समझकर उसकी शरण मे जाता है, उसकी तमाम निर्बलताको वह हर लेता है।

१. इस भेंटवार्ताके अंतमें बताया गया है कि उपर्युक्त प्रश्नका उत्तर पानेके बाद भेंटकर्ताने जाने की अनुमति माँगी। इसपर गांधीजी ने उससे फोटोग्राफरोंसे अपना कमीशन वसूल करको देनेको कहा। उसने फोटोग्राफरोसे कुछ पैसे, जो एक रुपयेसे कम ही थे, इकट्ठे करके गांधीजी को दे दिये।

२. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। यह प्रार्थना-सभा कांग्रेस-भवनके अहातेमें हुई थी और इसमें हजारों लोग उपस्थित थे।

भक्त सूरदासने यही तो गाया है कि "सुने री मैने निर्बलके बल राम।" यह बल अस्त्र-शस्त्रोसे या इसी प्रकारके अन्य साधनोसे प्राप्त नही होनेका। यह बल तो उस अशरण-शरण रामके नाम-स्मरणमे सर्वतोभावेन तन्मय हो जानेसे ही प्राप्त हो सकता है। राम तो भगवान्का केवल एक नाम है। उसे आप 'गॉड' या 'अल्लाह' या जिस नामसे पुकारना चाहें पुकार सकते है। उसी क्षण आपमे शक्ति आ जायेगी, आपकी सारी निराशा दूर हो जायेगी, जब आप सर्वाश्रय छोडकर एक ईश्वरका ही आश्रय ले लेगे। सूरदासके इस भजनमे जो यह आया है कि—"जब लगि गजबल अपनो बरत्यो नेक सरयो नहि काम; निर्बल ह्वै बल राम पुकारयो आये आधे नाम" —उसपर आप मनन कीजिए। आपको यह तो मालूम ही होगा कि गजेन्द्रको जब ग्राहने ग्रस लिया, तब पैर छुडानेका उसने बहुतेरा जतन किया, पर सब बेकार गया। गजेन्द्रकी सिर्फ सूंड-भर जलके ऊपर रह गई थी। उसने अन्तमे अपनेको सर्वथा निर्बल-निसहाय पाकर ज्योही हरिका नाम स्मरण किया, त्यो ही भगवान्ने उसे छुड़ा लिया। गजेन्द्र-मोक्ष तो एक रूपक-मात्र है। पर इसके अन्दर एक महान् सत्य छिपा हुआ है। मैंने अपने जीवनमे बार-बार उस सत्यका अनुभव किया है। घोरसे-भी-घोर निराशाके समय जब इस दुनियामे न तो कोई हमारा सहायक दीखता है और न कोई सहारा, तब भगवान्का अमोघ नाम ही हमे बल और स्फूर्ति प्रदान करता है और हमारे तमाम सशय तथा हमारी निराशाको एक क्षणमे दूर कर देता है। हो सकता है कि आज निराशाकी काली-काली घटाएँ घिरी दिखाई देती हो, पर उन्हे छिन्न-भिन्न कर देनेके लिए हमारे अन्तस्तलसे निकली हुई प्रार्थना काफी है। इस प्रार्थनाकी ही बदौलत मैंने अपने जीवनमें निराशा-जैसी चीजको कभी जाना ही नही। यद्यपि आज मैं काग्रेससे अलग हो गया हूँ, तो भी मैं सब देखता हूँ, सब सुनता हूँ। मेरे चारो ओर जो-कुछ हो रहा है उस सबका मुझे पता है, और अगर यह सब देख-सुनकर किसी मनुष्यको निराशा हो सकती है, तो वह मुझे ही होनी चाहिए। लेकिन निराशा तो मैंने कभी जानी ही नही। तब फिर आप लोग क्यो निराश हो रहे है? भगवान्से आज हम यह प्रार्थना करे कि वह हमारे हृदयसे क्षुद्रता, नीचता और वचकताको दूर कर दे। निश्चय ही वह हमारी इस प्रार्थनाको सुनेगा। मैं जानता हूँ कि अनेकोको इस प्रार्थनाके सहारे निश्चय ही बल मिला है।

स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जबतक हम उस अधिकारको खुद ही नही छोड देते, तबतक हमारे हाथसे उसे कौन छीन सकता है? हमने अपने इस जन्मसिद्ध अधिकारको छोड दिया है और हमे उसे आज फिरसे प्राप्त करना है। स्वराज महज जेल जानेपर निर्भर नही करता। अगर ऐसा होता, तो आज भी तो हजारो कैदी जेलमे पड़े हुए है। वह तो प्रत्येक मनुष्यके अपने कार्यपर निर्भर करता है। उस कार्यकी दिशा आपको बतला दी गई है। गाँवोमे जाकर अपना डेरा जमाइए, ग्रामवासियोकी ही तरह वहाँ रहिए, हरिजनोको अपनाइए और हिन्दू-मुस्लिम-एकताको वास्तविक रूप दीजिए। देशमे जो हिन्दू-मुस्लिम दगे हो रहे है उनसे आप हरगिज हताश न हो, आप तो अपना निर्धारित कार्य करते चले जाइए,

और यह यकीन रखिए कि वह तारनहार प्रभु निश्चय ही आपकी नैयाको पार लगा देगा।

[अंग्रेजीसे]

*हरिजन*, १-६-१९३५। *बॉम्बे क्रॉनिकल*, २३-५-१९३५ से भी।

## १२७. पत्र : मीराबहनको[1]

बोरसद

[२३][2] मई, १९३५

चि० मीरा,

हम यहाँ पौने छह बजे पहुँचे। अब सुबहके ८-२० हुए हैं। मौसम बिलकुल ठण्डा है। मन्द-मन्द हवा चल रही है। आनन्दी[3] और बाल[4] बम्बईमें हमारे साथ हो गये थे। इस प्रकार हम पाँच हो गये हैं। बालने मेरी सेवाका काम सँभाल लिया है। यहाँ बहुत-से पुराने परिचित लोग हैं, जो मेरी जरूरतें पहलेसे ही समझ लेते हैं। इसलिए तुम्हें मेरे लिए कुछ भी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है। मेरे मनमें जरा भी सन्देह नहीं कि तुम्हें अपने साथ न लाकर मैंने अच्छा किया। परन्तु यह आगेके लिए कोई उदाहरण नहीं है। और हर सूरतमें अन्तिम निर्णय तो तुम्हारा ही रहेगा।

आशा है, तुम्हें जितने फलोंकी जरूरत होती होगी, मिल जाते होंगे। जिस किसी चीजकी जरूरत हो, मँगवा लेनेमें संकोच न करना।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०२) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९७६८ से भी

१. *बापूज़ लेटर्स टु मीरा*में मीराबहन बताती हैं : "यूरोपसे लौटनेपर मैं वर्धा आश्रममें बापूसे मिली। उसके कुछ ही दिन बाद बापू अपना आवास मगनवाड़ी ले गये, जहाँ उन दिनों ग्रामोद्योग संघकी जड़ें जमाई जा रही थीं। जब बापूने . . . पत्र . . . लिखा तब मैं वहीं ठहरी हुई थी।"

२. साधन-सूत्रमें "२२" लिखा है जो स्पष्टतः गलत है; क्योंकि गांधीजी बोरसद इसी तारीखको पहुँचे थे।

३. आनन्दी आसर।

४. बाल कालेलकर।

## १२८. पत्र : नारणदास गांधीको

२३ मई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र आज मिला। केशूको भेजनेके लिए तुम्हें तार किया है। मुझे याद नही आता कि तुमने मेरी अनुमति माँगी थी।

घड़ियो[1] [के कारोबार] के बारेमे हरिलालकी बात मुझे जरा भी अच्छी नही लगी। तुम समझाना। इसके बावजूद वह ऐसा करे, तो भले करे।

मैथ्यू आनेके लिए छटपटा रहा है। आश्रमके पास उसका कुछ बकाया नही है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम उसे आनेके लिए किरायेका पैसा भेज दे। मेरी इच्छा तो नही है। यदि उसकी आनेकी तीव्र इच्छा होगी तो आयेगा। उसे मै लिख रहा हूँ कि अगर वह जल्दी नही आता तो उसे रखा नही जा सकेगा।

टाइटस छुट्टीपर नही गया है। वह तो हमेशाके लिए चला गया है। यात्रा-व्यय उसे दे दिया गया। मैंने उसे वर्धामे रखनेकी हामी भर दी थी। उसमे इसकी कोई खास इच्छा दिखाई नही दी। लेकिन त्रावणकोरसे जवाब लिखेगा। किसी अन्य के नाम उसे सिफारिशका पत्र देनेसे मैंने इंकार कर दिया।

थरपारकरका पैसा अभी तो आश्रमके खातेमे से ही निकाल लो। बादमे जरूरी लगा तो दूसरे किसी खातेमे से दे दूँगा।

मेरी दृष्टिमे चिमनलाल[2] ज्यादा खर्च करता है। लेकिन चूँकि हमने दूसरोका भी ऐसा खर्च बरदाश्त किया है, इसलिए उसका भी बरदाश्त करना चाहिए। जीने और स्वस्थ होनेका थोड़ा-बहुत लालच हम सबको लगा रहता है। किसीने अपनी कोई मर्यादा बना रखी है, तो किसीने कोई। चिमनलाल तो वेरावल जाकर और तलवलकरसे[3] इंजेक्शन लेकर ही सन्तुष्ट है। लेकिन हमने दूसरोके लिए इससे ज्यादा खर्च किया है। इसलिए जो पुराने कार्यकर्त्ता है उनपर ज्यादा प्रतिबन्ध लगानेकी मेरी इच्छा नही होती। वे खुद जितने सयमका पालन कर सके उतना काफी है। इस सम्बन्धमे तुम्हे कुछ और तो नही सुझाना है?

मैं समझ गया कि ब्याज नही मिलेगा।

१. हरिलाल गांधी घड़ियोंका कारोबार शुरू करना चाहते थे; देखिए "पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको", २४-५-१९३५।

२. एक वृद्ध आश्रमवासी चिमनलाल एन० शाह।

३. अहमदाबाद-निवासी डॉ० तलवलकर।

लगता है, यह भूल हो गई कि गजाननको पैसा दिया गया। उसने तो अध्ययन भी छोड़ दिया था। धीरूका भी बन्द होना चाहिए। धीरूने जो कागज लिखकर दिया था, उसकी नकल उसके पास होगी। शायद छगनलालके पास भी हो। देखना।

लीलावतीको दिया मेरा सुझाव ठीक है न?

पिताश्री[1] को अलगसे लिख रहा हूँ।

प्रेमा आकर मिल गई थी। अपने कुछ गहने दे गई। बात तो हो ही नही सकी। यदि तुमने प्रेमाके पिछले दो पत्र सुरक्षित रख छोड़े हो तो वे गोमतीको पढनेको दे देना (वह वर्धामें है)।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से; सी० डब्ल्यू० ८४४५ से भी; सौजन्य नारणदास गांधी

## १२९. पत्र: खुशालचन्द गांधीको

२३ मई, १९३५

आदरणीय भाईसाहबकी सेवामे,

चि० नारणदासने लिखा है कि हालाँकि आपने बहुत बाँचा, बहुत मनन किया है; किन्तु इस समय वह सब किसी काम नही आ रहा है, और मन निर्बल हो गया लगता है। ऐसा सबके साथ होता है, अत मुझे कोई आश्चर्य नही हो रहा है। तथापि, आपसे मैंने कुछ और ही आशा की थी। जिसका मन ईश्वरमे रम गया हो, उसे फिर बुढापा नही आता। हाँ, शरीर क्षीण होता है, किन्तु यह तो उसका धर्म ही है। मनका क्षीण होना जरूरी नही है। वह तो लगातार आगे बढता हुआ अन्तमे ईश्वरमें लीन हो जाता है। यही अर्थ —

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।[2]

का है। जो अन्ततक टिके, वही तो ब्राह्मी स्थिति कही जायेगी न? इस स्थितितक पहुँचनेके लिए निर्बल हुआ मन क्या करेगा? इसका एकमात्र उत्तर तो नामस्मरण ही है। अत मेरी तो यह प्रार्थना है कि दृढ सकल्पपूर्वक सभी वस्तुओसे चित्तको हटा कर केवल नामस्मरण करते हुए बनें तो 'नत्वहं कामये राज्यं'[3] — इस श्लोकको

१. खुशालचन्द गांधी; देखिए अगला शीर्षक।

२. भगवद्गीता, २/७२; देखिए खण्ड ३२, पृ० १४४।

३. आश्रम भजनावलि, पद १०; देखिए खण्ड ४४, पृ० ३९६।

दुहराये। किन्तु यदि यह सम्भव न हो तो नामस्मरण ही काफी होगा। यह मनको सर्वथा तेजस्वी बना देगा, मनकी जीर्णावस्था मिट जायेगी और युवावस्था की अनुभूति होगी। किसी भी प्राणी अथवा वस्तुके विषयमे 'ममत्व' हो, तो मेरी प्रार्थना है कि उसे बिलकुल निकाल दे।

मोहनदासके दंडवत् प्रणाम

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से।

## १३०. पत्र : मदालसा बजाजको

२३ मई, १९३५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र भले लम्बा हो जाये मुझे सब खबर मिलनी ही चाहिए। जानकी-बहनसे[1] कहना कि वह घोड़ेपर न बैठे। यदि वह गिर पडी तो अच्छा होनेमे देर लगेगी। तेरे बारेमे ऐसा डर नही है। और घोड़ेपर चढनेवाला गिरता भी है, ऐसा कायदा तो है ही न?

तेरे फोड़ेका इलाज ढूँढना ही होगा। नमक जरूर खाकर देखना, हालाँकि मै नही मानता कि इसके साथ उसका कुछ सम्बन्ध होता है। नीमका सेवन कर देखना। मै उसके प्रयोग कर रहा हूँ। दो वार खानेके बाद आधा तोला [नीमकी] पत्ती चबाकर देखना। इससे भूख ज्यादा लगेगी और रक्त शुद्ध होगा। परिणाम सूचित करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
**पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१७**

१. मदालसा बजाजकी माँ।

## १३१. पत्र : कान्ति और कनु गांधीको

२३ मई, १९३५

चि० कान्ति और कनु,

यह समझ लो कि तुम्हे साथ लानेकी मेरी बड़ी इच्छा थी, लेकिन मैंने उसे दबा लिया। यह ठीक हुआ, इसमे सन्देह नही है। किन्तु इसमें भी सन्देह नही है कि तुम्हारी मेरे साथ सफर करनेकी इच्छा है। आशा है, सब काम ठीक चल रहा होगा। प्रार्थनामे जितना रस-आनन्द भर सको, भरना। कनुको 'गीता' के अध्याय मुखाग्र कर लेने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९७) से, सौजन्य . कान्तिलाल गाधी

## १३२. पत्र : बलवन्तसिंहको

२३ मई, १९३५

चि० बलवन्तसिंह,

तुमारी २१ तारीखकी अव्यवस्था देखकर मे परेशान हूआ। लेकिन अच्छा हूआ कि मैंने तुमारी इतनी निर्बलता जान ली। अब तुमारे स्थिरचित्त होकर अपने को समझ लेना-चाहिये। किशोरलाल और काकासाहबसे बात करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७७) से।

## १३३. पत्र : राजकिशोरी त्यागीको

२३ मई, १९३५

चि० राजकिशोरी,[1]

तुमको मैं साथ नही ले चला उसका मुझको दुःख था। लेकिन तुमारा कल्याण तुमको वही रखनेमे था। लेकिन कोई अवसर आवेगा जब मेरे साथ ही चलेगी, खुश होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६३६) से। सी० डब्ल्यू० ४२८४ से भी।

## १३४. पत्र : अमतुस्सलामको

२३ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

मेरी उमीद है कि खुश होगी और सब कुछ अच्छी तरह चलता होगा। तुम्हारा वजन वढ़ता होगा। किसी बातकी फिक्र होनी नही चाहिये।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२६) से।

१. चन्द त्यागी की पुत्रवधू।

## १३५. भाषण : बोरसदमें[1]

[२३ मई, १९३५ को या उसके पश्चात्][2]

चूहे और पिस्सू छूत फैलाते है, इसलिए डाक्टरोका कहना है कि चूहो और पिस्सुओको नष्ट कर देना चाहिए। पर चूहे और पिस्सू तो ईश्वरके सन्देशवाहक है। इनके द्वारा ईश्वर हमें चेतावनी देता है। मै प्रत्यक्ष अपनी आँखोसे देखता हूँ कि जिन गाँवोमें आपको प्रकृतिने अच्छेसे-अच्छा जलवायु और स्वास्थ्यकर जमीन प्रदान की है वहाँ आप प्रकृतिके नियमोको इस तरह भग करते है कि लगता है वहाँ महामारीने हमेशाके लिए अपना डेरा जमा रखा है। आप कुछ चूहो और पिस्सुओको तो नष्ट कर देंगे, पर यदि आपने अपने घरो और आँगनोको इतना साफ न रखा कि चूहे और पिस्सू पैदा ही न हो, तो वे तो वहाँ बारबार पैदा होगे ही। उन्हें मारनेसे क्या होगा? मुझ-जैसा अहिंसाव्रती मनुष्य तो यही कहेगा कि चूहो और पिस्सुओको भी जीनेका उतना ही अधिकार है जितना कि मुझे है, और इसका तो कोई कारण नही दीखता कि उनका नाश करनेके बजाय मै अपना ही नाश क्यो न हो जाने दूँ। लेकिन अपने इस जीवनमें मै अहिंसाकी उक्त मजिलतक पहुँचनेकी आशा नही करता। यो तो एकाधिक जीवनोमें भी शायद ही ऐसा कर पाऊँ। आप भी अपने लिए शायद ऐसी कोई आशा नही रखते होगे। लेकिन आप अपने आसपास ऐसी परिस्थितियोका निर्माण अवश्य कर सकते है जिनमें चूहे और पिस्सू पैदा ही न हों। मै चाहता हूँ कि आप ऐसी परिस्थितियोका निर्माण करें। मै चाहता हूँ कि इन स्वयसेवकोने गाँवोकी सफाई और रास्तोको झाडने-बुहारनेकी जो मुहिम शुरू की है उसे आप एक स्थायी चीज बना दें। और मै चाहता हूँ कि आप अपने घरोमे चूहोके बिलोको खोलकर नष्ट कर दें और ऐसे फर्श बनाये जिनमें चूहे अपने घर न बना सके।[3]

जिस मनुष्यमें प्लेगके कीटाणु प्रवेश कर गये है वह ऐसे कीटाणुओसे ग्रसित चूहे या पिस्सूसे बदतर है, और जबतक आप अपने शरीरको ऐसा नही बना लेते जिससे रोगाणुओका उसपर कोई असर न हो तबतक आप महामारियोको समाप्त नही कर सकते। प्रकृतिने हमे रोग-प्रतिरोधकी पर्याप्त क्षमता दी है। लेकिन हमने

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। महादेव देसाईके कथनानुसार गांधीजी ने विभिन्न गाँवोंमें लगभग दस सभाओंमें भाषण दिये थे, और अपने भाषणोंमें उन्होंने लोगोंसे कहा था कि "वे अपने शत्रुके भाग जानेसे ही सतुष्ट न हो जायें बल्कि ऐसी व्यवस्था करें जिससे वह दुबारा उनकी ओर रुख ही न करे।"

२. गांधीजी २३ मईको बोरसद पहुँचे थे।

३. आगेके अनुच्छेदकी रिपोर्ट महादेव देसाईने गांधीजी के "एक भाषणके अंश" के रूपमें दी थी।

उसके नियमोकी उपेक्षा करके स्वयं ही वह क्षमता नष्ट कर ली है। हमें रहन-सहन तथा खान-पानमे आरोग्यप्रद और स्वच्छ आदते अपनानेकी यह क्षमता फिर प्राप्त करनी होगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ८-६-१९३५

## १३६. पत्र : एफ० मेरी बारको

२४ मई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारे सम्बन्धमे खुर्शीदसे मेरी बात हुई थी। उसका सारा मकान करीब-करीव खाली हो जायेगा। इसलिए अगर तुम्हे मिरज जाना ही पसन्द हो, तो जरूर जाओ, और जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी जाओ। वैसे अगर केवल परीक्षा करवानेके लिए वम्बई जाना हो तव तो तुम्हे वहाँ कही भी ठहरनेमे कोई दिक्कत नही होगी। तुम्हारे स्वास्थ्यके लिए जो ठीक हो, वही करो।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४२) से। सी० डब्ल्यू० ३३७१ से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

## १३७. पत्र : अगाथा हैरिसनको

वर्धा[1]
२४ मई, १९३५

प्रिय अगाथा,

जवतक सी० एफ० ए० यहाँ है, मुझे तुम्हें लिखनेकी कोई जरूरत नही है। लेकिन तुमने अपने जिस पत्रके साथ 'मैंचेस्टर गार्जियन' को लिखे कार्ल हीथका पत्र भेजा है, उसके वारेमें तो कुछ कहना ही है। उस पत्रका कोई असर नही हो रहा है, क्योकि सचाईको जिस रूपमें लोग यहाँ जानते है उसका इसमे कोई खयाल नही रखा गया। वहाँ राजा दलगत झगड़ोसे ऊपर है, या ऊपर हो सकता है। यहाँ तो सम्राट्का मतलव शासनतंत्र चलानेवाला अधिकारी-वर्ग ही लगाया जाता है। वह अपने प्रतिनिधिके माध्यमसे शासन करता है। भारत कार्यालय वास्तविकतासे

१. स्थायी पता।

सर्वथा अलग पडे इस अनुच्छेदको देखकर उपहास कर रहा है। और सरकार उन कैदियोंको क्यों आजाद करे जिनके मनमे न तो सम्राट्के रूपमे सम्राट्के प्रति और न साम्राज्यके ही प्रति कोई प्रेम है। मैंने राजनीतिक कैदियोको छुड़वानेके किसी आन्दोलनको कभी ठीक नही माना है। मैंने सरकारके हठ-भरे इन्कारको समझ लिया है। उसका रवैया सगत भी है। असगत तो वह तभी होगा जब यह मान लिया जाये कि पूरी प्रणाली ही गलत है। काश, लोग तथ्योपर थोड़ा ध्यान देते।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९१) से।

## १३८. पत्र : अमृतकौरको

२४ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तो तुम पत्र लिखनेके समयतक — यानी इस २० तारीखतक भी — दुर्घटनाके प्रभावसे मुक्त नही हो पाई थी। मुझे उम्मीद है कि अब पूरी तरह मुक्त हो गई होगी।

यह जानकर खुशी हुई कि तुमने ग्रामवासियोके साथ सम्पर्क स्थापित कर लिया है। तुम्हे उनकी घरेलू हालतकी जानकारी लेनी चाहिए और उनके साथ इस तरह मेलजोल बढाना चाहिए जैसे वे तुम्हारे परिवारके सदस्य हो। अभी हमे उनकी नैतिक अवस्थाकी चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। क्योकि उन्हें इस सम्बन्धमें अधिक ज्ञान ही नही है। उनके मनमें कोई कलुष नहीं है। इसलिए अगर हम उनके साथ सम्पर्क स्थापित करेगे तो उनको अपनी कुछ आदतोको छोड़नेके लिए कहना आसान और असरदार हो जायेगा।

गर्मी तो है, पर बहुत ज्यादा दु:खदायी नहीं।

मै चार्लीको अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ।

वहाँके सभी लोगोको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३५) से; सौजन्य . अमृतकौर। जी० एन० ६३४४ से भी

## १३९. पत्र : मीराबहनको

२४ मई, १९३५

चि० मीरा,

एक अटेरन मैंने खुद ही साथमें रख लिया था। इसलिए कोई कठिनाई नहीं हुई। सूत अटेरनेवाले यहाँ काफी हैं, और पूनियाँ भी पर्याप्त मिल जाती हैं। पैर पोंछनेवालोंकी भी कमी नहीं है। भोजनका तो यह है कि बाल बकरियाँ दोहवा लाता है और आम खूब मिल जाते हैं। नीमके पेड़ तो सब जगह हैं ही। इसलिए मेरे लिए तो तुम्हें चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है।

तुम राघवैयाका इलाज करवा रही हो, यह जानकर खुशी हुई। रसोईघरमें हाथ बँटा रही हो, यह भी अच्छा है।

कमला बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्न थी।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०३) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९७६९ से भी

## १४०. पत्र : जमनालाल बजाजको

२४ मई, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। इन्दौरकी बातको भार-स्वरूप न होने देना। जब नीचे उतरो तो वहाँ जरूर हो आना।

गंगादेवीकी खबर मिलती होगी। बोरसदमें सब ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७०) से।

## १४१. पत्र : मणिलाल तथा सुशीला गांधीको

२४ मई, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

कल सरदारकी इच्छानुसार मैं बोरसद आया। बा और महादेव साथ हैं। ३१ को वापस वर्धाके लिए रवाना हो जाऊँगा। बा बहुत करके लगभग महीने-भर के लिए इसी ओर रह जायेगी।

बड़े दुःखकी बात है, तुम्हारा गन्ना सूख गया। लेकिन किसानके भाग्यमें ऐसा होता ही रहता है। इस सबको मनमें रखकर ही खेती की जाती है। पाला पड़नेसे क्या यहाँ इसी बरस करोड़ोंकी सुनहरी फसल बर्बाद नहीं हो गई?

बा भले थोड़ी देर चिन्ता कर ले, किन्तु तुम्हें तो वहाँके सारे समाचार भेजने ही चाहिए। तभी तो, जहाँ आवश्यक हो, मैं मार्गदर्शन कर सकता हूँ।

रामदास-सम्बन्धी तेरा सुझाव मुझे अच्छा लगा। तेरा पत्र उसे भेज रहा हूँ। वह आयेगा तो नहीं, लेकिन एजेंसी जरूर ले सकता है और उससे तुम दोनोंको फायदा होगा। मैं ऐसा करनेका सुझाव दे रहा हूँ।

हरिलाल अभी तो नई बहूकी खोजमें है। घड़ीका धन्धा करना चाहता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

. . .[1] जमनालालजी से जो पैसे उधार लिये थे, उनमे से तो एक पाई भी वापस नहीं दी। मेढने[2] जो पैसा भेजा था, वह भी हड़प कर गया। इसलिए तुझे मेढको तो हर महीने एक पौंड भेजना ही पड़ेगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३८) से।

१. नाम छोड़ दिया गया है।

२. सुरेन्द्रनाथ मेढ।

## १४२. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

२४ मई, १९३५

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दीर्घायु होओ और खूब सेवा करो; सदाके लिए यही मेरी आशा है, सदाके लिए यही मेरा आशीर्वाद है।

सुमतिका[1] स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

मातुश्री को मेरे प्रणाम।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८००) से; सौजन्य: शान्तिकुमार मोरारजी

## १४३. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

२४ मई, १९३५

चि० अवधेश,

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य प्राणी-मात्रकी सेवा माना जाय।

२. एकादश व्रतका पालन और उसके विरोधी वस्तुका त्याग आवश्यक है।

३. गरुडके वचनमें क्रोध अवश्य था। उसका अर्थ यह कभी नहीं है कि हम भी क्रोध करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१५) से।

१. शान्तिकुमार मोरारजीकी पत्नी।

## १४४. वैनलेस सैनेटोरियमके अधीक्षकको भेजे गये तारका मसविदा

[२४ मई, १९३५ के पश्चात्][1]

अधीक्षक
वैनलेस सैनेटोरियम
मिरज

कु० बारको बुखारके कारण कल रवाना न हो सका। शनिवारकी सुबह वहाँ पहुँचूंगा।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

## १४५. एक लाख रुपया चाहिए

हरिजन सेवक संघका केन्द्रीय बोर्ड सेठ जुगलकिशोर बिड़लाके दिये हुए रुपयेसे बहुत-से कुएँ हरिजनोके लिए बनवा चुका है। वह रुपया अब समाप्त हो चला है किन्तु हरिजनोके लिए कुएँ बनवानेकी आवश्यकता अब भी शेष है। सार्वजनिक कुओसे हरिजनोके पानी भरनेका विरोध अब भी अनेक स्थानोमे किया जा रहा है, और बेचारे हरिजनोको या तो मवेशियोके हौजोका पानी पीना पड़ता है, या लोग दया-वश उनके घडोमे दूरसे जो पानी डाल देते हैं उसके लिए उन्हे पैसा देना पडता है। इसलिए जितने भी नये कुएँ बनेंगे उनसे निस्सन्देह हरिजनोका कष्ट-निवारण तो होगा ही; साथ ही, उनसे देशकी सम्पत्तिमें वृद्धि भी होगी। इस कामके लिए हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय बोर्डने एक लाख रुपयेकी अपील निकालनेका निश्चय किया है। किस प्रान्तमें कितने कुओकी जरूरत है, इसके आँकडे जनताके सामने रखनेके लिए तैयार किये जा रहे हैं। इतनी बडी आवश्यकताको देखते हुए एक लाख रुपया कुछ भी नही है। किन्तु संघके पास कोई ऐसा जरिया नही कि जिससे वह कुओके बनवाने पर बड़ी-बडी रकमें खर्च कर सके। यह ऐसा काम है जो धीरे-धीरे ही होता है, और फिर उसमें विशेष बुद्धि-कौशल भी चाहिए। हर कोई

१. गांधीजी ने मेरी बारको २४ मईको जो पत्र लिखा था यह तारीख उसीके आधार पर निर्धारित की गई है। देखिए "पत्र: एफ० मेरी बारको", २४-५-१९३५।

कुआँ नहीं बनवा सकता। फिर यह काम एक-दो जगहका तो है नहीं, तमाम प्रान्तोंमें सैकड़ों जगह कुएँ बनवाने हैं, इसलिए कामकी ठीक-ठीक देखभाल रखना भी बहुत मुश्किल है। बोर्डकी यह नीति है कि जिस कामपर वह ठीक तरहसे पैसा खर्च नहीं कर सकता और जनताके आगे उसका ठीक-ठीक हिसाब-किताब नहीं रख सकता, उस कामके लिए वह पैसा माँगता ही नहीं। मैं उम्मीद करता हूँ कि लोग इस छोटी-सी अपीलका तुरन्त पर्याप्त उत्तर देंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-५-१९३५

## १४६. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

२५ मई, १९३५

चि० भगवानजी,

हूबहू वर्णन देनेवाला तुम्हारा पत्र मिला था। अपने शरीरका खूब ध्यान रखना। वाडजको मत भूलना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८७) से, सौजन्य : भगवानजी पु० पण्ड्या

## १४७. पत्र : विनायकप्रसाद पण्ड्याको

२५ मई, १९३५

भाईश्री विनायक,

आपके बहनोईको विनयपूर्वक समझाने-बुझानेके सिवा मैं उनकी चाय और बीड़ी छुड़वानेका और कोई उपाय नहीं देखता। यदि आप सबका प्रेम भी उन्हें द्रवित नहीं करता तो आपको उनकी इस आदतको बरदाश्त करना पड़ेगा।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६७) से।

## १४८. पत्र : अन्नपूर्णाको

वर्धा [के पतेपर]
२५ मई, १९३५

चि० अन्नपूर्णा,

पिताजी ने उपवास क्यों किया? उपवासमे क्या किया? वहूत कष्ट हुआ था? अव क्या खाते है? उपवासका निवारण कैसे किया? सतीश वावुके[1] आ जानेके वाद मुझे सव व्यान लिखो। वैद्यनाथ क्या करता है? अव लड़कियाँ कितनी हुई? देवकपास बोनेकी चेष्टा की जाय।

बापुके आशीर्वाद

श्री अन्नपूर्णा कुमारी
मार्फत श्री गोपवन्धु चौधरी
डा० वारी
जि० कटक

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७८) से।

## १४९. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

वोरसद
२६ मई, १९३५

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र सवेरे साढे तीन वजे मेरे हाथमे दिया गया, और पढकर मैं तुरन्त ही जवाव लिखने वैठा हूँ। रोनेसे सावलीकी वहनोके दु:ख दूर नही होगे। जितना तुम सोचते हो, उतनी खराव हालत सावलीकी हरिजन वहनोकी नही है। यह सिद्ध किया जा सकता है। तुम्हारी कल्पनाशक्ति तुम्हे वहुत दूर खीच ले जा सकती है, इस शक्तिको नियन्त्रित करना चाहिए। यह संसार दु:खका सागर है। यदि इसीका विचार करते रहे, तो इसमे डूंव जायेंगे। इस जगत्का सिरजनहार और नियन्ता ईश्वर है तथा वह न्यायी है। अतः हमारा माना हुआ दु:ख दु:ख नही है, वल्कि कुल मिलाकर सुख ही है; अर्थात् सत्यकी ही जय होती है, ऐसा मानकर मनको

१. सतीशचन्द्र दासगुप्त।

हलका रखना चाहिए। ऐसा करे, तो दूसरोके दु.ख दूर करनेमे भी सहायता मिलती है। किन्तु इसके विपरीत यदि दु खका आँकडा बढाकर रखे तो मोह उत्पन्न होता है और हम दु ख दूर करनेके लायक भी नही रह जाते।

सावलीके बारेमे मै जाँच-पडताल तो करूँगा ही। लेकिन एक बात कह देता हूँ। पहले बहनोकी सूतसे कोई कमाई नही थी, उसके बदले अब इतनी हो गई, यह सन्तोषकी ही बात है। बहनोको दूसरी आमदनी होती ही है। आखिर वे कुटुम्बमे से एक ही होती है। दूसरे कुटुम्बी भी कमाते है। इन बहनोसे अधिक गरीब तो इस देशमे असख्य है। उनकी गरीबीका विचार करके आँसू नही ढालने चाहिए, बल्कि छातीको पत्थर बनाकर गरीबी मिटानेका प्रयत्न करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८८) से; सौजन्य. भगवानजी पु० पण्ड्या

## १५०. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा [के पतेपर]
२६ मई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा सूत अब मुझे मिल गया है। बुरा नही है। अब तुमको ठीक बटदार धागा निकालना सीखना चाहिए। न सीखनेपर सूत कमजोर पड जाता है। देखता हूँ कि तुमने बहुत-सारे हजामतके ब्लेड भज दिये है, जिनमे से कुछ बिलकुल नये है। सूत भेजनेपर खर्च हुए डाक-खर्चकी पूर्ति उनसे हो गई। अब कोई पार्सल भेजनेसे पहले तुमको उसे काफी तादादमे जमा कर लेना चाहिए।

क्या लिफाफो और लिखनेके कागजोंका पैकेट तुमको मिल गया? विशेषज्ञने अभीतक कागज बनानेका काम शुरू नही किया है। मैंने उसको इन्दौरसे आई हुई सामग्रीसे पत्र आदि लिखनेका कागज इत्यादि तैयार करनेका काम सौपा है। वह जब बना लेगा, तुमको सूचना मिल जायेगी।

हाँ, शिमलाके बाजारके बारेमे मैंने बात चलाई तो थी। मैंने तुमको सुझाया था कि तुम खुद जाकर देखो कि वहाँ स्थानीय रूपसे कौन-कौन-सी सब्जियाँ तथा फल मिलते है और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे वे कितने गुणकारी रहते हैं, और बाजारमें दूर-दूरके पहाडी इलाकोसे अपनी उपजाई वस्तुएँ बेचनेके लिए आनेवाले गरीबोकी हालत की भी जानकारी हासिल करो। तुम शिमलामे एक बड़ी तादादमे पहुँचनेवाले लोगोको कागज, खद्दर और इसी प्रकारकी अन्य वस्तुएँ भी बेच सकती हो।

आशा है कि तुम दोनो अब पर्वतीय प्रदेशके वायु-सेवनका लाभ महसूस करने लगे होगे।

एन्ड्रयूजको इसी सप्ताहमे यहाँ पहुँच जाना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६३४५ से भी

## १५१. पत्र: न० रा० मलकानीको

२६ मई, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारे २३ तारीखके पत्रका हरिजी[1] बुरा मान गये लगते है। वह कोई शिष्टतापूर्ण पत्र नही है। उसका स्वर सचिवके लिखे पत्र-जैसा नही, बल्कि किसी प्राध्यापकके लिखे पत्र-जैसा है। सचिवके सामने प्राध्यापककी तुलनामे अप्रिय बाते कहनेके प्रसग बहुत अधिक आते है, और अगर वह अप्रिय बातोको भी प्रिय ढगसे न कह पाये तो फिर उसका सचिव होना व्यर्थ है।

मैने बापाको लिखा है कि हरिजी के कारण वातावरणमें जो विक्षोभ पैदा हो गया है, उसे वही शान्त करे। हरिजी को मै भी लिख रहा हूँ, और तुम भी एक विनयपूर्ण पत्र लिखकर उनसे कह सकते हो कि अगर अनजाने ही तुमसे कही अशिष्ट भाषाका प्रयोग हो गया हो तो उसके लिए वे क्षमा करे।

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च.]

पानी-फण्डके[2] लिए दिये दान की सूची क्या तुम भेजते रहे हो?

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५३) से।

१. हृदयनाथ कुंजरू।

२. हरिजन बस्तियोंमें जल-आपूर्तिकी स्थिति सुधारनेके लिए जून, १९३३ में हरिजन सेवक सघ द्वारा आरम्भ किया गया जे० के० पानी-फण्ड।

## १५२. पत्र : मीराबहनको

२६ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुम गंगादेवीका मार्गदर्शन कर रही हो, इस बातसे मैं बहुत खुश हूँ। उसे अभी कठिन परिश्रमका कोई कार्य नही करना चाहिए। आशा है, राघवैयाकी तबीयतमे सुधार हुआ होगा। सिन्दीकी सफाईका काम एक दिनके लिए भी बन्द नही होना चाहिए।[१] लेकिन साथ ही तुम्हें मौनपूर्वक पहाडीतक का अपना वह भ्रमण भी जारी रखना चाहिए।

सरदारने मेरे लिए बहुत हलका कार्यक्रम रखा है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०४) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९७७० से भी

## १५३. पत्र : कान्ति गांधीको

२६ मई, १९३५

चि० कान्ति,

तेरी कैफियत ठीक है। मैं इतना ही समझा हूँ कि सब मिलाकर तू मेरे साथ रहनेमें ही अपना भला समझता है। मैं यह नही मानता कि मेरे साथ जिस तरह रहना होता है उसीमे सच्ची शिक्षा निहित है, यह बात तेरे मनमे घर कर गई है। लेकिन यह मानता हूँ कि जो निर्णय तूने किया है, उससे तू प्रसन्न है। तेरा भला होगा, इसमे तो मुझे कोई सन्देह है ही नही। तेरा कार्यक्रम मैं समझ गया हूँ। मैं जब वहाँ आऊँगा, तब उसपर विचार कर लेंगे। यदि खतौनी पूरी हो जाए,

१. सिन्दी गाँवके निवासी शौचके लिए गाँवके रास्तोंका उपयोग करते थे। मीराबहनकी शिकायत पर गांधीजी ने उन्हें, गाँववालोंको सफाईका पाठ पढानेकी दृष्टिसे, इन गलियों और रास्तोंको प्रतिदिन साफ करनेकी सलाह दी थी।

तो एक काम निवट जायेगा। काकासाहबकी उपस्थितिका जितना भी लाभ लिया जा सकता हो, लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९८) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

## १५४. पत्र : प्रभावतीको

२६ मई, १९३५

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। तेरा बीमार पड़ना मुझे पसन्द नही आता। रोगसे मुक्त होना ही चाहिए। कमलाने लिखा है कि तू उससे मिलने गई थी। तू गई और जयप्रकाश के साथ भी कुछ दिनो रह आई, यह तूने ठीक किया। इसी तरह अगर वह शादी भी तय हो जाये तो तेरी सारी समस्याएँ सुलझ जाये। देखना, उसके पहले बीमार मत पड जाना। नीमकी पत्तियाँ खाना। कटि-स्नान करना। नियमसे घूमने जाना। मैं ३१को वोरसदसे रवाना हो जाऊँगा और २ जूनको वर्धा पहुँचूंगा। मेरा वजन १०४ पौंड है। खुराकमे इन दिनो दूध, नीमकी पत्तियाँ और आमका रस ले रहा हूँ। फिलहाल इमली नही मिल रही है। इसकी जगह नीबूका रस ले लेता हूँ। मेरी तबीयत अच्छी है। साथमे सिर्फ बा और महादेव हैं। बा और आनन्दी बम्बई से साथ हुए। बहुत करके बा महीने-भर साथ रहेगी। बोचासणमे इन दिनो गगाबहन के[1] पास बहुत-सी लड़कियाँ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४४९) से।

## १५५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२६ मई, १९३५

न तू मुझसे मिल सका, न मैं कपिलको[2] देखने आ सका। महादेवको लिखा तेरा पत्र पढा। कपिलको आराम हो गया, बधाई!

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १५८

१. गंगाबहन वैद्य।
२. मथुरादास त्रिकमजीका पुत्र।

## १५६. पत्र : अमतुस्सलामको

२६ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

तुम्हारा खत मिला। स्टेशन आकर[1] कोई ऐसा गुनाह तो नही किया। क्या खामखा परेशान होती है? तुमने सब खबर ठीक दी है। गगाबहन[2] खुश होगी। राजकिशोरीको[3] मेरा खत मिला होगा।[4] तुम्हारे तबीयतके बाहर काम न करना। मै दो तारीखको पहुँच जाऊँगा।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२७)से।

## १५७. पत्र : मीराबहनको

२७ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुम्हारे दो बढिया वर्णनात्मक पत्र मिले। उनसे पता चलता है कि आत्माभिव्यक्तिके लिए तुम्हे इस तरह अकेले घूमनेकी कितनी जरूरत है। रोज नही तो अक्सर तुम्हे यह सैर करनी ही चाहिए। डाकका समय हो रहा है और मै लिख रहा हूँ। मेरा मुख्य भोजन यहाँ दो पौड दूध, दो तोले नीम, स्थानीय आमोका बडा कटोरा-भर रस और नीबू है। यहाँका मौसम वहाँसे बेशक बहुत ठण्डा है। हम समुद्रसे सिर्फ १५ मील दूर है।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०५)से, सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९७७१ से भी

१. गाधीजी जब कुछ दिन पहले ही बम्बईके लिए रवाना हुए तो अमतुस्सलाम उनसे मिलने वर्धा-स्टेशन गई थी।

२. धूलियावाले रामेश्वरदास पोद्दारकी पत्नी।

३. चन्द्र त्यागीकी बहू।

४. देखिए "पत्र : राजकिशोरी त्यागीको", २३-५-१९३५।

## १५८. पत्र : कनु गांधीको

२७ मई, १९३५

चि० कनु,

तेरा पत्र मिला। 'गीता' विधिवत सीख रहा है, यह अच्छा है। यदि 'मार्गोपदेशिका'[1] ठीक तरहसे सीख ले, तो व्याकरण आ जायेगा। उससे उच्चारणमें भी सरलता होगी और स्मरणशक्ति भी बढ़ेगी। एक-एक मिनटका सदुपयोग कर, तो बहुत-कुछ सीख लेगा। आशा है, सब साफ-सुथरा तो रखता ही होगा। तीसरी चक्की आई थी, उसका क्या हुआ? जो टूट गई थी, उसके ठीक करवानेका क्या हुआ? आशा है, भेंटमें जो आम वगैरह आये थे, उनका हिसाब रजिस्टरमें दर्ज किया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## १५९. पत्र : वैकुंठलाल एल० मेहताको

बोरसद

२७ मई, १९३५

भाई वै[कुंठ],[2]

भाई [म][3]थु[रा][4] दास विसनजी लिखते हैं कि आप हरिजन सेवक संघकी प्रतिज्ञापर हस्ताक्षर नहीं कर सकते, इसलिए त्यागपत्र देना चाहते हैं। यह क्या बात है? मुझे तो विश्वास नहीं हुआ। यह प्रतिज्ञा तो केवल हमारी मानसिक वृत्ति की सूचक है। इसके बिना कैसे चल सकता है? अगर आप ऐसी प्रतिज्ञा नहीं ले सकते, तो फिर वह किससे लिवाई जा सकती है? मैं तो समझता हूँ, भाई मथुरादास आपको [समझे नहीं हैं]। जैसी स्थिति हो [मुझे] समझाकर लिखिए। बम्बईका सघ सुव्यवस्थित हो जाना चाहिए।

बापू

[पुनश्च .]

मैं ३१ को बोरसद छोड़ दूँगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६२) से।

१. बच्चोंके लिए भाण्डारकर-कृत संस्कृत-व्याकरणका गुटका।

२ से ४. कोष्ठकबद्ध अंश उन स्थानोंका निर्देश करते हैं, जो मूल पत्रके क्षतिग्रस्त हो जानेसे साधन-सूत्रमें ही अस्पष्ट हैं।

## १६०. पत्र : विष्णु नारायण अभ्यंकरको

२७ मई, १९३५

भाई विष्णु नारायण अभ्यंकर,

आपका पत्र मैंने ध्यानसे पढ़ लिया। आपने जो दृढता और विश्वाससे खादी-काम किया है उसके लिए अनेक धन्यवाद। प्रजामडलने खादीकी दरी छोडकर मिलके धागेकी दरी ली यह जितना आश्चर्यजनक है इतना ही दु खद है। लेकिन हम जो खादीपर विश्वास रखते है अपना विश्वास कभी न छोड़ें।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (एस० एन० १२७१) से।

## १६१. पत्र : बलवंतसिंहको

२७ मई, १९३५

चि० बलवंतसिंह,

तुमको जब दोषदर्शन नही हुआ है तो क्लेश क्यो? भले कोई महात्मा भी हमारा दोष बतावे लेकिन जबतक हमको प्रतीति न हो तबतक न शोक होना चाहिये, न प्रायश्चित। मैंने तुम[मे] असत्य नही पाया है लेकिन विवेकशून्यता पाई है। जब तुमारे जाहेर पैसेसे जाना था तो जानेका कारण ही नही था। दिल्लीसे आना भी उचित था या नही यह सोचनेकी बात है। ऐसे ही रोटी व आमकी बात है। लेकिन इन सब बातोमें दु.ख माननेकी बात नही है, सिर्फ समजनेकी बात है, मनपर अंकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। मेरी उमीद है कि १२ दिन जो मिल गये है उसका पूरा सदुपयोग किया होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमारा कागद वापिस करता हूं।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७८) से।

## १६२. पत्र : हीरालाल शर्माको

२७ मई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला है। मैं समजा हूं इस वखत तो तुमने पुस्तकोके पैसे दिये हैं। दूसरे आ जानेसे सबके पैसे तुमको जमा दूंगा। पुस्तकोके पैसे तुमारे देनेकी कोई आवश्यकता नही है। कया दूकानदारने कुछ दाम कम लिया कि जो छापा था वही लिया? जो पुस्तक पढ सकते है आज सो तो ऐसे ही पढे जाय। दरम्यान अमरीका का कया होता है सो देखें। वर्धा आकर तो अवश्य सीख सकते हो ये सब तो अमरीका पर निर्भर है। दा० केलागको लिखनेका मतलब यह नही है कि तुमारा जाना उनके उत्तरपर निर्भर है। यदि पासपोर्ट हमारे पास रहता तो मै तुमको ३१ तारीखको अवश्य रवाना कर देता।' केलागके उत्तरकी प्रतीक्षा न करता। पासपोर्टका तो मैंने तुमको लिखा[1] सो हूआ। तुमारी अरजीके सिवा एक कदम भी आगे नही वढ सकते हैं।

मै बोरसदमें हूं। ३१ ता० को रवाना होकर २ जूनको वर्धा पहोचुगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमारे फोडेका कया? कोरटके जजमेंट का कया?

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६२-६३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

## १६३. पत्र : अमतुस्सलामको

२७ मई, १९३५

प्यारी बेटी,

तुमने तो मुझे लिखनेकी मनाही की है, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे खतसे तुमको खुशी होगी। मुझे लिखनेका वक्त है। वहाँ सब अच्छा चल रहा है, जानकर खुशी होती है। जापानी साधु[2] अच्छे होंगे।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८) से।

१. देखिए "पत्र : हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

२. गांधीजी ने उनका नाम आनन्द रखा था।

# १६४. भाषण : बोरसदमें[1]

२७ मई, १९३५

यह शर्मकी बात है कि यहाँ प्लेग चार बरसतक बना रहा। खास बोरसदकी आबादी सिर्फ तेरह हजारकी है। और ताल्लुकेकी आबादी १,४४,००० की है। खास बोरसद और बोरसद ताल्लुकेसे प्लेगको नेस्तनाबूद कर देना कोई ऐसी बात नही जो अशक्य हो। पर पूरे शहरके लिए सिर्फ छह भगी रखनेसे यह काम पूरा होनेका नही। आप सब लोग खुद भगी न बनेगे, खुद सफाईका काम न करेंगे, तो सरदार और उनके स्वयसेवकोके प्रयत्नके बावजूद यहाँ फिर प्लेग फैलेगा। सच बात तो यह है कि स्वयसेवकोने यहाँ जो सहायता-कार्य किया और जो अब समाप्त हो गया है उससे आपकी जिम्मेदारी और अधिक बढ गई है। आपन सफाईका यह काम चालू न रखा तो यह सारा परिश्रम व्यर्थ ही जायेगा। पहले मै जब यहाँ आया तब आप लोगोने सविनय अवज्ञा-आन्दोलनमे जो वीरता दिखाई थी और जो कष्ट सहन किये थे तथा त्याग किया था, उस सबके लिए आपको बधाई देने आया था। लेकिन आज मै आपसे यह कहने आया हूँ कि जो लोग सरकारके खिलाफ लड सकते है वे नही, बल्कि इस प्लेग-जैसे विकट सकटसे जो मोर्चा ले सकते है, वे ही स्वराज भोग सकेंगे। मै आपको यह बताऊँ कि जबसे मैंने 'स्वराज' शब्द सीखा, तभीसे मै इस किस्मके काममें रस लेता आया हूँ। सन् १८९३ से ही, जबसे मेरे सार्वजनिक जीवनका आरम्भ हुआ, मेरी मुख्य रुचि इस प्रकारके रचनात्मक कार्योमे रही है। सरकारके साथ लडनेका मौका तो मेरे जीवनमे बहुत देरसे आया। पर यह कहा जा सकता है कि यह अनेक वर्षोके ठोस रचनात्मक कार्यकी पुख्ता नीवपर खड़ी की गई इमारत है। मैंने नगरपालिकाके हर कायदे-कानूनका यथाशक्ति पालन किया है; और जिस सरकारने मुझे अनेक बार जेलकी सजा दी है वह भी मेरी नियम-पालन करनेकी योग्यताको जानती है। मैंने पहले-पहल दक्षिण आफ्रिकामे जब भंगीका काम सीखा, तबसे मैं यह जोर देकर कहता चला आ रहा हूँ कि इस किस्मके कामसे ही हम स्वराज भोगनेके योग्य बनेगे। आप यह तो नही कह सकते कि स्वराज प्राप्त हो जानेके बाद इन समस्याओकी ओरसे निश्चिन्त होकर आप सो जायेंगे। स्वराजका अर्थ नियम-रहित स्थिति नही। आपको स्वराज मिलनेके बाद भी इन सब प्रश्नोको हल करना ही पडेगा। याद रखिए कि जिस व्यक्तिने सविनय अवज्ञाकी आवाज उठाई थी, वही इस प्रकारके आवश्यक कामके लिए आपको आज आमन्त्रण दे रहा है। जबतक आप अपने शरीर और अपने घरको रोगोके लिए

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

अभेद्य नही बना लेते तबतक आप खादीकी उत्पत्तिका तथा ग्रामोद्योगोको-पुनरुज्जीवित करनेका रचनात्मक कार्य भी नही कर सकते; और इसलिए यह सफाई का काम तमाम रचनात्मक कार्योका मूलाधार है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-६-१९३५ तथा बॉम्बे क्रॉनिकल, २८-५-१९३५

## १६५. पत्र : कान्ति गांधीको

बोरसद

२८ मई, १९३५

चि० कान्ति,

तेरा विनोद-भरा पत्र मिला। रविशंकर[1] मिलता रहता है। यदि उसका सिखाया सूत्र तेरे कंठसे हृदयमें उतर गया हो तो समझ, तेरा बेडा पार हो गया। समय आनेपर वह सब होता रहेगा। बाल भी मिलेगा और शेष सब चीजें भी मिलेगी। भूख-प्यास सबको लगती है, लेकिन भूख-प्यासमें भी जो मस्त रहे, उसीको मस्त कहते है।

मीराबहन-जैसी लकडीकी बाँसुरी यदि किसीके पास हो, तो अमतुस्सलाम को दे देना। मै दूसरी प्राप्त करनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९९) से; सौजन्य कान्तिलाल गाधी

## १६६. पत्र : नारणदास गांधीको

२८ मई, १९३५

चि० नारणदास,

साथका पत्र पढकर हरिलालको दे देना। इसमे कुछ है, ऐसा तुम्हे लगता है या नही?

केशू बम्बई गया है। कुछ छात्रवृत्ति माँग रहा है। गजाननके बारेमें पण्डितजी[2] से मैने कह दिया है। पण्डितजी उससे बात करेंगे। अभी देते रहो।[3]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से; सी० डब्ल्यू० ८४४६ से भी; सौजन्य नारणदास गाधी

१. रविशंकर महाराजके नामसे प्रसिद्ध रविशकर व्यास।
२. नारायण मोरेश्वर खरे।
३. देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", २३-५-१९३५।

## १६७. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२८ मई, १९३५

दुबारा नहीं पढ़ा

चि० प्रेमा,

तुझे पौन घंटे कैसे ठहरना पडा? मगर मैंने यह नही सोचा था कि तू भाग जायेगी। बहुत दिन बाद मिली थी, इसलिए कुछ सवाल पूछने की और जी-भर तुझे देख लेनेकी इच्छा थी। तू अपने स्थानपर पहुँच गई, यह तो ठीक ही हुआ। उस दिन तो वहाँ रही ही थी, इसलिए मनमे लोभ था।

अरविन्दबाबूके बारेमें मैं कुछ कहनेमें असमर्थ हूँ। इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे अपना मार्ग फला है। हम जगत्के काजी न बनें। हाँ, इतना स्वीकार करें कि उनकी छायामें रहनेवाले २०० लोगोमे ऐसे भी हैं जिनके जीवनमे उनके सम्पर्कसे महान् परिवर्तन हुए हैं।

सब अपने-अपने स्वभावका अनुसरण करते हैं।

पश्चिममें व्यक्तिगत जीवनकी पवित्रताकी आवश्यकता नही मानी जाती; यह कहना पूरी तरह सही नही है। यह बात भी नही कि हमारे यहाँ सभी लोग उसकी आवश्यकताको मानते हैं। हम उसकी आवश्यकताको तो स्वीकार करते ही है, साथ ही यह भी मानते हैं कि अन्तःशुद्धि-रहित बुद्धिसे होनेवाले कार्य कितने ही सुन्दर क्यों न लगते हो, उनमें स्थायित्व कभी नही रहेगा। तात्कालिक परिणामोके आधार पर ऐसे कार्योंकी तुलना की ही नही जा सकती। हाँ, उन कार्योंमे, जिनका नीतिके साथ सम्बन्ध न हो, अन्तःशुद्धिकी जरूरत नही होती। व्यभिचारी बढई समकोणवाली मेज बना देगा। परन्तु अन्तःशुद्धि-रहित मनुष्य अस्पृश्यताको नही मिटा सकता, न वह लोगोको चरखेकी तरफ मोड सकता है, क्योकि दोनोमे हृदयकी जरूरत होती है। ऐसे कामोमे समयकी गणना सार्थक नही होती। सत्यनिष्ठासे किये गये कामोके शुभ परिणाम अवश्य होगे, इस बारेमे शंका ही नही हो सकती। यदि इतना विश्वास न हो तो हम नीतिकी रक्षा कभी कर ही नही सकते।

ईश्वर तो कल्पनातीत है। इसलिए हम जिसे भजते हैं वह हमारी कल्पनाका ईश्वर है। सच्चे ईश्वरको किसीने नही देखा और जिन्होने देखा है, वे भी उसका वर्णन नही कर सके हैं। मुझे कौन-सा स्वरूप विशेष प्रिय है, यह कहना कठिन है। परन्तु जिस स्वरूपको मैं पूजता हूँ उसका नाम सत्य है। वह मूर्त है, अमूर्त है। अनेक प्रकारसे प्रकट होता है। अपूर्णको पूर्ण स्वरूप भला कैसे दिखाई दे सकता है?

गहनोंकी बात कहीं भी नहीं लिखूंगा। मेरी डायरीमें तो उसका उल्लेख हो गया है। तेरे पत्रके बाद नयी टिप्पणी लिखी जायेगी; वह तो मेरे अपने लिए होगी। तू इतना ही चाहती है न?

खादी आयेगी तब उसका उपयोग करूंगा।

लीलावती राजकोटसे आई है। इस बार उसका शरीर खूब अच्छा हो गया है। वजन भी बढ़ा है और खुश मालूम होती है।

यहाँसे ३१ तारीखको रवाना होकर २ तारीखको वर्धा पहुँचनेका विचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७३) से।

## १६८. पत्र : कृष्णदासको

[वर्धाके पतेपर]
२९ मई, १९३५

प्रिय कृष्णदास,

मुझे इस बातका इल्म नहीं था कि गैरकानूनी अधिवेशन भी अन्य अधिवेशनो के साथ गिन लिये गये हैं। मेरी समझमें राजेन्द्रबाबूसे[1] उनका निर्णय जानकर तुम्हें इस विषयमें तदनुसार करना चाहिए। यदि उन्हें अधिवेशन गिना जाये तब तो उनके अध्यक्ष भी निःसन्देह प्राथमिक सदस्योंपर लागू होनेवाले नियमोंका अनुसरण करनेवाले हुए तो, अ० भा० कां० क० के सदस्य बन जाते हैं।

श्री श्रीनिवास अय्यंगारका नाम सूचीमें नहीं है क्योंकि मेरी समझमें उन्होंने चन्दा नहीं भरा है।

अगर सचमुच कांग्रेस अपने जीवनके ५० वर्ष पूरे कर चुकी है, तब तो बड़े पैमानेपर आयोजन होने ही चाहिए। कार्यक्रम खूब सोच-समझकर बनाया जाना चाहिए। इस विषयमें राजेन्द्रबाबूसे चर्चा करो।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

सरदारने यह पत्र देख लिया है और वे सहमत हैं।

अंग्रेजीकी नकलसे : अ० भा० कां० क० फाइल, १९३१; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. जो उन दिनों कांग्रेसके अध्यक्ष थे और जिन्हें गांधीजी ने इस पत्रकी एक नकल भेजी थी।

## १६९. पत्र : मीराबहनको

बोरसद
२९ मई, १९३५

चि० मीरा,

तुमने वहाँके मौसमका जो वर्णन किया है, उसे देखते हुए तो बोरसद स्वर्ग मालूम होता है। सुवह-शाम सुहावनी ठण्ड पडती है। वर्धा तो दिन-रात भट्टीकी तरह तपता होगा। कुछ भी हो, सव ठीक चलता रहा तो हम लोग २ जूनको वहाँ पहुँच जायेंगे।

मुझे इस वातकी खुशी है कि जानकीप्रसाद अपनी ही मर्जीसे पार्टीमें शरीक हो गया।

अमतुस्सलामको अपने ही ढगसे विकास करने देना चाहिए। वह विलक्षण लडकी है——कुदरतकी मौज है। अगर वह दीर्घजीवी हुई तो सम्भव है मानव-जाति की प्रथम श्रेणीकी सेविका वन जाये।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६३०६) से, सौजन्य . मीरावहन। जी० एन० ९७७२ से भी

## १७०. पत्र : विट्ठल ल० फड़केको

२९ मई, १९३५

चि० मामा,

तुम्हारा पत्र मैं कल रातको पढ पाया। कल रासमें मुकाम है। ३१ के सवेरे नडियाद। ९.२२ पर नडियादसे अहमदावादकी गाडी पकडनी है। अहमदाबादमें बुधाभाईके यहाँ दिन विताना है। फिर रातको वर्धाकी ट्रेन। अतः अब तो हम अहमदावादमें ही मिल सकेंगे। सूरतमें चार घटे कानजीभाईके[1] यहाँ विताने होंगे। वहाँ भास्करकी[2] राह देखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३१) से।

१. कन्हैयालाल देसाई।
२. डॉक्टर भास्कर पटेल।

## १७१. पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

२९ मई, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

हरिजन सेवक संघके पास हरिजनोंके लिए कुएँ बनवानेकी एक बड़ी योजना है। कुएँ सीमेन्टसे बनवानेका इरादा है। क्या सीमेन्ट प्राप्त करनेमें आपसे मदद मिल सकेगी? ठक्कर बापा कहते हैं, बिहार रिलीफमें आपने ३० प्रतिशतकी छूट दी थी। मैं समझता हूँ, इसमें भी जो सम्भव होगा, करेंगे ही। बम्बईमें कुछ घण्टे बिताये, उस बीच आप भी वहाँ आये थे, यह खबर मुझे बोरसदमें मिली। न मिल सकनेका दु:ख हुआ।

आशा है, आपकी तबीयत बिलकुल ठीक रहती होगी।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स। फाइल नं० १५९/१९३५; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## १७२. पत्र : हीरालाल शर्माको

[२९ मई, १९३५][1]

चि० शर्मा,

मैं क्या करु? तुमको वर्धासे पासपोर्ट नही मिलेगा। जहातक मैं जानता हूं दिल्लीसे ही मिलेगा। मजिस्ट्रेटके [य] हां अरजी होगी। तलाश पोलीस कमिशनर करेगा। इसलिए तुमारे अरजीका फार्म लेकर भरकर देना होगा। मेरी तो उमीद थी कि मैं ही पासपोर्ट निकालुगा लेकिन कानुन ही ऐसा नही होता है। मुझको भी अरजी करनी पड़ी थी। फोटो देना पडा था और यह सब सीमलामें नही लेकिन मुम्बईमे। फरक इतना था कि मेरे लिये सीमलेसे रास्ता साफ कर दिया गया क्योंकि मैं राउंड टेवलमें जा रहा था। तुमारे बारेमें काफी तलाश होगी जैसी सबके बारेमें हुआ करती है। इसमे न कुछ गभराहटकी बात है न कुछ और बात है। ऐसे अमलदारोके संपर्कमें बहुत दफा तुमारे इधर-उधर आना ही पडेगा। अमरीकामें तो बहुत

1. साधन-सूत्रमें यही तारीख दी गई है।

ही आना पड़ता है। हर जगह तेहकीकात और पूछताछ होती है। इसलिए यह काम का आरंभ कर लो।

५००० की बात एक सज्जनने ही लिखी है।[1] अपना नाम प्रगट करना नही चाहता है। कम्पनी तो वही है। इसमे मुझको तो कोई धोका दिया जा सकता ही नही। न उसका मतलब ऐसा है। जब उनको मालुम हुआ कि मै तुमको अमरीका भेज रहा हू तो उसने मुझको सावधान करनेके लिये खत भेजा। मैने लिख दिया, मुझे सावधान होनेका कुछ है नही। तदपि तुमारे लिये कैसी बाते होती है यह तुमारे कानोतक पहोचानेका धर्म समझकर तुमको लिखी। इसमे कोई विचार करनेकी बात नही है।

जोईन्ट पोलिसीका समझा। इसमें कुछ कर नही सकते है ऐसा मुझे डर है। मेरे लेखसे एक भी पोलिसी रुक जानेका संभव नही है। उसकी भी फिकर न करे अगर लिखना कर्तव्य बन जाय तो। मै अब तो ऐसे प्रतीत करता हूं कि लिखनेका कोई कर्तव्य नही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६४ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## १७३. पत्र : कोतवालको

३१ मई, १९३५

भाई कोतवाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने किसीको मुक्त किया ही नही। मैंने तो यह कहा था कि तुमने और हरिभाऊने गलत समझा दिया हो, तो कमेटीके सदस्य मुक्त हो जाये। किन्तु तुम दोनोंने गलत समझाया हो, तब भी, जो तुम्हारे साथ आये थे, वे कैसे मुक्त हो सकते है? अत: वास्तवमे मुक्त तो कोई नही होता। तुम्हारे लिए एक प्रायश्चित्त तो यह है कि तुम वहाँके लोगोको उनके कर्त्तव्यका भान कराओ और दूसरा यह कि आइन्दा तुम्हें अपनी शक्तिके बाहरकी जिम्मेदारी नही लेनी चाहिए। पैसा इकट्ठा करनेकी योग्यता तुममे नही है। तुम्हारे पास पैसा नही है, इसलिए तुम्हें पैसेकी बातमे पडना ही नही चाहिए था। इसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रायश्चित्त नही है। तुमसे कुछ भी इकट्ठा न हो, तो भी कोई बात नही। तथापि, तुम्हें सौ-दो सौ देनेवाला भी मिले तो ले लेना। बूंद-बूंदसे तालाब भरता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६१०) से।

१. देखिए "पत्र : हीरालाल शर्माको", २०-५-१९३५।

## १७४. पत्र : विपिन डा० पटेलको

बोरसद
३१ मई, १९३५

चि० बाबा[1],

आज तो तेरा जन्म-दिन है, मणिबहनने ऐसा बताया। आज तू क्या करेगा? क्या कोई सेवाका काम नही करेगा? करना चाहे तो मणिबहनसे पूछना। तू बडा तो होगा ही। तुझे भला भी होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[ गुजरातीसे ]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १६३

## १७५. भाषण : विट्ठल कन्या विद्यालयके[2] उद्घाटनपर

३१ मई, १९३५

आज हम कन्या विद्यालयका उद्घाटन करने के लिए एकत्र हुए है। मै जैसे बाल-शिक्षणके विषयको घोटकर पी गया हूँ, वही बात कन्या-शिक्षणके सम्बन्धमे भी कह सकता हूँ। लेकिन बडे-बडे धुरन्धर इस बातको क्यो मानेगे? मै भी अब यह दावा नही कर सकता। आजके वातावरणमें कन्या-शिक्षाकी बात करना सरल नही है। सब भले ही कहते रहे कि हम कन्याओको शिक्षा प्रदान कर सकते है। किन्तु मै तो उनसे पूछूँगा, क्या आपने अपनी बेटी या पत्नीको शुद्ध शिक्षा दी है? जिसने अपनी स्त्री या बहन या माता या सासके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन नही किया, वह दूसरोकी बेटियो अथवा बहनोको क्या सिखाने चलेगा? शिक्षक बी० ए०, एम० ए० भले हो गये हो, किन्तु मै तो उन्हे इसी कसौटीपर कसूँगा। कन्या-शिक्षण सम्बन्धी पुस्तके लिखनेवालोके बारेमे मै जानना चाहूँगा कि वे स्वय कैसे पति है, कैसे पिता है।

आप मुझसे कहेंगे कि विट्ठलभाईके स्मारकके रूपमे यह विद्यालय खोला जाना है तथापि, विट्ठलभाईके सम्बन्धमे तो आपने अभी कुछ कहा ही नही। विट्ठलभाईका

१. सरदार पटेलका नाती।
२. नडियाद-स्थित।

स्मारक नड़ियादमे क्यो बनाया जाये? उनकी सेवाका क्षेत्र तो विशाल था। उन्होंने तो बम्बई नगर निगमके अध्यक्षकी गद्दीको सुशोभित किया था। बम्बई और शिमला मे भी राष्ट्रीय हितको आगे रखकर ही जूझे। विट्ठलभाई और मेरे बीच मतभेद चले ही आ रहे थे। तिसपर भी जो उन्होने अमेरिकामे मेरी प्रशंसाका शख फूँका, उसका कारण यह है कि हम दोनोके बीच एक बात समान थी, और वह थी देशके लिए जीने और देशके लिए ही मरनेकी साध। उन्होने एक पैसा भी अपने पास बचाकर नही रखा। जो जमा किया, वह देशके लिए छोड गये। कमाते थे, तब ४०,०००) रुपये दिये जिनका व्याज आज भी आ रहा है। ऐसे व्यक्तिका स्मारक बनाना कोई खेल है? कन्या-शिक्षाका आदर्श तो यह है कि हमारे यहाँकी शिक्षित कन्या न गुडिया बने, न सुन्दर नर्तकी, वरन सुन्दर स्वयसेविका बने। आप लोगोने पाटीदार होनेके नाते यह स्मारक बनानेका निश्चय किया है। वे पाटीदार थे या क्या थे, यह तो भगवान् जानें। मै तो जब पहले उनसे मिला था, तब उनकी फैज टोपी और दाढी देखकर उन्हे मुसलमान समझा था। पूछनेकी आदत नही है, सो पूछा भी नही। सबको भाई माननेवाला जात-पाँत क्यो पूछे? आपको पाटीदार कहकर विट्ठलभाईका मजाक उडाना हो, तो भले उडाइये। उन्होने पाटीदारोके किस रिवाज का पालन किया था? पाटीदारोका कौन-सा दल उन्हे अपने मे शामिल कर सकता है? विट्ठलभाई, वल्लभभाईको यदि आप लोगोने अपना माना तो ठीक समझिए, आप लोगोका दिवाला निकल जायेगा। आप लोग यदि विट्ठलभाईको अपना मानेंगे, तो आपको ढेढ, भगी, धाराला सबको अपना मानना पडेगा। उन्होंने तो भंगियो और पाटीदारोमे कभी भेद नही किया। उनका स्मारक बनाना चाहें, तो आपको इस सस्थाको ऐसा बनाना पड़ेगा, जो मात्र खेडाकी शोभा न हो, सारे हिन्दुस्तानकी शोभा हो। और हिन्दुस्तानकी सेवा करें, ऐसी सेविकाएँ उत्पन्न करनी पडेगी। यह आदर्श सामने रखकर यदि आप यह सस्था चलायेंगे, तब समझा जायेगा कि आपने विट्ठलभाईका सच्चा स्मारक बनाया।

ऐसा करना सरल नही है। किन्तु आपके आग्रह तथा मोहके वश मै यहाँ आ गया। खेडा जिला, जिसके पुण्यस्मरण मेरी स्मृतिमे भरे पडे है, जहाँ मै गाड़ीमे घूमा हूँ, जहाँ पैदल घूमकर मैंने धूल खाई है, जहाँ मै एक बार मरणशय्या पर पड़ा था और जहाँ फूलचन्द-जैसे स्वयसेवकोने मेरा पाखाना उठाया था, वहाँ आनेके लिए मै मना कैसे कर सकता था, कैसे कह सकता था कि विद्यालयका उद्घाटन नही करूँगा? इस विद्यालयका उद्घाटन करनेके लिए मेरे मनमे कोई बड़ा उत्साह नही था, यह बात सच है, क्योकि मै दूधका जला हूँ। फिर भी, मैंने स्वीकार कर लिया क्योकि मै मानता हूँ कि विश्वासके बलपर जहाज चलते है।

[गुजरातीसे]
**हरिजनबन्धु**, ९-६-१९३५

## १७६. भाषण : बालमन्दिरके[1] उद्घाटनपर

३१ मई, १९३५

आजका कार्य प्रारम्भ करनेसे पहले दो बाते कह देना आवश्यक प्रतीत होता है। आज इस अवसरपर फूलचन्द[2] और प्याज-चोर मोहनलाल पड्याकी[3] अनुपस्थिति मुझे बहुत अखर रही है। मैं १९१८ मे नड़ियादमे अनाथाश्रममे रहा था, तब इन दोनोके साथ स्नेह-सम्बन्ध बन गया था और वह दोनोकी मृत्युतक बना रहा। दोनोके अनेक मधुर सस्मरण मैंने सहेजकर रखे है। मोहनलाल नही रहे, तब सरदारका हृदयद्रावक पत्र मेरे पास आया था। सामान्यत: सरदारका हृदय वज्र-जैसा है। चाहे जैसा दु.ख आ पड़े, वे उसे छाती कड़ी करके सहन कर सकते है। ऐसा होते हुए भी, जब मैंने उनके पत्रमे हृदयद्रावक शब्द देखे, तब मै समझ गया कि ऐसे साथीके बिछोहसे उनको कितनी चोट लगी है। इस जिलेको तो उनका अभाव खलेगा ही, गुजरातको भी खलेगा। मूक स्वयसेवकके जिस आदर्शका मैं पोषण करता आया हूँ, ये दोनो वैसे मूक स्वयसेवक थे। दोनोने अपनी सेवाका चिन्तन करते-करते प्राण त्यागे।

फूलचन्दके स्मारकके रूपमे जो बालमन्दिर बनाया गया है, वह मैं देखकर आया हूँ। आपकी यह इच्छा कि मोहनलालका भी कोई स्मारक हो, स्वाभाविक है। किन्तु ऐसे छोटे-छोटे स्मारकोसे हम अपनी आत्माको धोखा न दे, तो अच्छा हो। स्थायी स्मारक बनाना हो, तो वह तो ईंट और चूनेके मकानमे पैसा उँडेलनेसे नही बन सकता। इसका अर्थ यह नही है कि ऐसे स्मारक न बनाये जायें। बल्कि स्मारक बनाते हुए क्या करना चाहिए, यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए। ये गये, किन्तु इनकी जोड़का अब हम कहाँ पायेंगे, ऐसा कहकर बैठे नही रहना चाहिए। ऐसे स्वयसेवक उठ जाये, तो उनका दु ख तो होना चाहिए, किन्तु उनका अभाव नही खटकने देना चाहिए। बादशाहकी मृत्युके बाद जैसे बादशाहकी गद्दी खाली नही रहती, और हम "बादशाह गये, बादशाह दीर्घायु हो" ऐसा कहते है, उसी प्रकार स्वयसेवक न रहें, किन्तु उनकी सस्था बनी रहनी चाहिए, स्वयसेवकोकी परम्परा कायम रहनी चाहिए। फूलचन्द और मोहनलाल दोनो अपने-आपमे एक-एक संस्था थे। यदि ऐसी सस्थाएँ न चले, तो मेरे-जैसोका क्या होगा? यानी एक फाँसीपर चढ़ जाये, तो दूसरा फाँसी पर चढनेके लिए तैयार मिले। इसलिए मैं तो यह सुझाव देता हूँ कि यदि हम फूलचन्द और मोहनलालके स्मारकको चिरस्थायी बनाना चाहते है, तो स्मारक

१. नड़ियाद-स्थित।
२. फूलचन्द बापूजी शाहका १९ अप्रैल, १९३४ को स्वर्गवास हुआ था।
३. मोहनलाल पण्ड्याका ८ मई, १९३५ को स्वर्गवास हो गया था।

बनानेवाले यह सकल्प करे कि हम फूलचन्द और मोहनलाल-जैसा बननेका प्रयत्न करेगे। शेक्सपियरने कहा है, "मनुष्य जो अच्छा करता है, वह तो उसीके साथ दफना दिया जाता है। बुरा ही बच रहता है।" इसमे कविने कोई सनातन सत्य नही उभारा, उसने तो दुनियाको ताना मारा है।

सच्ची बात तो यह है कि प्रकृति कचरेका सग्रह करके नही रखती। वह तो कचरेको गाडकर, जलाकर उसका खाद बनाकर अपना सौरभ फैलाया करती है। उसी प्रकार हमे अपने बडे-बूढोमे, अपने स्वर्गस्थ नेताओंमे कोई दोष हो तो उन्हे दफनाकर उनके गुणोका सचय करना चाहिए। क्योकि उनके दोष नही, उनके गुण ही हमारी पूँजी है। मोहनलाल-जैसोकी अपेक्षा हम अधिक अच्छे हो सकते है, ऐसा माननेमे हम उनके साथ कोई अन्याय नही करते। सब अपने दोष लेकर जन्म लेते हैं। उन दोषोको मिटाकर, गुणोको विकसित करना, सचित करना हम सबका कर्त्तव्य है। जिस हदतक ससार अपने उक्त कर्त्तव्यको नियमित रूपसे पालन नही करता, उस हदतक ससारने अपने उत्तराधिकारकी शोभा नही बढाई।

फूलचन्द बाल-शिक्षण स्मारकके रूपमे जो बालमन्दिर खोला गया है, वह मै आज देखकर आया हूँ। उसके सचालकोसे मालूम हुआ कि बालकोको मन्दिरतक लानेमे प्रतिमास पचास रुपया वाहनपर खर्च होता है। बाल-शिक्षण तथा मॉन्टेसरी-पद्धति मै समझता हूँ। विदुषी मॉन्टेसरीसे मै मिला[1] हूँ। मैने उनसे एक भी पाठ नही पढा, फिर भी उन्होने तो मुझे प्रकट रूपसे प्रमाणपत्र दिया है कि "आप तो मेरी पद्धति पूरी तरह जानते है और इसपर अमल करते आये है।" इस प्रमाणपत्रमे झूठी चापलूसी नही थी, क्योकि यह प्रमाणपत्र तो मैने अपने-आपको पहले ही दे दिया था। अतः बाल-शिक्षण क्या है, इसका पूरा भान रखकर मै कहता हूँ कि पचास रुपयेका यह खर्च मुझे भयानक लगा। बालकोको पंगु बनानेके लिए पचास रुपये देना, यह मॉण्टेसरी-पद्धति नही है। माण्टेसरी-पद्धति यूरोपमे चाहे जैसी चलती हो, इस देशमे उसका अन्धानुकरण करनेवाले मूर्ख है। फिर अनुकरण कहाँ-कहाँ करोगे? इस पद्धतिमे तो शालाके साथ बगीचा जरूरी होता है। इस मन्दिरमे तो मैने बगीचा नही देखा। मैने पूछा, मन्दिर बालकोके घरसे कितनी दूर है। मुझसे कहा गया, एक मीलसे अधिक दूर नही होगा। मै बच्चोके माता-पिता तथा शिक्षकोसे कहता हूँ कि उन्हें ये पचास रुपये बचाने चाहिए। शिक्षकोको स्वय भोरमे ही बाहर निकल जाना चाहिए और बालकोको अँगुली पकड़कर ले जाना चाहिए। बालकोको बग्घीमे लाकर आप फूलचन्दका स्मारक नही बना सकते। फूलचन्द फूलोकी सेजपर सोनेवाला आदमी नही था। वह तो वज्र के समान था। अत. मै तो शिक्षकोसे कहता हूँ कि उन्हें माता-पिताओको सूचित कर देना चाहिए कि यदि आप बालकोको पैदल नही भेज सकते तो हमारा त्यागपत्र स्वीकार कीजिए किन्तु हमसे अपने बालकोको

१. १९३१ में, जब गांधीजी दूसरी गोलमेज कॉन्फ्रेंसमें शामिल होनेके लिए इंग्लैंड गये थे; देखिए खण्ड ४८, पृ० १४२।

पगु न बनवाइये। गाडीमें तो नानासाहब[1]-जैसे वयोवृद्ध अथवा अपग लोग बैठे, मै तो नही बैठूंगा। और जब ६६ बरसका बूढा गाडीमे नही बैठेगा तो ढाई बरसके बच्चोको गाडीमे क्यो लाया-ले जाया जाता है?

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ९-६-१९३५

## १७७. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको[2]

अहमदाबाद
३१ मई, १९३५

गफ्फार खाँ दुबले तो काफी हो गये है, मगर वे प्रफुल्ल और प्रसन्न है। वे कमजोर दिखाई देते है। बातचीत उनके परिवारके लोगोको लेकर ही चलती रही।

[अंग्रेजीसे]
**बॉम्बे क्रॉनिकल**, १-६-१९३५

## १७८. भेंट : समाचार-पत्रोंको

३१ मई, १९३५

**गांधीजी ने कई प्रश्नोंके उत्तर देते हुए कहा कि बोरसदमें प्लेग लगभग समाप्त हो गया है। उसके बाद बातचीतका रुख ग्रामोद्योगोंसे सम्बन्धित कामोंकी ओर मुड़ गया। यह पूछे जानेपर कि उन्होंने वर्धाको अपने सदर मुकामकी तरह क्यों चुना है, गांधीजी ने कहा :**

इसलिए कि वर्धा भारतके केन्द्रमे स्थित है और वर्धामें ही मुझे करीब दो लाख रुपयेकी लागतकी ऐसी जमीन मिल सकी जिसकी किस्म अच्छी है और जिसमें सिंचाईके प्रबन्धके साथ-साथ इमारतें भी हैं। इस जमीनपर तकरीबन ७०० फलोके वृक्ष हैं। मैंने वर्धाका चुनाव इसलिए भी किया कि सेठ जमनालाल बजाज इस बातके लिए बहुत उत्सुक थे कि जो जमीन वे मगनलाल गाधी स्मारकको दान कर देनेकी सोच रहे थे, वह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ द्वारा ले ली जाये। आखिरी बात यह कि वर्धा आधा गाँव, आधा शहर है। मेरी तथा मेरे साथियोकी यह इच्छा थी कि मुख्य कार्यालय शहरी क्षेत्रमे न बनाया जाये।

१. गोपालदास विट्ठलदास देसाई।
२. उसी दिन दोपहर बाद खान अब्दुल गफ्फार खाँ से साबरमती जेलमें मिलनेके बाद गांधीजी ने यह वक्तव्य जारी किया था।

विनोबा और वर्धा-आश्रममे प्रशिक्षित उनका दल तो वहाँ पहलेसे मौजूद था ही, यह भी एक अतिरिक्त आकर्षण था। हम सबके लिए वर्धाको मुख्यालयके रूपमे चुननेके लिए इन सब कारणोने पर्याप्त प्रेरणा दी।

दूसरे सवालोके पूछे जानेपर गांधीजी ने कहा कि वे वर्धासे यथासम्भव बाहर नहीं जायेंगे ताकि काम उनकी उपस्थितिमें ही चलता रहे, क्योंकि यह कल्पना उन्हीं की है। इसके अलावा, यह उचित है कि संघके सभी पदाधिकारी उनके निकट सम्पर्कमें रहें, और उनमें से किसीको जब भी जरूरत हो, मार्ग-दर्शन मिल सके। सोमवारको छोड़कर वे रोज १½ घंटे साथ बैठते हैं।

यह पूछे जानेपर कि क्या उन्होंने गुजरातको असन्तुष्ट होकर छोड़ दिया है, गांधीजी ने कहा, यह बिलकुल गलत खयाल है। [उन्होंने आगे कहा:]

मैं शारीरिक रूपसे गुजरातसे अलग हो गया हूँ और मुझे इसका पर्याप्त दु:ख है; लेकिन मैं दूसरी तरहसे उसके कामोमे उसके साथ जुडा हुआ हूँ।

एक दूसरे सवालके जवाबमें गांधीजी ने कहा कि ग्रामोद्योगके कामके लिए उनकी इच्छा गुजरातमें रहने की तो है, लेकिन ऐसा लगता है कि वहाँ व्यापारिक प्रवृत्ति इतनी अधिक है कि गुजरातमें ग्रामोद्योगके प्रारम्भिक काम प्रारम्भ करके भली-भाँति चलाना कठिन है। गांधीजी की रायमें गुजरातके गाँवोंपर अन्य क्षेत्रोंके बजाय व्यापार-वृत्तिका अधिक असर है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-६-१९३५

## १७९. प्रश्नोंके उत्तर[1]

३१ मई, १९३५

यह पूछे जानेपर कि स्त्रियोंका परिवारके प्रति क्या रुख होना चाहिए और वे किस हदतक कुटुम्बमें अपना व्यक्तित्व कायम रख सकती हैं, गांधीजी ने कहा:

जो हक पतिको है, वे सभी पत्नीको भी हैं, इसमे जरा भी सन्देह नही है। दोनोंके कर्त्तव्य भिन्न हैं, किन्तु उनके अधिकार कम-ज्यादा नही हैं। स्त्री कमीज-पतलून पहनकर बन्दूक लेकर घूमने निकले, तो उसे रोकनेका अधिकार पतिको नही है। ऐसे कामोका जितना हक पुरुषोको है, उतना ही स्त्रियोको भी है। यदि स्त्रीको सिनेमा न जाना हो, तो पुरुष उसे बाध्य नही कर सकता अथवा यदि स्त्री अकेली जाना चाहे तो पुरुष उसे रोक नही सकता। तात्पर्य यह कि दोनोके साथ-साथ करने के कामोमे, उनमे जितना सहकार, सहयोग सध सके, उतना अच्छा है।

१. प्रश्न स्त्रियोंके उत्थानका उद्देश्य लेकर काम करनेवाली संस्था 'ज्योति संघ' की सदस्याओंने पूछे थे।

यह सहकार एकांगी वस्तु नहीं है। इसमें नापतोल हो ही नहीं सकती। यह एकपक्षीय चीज़ ही नहीं है। पुरुष कहता आया है कि मैं तेरा मालिक हूँ; तू मेरी चीज़ है; मैं जैसे कहूँ, वैसे तुझे चलना पड़ेगा। इस प्रकारकी भावनाके लिए मेरे विचारों-की दुनियामें कोई स्थान नहीं है। पुरुषके ऐसे आग्रहके विरुद्ध अन्तिम उपाय सत्याग्रह है। स्त्री भी इसका प्रयोग कर सकती है। यह तलवार इकधारी है, दुधारी भी है। इसका प्रयोग चाहे जहाँ सफलतापूर्वक किया जा सकता है। प्रेमकी इस शक्तिके आगे पुरुषको झुकना पडता है। अपने पतिके प्रति जिसे अपना व्यक्तित्व सिद्ध करना ही पड़े, उस स्त्रीको मैं यह प्रेमका, सत्याग्रहका मार्ग दिखा रहा हूँ। किन्तु यह मार्ग जैसाकि प्रीतम कविने कहा है, "पावककी ज्वाला" है। इस मार्गपर चलना पडेगा, सो भी जूते पहनकर नहीं, नगे पाँव।

**स्त्रियोंकी आर्थिक परतन्त्रता दूर करने के प्रश्नके सम्बन्धमें उन्होंने कहा:**

स्त्रियोंकी आर्थिक परतन्त्रता दूर करनेके भी अनेक उपाय मैं बता सकता हूँ। आर्थिक स्वतन्त्रताका सीधा उपाय यह है कि प्रत्येक स्त्री कोई-न-कोई उद्योग करे। आजकलकी पढ़ी-लिखी बहनें जैसी स्वतन्त्र होती है, वैसी नहीं। वे भी उतनी ही परतन्त्र होती है। किन्तु यह तो शहरकी और ऊँची जातिकी बहनोंकी बात है। मैं गाँवोंमें घूमा हूँ; और वहाँ मैंने असख्य बहनोंको आर्थिक स्वतन्त्रताका उपभोग करते देखा है। वहाँ स्त्री पुरुषोंसे भी अधिक मेहनत करती है। यद्यपि स्त्रीको मेहनताना कम मिलता है। सच पूछो तो स्त्री-पुरुषको समान मज़दूरी मिलनी चाहिए, यह स्त्रीका अधिकार है। यह ईश्वरी न्याय है। ज्योति सघ यह कर सके, तो कहा जायेगा कि उसने ससारमें एक नया आदर्श सामने रखा।

अब यह खोजना रहा कि हमें कौन-सा उद्योग करना चाहिए। करोड़ों स्त्रियोंमें तुम-जैसी एम० ए०, बी० ए० कितनी होंगी? लेकिन मैं तुमसे कहे देता हूँ कि हिन्दकी करोड़ों स्त्रियाँ आर्थिक स्वतन्त्रताका उपभोग करती हैं। अहमदावादकी कितनी स्त्रियाँ करती हैं, यह मुझे मालूम करना है। ज्योति सघके लिए आर्थिक परतन्त्रता दूर करना कठिन है, किसानकी स्त्रीके लिए कठिन नहीं है। वे जो अधिकार माँगती हैं, हम-तुम नहीं भोगते। तलाकके अधिकारके लिए ब्राह्मण और बनियेको लड़ना है। अन्य जातियोंको तो यह अधिकार कबका मिला हुआ है। इसीलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम उनपर कोई झूठा तरस मत खाओ। तुम शहरी जीवन बितानेवाली ही परतन्त्र हो।

हम सबको, जैसे एक ईंटपर दूसरी और दूसरीपर तीसरी रखी जाती है, ऐसे मिलकर काम करना है। तुम्हारे कामकी जो सीमा निर्धारित है, तुम उसीमें रहकर काम करो, और उसमें चार चाँद लगाओ। राष्ट्रीय अथवा सामाजिक जीवनमें सक्रिय भाग लेनेकी इच्छा रखनेवालोंको तुम आमन्त्रित कर सकती हो कि यहाँ आओ। और इसमें तुम सफल हो सको, यह मेरा आशीर्वाद है। किन्तु इसके लिए अनेक बहनोंको फकीरी लेनी पडेगी, जोगन बनना पडेगा। यह हँसी-खेल नहीं है, और यदि खेल है, तो फिर केवल रस्सीपर-चलनेवाले नटके खेल-जैसा खेल है। वह एक

लक्ष्यपर दृष्टिको स्थिर करता है, इष्टका अनुसन्धान करता है, तथा शहनाई और ढोलके सुरके साथ एकतान हो जाता है; तभी लाठीके समान सीधा रह पाता है। ऐसी ही एकाग्रताके साथ काम करो, तो कुछ हो सकेगा।

स्त्रियोंके कर्त्तव्योंके सम्बन्धमें गांधीजी ने कहा :

स्त्रीका कर्त्तव्य अंग्रेजीमें जिसे 'हार्थ एण्ड होम' — चूल्हा और घर कहते है, उसको अक्षुण्ण रखना, उसका रक्षण करना है। पुरुषने यह काम नहीं किया। वह तो रक्षणके किले और परकोटे बनाकर उनमें बैठ गया है। वह घरकी रक्षा करने क्या आयेगा? और आया भी तो वह घरकी कैसी रक्षा करेगा? वह तो घरमें भी किले और परकोटे बनायेगा। गोली मारने के लिए उसमें छेद करेगा, और दीवारपर कॉंच और कीले ठोकेगा। अन्तमें घरके बच्चे उसपर चढकर मर जायेंगे। किन्तु हमें तो घरको सजाना है। इसलिए मेरी तो राय है कि स्त्रीकी शिक्षा दूसरे ही प्रकारकी होनी चाहिए। इसमे एकका काम नीचा और दूसरेका ऊँचा है, ऐसा नही है; बल्कि दोनोका काम एक-दूसरेके पूरकके समान है।

[गुजरातीसे]
गुजराती, १६-६-१९३५

## १८०. एक सेवककी कठिनाइयाँ

कुछ साथियोंकी सहायतासे मै एक आश्रम चला रहा हूँ। उसमें हमारा उद्देश्य अपनेको आदर्श किसान बनाना है, जिससे कि हम गाँवके लोगों और गाँवके समाजके साथ एकरूप हो जायें, और इस प्रकार उनकी सेवा कर सकें। इस उद्देश्यको सामने रखकर खेतीको यहाँ आजीविकाका मुख्य साधन बनाया गया है, और कताई और बुनाई इसमें पूरक उद्योगका काम देती है। . . .

आश्रमका आरम्भ करते समय ऐसा सोचा गया था कि स्वावलम्बी किसानकी जिन्दगी बसर करनेका आदर्श साधनेके साथ-साथ हम लोग हरिजन-सेवा और चरखे आदिके द्वारा गाँवकी भी कुछ सेवा कर सकेंगे। मगर हमें इस उद्देश्यमें पूरी निराशा ही हुई है, क्योंकि हमें अभीतक आश्रमके लिए कोई अनुकूल स्थान नहीं मिल सका। आजकल जिस जगह आश्रम है, वहाँ एक-एक दो-दो घरके पुरवे-भर है और ये पुरवे एक-दूसरेसे आधा या कभी-कभी तो एक-एक मीलके फासलेपर हैं।

फिर, एक दूसरी चीजसे भी आश्रमके कामको भारी धक्का पहुँचा है। आहारके विषयमें मैंने कई भारी भूलें कीं, और उनका पता मुझे अब चला है। मुझे अब ऐसा मालूम होता है कि गरीबीके आदर्शको लेकर जरूरतसे

ज्यादा उत्साहके ही कारण हमने अपने आहारका स्तर बहुत नीचा रखा था। उदाहरणके लिए, साग-भाजीको ले लीजिए। सब्जी आश्रममें तो पैदा होती नहीं थी, इसलिए हमने उसे नियमित रूपसे नहीं खाया। . . . दूध और दूधसे बनी चीजोंको विलासकी वस्तुएँ माना गया . . . इन सब कारणोंसे आश्रम-वासियोंके स्वास्थ्यको बहुत क्षति पहुँची है। आरम्भमें हम बारह आश्रमवासी थे, पर आजकल हम केवल पाँच ही रहते हैं। . . .

आश्रम अबतक शारीरिक श्रमसे ही आजीविका प्राप्त करनेके आदर्शको पकड़े हुए है। . . .

मित्र तथा सहानुभूति रखनेवाले सज्जन और आलोचक भी टॉल्स्टॉयके 'अपनी रोटी शरीर-श्रमसे कमाने'के सिद्धान्तपर हमारे इस आग्रहको समाज-सेवाके आदर्शके विरुद्ध मानते हैं, और कहते हैं कि तुम्हारे आश्रमके कार्यकर्त्ता समाजकी जो सेवा कर सकते थे, वह इस सिद्धान्तके कारण नहीं कर सके। 'समाज-सेवा' करने के लिए मनुष्य यदि शरीर-श्रमसे अपनी रोटी कमानेके सिद्धान्तके मामलेमें कुछ समझौता कर ले तो यह कब और कहाँतक ठीक माना जा सकता है? 'होना' और 'करना' इन दोनोंके बीच यह जो भेद दिखाई देता है, वह अकसर क्या आभास-मात्र नहीं होता? और असलमें 'होना' ही क्या 'करना' नहीं है?

. . . प्रति मास प्रति मनुष्यका भोजन-खर्च ३ रु० और वस्त्रादिका खर्च १ रुपया आया है।

श्री किशोरलाल मशरूवालाके नाम एक सुशिक्षित और निःस्वार्थ कार्यकर्त्ताने जो पत्र लिखा है, यह उद्धरण उसीसे लिया गया है।[1] एक विशुद्ध-हृदय सेवकके प्रयत्नों और उसकी कठिनाइयोंका यह हूबहू चित्र है, और जो व्यक्ति सेवामय जीवन बितानेका प्रयत्न कर रहे हैं, उन सबको इससे कुछ सहायता मिलनेकी सम्भावना है।

प्रयत्न सराहनीय है। यह अच्छा है कि लेखक तथा उसके साथियोंको जब कोई भूल दिखाई देती है, तब वे उसे स्वीकारने और सुधारनेमें हिचकिचाते नहीं।

यह मैं नहीं जानता कि लेखकने इस पत्रमें जो प्रश्न पूछे हैं, उनका श्री किशोर-लालने क्या जवाब दिया है। पर इस पत्र-लेखकको जिस प्रकारके प्रश्नोंने परेशान कर रखा है, उनमें दिलचस्पी रखनेवाले आम पाठकोंकी सहायतार्थ उनके उत्तर देनेका प्रयत्न मैं अवश्य करूँगा।

ऐसा मालूम होता है कि शरीर-श्रमसे रोटी कमानेके सिद्धान्तके विषयमें कुछ गलतफहमी हो गई है। यह सिद्धान्त समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नहीं। बुद्धिपूर्वक

१. यहाँ इसके कुछ अंश ही दिये गये हैं।

किया हुआ श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोई मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी उपयोगी सम्पत्तिमे वृद्धि करता है तो उससे उत्तम और हो ही क्या सकता है? 'होना' निश्चय ही 'करना' है।

श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूर्वक किया हुआ' विशेषण लगाया है, वह यह बतलानेके लिए कि समाज-सेवामें श्रम तभी खप सकता है जब उसके पीछे सेवाका कोई निश्चित हेतु हो, अन्यथा यह कहना होगा कि हरएक मजदूर समाजकी सेवा करता है। एक प्रकारसे वह समाज की सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहाँ बात हो रही है, वह बहुत ऊँचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिए श्रम करता है, वह समाजकी सेवा करता है, और जितने से उसका पेट भर जाये उतनी मजदूरी पानेका उसे हक है। इसलिए इस प्रकारका शरीर-श्रम समाज-सेवासे भिन्न नही है। अधिकाश मनुष्य जो काम अपने शरीरके पोषणके लिए या बहुत हुआ तो अपने कुटुम्बके लिए करते हैं, उसे समाज-सेवक सबके हितके लिए करता है। इन सात आश्रमवासियोको आज यह मालूम हो रहा है कि उन्हे अपने अन्न-वस्त्रके लिए मेहनत करने के पश्चात् दूसरी सेवा करनेका समय शायद ही रहता है। ये सेवक अगर अपने काममे कुशल होते, तो ऐसी बात कभी न होती। असलमे वे कार्यकुशल नही हैं। खेती-बाड़ीके मजदूरके रूपमे वे साधारण मजदूरोकी बराबरी कर ही नही सकते। कारीगरोकी कोटिमें भी वे नौसिखुए ही कहे जा सकते हैं। ईश्वरकी कृपासे प्रत्येक कार्यकर्त्ता अब यह जानता है कि सूत कातनेवाला अपने औजारोको अगर बुद्धिके साथ काममे लाये तो अमुक समयमे वह सूतकी मात्रा सहज ही दूनी कर सकता है अर्थात्, उसकी चरखेकी आमदनी दूनी हो सकती है। यह बात अधिकांश वस्तुओके सम्बन्धमे सत्य है। खेतीमें, इन्ही औजारोके सहारे तरक्की करनेका क्षेत्र इतना विशाल है कि यदि प्रकृति बीचमे न पड़े तो किसान अपनी बुद्धिका उपयोग करके नित्य उतने ही घंटे काम करते हुए अपनी आमदनी सहज ही चौगुनी कर सकते है। इसका मतलब यह हुआ कि आज जितनी आमदनीके लिए वह मेहनत करता है, उतनी मजदूरी करने की उसे जरूरत न रहेगी। इसलिए ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेगे, तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमे वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेगे, और हरिजन-सेवा अथवा किसी दूसरे काममे वे अपनी शक्तिको विना किसी बाधाके लगा सकेगे। जिन्हें अपनी सीमित आयके भीतर अनेक जिम्मेदारियोको निभाना है, उन साधारण गृहस्थोके लिए यह समस्या जटिल हो सकती है, पर जिस त्यागी सेवकको महीनेमे केवल चार ही रुपयेकी जरूरत है, उसका तो चार रुपया कमानेकी मेहनत-मजदूरी कर लेनेके वाद बहुत-सा समय बच सकता है।

लेकिन प्रति मनुष्य तीन रुपये मासिकमे मनुष्यका पेट क्या सचमुच भर सकता है? डॉ० तिलकने बम्बईके लिए जो ५)का हिसाब बाँधा है, अगर वह सही है, तो गॉवके रहन-सहनके लिए ये तीन रुपये ठीक ही है। और डॉ० तिलकने भोजनकी जो सूची दी है, उसमें मैं अपना निजी अनुभव जोड़ दूं तब तो कोई कठिनाई रहती

ही नही। डॉ० तिलकने गाँवकी खुराकमे दूधके चूर्णको शामिल नही किया है। पर वे यह कहते है कि बिना दूधके काम चल ही नही सकता। इन आश्रमवासियोने दूधका जो त्याग कर दिया था, वह उनकी भूल थी। यह सही है कि करोडो मनुष्योको दूधकी एक बूंद भी नसीब नही होती। पर ऐसी तो और भी अनेक चीजे है जो उन्हें नही मिलती। अगर हमे सेवा करने के लिए जीवित रहना है तो उन्हें छोडनेका हमे साहस नही करना चाहिए। इसलिए जिनके बिना हमारा काम चल ही नही सकता, ऐसी चीजें हम न छोडे और गाँववालोको इसमे मदद दें कि वे अपने लिए भी उन चीजोको पैदा कर ले। अनछना और बिना पालिशका गेहूँ, चावल, बाजरा, ज्वार आदि अनाज और ऐसी हरी भाजियाँ, जो कच्ची ही खाई जा सकती है, और दूध, और गाँवोमें पैदा होनेवाले आम, अमरूद, जामुन, बेर आदि मौसमी फल स्वस्थ जीवनके लिए जरूरी है। नीमकी पत्ती तो शायद हरी भाजियोकी रानी कही जा सकती है। नीमकी पत्तियाँ भारतमे सर्वत्र मिल-सकती है। और, मनुष्यके खाने लायक अनेक प्रकारकी ऐसी घास भी है जिसका हमे पता नही। इमली सब जगह मिलती है। यह भी फेंक देनेकी चीज नही है। पर इमलीके विरुद्ध एक तरहका जो पूर्वग्रह है, उसे समझना कठिन है। कीमती नीबूओकी जगह मै अब इमली काममें लाने लगा हूँ, और इससे मुझे बहुत ही लाभ हुआ है। आहार-विषयक सुधार शोध का एक अपरिमित क्षेत्र है और इसके ऐसे बडे-बड़े परिणाम निकल सकते है, जो ससार और खासकर भारतके भूखो मरनेवाले करोड़ो मनुष्योंके लिए काफी महत्त्व रखते है। इसका यह अर्थ हुआ कि स्वास्थ्य और सम्पत्ति दोनोकी ही उनसे प्राप्ति हो सकती है। रस्किनके कथनानुसार तो ये दोनो चीजे एक ही है। इस छोटे-से आश्रमके सदस्योकी यह धारणा बिलकुल सही है कि वे सदा सन्मार्गपर चलकर बडीसे-बडी समाज-सेवा करेगे। उनकी सेवाकी सुगध वहाँ आस-पास फैलेगी और वह सक्रामक सिद्ध होगी। कालान्तरमें यह सेवा-भावना समस्त भारतमे और फिर अखिल विश्वमें व्याप्त हो जायेगी। इस सेवामे एकके कल्याणमे सबका कल्याण निहित है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-६-१९३५

## १८१. पत्र : नारणदास गांधीको

बड़ौदा
१ जून, १९३५

चि० नारणदास,

...[1] के बारेमें क्या तुम कुछ जानते हो? ...[2] के अनुसार तो ये बहनें भारी व्यभिचारिणी हैं। इसमें तनिक भी सचाई हो तो यह बात मुझे मालूम तो होनी ही चाहिए। उसके बाद ...[3] को वहाँ रखनेके बारेमें भी विचार करना होगा। इसलिए इस सम्बन्धमें मेरा मार्गदर्शन करना।

हरिलालको कोई ठीक धन्धा ढूँढनेमें मदद दो। उसका चुनाव मेरे मनको जच नहीं रहा है। आज मैं बड़ौदामें हूँ। यहाँका कन्या-विद्यालय देखने आया हूँ। रसिक[4] मुझसे मिला था। मानना होगा कि उसने अच्छे अंक पाये हैं। बाल और तनसुखके[5] बारेमें भी ऐसा ही है।

सोमवारको वर्धा पहुँचूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

हरिलालके पत्रको फिर पढ़नेपर मालूम होता है कि तुम तो उसे पाठशालामें लेनेको तैयार हो। यदि तुम्हें उसपर इतना विश्वास हो तो मुझे तो यह बात अच्छी ही लगेगी। केशूके साथ बात करना शेष है। मैंने उससे वर्धा आनेको कहा है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४८ से भी; सौजन्य नारणदास गांधी

१, २ और ३. नाम छोड़ दिये गये हैं।
४. वा० गो० देसाईके भतीजे।
५. तनसुख भट्ट।

## १८२. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१ जून, १९३५

भाई खम्भाता,

आपकी बीमारीके बारेमें खबर तो मिलती ही रहती है। अब कैसे है, मुझे लिखियेगा। राजकुमारीने कुछ समाचार दिया, उससे जिज्ञासा और बढ गई है। आपको चगा हो जाना चाहिए। वहाँ क्या उपचार हो रहा है? शरीरकी स्थिति चाहे जैसी हो किन्तु आशा है, मन तो प्रसन्न होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५६) से। सी० डब्ल्यू० ५०३१ से भी; सौजन्य · तहमीना खम्भाता

## १८३. पत्र : अमृतकौरको

वोरसद
२ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

मैं वर्धा २ की बजाय ३ तारीखको पहुँचूंगा। वर्धा पहुंचनेके बाद मैं तुम्हे पत्र लिखनेके और कागज तथा लिफाफे भेज दूंगा।

मेरा खयाल है कि दुर्घटनाका असर अबतक खत्म हो चुका होगा।

तुम्हारी पूनियोका क्या हाल है?

हाँ, मैं खम्भाता-दम्पतिको बहुत अच्छी तरहसे जानता हूँ। वे दोनो बहुत अच्छे कार्यकर्त्ता है। मैं उनके बारेमे चार्लीके पत्रका उत्सुकतासे इन्तजार कर रहा हूँ। मुझे उनका पता भेजना। साथका पत्र खम्भाता-दम्पतिको दे देना या डाकसे भेज देना।

मीराका कहना है कि वर्धा इस समय भट्ठीकी तरह गर्म है। तुलनामें वोरसद काफी अच्छा है।

तुम सबको प्यार।

बापू

[पुनश्च :]

चार्लीसे कहना कि खाँ साहब उन्हें अपना प्यार भेजते हैं।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१४) से; सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८७० से भी

## १८४. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
३ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

सुबह यहाँ पहुँचनेपर मुझे तुम्हारा पत्र तथा नमूने प्राप्त हुए।

मैं डॉ० गोपीचन्दका पत्र लौटा रहा हूँ।

अगर डॉ० जी० के विचारोंसे अलग तुम यह मानती हो कि पुरी खादीको चुंगीकी छूट दिलानेमें समर्थ हुए हैं, तो उनके साथ इसका श्रेय तुम्हें भी मिलना चाहिए।

बाजार जानेमें तन्दुरुस्तीका नुकसान होता दिखे तो मत जाओ।

मैं तुम्हें आकारमें उन नमूनोंके अनुसार पत्र लिखने के गाँवमें बने कागज भेजने की उम्मीद रखता हूँ। नमूनेके अनुसार रंगके कागज कमसे-कम अभी कुछ दिन और नहीं भेज सकूँगा।

तुम सबके लिए प्यार। अगर मेरी छोटी सखी लज्जासे लाल न हो जाये तो उसे मेरा चुम्बन।

बापू

[पुनश्च :]

अभीतक खम्भाताके सम्बन्धमें चार्लीकी तरफसे कोई समाचार नहीं आया।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१५) से, सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६८७१ से भी

## १८५. पत्र : कमलनयन बजाजको

३ जून, १९३५

चि० कमल,

१. कम बोलना।

२. सबकी सुनना लेकिन सही हो वही करना।

३. हर मिनटका हिसाब रखना और जिस क्षणका काम हो, वह उसी क्षण करना।

४. गरीबके समान रहना। धनका अभिमान कभी मत करना।

५. पाई-पाईका हिसाब रखना।

६. ध्यानपूर्वक पढाई करना।

७. इसी प्रकार कसरत करना।

८. मिताहारी रहना।

९. डायरी लिखना।

१०. बुद्धिकी तीव्रताकी अपेक्षा हृदयका बल करोड़ों गुना कीमती है; अत. विकास करना। उसके विकासके लिए 'गीता'का, तुलसीदासका मनन आवश्यक उसका है। 'भजनावली'[1] रोज पढना। प्रार्थना रोज दोनो समय करना।

११. अब सगाई की है तो तू खूंटेसे बँध गया है। मनको दूसरी स्त्रीकी तरफ कभी न जाने देना।

१२. मुझे अपने कार्यके विवरणका एक पत्र हर हफ्ते लिखा करेगा तो तेरा कल्याण होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१९६) से।

१. देखिए खण्ड ४४, पृ० ३९४-४८२।

## १८६. पत्र : नारणदास गांधीको

३ जून, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं आज ही पहुँचा हूँ। बा बोचासणमें रुक गई है। यहाँ तो भट्टी सुलग रही है। लोग कहते हैं कि ऐसा लगभग पूरे महीने रहेगा।

हरिलालके विषयमें तो तुम्हें लिख ही चुका हूँ। वह तुम्हारी देख-रेखमें रहे, यह मुझे अच्छा लगेगा। . .[1] के विषयमें लिखना। केशू यहीं है। आज मौनवार है। कल उससे बात करूँगा। पाठशालाके न्यासपत्रके बारेमें मुझे याद है। समय मिलते ही उसे निबटा दूंगा। मैथ्यूका पत्र आया है। इसके अनुसार उसे कुछ ही दिनोंमें वहाँ पहुँच जाना चाहिए। मैंने उसे लिखा था कि वहाँ पहुँचकर जब वह अपने काममें खरा सिद्ध होगा तभी उसे यात्रा-व्ययका हिसाब चुकाया जायेगा। मेरा खयाल है, बहुत करके यह भी तुम्हें लिख चुका हूँ।

आशा है, विजया अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४९ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

## १८७. पत्र : हीरालाल शर्माको

वर्धा
३ जून, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। पासपोर्टकी अर्जीकी नकल वापिस करता हूं। मनीओरडरमें से जो तुमारे लेना था सो क्यों नही काटा? पुस्तकोंका और दूसरा मेरे खातेमें रखो और जो गवाहके बारेमें पैसे बचे है सो मेरे जमा करो। बादमें लेन-देन होगी। इतना हिसाब तो रख सकते हो ना?

५,००० के बारेमें जो अच्छा लगे सो करो। यदि कोई तुमको अपना नाम नहीं बताता है तो मानो कि वह डरता है। फोडे मिट्टीके प्रयोगसे ही दुरस्त हुए कि और कुछ लगाना पडा था?

बापुके आशीर्वाद

१. नाम छोड दिया गया है।

[पुनश्च]

यहां भी गरमी बहुत तेज है। २४ घंटोतक। भूसावलमें ४ घंटे ठहरना पड़ा। लेकिन थर्ड कलास वेइटीग रुममें नही। १५-१७ की सालोमें थर्ड क्लास वेइटीग रुमका मुझे काफी तजर्बा मिला था।

बापु

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६५ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## १८८. तार: सी० एफ० एन्ड्रयूजको

वर्धा
४ जून, १९३५

एन्ड्रयूज
मनोर विला
शिमला

खम्भाताके सफल ऑपरेशनसे खुशी हुई। प्यार कहिए।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९) से। सी० डब्ल्यू० ५०३२ से भी; सौजन्य. तहमीना खम्भाता

## १८९. पत्र: एस० अम्बुजम्मालको

४ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्,

मुझे कल यहाँ पहुँचनेपर तुम्हारा पत्र मिला। जानकर खुशी हुई कि तुम सब पहाड़पर हो और पिताजी की तन्दुरुस्ती रोज-रोज सुधर रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम यह पूरा माह तो वहीं गुजारोगी।

हाँ, यहाँ बहुत गर्मी पड़ रही है। लोग कहते हैं कि जून-भर ऐसी ही गर्मी रहेगी।

बा बोचासण गई है; हाँ, वह स्थान अपेक्षाकृत काफी ठण्डा है।

मेरा वजन अभी १०४ पौण्डतक पहुँचकर स्थिर हो गया है।

अगर कमलाबाई यहाँ आनेके लिए उत्सुक है, तो मुझे उसे साथ रखने में खुशी होगी। पहले वहीं इस बारेमे मुझे लिखे। पर, इस गर्मीमे वह अभी यहाँ न आये तो अच्छा हो। जुलाईके महीनेमे मौसम काफी ठण्डा हो जायेगा।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०) से; सौजन्य : एस० अम्बुजम्माल

## १९०. पत्र : शास्त्रीको

४ जून, १९३५

प्रिय शास्त्री,

मैं निश्चयपूर्वक नही कह सकता कि अपने, घरमे होनेवाली हर चोरीकी सूचना हमे देनी ही चाहिए। इसलिए मै तो वैसी असाधारण परिस्थितियोके अलावा चोरीकी सूचना नही दूंगा। और चोरके रँगे हाथो पकड़े जानेपर भी हमेशा मुकदमा चलाना आवश्यक नही है। इसकी शिक्षा यह है कि हमारे पास कीमती चीजे होनी ही नही चाहिए और अगर है तो हमे उनकी रखवालीके लिए दिन-रात अपना चौकीदार रखना चाहिए। तुम्हें अपने पडोसियोसे मैत्री कायम करनी चाहिए और नौकरोसे अपनापन। स्त्रियोको कोई आभूषण नही पहनना चाहिए; यदि सोने, चाँदी या मोती वगैरहका हो तो मगलसूत्र भी नही।

ढेकी अच्छा प्रयोग है। लेकिन अपनी जरूरतका धान तो तुम्हे खुद कूटना चाहिए। वह सबसे सस्ता पड़ता है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## १९१. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

४ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मुझे तुमको लिखना तो था सूरतसे ही, परन्तु वहाँ वक्त कहाँसे मिलता? रास्तेमें लिखना असम्भव था और कल लिख ही न सका। वापसीका सफर कठिन रहा। भुसावलमें मुश्किलसे जगह मिली। रात बैठे-बैठे बीती।

अपनी आँतोका इलाज तुरन्त करो। अभी तो सिर्फ क्रमि ही है और तुरन्त अच्छे हो सकते हो। समय मत गँवाओ।

कानूगाने[1] तुम्हारी प्रेरणासे आम भेजे है। गफ्फार खाँको आम मृदुला[2] भेज रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
आबू

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७०

## १९२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

४ जून, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारा खत मिला। शकरलाल और जेराजानीको[3] जो लिखा है सो पढ गया। उन दोनोको मैंने लिखा है। लेकिन तुमको मैं दूसरी ही बात लिखना चाहता हू। हमारी तो उछ्वृत्ति होनी चाहीये अर्थात् जो दूसरोको चाहीये सो हमें नही। हमको खादीसे प्रेम है और मोह कभी नही। हमें ऐसा अभिमान भी नही कि हम ही सबसे अच्छा कर सकते हैं। इसलिए यदि बरकमतामें यदि हम आसानीसे काम न कर सके तो उसे छोड़ दें। इससे भी मैंने तो दूसरी बात बताई है। हमारे लिये अब व्यापार नही है। हम तो स्वावलवी खादीका प्रचार चाहते हैं। बाजारू खादी

१. डॉ० बलवन्तराय कानूगा, अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर।
२. मृदुला साराभाई।
३. विट्ठलदास जेराजाणी।

वनी तो क्या, न बनी तो क्या? बाजारू खादीसे हम खादीको पैगाम नही सिद्ध कर सकते है और वह खादी तो चली ही समजो।

इतना कहते हुए भी मैं कहूंगा कि जबतक यह सत्य तुमारी समजमे न आवे तबतक तुमारे जैसे करना है ऐसे किया करो। इसी कारण मैंने जेराजानी और बेकरको लिखा है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सतीशबाबुका लबा खत आया था। उस वारेमे कुछ कहना नही था इसलिये लिखा नही है।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१०)से।

## १९३. पत्र : एस० एल० सोखेको

वर्धा
५ जून, १९३५

प्रिय कर्नल सोखे,[1]

आपको मालूम होगा कि सरदार पटेलके साथ मैंने बोरसद-ताल्लुकेके कई गाँवो के घरोको खास तौरसे इस बातकी जाँच करने के लिए देखा कि चूहो और पिस्सुओको नष्ट करने के लिए कैलसिडके उपयोगके कारगर होनेकी क्या सम्भावना है। मैंने एक ही नजरमे देख लिया कि यह लगभग असम्भव है; हाँ, अगर आप यह मानते हो कि ईंटके मजिलदार घरोमे, जिनमे वायुरोध की व्यवस्था नही है, पपसे कैलसिड छिडकनेपर वह हर कोने-अंतरे और फर्शकी दरारोमे प्रवेश कर जायेगा तो बात और है। इसी तरह घरोसे मिट्टीके बडे-बडे कच्चे-पक्के बरतनोको भी निकालकर नही फेका जा सकता और इन बरतनोके नीचे और आसपास चूहोको शरण मिलती है। इनके सम्बन्धमे मुझे तो केवल यही एक कारगर उपाय दिखता है कि फर्शको ऐसा बनाया जाये जिससे उसमे चूहोके रहने की कोई गुंजाइश नही रह जाये। जब दक्षिण आफ्रिकामे पहले-पहल महामारीका प्रकोप हुआ तो इसी तरीकेको अपनाया गया और वह सफल भी रहा। तरीका यह था कि सभी कच्चे फर्शोको तोड़ दिया जाता था, हालाँकि इसमे दीवारोको बिलकुल बचाकर रखा जाता था। फिर फर्शोको पक्का बना दिया जाता था और ऐसी व्यवस्था कर दी जाती थी जिससे चूहोके रहने की कोई गुंजाइश न रह जाये। काफी मात्रामें पत्थर या ईंट और सीमेटका उपयोग करके यह काम सस्तेमे और आसानीसे कर लिया जाता था। मकान बनवानेवाले एक अनुभवी ठेकेदारसे परामर्श कर डॉ० भास्कर पटेलने नये और चूहारोधक फर्श बनानेके कई कमखर्च तरीके निकाले है। इस उद्देश्यसे पर्चे जारी किये जा चुके है। अगर आप

1. हाफकिन इन्स्टीट्यूट, बम्बईके निदेशक।

इस तरीकेको अपनी स्वीकृति दे दें तो उससे इसे अतिरिक्त उत्तेजन मिलेगा और आपके मार्ग-दर्शनमें उसकी कमियाँ दूर करके उसे पूर्ण भी बनाया जा सकेगा।

अगर आपको कैलसिडके प्रयोगके बारेमें कुछ और कहना हो या चूहारोधक घर बनानेके तरीकेकी आलोचनामें कुछ कहना हो तो आप अपनी आलोचना भेजनेमें संकोच न करेंगे। आपको जो भी आलोचना भेजनी हो या सलाह देनी हो, उसका सरदार और मैं दोनों स्वागत करेंगे।

यहाँ मैं यह भी बता दूँ कि कैलसिडके प्रयोगकी सम्भावनाकी जाँचके लिए जो एजेंट मेरे बोरसदमें रहते हुए वहाँ गया था, उसने कुछ घरोंका निरीक्षण करके डॉ० पटेलको बताया कि उनमें कैलसिडका प्रयोग नहीं हो सकता। मैंने यह भी पाया कि डॉ० भास्कर पटेल द्वारा तैयार किये गये विशेष एमलशनका ठीक प्रयोग और फिर गंधकका धूआँ कर देना पिस्सुओंको नष्ट करने की दृष्टिसे काफी कारगर सिद्ध हुआ है।

यहाँ मैं यह बताये बिना नहीं रह सकता कि आपने सरदारको और मुझे जितनी अच्छी तरह घुमाकर अपना संस्थान दिखाया, उसके लिए हम दोनों आपके आभारी हैं।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## १९४. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

५ जून, १९३५

चि० रुक्मिणी,

गिरिराजने तेरा नाम दिया था, किन्तु मैं समझा, दामोदरदासकी कोई सम्बन्धी होगी। आज तेरा पत्र पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया। अभीतक तेरी तबीयत खराब होनेकी मुझे कोई खबर नहीं थी। तेरा पत्र ही नहीं आया। इससे मैंने मान लिया था कि तुम दोनों खूब मजेमें होगे। अब वहाँ चंगी हो जाना। मुझे लिखती रहना।

केशू कलतक मेरे पास था। वह बम्बई गया है। वहाँ मोटरका काम सीखनेकी सोचता है। नवीन[1] यहीं है। वह बम्बईमें राधामें[2] मिला था। बा बोचासणमें ही रह गई। रामदास बम्बईमें है।

बापूके आशीर्वाद

श्री० रुक्मिणीदेवी बजाज
शक्ति आश्रम
पो० आ० राजपुर, देहरादून

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९७११) से; सौजन्य: बनारसीलाल बजाज

१. ब्रजलाल गांधीके पुत्र।
२. रुक्मिणीकी बड़ी बहन।

## १९५. पत्र : प्रभावतीको

५ जून, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मैं जयप्रकाशको लिख रहा हूँ। यह पत्र तू लिफाफेमें उसके पास भेज देना। तूने तो भरसक प्रयत्न किया। तू भविष्यमें भी उसे लिखती रहना। यदि जयप्रकाश अपनी तबीयतका खयाल नहीं रखता तो तू क्या कर सकती है? तेरा यह एक वर्ष पूरा हो जाये, उसके बाद तेरे भविष्यका विचार अवश्य करना होगा। उस समय यह अभीष्ट होगा कि तू जयप्रकाशके साथ रहे। उसके लिए अपने हाथसे रसोई करे तथा उसके शरीरका खयाल रखे। किन्तु अभी इस बातका विचार निरर्थक है। मेरा वजन जितना था उतना ही है। सख्त गर्मी पड़ रही है।

अपना स्वास्थ्य वहाँ बिगाड़ना नहीं। सिताबदियारा दो-चार दिनके लिए हो आयें तो अच्छा हो। कुछ दिन जयप्रकाशके साथ रह आई, यह अच्छा किया। तेरी छुट्टी मंजूर हो गई है। विवाहके दूसरे ही दिन चल पड़ना। विवाहमें जितनी सादगी रखी जा सके, रखना।

यहाँ नये आये हुए लोगोंमें तो एक चित्रे ही है। अमतुस्सलाम फिलहाल यहाँ है ही। बहुत काम करती है। देवराज[1] आ गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५०) से।

## १९६. आइए, प्रार्थना करें

वर्धागंज
६ जून, १९३५[2]

जब कोई मनुष्य गिर पड़ता है तो वह अपने उद्धारके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता है। तमिल भाषामें एक कहावत है कि वह निराधारोंका आधार है। क्वेटाकी इस भयंकर विपत्तिको[3] देखकर मानव-बुद्धि स्तम्भित रह जाती है। इसके आगे हमारे पुनर्निर्माणके तमाम प्रयत्न बेकार हैं। इस महानाशके विषयमें सम्पूर्ण सत्य शायद कभी मालूम न हो सकेगा। जो बेचारे इस दुर्घटनामें मर गये, उन्हें फिरसे जीवन-दान नहीं दिया जा सकता।

१. गांधीजी का टंकक।
२. बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-६-१९३५ से।
३. ३१ मई, १९३५ का भूकम्प।

पर मनुष्य तो अपना प्रयत्न सदा जारी रखेगा ही। जो बच गये है उन्हे सहायता अवश्य मिलनी चाहिए। जहाँतक सम्भव है, वहाँतक पुनर्निर्माणका कार्य भी अवश्य किया जायेगा। पर यह सब और इसी प्रकारका और भी काम ईश्वर-प्रार्थनाका स्थान नही ले सकता।

मगर प्रार्थना की ही क्यो जाये? अगर कोई ईश्वर है तो क्या उसे इस भयकर दुर्घटनाका पता न होगा? उसे क्या इस बातकी आवश्यकता है कि पहले उससे प्रार्थना की जाये तब कही वह अपने कर्त्तव्यका पालन करेगा?

नही, ऐसी बात नही है, ईश्वरको याद दिलानेकी कोई जरूरत नही। वह तो घट-घटका वासी है। बिना उसकी आज्ञाके एक पत्ता भी नही हिल सकता। हमारी प्रार्थना तो सिर्फ इसलिए है कि हम अपने अन्तरका शोधन करे। प्रार्थनाके द्वारा तो हम खुद अपनेको यह याद दिलाते है कि उसके अवलम्बके बिना हम सब कितने असमर्थ और असहाय है। हमारा कोई भी प्रयत्न तबतक पूर्ण नही कहा जा सकता, जबतक कि उसमे प्रार्थनाका पुट न हो, जबतक हम निश्चित रूपसे यह स्वीकार न कर ले कि जिस प्रयत्नके पीछे ईश्वरका आशीर्वाद न हो, वह कितना ही अच्छा क्यो न हो, निष्फल जाता है। प्रार्थनासे हम विनम्र बनते है। वह हमे आत्मशुद्धिकी ओर ले जाती है, अन्त निरीक्षण करनेके लिए प्रेरणा देती है।

जो बात मैने बिहारके भूकम्पके[1] समय कही थी, उसे मै आज भी कहूँगा। हरएक भौतिक विपत्तिके पीछे कोई-न-कोई ईश्वरीय अभिप्राय रहता है। एक समय ऐसा आ सकता है जब पूर्ण विज्ञानकी बदौलत पहलेसे ही भूकम्प आनेकी बात हमें उसी तरह मालूम हो जाये जिस तरह कि ग्रहण पडनेकी खबर पहले ही हो जाती है। मानव-बुद्धिकी यह एक और विजय होगी। पर ऐसी एक नही असंख्य विजयोसे भी आत्माकी शुद्धि नही हो सकती, और बिना आत्मशुद्धिके सब व्यर्थ है।

इसमे कोई सन्देह नही कि जिस प्रकार हम बिहारकी विपदाको भूल गये है, उसी प्रकार क्वेटाकी इस महाविपदाको भी भूल जायेगे। आन्तरिक शुद्धिकी आवश्यकताको समझनेवाले लोगोसे मै अपनी इस प्रार्थनामे शामिल होनेको कहूँगा कि हे प्रभो, तू मुझपर ऐसी कृपा कर जिससे मे तेरी भेजी विपत्तियोमे अन्तर्हित तेरे अभिप्रायको समझ सकूँ, उनके फलस्वरूप नम्र बन सकूँ और समय आनेपर स्वयको तेरे समक्ष खड़ा होनेके योग्य बना सकूँ, तथा बिना किसी भेद-भावके अपने समस्त मानव-बन्धुओके कष्टोमे भागीदार बननेको सदा तैयार रह सकूँ।

[अग्रेजीसे]
*हरिजन*, ८-६-१९३५

१. १५ जनवरी, १९३४ का भूकम्प, देखिए खण्ड ५७।

## १९७. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

६ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

मुझे बोरसदमें तुम्हारा पत्र मिला था। अजीब बात है कि ठक्कर बापाने मुझसे उससे भी पहले मिलकर तुम्हारी शिकायत की थी। उनका खयाल था कि मैंने तुम्हारे द्वारा कही गई इकतरफा बातोंपर भरोसा कर लिया है। मैंने उन्हें बताया कि तुमने जो-कुछ कहा, मेरे तारका उससे कोई सम्बन्ध नही था और मैंने उनकी बात सुने बिना कोई राय नही बनाई है। कुछ भी हो, तुम्हें और मुझे ठण्डे दिलसे सोचना चाहिए। ठक्कर बापा कितने भी नाराज क्यो न हो, उनके मनमें कुछ नही होता। सच्चे या काल्पनिक कारणोसे उनके मनमे जो गुबार जम जाता है, उसे वे इस तरह साफ करते है। मेरी सलाह है: वे कुछ भी कहें, उसपर ध्यान मत दो और मतभेद रहनेपर भी वे जैसा कहते हैं, वैसा करो। हमें उनका मन तो खट्टा होने ही नही देना चाहिए।

ऐसा बरताव करो, जैसे वे अब भी पदासीन हो।

आशा है, तुम्हारा घाव अब पूरा भर गया होगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५२)से।

## १९८. पत्र : मनु गांधीको

६ जून, १९३५

चि० मनु,

मैंने तो तेरे दोनों पत्र भाईको[1] भेजे हैं। तुझे भेजा उनका कार्ड बुरा था। मैंने भाईको लिखा है। यह प्रकरण दुःखद होता जा रहा है। भाईसे डरना तूने छोड़ दिया, यह अच्छा किया।

तू कहती है, तुझे मेरा कहना मानना है। सब मामलोमें न? सब मामलोमें माने, तो तुझे मोढ जातिमें शादी करनेका विचार छोड देना चाहिए। मै अवश्य तेरा विवाह अच्छी जगह कर दूंगा। ऐसी जगह, जहाँ तू पूर्ण सुखी हो। मै जो

१. हरिलाल गांधी, मनु गांधीके पिता।

पसन्द करूँगा, उस पसन्दगीमें केवल तेरा हित ही कारण होगा, और कुछ नही। हरिलाल मुझे भयानक बाते लिख रहा है। मेरी तो इस समय यह इच्छा है कि तू मेरे पास हो। हरिलालने मुझे जो लिखा है, मै उसके बारेमे पूछताछ कर रहा हूँ, उसमे भी तेरी मदद चाहिए। लेकिन तुझे मेरे पास रहना पसन्द हो, तभी तेरा आना मुझे अच्छा लगेगा। तेरे शौक बढ गये हो, तो मैं तुझे सन्तोष नही दे सकूँगा, यह भी स्पष्ट है। अत जो तुझे अच्छा लगे, सो करना। मुझे जो लिखे, सो भी स्पष्ट लिखना। तू स्वतन्त्र है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५४३) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

## १९९. पत्र: नारणदास गांधीको

वर्धा
६ जून, १९३५

चि० नारणदास,

साथमें हरिलालको लिखे पत्र है; उन्हें पढ जाना। इसमे तुम्हारा समय क्यो लूँ? लेकिन और कोई चारा नही है। यह प्रकरण मै शीघ्र ही समाप्त कर दूँगा। लेकिन थोड़ी वेदना तो तुम्हें भोगनी ही पडेगी।

केशूसे बात हुई थी। अब तो वह वहाँ पहुँच गया होगा। कारखाना तो अब वह छोड देगा, फिर इस कारखानेका क्या करोगे? वह मोटर और रेडियोका काम सीखेगा। मैं समझता हूँ, बम्बईमे वह अपने लिए कुछ सहायता जुटा लेगा। देखता हूँ, हमे सतोक[1] और राधाका खर्च उठाना पडेगा।

केशूसे यह पूछना तो भूल ही गया कि उसकी अबतक की शोध क्या वेकार हो जायेगी। जब बातचीत थोडे समयमे निबटानी होती है तो कभी-कभी ऐसी महत्त्वकी बाते भी रह जाती है। जो मुद्दे मै साफ नही कर सका, उन्हें तुम करवा लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५१ से भी; सौजन्य नारणदास गाधी

१. स्वर्गीय मगनलाल गांधीकी पत्नी।

## २००. पत्र : वि० ल० फड़केके विद्यार्थियोंको

६ जून, १९३५

मामासाहबके विद्यार्थियो,

तुम लोगोंके नाम-धाम जाने बिना जवाब नहीं दिया जा सकता। इस प्रकार बिना पते-ठिकानेके पत्र कभी नहीं लिखना चाहिए। ऐसे पत्र लिखना तुम्हें किसने सिखाया?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३२)से।

## २०१. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

६ जून, १९३५

चि० नर्मदा,

अब मुझे सन्देह हो रहा है कि तू मुझे ठीक समझी भी है या नहीं। मैंने तो तेरा हित समझकर ही जो देखा, वह शम्भुशंकरको लिखा था। तू अच्छी और नम्र बन।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७७९)से; सौजन्य : रामनारायण एन० पाठक

## २०२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

६ जून, १९३५

चि० कृष्णचद्र,

तुमारा पत्र मिला। नीमके बारेमें पत्र मिल जायगा तो भेज दूंगा। नीम कभी गरम नहीं लगता है। उपवासी लोग भी नीम खा लेते हैं। लेकिन मैं तो चाहता हूं कि दूध जितना ले सकते हैं इतना ले लो। गायका सबसे अच्छा है। सब चिंता छोड़ दो। मैंने तो कहा ही है एक वर्ष जो बाचनके उपवासका है सो यहां व्यतीत किया जाय। दिल चाहे तब आ जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७२)से।

## २०३. जयरामदास दौलतरामके नाम तारका मसौदा[1]

[६ जून, १९३५ या उसके पश्चात्][2]

जयरामदास दौलतराम
मार्केट रोड
हैदराबाद

जनतासे कहिए कि अभी आन्दोलनका समय नही आया। स्थानीय और उच्च अधिकारियोसे व्यक्तिगत रूपसे मिला जाये। आग लगानेकी योजनाके कारण पता कीजिए। अपनी लाचारी महसूस होनी चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य : प्यारेलाल

## २०४. पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

वर्धा
७ जून, १९३५

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र न पानेसे मेरे चिन्तित हो उठनेका कोई सवाल नही है। क्योकि, अगर चिन्ताके योग्य कोई बात होती, तो बावजूद हमारे बीच राजकुमारीकी मार्फत सम्पर्कके तुम पत्र लिखनेमे सुस्ती न करते।

वाइसरायके साथ हुए मेरे पत्र-व्यवहारकी नकल नत्थी है। यह सिर्फ तुम्हे जानकारी देनेके लिए भेज रहा हूँ, इसपर किसी तरहकी कार्रवाई करनेके लिए नही। चीजे अपनी गतिसे आप होती रहेगी। ज्यादातर उम्मीद तो इसी बातकी है कि वे किसीके वहाँ जानेकी बात मजूर नही करेगे।[3]

१ और २. यह जयरामदास दौलतराम और जे० बी० कृपलानीकी ओर से संयुक्त रूपसे भेजे गए ४ जूनके एक तारके उत्तरमें था। उनका तार गांधीजी को ४ जूनको मिला था। तारमें बताया गया था कि अधिकारियोंकी ओर से अड़चन डाले जानेके कारण क्वेटाके भूकम्प-पीड़ितोंको सहायता पहुँचानेका काम किस प्रकार असम्भव हो रहा था।

३. भूकम्पके बाद क्वेटामें मार्शल ला लागू कर दिया गया था और किसीको भी शहरमें आनेकी अनुमति नहीं थी, देखिए पिछला शीर्षक और "पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको", १०-६-१९३५ तथा "पत्र : अमृतकौरको", १३-६-१९३५।

मुझे उम्मीद है कि किताबका[1] तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा और तन्दुरुस्ती ठीक बनी होगी।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९८६)से।

## २०५. पत्र : अमृतकौरको

७ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे शरीरके क्षीण होते जानेका कारण मेरी समझमे आ गया है। तुम हर चीजको सांगोपांग करना चाहती हो। बेशक, साधकको करना तो ऐसा ही चाहिए। लेकिन कोई भी साधक, जितना वह कर सकता है, उससे अधिक कार्य अपने सिर लेनेके लिए बाध्य नही है। क्या जाने, तुम्हें अपनी प्रवृत्तियोमें भाग लेनेकी इजाजत देकर मैंने ठीक किया है या नही। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम शिमलाके सभी सामाजिक समारोहोंमें भाग लेना कम कर दो। हो सकता है, देखनेमें ऐसा लगे कि तुम जिन प्रवृत्तियोमें लगी हुई हो, उनका इससे कुछ नुकसान हो, पर उसकी परवाह नही करनी है। भाग लेना बन्द करके अपने समय और शक्तिकी बचत करो।

अब खादीकी बात करता हूँ। पंजाबके सभी खादी-भण्डार नुकसानमे नही चल रहे हैं। शिमलाका तो बराबर घाटेमे चलता रहा है। इसमे शक नही कि उसके प्रबन्धमें खामी है। लेकिन शिमलाके लोग खादीको तुच्छ नजरसे देखते हैं और वहाँ लोगोंकी एक जमात ऐसी है जो खादी पहननेसे डरती है। खादी पहननेवाला व्यक्ति लोगोकी नजरोमें चढ जाता है। माल [रोड] पर एक स्वदेशी-भण्डार खोलने का विचार आकर्षक तो है, पर उसे अंजाम देनेमें जोखिम है। स्वदेशी वस्तुएँ कितनी भी अच्छी हो, तुलनामे हलकी ठहरती हैं। इन्हें भड़कीला बनाने के विचार की उपयोगिताके बारेमे मेरे मनमे सन्देह है। मैं कला और भडकीलेपनको अलग-अलग मानता हूँ। रूढ लोक-रुचिका ध्यान रखनेवाली दुकानोकी खिडकियोमें आदमी जो-कुछ देखता है, वह कला नही है। वास्तविक सौंदर्यकी चीजे बनवाना और उन्हे शिमलाकी माल रोडकी दुकानोकी भड़कीली चीजोके साथ-साथ रखना मेरी समझमें बडी खर्चीली योजना है और कमसे-कम इस समय तो उस लोभको संवरण ही करना चाहिए। जो दुकान तुम्हारे पास है, उसीमे तुमसे जो हो सकता है, सो करो। उसे और अच्छा बनाओ। उसमें स्वदेशी वस्तुएँ भी रखने लगो। उसे अपनी रुचिके अनुसार जमाओ और कोई दूसरी महँगी जगह लेनेसे पहले वहाँ अनुभव प्राप्त करो। जब तुम जुलाई या अगस्तमे यहाँ आओगी, तब दूसरे विषयोके साथ हम इस विषयपर भी चर्चा करेगें। वैसे, जितनी जल्दी आ सको, उतना अच्छा।

1. इंडिया एण्ड ब्रिटेन।

क्वेटाके भयानक भूकम्पके बारेमें मैंने जो सोचा या किया है,[1] उस सम्बन्धमें तुम्हें सभी कुछ पढ़नेको मिलेगा। चार्लीको भेजा गया मेरा पत्र[2] भी देखना। उसे मालूम होना चाहिए कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। मेरी पद-यात्रा फिरसे शुरू होनेपर उसे मेरी तलाश उड़ीसा या ऐसी ही किसी जगह करनी पड़ेगी। तैयारीके तौरपर इस बीच मैं १२ मीलके लगभग पहाड़ियोंपर घूम-फिर लेता हूँ।

मैं फालसेके[3] विश्लेषणकी राह देख रहा हूँ।

पत्र लिखने के कागज और लिफाफे बिलकुल तैयार हैं। कुछ पूनियाँ भी तैयार हैं। मैं काफी तादादमें ये भेजना चाहता हूँ। भेजते समय मैं हरएक वस्तुका उत्पादन-मूल्य भी साथ भेजनेकी उम्मीद करता हूँ। जो कागज और पूनियाँ अभीतक भेजी गई हैं, उनका मैंने कोई हिसाब नहीं रखा है। उसके बारेमें तुम्हें फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३७)से, सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६३४६ से भी

## २०६. पत्र : नारणदास गांधीको

७ जून, १९३५

चि० नारणदास,

साथमें दो पत्र हैं। ध्यानसे पढ़ना। दोनों भाई साथ बैठकर विचार करना और अपनी राय मुझे बताना। मैं बिलकुल नहीं समझ पा रहा हूँ कि क्या करूँ। . . .[4] का . .[5] के साथ पतन हुआ हो तो भी मेरे लिए बहुत है। इसे मैं भयकरसे-भयकर बात मानूँगा। .[6] यह आरोप तो लगाता ही है। क्या उसके पास इसका कोई प्रमाण है? इस गन्दगीमें पड़े बिना तुम्हारा छुटकारा नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एस० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५२ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

१. देखिए "आइए, प्रार्थना करें", ६-६-१९३५।
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. शमशेरसिंह द्वारा; देखिए "पत्र : अमृतकौरको", २०-५-१९३५।
४, ५ और ६. नाम छोड़ दिये गये हैं।

## २०७. पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

७ जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

अपने पत्रमे तुमने जो-कुछ कहा है, मैं समझ गया। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि इस समय क्या किया जा सकता है। क्या किया जाये कि हम ऐसी मुद्रा-नीति चालू करा सके जो देशके लिए हितकर हो? हम सब भरसक प्रयत्न करते रहे, इस विचारका सहारा मैं नही लेना चाहता। बादल सिरपर मँडरा रहा हो तब मात्र प्रयत्न काफी नही है। क्वेटामे जो भूकम्प आया, उसके खिलाफ बेचारे क्वेटा-वासियोका प्रयत्न किस काम आया होगा। मेरी दृष्टिमे तो आजकल राजनीतिक भूकम्प ही चल रहा है। उसे रोकनेमे हम असमर्थ सिद्ध हो रहे है। इसलिए मैं तो भविष्यको सँवारनेकी कोशिशमे लगा हुआ हूँ।

ग्रामोद्योगोकी झंझटमे मैं तुम्हें नही डालना चाहता। इतना ही आश्वासन देता हूँ कि मेरा यह कार्य सोने-चाँदीकी रक्षाके इस दूसरे कार्यके आडे नही आयेगा।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स, फाइल संख्या १५९/१९३५, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## २०८. सच्चा सम्बन्ध

जो सुशिक्षित लोग आश्रम चला रहे है अथवा गाँवोमे बसनेकी इच्छा रखते है किन्तु जिनके शरीर काम-काजके अभावमें अशक्त या क्षीण हो गये है और इसलिए जिन्हें शारीरिक श्रम करते हुए कठिनाई मालूम पडती है तो भी जिन्हे ग्राम-सेवक बनना है — उनका यह कहना है कि यदि उनके साथ एक भी साथी न हुआ तो उन्हे वहाँ सूना-सूना-सा मालूम होगा। जो लोग आश्रमको किसानों, ग्वालो और कारीगरोकी बस्तीमें परिणत करना चाहते है उन्हे चाहिए कि वे अपने यहाँ मजदूरी पर स्त्री-पुरुषोंको रखें और उनके साथ ऐसा बरताव करे गोया कि वे आश्रमवासी ही है। इस तरह वे अपने नौकरोकी घरेलू और आर्थिक स्थिति समझेंगे, और उन्हें वे जो मजदूरी देंगे उससे अगर उनका काम निकलता होगा तो ही वे उन्हें नौकरी पर रखेंगे। वे खुद उनके जीवनमे इस तरह रस लेंगे मानो वे आश्रमवासी ही हों।

मजदूरोके साथ अगर इस प्रकारका बरताव किया जाये, तो यह सम्भव है कि जो मजदूरी वे मजदूरोको देंगे, बदलेमें उन्हे उससे अधिक ही मिल जायेगा। इस प्रकारके व्यवहारसे यह भी देखनेमें आयेगा कि वे मजदूर अपने ऊपर बरसाये हुए प्रेमका जवाब प्रेमसे ही देंगे।

इस योजनाके अनुसार आश्रमका सस्थापक अपनी तरहसे रहेगा, और मजदूर अपनी तरहसे। मैंने देखा है कि सयक्त भोजनालय अक्सर आश्रमकी अच्छीसे-अच्छी शक्तिको खा जाता है, और आश्रमवासियोके बीच कलह और द्वेषका अड्डा भी बन जाता है। जब फकत मजदूर ही नौकर रखे जायेंगे, तब यह नौबत बिलकुल ही नही आयेगी। मजदूरोको जिस तरहका खाना खानेकी आदत पडी होती है, उसे वे छोडते नही, और उसे खाकर वे तन्दुरुस्त भी रहते है। पढ़े-लिखे आदमियोके स्वाद कुछ भिन्न और अक्सर कृत्रिम हो गये है। मजदूरोका खाना अगर वे खाने लगें तो उनका स्वास्थ्य ही गिर जाये।

मेरे कहने का मतलब यह नही है कि सयुक्त भोजनालयका प्रयोग विफल सिद्ध हुआ है। जहाँ आदर्श समान होते है और जहाँ सब लोग यह मानते है कि उनमे आपसमे पूण बन्धुभाव होना चाहिए वहाँ सयुक्त भोजनालयका होना जरूरी है। मगर मजदूरोसे अभी बहुत वर्षोतक यह आशा नही रखी जा सकती।

मैंने ऊपर जिस योजनाको रखा है उसमे पाखण्डके लिए कमसे-कम गुजाइश है। बुद्धि और श्रमके बीच यह योजना स्वाभाविक एकता स्थापित कर सकती है। दोनो एक-दूसरेकी क्षमताको बढ़ायेंगे। इसके अलावा यह भी मुमकिन है कि इस प्रकार जो आश्रम चलाया जायेगा, यह तुरन्त स्वावलम्बी बन जायेगा, और उसका विकास भी तेजीसे होगा।

जो इस नयी योजनाका प्रयोग करेंगे, उन काल्पनिक आश्रमोके लिए तो यह बहुत अच्छा है। पर जो ग्राम-सेवक अपने जीवनमे पहली ही बार गाँवोमे बसने जाता है, वह क्या करे? मेरी यह योजना कुछ आवश्यक हेरफेरके साथ उसपर भी लागू होती है। जिन लोगोके बीचमे उसे बसना है उनसे वह भिन्न प्रकारका मनुष्य है, ऐसा खयाल उसे नही रखना चाहिए। जिन ग्रामवासियोंके बीच वह काम करे, उन्हे उसे अपने मित्र और साथी समझना चाहिए। अपनी आवश्यकताके अनुसार जिनकी सेवाकी उसे जरूरत पड़े उन्हे वह, उनकी खुशी हो तो, अपने यहाँ काममें लगा ले। और अगर उसमें ग्रामवासियोके अनुकूल पड़नेवाली पर्याप्त बुद्धि है तो वह उन सभी ग्राम-वासियोको पैसा देकर कामपर रख सकता है जो आज मजबूरन बेकार बने बैठे रहते है और जो, यदि सम्भव हो तो, अपने इस बेकार समयका उपयोग खुशी-खुशी करना चाहेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-६-१९३५

## २०९. पत्र : तहमीना खम्भाताको

वर्धा

८ जून, १९३५

प्यारी बहन,

तुम्हारा ब्योरेवार पत्र पढ़कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे समाचार देती रहना। आशा है, हर रोज सुधार-हो रहा होगा। दीनबन्धु वहाँ है, यह अच्छी बात है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६०९)से।

## २१०. पत्र : जमनालाल बजाजको

[९ जून, १९३५ के पूर्व][1]

चि० जमनालाल,

तुम नैनीतालमें सबसे मिल आये; ठीक किया। मैं चाहता हूँ कि तुम पूरे जून मास पहाड़पर रहो। तुमने १५ के बादका जो प्रोग्राम बनाया है, वह ३० जून बाद करना। कान अभीतक पूरे तौरसे साफ नहीं हुआ, यह ठीक नहीं लगता। क्या बम्बई खबर देते रहते हो? खबर न दी हो तो अब पूरा विवरण भेजो। वह क्या कहता है, यह जानना चाहिए। यदि वे हाथ खींच लेना चाहते हो तो भले ही खींच ले। कान बहना बन्द होना चाहिए।

ओगिल्वीको पत्र लिखनेमें शायद तुमने जल्दबाजी की हो; वह तुम्हारे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे। उसकी स्वीकृति आ जाये तो मुझसे मिलकर उससे मिलने जाओगे, ऐसी आशा करता हूँ।

डेनमार्कके उस दोस्तको लिखा पत्र इसके साथ है। उसने तो अपना पता बम्बईका दिया है।

मेरीबहन कल आ रही है। मदालसाकी प्रगतिके बारेमें तुम चुप हो।

कमलनयन चला गया। वह काफी उत्साहित था। गंगादेवी बगीचेमें आ गई हैं। मैं खानसाहबसे[2] अच्छी तरह मिल पाया। उनकी तबीयत खराब तो बहुत है, पर मजेमें थे। हम लोगोंकी भेंटसे उन्हें बहुत अच्छा लगा। सबको बहुत याद कर रहे

१. जमनालालजी ने पत्रके ऊपर मिलनेकी तिथि '९ जून' लिख छोड़ी थी।
२. खान अब्दुल गफ्फार खाँ।

थे। उन्हे नासिक या यरवडा बदलनेको लिखा है। अब जो हो सो ठीक। अब्दुल गनीके बारेमे कुछ चिन्ता जरूर थी।

[अ० भा० ग्राम] उद्योग-संघका काम धीमा पर नियमित रूपसे चल रहा है। उसका रूप बन रहा है। बाकी सब ठीक है।

एन्ड्रयूज शिमलेमे है। अपनी पुस्तक लिख रहे हैं। अधिकारियोसे इस वक्त मिलना बन्द कर रखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७१) से।

## २११. पत्र : लीलावती आसरको

वर्धा
९ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तेरे लिए शिक्षककी व्यवस्था कर रहा हूँ। यह काम मै मगनभाईको[1] ही सौपूँगा। उन्हे तू अपने अंग्रेजी तथा गुजरातीके ज्ञानका परिचय देते हुए एक पत्र लिख। अंग्रेजीमे क्या पढा है, गुजरातीमे क्या पढा है, व्याकरणका कितना ज्ञान है; आदि सब लिख भेजना। पत्र मुझे भेजना, अक्षर सुन्दर लिखना, चाहे पत्र लम्बा हो जाय तो हर्ज नही। अंग्रेजीमें भी पत्र लिखना। यह पत्र लिखना मगनभाई के पतेपर। इसे तू अपनी अंग्रेजीकी शिक्षाका आरम्भ समझना, पत्रका उत्तर तुझे तुरन्त मिलेगा। वे अंग्रेजी और गुजरातीमे सुधार करके फिर बतायेंगे कि क्या करना चाहिए। पंक्तियोके बीचमे स्थान रखना और हाशिया भी छोडना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३१) से। सी० डब्ल्यू० ६६०६ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

१. मगनभाई प्रभुभाई देसाई।

## २१२. पत्र : जमनालाल बजाजको

९ जून, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। दासके नाम पहुँच साथमे है।

वाइसरायको दो पत्र लिखे, जिनकी नकल साथ है। जवाबमें इन्कार आ गया है: अब जब सबको क्वेटासे नीचे भेज दिया है तो उतरनेवालो की सँभाल रखने के अलावा कुछ करने को नही रहता।

तुम नीचे उतरनेमें जल्दी न करना। इस महीनेके अन्ततक तो वहाँ जरूर रहना। यहाँ तो अब भी भट्टी सुलग रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७२) से।

## २१३. पत्र : क० मा० मुंशीको

९ जून, १९३५

भाई मुंशी,

जमीयतराम काकाके निधनसे आपका तो एक बडा सहारा जाता रहा।

सीकरके[1] सम्बन्धमे अमृतलालने मुझे पत्र लिखा था। और अधिक समझे बिना कमेटीकी आवश्यकताके बारेमें मै कुछ निर्णय नही कर सकता। मुझे भय है, इससे कोई शुभ परिणाम नही निकलेगा। मेरी आशंका झूठी हो, तो मै उसे पहले समझ लूँ, फिर निर्णय करूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७५)से; सौजन्य: क० मा० मुंशी

१. जयपुर रियासत-स्थित, जहाँ सरकारकी ज्यादतियोंके विरुद्ध सत्याग्रह शुरू किया गया था।

## २१४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

९ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला . . .।[१]

क्वेटाके मामलेमें अब क्या किया जाये? सरकार सभी कार्यकर्त्ताओंको निकाल रही है, इसलिए वहाँ जानेकी बात ही नहीं उठती। जहाँ घायल या बिना घरबार-वाले लोग पहुँच रहे हैं, वहाँ तो लोग मदद दे रहे हैं। इससे ज्यादा हम क्या कर सकते हैं? राजेन्द्रबाबूको जैसा तार मिला है वैसा ही मुझे भी कल मिला है। अब तो हमारे लिए मौन धारण करने की बात ही रह जाती है।

भारत-मन्त्रीके कार्यालयमें जो तब्दीली हुई[२], उसे मैं शुभ चिह्न नहीं मानता हूँ। तुमने सप्रू साहबका प्रमाणपत्र देखा होगा। किसके आगे हम दुखड़ा रोयें? उन्होंने ही इस बिलकी निन्दा की थी। अब वे ही इसका स्वागत कर रहे हैं।

राजेन्द्रबाबू १२ तारीखको आ रहे हैं। चार घंटे ठहरेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७०-७१

## २१५. पत्र : विजया एन० पटेलको

९ जून, १९३५

चि० विजया,

यहाँ मजूरी करने आनेकी अपेक्षा तू अपना अध्ययन आगे बढ़ा, यही उचित है।

पति-पत्नीमें से एक भी यदि परस्पर भाई-बहनके समान रहना चाहे, किन्तु एक घरमें रहकर ऐसा न कर सकें तो उनका कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अलग-अलग रहें।

बापूके आशीर्वाद

विजयाबहन नारणभाई पटेल
वरड, वाया बारडोली, तपती

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७०५८)से। सी० डब्ल्यू० ४५५० से भी, सौजन्य : विजया एम० पंचोली

१. साधन-सूत्रमें यह अंश छोड़ दिया गया है।
२. अभिप्राय लॉर्ड जेटलैंडकी जगह सर सैम्युअल होरकी भारत-मंत्रीके रूपमें नियुक्तिसे है।

## २१६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

९ जून, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

इस बार तुमने मुझे बडी सजा की। हमेशा तुमारे खत की इंतेजारी, हमेशा नाउमीदी। मरनेके इरादेसे आदमी थोडे ही मरता है! काश्मीरका खतम होनेके बाद यहाँ आ जाओ। काम तो दे दूंगा। और देखें क्या होता है। क्वेटा तो किसीको जाने ही नही देते है।

प्रभावती आजकल सावली है, बा बोचासण।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फ़ोटो-नकल (जी० एन० २४३८)से।

## २१७. पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

वर्धा
१० जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तमदास,

तुम्हारा पत्र मिला। यह अनुमान तुमने मेरे किन शब्दोसे किया कि मुझे बुरा लगा है।

ग्रामोद्योग सघके विषयमे तो मैने तुम्हे अभय-दान दिया है और प्रसगवश थोडा-सा विनोद-भर किया है।

तुमने मुझे पत्र लिखा, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। लिखते रहना। मेरी चमडी इतनी नाजुक तो कभी थी ही नही कि मुझे झट बुरा लग जाये और यदि कभी थी भी तो मुझे इतने प्रहारक मिल चुके है कि मेरी नजाकत उन्होने रहने नही दी। इसलिए मेरी ओरसे निर्भय रहना।

मेरा प्रश्न यह नही था कि हमें किस तरहकी रिआयते चाहिए; प्रश्न यह था कि हमारी जो हानि हो रही है उसे किस तरह रोका जाये? मेरी कठिनाई यह है कि इस समय हमारी बात सुननेवाला कोई नही है। हम ऐसा कौन-सा कदम उठाये कि जिससे यह हानि होने ही न पाये?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीसे . पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास पेपर्स, फाइल सख्या १५९/१९३५; सौजन्य : नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## २१८. पत्र : कुँवरजी के० पारेखको

१० जून, १९३५

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा और मनुका पत्र भी मिला। मनुने यहाँ आनेका निश्चय किया है, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। १५ के सवेरे कान्ति या कनु उसे लेने स्टेशन जायेंगे। तुमने और भी जो लिखा है, मैं समझ गया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२२) से।

## २१९. पत्र : आलमगीरको

वर्धा
११ जून, १९३५

प्रिय आलमगीर,

मैं मुसलमानोको अपने प्राणोकी तरह प्यारा मानता हूँ या उनसे घृणा करता हूँ, इस बातका उत्तर तो खुद तुम्हे ही दे सकना चाहिए। यदि तुम्हे इस बारेमे कोई शक है, तो मैं पत्र के द्वारा इसका समाधान नही कर सकूँगा। तुम्हे मेरी सारी जिन्दगीका अध्ययन करना चाहिए और उसीमे से उत्तर पानेका प्रयत्न करना चाहिए।

बापू

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

## २२०. पत्र : वसुमती पण्डितको

११ जून, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तुझे कब्ज रहता है, यह ठीक नही है। नीमकी पत्ती और इमली खानी चाहिए। इमली तो वहाँ बहुत मिलती है। साफ करके खाना।

नारणदासकी बड़ी इच्छा है कि तू राजकोट जाये। अगर वहाँ तेरी जरूरत न हो तो यह अच्छा ही होगा कि तू राजकोट चली जाये। वह जगह माफिक न आये तो भाग आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४००)से। सी० डब्ल्यू० ६४६ से भी; सौजन्य : वसुमती पण्डित

## २२१. पत्र : निरुपमा पंगालकरको

११ जून, १९३५

चि० निरुपमा,

तुमारा खत मिला है। तुमारे रुदनको रोकनेंका इलाज है। तुम अब बालक है। तुमारे तीन-चार वर्ष तक जाहेरमें बोलना ही नही। अभ्यास करना। जब बड़ी होगी तब अपने-आप बोलेगी और तुमारे सयमसे तुमारी शक्ति बढ़ेगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री निरुपमा पगालकर[1]
सुदामा कुटीर
उडीपी
डाकखाना कटपदी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२२६)से।

१. पोस्टकार्ड पर पता अंग्रेजीमें है।

## २२२. पत्र : हीरालाल शर्माको

११ जून, १९३५

चि० शर्म्मा,

मै तो जानता हूं पासपोर्टमें छे २ माससे भी अधिक वीते हैं। देखे तुमारा क्या होता है? पैसेके बारेमें मैं नही समजा हू। पासपोर्ट आनेपर कपडोका देखा जाय और घडी इ० का भी। पेजामा-कुड़ता आच्छा लिवास है। करेलेका समजा।[1] ठीक है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६७ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## २२३. पत्र : नारणदास गांधीको

[११ जून, १९३५के पश्चात्][2]

चि० नारणदास,

. . .[3] के मामलेकी तहतक पहुंच सको तो अच्छा हो। मेरा तो इसकी जडतक पहुंचे बिना छुटकारा ही नही है। वडौदा-कन्या विद्यालयकी छाप तो मुझपर अच्छी ही पडी है। लेकिन एक दिनके निरीक्षणसे मनपर पडी छापके आधारपर हम कोई निष्कर्ष नही निकाल सकते। हमे और गहरे उतरना है।

रमणीकलाल और किशोरलाल मुझे लिखेंगे। इस सम्बन्धमें वसुमतीसे तो बात कर ही चुका हूं। उसे तुम लिखो तो अच्छा हो। रमणीकलालको भी लिखना।

पुरुषोत्तमके स्वास्थ्यपर चोरवाडकी आबोहवाका कोई असर हुआ है या नही? जमनाको कोई लाभ हुआ है क्या? क्या विजया अच्छी हो गई? मैथ्यूको कुछ ही दिनोमे वहां पहुंच जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५४ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

१. शर्माजी की पत्नीने उनकी विदेश-यात्राके लिए करेले और कुछ अन्य सब्जियाँ सुखाकर तैयार की थीं।

२. वसुमती पण्डितके उल्लेखसे। नारणदास गांधी चाहते थे कि वे राजकोट जायें, देखिए "पत्र : वसुमती पण्डितको", ११-६-१९३५।

३. नाम छोड दिये गये हैं।

## २२४. पत्र : शिवसेवक तिवारीको

वर्धा
१२ जून, १९३५

भाईश्री तिवारीजी,

आप लोग चन्दा इकट्ठा करनेका यत्न कर रहे है, सुनकर मुझे आनन्द होता है।

मो० क० गांधी

श्री शिवसेवक तिवारी[1]
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
इन्दौर

वीणा, श्रद्धांजलि अंक, अप्रैल-मई १९६९

## २२५. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धा
१३ जून, १९३५

सेठ जमनालालजी
भुवाली

सम्भव हो तो माहके अन्ततक वही रहो।

बापू

[अग्रेजीसे]
पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० १६४

१. शिवसेवक तिवारी स्वागत समितिके संयुक्त मंत्री थे।

## २२६. पत्र : अमृतकौरको

१३ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र पढकर मेरी आँखे भर आईं। शुद्ध मन तथा निःस्वार्थ भावनासे की गई सेवाको परमात्माका आशीर्वाद जरूर मिलेगा।

अगर मै क्वेटा जाता तो तुम दोनोको भी साथ ले जानेमे मुझे खुशी होती। लेकिन यह होना नही था।

हाँ, तुम मुझे खादी-भण्डारको हटाकेर माल[1] ले जानेकी आवश्यकताको समझा कर लिखो।

क्योकि मै बाये हाथसे लिख रहा हूँ इसलिए अधिक लिखना सम्भव नही है। दाये हाथको आरामकी जरूरत है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३८) से; सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३४७ से भी

## २२७. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

१३ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

मैने बापाके सम्बन्धमे पत्र[2] तुम्हें पहले ही लिख दिया है।

अब मुझे पानी-फण्डके बारेमे तुम्हारा पत्र मिला है। मै फिर लिखूंगा। मैने जुगलकिशोर बिडलाका एतराज भी देखा है। क्या पहली बार उनके नामका इस्तेमाल उनकी इजाजतके बिना ही किया गया था? अगर उसके लिए उनकी इजाजत पहले ही ले ली गई थी तो दूसरी बार उसके इस्तेमालको गलत नही कहा जा सकता। लेकिन अगर पहली बार उसका इस्तेमाल उनकी इजाजतके बिना ही हुआ, तब

१. मुहल्लेका नाम; देखिए "पत्र : अमृतकौरको", ७-६-१९३५।

२. देखिए "पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको", ४-६-१९३५।

मेरी समझमें उसका जवाब देना कठिन है। मैंने उन्हें खत लिखा था। उन्होंने कहा है कि वे बादमें पैसे चुका सकते हैं।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१७)से।

## २२८. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

१३ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

तुमने तो बहुत बड़ा प्रश्न उठाया है। जब तुम्हारे मनमें यह प्रश्न था, तब जो प्रणाली तुमने अपनाई है, वह दोषयुक्त कही जायेगी। जो कारण तुम अब बता रहे हो, यही कारण यदि उन्हें अलग करने का था, तो उन्हें अलग तो किया जा सकता था, किन्तु दूसरी ही तरहसे। अब तो प्रश्न यह है गणात्राको[1] दिये गये नोटिसमें जो कारण बताया गया है, क्या सचमुच यही कारण नोटिस देनेका था? जो नोटिस दिया गया, वह दोषयुक्त तो है ही। यदि काकूभाईको कोई आश्वासन दिया गया था, तो उसका पालन किया जाना चाहिए। अन्य लोगोंका व्यवहार खराब तो था ही, किन्तु यदि वे उसके लिए माफी माँगें तो उन्हें वापस बुला लेना चाहिए। यदि यह सब तुम्हें पसन्द हो तो मैं नयी नीति निर्धारित करने के प्रश्नको तुरन्त हाथमें ले सकता हूँ और इसका नोटिस भी तुरन्त दे सकता हूँ। मेरी रायमें यह प्रश्न बड़े महत्त्वका है। इसका शुद्ध निर्णय कर सकने के लिए भी यह जरूरी है कि पहले ये मौजूदा बादल छाँट दिये जायें। इन बातोंका पूर्ण निर्णय हुए बिना इतने महत्त्वका काम ठीक तरहसे सुलझाया नहीं जा सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७८८) से।

१. अखिल भारतीय चरखा संघ, बम्बईके; देखिए "पंच-निर्णय", १८-६-१९३५।

## २२९. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
१४ जून, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। देखता हूँ कि तुम्हे . के[1] किस्सेकी झझटमे डालना ही नही चाहिए।

साथके पत्रपर नजर डालकर पहुँचा देना। देखते रहना कि क्या होता है। मनु तो कल मेरे पास आ जायेगी।

केशूके बारेमे समझ गया। वर्कशॉपका क्या हुआ? जो यन्त्र बनाये गये है, क्या उनका उपयोग किया जा सकेगा?

घीरूका पत्र मिला था, किन्तु उससे मुझे सतोष नही हुआ। पण्डितजी का पत्र इसके साथ है। गजाननका खर्च जितना पण्डितजी कहते है, चुका देना। मै घीरूको पत्र लिखनेवाला हूँ। क्या तुम्हे खर्चके विषयमे फिरसे विचार करना आवश्यक लगता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम०-यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४५३ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

## २३०. पत्र : प्रभावतीको

१४ जून, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। बावाजी का पत्र तुझे मिला होगा। विवाहके बाद तुरन्त चल पडना। जयप्रकाशका पत्र मुझे मिला है। सरदारके विषयमे तेरा सन्देश मुझे कुमारप्पाने दिया। वियोगीजी[2] के साथ पढाई चल रही है। श्रीनगरमे कोई कताई या धुनाई करता है? न करता हो तो तुझे विचार करना चाहिए। श्रीनगर तो गाँव-जैसा ही है। तुझे घरसे आरम्भ करना चाहिए। श्रीनगरमे तुझे समय भी काफी मिलता होगा।

१. नाम छोड दिया गया है।
२. वियोगी हरि।

वहाँ तेरा दैनिक कार्यक्रम क्या है, सो लिखना। अमतुस्सलाम यही है। मेरा ठीक चल रहा है। बारडोलीसे लक्ष्मी[1] यहाँ आयेगी। मनु भी आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५२)से।

## २३१. बातचीत : एक हरिजन-सेवकसे[2]

[१५ जून, १९३५ के पूर्व]

हमे सदियोसे जमे हुए पूर्वाग्रहोको जीतना है, इस लक्ष्यको दृष्टिमें रखते हुए राष्ट्रके जीवनमे तुम्हारे ये चार वर्ष किस गिनतीमे आते है और कालके अपार सागरमे तुम्हारा यह एक जीवन भी क्या है? और हम पर्याप्त परिश्रम कर चुके है क्या? क्या हम काफी कष्ट झेल चुके है? बुकर टी० वाशिंग्टनका[3] ही उदाहरण ले लो। जितने कष्ट वाशिंग्टनने उठाये थे, क्या उतने कष्ट हममे से किसीने उठाये है? हम लोग हरिजनोके दुखोका वर्णन तो करते है, पर क्या हमने कभी उनके इन दुखोमे खुद भाग लिया है? हरिजन इतने चतुर तो है ही कि वे देख सकते है कि भूखे हम लोग नही मरते, भूखसे तो वे मरते है। हमे स्वच्छ-मीठा पानी मिल जाता है, पर उन बेचारोको तो गन्दे पोखरोसे ही पानी भरना पडता है।

तुम कहते हो कि हरिजन सेवक सघ तुम्हे पैसा नही देता। सघकी दृष्टिसे यह ठीक ही है। हमने आरम्भ ही गलत सिरेसे किया है। हम अपने बलपर खडे रहने के बजाय बाहरकी सहायतापर निर्भर रहते चले आ रहे है। अब ऐसा समय आ गया है, जब हमे दूसरोके भरोसे चलना छोड देना चाहिए। बच्चोको किसी बरामदे या उनके छप्परोमे ही बिठाकर क्यो न पढाया जाये, और इस तरह पाठशालाका विकास स्वाभाविक रीतिसे क्यो न किया जाये? छात्रालयके लिए जितने अनाज या साग-भाजीकी जरूरत पडे, उतनी उन्हीकी मददसे क्यो न वही-का-वही पैदा कर ली जाये? इस तरह आपके छात्रालयका खर्चा बहुत-कुछ कम हो सकता है। मान लीजिए, त्रिवेन्द्रमकी कोई पाठशाला वहाँसे कोसो दूर दिल्लीपर निर्भर करे, यह बात समझमे आनेवाली तो नही है। यह तो बडी ही अस्वाभाविक चीज है। शुरू-शुरूमे हो सकता है कि ऐसा करनेकी जरूरत रही हो। पर अब इस बाहरी सहायताकी

१. लक्ष्मी मारुतिदास शर्मा।

२. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र)से उद्धृत। यह हरिजन-सेवक अपनी संस्थाओंके लिए हरिजन सेवक संघसे पर्याप्त आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं कर सका था और सेवाकार्यके अपने चार वर्षोंमें वह अपने काममें योग देनेके लिए नवयुवकोंको भी आकर्षित नहीं कर सका था।

३. अमेरिकाके प्रसिद्ध नीग्रो शिक्षा-प्रचारक। युवावस्थामें उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा था।

दरकार नही होनी चाहिए। ऐसी पाठशाला चलानेवाला आदमी अगर दिल्लीसे वेतन पाता हो तो वह वहाँ वालो के लिए परदेशी-जैसा ही होगा। अगर वह हरिजनोमें अच्छी तरह घुल-मिल जायेगा तो वे जरूर उसे अपनी दो रूखी-सूखी रोटियाँ दे देंगे, और भूखो तो कदापि नही मरने देंगे। हर वक्त केन्द्रीय -बोर्डकी ओर दृष्टि डालनेमे कोई सार नही है। केन्द्रीय बोर्ड तमाम कामको सुन्दर रीतिसे चलाता रहेगा, पर साधन-सामग्री तो प्रान्तीय संघोको ही जुटानी होगी। लेकिन मेरा मन नित्यप्रति इतने नये सत्योका आविष्कार कर रहा है और मुझे कुछ ऐसा लगता है कि हमें यह पैसा इकट्ठा करनेकी झझट भी अब छोड देनी चाहिए। अगर हमारे पास पैसा नही है, तो काम रुक नही सकता। खोजने की कला-भर चाहिए, अन्य साधन-सामग्री हमारे पास बहुत पडी हुई है।

और हरिजनोके विषयमे हम हताश क्यो हो? प्रतिज्ञा लेकर उसे पालनेवाले आदमी बहुत ज्यादा नही हुआ करते। हमने ही क्या अपनी सब प्रतिज्ञाओका पालन किया है? और उन्हे मुर्दार मांस खानेकी जो आदत पड गई है, उसके बारेमे हमे इतना अधिक व्याकुल होनेकी क्या जरूरत है? हम यह तो चाहते ही है कि उनकी यह बुरी आदत छूट जाये, पर इस तरह अधीर होनेसे काम चलनेका नही। जब अनेक सवर्ण हिन्दू मांसाहार करते है तो हरिजनोका मुर्दार मास खाना स्वाभाविक ही है। कत्ल किये हुए जानवरका मांस और मुर्दार मास, इन दोनोमे शायद ही कोई रासायनिक भेद हो। आपको याद होगा कि डॉ० देशमुखने मुझे लिखा था कि कत्ल किये जानवरोका ताजा मास और ताजा मुर्दार मास इन दोनोका फर्क समझ पाना असम्भव है। और जहाँतक तर्कका सवाल है वह हरिजनोंके ही पक्षमें जाता मालूम होता है। एक पैसेवाला हिन्दू अपने खानेके लिए बकरा जिबह करा सकता है, पर बेचारा गरीब हरिजन क्या करे? तुम उसे जिन्दा बकरा भी नही देते, और संयोगसे मरे हुए बकरेका मास उसे मिलता है, तो वह भी नही खाने देते हो। नही, हमें यह समझना चाहिए कि हरिजनोमे ऐसी एक भी बुरी आदत नही है कि जिसके मूलमे हमारा दोष न हो। प्रायश्चित्त सब हमे ही करना है। करोडो सवर्ण हिन्दू मासाहार त्याग दे, तो हरिजन मुर्दार मांस खाना आज ही छोड देंगे।

**प्रश्न : क्या हम उनसे यह कह सकते है कि वे अपने गंदे और टूटे-फूटे घर छोड़कर हमारे मुहल्लोमें आकर बस जायें?**

उत्तर इस बातको कहना आसान है, पर करना कठिन है। सब सवर्ण हिन्दू अगर सुधारक हो जाये, तो फिर आपका यह प्रश्न उठे ही नही। आज अगर हरिजन सवर्णोके मुहल्लोमे जाकर रहने लगे तो उनपर जो बीतेगी उससे उनकी रक्षा करना सुधारकोके बसकी बात नही। पर मै यह जरूर कहूँगा कि जहाँ हरिजनोपर हमेशा ही अत्याचार होता रहता हो—जैसाकि नाटारोकी ओर से होता है—तो हरिजन वह स्थान छोड़कर चले जाये।

**प्र० : हरिजनोके उपनयन-संस्कारके विषयमें आपकी क्या राय है? जनऊ उन्हें पहनाया जाये?**

उ० : नहीं, इसका तो यह अर्थ होता है कि हरिजन नीचे है और उन्हें ऊँचा बनाना है। नीचापन तो उनमें जरा भी नहीं है। उनमें जो नीचापन दिखाई देता है वह हमारे ही घोर नीचपनकी परछाईं है। मान लीजिए कि मेरा एक लड़का रोगी है, तो मैं उसका क्या करूँगा? क्या मैं उसे त्याग दूँगा? उसे नीचा मानूँगा? नहीं, मुझे यह विचार करना पड़ेगा कि यह बालक मेरे ही पापोंसे दु:ख भोग रहा है, और इसलिए मुझे उसकी खास सार-सँभाल रखनी चाहिए। पर हरिजनोंके विषयमें तो मैं यह अक्षरश: मानता हूँ कि वे हम लोगोंसे बहुत ऊँचे हैं। हमने उनके ऊपर अत्याचार करनेमें कुछ उठा नहीं रखा, तो भी वे हमारे साथ बने रहे और अब भी वे हमें नहीं छोड़ रहे हैं। जिस धर्मके कुछ अनुयायी हरिजनोंसे यह कहते हों कि तुम्हारे लिए इस धर्ममें स्थान नहीं, उस धर्मको हरिजन अब भी मानते हैं, यह मुझे महान् आश्चर्यकी बात मालूम होती है। नहीं, जिस उच्चासनपर हम सैकड़ों वर्ष अहंकारवश आसीन रहे, उससे हमें अब उतरना ही चाहिए और उनके साथ हमें अपना स्वाभाविक स्थान लेना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, १५-६-१९३५

## २३२. प्रार्थनाका रहस्य

मैंने चंद पंक्तियाँ लिखकर[1] लोगोंको क्वेटाके भूकम्पके सम्बन्धमें प्रार्थना और प्रायश्चित्त करनेकी सलाह दी थी। उसके सम्बन्धमें इधर कुछ निजी पत्र-व्यवहार हुआ है। एक पत्र-लेखकने पूछा है :

> **बिहारके भूकम्पके समय आपने नि:संकोच कहा था कि 'इसे सवर्ण हिन्दुओंको अपने अस्पृश्यता-रूपी पापका दण्ड मानना चाहिए। तब यह क्वेटाका इससे भी अधिक भयानक भूकम्प किस पाप का दण्ड है?**

लेखकको उक्त प्रश्न पूछनेका अधिकार है। जिस प्रकार बिहारके विषयमें मैंने अपना मत खूब विचारपूर्वक प्रकट किया था, उसी प्रकार क्वेटासे सम्बन्धित यह लेख भी मैंने विचारपूर्वक ही लिखा है। प्रार्थनाका यह आमन्त्रण निश्चय ही आत्माकी व्याकुलताका द्योतक है। प्रार्थना पश्चात्तापका एक चिह्न है। प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होनेकी आतुरताको सूचित करती है। प्रार्थनापरायण मनुष्य भौतिक विपत्तियोंको दैवी दण्ड समझता है। यह दण्ड व्यक्तियों तथा राष्ट्रों, दोनोंके लिए होता है। ऐसे सभी दण्ड लोगोंको एकसमान नहीं चौंकाते। कुछ दण्डोंका प्रभाव तो केवल व्यक्तियोंपर ही पड़ता है। दूसरे कुछ दण्डोंका असर जनसमूहों अथवा राष्ट्रोंपर मामूली-सा ही होता है। क्वेटाकी-जैसी विपत्तियाँ हमें स्तब्ध कर देती हैं। रोज-रोज आनेवाली सामान्य आपत्तियोंके प्रति अत्यन्त परिचयके कारण मनमें अवज्ञा

१. देखिए "आइए, प्रार्थना करें", ६-६-१९३५।

का भाव आ जाता है। भूकम्प यदि नित्य होता रहता तो उसकी तरफ हमारा ध्यान भी न जाता। क्वेटाके इस भूकम्पसे भी हमारा मन उतना विचलित नही हुआ है जितना कि बिहारके भूकम्पसे हुआ था।

लेकिन समस्त ससारका कुछ ऐसा अनुभव है कि जब भी विपत्ति आती है, तब समझदार मनुष्य विनम्र होकर भगवान्‌का स्मरण करने लगता है। वह यह मानता है कि ईश्वरने यह मेरे पापोका दण्ड दिया है, और इसलिए अब मुझे अपना आचरण और भी अच्छा बनाना चाहिए। उसके पाप उसे अत्यन्त निर्बल बना देते है और अपनी उस निर्बलतामें वह प्रभुको अधीर होकर पुकारता है। इस प्रकार करोड़ो मनुष्योने अपनेपर पडी हुई विपत्तियोका अपनी आत्मशुद्धिके लिए उपयोग किया है। राष्ट्रोने भी विपत्ति पडनेपर ईश्वरसे मदद माँगी है, इसके भी उदाहरण मिलते है। उन्होने भगवान्‌के आगे विनम्र बनकर प्रार्थना, प्रायश्चित्त और आत्मशुद्धि के दिवस नियत किये है।

मैंने कोई नयी या मौलिक बात नही सुझाई है। आजकलके जमानेमे, जबकि अश्रद्धा लोगोके लिए फैशनकी वस्तु बन गई है, स्त्री-पुरुषोसे पश्चात्ताप करने के लिए कहा जाये तो उसमे कुछ साहसकी जरूरत तो पडती ही है। पर मै साहसके लिए किसी श्रेयका दावा नही करता, क्योकि मेरी कमजोरियो और विचित्रताओको तो सब जानते ही है। जिस तरह मै बिहार और बिहारवासियोको जानता हूँ, उसी तरह अगर मै क्वेटाको जानता होता तो क्वेटाके पापका उल्लेख मै अवश्य करता, यद्यपि यह सम्भव है कि जिस प्रकार अस्पृश्यताका पाप अकेले बिहारका पाप नही था, उसी प्रकार वह पाप भी केवल क्वेटाका ही न रहा हो। किन्तु हम सब — शासक और जनता — यह मानते है कि हमे ऐसे अनेक व्यक्तिगत एव राष्ट्रीय पापोका जवाब देना है। अत यह उन सबको प्रायश्चित्त, प्रार्थना और नम्रताके लिए आमन्त्रण है। सच्ची प्रार्थनासे अकर्मण्यता कदापि उत्पन्न नही होती। उससे तो निरन्तर निष्काम कर्म करने के लिए शक्ति तथा उत्साह उत्पन्न होता है। स्वार्थका विचार कर आलसी बनकर बैठा रहनेवाला मनुष्य आत्मशुद्धि कभी कर ही नही सकता। आत्मशुद्धि तो निःस्वार्थ रीतिसे उद्यम करनेवाला व्यक्ति ही कर सकता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १५-६-१९३५

## २३३. भयंकर बरबादी

राहा (असम)से श्री अन्नदाबाबू लिखते हैं:[1]

मुझे आशा है कि अन्नदाबाबूने जिस भयानक बरबादीकी बात बतलाई है उसे असमके कतिपय कार्यकर्त्ता दूर कर देंगे। बिनौलोको अगर वहाँ यो ही फेंक देते है तो कोई नवयुवक उन्हें इकट्ठा करके उनसे कुछ पैसा कमा सकता है, क्योंकि बाजारमे बिनौलेके अच्छे दाम मिल जाते है। इसमे अज्ञानी लोगोको शिक्षा देनेकी ही बात है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १५-६-१९३५

## २३४. सत्यानाशी जूआ

मेरे एक मित्रने मुझसे यह कितनी ही बार कहा कि बम्बईमे तथाकथित उच्च वर्गके लोगोमे जो विशेष प्रकारका जूआ या सट्टा जोरोसे प्रचलित है, उसपर आप सर्वसाधारणका ध्यान जरूर आकर्षित करे। अपने उन मित्रकी तरह मुझे भी इस बुराईपर पूरा और हार्दिक दु:ख है, पर मुझे इसपर कुछ लिखने-की हिम्मत नही पडती थी। मुझे ऐसा लगता था कि इस विषयपर मेरा कुछ लिखना बिलकुल व्यर्थ होगा, क्योकि मुझे यह आशा नही थी कि इसे लिखने के बाद इस बुराईको दूर करने का मै कोई अच्छा संगठित रचनात्मक प्रयत्न आरम्भ कर पाऊँगा। इस बुराईपर कुछ लिखूँ या नही, इस उधेड-बुनमे मै पडा था कि सरदार पटेलने मेरी तलबी की और मुझे बोरसद जाना पडा। गुजरातके गाँवोको यह जूआ कैसा तबाह कर रहा है, इसकी बडी-बड़ी भयकर कहानियाँ मुझे सरदार पटेल और उनके स्वयसेवकोने बोरसदमे सुनाई। यह सत्यानाशी जूआ वहाँ प्रचण्ड दावानलकी तरह फैलता जा रहा है। बिना कोई उद्योग-धन्धा किये ही हरएक आदमी धनी बनने के लिए आतुर हो रहा है। जुआरी यह दलील देता है कि 'कोई-न-कोई तो अमुक मालके निश्चित भावका सही-सही अन्दाज लगा ही लेगा, फिर मै क्यो सट्टेसे दूर रहूँ?'

१. पत्र यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पत्र-लेखकने लिखा था कि असमके उस भागके गाँवोंमें प्रचलित तेल पेरनेकी रीति बहुत ही पुराने किस्मकी है, जिसमें बहुत-सारा तेल नष्ट हो जाता है और वहाँके लोग अक्सर बिनौलोंको तो यों ही फेंक देते है। पत्र-लेखकका सुझाव था कि अ० भा० च० सं० को गाँवमें एक घानी स्थापित करनी चाहिए जिसका गाँवके लोग मुफ्तमें या थोड़ी खली देकर उपयोग कर सकें।

और सर्वनाशको गले लगाने दौड़ पडता है। एक समय गुजरातके जो घर सुखी और सम्पन्न थे, वे अब दिन-दिन तबाह होते जा रहे है।

इसमे कोई सन्देह नही कि जूएकी यह बुराई, हम उसे जो भी नाम दे, है बहुत पुरानी — शायद उतनी ही पुरानी जितनी कि स्वय मनुष्य-जाति। उसके बाहरी रूप और नाम भले ही बदलते रहे हो किन्तु उसके सार-तत्त्वमें कोई परिवर्तन नही हुआ है।

इस जूएके विरुद्ध कानून जरूर होना चाहिए। पर अगर किसी कानूनके पीछे लोकमत न हो तो वह कोई अर्थ नही रखता। इसलिए लोकसेवकोके लिए यह आवश्यक है कि जिस तरह उन्होने प्लेगके दौरान या भूकम्प-पीडितोको राहत पहुँचानेके समय खूब डटकर उद्योग किया, उसी तरह इस सत्यानाशी जूएको उखाड फेंकने के लिए भी वे कमर कसकर तैयार हो जाये। जबतक इस दुर्व्यसनका जड-मूलसे नाश न हो जाये, तबतक उन्हे सन्तोष नही मानना चाहिए। एक तरहसे तो यह जूआ प्लेग या भूकम्पसे भी बुरा है, क्योकि यह हमारी अन्तरात्माको नष्ट कर देता है। और जिसकी आत्मा नष्ट हो चुकी, वह पृथ्वीपर भार-रूप ही है। इसमे सन्देह नही कि प्लेग या भूकम्पके सकटके विरुद्ध लडना जितना आसान है, इस महारिपुसे लोहा लेना उतना आसान नही है। जहाँ प्लेग और भूकम्पका सकट दूर करने मे थोडा-बहुत सहयोग पीडित जनोका भी मिल जाता है, वहाँ इस जूएमें जूएके शिकार खुद ही आपत्तिको आमन्त्रित करते है और उसे गले लगाते है। जुआरीका जूआ छुड़ाना शराबीकी शराबखोरी छुडानेके समान है। इसलिए यह महा कठिन काम है। लेकिन इस बुराईको मिटाने का प्रयत्न तो हमे करना ही है। बम्बई नगरको तो इसने जैसे ग्रस लिया है। गाँवोकी ओर भी अब इस दुष्टने अपना पजा फैलाना शुरू कर दिया है। गाँवोके लिए यह निश्चय ही खतरेकी घटी है। कोई भी देशभक्त इस खतरेकी घटीको सुनकर बेखबर रहनेका साहस नही कर सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १५-६-१९३५

## २३५. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१५ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे उम्मीद है कि किचीको[1] अब बुखार नही है। उसे क्या हुआ है? जब तुम वहाँ नही होती तो वह किसके पास रहता है? अपना वक्त वह किस तरहसे गुजारता है? क्या उसके पास ऐसी कोई चीज या कोई व्यक्ति रहता है जिसके साथ उसका मन बहल जाता हो?

कमलाने मुझे चिट्ठी लिखी थी। कितना अच्छा हो अगर तुम उसके साथ आ सको।[2] लेकिन मुझे मालूम है कि तुम्हें इस समय अपने पिता या किचीको अकेला नही छोड़ना चाहिए।

हाँ, क्वेटाका विनाश दिलको हिला देने वाला है। उसके सम्बन्धमे मैने जो-कुछ भी लिखा है, उसपर तुम्हे विचार करना चाहिए।

प्रभा अपने पिताके साथ है। वह जुलाईमे लौटेगी। अमतुस्सलाम यही है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०१)से, सौजन्य: एस० अम्बुजम्माल

## २३६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ जून, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

भाई बलवन्तरायके[3] साथ चर्चाके दौरान बात निकलनेपर मैने उनसे कहा है कि देवचन्दभाई[4] काठियावाड़ राजनीतिक परिषद्की कार्यसमितिकी बैठक नही बुलाते, इसके पीछे तुम्हारा हाथ है, और तुम्हारे इस निर्णयको मैने भी उचित माना है।

१. कृष्णस्वामी।
२. देखिए "पत्र : एस० अम्बुजम्मालको", ४-६-१९३५।
३. बलवन्तराय मेहता।
४. बढवाणके श्री देवचन्द पारेख।

भाई बलवन्तराय कहते हैं कि पोरबन्दरमें लगाई गई मर्यादाका उल्लंघन कोई नहीं करना चाहता। मैंने कहा कि अगर ऐसा विश्वास तुमको दिला सकें, तो शायद तुम अपना विरोध वापस ले लो। इसके अतिरिक्त तुमसे बात कर लेनेकी सलाह भी मैंने बलवन्तरायको दी है।

ये और कुछ अन्य लोग सीकरके[1] मामलेमें यहाँ आये हैं। इस बारेमें मेरी राय भाई बलवन्तराय बतायेंगे। जल्दी ही अच्छे हो जाओ।[2]

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७१-७२

## २३७. सन्देश: चित्तरंजनदास स्मारक-भवनके उद्घाटनपर[3]

[१६ जून, १९३५ के पूर्व][4]

मुझे खेद है कि इस माहकी १६ तारीखको होनेवाले समारोहमें मैं उपस्थित नहीं हो सकूँगा। मैं उसके लिए हर प्रकारकी सफलताकी कामना करता हूँ। इस अवसरपर उपस्थित लोग अगर इस बातपर विचार करें कि हमने देशबन्धुके जीवनके जिन गुणोंको सराहा है, उन्हें आचरण द्वारा अपने जीवनमें उतारना ही एक सच्चे स्मारककी स्थापना करना है, तो कितना अच्छा परिणाम निकले!

[अंग्रेजीसे]
अमृत बाजार पत्रिका, १८-६-१९३५

१. देखिए "पत्र: क० मा० मुंशीको", ९-६-१९३५।
२. वल्लभभाई पटेलको पीलिया हो गया था।
३. केवड़ातला श्मशान घाटपर जो स्मारक बनाया गया था, उसका उद्घाटन नीलरतन सरकारने किया था।
४. चित्तरंजनदासकी दसवीं बरसी १६ जून, १९३५ को थी।

## २३८. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

१६ जून, १८३५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

मै गुड़का शर्बत इस्तेमाल करके देखूँगा और उसके प्रभावके सम्बन्धमें आपको सूचित करूँगा। अलबत्ता गुडका शर्बत कितने लम्बे अर्सेतक [बिना बिगड़े] रह सकता है, इस विषयमे मुझे कोई जानकारी नही हो पायेगी।

हृदयसे आपका,
बापू

श्रीयुत सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
डाकखाना चाँदले, जिला गुन्टूर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९१७१)से, सौजन्य : जी० सीताराम शास्त्री

## २३९. पत्र : मोहनलालको

वर्धा
१६ जून, १९३५

प्रिय मोहनलाल,[1]

आपका पत्र मिला। जो मुद्दा आपने उठाया है उसकी चर्चा 'हरिजन' मे नही की जा सकती। मै समझता हूँ, डॉ० गोपीचन्दका विचार बिलकुल ठीक है। मै बस एक कदम और आगे जाकर कहूँगा कि सघके सदस्योकी हैसियतसे हमें सरकारसे कुछ करवाने के लिए कोई आन्दोलन नही चलाना चाहिए। हमारा क्षेत्र ऐसे कार्योतक ही सीमित है जो हम सरकारी सहायताके बिना कर सकते हैं। सरकार द्वारा इस सम्बन्धमे उठाये हर कदमकी हमे कद्र तो करनी ही चाहिए। अगर कभी सरकार हमारा सहयोग माँगे तो हमें इसमे सहयोग देनेकी पूरी स्वतन्त्रता है। लेकिन सरकार की आलोचना करना या सरकारको कोई कार्रवाई करनेपर मजबूर करने के लिए मंचोसे आन्दोलन चलाना हमारे कार्य-क्षेत्रसे बाहरकी बात है। इस स्थितिकी अव-धारणा किसी स्थायी नीतिके रूपमे नही की गई है, लेकिन मुझे इसमे कोई सन्देह

१. पजाब हरिजन सेवक संघके मन्त्री।

नही है कि फिलहाल तो अनुसरण करने लायक यही एक ठीक नीति है। हमें यह समझना चाहिए कि फिलहाल हरिजन यह तय नही कर पाये है कि उन्हें क्या करना चाहिए। पहले हमें उनका पूरा विश्वासभाजन बनना है। उसके बाद ही हम सरकारको अपनी इच्छित दिशामें प्रवृत्त होनेको प्रभावित कर सकते है। मै माने लेता हूँ कि यह पत्र आप डॉ० गोपीचन्दको भी दिखायेंगे।

आपका,

श्रीयुत मोहनलालजी
लाजपत भवन
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य. प्यारेलाल

## २४०. पत्र: मुहम्मद अजमल खाँको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

चार दिन पहले प्राप्त आपके पत्र और आज मिली आपकी पुस्तकके लिए धन्यवाद। मै उर्दू तेजीसे नही पढ़ सकता और मैं चाहे जितना चाहूँ लेकिन उसे पढ़नेके लिए आज मेरे पास अवकाश नही है। अभी मैंने आपकी पुस्तक अपने साथ ठहरे एक मुसलमान दोस्तको दे दी है। उनके पढ़ लेनेके बाद मै उसे पढने की कोशिश करूँगा और यदि मैं कभी अपनी कोशिशमें सफल हो सका तो निश्चय ही आपको अपनी राय भेजूँगा। आपको शायद मालूम नही होगा कि 'हरिजन' मे मै किसी पुस्तककी समीक्षा नही करता।

हृदयसे आपका,

मौलवी मुहम्मद अजमल खाँ
इंस्टिटयूट ऑफ डिवाइन ट्रुथ्स
डेरा, इलाहाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य: प्यारेलाल

## २४१. पत्र : मुहम्मद अबूसालेह ए० निजामीको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

चमड़ा कमानेपर लिखी गई आपकी पुस्तक मैं पढ गया। बहुत असम्बद्ध और अपूर्ण है। बहुत-सी बातोका कोई जिक्र ही नही है। पुस्तक ऐसी नही है जिसके सहारे कोई सीखनेवाला आदमी बिना किसी शिक्षककी सहायताके प्रयोग कर सके। प्रयोगमे लाई जानेवाली वस्तुओका आपने ठीक अनुपात नही बताया। मैं सलाह दूँगा कि आप इसके परिच्छेद फिरसे लिखे और पुस्तकको जितनी है, उससे बहुत अधिक तथ्यपूर्ण बनाये। पुस्तक मोटी हो, यह जरूरी नही है; लेकिन सारे तथ्य ठीक-ठीक दिये जाये, यह आवश्यक है। चमड़ा कमानेवाला कैसे पानीका उपयोग करे, इसके बारेमे आपने बहुत कम कहा है। लेकिन मैंने तो इस विषयपर जितना साहित्य पढ़ा है, सबमे पानीकी किस्मपर ज्यादासे-ज्यादा जोर दिया गया है। और अन्तमे, आपने पुस्तककी जो कीमत रखी है उसका प्रकाशन-व्ययसे कही कोई मेल ही नही बैठता। आपकी पुस्तक चन्द धनी लोगोके लिए नही बल्कि बहुत-से गरीबोके लिए है।

हृदयसे आपका,

मुहम्मद अबूसालेह ए० निजामी
बडौदा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य . प्यारेलाल

## २४२. पत्र : डॉ० एम० बी० गोडबोलेको

१६ जून, १९३५

प्रिय गोडबोले,[1]

मैं तो समझ रहा था कि बहुत पहले आप जो पुस्तक मेरे पास छोड गये थे वह आपको लौटा दी है। तय यह हुआ था कि आपके पूना जाते समय रास्तेमे पुस्तक आपको दे दी जायेगी। पता नही कैसे, यह हो नही सका। आशा है, अब पुस्तक मिल गई होगी। आपका पत्र प्राप्त होते ही भेज दी गई थी।

जहाँतक उस यत्रका सम्बन्ध है, वह मैंने आजमाइशके लिए श्री किशोरलाल मशरूवालाको दिया था। वे दमेके मरीज है और उनसे मैंने आपका परिचय भी कराया था। वे उसे आजमाते रहे है और मैंने उनसे आजमाइशका लिखित विवरण

१. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें औद्योगिक रसायनके प्राध्यापक।

देनेको कहा है। मिलते ही मैं आपको भेज दूंगा। जहाँतक मेरी रायका सम्बन्ध है, मैं समझता हूँ कि यह लोगोकी श्वास-क्षमता मापनेका बहुत सरल-सा उपकरण है और इसलिए यह स्कूलो और अस्पतालोमें, जहाँ बच्चो या रोगियोके फेफडोकी क्षमताकी जाँचकी जरूरत पडती है, इसका उपयोग हो सकता है।

साथमे श्रीयुत किशोरलालका विवरण है।

हृदयसे आपका,

डॉ० एम० बी० गोडबोले
पोस्ट बॉक्स १९, पूना

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

## २४३. पत्र: एल० के० किर्लोस्करको

१६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

मैं आपकी मशीनके बारेमें लिखे अपने पत्रके[1] उत्तरकी आशा कर रहा था। जैसाकि मैं पहले ही कह चुका हूँ, मैं आपसे एक मशीन खरीदना चाहूँगा, ताकि लम्बे अर्सेतक उसकी आजमाइश कर सकूँ। जो काम मैं सोच रहा हूँ वह काम अगर यह मशीन करती है तो सम्भव है कि आपसमें तय की गई कीमतपर मैं इसे बडी तादादमे खरीदूं। और जो चाहते है वह कीमत अगर आपको नही मिल पाती तो जिस बड़े सुझावपर हमने आरम्भिक चर्चा की थी, उसपर कैसे अमल किया जा सकता है, यह तय करने के लिए मैं आपके साथ उस सुझावपर ज्यादा विस्तारसे चर्चा करना चाहूँगा।

मेरे नाम लिखा सर डैनियल हैमिल्टनका[2] पत्र आपके देखने के लिए भेज रहा हूँ। अगर आप समझते हो कि जिस उद्देश्यसे वे चाहते है उस उद्देश्यके लिए आप उन्हें अपने चरखेका चित्र दे सकते है तो आप उसे मुझको या उनके पत्रमे दिये गये पतेपर सीधे उनको भेज सकते हैं।

हृदयसे आपका,

एल० के० किर्लोस्कर
किर्लोस्करवाडी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए खण्ड ६०, पृ० ३२०।
२. गोसावा जमींदारी, सुन्दरवनके।

## २४४. पत्र : हीरालाल शर्माको

१६ जून, १९३५

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। पदरहा दिनकी मर्यादा यह कुछ चीज नही है। बडोको भी पदरहा दिनमें पासपोर्ट नही मिलता। अबी ही एक डा०[को] पासपोर्ट मिला। वह अठारह महिनेके बाद।

तुम्हारा यहाँ आना यह अलग बात है। तुम्हारे आनेके बाद द्रौपदी और बच्चों का क्या? क्या वह भाईयोके साथ रहेगी? सब हाल मुझको बरावर दे दो। यहाँ आनेका निश्चय हो जायगा तो भी मैं कमरा नही दे रखूंगा। तुम्हारे आनेके बाद अलग कमरेका देखा जायगा। लेकिन वह भी पासपोर्टके बारेमे निर्णय होनेके बाद। अगर पासपोर्ट मिल भी जाय तो क्या अलग कमरा लेवे? आनेके पहिले तुम्हारे कलेक्टरको लिखना होगा या उनके पास जाना होगा और कहना होगा कि कुछ तहेकिकात करना है तो वर्धा खत भेजे। उसको पूछा भी जाय कि उत्तरकी कब आशा की जाय?

मांके बारेमे लिखा है वह मै नही समझा हूँ। रामगोपालने शिकायत तो काफी भेजी है लेकिन उसमे कुछ है नही। ऐसा ही उत्तर भेज दिया गया है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १६९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## २४५. पत्र : एफ० मेरी-बारको

वर्धा
१७ जून, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड पाकर बड़ी खुशी हुई। ठक्कर बापाने एक पत्र भेजा था। मैं चाहता हूँ कि कुछ दिनोंतक मुझे रोज समाचार प्राप्त होता रहे।

यहाँ सब कुशल हैं।

सबका प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४५) से। सी० डब्ल्यू० ३३७५ से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

## २४६. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

१७ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं बिहार-रिपोर्टका अध्ययन करूँगा और तब शायद फिर कुँओंके सम्बन्धमें पत्र लिखूँ।[1] उम्मीद है कि 'हरिजन' के अगले अंकमें पानी-फण्डके बारेमें भी लिखूँ।

राव बहादुर एम० सी० राजाने जो पत्र तुम्हें लिखा है, उसकी एक नकल उन्होंने मुझे भी भेजी है। उन्होंने गणेशनकी बड़ी तारीफ की है। मेरे खयालसे तुमने उस पत्रका उत्तर दे दिया होगा।

लगता है कि गणेशनने सभीको निराश किया है। ठक्कर बापा तो उसपर जरा भी विश्वास नहीं करते। और अब शास्त्रीका भी भ्रम टूट गया है। और, मैं समझता हूँ, इसी तरह संघकी मद्रास-शाखाके अध्यक्ष और मन्त्रीका भी।

सस्नेह,

प्रो० मलकानी
दिल्ली

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६०) से।

१. देखिए "हरिजनोंके लिए कुएँ", २२-६-१९३५।

## २४७. पत्र : वसुमती पण्डितको

१७ जून, १९३५

चि० वसुमती,

यदि शिवाभाईके[1] पास सचमुच तेरे लिए काम हो और वे चाहते हो कि तू उनके पास रहे, तो तूने तो वहाँ एक वर्ष बितानेकी प्रतिज्ञा की ही है। अत. शान्त-चित्तसे आनन्दपूर्वक अपनी प्रतिज्ञाका पालन कर और जो काम सौपा जाये, उसे सावधानीसे कर। कब्ज दूर करने की कोशिश करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

लक्ष्मी और मनु आ गये है।

श्री वसुमतीबहन,
वल्लभ विद्यालय,
बोचासण

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०१) से। सी० डब्ल्यू० ६४७ से भी; सौजन्य · वसुमती पण्डित

## २४८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१७ जून, १९३५

भाईश्री वल्लभभाई,

टोटका तो टोटका ही है। लग गया तो तीर, वर्ना तुक्का तो है ही। अब तो यदि सिर्फ रसदार फलोपर कुछ दिन बिताओ तो फिर न दवा चाहिए, न कुछ और। दस्त न आये तो एनीमा लेना ही चाहिए। कमोड काममे न लेना तो तुम्हारी ज्यादती ही कही जायेगी। इससे बीमार और सेवा करनेवाले दोनोको सहूलियत होती है। कमोड इस्तेमाल करना तो शुरू कर ही दो।

एन्ड्रयूज कल यहाँ आ रहे है। एक-दो दिन रहकर चले जायेंगे।

आजकल यहाँ तरह-तरहके मनुष्योकी अच्छी भीड़ है। कुमारप्पाके भाई भारतन आये है।

१. शिवाभाई गोकुलभाई पटेल, बोचासण वल्लभ विद्यालयके प्राचार्य।

वसुमती बोचासण छोडनेकी तैयारीमे थी। उससे शिवाभाईने ठहर जानेका आग्रह किया है। मैंने लिखा है कि यदि सचमुच ही उसकी जरूरत हो, तो खुशीसे वह एक वर्षके लिए वही रहे। इस बारेमें तुम्हे कुछ सुझाना हो तो मणिसे[1] कह देना। फिलहाल मैं तुम्हारे पत्रकी आशा नही करता। बीमारी तुरन्त मिटनी ही चाहिए।

अच्छे होनेपर यहाँ आ जाना। राजेन्द्रबाबू तो आयेंगे ही। जमनालाल भी जुलाईमें पहुँच जायेंगे। उस समय ठडक भी काफी होगी। अब वैसी सख्त गरमी तो नही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
**बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७२-७३**

## २४९. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

वर्धा
१८ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

रविवारको जो पत्र लिखवाया था, वह अभी भेजा नही गया है। इसलिए, इस पत्रको भी उसीके साथ भेज रहा हूँ।

श्रीमती नेहरू द्वारा तुम्हें लिखा गया पत्र, जो तुम मुझे भेजनेवाले थे और जिसे वापस भी चाहते थे, खोजनेपर मुझे कही नही मिला। इसलिए उस पत्रकी तलाश तुम अपने ही कागजोमे करो। उसकी मुझे आवश्यकता नही पडेगी। उसमे लिखी बातोका मैं अन्दाज लगा लूँगा और आशा है 'हरिजन'के किसी अकमे महिला-सम्मेलनके बारेमें कुछ लिख भी सकूँगा।

तुम देखोगे कि आगामी अकसे मैं कूप-निधिके बारेमे लगभग हर सप्ताह कुछ-न-कुछ लिख रहा हूँ। मैं पजाब-रिपोर्टके बारेमे पहले ही लिख चुका हूँ। इस समय बिहार-रिपोर्ट मेरी फाइलमे है और मेरा खयाल है, गुजरात-रिपोर्ट भी। इनमे से कोई एक आगामी अकमे जायेगी।

मैं सेठ जुगलकिशोरको भी पत्र लिख चुका हूँ। मैंने उन्हे लिखा है कि उन्हे अपने नामके उल्लेखका बुरा नही मानना चाहिए और यह कि उसकी शुरूआत ठक्कर बापाने प्रशसाके उत्साहमे सर्वथा निश्छल भावसे कर दी थी। मैंने उनसे यह भी कहा है कि अगर उन्हे अब भी कूप-निधिके साथ अपना नाम सयुक्त करने मे कोई बड़ी आपत्ति है, तो उसे बाजाप्ता हटा दिया जायेगा। इसलिए, अगर इस

१. मणिबहन पटेल।

बारेमे तुमने उन्हें कुछ नही लिखा है तो जबतक मैं तुम्हें कुछ न लिखूं, तुम्हें उस सम्बन्धमें किसी प्रकारकी चिन्ता करने की आवश्यकता नही है।

डेविड-छात्रवृत्ति कोषके सम्बन्धमे तुम्हें डेविड नामको बनाये रखने मे एतराज क्यो है? अगर कोई उस नामसे परहेज करना चाहता है तो वह उसे हरिजन छात्र-वृत्ति कोष कहे। "नाममे क्या धरा है? गुलाबको कोई भी नाम दे दो, वह फिर भी महकेगा।"

बजट बनाने के लिए दी गई टिप्पणीका मैंने अभी अध्ययन नही किया है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६१)से।

## २५०. पत्र : सी० जी० जगन्नाथदासको

१८ जून, १९३५

प्रिय जगन्नाथदास,

आपने नग्नतापर विस्तारसे मुझे पत्र लिखकर ठीक ही किया है।[1] जहाँतक सिद्धान्तका प्रश्न है, मुझे आपसे सहमति जतानेमे कोई सकोच नही है। पर सिद्धान्त हमेशा ही व्यावहारिकतामे परिणत करने योग्य नही होते। तथ्यपूर्ण गणितशास्त्र आदिमे भी, जैसे ज्यामितिमे, सिद्धान्तोपर पूरी तरह व्यवहार नही हो पाता। ज्यामितिशास्त्रका काल्पनिक समकोण कोई भवन नही बना सकता, लेकिन राज तथा बढई लगभग सही समकोणकी सहायतासे अनेक भव्य भवनोका निर्माण करते है। पश्चिमी जगत् और भारत, दोनोमे व्यवहारत. नग्नताको प्रतिष्ठा नही है। मेरी समझमे यह मानकर चलना कि सभी पुरुष तथा स्त्रियाँ मनसे पवित्र होते है, एक बहुत बडी गलती होगी। इसीलिए मै इसे खतरनाक मानता हूँ।

हृदयसे आपका,
बापू

श्रीयुत सी० जी० जगन्नाथदास
४५९, मिन्ट स्ट्रीट
पार्क टाउन, मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९१)से।

१. सी० जी० जगन्नाथदासने १५ जूनके अपने पत्रमें नग्नताको अपनानेके सम्बन्धमें अपनी दलील दी थी। तर्क करते हुए उन्होंने कहा था कि वस्त्र-धारण करना अप्राकृतिक तथा अस्वास्थ्यकर है और इस प्रथाको त्याग देना चाहिए, जिससे प्रकाश और वायु-सेवनके लिए त्वचा सारी बाधाओंसे मुक्त हो जाये।

## २५१. पत्र : शार्दूलसिंह कवीश्वरको

१८ जून, १९३५

प्रिय कवीश्वर,

अपवाद केवल डॉ० खानसाहबको ही रहने दिया जाये। डॉ० गोपीचन्दको औपचारिक रूपसे किसी संस्थासे जोडे बिना आप उनसे, बेशक, जितनी सहायता ले सकते है, ले। आप यकीन मानिए कि अगर उन्हे दोनोसे औपचारिक रूपसे सम्बद्ध कर दिया गया तो किसी-न-किसीको नुकसानमे रहना ही पडेगा। यद्यपि वृक्षकी शाखाएँ मूलत एक ही है, लेकिन वृक्षपर उनका अलग-अलग अस्तित्व आवश्यक और उचित है और वे अपनी-अपनी जगहोपर कायम रहकर और अपने-अपने कर्त्तव्योका पालन करते हुए मूलकी पूरी सेवा करती है। मै जानता हूँ कि हमारे पास सच्चे सेवकोकी भारी कमी है और यह कमी तबतक बनी रहेगी जबतक कि हम उनपर एकाधिक जिम्मेदारियाँ डालकर अपने मनमें यह भ्रम पालते रहेंगे कि सभी जिम्मेदारियोका ठीक निर्वाह हो रहा है। अगर आप मेरी दलीलसे सहमत है तो आप डॉ० गोपीचन्दसे जरूरी मदद पाकर ही सन्तुष्ट रहेंगे और उन्हें ससदीय बोर्डसे औपचारिक तौरपर नही जोडेंगे। औपचारिक सम्बन्धके न होनेसे विवेकशील व्यक्तिको ऐसी स्वतन्त्रता प्राप्त रहती है जो वैसा सम्बन्ध होनेसे नही मिल सकती। आप मानते है न?

हृदयसे आपका,

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर
चैम्बरलेन रोड
लाहौर

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

## २५२. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

१८ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्माल,

तुम्हारी इस परीक्षाकी घडीमे मेरे सम्पूर्ण हृदयका स्नेह और सवेदना तुम्हारे साथ है। ईश्वर दयालु है। वही तुम्हें शक्ति देगा। यह अच्छा हुआ कि तुमने माता-पिताको सूचना नही दी और ऑपरेशन तत्काल करवा लेनेका साहस दिखाया। अगर डॉक्टर इजाजत दे तो कीचीको भी कोडाइ क्यो नही ले जाती ?

तुम्हें बगलोरके पतेपर एक पत्र भेजा था। अगर अबतक न मिला हो तो अपने समयसे मिल ही जायेगा।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे . अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## २५३. पंच-निर्णय

१८ जून, १९३५

अखिल भारतीय चरखा सघ, बम्बईकी दूकानके कार्यकर्त्ताओकी, वहाँके एजेंटके विरुद्ध शिक़ायतके सम्बन्धमे, दोनो पक्षोकी सहमतिसे मैं इस दुःखद प्रकरणमे पडा हूँ।

दोनो पक्षो द्वारा प्रस्तुत किये गये कागज-पत्र मैं पढ गया हूँ।

श्री गणात्राको दिया गया नोटिस दोषयुक्त था। नोटिसके बदले पूरा वेतन देकर दोष दूर किया जा सकता है।

नोटिस देनेके बाद कार्यकर्त्ताओने जो व्यवहार किया और जो लेख और पत्रक लिखे वे इतने अशिष्ट थे, जो खादी-सेवकको शोभा नही देते। ऐसे व्यवहारसे कोई सस्था चल नही सकती। अत उन सेवकोको अलग कर देनेका एजेटको अधिकार था।

किन्तु यदि ये कार्यकर्त्ता सलग्न परिशिष्टमे बताये अनुसार लिखकर खेद प्रकट करे, तो एजेटको चाहिए कि श्री गणात्रा-सहित सबको बिना कुछ भी वेतन काटे वापस ले लिया जाये।[1]

यह प्रस्ताव, कार्यकर्त्ताओके प्रतिनिधि श्री रतुभाई देसाईके हाथमे पहुँचनेके ७२ घंटेके भीतर यदि ये कार्यकर्त्ता खेदप्रकाशका पत्र प्रस्तुत न करे, तो वे नौकरीपर नही लिये जा सकेगे और उन्हें दिया गया नोटिस बहाल रहेगा।

एजेंटकी राय है कि खादी-भण्डारमे जितने कार्यकर्त्ता है, उतने कार्यकर्त्ताओका भार वहन करने की शक्ति भण्डारमे नही है। मेरे उपर्युक्त निर्णयसे भण्डारकी व्यवस्थामे रद्दोबदल करने, सेवकोकी सख्यामे कमी करने अथवा वर्तमान वेतनमें कटौती करने की बातमे कोई रुकावट नही आती। सभी खादी-भण्डारोकी वर्तमान नीतिके सम्बन्धमे कितने ही सुझाव देनेका मेरा खुदका विचार है, जिन्हें यहाँ बतानेकी आवश्यकता है।

मैं आशा करता हूँ कि कार्यकर्त्ता खुशी-खुशी खेदप्रकाश-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे और भण्डारमे अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

यदि बर्खास्त हुए सब कार्यकर्त्ता उपर्युक्त निर्णय स्वीकार न करे, तो जो कार्यकर्त्ता इसे स्वीकार करे, एजेट उन्हीको कामपर वापस ले ले।

मो० क० गांधी

परिशिष्ट

श्री गणात्राको बर्खास्तगीका नोटिस मिलने के बाद उन्होने और हमने जिस तरहका व्यवहार किया, वह खादी-सेवकको शोभा नही देता। हमने जो पत्र लिखे, उनमे अशिष्टता थी। अपने इस व्यवहारके लिए हमे खेद है। आगे कभी ऐसा व्यवहार न करे, इसके लिए हम प्रयत्नशील रहेंगे।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७८९) से।

## २५४. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

१८ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

यह रहा मेरा निर्णय[1]। इसे तुम्ही रतुभाईको बुलाकर दिखाना और इसकी नकल उन्हें दे देना। मुझे लगता है, यही ठीक होगा। उन भाइयोसे खूब मिठाससे पेश आना। समूची नीतिका प्रश्न मैं तुरन्त हाथमे लूंगा। इस सम्बन्धमे अपने विचार व्यवस्थित करके टाँक लेना। यदि तुम्हारा दिमाग और शरीर इस मामलेमे न चले तो मुझे बताना। मै तो इसे तुरन्त हाथमे लेना चाहता हूँ।

इन भाइयोको कामपर लगानेके बाद तुम जब चाहो आ सकते हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९०) से।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

## २५५. पत्र : रतुभाई देसाईको

१८ जून, १९३५

प्रिय रतुभाई,

मैंने निर्णयका मसविदा[1] तैयार कर लिया। उसकी नकल भाई विट्ठलदास तुम्हें देंगे। समय बचानेके खयालसे तुम्ही वहाँ जाकर वह नकल ले आना।

निर्णयका तात्पर्य यह है कि गणात्रा-सहित तुम सब लोग यदि क्षमाप्रार्थना नही करते तो तुम्हारा तुरन्त विनाश हो जायेगा। मैंने इस आशासे उक्त निर्णय दिया है कि तुम सब लोग एक कुटुम्बकी तरह रहोगे और भण्डारकी मार्फत ऐसी निष्ठासे खादीकी सेवा करोगे जैसी तुमने पहले नही की। भण्डारकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें तुम्हें जो कहना हो सो मुझे तुरन्त लिख भेजना। इस मामलेको मैं तत्काल हाथमें ले लूँगा। भण्डार किसी व्यक्ति विशेषका नही है। यह तो मेरे और तुम्हारे लिए सेवाका साधन है। उसकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें सुझाव देनेका तुम्हें भी उतना ही अधिकार है, जितना मुझे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य · प्यारेलाल

## २५६. पत्र : सोहनलाल ओबेरायको

१८ जून, १९३५

भाई सोहनलाल,

तुमने ठीक ही लिखा है। जैसे तुमारी बहनके हाल हुए है ऐसे बहूत लड़कीयोके होंगे। मैं कुछ लिखनेकी[2] कोशीश करूंगा। मेरी आशा है कि तुमारा प्रयत्न सफल होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

क्या तुमारे पास अच्छी पुनियां नही रहती हैं? अच्छी रुइ नही रहती है?

श्री सोहनलाल ओबरोई
ए० आई० एस० ए० डिपो
आदमपुर, जि० जालन्धर

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८६३) से।

१. देखिए "पंच-निर्णय", १८-६-१९३५।
२. देखिए "टिप्पणियाँ", २२-६-१९३५ के अन्तर्गत 'असहाय विधवाएँ'।

## २५७. तार : गृह-सचिवको

१९ जून, १९३५

खानसाहबसे मिलनेकी इजाजत देनेके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। मुझे यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि जबतक अंग्रेजीमें बातचीत करने की शर्त नही हटाई जाती, मैं इस इजाजतका इस्तेमाल नही करूँगा। मैं वादा करता हूँ कि घरेलू बातो और तन्दुरुस्तीके अलावा किसी विषयपर मैं कोई बात नही करूँगा। सरदारने मुझे बताया है कि जब उन्हे खानसाहबसे मिलनेकी इजाजत दी गई थी, तब उन्होंने हिन्दुस्तानी जबानमें बातचीत की थी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अंग्रेजीमे बातचीत करने की शर्तको हटा लिया जाये।[1]

गाधी

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी; सौजन्य नारायण देसाई

## २५८. पत्र : रा० र० दिवाकरको

१९ जून, १९३५

प्रिय दिवाकर,

इस मुलाकातसे मुझे कोई हैरानी नही हुई। इस समय जो परिस्थिति है उसमे मुझे उससे कुछ बेहतर होनेकी उम्मीद भी नही है। किसान लोगोके कमजोर पड़ जानेसे मुझे दुःख नही होता, क्योकि यह एक आम बात हो गई है। नेताओंने भी कोई बहुत अच्छा काम नही किया है। इसमे गलती किसीकी भी नही है। नेताओ और किसानोसे जितना अच्छा काम बन पडा, उन्होने किया। यह बहुत कीमती सबक है। अगर हममे से कुछ लोग भी चारो ओर फैली कमजोरी और अँधेरेके बावजूद सत्य और अहिंसामे अपने विश्वासको अडिग बनाये रखे, तो सब ठीक हो जायेगा।

तुम्हारा,
बापू

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई

१. गृह-सचिवने इसे मान लिया था।

## २५९. पत्र : अमृतकौरको

दुबारा नहीं पढ़ा

वर्धा
१९ जून, १९३५

प्रिय अमृत,

कोई व्यक्ति अगर अपनी सच्ची असहायावस्थाको निस्संकोच भावसे स्वीकार कर ले तो यह बात उसे कायर नही बनाती; बल्कि हो सकता है यह उसके साहसी बनने की शुरुआत हो। मै तुम्हारी बातको सही मानकर यह लिखवा रहा हूँ। बायें हाथसे लिखना मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उस हाथसे मै उतनी आसानी और तेजीके साथ नही लिख पाता जितना दायें हाथसे।

चार्लीने ठीक वक्तपर तुम्हारा पत्र मुझे दे दिया है। जिस प्रकारसे तुम चाहती हो मै अपने हस्ताक्षर करके फोटोकी प्रतियाँ लौटा रहा हूँ।

मुझे कृष्णलाल गोस्वामीकी याद नही है। हो सकता है, जब मै बाहर था तब वे आश्रममे रहे हो। चार्लीका कहना है कि आश्रममे उनसे मिलने की साफ-सी याद उन्हे है। माधवको उनकी बिलकुल याद नही है। चरखेके बारेमे तुमसे उन्होंने जो-कुछ भी कहा है, वह सही दिखाई देता है और इससे यह जान पड़ता है कि उन्हे कताई-कलाके सम्बन्धमे कुछ ज्ञान है। पूनियाँ मै चार्लीके साथ भेज रहा हूँ। मुझे बताना कि तुम्हें वे कैसी लगी। तुम्हें तकुए तो वही बनवा लेने चाहिए। अगर तुम्हें बढ़िया फौलाद न मिले तो वे साधारण लोहेके भी बन सकते हैं। अगर ठीक तरहसे बनाया जाये, तो इससे कोई खास फर्क नही पडता। बनावट ठीक हो तो कमजोर तकुएपर भी उतनी ही अच्छी कताई हो जाती है। लेकिन नौसिखुएके हाथोमे घटिया लोहेका बना तकुआ फौलादसे बने तकुएकी बनिस्बत जल्दी खराब हो सकता है।

मै तुम्हें पत्र लिखनेके ४५० कागज और लगभग इतने ही लिफाफे भी नौ बण्डलोमे बाँधकर भेज रहा हूँ। मै पचास-पचासकी संख्यामे तह करके हाथसे बने किसी सादे कागजकी खूबसूरत जिल्द बँधवाकर उन्हे तैयार करवाने ही जा रहा था कि तुम्हारा पत्र आ गया। तुमने कहा था कि मै बिना जिल्द बँधवाये ही कागज भेजूँ क्योंकि तुम्हें खिडकियोको सजाने के लिए उनकी आवश्यकता है। तुमने कीमतके बारेमें भी पूछा है। जो बण्डल चार्लीके साथ तुम्हारे पास भेज रहा हूँ वह, और एक वह जो इससे पहले तुम्हे भेजा गया था, जिस कागजसे बने हैं उसके मैने १२ रुपये दिये थे। थोडे-से सफे जो बच गये थे, उनका मैने इस्तेमाल किया है। अब भी १५० पन्ने मेरे पास बाकी हैं। इन्हें बनाने मे जो श्रम पड़ता है, वह

नही गिना है और लिफाफे बनाने के लिए जो लेई वगैरा तैयार की गई थी, उसकी कीमत भी नही लगाई है। लेई वगैरा तो बहुत सस्तेमे बन जाती है। मेहनत कितने की बैठी, इसका अन्दाज आज तो नही लगा सकता। दो या तीन लोगोने कुछ दिन इस कामको किया था। मैंने उन्हें इस कामको करने के समयका हिसाब रखने को नही कहा था। अब मैंने तुम्हे कागजो और लिफाफोकी कीमत खुद ही तय करने योग्य काफी बाते लिख दी है। तुम्हें चाहिए कि तुम उन्हे कमसे-कम १२ रुपयेमें बेचो। लेकिन तुम जैसा चाहो, कर सकती हो। पूनियोके बारेमें मैं कुछ भी नही कह सकता, क्योकि मुझे सिर्फ रुईके पैसे ही देने पडते है। रुई खादी-भण्डारसे खरीदी गई थी। लेकिन जो तैयार माल तुम्हे भेजा गया है, उसका मैने कोई हिसाब नही रखा। कच्चे मालकी कीमत डेढ रुपयेसे अधिक नही हो सकती।

जहाँतक क्वेटा सहायता-निधिकी बात है, मैंने कहा था कि इस समय तुम जो-कुछ भी एकत्र कर सको, वह अपने पास रखो। बादमे मैं शायद इस सम्बन्धमें तुम्हे कोई निर्देश दूँ। सहायताका यह काम कुछ समयतक चलेगा। निश्चय ही, जबतक इस दिशामे तुम्हारा अपना कोई विचार नही बनता, मेरी सलाहका तभीतक महत्त्व है। जैसे ही तुम यह समझ जाओगी कि तुम्हे अनुदान कहाँ खर्च करना है, तुम निस्संकोच भावसे उसे वहाँ खर्च करोगी।

एक बातके बारेमे मै चन्दा करने के लिए अवश्य कहूँगा, और वह है हरिजन कूप-निधि। 'हरिजन' के इसी अंकमे मैंने इसकी चर्चा की है।[1] उसे देखना।

तसवीरोकी हदतक तुम जिस तरहसे चाहो उनका उपयोग कर सकती हो। वे तुम्हारी सम्पत्ति है। मै समझता हूँ कि तुमने अपने उन दो पत्रोमे, जिनका उत्तर मैंने नही दिया था, जो भी बाते पूछी थी, उनका इस पत्रमें जवाब मिल गया है। दाये हाथमे कोई खास तकलीफ नही है। यथोचित विश्राम देनेसे वह बिलकुल ठीक हो जायेगा।

तुम दोनोको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१६)से; सौजन्य . अमृतकौर। जी० एन० ६८७२ से भी

१. देखिए "हरिजनोंके लिए कुँए", २२-६-१९३५।

## २६०. एक पत्र

१९ जून, १९३५

प्रिय बहन,

मैं जिम्मेदारीके साथ नहीं कह सकता कि उद्धरण सही है। लेकिन मेरी कठिनाई एक मूलगामी कठिनाई है। मैं किस जीससका विश्वास करूँ? आपकी कल्पनाके जीससका या अपनी कल्पनाके जीससका तुम कहोगी कि "बाइबिलके जीससका।" तब प्रश्न उठता है, "किसकी व्याख्याके अनुसार?" जिस मार्गपर ईश्वर मुझे ले जाता है, उस मार्गपर चलकर मैं अपनी कठिनाई सुलझा लेता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य: नारायण देसाई

## २६१. पत्र: लीलावती आसरको

१९ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरे पत्र मिले हैं। काम चल रहा है।[1] गुजरातीकी जाँच तो मगनभाई कर रहे हैं। अंग्रेजी किसी औरको सौंपनी पड़ेगी। तेरा काम मैं पक्का कर दूँगा।

तेरे पास अंग्रेजी और गुजरातीकी कौन-कौन-सी पुस्तकें हैं, लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५७६) से। सी० डब्ल्यू० ६५४८ से भी, सौजन्य: लीलावती आसर

१. देखिए "पत्र: लीलावती आसरको", ९-६-१९३५।

## २६२. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

वर्धा
२० जून, १९३५

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र और दो चैक मिले। तुम्हारी इच्छानुसार करूँगा। तुमने अस्पतालमें जो कष्ट भोगे, वे आश्चर्यमें डालते हैं। जो-जो तुमने देखा, उसे अंग्रेजीमें लिख डालो और दीनबन्धु एन्ड्रचूजको दिखाओ। इसके बाद उसे उसके प्रबन्धकको भेज देना। यदि वह इसपर ध्यान नहीं देगा तो हम अगला कदम उठायेंगे। यह अस्पताल किसका है, इसका कर्त्ताधर्ता कौन है, यह सब पूछकर मुझे नाम और पता लिख भेजो। तुमने तो जैसे-तैसे निर्वाह कर लिया, पर गरीब लोग क्या करेंगे? तुम्हारे तो सीता-जैसी सती पत्नी है, इसलिए तुम्हारी उत्तम परिचर्या होती रही। किन्तु जिसके कोई नहीं है और जिसकी ईश्वर पर आस्था नहीं है, उसका क्या हाल होगा? इसलिए अस्पतालमें तुम्हें जो अनुभव हुए हैं, उनकी सूचना उचित स्थानपर तो भेजनी ही चाहिए। आशा है, तुम्हें रोज-रोज अधिकाधिक आराम होता जा रहा होगा।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५८) से। सी० डब्ल्यू० ५०३३ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता

## २६३. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

वर्धा
२० जून, १९३५

चि० नरहरि,

पण्डितजी चाहे तो संगीतकी कक्षा खोलें। खर्च तो ठीक लगता है। विवरण-पत्रिका के लिए पाठ्यक्रमका होना आवश्यक है। अमुक अवधिमें तथा प्रति वर्ष विद्यार्थी कितना सीखेगा, यह विस्तारपूर्वक बारीकीसे बताया जाना चाहिए।

यदि वनमालाका बुखार उतर गया हो, तो भी खुराकमें मैंने जो बताया है, यदि वही रखो तो उससे लाभ ही होगा। तुमने अपने लिए मर्यादा बाँध ली, यह

तो अच्छा ही किया। यदि बाहर इस आग्रहकी रक्षा न की जा सके, तो कोई हर्ज नही। वनमालाको नित्य घूमने जाना चाहिए और स्नान तो लेना ही चाहिए।

नये [बाल] मन्दिरमे कितने छात्र-छात्राएँ भरती हुई है? शिक्षक कौन-कौन है? हर महीने कितना खर्च आयेगा?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

क्या जयावहन अभी वहाँ है? वे क्या पढाती है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८०) से।

## २६४. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२१ जून, १९३५

चि० मेरी,

तुमने मुझे शुभ समाचार दिया है। मै आशा करता हूँ कि कल और अच्छा समाचार मिलेगा। तुम किस जगह ठहरी हो? आरामसे तो हो?

आश्चर्य है कि मार्गरेटको मेरा कोई पत्र नही मिला। मैने अपनी फाइल देखी। उसमे उसका पत्र नही मिला। जान पडता है कि वह फाड दिया गया है। जबतक उत्तर नही दिया जाता, मै पत्रोको फाड़ता नही। उसे मेरा प्यार देना और कहना कि मुझे फिर पत्र लिखे, मै उसका तुरन्त उत्तर दूँगा। यहाँ सब कुशल है।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

मीराने मुझे तुम्हारा पत्र दिखाया है। के० के जुलाईमे किसी भी दिन आनेकी सम्भावना है। शायद वह एक माहतक ठहरे। अब मीराके लिए पत्र लिखना आवश्यक नही रहा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४६) से। सी० डब्ल्यू० ३३७६ से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

## २६५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२१ जून, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरे सुन्दर पत्रका उत्तर तुरन्त नही दिया जा सकता था। और जब दायाँ हाथ आराम चाहे, तब काम पूरा हो ही नही सकता।

मेरी बाते ऐसी नही होती, जिन्हें लिखकर पूछूँ। ऐसी बाते तो मैने पूछी ही है। तत्काल पूछने लायक बाते उसी समय खत्म हो जाती है।

तुझे बोरसद ले जानेमें मेरा उद्देश्य यह था कि भविष्यमे ऐसा काम करने मे तुझे सरल मालूम हो और तुझे यह भी बताना था कि महामारीके निवारणमें मेरा ही हाथ था।

भूकम्पका पापके साथ क्या सम्बन्ध है, यह तो मै 'हरिजन'मे लिख चुका हूँ।[1] उसे पढ लेना। बिहारमें किसीको क्रोध नही आया था, इतना ही नही बल्कि सबने समझ लिया था कि यह पापका फल था। ऐक्यके सिद्धान्तसे यह सब फलित होता ही है।

सर्पादिके विषयमे भी मैने 'हरिजन'मे[2] लिखा है। उसे पढ लेना। आजकल लिखे जानेवाले 'हरिजन'के लेख न पढ़ती हो, तो मै उन्हे ध्यानपूर्वक पढ़ जानेका सुझाव दूंगा। उसकी प्रतियाँ तेरे पास आती तो है न?

जो पति अत्यन्त दुःख पा रहा हो, जिसे सेवासे भी राहत नही मिल सकती, उसकी मृत्यु साधनेमें मुझे पाप नजर नही आता।[3] परन्तु पतिको होश हो तो उससे पूछ लेना चाहिए। वह अति दुःख पाते हुए भी जीना चाहे तो उसे जीने देना चाहिए।

मालिक ट्रस्टी बने, इसका अर्थ यह है कि अपनी कमाईका अमुक भाग रखकर बाकी सब गरीबो, अर्थात् राज्य अथवा ऐसी ही किसी लोकोपयोगी सस्थाको दे दें।

यदि सब लोग अपनी पूरी कमाई राज्यको दे दें, तो किसीको उद्यम करने की प्रेरणा नही मिलेगी और मनुष्य केवल जड-यन्त्र बन जायेगा।

धनिक लोगोके साथ मेरा सम्बन्ध रहने ही वाला है। उन्हे मै दुष्ट नही मानता। और गरीबोको फरिश्ते नही मानता। पूर्व और पश्चिममे बहुत-से ऐसे धनिक मौजूद है, जो परोपकारके लिए कमाते है। वे पूजाके योग्य है। मै ऐसे बहुत-से गरीबोको जानता हूँ जिनका संग त्याज्य है। मेरी कल्पनाके स्वराज्यमे शेर और

१. देखिए "प्रार्थनाका रहस्य", १५-६-१९३५।

२. देखिए "जीव-मात्र एक है", २२-६-१९३५।

३. समाचार प्रकाशित हुआ था कि किसी अभिनेत्रीने गोली मारकर कैंसरसे त्रस्त अपने पतिका जीवन समाप्त कर दिया था।

बकरी साथ-साथ एक ही सरोवरमे पानी पियेगे। यह निरी कल्पना ही रहे, तो भी क्या? मुझे क्या चाहिए, यदि यह भी मै न जानूँ तो मै प्रयत्न काहेके लिए करूँगा?

यह तो सच है कि मै मनुष्योको अच्छी तरह नही परख पाता, परन्तु जो दूसरे को परखनेका दावा करते है, वे भी कहाँ परख पाते है? इसलिए अपने अज्ञानके लिए मुझे खेद नही है। मनुष्योको नही परख पाता, इसीलिए उनपर विश्वास रखता हूँ।

यदि तुझसे कोई मेरे विषयमे पूछे तो तुझे उत्तर देना ही चाहिए, यह जरूरी नही है। तू ऐसा क्यो नही कहती कि 'मुझे जवाब देना नही आता; उनका काम और विचार मुझे पसन्द है। जो हमे पसन्द हो, उसके पसन्द होनेके कारण हमेशा थोड़े ही बताये जा सकते है? इसलिए प्रश्न तो आप उनसे ही पूछिए।' यदि इस प्रकारका उत्तर दे, तो तू बहुत-सी झंझटोसे बच जाये। मुझसे ली हुई होने पर भी जिस वस्तुको तू पचा सकी हो वह तो तू जरूर दूसरोको दे सकती है। परन्तु जो वस्तु हमने पचा ली, वह दूसरेकी नही, हमारी ही हो गई। जो हमारी हो गई हो उसके बारेमें शका नही होती और उसके बारेमें हमारे पास जवाब भी बहुत होते ही है।

आज इतना ही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७४) से। सी० डब्ल्यू० ६८१३ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक

## २६६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२१ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मैने जरा भी धीरज नही छोडा। परन्तु वैद्योकी बात मेरे गले नही उतरती। वे नीमहकीम-जैसे होते है। उनकी दवा लग जाये तो तीर। इसमे फँसकर अच्छे भी कैसे हो? हिन्दुस्तानमे प्रख्यात वैद्य तो गणनाथ सेन है। उनका भी यही हाल समझो। इनके पास कुछ दवाइयाँ होती जरूर है, परन्तु उनका असर खत्म होने पर सब शून्यवत् हो जाता है। इसमें तुम्हें फँसानेमे कँपकँपी छूटती है। मै देखता हूँ कि मालवीयजी और मोतीलालजी भी अन्तमें डाक्टरोकी शरण गये। लेकिन यदि तुम अच्छे हो गये हो, तब तो मुझे कुछ कहना ही नही है। महादेवको जब इच्छा हो बुला लेना

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७३

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

## २६७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ जून, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

भले प्रात कालमे शक्ति न रहे कुछ पीनेंके बाद आवेगी, बादमे घुमना। सोनेंके समय पेट खाली होना चाहीयें।

रामनामका जप कुछ भी सेवाकार्य करते हुए करना मुझे तो उत्तम लगता है। बाकी जिसको ऐसे शाति न मीले वह भले एकातमें बैठकर शाति लेवे।

सच्ची प्रतिष्ठा वह जो सत्यादिके पालन करते हुए सेवासे आती है।

भले-बुरे कृत्यका कर्ता भगवान भक्तोके लिये ही है न? अभिमानी अभक्त तो मानता है 'मै ही हूं'। अर्जुन रूपी देहधारी इस देहमे चलता हुआ युद्ध भली भाति करता ही रहता तो अवश्य 'गीता' की कोई जरूरत न थी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७३) से।

## २६८. बातचीत : क्वेटाके एक आगन्तुकसे[1]

[२२ जून, १९३५ के पूर्व]

**आगन्तुक : पर प्रार्थना क्यों, सेवा क्यों नहीं? क्या सेवा ही प्रार्थनाका सबसे प्रभावकारी रूप नहीं है?**

गाधीजी अवश्य, अगर सेवाका द्वार हमारे लिए खुला होता। मगर ऐसे लाखो मनुष्य है जो भूकम्पसे बचे हुए मनुष्योकी सेवा करने मे बिलकुल ही असमर्थ है। इसलिए इस दैवी प्रकोपकी बात करने के बजाय उन्हे अपने अन्तरमे झाँक कर देखना चाहिए और आत्मशुद्धि करनी चाहिए। प्रार्थना आत्मशुद्धिके लिए एक आमन्त्रण है।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। प्रश्नकर्त्ताका नाम नहीं दिया गया है। उसने क्वेटाके भूकम्पके सिलसिलेमें गांधीजी द्वारा लिखित प्रार्थना की आवश्यकतासे सम्बन्धित लेख बहुत रुचिपूर्वक पढ़ा था और गांधीजी को, यह बतानेके लिए कि भूकम्पसे कैसा विनाश हुआ है, वह उनके पास क्वेटासे आया था।

**किन्तु सेवा-रहित कोरी प्रार्थना क्या निरर्थक नहीं है?**

मै यहाँ प्रार्थनाके बाहरी प्रदर्शनकी बात नही कर रहा हूँ। मै तो आत्मनिरीक्षण और आत्मशुद्धिकी बात करता हूँ। इसकी हम सभीको जरूरत है। जाग्रतावस्थाका अपना सारा समय अगर हम सेवा-कार्यमे लगाते रहते, तो मुझे कुछ नही कहना था। पर यह बात है नही। और जब सेवा-कार्यमे हमारा सारा समय नही लग रहा है, तब आत्मशुद्धि करने के लिए भगवान्का नाम हम ले तो वह व्यर्थ जानेका नही।

मुझे ऐसा दिखता है। जहाँतक इस विपत्तिसे उबर निकलनेवालो का सम्बन्ध है—जिनमें हमारे आदमी और आरम्भके दो दिन उद्धारको-रक्षकोका काम करनेवाले टॉमी भी शामिल है—मै समझता हूँ उन्हे प्रार्थना करने की सख्त जरूरत है, क्योकि जब विपत्ति आती है उस क्षण तो हम स्तम्भित रह जाते है और प्रार्थना तथा मानव-भ्रातृत्वकी दुहाई देने लगते है, लेकिन दूसरे ही क्षण हम भूल जाते है कि ऐसी कोई विपत्ति भी आई थी। शीघ्र ही लोभ-लालच और लूट-खसोटकी प्रवृत्ति हमपर हावी हो जाती है और फलत. भूकम्प-जैसी विपत्तियोसे हममे कोई सुधार नही होता।

[अंग्रेजीसे]

**हरिजन, २२-६-१९३५**

## २६९. एक बातचीत[1]

[२२ जून, १९३५ के पूर्व]

गाधीजी. यह चरखा[2] मशीन नही है क्या?

**[समाजवादी :] मै इस मशीनकी बात नहीं करता। मेरा मतलब तो बड़ी-बड़ी मशीनोंसे है।**

आपका मतलब क्या सिगरकी सीनेकी मशीनसे है? उसे भी ग्रामोद्योगकी प्रवृत्तिने सरक्षण दे रखा है। जो मशीने हजारो आदमियोको श्रम करने के अवसर से वचित नही करती, बल्कि जो व्यक्तिको उसके श्रममे मदद देती है और उसकी कार्यशक्तिको बढाती है और जिन मशीनोको मनुष्य अपनी इच्छासे बिना उनका गुलाम हुए चला सकता है, उन सब मशीनोको हमारे इस आन्दोलनने अभयदान दे रखा है।

**लेकिन बड़े-बड़े आविष्कारोंके विषयमें, आप क्या करेंगे? क्या आप बिजलीका सम्पूर्ण बहिष्कार कर देंगे?**

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। लेखकके अनुसार मशीनोंके पक्षधर एक समाजवादी सज्जनने गांधीजी से पूछा कि क्या ग्रामोद्योग आन्दोलनका उद्देश्य मशीन-मात्रको ही निकाल बाहर करना नहीं है।

२. गांधीजी उस समय चरखा चला रहे थे।

ऐसा किसने कहा? अगर हरएक गाँवके प्रत्येक झोपड़ेमे बिजली पहुँचाई जा सके, और लोग अपने औजारोको बिजलीकी सहायतासे चलायें, इसपर मुझे कोई आपत्ति नही। लेकिन तब पावर-हाउस पर ग्राम-समाज या सरकारका आधिपत्य रहेगा, जैसाकि आज गोचर-भूमिपर है। किन्तु जहाँ बिजली न हो और मशीनें भी न हो, वहाँके बेकार बैठे हुए लोग क्या करे? आप उन्हे काम देंगे या आप यह चाहेंगे कि कामके अभावमें उनके मालिक उन्हें बाहर कर दें?

मनुष्य-मात्रके लाभके लिए विज्ञानके जो आविष्कार है, उन सबको मै अत्यन्त मूल्यवान समझता हूँ। आविष्कार भी किस्म-किस्मके हैं। एक साथ हजारो आदमियोका संहार कर सकनेवाली जहरीली गैसोकी मुझे चिन्ता नहीं। सार्वजनिक उपयोगके जो काम मनुष्यके हाथकी मेहनतसे नही हो सकते उनके लिए भारी मशीनोका उपयोग अवश्य किया जा सकता है। उन सबपर आधिपत्य सरकारका रहना चाहिए और उनका उपयोग केवल लोक-कल्याणके लिए ही होना चाहिए। जो मशीनें अनेक मनुष्योको निर्धन बनाकर थोड़े-से मनुष्योको धनवान बनाने के ही लिए हैं अथवा जो बहुत-से आदमियोंकी उपयोगी मजदूरी छीन लेने के लिए बनाई गई हैं, मेरे विचारमे उनके लिए स्थान नहीं हो सकता।

समाजवादीके नाते आप भी तो यह नही चाहेंगे कि मशीनोंका अन्धाधुन्ध उपयोग किया जाये। छापेकी मशीनको ही ले। उसे कौन बन्द करता है? डाक्टरके चीर-फाड़के औजारोको लें। ये औजार हाथसे कैसे बन सकते हैं? इनके लिए बड़ी-बड़ी मशीनोकी जरूरत तो रहेगी ही। मगर आलस्य मिटाने के लिए तो इसे छोड़कर दूसरी कोई मशीन है ही नही। आपके साथ बात करते हुए भी मैं इस मशीनको चला रहा हूँ और देशकी सम्पत्तिमे थोड़ी-सी वृद्धि भी कर रहा हूँ। इस मशीनको कौन हटा सकता है?

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

## २७०. टिप्पणियाँ

### असहाय विधवाएँ

एक सज्जनने, जिनके कई स्वजन क्वेटाके भूकम्पमें मर गये है, १७ वर्षकी एक युवतीकी दशाका वर्णन करते हुए एक बड़ा हृदय-विदारक पत्र लिखा है। यह युवती अपने पति, दो महीनेका एक बच्चा, ससुर और देवर, यानी ससुरालके सभी स्वजनों को क्वेटाके भूकम्पमे गँवा बैठी है। पत्र-लेखक सज्जन कहते हैं कि यह लड़की किसी तरह बच गई, और जो कपड़े उस वक्त उसके तनपर थे वही पहने हुए यहाँ आई है। यह बहन उनके चाचाकी लड़की है। इस भाईकी समझमे यह नहीं आता कि उसे किस तरह सान्त्वना दी जाये, और उसका क्या किया जाये। यह बात नहीं कि उसे बहनको खुद कोई नुकसान न पहुँचा हो। उसके पैरमें चोट आई है, यद्यपि

सद्भाग्यसे उसकी हड्डी टूटनेसे वच गई है। पत्र समाप्त करते हुए उक्त सज्जन लिखते हैं :

> मैंने उसे उसकी माँके पास लाहौरमें रख दिया है। लड़की तथा दूसरे रिश्तेदारोंके सामने मैंने धीरेसे जब यह चर्चा छेड़ी कि अगर इसका पुनर्विवाह कर दिया जाये तो कैसा रहे, तब कुछ लोगोंने तो मेरी बातको सहानुभूतिके साथ सुना और कुछने नाराजगी प्रकट की। मुझे विश्वास है कि जो दशा मेरी इस चचेरी बहनकी हुई है, वैसी ही दशा यहाँ अनेक लड़कियोंकी हुई होगी। क्या आप इन अभागिनी विधवाओंके लिए प्रोत्साहनके दो शब्द लिखेंगे?

मैं नही जानता कि जहाँ सदियो पुराने पूर्वग्रहोको दूर करने का सवाल है उनके विषयमें मेरी कलम या आवाजका क्या असर पड़ सकता है। मैंने यह बीसियो बार कहा है कि प्रत्येक विधुरको पुनर्विवाह करने का जितना अधिकार है, उतना ही अधिकार प्रत्येक विधवाको भी है। हिन्दू-धर्ममे स्वेच्छासे पाला हुआ वैधव्यव्रत जहाँ अमूल्य आभूषण-स्वरूप है, वहाँ मजबूरन पाला गया वैधव्यव्रत अभिशाप-स्वरूप है; और मुझे तो यह लगता है कि अनेक तरुण विधवाएँ, यदि वे भयसे मुक्त हो, तो विना किंसी संकोचके अपना पुनर्विवाह करना चाहेगी। और यहाँ जिस भयसे मुक्तिका असली सवाल है वह यह नहीं कि उन्हें विवाह करने से जबरदस्ती रोका जायेगा, वल्कि वह तो हिन्दू-समाज के लोकापवादका भय है। इसलिए क्वेटाकी इस दुखिया बहनकी-सी स्थितिमे जो अभागिनी तरुण विधवाएँ हो, उन्हे पुनर्विवाह करने के लिए हर तरहसे समझाना चाहिए, और उन्हें ऐसा अभयदान दे देना चाहिए कि अगर वे फिरसे विवाह करना चाहती हों तो समाजमे उनकी जरा भी निन्दा नही होगी। इतना ही नही, वल्कि उनके लिए योग्य वर खोज देनेका भी पूरा प्रयत्न होना चाहिए। यह काम किसी संस्थाके किये नही हो सकता। यह तो खुद उन-सुधारकोको करना चाहिए, जिनके कुटुम्ब या सम्बन्धियोमे स्त्रियाँ विधवा हो गई हो। उन्हें अपने-अपने दायरेमें संयम और गुरुताके साथ जोरदार प्रचार-कार्य करना चाहिए। और जहाँ-जहाँ उन्हे इस कामममे सफलता मिले, वहाँ उन्हे उसे अधिकसे-अधिक प्रकाशमें लाना चाहिए। भूकम्पमे जो स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं, उन्हे सच्ची राहत केवल इसी तरह दी जा सकती है। यह मुमकिन है कि इस विपत्तिका स्मरण जबतक लोगोके मनमें ताजा बना हुआ है, उसी बीच उनकी सहानुभूति आसानीसे प्राप्त की जा सकती है। और एक बार अच्छे बडे पैमानेपर यह सुधार आरम्भ हो जाये, तो ऐसी भीषण विपत्तिके अतिरिक्त बीमारी आदि के कारण अपने पतिको खो बैठनेवाली बहनो के लिए यदि उनकी इच्छा हो तो, पुनर्विवाह करना आसान हो जायेगा।

### तीन सेवा-संघ

खादी-सेवा, ग्राम-सेवा और हरिजन-सेवा, इन तीनो सेवाओके नाम ही भिन्न वास्तवमे ये तीनो है एक ही। ये विशुद्ध परोपकारी सस्थाएँ हैं, और दरिद्रनारा-

यणकी सेवाके अतिरिक्त इनका दूसरा कोई भी ध्येय नही है। करोड़ो दरिद्रनारायणोमे हरिजन सबसे अधिक पद-दलित है। हरिजनोकी सेवामे सभीकी सेवा आ जाती है। ईश्वरके नामपर हरिजनको पिलाया हुआ एक कटोरा पानी मनुष्य-जातिके समस्त दीन-दलितोको पिलानेके बराबर है।

जिन संघोने इस प्रकारकी शुद्ध सेवाकी कल्पना कर रखी है, उनके साथ पूंजी और श्रमका विचार जोडना ही गलत है। अवैतनिक अध्यक्षसे लेकर वैतनिक चपरासियो तक, सब सेवक ही है। प्रत्येक सघका पैसा उसके ट्रस्टका है। इन सघोके व्यवस्थापक-बोर्ड समय-समय पर जो नियम बनाते है, उनके अनुसार ही वैतनिक या अवैतनिक सेवकोको चलना पडता है। जहाँ केवल कर्त्तव्यकी ही कल्पना है, वहाँ अधिकारका प्रश्न ही नही उठता। इसलिए इन सेवा-सघोमे कार्य करनेवाला जो भी व्यक्ति अपने लिए किसी विशेष सुविधा या अधिकारका विचार करेगा, उसे किसी-न-किसी दिन निराश ही होना पडेगा। कारण यह है कि इन सेवा-सघोमे धीरे-धीरे उनकी आर्थिक स्थिति सुधरनेकी कोई आशा नही, वल्कि वह समय आ गया है या आनेवाला है, जब आर्थिक लाभका त्याग हमें दिन-दिन अधिकसे-अधिक करना पडेगा। 'जब लिये गये कर्जकी अदायगी दान माना जाने लगेगी तभी कर्त्तव्य-पालनको पुण्य-कार्य कहा जायेगा।' कर्त्तव्य-पालनका पुरस्कार कर्त्तव्यके पालनमे ही है। इन सेवाओमें जो सन्तोष है, उसमे तो कोई सन्देह ही नहीं। पर वह सन्तोष कर्त्तव्य-पालनका है। यह सच है कि सबने इन कामोको विशुद्ध सेवा-भावसे प्रेरित होकर नही अपनाया है। इसीलिए इन तीनो सेवा-सघोमें जो सबसे पुराना है उसमें यदा-कदा कुछ गडवड देखनेमे आती है। इस गडबडको दूर करने का एकमात्र मार्ग यह है कि हमे बार-बार अपने मनमे इस बातका स्मरण करना चाहिए कि हम लोग इन सेवा-सघोमें अधिकार प्राप्त करनेकी नीयतसे नही, किन्तु दरिद्रनारायणके प्रति अपना कर्त्तव्य पालनेके लिए ही प्रविष्ट हुए हैं। हमारे ऊपर किसीका आधिपत्य है तो एक दरिद्रनारायणका, और फिलहाल अगर हम किसीको अपनेसे बडा मान रहे हैं, तो हम स्वेच्छासे ऐसा करते हैं, क्योकि हम यह भली-भाँति जानते हैं कि विना अनुशासनके कोई सस्था चल ही नही सकती। अनुशासनके लिए किसी एक मुख्य व्यवस्थापकका होना जरूरी है। वह प्रधान व्यवस्थापक केवल समकक्षोमे प्रथम है। और एक विशुद्ध सेवक होनेके कारण, सवका प्रमुख वनने के लिए उसे अपने सब साथियोमे अधिकसे-अधिक नम्र होना चाहिए। उसका यह प्रमुख पद दूसरोकी सहमतिपर निर्भर है। लेकिन जवतक वह इसपर रहे, तबतक उसे यह आशा रखनेका अधिकार है कि उसके दूसरे तमाम साथी उसके प्रति पूर्ण हार्दिक निष्ठा रखे और विना किसी शिकायतके उसकी आज्ञाका पालन करे।

[अंग्रेजी]
हरिजन, २२-६-१९३५

## २७१. जीव-मात्र एक है

गत मास मै कुछ दिनोके लिए वोरसद गया था। वहाँ मैने अपने कई भाषणोमे यह कहा था कि यद्यपि मै यह मानता हूँ कि प्लेगके कीटाणुओसे ग्रस्त चूहे और पिस्सू भी मेरे लिए सगे है, और जीनेका जितना अधिकार मुझे है उतना ही अधिकार उन्हे भी है, तो भी डॉ० भास्कर पटेलके चूहे और पिस्सू मारनेके प्रयत्नका मै विना किसी सकोचके समर्थन करता हूँ।

एक सवाददाताने, जिसे मेरी यह चूहो और पिस्सुओसे सगेपनकी बात सुनकर आश्चर्य हुआ, पर जिसने यह परवाह नही की कि मैने किस सन्दर्भमे यह बात कही थी, झटसे मेरी वह बात तार द्वारा अपने अखवारको सूचित कर दी। सरदार पटेल की तीक्ष्ण दृष्टि उस अनुच्छेदपर जा पडी, और उससे जो हानि होनेकी सम्भावना थी उसे सुधार देनेके लिए उन्होने मुझसे कहा। मगर उन्होने जो काम मुझे सौप रखा था उससे मुझे फुर्सत नही थी, इसलिए मैने यह कहकर लिखने की बात टाल दी कि जिन लोगोका इस वातके साथ सम्वन्ध है वे कभी मेरे कहने का गलत अर्थ नही लगायेंगे।

लेकिन सरदारका कहना ठीक निकला। यह अर्धसत्यवाली खबर तारसे लन्दन भेज दी गई। वहाँ जो लोग यूरोपमें मेरी प्रतिष्ठाकी रक्षाके विषयमे चिन्तित रहते है, उन्हें वह अनुच्छेद पढ़कर क्षोभ हुआ, यद्यपि इतना तो वे समझते थे कि इस सगेपनके दावेमें मैने वहुत-कुछ मर्यादाएँ तो रखी ही होगी। उन्होने मेरे पास उस अनुच्छेदकी कतरन लेकर भेज दी। अव कमसे-कम उन प्रेमी मित्रोकी खातिर ही मै वाध्य हूँ कि अपनी स्थितिको साफ कर दूं, यद्यपि जो अर्धसत्य एक बार चल निकला, उसे एकदम कैसे रोका जा सकता है?

मैं जिन लोगोके आगे वहाँ भाषण दे रहा था, वे उन जंगली जानवरोको भी नही मारते, जो नित्य ही उनकी खेतीका नाश करते रहते है। जबतक सरदारने चूहो और पिस्सुओका उन्मूलन करने के अभियानमे अपने प्रचड प्रभावका पूरा उपयोग किया था, उस समयतक वोरसद ताल्लुकेके लोगोने एक भी चूहा या पिस्सू नही मारा था। लेकिन सरदारका उन लोगोपर वहुत वडा उपकार था, इसलिए उनकी वातका विरोध वे नही कर सकते थे, और उन्होने डॉ० भास्कर पटेलको चूहो और पिस्सुओका सपूर्ण सहार निर्वाध रीतिसे करने दिया। वोरसदमे जो काम हो रहा था उसकी मुझे रोज-व-रोज खवर मिलती रहती थी।

जो काम वहाँ हुआ था उसका अनुमोदन करने के लिए ही सरदारने स्वभावत. मुझे आमन्त्रित किया था। कारण, यह काम अव भी जारी रहना था, हालाँकि लोगोको अव यह काम विना वाहरी मददके खुद करना था। इसलिए इस कामके

प्रति अपने अनुमोदनपर जोर देनेके लिए मैंने अहिंसा अर्थात् जीव-मात्रकी अवध्यता तथा एकता-विषयक अपनी अटल श्रद्धा अत्यन्त स्पष्ट शब्दोमे सुना दी।

किन्तु श्रद्धा और कर्मके बीच यह विरोध क्यो? विरोध तो बेशक है ही। जीवन एक उच्चाकाक्षा है। उसका ध्येय पूर्णता अर्थात् आत्म-साक्षात्कारके लिए प्रयत्न करना है। अपनी निर्बलताओ या अपूर्णताओके कारण हमें आदर्श नीचा नही करना चाहिए। मुझमे निर्बलता और अपूर्णता दोनो ही है। मुझे उनका दुःखद भान है। अपनी उन निर्बलताओ और अपूर्णताओको दूर करने मे सहायता देनेके लिए सत्य-रूप ईश्वरके समक्ष मेरे हृदयसे मूक पुकार प्रतिक्षण उठती रहती है। मै यह मानता हूँ कि साँप, बिच्छू, बाघ और प्लेगके चूहो तथा पिस्सुओसे मुझे डर लगता है। मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि खतरनाक दिखाई देनेवाले डाकुओ और हत्यारोसे भी मुझे डर लगता है। मै यह जानता हूँ कि मुझे इनमे से किसीसे भी नही डरना चाहिए। पर यह कोई बुद्धिकी बहादुरीका काम नही है। यह तो हृदयका व्यापार है। सिवा ईश्वरके और सबका भय त्याग देनेके लिए वज्र-सा कठोर हृदय चाहिए। अपनी निर्बलताओके कारण बोरसदके लोगोको मै यह सलाह तो नही दे सकता था कि आप लोग घातक चूहो और पिस्सुओको न मारे। पर मै यह जानता था कि यह छूट मानवीय निर्बलताको ध्यानमे रखकर दी जानेवाली एक छूट है।

तो भी अहिंसा और हिंसा-सम्बन्धी विश्वासोमे उतना ही अन्तर है, जितना कि उत्तर और दक्षिण दिशामे है, या जितना अन्तर जीवन और मृत्युके बीचमें है। मनुष्य अहिंसा, अर्थात् प्रेम-धर्मके समुद्रमे जब अपने भाग्यकी नौकाको छोड़ देता है, तो वह विनाशका दायरा नित्य कम करता जाता है, और उतने अशमें जीवन और प्रेमका क्षेत्र बढाता जाता है। जो मनुष्य हिंसा अर्थात् घृणामें विश्वास रखता है वह क्षण-क्षण विनाशका क्षेत्र विस्तृत करता जाता है, और उतने अशमे मृत्यु तथा घृणाको बढाता है। यद्यपि बोरसदवासियोके आगे मैने अपने सगो-जैसे चूहो और पिस्सुओके विनाशका समर्थन किया, तो भी मैंने उन्हे जीव-मात्रके प्रति दिव्य प्रेम-धर्मका महान् सिद्धान्त शुद्ध रूपमे बतलाया। यद्यपि इस जन्ममे उस सिद्धान्तका पालन पूर्णतया मै नही कर सकता, तो भी इसपर मेरी अटल श्रद्धा तो रहेगी ही। मेरी प्रत्येक असफलता मुझे उस सिद्धान्तके पूर्ण आचरणके अधिकसे-अधिक समीप ले जाती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-६-१९३५

## २७२. पशुओंके खाद्यके रूपमें मल का उपयोग

अपने बाल्यकालमे पोरबन्दरमे मैने गायोको अक्सर मनुष्योका मल खाते हुए देखा था। मेरे मनमें इससे बड़ी वितृष्णा हुई थी और आजतक मैं उसे भूल नही पाया हूँ। लेकिन एक पत्र-लेखकने मुझे यह बताया है कि सतारा जिलेमे यह आम बात है। वहाँके ग्वाले मनुष्योका मल अधिक मात्रामे प्राप्त करने के लिए पैसे खर्च करते है, जिससे यह उनके मवेशियोको बराबर मिलता रहे। उसने मुझे बताया कि गायोको मल खिलानेसे दूधकी मात्रा बढ जाती है। पत्र-लेखककी बातकी सचाईमें सन्देह करने के लिए मेरे पास कोई आधार नही था, सो मैंने अपने एक चिकित्सक मित्रसे कहा कि इस विषयमे किसी विशेषज्ञकी सम्मति प्राप्त करे। हतप्रभ कर देनेवाली वह सम्मति निम्न प्रकार है.

> साधारणतया मलके अन्दर पोषण प्रदान करनेवाला सैलूलोज तथा नाइट्रोजन होता है। मलमें निहित खास तत्त्व विटामिन 'बी' है; इसका पशुके शरीरपर सम्भवतः अनुकूल असर पड़ता है। मलमें विटामिन 'बी' रहता है, यह बात कूपरने (१९१४) में बताई थी। उसने मलसे बनाई शराबसे बीमार कबूतरोंकी चिकित्सा की थी। यह एक आम राय है कि बछड़ेको ठीक दूध मिलता रहे, इसके लिए गायको काफी मात्रामें विटामिन 'बी' दिया जाना चाहिए (देखिए 'मोनोग्राफ ऑन विटामिन्स', प्रकाशक — पिकेट टॉम्सन रिसर्च लेबोरेटरी, लन्दन)।
>
> यह बहुत सम्भव है कि मल खानेवाली जिन गायोंको यह विटामिन अधिक मात्रामें मिल जाता है, उन्हें अधिक दूध उतरने लगता है।
>
> भूख कम लगना या खुराकका ठीकसे हजम न होना इस बातका प्रमाण है कि खुराकमें विटामिन 'बी' की कमी है और यह बहुत मुमकिन है कि जिन गायोंको हरे चारेकी खुराकके साथ खाद्य पदार्थके रूपमें मल भी मिलता है, विटामिन 'बी' प्राप्त होने से उनकी भूख तीव्र हो जाती है, जिससे उनमें चर्बीकी अधिक मात्रा बनने लगती है तथा घास-पातमें रहनेवाली शर्करा अधिक ठीक ढंगसे पचकर उन्हें हृष्ट-पुष्ट बना देती है।
>
> जहाँतक मनुष्यके मलमें साधारणतः निहित सूक्ष्म जीवाणुओं आदिका सम्बन्ध है, कहा जा सकता है कि उनमें से अधिकांश मृत या मृतप्राय होते हैं और जो थोड़े-से जीवित रहते भी हैं, वे गायके पेटके गैस-युक्त रसमें मिलने पर मर जाते हैं।

इस प्रकार मनुष्यके मलका पशुके लिए एक लाभदायक खाद्य होनेका रासायनिक प्रमाण मिल जाता है। लेकिन उसे लेकर उत्पन्न होनेवाली मनोवैज्ञानिक आपत्ति तो बनी ही रहेगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

## २७३. हरिजनोंके लिए कुएँ

यद्यपि भूकम्प-पीड़ित क्वेटाकी काली छाया अब भी मेरे हृदयपर पड़ रही है, तो भी देशके उदार दानियोसे यह कहने मे मुझे न तो दु.ख है, न सकोच कि उन्हे इन पृष्ठोमे प्रकाशित हरिजन कूप-कोषके लिए चन्दा देनेकी अपीलका तुरन्त उचित उत्तर देना चाहिए। क्वेटाका सहायक तो आज सारा ससार है, पर हरिजनोके मददगार थोड़े ही है। क्वेटाका एक भी पीड़ित मनुष्य न तो प्यासा मर रहा है, और न उसे मजबूरन ऐसा गन्दा पानी पीना पड रहा है जिसे लोग अपने पशुओको भी पिलाना पसन्द न करेगे।

ऐसी भारी विपत्तियोके आनेपर हमे अपना विवेक नही गँवा बैठना चाहिए। शायद कुछ मामलोको छोड़कर लोगोकी रँगरेलियाँ एक क्षणके लिए बन्द नही हुई है। क्वेटाकी मुसीबतका यह सारा बोझ क्या गरीब हरिजनके ही घायल कन्धो पर पडना चाहिए? हरिजनोको पीनेका स्वच्छ पानी देने के लिए दाताओने जिस आर्थिक सहायताका सकल्प कर लिया था, उस सहायताका रुख अगर उन्होने दूसरी तरफ मोड़ दिया, तो उन्हे अन्तर्यामी ईश्वरकी अदालतमे गबनके अपराधियोके रूपमें हाजिर होना पडेगा। इसलिए उचित तो यह होगा कि वे अपने निजी बजटको, न कि परमार्थके बजटको, फिरसे देखे और उसीमे उचित काट-छाँट करे, और हरिजन-कूप-कोषके निमित्त जो रकम वे प्रायश्चित्तस्वरूप सकल्प कर चुके हो, उसमे से तो एक पाई भी वे इधरसे उधर न करे।

प्रार्थनाके लिए जो अपील की गई है, वह बिना किसी अर्थ या अनुभवके नही की गई। अन्तस्तलसे निकली हुई प्रार्थना मनुष्यको शक्ति और साहस देती है, उसे नम्र बनाती है और उसे उसका अगला कर्त्तव्य भी बताती है।

पाँच बड़ी-बड़ी नदियाँ जिस प्रान्तमे बह रही है, उस पजाबके हरिजनोकी जल-सम्बन्धी आवश्यकताओका विवरण पाठक पढ़कर देखे। क्या यह शर्मकी बात नही है कि पजाबके धनी लोग हरिजनोके लिए स्वच्छ पानीका प्रबन्ध नही कर सकते? कूप-कोषके लिए जो यह एक लाख रुपयेकी तुच्छ अपील निकाली गई है उसमे जल्दसे-जल्द एक लाखसे ऊपर ही रुपया आ जाना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-६-१९३५

## २७४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

वर्धा
२३ जून, १९३५

चि० नरहरि,

मैं पहले भाई वेलचन्दको लिखूंगा, फिर तुम्हे लिखूंगा। साथका पत्र भगवानको दे देना। गायोसे सम्बन्धित काम कैसा चल रहा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन०. ९०८१) से।

## २७५. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२३ जून, १९३५

चि० मेरी,

अगर तुम्हे वहाँ रहना माफिक आ रहा हो, तो जबतक वे तुम्हें वहाँ रहने दे, तुम वही रहो। मै चाहता हूँ कि तुम वहाँसे मजबूत और तन्दुरुस्त होकर वापस आओ। उनसे पूछो कि फल तुम्हें क्यो माफिक नही आते।

मै अभी पाँच महीने और वर्धासे बाहर नही जाऊँगा, ऐसी सम्भावना है।

हाँ, छोटेलाल वैसे ही है जैसाकि तुमने बताया है।

स्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४७) से। सी० डब्ल्यू० ३३७७ से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

## २७६. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२३ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

एक घरसे और दूसरा दुकानसे लिखा, तुम्हारे दोनो पत्र मिले।

तुम्हे अखबारोमे कुछ नही भेजना है। जब मन मिलेगे तब जरूरत हुई तो भेजेगे।

रतुभाईने जो किया, वह खेदजनक है। उसे लिख रहा हूँ। तुम अब मुझसे पूछे बिना कोई कदम न उठाना। धीरज रखना। निश्चिन्त रहना। कटौतीके बारेमें भी हम दोनो मिलकर सोचेगे। वल्लभदासको बुलाऊँगा। अपनी समूची योजना भेजना। जरूरत हुई तो रतुभाईको बुलाऊँगा।

लक्ष्मीदासके बारेमें भी जो करो, मुझसे सलाह करके करना। इस समय जब सब-कुछ इस तरह हो रहा है, तब खूब सोच-विचारकर करना होगा।

यह काम करते हुए अपनी तबीयत जोखिममे मत डालना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९१) से।

## २७७. पत्र : पद्माको

२३ जून, १९३५

चि० पद्मा,

तेरे पत्रका उत्तर कार्डसे देकर दरिद्रनारायणके लिए पैसा बचा रहा हूँ। तुम सबका काम बहुत अच्छा चल रहा है। खूब पढ लेना, लेकिन शरीरको खूब कसना और मेहनत करना मत छोड़ना। यहाँ तो शरीरश्रम ही चल रहा है, जैसाकि तू 'हरिजनसेवक' मे पढती होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१५१)-से। सी० डब्ल्यू० ३५०७ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

## २७८. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

२३ जून, १९३५

भाई मूलचन्द,

तुम्हारा खत मिला है।

तुम्हारा किस्सा करुण है, लेकिन उसीको धर्मवर्धक बना सकते है। करुणा धर्मकी पोषक है। धर्मकी परीक्षा भी कठिन समयमें हो सकती है। पत्नी जब पतिकी अनुगामिनी नही रहती है तब सहधर्मिणी तो कहासे हो सकती है? विधर्मिणी बनने का उसको अधिकार है। जैसा पतिको। लेकिन जब पत्नी विधर्मिणी बनती है तब पतिके सहयोगकी अथवा सहवासकी आशा नही रख सकती है। पतिके तर्फसे पोषण मीलनेका उसे पूर्ण अधिकार है। जो पति अपनी पत्नीके प्रति निर्विकार रह सकता है, और अन्य स्त्रियोके प्रति निर्विकार रहा है और भविष्यमे रह सकता है, उसको पत्नीका सहवास छोडने का उक्त अवसरमें अधिकार है। इसलिये तुमसे अलग रहकर अपनी इच्छानुसार चलने का उसको पूर्ण अधिकार होना चाहिये। ऐसा करने मे रोषको कोई स्थान नही है। पत्नीको एक भी कटु वचन न कहा जाय। प्रेमभावसे उसे धर्म बताकर असहयोग किया जाय।

रह जाती है बात बच्चोकी। जबतक बच्चे १६ वर्षकी उम्रके नही हुए है तबतक अधिकार तुम्हारा ही रहता है। उसके बाद किसके साथ रहना और किसकी बात मानना वह बच्चोपर निर्भर है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३७) से।

## २७९. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

२३ जून, १९३५

चि० अवधेश,

माता, पिता, पत्नी आदिके प्रति जो धर्म है उसका त्याग करके समाज-सेवा कभी हो नही सकती है। वह धर्म सेवा-धर्मका विरोधी नही है। माता, पिता आदि [के] प्रति क्या धर्म है, उसकी क्या मर्यादा है यह जानना आवश्यक है। पत्नीका पालन करना और जहातक वह सहधर्मिणी रह सकती है, वहातक सयममे रहकर उसको साथ देना पतिका धर्म है। मात-पिता अपग है और धनहीन है, उनके और

कोई पुत्र नही है, इस हालतमे उनका पोषण और उनकी सेवा करने का धर्म प्राप्त होता है।

बकरीका दूध लेता हू क्योकि लाचार बन गया था। व्रतके कारण गाय-भैंसका तो ले ही सकता न था। व्रतका सकुचित अर्थ करते बकरीका दूध लेनेकी छूटी ले ली।

यदि अगारसे पकाकर कुछ न लेना है तो फलाहारसे ही निपटारा हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१३) से।

## २८०. पत्र : श्रीनाथसिंहको

२३ जन, १९३५

भाई श्रीनाथसिंह,

आपका पत्र मिला। श्री सूर्यनारायणजी को समिति का निर्णय सम्मेलन दफ्तरसे ही भेजा जाय। उनका पत्र दफ्तरमे भेजने मे भी मेरा यही आशय था।

सम्मेलनके आगामी अधिवेशनके बारेमे मै नागपुरवालो से वार्तालाप कर रहा हू। उसके बारेमे भी तुम्हारा पत्र आ गया है।

मो० क० गांधी

श्री श्रीनाथसिह<br>
मत्रीजी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन<br>
पो० आ० बाक्स ११<br>
इलाहाबाद, प्रयाग

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६६२) से। सी० डब्ल्यू० २९७४ से भी; सौजन्य . परशुराम मेहरोत्रा

## २८१. तार : हीरालाल शर्माको[1]

वर्धा
२५ जून, १९३५

डॉ० शर्मा
खुर्जा

तार मिला। आ जाओ, यद्यपि दूसरे जहाजकी तारीख मालूम नही है। मालूम कर रहा हूँ।

बापू

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृष्ठ १७० के सामने प्रकाशित अंग्रेजीकी प्रतिकृतिसे

## २८२. पत्र : एफ० मेरी बारको

२५ जून, १९३५

चि० मेरी,

जानकर खुशी हुई कि तुम दिन-ब-दिन अच्छी होती जा रही हो। इसलिए, अगर जाँचकी दृष्टिसे वे कभी-कभी बुखार लाना भी जरूरी समझे तो मैं समझता हूँ, हमें इसपर शिकायत नही होनी चाहिए।

छोटेलाल अभी नही आये। हकीमकी दवाईसे कोई फायदा नही हुआ। मुझे उसकी उम्मीद भी नही थी।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४८)से। सी० डब्ल्यू० ३३७८ से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

१. यह हीरालाल शर्माके २५ जून, १९३५ के ही तारके उत्तरमें भेजा गया था। वह तार इस प्रकार था : "पासपोर्ट मंजूर हो गया है। तारसे सूचित करें कि क्या मैं कलकत्ते [से प्रस्थान करने] के लिए टिकट ले लूँ।"

२. मूलमें हस्ताक्षर हिन्दीमें है।

## २८३. पत्र : एल० के० किर्लोस्करको

२५ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

इस मशीनमे आपकी कोई दिलचस्पी नही रह गई, इसका मुझे दुःख है। मेरे सुझावमे[1] किसी नये खर्चकी कोई बात नही है; इतना ही नहीं, उसमें एक ऐसी तजवीज है जिसपर आपका कोई खर्च नही बैठेगा। अगर इस कामपर कुछ और खर्च बैठे तो वह कर दिया जाये और सम्भव है, उस खर्चका परिणाम यह हो कि पुरस्कार जीतने के लिए आपने जो पुष्कल प्रयत्न किया उसपर हुए वास्तविक खर्चका भी आंशिक या पूरा भुगतान हो जाये।

जब हम वर्धामे मिले थे तब मैंने आपसे कहा था और अब फिर इस बातको दुहरा रहा हूँ कि मैंने जो न्यूनतम बातें सुझाई थी, यदि मशीन उनकी दृष्टिसे उपयुक्त साबित होती है तो मैं एक ऐसे अनुबन्धके अधीन आपको मशीनोका आर्डर देना चाहूँगा, जिससे आपका उठाया खर्च धीरे-धीरे पूरा हो जाये। फिलहाल इस प्रस्तावका सघसे[2] कोई सरोकार नही है, क्योकि यह विचार पूरी तरह मेरा है। अगर हम किसी हदतक सन्तोषजनक समझौतेपर पहुँच गये तो मैं इस प्रस्तावमें सघकी रुचि भी जगानेकी कोशिश करूँगा।

मैंने इस बातको भी ध्यानमे रख लिया है कि आप सर डैनियल हैमिल्टनको अपनी मशीनका खाका नही दे सकते।

आपका,

श्रीयुत एल० के० किर्लोस्कर
किर्लोस्करवाडी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : एल० के० किर्लोस्करको", १६-६-१९३५।
२. अखिल भारतीय चरखा संघ; देखिए "चरखे में सुधार", २७-६-१९३५ भी।

## २८४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

दुबारा नहीं पढ़ा

२५ जून, १९३५

चि० अम्बुजम्माल,

दाहिने हाथको आराम दे रहा हूँ लेकिन साथ ही पत्र-व्यवहारको समयसे निबटानेकी भी चिन्ता है, इसलिए यह पत्र बोलकर ही लिखवाना पड़ रहा है।

मुझे ऐसा भय था कि माताजी अपनेको रोक नही पायेगी। वे और तुम दोनो मिलकर इस बातके लिए अधिकसे-अधिक प्रयत्न करो कि तुम्हारे पिताजी के उपचारमे कोई व्यवधान न पडे। मै आशा करता हूँ कि कीचीका घाव अब भी भर रहा होगा। मै जानता हूँ कि खूब तन्दुरुस्त लोगोके लिए भी ये छोटे-मोटे आपरेशन कितने तकलीफदेह होते है। घाव पुरनेमे काफी समय लगता है।

क्वेटाके भूकम्प-पीडितोके लिए भेजा तुम्हारा दान मै अपने पास रख रहा हूँ। ठीक समय आनेपर उसका उपयोग करूँगा। जब तुम्हें झँझटोंसे छुटकारा मिल जायेगा तब चाहूँगा कि तुम हरिजन कूप-कोषके लिए चन्दा उगाहो। और तुम शुरुआत अपने माता-पितासे कर सकती हो। यह पुण्य-कार्य है और इसलिए हरएक को व्यक्तिगत रूपसे यह पुण्य अर्जित करना है। मै मानता हूँ, तुम इसके बारेमे 'हरिजन' मे सब-कुछ पढती रहती होगी।

हाँ, यहाँ बरसात आ गई है और इसलिए तापमान काफी कम हो गया है।

स्नेह।

बापू

श्री अम्बुजम
फेयरीफाल्स व्यू
कोडाइकनाल आब्जर्वेटरी

मूल अंग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## २८५. पत्र : नारणदास गांधीको

२५ जून, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलाल फिर पटरीसे उतर गया जान पडता है। वह नौकरी छोड बैठा है। तुमने उसे काम देनेका वादा तो किया है, लेकिन क्या यह ठीक किया है? वह अगर सरासर झूठ बोलता हो तो तुम्हारे किस काम आयेगा? इधर तो उसके पत्र मुझे तनिक भी सन्तोषजनक नही लगते।

मैथ्यू कैसा चल रहा है? उसे शारीरिक श्रमका कोई काम तो दिया ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५५ से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

## २८६. पत्र : इन्दौरके दीवानको

[२६ जून, १९३५ के पूर्व][1]

प्रिय मित्र,

शायद आपको मालूम हो कि ईस्टरके दौरान मैंने हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी कार्यवाहियोकी[2] अध्यक्षता की थी। सम्मेलनमे एकलिपि-परिषद्की स्थापना की गई। मुझे मालूम हुआ है कि महाविभवने श्री लतीफीकी उस योजनापर सम्मतियोके सग्रहका आदेश दिया है, जिसमे उन्होने रोमन लिपिमे आवश्यक सुधार करके उसे सभी भाषाओके लिए अपनानेकी तजवीज पेश की है। इस सम्बन्धमे राज्यके पास जो कागजात हो वे आप मुझे कुछ समयके लिए दे सके तो आभारी होऊँगा।

फिर, राज्यके कुछ हिन्दी प्रकाशन और देवनागरी लिपिके भी कुछ प्रकाशन है। वे उपलब्ध करा दे तो कृपा होगी।

और अन्तमे, अगर राज्यमे हिन्दीके प्रयोगके सम्बन्धमे जारी किये गये सभी परिपत्रोकी प्रतिलिपियाँ भी मिल सके तो मैं उन्हे प्राप्त करना चाहूँगा।

हृदयसे आपका,

श्री दीवान साहब

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक।

२. २० से २३ अप्रैलतक इन्दौरमें आयोजित, देखिए खण्ड ६०, पृ ४८६-९६

## २८७. पत्र : इन्दौरके दीवानको

वर्धा

२६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

मेरे पत्रका आपने इतनी तत्परतासे उत्तर दिया, इसके लिए आभारी हूँ। जो पुस्तकें और कागजात मैंने माँगे थे, सब मिल गये हैं। इस भेंटके लिए क्या आप लिपि-परिषद्का धन्यवाद स्वीकार करेंगे ?

अब मुझे संयोजक काकासाहब कालेलकरका एक स्मरण-पत्र मिला है, जिसमें उन पुस्तकोंकी एक सूची है जिनकी उन्हें अपने शोध-कार्यके लिए जरूरत है। ये पुस्तकें भेजी जा सकें तो आभारी होऊँगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## २८८. पत्र : ओ० वी० अलगेसनको[1]

२६ जून, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। जैसा आप कहते हैं, काश मेरी कलम या शब्दोंका वैसा प्रभाव होता।

दैनिक समाचार-पत्रोंमें निकलनेवाली पहेली-प्रतियोगिताओंके बारेमें आपने जो-कुछ कहा है, वह एक हदतक ठीक ही है। लेकिन यह जुएके मुकाबले, जिसपर मैं अपने विचार प्रकट करता रहा हूँ,[2] अधिक सूक्ष्म है। फैशनके रूपमें रूढ़ हो जानेपर भी जुआ एक बुरी चीज ही माना जाता है। पहेली-प्रतियोगिताको बुरा नहीं माना जाता। इसलिए इस बुराईसे निबटनेका मुझमें साहस नहीं है।

हृदयसे आपका,

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ६-७-१९३५

१. पत्र-लेखकने तमिलनाडुकी अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा प्रारम्भ की गई पहेली-प्रतियोगिताओंकी ओर गांधीजीका ध्यान खींचा था और प्रार्थना की थी कि वे इस बुराईकी हरिजनमें लेख लिखकर भर्त्सना करें, क्योंकि वह भी जूएका ही एक रूप है।

२. देखिए "सत्यानाशी जूआ", १५-६-१९३५ तथा "टिप्पणियाँ", २९-६-१९३५।

## २८९. पत्र : एफ० मेरी बारको

२६ जून, १९३५

चि० मेरी,

छोटेलाल अभी-अभी पहुँचे हैं। मैंने कुकरके सम्बन्धमें लिखा गया अनुच्छेद मीराको पढ़कर सुनाया। उसे इस बारेमें कुछ भी याद नहीं है। वह उसे खोज तो रही है, लेकिन अभी तक वह मिल नहीं पाया है। तुम उसे लेकर चिन्तित मत होना। अगर तुम उसके सम्बन्धमें कुछ और विवरण भेज सको और तुम्हारा पत्र मिलने तक वह मुझे न मिले, तो खोजनेमें आसानी होगी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०४९) से। सी० डब्ल्यू० ३३७९ से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

## २९०. पत्र : सी० जी० जगन्नाथदासको

२६ जून, १९३५

प्रिय जगन्नाथदास,

आप नग्नताके सम्बन्धमें लिखे मेरे पत्रको[1] प्रकाशित करें, इसपर मुझे कोई एतराज नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०९३) से।

१. देखिए "पत्र : सी० जी० जगन्नाथदासको", १८-६-१९३५।

## २९१. पत्र : लीलावती आसरको

२६ जून, १९३५

चि० लीलावती,

यह रहा तेरा पहला पाठ।[1] अब तू गुजराती तो मगनभाईको सीधे भेज सकती है। मुझे भेजना चाहे तो वैसा करना।

इसे लौटाने मे देर हुई है। तीन दिन मेरे पास पडा रहा। पहले-पहलका मामला था, सो मगनभाईको भी देर लगी।

अंग्रेजीका पाठ लगता है, कही गुम हो गया है। खोज करा रहा हूँ। वह नही मिला तो नया पाठ बनाकर भेजूँगा। यह काम अब मेरे हाथमे रहेगा।

जो समझमे न आये, यदि वह पूछती रहेगी तो खूब उन्नति करेगी।

यदि तू २० छात्रोकी कक्षामे हो तो तेरे हिस्से शिक्षकका १/२० ध्यान आये। पत्र द्वारा प्रत्येक विद्यार्थीको अलग-अलग व्यक्तिगत ध्यान मिलता है। उद्यमी विद्यार्थीको पत्र-शिक्षणसे बहुत लाभ होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३३) से। सी० डब्ल्यू० ६६०८से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

## २९२. पत्र : लीलावती आसरको

२६ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरे अंग्रेजी अभ्यास मिल गये हैं। उन्हे सुधारकर वापस भेज दिया है। मगनभाईने जो कहा है, वह इसपर भी लागू होता है। अपने अक्षर सुधार। कलमसे लिख। धीमे लिख। तेरी अंग्रेजी, जैसी मैं सोचता था, उससे अच्छी है। जल्दी सुधर जायेगी। तेरे पास जो पुस्तके है उनकी सूची आनेके बाद लिखूँगा कि अभ्यासके लिए कौन-सी पुस्तक काममे लानी चाहिए। अभी तो पाठमालाका पहला भाग ले और

१. लीलावती आसर अंग्रेजीके अपने अभ्यास सप्ताहमें एक बार गांधीजी को भेजा करती थीं जिन्हें वे अपने संशोधनों और टिप्पणियोंके साथ लौटा दिया करते थे। कुछ सामान्य संशोधन यहाँ छोड दिये गये है।

उसे शुरू कर दे। पहले पाठ सरल लगेंगे। जहाँसे कठिन लगें, वहाँसे तर्जुमा करना शुरू कर देना। जो भाव समझमें न आये, उसे पूछनेमें बिलकुल संकोच न करना। प्रभावतीकी पाठमालाका पहला भाग यहाँ है, इसलिए पृष्ठ संख्या टाँक देना काफी होगा। सुधारोंको ठीक तरहसे समझ लेना। जो समझमें न आये तो फिर पूछना।

मैथ्यूका क्या हाल है? वह क्या काम करता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३२) से। सी० डब्ल्यू० ६६०७ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

## २९३. पत्र: बनारसीलाल तथा रुक्मिणी बजाजको

२६ जून, १९३५

चि० बनारसीलाल तथा रुक्मिणी,

तुम दोनोंके पत्र मिले। रोग-मात्रको शुरू होते ही निर्मूल कर देना चाहिए। आशा है, देवेन्द्रके टांसिल ठीक हो गये होंगे। बम्बई जाते समय वर्षा होते हुए जाओगे, यह खुशीकी बात है।

बापूके आशीर्वाद

श्री बनारसीलाल बजाज
ठठेरी बाजार
बनारस सिटी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१५९) से।

## २९४. पत्र: पुरुषोत्तम एल० बावीशीको

२६ जून, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

तुम्हारा पत्र मिला।

चरखेमें मैं तो चमत्कार देखता ही हूँ।

तुम्हारा खेतीका प्रयोग सफल हो। उसके सम्बन्धमें मुझे जो लिखने लायक हो, लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९) से। सी० डब्ल्यू० ४७४८ से भी; सौजन्य: पुरुषोत्तम एल० बावीशी

## २९५. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२६ जून, १९३५

चि० नरहरि,

भाई वेलचन्दका पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ। यदि यह तुम्हे ठीक लगे तो वह जहाँ हो वहाँ भेज देना। लक्ष्मीदाससे मैंने बात की थी। भाई वेलचन्द काम पर वापस आ जाये, उसका यह आग्रह मुझे उचित लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८२) से।

## २९६. पत्र : वनमाला एन० परीखको

२६ जून, १९३५

चि० वनमाला,

अब तेरा शरीर ठीक हो गया है तो उसे ऐसा ही बनाये रखने का प्रयत्न करना। यदि नमक और दाल छोड़ने से तुझे लाभ हुआ हो तो उन्हें न लेने पर दृढ़ बनी रहना। जिससे शरीर स्वस्थ रहता हो, ऐसे ही भोजनसे जितना स्वाद चाहिए प्राप्त कर लेना।

हस्तलिखित पत्रिकासे तुम सबको क्या लाभ होगा, मैं समझ ही नही सका, तो फिर मेरे आशीर्वादकी क्या कीमत है? फिर भी हो सकता है, उससे तुम्हे कुछ निर्दोष आनन्द प्राप्त हो। अत, आशीर्वाद चाहिए ही, तो लो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७८४) से। सी० डब्ल्यू० ३००७ से भी; सौजन्य : वनमाला एम० देसाई

## २९७. पत्र : जेठालाल गो० सम्पतको

२६ जून, १९३५

भाई जेठालाल,

'सत्यानासी'[1] से सम्बन्धित जानकारी 'हरिजनबन्धु' मे भेजी है। मैंने तेलके बीजोकी जाँच कर ली है। तेलवाले बीजोकी खोज करूँगा और मिले तो तेल भी निकालूँगा। तुम्हारे दूसरे पत्रकी राह देखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री जेठालाल गोविन्दजी
अनन्तपुर
डाकखाना रेहली
जिला सागर

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८५२) से, सौजन्य: नारायण जेठालाल सम्पत

## २९८. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२७ जून, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको सारे पत्र यदि तुम्हारी मार्फत भेजता हूँ तो इसमे एक प्रयोजन है। प्रयोजन यह है कि तुम छान-बीनके काममे हिस्सा न बँटाओ तो भी इससे तुम्हे यह जानने का मौका मिलेगा कि उसके साथ तुम्हें कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए। हरिलालको लिखे मेरे पत्रो से तुम देखोगे कि यह प्रश्न मेरे लिए बहुत महत्त्वका हो गया है। लेकिन इन पत्रोका पढने के बावजूद हरिलालके सम्बन्धमे तुम्हारे मनपर जो छाप पडे तुम तो उसीके मुताबिक बरताव करना। अगर तुम्हें उसको खिलाना-पिलाना पडता हो तो तुम चाहो तो उससे कोई ऐसा काम लो जिसमे किसी तरहका खतरा न हो। लेकिन ऐसा न समझना कि तुम्हे उससे कोई-न-कोई काम लेना ही है या उसके साथ सम्बन्ध रखना ही है। रक्त-सबधकी भी मर्यादा होती है। यह सबंध हमे अनीतिकी ओर प्रवृत्त करे, यह नही होने देना चाहिए। यदि कोई पराया आदमी हरिलालकी

१. एक वनस्पति। यह "दारूडी" शीर्षकसे ३०-६-१९३५ के हरिजनबन्धुमें प्रकाशित हुआ था।

स्थितिमे पड जाये तो उसके प्रति हमारा जो धर्म होगा, हरिलालके प्रति भी उससे कुछ अधिक करनेका धर्म नही हो सकता। बल्कि परायेके प्रति शायद कुछ अधिक उदारता दिखाई जा सकती है, लेकिन हरिलालके प्रति कृपणता ही। मतलब यह कि जहाँ जितना अधिक रक्त-सम्बन्ध हो, वहाँ सख्ती भी उतनी ही अधिक बरती जानी चाहिए। ऐसा करके ही हम शुद्ध न्याय कर सकते है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८४५६ से भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

## २९९. पत्र : काकुभाईको

२७ जून, १९३५

भाई काकुभाई,

खादी-प्रतिष्ठानमे रहनेवाले रतुभाई आदि कार्यकर्त्ताओंका कहना है कि तुमने उन्हे आश्वासन दिया था कि खर्चमे की जानेवाली कटौतीके कारण किसी भी कार्यकर्त्ताकी छँटनी नही की जायेगी। क्या तुमने किसीको ऐसा आश्वासन दिया था? इन लोगोने ऐसा ही कहा है और छपवाया भी है। मैंने तुमसे यह प्रश्न इसलिए पूछा है कि नयी नीतिके कारण भण्डार [के काम] मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तो करने ही पडेगे। . . .[1]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ३००. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२७ जून, १९३५

भाई विट्ठलदास,

तुम्हारा पत्र मिला। अभी गणात्राको नोटिस मत देना। टाइपिंगकी जरूरत न हो तो उससे टाइपिंगके सिवाय जो काम लेना हो, सो लेना। टाइपिंगका काम भी हो तो अवश्य लेना। दूसरे परिवर्तनोके सम्बन्धमे भी अपनी ही ढीलके कारण ढील समझना। ऐसे परिवर्तन जो मुझे सूझेंगे, तो शंकरलालसे पत्र-व्यवहार करके भी किये जा सकेगे। जमनालालजी तो ७ तारीखको आ ही जायेगे। अतः सब-कुछ तुम्हारी सुविधापर ही निर्भर करता है। मेरा झुकाव खासी कटौतीके पक्षमे है। इसलिए इस सम्बन्धमे मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा।

१. साधन-सूत्रमें पत्र अधूरा है।

हेमप्रभादेवीका आरोप है कि तुमने उनके पाससे खादी प्रतिष्ठानका माल लेना मजूर किया था, और फिर इकार कर दिया। यह प्रश्न मैंने पहले भी पूछा था किन्तु इसका उत्तर देना, लगता है, तुम भूल ही गये।

शकरलालकी तबीयत खराब है, इसलिए मेरी इच्छा है कि जबतक बने वह ऊटीमे ही रहे। अतः उन्हे जल्दी वापस बुलाने का लोभ मत करना। जैसे-तैसे काम चलाना हमारा कर्त्तव्य है।

साथका पत्र काकूभाईको[1] भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७९२) से।

## ३०१. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२७ जून, १९३५

भाई वल्लभभाई,

महादेव वहाँ हो या न हो, इसलिए तुम्हे ही लिखवाया है। मुझे विवरण[2] मिल गया और मैंने पढ़ लिया। मै दूसरी डाकका इन्तजार कर रहा था किन्तु वह भी नही आई। बा भी पत्र लेकर नही आई इसलिए बादमे तार दिया।

मुझे विवरण जरा भी पसन्द नही आया। उसमे केवल तथ्य न देकर हकीकतो और दलीलोको मिला दिया गया है। पहला अनुच्छेद ही अटपटा लगा, इसलिए मैंने तार दिया। अभी यानी ४ बजे डाक मिली और मैं यह लिखवा रहा हूँ। मै देखता हूँ कि हमारी समिति नियुक्त करने की बात तुम्हे पसन्द आई है। इससे मुझे प्रसन्नता हुई, क्योंकि मैं मानता हूँ कि यह समिति हमे काफी मदद दे सकती है। डाक्टरोकी राय तो स्वतन्त्र मानी ही जायेगी। बात तुम्हारे गले उतर गई है, इसलिए अधिक लिखने की जरूरत नही रह जाती। जो बयान तैयार हो, उसे मेरे देख लेनेके बाद ही भेजा जाये तो अच्छा होगा।

महादेवके पास सारी तफसीले आ गई हो, तो बयान भले यहाँ तैयार करवा सकते है अथवा महादेवको एक दिन और रोकने की जरूरत मालूम हो तो रोक लेना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
**बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७४**

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. बोरसद प्लेग-निवारण कार्य-सम्बन्धी।

## ३०२. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२८ जून, १९३५

चि० मेरी,

ईश्वरको धन्यवाद, कुकर आखिर मिल ही गया।[1] क्या तुम कोई और चीज भी यहाँ छोड गई थी? छोटेलाल बुधवारको वापस आये है। अगर तुम्हारा स्वास्थ्य वहाँ-सुधर रहा हो, खाने-पीनेका ठीक प्रबन्ध हो और किसी व्यक्तिको कोई कष्ट दिये बिना अगर तुम वहाँ ठहरी रह सकती हो तो तुम कुछ दिन और वही रहो, ताकि पूरी तरह स्वस्थ हो जाओ।

मेरी चेजलीका विचार है कि वह ७ जुलाई या उसके आसपास यहाँ आयेगी और कुमारी इघमको[2] भी साथ लायेगी।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

मै जो तुम्हें प्राय लिखता रहता हूँ वह इसलिए कि तुम्हारे पत्रोमे जवाब देने योग्य बाते रहती है।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५०) से। सी० डब्ल्यू० ३३८० से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

## ३०३. पत्र : नारायणदास रतनमल मलकानीको

२८ जून, १९३५

प्रिय मलकानी,

साथमें 'हरिजन' के एक ग्राहकका दिया यह पहला दान भेज रहा हूँ। तुम्हे 'हरिजन' मे प्रकाशनके लिए दाताओकी सूची मुझे हर हफ्ते भेजते रहना चाहिए।

श्रीयुत जुगलकिशोरने[3] मुझे एक बडा अच्छा लम्बा पत्र भेजा है। वे शीघ्र ही अच्छा खासा दान देनेवाले है।[4] कोषके सम्बन्धमे नामका उपयोग करना बन्द

१. देखिए "पत्र : एफ० मेरी बारको", २४-६-१९३५।

२. मेरी इघम, मेरी चेजलेके निमत्रणपर ग्राम-सेवाका कार्य करने के लिए इंग्लैण्डसे आई थीं।

३. जुगलकिशोर बिड़ला।

४. यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ भूल जान पड़ती है, जिसे सुधारकर अनुवाद किया गया है।

कर दो और उसके लिए जैसा मैंने किया है, उसी तरह सिर्फ हरिजन कूप-कोष नामका इस्तेमाल करो।

बापू

संलग्न पत्र : १ (चेक)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६२) से।

## ३०४. पत्र : लीलावती आसरको

दुबारा नहीं पढ़ा

२८ जून, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू थोड़ा धीरज धर। सब व्यवस्थित हो जायेगा, तब नियम-पूर्वक काम चलेगा।

अब तुझे हफ्तेमें एक पत्र लिखना चाहिए। तेरे मनमें आये तो, दो पाठ भी लिख सकती है, एक गुजरातीका और एक अंग्रेजीका। लेकिन वहाँ से रवाना एक ही दिन करना, जिससे टिकटकी बचत हो। तेरा पत्र आने के बाद तीन दिनकी अवधि मगनभाईको और मुझे चाहिए, इससे तू डाकका अन्दाज कर सकती है। यहाँ यदि तेरा पत्र पहुँचने का दिन हमेशा एक हुआ, तो तुझे डाक मिलने का दिन भी हमेशा एक रहेगा।

यदि वजन बढ़ने के साथ-साथ शक्ति भी बढ़ती जाये तो वजन बढ़ने से घबराना नहीं चाहिए। तेरा वजन आसानीसे ११० पौंड हो सकता है।

मेरा लेख[1] तू ठीक समझी है। बालविधवाएँ समाजके दबावमें पड़कर संयम पालने का प्रयत्न करें, इसकी अपेक्षा उन्हें पुनर्विवाह करने को प्रेरित किया जाये यह मैं ज्यादा ठीक मानता हूँ। जिनमें तीव्र वैराग्य होगा वे तो मना ही करेंगी, और उनका वैधव्य उन्हें शोभा देगा।

अंग्रेजी पुस्तकोंमें तू अभी 'नेलसन रीडर' लेना। उसमें से हर हफ्ते १५ पंक्तियाँ सुन्दरसे-सुन्दर अक्षरोंमें लिख भेजना और उनका तर्जुमा भी सुन्दरसे-सुन्दर अक्षरोंमें लिख भेजना। कागज एक ही आकारके लेना, जिससे अन्तमें तू उन्हें सीकर अपने पास रख सके।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५७५) से। सी० डब्ल्यू० ६५४७ से भी, सौजन्य : लीलावती आसर

१. देखिए "टिप्पणियाँ", २२-६-१९३५।

## ३०५. पत्र : नवीन गांधीको

२८ जून, १९३५

चि० नवीन,

तेरा पत्र मिला। तेरी पढने की अभिलाषाको मैं स्तुत्य मानता हूँ। किन्तु मुझे भय है कि मैं इस मामलेमे तेरी कोई सहायता नही कर सकूँगा। मैं तुझे जितना भी समय दूँगा, वह मुझे कम ही लगेगा और ऐसी स्थितिमे तो 'न घरके रहे न घाटके' वाली कहावत चरितार्थ होगी। अतः या तो तू अहमदाबादके विनयमन्दिरमे दाखिल हो जा या फिर राजकोट अथवा भावनगरके हाईस्कूलमे। तेरे हाईस्कूलमे जानेकी बात मुझे नही पुसाती, किन्तु मैं तेरी लालसाको तुष्ट करना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे और कोई रास्ता नजर नही आता। यदि तू मेरे पास आ जाये तो अग्रेजी और गणित पक्का करने मे मैं तेरी यथाशक्ति सहायता करूँगा किन्तु मुझपर किसी तरहकी शर्त नही थोपी जा सकती। मुख्य वस्तु तो यहाँका कार्य है, अर्थात् सेवा मानकर ही जो-कुछ किया जा सके सो करना। तेरा मेरे पास रहना ही सर्वोत्तम है। मुझे यही पसन्द भी है किन्तु मेरे पास रहनेका मतलब है — सेवाधर्म सीखना और उसमे प्रगति करना। यहाँतक कि ज्ञान-वृद्धि भी उसीके लिए करनी चाहिए।

मुझे निसकोच लिखता रह। यदि तू मुझे लिखेगा तो मैं तेरा पथ-प्रदर्शन करनेका प्रयत्न करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ३०६. श्रमयज्ञ

'गीता' मे कहा है, "आरम्भमे यज्ञके साथ-साथ प्रजाको उत्पन्न करके ब्रह्माने उनसे कहा, 'इस यज्ञके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हो; यह यज्ञ तुम्हारी कामधेनु हो।' जो इस यज्ञको किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।" और बाइबिलका वचन है · "तू अपने पसीनेकी कमाई खा।" यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते है। उनमे एक श्रमयज्ञ भी हो सकता है। यदि सब लोग अपनी रोटीके लिए ही परिश्रम करे और उससे अधिक अर्जित न करे, तो दुनियामे अन्नकी कमी न रहे, और सबको अवकाशका काफी समय भी मिले। न तब किसीको जनसख्याकी वृद्धिकी शिकायत रहे, न कोई बीमारी आये, और न मनुष्यको कोई कष्ट या क्लेश ही सताये। यह श्रम उच्चसे-उच्च प्रकारका यज्ञ होगा। इसमे सन्देह नही कि मनुष्य अपने शरीर या

बुद्धिके द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर उनका वह सब श्रम लोक-कल्याणके लिए किया गया प्रेममूलक श्रम होगा। उस स्थितिमें न कोई राव होगा न कोई रंक, न कोई ऊँच होगा न कोई नीच, न कोई स्पृश्य रहेगा न कोई अस्पृश्य।

भले ही यह एक अलभ्य आदर्श हो, पर इस कारण हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेकी जरूरत नही। यज्ञके सम्पूर्ण नियमको — और याद रहे कि यह हमारे जीवनका मूलभूत नियम है — पूरा किये बिना भी अगर हम अपने नित्यके निर्वाहके लिए पर्याप्त शारीरिक श्रम करेंगे तो उस आदर्शके बहुत-कुछ निकट तो हम पहुँच ही जायेंगे।

यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारी आवश्यकताएँ बहुत कम हो जायेंगी, और हमारा भोजन भी सादा बन जायेगा। तब हम जीनेके लिए खायेंगे, न कि खानेके लिए जियेंगे। इस बातकी यथार्थतामे जिसे शका हो, वह अपने परिश्रमकी कमाई खानेका प्रयत्न करे। अपने पसीनेकी कमाई खानेमे उसे स्वाद ही कुछ और मिलेगा, उसका स्वास्थ्य भी सुधर जायेगा, और उसे यह मालूम हो जायेगा कि जो बहुत-सी विलासकी चीजें उसने अपने ऊपर लाद रखी थी, वे सब बिलकुल फिजूल थी।

मनुष्य अपने बौद्धिक श्रमकी कमाई क्यो न खाये? नही, यह ठीक नही है। शरीरकी आवश्यकताओंकी पूर्ति शारीरिक श्रमसे ही होनी चाहिए। बाइबिलका यह वचन कि "सीजरका प्राप्य सीजरको दीजिए" कदाचित् इस सन्दर्भमे भी सही लागू पड़ता है।

केवल मस्तिष्कका, अर्थात् बौद्धिक श्रम तो आत्माके लिए है, और उससे मिलनेवाला सन्तोष भी उसके बाहर नही, उसीमे मिल जाता है। उसमे पारिश्रमिक मिलने की इच्छा नही करनी चाहिए। आदर्श राज्यमे डॉक्टर, वकील आदि समाजके हितके लिए ही काम करेंगे, अपने लिए नही। शारीरिक श्रमके नियमपर चलने से समाजमे एक शान्तिमय क्रान्ति पैदा होगी। अस्तित्वके निमित्त सघर्षके स्थानपर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा स्थापित करने मे मनुष्यकी विजय होगी। पाशविक नियमका स्थान मानवी नियम ले लेगा।

ग्रामोकी ओर जानेका अर्थ यह है कि निश्चित रीतिसे शरीर-श्रमके धर्मको, उसके सारे फलितार्थोंके साथ, स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया जाये। आलोचक इस पर यह कहते हैं कि "करोडो भारतवासी आज गाँवोमे ही तो रहते है, तो भी उन बेचारोको वहाँ पेटभर भोजन नसीब नही होता, और भूखो मर रहे है।" बात तो यह बिलकुल सत्य है। सद्‌भाग्यसे हम यह जानते है कि वे इस नियमका पालन वहाँ स्वेच्छासे नही कर रहे है। अगर उनकी चले तो ऐसा शारीरिक श्रम वे कभी न करें, बल्कि वे किसी नजदीकी शहरकी ओर निकल भागे और वहाँ जगह मिल जाये तो वही बस जाये। मालिकका हुक्म जब जबर्दस्ती बजाया जाता है, तब उसे परवशता या दासताकी स्थिति कहते है। और पिताकी आज्ञाका जब स्वेच्छासे पालन किया जाता है, तब वह आज्ञा-पालन पुत्रत्वका गौरव है। इसी तरह शरीर-श्रमके नियमका जब विवशतासे पालन किया जाता है तब उससे दरिद्रता, रोग और असन्तोष उत्पन्न होता है। यह गुलामीकी अवस्था है। उसका स्वेच्छासे पालन किया

जायेगा, तब उससे अवश्य ही सन्तोष और आरोग्यका लाभ होगा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चाँदी-सोनेके ये टुकडे सच्ची सम्पत्ति नही है। ग्रामोद्योग सघ इसी स्वेच्छामूलक शारीरिक श्रमकी दिशामे एक प्रयोग है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-६-१९३५

## ३०७. चरखेमें सुधार

सावली खादीका एक अच्छा उत्पत्ति-केन्द्र है। वहाँ जाँच-पडताल करनेपर यह मालूम हुआ है कि कतैया औसतन एक घटेमे एक पाईसे अधिक नही कमाता। सद्भाग्यसे या तो उसकी कमाईके कुछ अन्य साधन है, या उसके कुटुम्बके दूसरे लोग अधिक कमाईका कोई दूसरा धन्धा करते है। लेकिन इतने ज्ञानसे सन्तोष मानकर बैठे रहना खादी-सेवकको नही पुसा सकता। उसे ऐसे उपाय सोचने चाहिए जिनसे कतैया अधिक पैसा कमा सके। इसके तीन मार्ग है—(१) मजदूरी अधिक देना और व्यापारकी खादीके दाम बढ़ाना, (२) ओटनेवाले, धुननेवाले और बुननेवाले से कहा जाये कि वे अपनी कमाईमे से कुछ हिस्सा निकालकर कतैयेको दे दें; और (३) मौजूदा चरखेमें सुधार करना, तथा कतैयेको यह सिखाना कि वह कातनेमे ज्यादा सावधानी बरते।

यदि यह अन्तिम मार्ग सम्भव न हो तो पहले दो मार्गोंमें से एक-न-एक तो ग्रहण करना ही होगा। लेकिन मौजूदा चरखेमे और कतैयेकी पद्धतिमे सुधार अवश्य किया जा सकता है। किर्लोस्कर कम्पनीका प्रयत्न परीक्षामे अगर बिलकुल ठीक उतरा होता, तो कतैयेकी मजदूरी आसनीसे नौ पाईतक पहुँच जाती। पर ऐसा नही हुआ। चरखा सघके पास जितने चरखे आये थे, उनमे किर्लोस्कर कम्पनीका चरखा सर्वश्रेष्ठ था, लेकिन परीक्षकोने गाँवोकी झोपडियोकी दृष्टिसे जो कसौटी रखी थी, उसपर वह ठीक-ठीक नही उतर सका। वह चरखा मौजूदा चरखोका स्थान नही ले सका। हमे आशा है कि किर्लोस्कर कम्पनी या दूसरे अन्वेषक इस प्रयत्नको छोड़ नही देगे। पारितोषिक यद्यपि हटा लिया गया है, तो भी मुझे इसमे सन्देह नही कि अगर कोई भी अच्छा प्रयास होगा तो सघ उसकी परीक्षा करने के लिए हमेशा तैयार रहेगा, और अगर वह चरखा सचमुच छोटा और चलनेमे हल्का हुआ तो उसपर पूरा पारितोषिक दिया जायेगा। किन्तु उस सुन्दर दिवसके आनेतक—और कहा नही जा सकता कि वह कभी आयेगा भी या नही—हमें इस मौजूदा चरखेमे अवश्य सुधार करना चाहिए। श्री शकरलाल बैंकर तकुएकी गतिकी तरफ अपना सारा ध्यान दे रहे है। यह एक आवश्यक सुधार है। यह मालूम हुआ है कि चरखेके एक पहियेको एक बार घुमाने से तकुएके बहुत कम—सिर्फ ३५—चक्कर होते है। नतीजा यह आया है कि घटेमे औसतन सौ गज सूत निकल जाये तो निकल

जाये, डेढ सौ से अधिक तो निकल ही नही सकता। अधिकसे-अधिक गति ८०० गजतक पहुँची है। अगर तकुएके वेगमे सुधार हो जाये, तो सूतका औसत और मजदूरी आसानीसे दूनी हो सकती है। पतला तकुआ और पतली माल काममे लाने से तथा तकुएकी गर्रीका घेरा कम कर देने से यह हो सकता है। सुधार आसानीसे किस प्रकार हो सकते हैं, इसके ये तो केवल यहाँ दृष्टान्त दिये गये है।

लेकिन जबतक खादी-सेवक कताई-शास्त्रमे कुशल नही बनेंगे तबतक कुछ भी सुधार नही हो सकता। उनमे शास्त्रीय तथा व्यावहारिक दोनो ही प्रकारका ज्ञान होना चाहिए। उन्हे मौजूदा चरखोकी अत्यन्त सादी बनावटका और उनके हरएक पुर्जेके उपयोगका अध्ययन करना चाहिए। उन्हे स्वय ओटने, धुनने और कातनेकी कलामे प्रवीण होना चाहिए। इसके अलावा उन्हे कतैयेके हितमे अधिकसे-अधिक दिलचस्पी लेनी चाहिए।

इसका मतलब यह हुआ कि खादी-सेवा सघकी रचना नये सिरेसे होनी चाहिए। यह काम जितनी जल्दी हो उससे हम सबको उतना ही लाभ होगा। हम जब यह जानते हैं कि कतैयेके काममे आसानीसे सुधार हो सकता है, तब हमे उसके लापरवाहीसे किये हुए कामसे सन्तोष नही मानना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २९-६-१९३५

## ३०८. टिप्पणियाँ

### जूएका व्यसन

बम्बईसे एक सज्जनने जूएकी बढती हुई बुराईके बारेमे एक करुणाजनक पत्र लिखा है। नीचे पत्रके महत्त्वपूर्ण अशोका स्वतन्त्र अनुवाद दिया जा रहा है

> यह दुष्ट व्यसन जिस तरह गुजरातके गाय-जैसे भोले-भाले किसानोको चौपट कर रहा है, उसी तरह इसने अच्छे-अच्छे पदवीधारियो, बैरिस्टरो, डॉक्टरो व्यापारियो और राष्ट्रीय चरित्र और नीतिके पहरेदार अध्यापकोतक पर अपना मायाजाल फैला रखा है। सुनते हैं कि खुद पुलिस-विभागतक के आदमी इस बुराईमे फँसे हुए हैं। स्त्रियो और सुकुमार वयके बच्चोको तथा अधे भिखारियोको भी यह निगोडी लत लग गई है। और यहाँके अखबार भी इस दुष्ट व्यसनकी विज्ञापनबाजीपर पनप रहे हैं। कुछ सुधारक इस दिशामें प्रयत्न कर भी रहे हैं, पर कोई असर नही हो रहा है। दिन-दिन बढती हुई गरीबी और तज्जनित बेकारी ही क्या इसका कारण नही है?

मेरा ऐसा खयाल नही है। इसमे सन्देह नही कि जूएके प्रचारमे बेकारीसे उत्तेजन मिलता है। पर इसके कारण कुछ और भी गहरे होने चाहिए। जूएके इस

विकट जालमें जो तमाम वर्गोंके लोग फँसे हुए है, इस वातसे ही हमे सतर्क हो जाना चाहिए, और इस व्यसनके कारणोकी खोज ज्यादा गहराईसे करनी चाहिए।

शक्कर बनाम गुड़

शक्करकी तुलनामे गुड आहार-शास्त्रकी दृष्टिसे ज्यादा अच्छा है, इसके पक्षमे नये-नये प्रमाण मिलते ही जा रहे है। श्री शकरलाल बैंकरने, जो आजकल ऊटीके आसपासके इलाकेमे घूम रहे है, अपने एक रसायनशास्त्री मित्र द्वारा तैयार की गई नीचे दी जा रही तालिका भेजी है। इस तालिकामे उक्त रसायनशास्त्रीको शक्कर और गुड़के जो भी नमूने विश्लेषणके लिए सौपे गये थे, उनमें से हर किलोग्राममे कितना मिलिग्राम तांबेका अश प्राप्त हुआ, यह बताया गया है:

| | |
|---|---|
| सिंगनेल्लूर शक्कर | ०.६१ |
| अस्का शक्कर | १.९३ |
| गुड़ अनकापल्ली | ७.४८ |
| गुड़ सिंगनेल्लूर | ७.६७ |
| छोआ | ५.७ |
| मिसरी (गन्नेकी) | ४.९८ |
| मिसरी (ताडकी) | ७.४० |

इस तरह गुड़के स्थानपर शक्करका उपयोग पैसेकी दोहरी बरबादी है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २९-६-१९३५

## ३०९. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२९ जून, १९३५

चि० मेरी,[1]

लगता है कि तुम वहाँ काफी लम्बे असतक रहोगी। पर तुम वहाँ जितना जरूरी है, उतना अवश्य रहना।

वहाँ मौसम कैसा है? तुम्हारे वार्डमे कुल कितने लोग है?

एक-दूसरेके बिस्तरोके बीच कितना फासला है?

खानेके लिए वे तुम्हें क्या देते है?

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५१) से। सी० डब्ल्यू० ३३८१ से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

१ और २. सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

## ३१०. पत्र : बलीबहन एम० अडालजाको

२९ जून, १९३५

चि० बली,

तेरे दोनो पत्र मिले। तू धीरज धारण करके बैठी रह। अन्तमें सत्य अवश्य प्रकट होगा। हरिलाल सभी मर्यादाएँ तोड रहा है। तुझे जवाब देनेकी कोई जरूरत नही है। वह जो-कुछ करे, वकीलकी मार्फत उससे अपना बचाव अवश्य करना। उसके कारनामोका बुरी तरह भडाफोड करने का तुझे पूरा अधिकार है। दबनेकी कोई जरूरत नही है, न एक भी पैसा उसे देना चाहिए। मैं तो उसे लिख ही रहा हूँ। नोटिस वापस भेज रहा हूँ, और जो पत्र तूने वापस माँगा है, वह भी।

बा कल दिल्ली जा रही है। लक्ष्मीकी प्रसूति होनेवाली है इसलिए उसने मनुको बुलाया है। मनु स्वय ही जाना चाहती है, सो जाने दे रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५०५१) से, सौजन्य · मनुबहन एस० मशरूवाला

## ३११. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रचूजको

वर्धा
३० जून, १९३५

प्रिय चार्ली,

अन्य कागजोके साथ तुम्हारे पत्र ठीक वक्तपर मिल गये है। इस बारेमे मैं अगाथाको कुछ नही लिखूंगा। उसके पत्रका यह वाक्य तुम्हें याद होगा — "हम चाहते है कि महात्माजी द्वन्द्वसे ऊपर रहें। क्या मेरा यह सोचना सही है कि पिछले वर्षकी घटनाओने उन्हें कमजोर कर दिया है?" अगर तुम समझते हो कि घटनाओंसे मैं कमजोर नही हुआ और मैं द्वन्द्वसे परे बना हूँ तो मेरी ओरसे तुम उसे आश्वस्त करो और कहो कि मैं "पूरी परिस्थितिसे निराश नही हूँ।" हाँ, रेतकी नीवपर आशाके किले नही बनाता। विश्वासकी चट्टानपर स्थित सत्य ही प्रतिकूल लहरोमे भी अडिग खडा रहता है। किसी भारतीयके इग्लैण्ड जानेकी बातको लेकर मेरे मनमे कोई बडा उत्साह नही है,[1] तो मेरे पास इसके कुछ बडे ही ठोस कारण है। जो श्रेष्ठ लोग हमारे

१. देखिए "पत्र . अगाथा हैरिसनको", १-५-१९३५।

बीचमे हैं, उनके लिए यहाँ जरूरतसे ज्यादा काम पडा हुआ है और मेरे मनमे यह बात बिलकुल साफ है कि जब हम यहाँका अपना काम ठीक तरहसे सम्पन्न कर लेगे तब इग्लैण्ड और भारतके बीच सच्ची मित्रता कायम हो जायेगी। वे भारतीय, जो अहिंसामे विश्वास करते है, जबतक इस बातको प्रमाणित नही कर देते कि राजनीतिक रूपसे जाग्रत भारतीयोके मनमे अंग्रेजोके प्रति घृणा नही है और उनके मनमे उत्कट प्रेम न सही, पर एक सद्भावनाका भाव अवश्य है; तबतक उन्हें इग्लैण्ड कदापि नही जाना चाहिए। आज राजगोपालाचारी इस बातको प्रमाणित नही कर सकते। और इस बातसे क्या फायदा कि वे अंग्रेजोके पास जाकर यह कहें कि तुम अपने कर्त्तव्यका पालन करो, जबकि भारतीय मनकी उच्चादर्शहीन प्रवृत्तिसे मुक्ति नही प्राप्त कर सकते और शेष मानवताकी तरह उनसे घृणा करते है, जो उनकी नजरमें उनके दुःखके कारण है? तुम मेरी बात ठीकसे समझ रहे हो न? मैं अगाथाके पत्रमे लिखे सिर्फ एक वाक्यका उत्तर इतने विस्तारसे इसलिए लिखा रहा हूँ कि मै उसके मनकी पीड़ाको महसूस करता हूँ और उसे तथा उन सबको, जो उसीकी तरह महसूस करते है, कुछ सुकून देना चाहता हूँ।

शिमलाकी घटनाको तुम्हे शायद कुछ और दिनोंतक बर्दाश्त करना पडे। लेकिन अगर कोई तुम्हारी निन्दा करता है तो उससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है? तुमने ठीक बात कही[1] और तुम्हारे सन्तोषके लिए इतना काफी है।

तुम्हारे पत्रके शेष अंश तथा साथ भेजे गये कागजोंके बारेमे मेरा खयाल है, तुम उत्तरकी अपेक्षा नहीं रखते। उम्मीद है कि खम्भाताका स्वास्थ्य निरन्तर सुधर रहा होगा। उसने अस्पतालके प्रबन्धके सम्बन्धमे जो शिकायत की है, उसकी जाँच-पडताल करना।

एक चीज जरूर कहना चाहता हूँ। अगाथाके पत्रकी वजहसे तुम अपना कार्य-क्रम मत बदलना। जो होता है सो हो। जिस तरहका कठिन परिश्रम अगाथा कर रही है, उसे देखते हुए यह इच्छा करना ठीक ही है कि उसे कुछ राहत दी जाये। लेकिन यह तो तुम्हारे वहाँ पहुँचनेपर ही हो सकता है। फिलहाल तो उससे कहो कि इतनी जल्दी न मचाये और व्यर्थकी चिन्ता न करे।

तुम सबको स्नेह।

मोहन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९८९) से।

१. अगाथा हैरिसनको लिखे अपने ७ जूनके पत्रमें सी० एफ० एन्ड्रयूजने क्वेटाके भूकम्पपर "अखबारोंको जारी की गई सरकारी विज्ञप्तियोंमें प्रजातिगत भेद-भाव" का उल्लेख करते हुए कहा था कि "...अखबार मृत,-घायल या बच निकलनेवाले अंग्रेजोंके नामोंसे भरे पडे थे, और भारतीय सिविल अधिकारियों तकके नाम नहीं दिये गये थे। शिमलाका वातावरण विषाक्तवत् था।... उनके मस्तिष्कमें तनिक भी सामान्य बुद्धि नहीं दिखाई देती।...वे इस भ्रामक विश्वासमें पडे हुए है कि भारत-भरके सारे भारतीय, जो-कुछ हुआ है, उसपर खुश हैं और सिर्फ एक ही व्यक्ति परेशान है और प्रजातिगत भावनाको भडका रहा है — वह है सी० एफ० एन्ड्रयूज।" (चार्ल्स फ्रीअर एन्ड्रयूज, पृ० २८२)

## ३१२. पत्र : हीरालाल शर्माको

३० जून, १९३५

चि० शर्मा,

तुम्हारे दो खत मिले। कोनसलके पास विज्ञाकी तजवीज चल रही है। इसीके लिए तुम्हारे कलकत्ता जाना नही होगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। डा० कैलोगका उत्तर नही आया है। आना चाहिये था। मै दूसरी तजवीज करूंगा। श्री प० के खतमें कुछ है नही। मैने उसको लिखा है कि उसके खतपर मै कोई ध्यान नही दे सकता हू मैने इसमेसे कोई चीजपर वजन नही दिया है। इसलिए तुमको भी इस बारेमे कुछ नही लिखा।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७२-७३

## ३१३. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१ जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम्,

विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हो और कृष्णस्वामी तथा उसकी पत्नीको सुखी और सेवामय सुदीर्घ जीवन प्राप्त हो। आशा है, शनिवारतक किचीकी उँगली बिलकुल ठीक हो जायेगी।

कुआँ-कोषके बारेमे कोई जल्दी नही है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०२) से, सौजन्य : एस० अम्बुजम्माल

## ३१४. पत्र : क० मा० मुंशीको

१ जुलाई, १९३५

भाईश्री मुंशी,

यदि प्रेमचन्दजी को कीर्तिक (गुडविल)के लिए कुछ देना पड़े[1] तो मैं व्यक्तिगत रूपसे स्वतन्त्र पत्र निकालना पसन्द करूँगा। हिन्दी लेखक तो हमे मिल ही जायेंगे।

यदि प्रेमचन्दजी सेवा-भावसे इस कामको हाथमें ले तभी हम उन्हें निबाह सकते हैं। हमे उतावली नही करनी चाहिए। जब निर्णय हो जायेगा तभी हम गुरुदेवसे भिक्षा माँगेंगे। मुझे स्वय तो उन्हें लिखते हुए सकोच होता है क्योकि उनकी इच्छा न होनेपर शायद लिहाजकी वजहसे [वे लिखनेको तैयार हो जाये]। किन्तु समय आनेपर मैं महादेवसे लिखवा दूँगा या फिर तुम लिख देना। तुम्हारे पत्रकमें मेरा नाम तो कही-न-कही रहेगा ही और उससे [मेरे द्वारा] निमन्त्रण दिये जानेका उद्देश्य पूरा हो जायेगा।

आशा है, पचगनीमे रहने से तुम्हें फायदा पहुँचा होगा।

'हंस' का प्रकाशन शुरू करने से पहले पैसेकी व्यवस्था कर लेना भी आवश्यक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७६) से; सौजन्य : क० मा० मुंशी

## ३१५. पत्र : नारणदास गांधीको

१ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको लिखा मेरा पत्र[2] पढ लेना। उससे तुम शायद अपने कर्त्तव्यको समझ सकोगे। अभी मैं आज्ञा देनेको तैयार नही हूँ, किन्तु मुझे लगता है कि वली,[3] कुमी[4] और मनु सही हैं। यदि तुम्हे ऐसा लगता हो कि वे गलती पर हैं तो मुझे

१. तात्पर्य प्रेमचन्द और क० मा० मुंशीके संयुक्त सम्पादकत्व और स्वामित्वमें प्रकाशित होनेवाले हंस नामक हिन्दी मासिकके कीर्तिकसे है।

२. यह पत्र उपलब्ध नही है; तथापि देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", ३-७-१९३५।

३ व ४. वली मणिलाल अडालजा और कुमी तुलसीदास मनियार, हरिलाल गांधीकी सालियाँ।

चेताना। यदि वे तुम्हे सही लगती हो और हरिलाल अपने दोष स्वीकार नही करता तो तुम उसे कदापि नही रख सकते। अब उसे किसी भी हालतमे सार्वजनिक कोषसे सहायताके रूपमें कुछ नही दिया जाना चाहिए। हाँ, वह काम करके अवश्य पा सकता है। इसमे मेरा सुझाव आ जाता है। इसपर विचार करके तुम्हारा मन जो कहे सो करना।

मैथ्यूका पत्र इसके साथ है। प्रेमाके पत्र ही ऐसे होते हैं कि उनके लिए उपयुक्त उत्तर सहज ही निकल आता है।

कारखाने (वर्कशाप)का क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५७ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

## ३१६. पत्र: हीरालाल शर्माको

१ जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

कलकत्तेसे खत आया है।[1] स्टीमर १० अगस्टके आसपास जायगी। लिखते है तुमारे दस-बार[2] दिन पहले जाना होगा। अमेरीकाके वीसाके बारेमे वे ठीक कर देंगे। तुमारे पर वह छपा हुआ किसने भेजा था?[3] निश्चयसे खबर चार-पाच रोजमे आयगें।

दरीयाकी[4] परवा नही है, जाना कलकत्तेसे ही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७२ और १७३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१. शायद हीरालाल शर्माकी विदेश-यात्राका खर्च उठानेवाले बिड़ला-बन्धुओंका लिखा पत्र।

२. बारह।

३. हीरालाल शर्माके एक मित्रने उन्हें कलकत्ताके एक अखबारकी कतरन भेजी थी, जिसमें उनके विदेश-यात्राके इरादेकी खबर छपी थी।

४. समुद्र।

## ३१७. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

वर्धा
२ जुलाई, १९३५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

लगता है, खादी सस्थानमकी रिपोर्टोंमे कुछ नही होता, इसलिए आपको मेरी सलाह है कि आप हर महीने रिपोर्ट न भेजे। रिपोर्ट तभी भेजे जब जय या पराजयके अर्थमे उनमें कुछ नया या उल्लेखनीय हो। हर तफसीलकी ओर सावधानी पूर्वक ध्यान देनेसे ही उच्चस्तरकी कार्य-कुशलता आती है। किसी घड़ीकी यन्त्र-प्रणालीमे एक पेचके ढीलेपनसे भी सारा सन्तुलन उलट जाता है, तब फिर सोचिए कि मानसिक प्रक्रियापर यह बात कितनी अधिक लागू होती होगी। और मानसिक क्रियाका सही होना या उसका कार्य-कुशल होना इस बातपर निर्भर है कि हम अपने दैनिक जीवनमे कितने सही ढंगसे अपना काम करते है।

अब अदला-बदलीके बारेमें ४५० रुपयेसे भी काम चलेगा। लेकिन राशिको सौकी गणनामे यानी ५०० क्यो न रखा जाये? मैं समझता हूँ, स्वर्ण-पदक अनावश्यक है। पुरस्कार जीतनेवालेको संस्थानमके खद्दरको चुननेकी छूट दी जा सकती है, लेकिन निर्णायक कोई अर्थशास्त्री होना चाहिए। इसलिए मै श्रीयुत कुमारप्पाका नाम सुझाता हूँ। मै नही समझता कि कई निर्णायकोकी जरूरत है। आप कोई और नाम भी तय कर सकते है। रामदास पन्तुलु शायद बेहतर नाम हो। प्रतियोगियोको अधिक संख्यामे आकृष्ट करनेकी दृष्टिसे नामके बारेमे सोचना शायद सार्थक हो सकता है। और अन्तमे, आप खुद कोई छोटा-सा नोट लिखकर भेज दे। फिर मैं अपने ढंगसे उसे सँवारकर प्रकाशित करूँगा।

छठी भारत भाग्य यात्राका विवरण[1] मै नही छाप रहा हूँ। यह तो उसी पुरानी चीजकी पुनरावृत्ति होगी। लोगोके लिए इतना जान लेना ही काफी है कि यह विनय आश्रमका स्थायी अंग बन गया है। अगर आपके पास काफी कार्यकर्त्ता हों, मै चाहूँगा कि आप कुछको गाँवोमें भेजिए — हर गाँवमे एकको। इससे कार्यकर्त्ताओमे जरूरत पडनेपर अपनी सूझ-बूझसे काम लेनेकी क्षमता और स्वावलम्बन आयेगा। इस तरह हमे तरह-तरहके अनुभव प्राप्त होगे। यह ग्रामोद्धार-कार्य अत्यन्त कठिन है। अगर आप 'हरिजन' के पृष्ठोको ध्यानसे पढ़ते है तो यह बात समझते होगे।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

१. जी० सीताराम शास्त्री द्वारा "ग्राम-सेवाके सन्देशके प्रचार" के लिए संगठित की गई कार्यकर्त्ताओंकी "तीर्थयात्रा"। पहली "यात्रा" २७ दिसम्बर, १९३४ से १३ जनवरी, १९३५ तक चली थी। "दूसरी तीर्थयात्रा" के विवरणके लिए देखिए खण्ड ६०, पृ० ३६०-६२।

## ३१८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

**दुबारा नहीं पढ़ा**

२ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

महादेव कल रात बम्बईके लिए रवाना हो गया। तुम्हारा पत्र मैं वहीं भेज रहा हूँ।

क्या तुम हरिसिंहके किसी सम्बन्धीको जानते हो? तुमने उसे खबर तो दी ही होगी? उसका अग्निसस्कार तो किया ही गया होगा, उसमे कौन गया था? हरिसिंह कहाँ सोता था? क्या वह सोने लायक ठीक जगह है? वह खाटपर सोता था या जमीनपर? मै तो यह मानता हूँ कि सभी आखिरी घडी आ जानेपर ही दम तोडते है किन्तु उस घड़ीका पहलेसे पता न चल पाने और मृत्यु अप्रिय होनेके कारण व्यक्तिका इलाज कराने के सिवा और कोई चारा नही है। इस दृष्टिसे विचार करे तो जब यह पता ही न चल पा रहा हो कि किसने काटा है तब उसे साँपका डसा मानकर ही उपचार की व्यवस्था करनी चाहिए। उसे तुरन्त डॉक्टरके यहाँ तो ले जाया ही जा सकता है किन्तु यदि हम वैसा न करे तो बध बाँधकर, जहाँ काटने का सन्देह हो, उस जगहपर नश्तरसे खून निकालकर उसमे परमेगनेट भरकर, गीली मिट्टी थोपकर और पीड़ितको जगाये रखकर उसका उपचार कर सकते हैं। मुँहमे अँगुली डालकर या नमक मिला गरम पानी पिलाकर उसे वमन भी कराया जा सकता है। यदि काफी मात्रामे नमक मिलाया जायेगा तो तुरन्त वमन हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि कुछ अन्य उपाय भी हो तो उन्हे डॉक्टरसे जान लेना चाहिए।

भगवानजी से कहना कि उनका पत्र मिल गया है। उनके प्रश्न तो मुझे याद नही है, अत. वे पुन· लिखे।

बापूके आशीर्वाद

श्री नरहरि द्वा० परीख
हरिजन आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८३) से।

## ३१९. पत्र : शिवाभाई जी० पटेलको

मगनवाड़ी, वर्धा
२ जुलाई, १९३५

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। लगता है, शुरुआत तो अच्छी हुई है। मेरे विचारसे हमारे ग्रामोद्योगमें भैंस या भैंसके घीका कोई स्थान नही है। जो काम नियमित रूपसे चल ही रहे हैं उनमे हाथ डालने से भला क्या लाभ? हमे व्यापार तो करना ही नही है।

जो लोग गो-सेवाको अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझते है, वे भैंसका प्रचार कदापि नही करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५१५) से। सी० डब्ल्यू० ४३१ से भी; सौजन्य : शिवाभाई जी० पटेल

## ३२०. पत्र : वसुमती पण्डितको

२ जुलाई, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तेरा वहाँ एक वर्षतक दृढतापूर्वक आसन जमाये रखना मुझे तो बहुत ही अच्छा लगा। यदि तेरा मन प्रफुल्लित होगा तो उसके साथ-साथ शरीर भी अपने-आप सुधरेगा और स्वस्थ रहेगा। जो काम तुझे सौंपा गया है, वह तो अच्छा ही है। तुझे अपनी रुचिके अनुसार कुछ-न-कुछ नया सीखते ही रहना चाहिए किन्तु अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए। आश्चर्यकी बात है कि प्रभावती अबतक नही आई। साथका पत्र शिवाभाईको[1] दे देना। वा दिल्ली गई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०२) से। सी० डब्ल्यू० ६४८ से भी; सौजन्य : वसुमती पण्डित

१. देखिए पिछला शीर्षक।

## ३२१. पत्र : नारणदास गांधीको

२ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे एक प्रश्नका उत्तर देना रह गया था।

वजुभाईने[1] जो लिखा है उसका उत्तर देना आवश्यक है या नही? फुरसत मिलनेपर मुझे तुम्हारा उत्तर अवश्य मिलना चाहिए। फिलहाल तो एक और विस्तृत लेख मुझे मिल गया है। उसे पढ लेनेके बाद मै तुम्हें भेजूंगा। इसे पढकर दोनो लेखोके उत्तर मुझे भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५८ से भी, सौजन्य. नारणदास गाधी

## ३२२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
३ जुलाई, १९३५

प्रिय सतीश बाबू,

यह पत्र मुझे बोलकर ही लिखवाना पडेगा, क्योंकि बाये हाथसे मै इतना अधिक पत्र-व्यवहार नही निबटा सकता। साथमे दो पत्र भेज रहा हूँ। इनमे से एकमें जिन पुस्तकोके नाम दिये गये है, उन्हे क्या आप ढूँढकर निकाल सकते है? और एक अमेरिकी पत्रिकासे नकल की गई फायर-प्रूफ प्रोसेसकी जाँच क्या आप करेगे? उत्तर देते समय दोनो पत्र लौटा दे।

अब वडकामताके बारेमें जो यह छोटा-मोटा तूफान मचाया गया है, उसके सम्बन्धमें इस अभियानपर भी इतना जोर क्यो? क्या यह खादीकी भलाईके लिए है? मैने गुण-दोषोका विवेचन नही किया है, हालाँकि जहाँतक खादी प्रतिष्ठानकी बिक्रीका सम्बन्ध है, मैने जेराजाणीको लिखा है। उसका उत्तर भी आ गया है, जो इस आशयका है कि जो-कुछ भी किया गया, विश्वनाथकी पूर्ण स्वीकृतिसे किया गया।

१. वजुभाई शुक्ल, राजकोट राष्ट्रीय शालामें शिक्षक और जमनादास गाधीके सहयोगी।

बड़कामताके बारेमे अन्नदा शकरलालको बहुत कटु पत्र भेजते रहे है। शकरलाल वे पत्र मुझे देते रहे है। उनका अध्ययन करने का समय मेरे पास नही है। मैंने प्रफुल्लसे मामला तय कर देनेका अनुरोध किया। उनका यह तार आया है: "हेमप्रभादेवी, सतीशबाबू सें मिला। वे इन कदमोको उचित बताते है। इसलिए बडकामता प्रतियोगिता जारी रहेगी। हेमप्रभादेवीका रुख ऐसा था कि मुझे विस्तृत चर्चा करने की हिम्मत नही हुई।" क्या आप चाहते है कि मै सारे मामलेकी तहकीकात करूँ या अन्नदासे कोई समझौता कर लेगें?

श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य . प्यारेलाल

## ३२३. पत्र : श्रीमती एस० श्रीनिवास अय्यंगारको

३ जुलाई, १९३५

प्रिय बहन,

मैं दाहिने हाथको आराम दे रहा हूँ, इसलिए बोलकर ही लिखाना पड़ेगा, क्योंकि बायें हाथसे धीरे-धीरे ही काम हो सकता है। आगामी रविवार आपके लिए एक महान् दिन है। ईश्वर आपपर और आपके स्वजनोपर कृपा करे और वर-वधूका कल्याण करे। वह उसे स्वस्थ, शक्तिशाली और सेवामय दीर्घ जीवन दे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ३२४. पत्र : नारणदास गांधीको

मगनवाड़ी
३ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

जेठालालका[1] पत्र काफी दिनोसे मेरे पास पड़ा है, किन्तु मैं उसे आज ही पढ पाया हूँ। उक्त पत्रकी नकले उसने वल्लभभाई आदिको भेजी हैं। उसने इसके पहले नानाभाईको पत्र लिखा था और नानाभाईने उसका पत्र मुझे भेज दिया था। नानाभाईने उसे जो उत्तर दिया था, लगता है, उसमें कही गलतफहमी हुई है। उसे मामलेको स्पष्ट कर देना चाहिए। जब उसका पत्र मुझे मिला तो मैंने जेठालालको लिख दिया कि वह जो लिखना चाहे सो लिख दे। उसके उत्तरमे साथका पत्र मिला है। इसमे से बहुत-सी बातोका उत्तर तो मैं स्वय ही दे सकता हूँ किन्तु इतना काफी नही है। तुम्हारा आधिकारिक उत्तर मेरे पास होना चाहिए। अतः वह भेज देना। हरिलालका पत्र कल मिला था। मैं उससे कुछ समझ नही सका।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४५९ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

## ३२५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

३ जुलाई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेवने तुम्हें व्यर्थ ही घबराहटमे डाल दिया है और खुद भी घबरा रहा है। मैंने तो केवल हरिलाल गाधीको चेतावनी दी थी कि वह मेरे साथ दाँव-पेच न खेले और यदि खेलेगा तो शायद मुझे खो बैठेगा। उसने दाँव-पेच खेला दीखता है, इसलिए लगता है, वह स्वयं ही चेत गया है। नारणदासका ऐसा पत्र आया है कि दो दिन हुए वह भाग गया है। इसलिए यदि वह वापस न आया तो उसे भागे हुए आज पाँच दिन हो गये। उसके भागने से मुझे जरा भी आघात नही पहुँच सकता। इस तरह भागदौड़ तो वह करता ही रहता था। उसके जीवनमें

१. जेठालाल जोशी; राज्य-सभाके भूतपूर्व सदस्य तथा पहले राजकोट राष्ट्रीय शालाके शिक्षक।

परिवर्तनका कुछ आभास हुआ था। इसलिए मैंने उसके बारेमे आशा अवश्य बाँधी थी। परन्तु ढोंग कबतक चल सकता है? तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो। मैं जल्दबाजीमे हर्गिज कदम नही उठाऊँगा। अब तो कोई कदम उठाने की बात भी नही रही। यों अन्य प्रकारसे स्वास्थ्य अच्छा ही है और काफी सावधानी बरतते हुए चल रहा हूँ। अन्तमे तो 'हरि करे सो होय।' जबतक उसे मुझसे सेवाकार्य लेना है, तबतक कोई हानि नही होगी। और जब समय आ जायेगा, तब कोई भी उपाय काम नही देगा। हिन्दुस्तानका तो श्रेय ही है। मुझे कही भी निराशाका चिह्न नजर नही आता। ईश्वर सब अच्छा ही करेगा।

अच्छे हो जानेपर शायद यही मुकाम करना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७५

## ३२६. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

३ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

विद्यालयके सम्बन्धमे तुम्हारा पत्र मै पढ गया। जयाबहनको कितना वेतन दिया जाता है? हमारी शिक्षा-पद्धतिमे ऐसा कोई-न-कोई दोष अवश्य होगा जिसकी वजहसे हमारे यहाँ जो पच्चीस बहने है, उनमें से तुम एकको भी प्रशिक्षित नही कर सके। और यदि ऐसा हो तो हम यह आशा कैसे कर सकते है कि ऐसी कोई बहन हमे बाहरसे मिल जायेगी जो हमारी शिक्षा-पद्धतिमे ठीक बैठ सके? मुझे तो लगता है कि हमने जैसा बोया है वैसा काटेंगे। तुम यह बिलकुल मत सोचना कि 'हम' मे मै स्वय अपनेको औपचारिकतावश गिनता हूँ। अपनी अपूर्णताको मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मै अपनेको शिक्षक तो मानता हूँ किन्तु 'निरस्त पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' की तरह। इतना लिखनेके बाद मै सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि जैसी बहन तुम चाहते हो वैसी बहन हमें अपनेमें से ही तैयार करनेका निश्चय करना चाहिए। यह कोई . . .[1]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें पत्र अधूरा है।

## ३२७. पत्र : वैकुण्ठ एल० मेहताको

३ जुलाई, १९३५

भाई वैकुण्ठ,

महादेव तो वही है। उन्हें लिखा तुम्हारा पोस्टकार्ड मैंने पढा।

मैंने लल्लूभाईका आपरेशन सफलतापूर्वक होनेका शुभ समाचार भी पढा। आशा है, अब वे अच्छे होगें।

सेठ मथुरादासके साथ हुई [तुम्हारी] बातचीतके बारेमे महादेवने मुझे बताया। उसका मै यह अर्थ लगाता हूँ कि वे प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर देगें।

बापूके आशीर्वाद

श्री वैकुण्ठ मेहता
सेट्रल कोऑपरेटिव बैंक
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे वैकुण्ठ एल० मेहता पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ३२८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

दुबारा नहीं पढ़ा

३ जुलाई, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

हमारे हृदयमे देव-दानव, सत्य-असत्य, ज्ञान और अज्ञान, ज्योति और तमसके बीचमे द्वन्द्व युध्घ[1] चल रहा है। उसमे जहातक हमे झूझ[2] सके वहातक झूझे[3] लेकिन कभी अपनी शक्तिके बहार नही। अर्जुन अपनी शक्तिके बहार जा रहा था, भगवानने उसे रोका। जैसे कि अहिंसा उत्तम है लेकिन अगर मै सांपका भय छोड नही सकता हू उस हालतमे क्या-क्या करू? मनसे तो उसे मार चूका हू कर्मसे मारने से हिचकीचा जाता हू तब धर्म कहता है कि तुम तुम्हारा स्वभावके मुताबिक

१. युद्ध।
२. और ३. जूझ।

मार। उसे नही मारने का व्यवसाय व्यर्थ है। वैसे ही ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रमका दृष्टान्त बन सकता है। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य अवश्य अच्छा है लेकिन जो अपने विकारको नही दबा सकता है, गृहस्थाश्रममे प्रवेश करे। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मिथ्या व्यवसाय माना जाय। इसमे दो विरुध्ध[1] बात नही आती लेकिन पृथक्क[2] धर्मकी बात आती है।[3]

हा, प्रार्थना आवश्यक है ही है। उसीमे निरतर जब स्वाभाविक वस्तु बन सकता है'। नीमकी पत्तिया कम मात्रामे लेना पडेगा। तो ऐसा ही किया जाय।

शरीरके बारेमे और तो यहा आ जाओगे तभी मुझको पता चलेगा। अभी हृदय दौर्बल्य होना ही नही चाहिये। मेरे पास रहने से शाति मिल सकती है ऐसा जब मानते हैं तो पीछे फौरन आ जाना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७५) से।

## ३२९. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
४ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे नाम तुम्हारे पत्र तो प्रेमपत्र-जैसे ही होते है—मेरा खयाल है, तुम भी इनपर हर बार घंटे-भरसे कम न लगाती होगी, हालाँकि तुममे आशु और तीव्र लेखनकी क्षमता है। अब तो हम लोग एक-दूसरेको अच्छी तरह जान गये है, इसलिए तुम बखूबी ऐसा कर सकती हो कि जब जरूरी हो तभी लिखो और इस तरह अपना समय बचाओ। वैसे मै तुम्हारे लम्बे पत्रोकी बड़ी कद्र करता हूँ, लेकिन तुम महत्त्वपूर्ण बाते बताते हुए सिर्फ एक पोस्टकार्ड ही लिख दिया करो तो मेरे लिए काफी होगा।

पूनामे तुम्हारे लिए काम निश्चित कर दिया गया है। क्या तुम पूना आते हुए या वहाँसे लौटते हुए अथवा आते-लौटते दोनो अवसरोपर वर्धा होती जाओगी? इन दिनो मौसम पहलेसे काफी ठडा है।

तुम्हारा पत्र मैने कुमारप्पा[4] को दिखा दिया है। अगर तुम रिक्शावाहकोसे सम्पर्क स्थापित कर सको तो यह बहुत बडी बात होगी। वे बडी आसानीसे कात-बुनकर अपनी अल्प आयमे कुछ वृद्धि कर सकते है।

१. विरुद्ध।

२. पृथक्।

३. देखिए "आदर्श और व्यवहार", १३-७-१९३५।

४. जे० सी० कुमारप्पा, अक्तूबर १९३४ में संस्थापित अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके संगठन-कर्त्ता और मन्त्री।

मुझे खेद है कि कृष्णराव तुम्हारे यहाँसे जा रहा है। मगर आखिरमें तो तुम्हें अपने ही भरोसे रहना होगा। भले ही तुम्हारे हाथ इतने मजबूत न हों कि तुम धुनकी सँभाल सको, लेकिन तुम्हें पींजनेकी क्रिया आ जायेगी, यह अच्छा ही है। उसे जान लेनेके बाद तुम दूसरोंकी पिंजाईके कामको सुचारु रूप दे सकोगी और उसकी ठीक देख-रेख कर सकोगी। अगर तुम्हारे यहाँकी लड़कियाँ कताई सीखें तो उनसे पिंजाई करवाने का भी आग्रह रखना। जबतक वे पिंजाई न करेंगी, कताई भी नियमपूर्वक कभी नहीं कर पायेंगी। और पूनियोंके लिए दूसरोंपर निर्भर रहना बुरी बात है। अगर वे एक तरहका कताई-क्लब बना लें तो फिर आपसमें कामका बँटवारा भी कर सकती हैं। कुछ लड़कियाँ ओटाई कर सकती हैं और कुछ पिंजाई; पूनियाँ कई लड़कियाँ बना सकती हैं और कताई सब कर सकतीं हैं।

क्वेटा-राहतके लिए तुम्हारे पास जो कपड़े हों, उन्हें तुम डॉ० गोपीचन्दको[1] पंजाबमें आये शरणार्थियोंके लिए भेज सकती हो। हाँ, अगर शिमलामें भी शरणार्थी हों तब तो तुम उन कपड़ोंको उनके बीच वहीं बाँट सकती हो। अलबत्ता मैं यह जरूर सोचता हूँ कि शिमलामें तो बहुत सम्पन्न शरणार्थी ही होंगे, जबकि लाहौरमें सबसे गरीब लोग इकट्ठे हुए होंगे।

पैसा मैं रोक रखूँगा। इसे किसी ऐसे स्थानको भेजा जा सकता है जहाँ अभी की जा रही उगाही खर्च हो जाये। ऐसी विपत्तियाँ आती हैं तो प्रारम्भमें तो सदैव अच्छी-खासी राशि जमा हो जाती है।

तुम्हें जो कागज और लिफाफे भेजे हैं, उन्हें बेचने के लिए तुम्हें अपने घरसे बाहर जानेकी जरूरत नहीं है। उनकी कीमत पानेकी मुझे जल्दी नहीं है। और आखिरमें अगर वे वहाँ बिक ही न सकें तो भी उन्हें बिना किसी घाटेके बेच सकने में यहाँ कोई कठिनाई न होगी। मैं जानता हूँ कि उनपर जितना मुनाफा तुम हासिल कर सकती हो उतना हम नहीं कर सकते, लेकिन तब भी उन्हें बेचने के लिए तुम बहुत ज्यादा मेहनत तो कभी मत करना।

तुमको जो पूनियाँ भेजी हैं वे ३० अंकके तार देने लायक हैं, इसलिए उनसे कमसे-कम २५ अंकके तार तो निकलने ही चाहिए।

साथका पत्र एन्ड्रयूजको दे देना।

स्नेह।

बापू

श्री० राजकुमारी अमृतकौरबहन
मैनोरविले, शिमला

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५३९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६३४८ से भी

१. डॉ० गोपीचन्द भार्गव।

## ३३०. पत्र : एस० श्रीनिवास अय्यंगारको

४ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे पूरी उम्मीद है कि जबतक आप बिलकुल ठीक नही हो जाते और आपका स्वास्थ्य सामान्य नही हो जाता, तबतक आप कोडाईकनाल नही छोड़ेगे।

दो दिन पहले मैंने अम्बुजमकी मार्फत अपना आशीर्वाद भेजा था।[1] उसीसे मुझे शादीकी तिथि मालूम हुई थी। आज श्रीमती अय्यंगार और कृष्णस्वामीको भी लिखा है।[2] आपकी शुभकामनाओके लिए धन्यवाद।

हाँ, मै बिलकुल स्वस्थ-प्रसन्न हूँ। दोनोको मै ईश्वरकी कृपा मानता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत एस० श्रीनिवास अय्यगार
"श्रीनिकेतन"
कोडाईकनाल

अग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०७५२) से, सौजन्य. नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ३३१. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

४ जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम,

साथमे दो पत्र भेज रहा हूँ — एक माताजी के लिए और दूसरा कृष्णस्वामीके लिए। माताजी को तुम्हारे पिताजी की इच्छासे लिखा रहा हूँ। आज उनका एक बडा मधुर पत्र मिला है।

बापूके आशीर्वाद

मूल अग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए "पत्र : एस० अम्बुजम्मालको", १-७-१९३५।
२. देखिए "पत्र : श्रीमती एस० श्रीनिवास अय्यंगारको", ३-७-१९३५।

## ३३२. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

४ जुलाई, १९३५

भाई अमृतलाल,

तुम्हारे छोटे भाईके देहान्तका समाचार पढकर सहज ही दु ख तो हुआ। किन्तु यदि देखा जाये तो बहुत-से सहयोगी होनेके कारण कही-न-कहीसे किसी-न-किसीकी मृत्यु या जन्मके समाचार तो मिलते ही रहते है। अत सुख-दु ख इस तरह समान हिस्सोमे बँट जाते है कि यह कहना भी अतिशयोक्तिपूर्ण-सा लगता है कि मुझे दु ख हुआ। इसके अतिरिक्त यदि हम मृत्युके बारेमे विवेकपूर्वक विचार करे तो यह कोई ईश्वरीय कोप नही बल्कि जन्मसे छुटकारेके रूपमे ईश्वरका दिया हुआ एक उपहार ही है। इस बौद्धिक ज्ञानके कारण मेरी भावनाएँ बुरी तरह कुण्ठित हो गई है। तुम भी मेरे इस ज्ञानमे हिस्सेदार बनकर अपने दु खको भूल जाना और सेवा-कार्यमे और भी सजग बनने का प्रयास करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७१०) से।

## ३३३. पत्र : प्रभावतीको

५ जुलाई, १९३५

चि० प्रभा,

इस बार तूने काफी कष्ट दिया। दो पक्तियोका एक पोस्टकार्ड लिखने में तुझे समय ही कितना लगता? आशा है, तूने बाबूजी से अनुमति तो ले ली होगी। जैसी परिस्थिति तू बताती है, उसे देखते हुए तो तेरा वहाँ रह जाना आवश्यक था ही। यहाँ रोज वर्षा हो रही है। मेरा भोजन वही है जो पहले था। मेरी तबीयत अच्छी है किन्तु मैंने अपना वजन नही लिया है। बा और मनु दिल्ली गई है। इस बीच राजेन्द्रबाबू एक बार यहाँ हो गये। अम्तुस्सलाम अभी यही है। बारडोलीसे लक्ष्मी[1] यहाँ आ गई है।

और अधिक लिखनेका समय नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४५१) से।

१. मारुति शर्माकी पत्नी।

## ३३४. पत्र : लीलावती आसरको[1]

वर्धा
५ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

यदि ये सुधार और टिप्पणियाँ समझमे न आये तो मुझसे पूछ लेना। अपनी लिखावट और सुधारना। अक्षर बडे लिखना और शब्द अलग-अलग रखना।

[तेरे पाठोको सुधारने मे] मुझे कोई परेशानी नही होती। किन्तु मैं कोई अन्य शिक्षक नियुक्त कर दूंगा। इस बीच [अपने पाठ] मुझे भेजती रहना।[2]

१. सामान्यत कहा जा सकता है कि सजीव वस्तुओके लिए 'एस' का प्रयोग किया जाता है और निर्जीव वस्तुओके लिए 'ऑफ' का, जैसे, "ए मैन्स लैग" किन्तु "ए लैग ऑफ ए टेबल।"

२. 'हैड' का प्रयोग ऐसी क्रियाके लिए किया जाता है जो अगला काम आरम्भ होनेके पहले ही समाप्त हो चुकी हो, जैसे "ही हैड ईटन व्हैन आई वेन्ट टु हिम", किन्तु "ही एट ऐट १० ओ'क्लाक"। 'हैड ईटन' पूर्णभूत है और 'एट' सामान्यभूत।

३. 'हैव' का प्रयोग सहायक क्रियाके अतिरिक्त मूल क्रियाके रूपमे भी किया जाता है। मुख्यत यह क्रिया अधिकार या सम्बन्धका बोध कराती है; जैसे "ही हैज ए वाक्स" — अधिकार, "ही हैज ए सन" — सम्बन्ध।

किसी क्रियाके पूर्ण हो जानेपर 'हैव' के रूपोका प्रयोग किया जाता है किन्तु जब उसका प्रयोग भूतकालको सूचित करने के लिए किया जाये तो 'बी' के रूपोका प्रयोग किया जाता है। उदाहरणोके लिए दूसरी टिप्पणी देखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१२७ से भी, सौजन्य . लीलावती आसर

१. लीलावती गुजराती पाठोंका अंग्रेजीमें अनुवाद करके हर सप्ताह गांधीजी को भेजा करती थी, जिन्हें वे अपनी टिप्पणियो और सुधारोंके साथ लौटा दिया करते थे। इनमें से कुछ सामान्य सुधार यहाँ छोड़ दिये गये है।

२. इसके बादका अंश लीलावतीके पत्रके हाशियेमें लिखा हुआ है।

## ३३५. पत्र : जानकीदेवी अग्रवालको[1]

५ जुलाई, १९३५

प्रिय भगिनी,

मैंने तो मूलचन्दजी से लिखा है कि किसी तरह तुम्हारेपर बलात्कार न किया जाय।[2] न तुम्हारे उनपर बलात्कार करना चाहिये। तुमको जो कुछ खाना, पीना चाहती है उसकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये। लेकिन मूलचदजी के धर्मका स्वीकार नहीं कर सकती है तो उससे अलग रहकर अपनी इच्छानुसार चल सकती है। ऐसी हालत में भी तुमको खानेका खर्च देनेका मूलचन्दजी का धर्म बन्द नहीं होता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३६) से।

## ३३६. हरिजन-सम्मेलन

१६ जूनको मैसूर राज्य हरिजन सेवक संघके तत्त्वावधानमें मैसूरमें हरिजन-सेवकोंका एक सम्मेलन आयोजित किया गया। मैसूर राज्यके दीवान सर मिर्जा इस्माइलने तदर्थ निम्नलिखित सन्देश भेजा

> यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि गत वर्षके कार्योंके परिणामका पुनरावलोकन तथा भावी कार्य-पद्धति निर्धारित करने के लिए मैसूर-राज्य हरिजन सेवक संघ उन कार्यकर्त्ताओंके एक सम्मेलनका आयोजन कर रहा है जो दलित वर्गोंके — या अधिक प्रचलित नामका प्रयोग करें तो हरिजन वर्गोंके — उद्धारके सत्कार्यमें लगे हुए हैं। कहने की जरूरत नहीं कि मैं सम्मेलनके हर सम्भव दृष्टिसे सफल होनेकी कामना करता हूँ। जैसाकि सर्वविदित है, महाविभव महाराजा और उनकी सरकारकी तीव्र इच्छा है कि उनकी समस्त प्रजाका — वह चाहे जिस जाति, धर्म अथवा प्रजातिकी हो — कल्याण हो और वह समृद्ध बने। इसलिए हरिजनोंके सामाजिक एवं शैक्षणिक उत्थानकी प्रवृत्तियोंको महाविभवकी सरकारकी सहानुभूति सदा प्राप्त रही है और भविष्यमें भी रहेगी,

१. मूलचन्द अग्रवालकी पत्नी।

२. देखिए "पत्र : मूलचन्द अग्रवालको", २३-६-१९३५।

यद्यपि उनकी प्रजामें हरिजनोंका अनुपात बहुत कम ही है। सरकारने हरिजन-समुदायकी दशा सुधारने के लिए हालके वर्षोंमें कई कदम उठाये गये हैं। इस कार्यमें जनता तथा हरिजन सेवक संघ-जैसी संस्थाओंका सहयोग स्वागत-योग्य है। इस समुदायके सामाजिक जीवनका धरातल ऊपर उठाकर और उसे राज्यके सामाजिक जीवनमें अपनी भूमिका निभाने में समर्थ बनाने के उसके प्रयत्नोंकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ।

सम्मेलनने स्थानीय महत्त्वके अनेक प्रस्ताव पास किये, जिनमे से कुछ नीचे दे रहा हूँ :

यह सम्मेलन सरकारसे अनुरोध करता है कि निम्नलिखित अतिरिक्त सुविधाएँ देने कृपा करे।

(१) इर्विन नहर-क्षेत्र और वाणी विलास सागरमें भी कृषक बस्तियाँ बसानेके लिए भूमि।

(२) गाँवोंमें हरिजन बस्तियोंके विस्तारके लिए स्थान।

(३) गाँवोंमें रहनेवाले हरिजनोंके निमित्त पीनेके पानीके कुओंकी व्यवस्था के लिए बजटमें स्पष्ट रूपमें एक राशि निर्धारित करना।

(४) जिन हरिजन छात्रावासोंको राजकीय सहायता प्राप्त है उनके अनुदानमें वृद्धि करना, हरिजनोंको छात्रवृत्तियाँ देना तथा खेल-कूदकी सुविधा और पुस्तकालयके लिए लगनेवाले शुल्कोंकी माफी।

(५) हाईस्कूल तथा कॉलेजकी परीक्षाएँ पास करनेवाले हरिजनोंको नौकरीमें प्राथमिकता।

(६) राज्यके हरिजनोंके नैतिक तथा भौतिक उत्थानकी देखरेखके लिए एक विशेष अधिकारीकी नियुक्ति, जिसके लिए एक कर्मचारी वर्ग और धनकी व्यवस्था हो।

(७) एक शैक्षणिक न्यास-कोषका प्रारम्भ किया जाना और एक सलाहकार समितिका गठन।

(८) मैसूरकी हरिजन लड़कियोंके लिए निःशुल्क खाने-रहने की सुविधावाले एक छात्रावासकी स्थापना।

(९) जितने भी मन्दिर 'मुजराई' विभागके प्रबन्धके अधीन हैं उन सबमें हरिजनोंको प्रवेश और पूजा करने की अनुमति देना।

हमें आशा करनी चाहिए कि अधिकारीगण ये उचित माँगें स्वीकार कर लेंगे और इस राज्यमें हरिजनों तथा अन्य लोगोंके बीच पूरी तरहसे बराबरीका दर्जा कायम कर दिया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ६-७-१९३५

## ३३७. खादीका लक्ष्य

खादीका लक्ष्य इतना ही नही है कि वह शहरके लोगोके लिए मिलके कपडेसे होड लेनेवाली किस्म-किस्मकी रग-बिरगी खादी जुटा दे और इस तरह दूसरे उद्योगो की भाँति चन्द कारीगरोको रोजगार दे दे। उसका लक्ष्य तो यह है कि वह खेतीका एक पूरक उद्योग बन जाये। यह लक्ष्य अभी पूरा नही हुआ है।

इस लक्ष्यकी पूर्तिके लिए खादीको स्वावलम्वी वनाना होगा, और उसके उपयोगका चलन गाँवोमे फैलाना होगा। जिस तरह गाँववाले अपनी रोटी या चावल खुद पका लेते है उसी तरह उन्हें अपने उपयोगकी खादी भी खुद ही तैयार करनी है। उसके वाद खादी बच रहे, तो उसे बेच सकते है। जवतक खादी-सेवा सघका रग-ढग नही वदलता और चरखा सघ अपनी नीतिमे परिवर्तन नही करता, तबतक खादीका यह लक्ष्य सिद्ध होनेका नही।

खादी तैयार होनेके पहले कपासकी जो-जो प्रक्रियाएँ होती है, उन सबका ज्ञान खादी-सेवा सघके प्रत्येक सदस्यको होना चाहिए।

स्वावलम्वी खादीपर जब जोर दिया जायेगा, तब व्यापारिक उद्देश्यसे उतनी ही खादी बनेगी जितनी खादीकी शहरवालो को असलमे जरूरत होगी। तव व्यापारिक खादी चरखा सघके हाथमे केन्द्रित रहने के बजाय निजी तौरपर व्यापार करनेवाले व्यापारियोके हाथमें चली जायेगी।

खादीको व्यापारकी वस्तु बनाने के प्रयत्नमे चरखा संघ अबतक बाजार-भावका खयाल रखकर चला है। इसलिए कताईकी मजदूरी दूसरी सभी किस्मोकी मजदूरीकी अपेक्षा कम रही है। इस मजदूरीकी दर भी अलग-अलग प्रान्तोमे अलग-अलग रही है। इसलिए विभिन्न प्रान्तोकी खादीके भावोमे भी फर्क रहा है। जिनका ध्येय महज मुनाफा कमाने का है, उनके लिए तो एक-दूसरेका गला काटनेवाली प्रतिस्पर्धाका आश्रय लेना, बल्कि उसे उत्तेजनतक देना भी ठीक है, मगर जिन सस्थाओका एकमात्र हेतु करोडो निर्धनोकी सेवा करना है, उन्हे ऐसी प्रतिस्पर्धामे पडना नही पुसा सकता। बिहारकी कत्तिनको गुजरातकी कत्तिनसे कम मजदूरी क्यो मिले? नि सन्देह प्रान्त-प्रान्तका रहन-सहन जुदा-जुदा होनेके कारण वहाँ प्रचलित दरोमे भी फर्क पड़ता है। पर सघका काम तो वस्तु-स्थितिको चुपचाप स्वीकार कर लेनेसे नही चल सकता। यदि स्थिति न्यायसगत नही है तो सघको उसे वदलना होगा। कोई कारण नही कि एक घटेकी कताईकी मजदूरी एक घटेकी बुनाईकी मजदूरीसे कम हो। सादी बुनाईकी अपेक्षा कताईमे अधिक कुशलताकी आवश्यकता पडती है। सादी बुनाई केवल एक यान्त्रिक प्रक्रिया है। किन्तु सादीसे-सादी कताईके लिए भी हस्तकौशलकी आवश्यकता पडती है। तो भी बुनकरकों फी घटे कमसे-कम दो पैसे मिलते हैं और कतैयेको

सिर्फ एक पाई ही मिलती है। धुनियेको भी उससे अच्छी — करीब-करीब बुनकरकी-जितनी ही — मजदूरी मिलती है। इस वस्तु-स्थितिके ऐतिहासिक कारण है। पर यह बात नही कि ऐतिहासिक होनेकी वजहसे ही वे न्याय्य भी है। अब वह समय आ गया है, जब सघको उसकी देख-रेखमे किये जानेवाले सभी प्रकारके श्रमके पारिश्रमिकको स्थायी नही तो कमसे-कम एक-सा तो बना ही देना है। इस नीतिके कार्यान्वयनके लिए अनेक स्थानोपर बुनकरोसे अपनी मजदूरी कम करने को भी कहना पड सकता है। ऐसा समय तो शायद कभी न आये जब सब बुनकर खुद अपनी खुशीसे दरोको समान बनाने की प्रक्रियाको स्वीकार कर ले। पर यदि सब प्रकारके उत्पादक-श्रमकी मजदूरीकी दरकी समानताका सिद्धान्त सही है तो सघको इस आदर्शके अधिकसे-अधिक नजदीक पहुँचनेका प्रयत्न करना चाहिए। एक ही बारमे यह सब न हो सके तो भी कतैयेके पूरे एक घटेके ठीक कामकी मजदूरीकी दरमे उचित वृद्धि करके इस दिशामे आरम्भ तो कर ही देना चाहिए। विनोबा अपने छात्र-छात्राओको पढाने के साथ-साथ नित्य लगभग नौ घटेके हिसाबसे कातने का प्रयोग कर रहे है। एक घटेमे वे जितना सूत कातते है, उसे एक घटेके उत्पादनका मानक समझना चाहिए, और कतैयेको उसके हिसाबसे मानक मजदूरी मिलनी ही चाहिए। मुझे आशा है कि विनोबाके परिश्रमके परिणामोको मै शीघ्र ही प्रकाशित करूँगा।

मेरी योजनाके लिए इतना तो जरूरी है ही कि खादी-सेवकका कातनेवाले के साथ घनिष्ठ सम्पर्क हो। जो सस्था मजदूरीकी दरमे आशातीत वृद्धि करेगी, वह इसकी भी खोज-खबर रखेगी कि जो पैसा वह श्रमिकोको देती है, वह किस तरह खर्च हो रहा है। अगर वह पैसा शराबखोरी या शादी-ब्याह आदिमे फिजूल बरबाद हो रहा हो तो उनकी मजदूरी बढा देना व्यर्थ ही होगा। खादीका काम करीब-करीब अस्पृश्यता-निवारणके कामकी ही तरह है। उच्च कहलानेवाले वर्गोने नीचेके वर्गोकी इतनी अधिक उपेक्षा की है कि लोग जीनेकी कला ही भूल गये। उनकी यह धारणा बन गई है कि उन्हे तो विधाताने सिर्फ मेहनत-मशक्कत करनेके लिए ही पैदा किया है। इन ऊँचे वर्गवालो को अपने कुकर्मोका दण्ड न मिले, यह कैसे हो सकता था? उन्हे भी सजा मिली। वे भी तो जीनेकी कला नही जानते। उन्हे अगर आज 'निम्न वर्ग' से सहायता मिलना बन्द हो जाये, तो आज ही उनका नाश हो जाय। 'निम्न वर्गो' के प्रति 'उच्च वर्गो' ने जो दुर्व्यवहार किया है उसके लिए उन्हे प्रायश्चित्त करने को आमन्त्रित करके इस दोहरी दुरवस्थाको सुधारना ही खादीका ध्येय है।

ग्रामोद्योगके क्षेत्रमे लगे कार्यकर्त्ताओको भी इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि जिन उद्योगोको उन्होने पुनरुज्जीवित किया है, उनमे काम करनेवाले ग्रामवासियोको सघ द्वारा नियत न्यूनतम मजदूरी मिले।

[अग्रेजीसे]

**हरिजन, ६-७-१९३५**

## ३३८. डायरी लिखनेके बारेमें[1]

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है, इसकी एक-एक बात व्योरेवार तुम्हारी डायरीमें दर्ज रहनी चाहिए। तुम अगर अपने तमाम कामको घंटोमें बाँट सको, तो एक-एक घंटेके कामका ब्योरा भी उसमें होना चाहिए। तुम्हारी डायरी तुम्हारे मनकी आरसी होनी चाहिए। उसमें तुम्हारे भले-बुरे विचारो और स्वप्नो, सबका उल्लेख रहना चाहिए। अच्छे या बुरे जो भी काम तुमने किये हो, उनका भी उसमें उल्लेख होना चाहिए। यह डायरी-रूपी आईना आत्मशुद्धिमें सहायता करता है। मनुष्यका पेट साफ रहे तो शरीर निश्चय ही अच्छा रहेगा। वह बाह्य शौच है। जिस तरह शरीरके आरोग्यके लिए बाह्य शुद्धि आवश्यक है, उसी तरह आत्माके आरोग्यके लिए अन्त शुद्धिकी आवश्यकता है। सच कहा जाये तो अन्त शुद्धि जितनी अधिक होती है, बाह्य शुद्धि साधने के लिए उतना ही कम प्रयत्न अपेक्षित होता है। अर्थात् हमारा अन्तर शुद्ध हो तो बाहरकी शुद्धि तो आप ही हो जायेगी। क्या यह नही सुना है कि योगीके शरीरसे सुगध निकलती है। सुगधका अर्थ यहाँ दुर्गन्धका अभाव है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ६-७-१९३५

## ३३९. टिप्पणियाँ

### हरिजनोंके कुओंके निमित्त निधिका संग्रह

दिल्ली प्रदेशके हरिजनोके लिए कितने कुओकी आवश्यकता है, इसका एक अनुमान इस सप्ताह प्रकाशित किया जा रहा है। पाठक इस बातको लक्ष्य करेंगे कि भगी जातिके हरिजनोके लिए कुओका क्या मतलब होता है। उन्हें उन कुओका भी उपयोग नही करने दिया जाता जो दूसरी जातियोके हरिजनोके लिए अलग कर दिये गये है। यह सच है कि यह स्थिति केवल दिल्ली प्रदेशमें ही नही है। लेकिन दूसरी जगहोमें भी यह शिकायत है, इससे तो इस विशेष परमार्थ-कार्यका महत्त्व और अधिक उजागर होता है। आशा है, प्रान्तीय सघके प्रधान स्थानीय रूपसे चन्दा एकत्र करेंगे। चन्देकी इन राशियोको सम्बन्धित प्रान्तोमें ही उनकी आवश्यकताओके अनुसार इस मदमें खर्च करनेके लिए अलग रखा जा सकता है।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। गांधीजी आश्रमवासियोंकी डायरियाँ देख रहे थे। एकने उनसे पूछा कि "मुझे अपनी डायरीमें क्या लिखना चाहिए और क्या नहीं?" इसपर गांधीजी ने यह सलाह दी।

## तमिलका पावन ग्रंथ

तिरुवल्लुवर एक तमिल सन्त थे। अनुश्रुतियोसे ज्ञात होता है कि वे हरिजन बुनकर थे। उनका जीवन-काल ईस्वी सन्‌की पहली शताब्दी बताई जाती है। उन्होने प्रसिद्ध 'तिरुक्कुरल'—अर्थात् पवित्र नीति-वचनो—की रचना की। तमिल लोग इसे तमिल भाषाका वेद कहते हैं और एम० एरियलके अनुसार यह "मानव-चिन्तनकी एक उच्चतम और शुद्धतम अभिव्यक्ति," है। इसमे कुल १,३३० नीति-वचन हैं। इनका अनुवाद कई भाषाओमे हुआ है। अंग्रेजीमे तो इसके कई अनुवाद सुलभ हैं। सबसे हालमे इसका अनुवाद हरिजनो तथा अन्य लोगोके सेवार्थ शेरमादेवी आश्रमकी स्थापना करनेवाले स्वर्गीय वी० वी० एस० अय्यरने किया। राष्ट्रको शेरमादेवी आश्रम तथा यह पुस्तक भेंट करके वे चल बसे। अब शेरमादेवी आश्रम हरिजन सेवक संघके हाथोमे है। अनुवादके दूसरे संस्करणकी लगभग हजार प्रतियाँ अब भी पड़ी हुई हैं। मूलत पुस्तकका मूल्य ५ रुपये रखा गया था। अब घटाकर ढाई रुपये कर दिया गया है। पुस्तकमे एक विस्तृत प्रस्तावना भी है, जिसे स्वयं अनुवादकने लिखा है। इससे प्राप्त होनेवाला पैसा हरिजन-सेवामे लगाया जायेगा। पाठकोकी रुचि जगाने के लिए मैं यहाँ दो वचन उद्धृत कर रहा हूँ, जो खास तौर पर चुने हुए नहीं, बल्कि यहाँ-वहाँसे यो ही उठाकर दे दिये गये हैं:

> अपने प्राण बचानेके लिए भी किसी अन्य जीवका प्राणहरण न करो, क्योंकि अपने प्राण तुम्हें कितने प्यारे हैं!

अब गोल्डस्मिथकी इन पंक्तियोसे इसकी तुलना कीजिए:

> घाटियोमें उन्मुक्त फिरनेवाली भेड़ोंमें से भी किसीका वध किया जाये, यह मुझे स्वीकार नहीं, क्योंकि जो शक्ति मुझपर दयाकी दृष्टि करती है, उसने मुझे उनपर भी दया करना सिखाया है।

दूसरा वचन है:

> मृत्यु तुम्हारे लिए निद्राके समान है,
> और जीवन निद्राके बादकी जागृतिकी तरह।

अब इसको वर्ड्सवर्थकी इस पंक्तिसे मिलाकर देखिए:

> मृत्यु मात्र निद्रा है—विस्मृतिकी एक अवस्था।

मंत्री, तमिलनाडु हरिजन सेवक संघ, तेप्पाकुलम, त्रिचनापल्लीके नाम निवेदन भेजकर पुस्तक मँगाई जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ६-७-१९३५

## ३४०. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
६ जुलाई, १९३५

प्रिय मेरी,

(जब बापूको मालूम हुआ कि मैं आपके लिए इस पत्रमें "कुमारी बार" सम्बोधनका प्रयोग करने जा रही हूँ तो उन्होंने आग्रह किया कि ऐसा न करके मैं आपके बप्तिस्मावाले नामसे ही आपको सम्बोधित करूँ।)

यह पत्र मैं उन्हींकी ओरसे लिख रही हूँ। आपका इसी २ तारीखका पत्र उन्हें मिला। वे चाहते हैं कि जबतक डॉक्टर यह न कह दें कि आप बिलकुल स्वस्थ हो गई हैं और अब अपने काममें फिर लग सकती हैं तबतक आप मिरजसे न हटें। वे आपके इस विचारसे बिलकुल सहमत हैं कि जब आप लौटें तो पूना होकर लौटने के बजाय सिकन्दराबाद होकर ही लौटें। बापूका यह भी विचार है कि आपके दाँतों और आँखोंको फिर वही विशेषज्ञ देखें जिन्होंने पहले इलाज किया था। लिहाजा जब भी आपसे बने, आप उनसे जरूर सलाह लीजिए।

मेरिया पीटर्सनके पत्रके सम्बन्धमें बापूने मुझसे यह लिखने को कहा है कि इनके डेनमार्क जानेकी कोई सम्भावना नहीं है। . .

सस्नेह,

आपकी,
अमृतकौर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५२) से।

## ३४१. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

६ जुलाई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। मलेरियाको खत्म कर देनेकी कठिनाईको मैं समझता हूँ। यदि चारो ओर गन्नेके खेत हो तो यह कार्य निश्चय ही कठिन है। किन्तु मच्छरोके स्वभावकी एक विशेषता है कि वे एक सीमासे आगे नही जा सकते। अत यह सम्भव है कि तुम्हारे स्थानसे सौ एकड दूर खडी फसलका असर तुमपर न हो। चाहे जो हो किन्तु तुम्हे तो अपने आसपास कही भी पानी या सीलन नही होने देनी चाहिए। और मकान टेकरीपर बने होनेके कारण पानी यो भी इकट्ठा नही हो सकता।

खुराक हलकी होनी चाहिए। सलाद आदिकी कच्ची पत्तियाँ खानी चाहिए। कब्ज कभी नही होने देना चाहिए। मच्छरदानी इस्तेमाल करनी चाहिए। मुझे लगता है कि यदि इतनी सावधानी बरती जाये तो मलेरियासे बचा जा सकता है। मुझे इस बातका आश्चर्य है कि लक्ष्मी मेरे कते सूतकी खादी भेज सकी। तो अब मुझे कुछ भेजना है न? मै यह मानता हूँ कि यदि तुम दोनो सीताको पढाने के लिए समय नही निकाल पाते तो तुम्हारे जीवनमे कही कोई बडी कमी है। इच्छा या अनिच्छा-पूर्वक यदि तुम सन्तानको जन्म देनेके उत्तरदायित्वको स्वीकार करो तो उनके शरीर और मन आदिको सस्कारपूर्ण बनाना भी तुम्हारा कर्त्तव्य है। अत चाहे जितना काम क्यो न हो फिर भी तुम्हे कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए। यह ईश्वरकी कृपा है कि बच्चे जाने-अनजाने शिक्षा पाते ही रहते है। तुम चाहो या न चाहो किन्तु तुम्हारे आचार-विचारका अनुकरण बच्चे अवश्य करेगे। इस दृष्टिसे भी माता-पिताको अपना आचार-विचार सर्वथा शुद्ध रखना पडता है। यदि तुम्हारा भाषण शुद्ध होगा तो बच्चोका भी शुद्ध होगा। यदि तुम प्रार्थना करते होगे तो तुम्हारे बच्चे भी प्रार्थना अवश्य करेगे। तुम जिस तरह और जो खाओगे-पिओगे, वही वे भी खायेगे-पियेगे। अब सिर्फ अक्षर-ज्ञान कराना बाकी रह जाता है। इसमे कितना समय लगेगा? यदि थोडी-सी सावधानी बरती जाये तो खेल्-ही-खेलमे बच्चोको शिक्षा दी जा सकती है। जरूरत इस बातकी है कि हमारा जीवन थोड़ा विचारमय हो। इस बातका दृढ निश्चय होना चाहिए कि बच्चोको तुम्हे ही शिक्षा देनी है। तुम उन्हे जो सिखाना चाहते हो, उसका थोडा-सा ज्ञान तुम्हे पहले प्राप्त कर लेना चाहिए। इस प्रकार खाते-पीते, उठते-बैठते, घूमते-फिरते बच्चोको ऐसा अमूल्य ज्ञान प्राप्त हो जायेगा जो वे पाठशालाओमे कभी नही पा सकते। यदि तुम गपशपमे अपना समय गँवाने के बदले इस प्रकार अपना समय बिताओ तो उससे तुम्हारे ज्ञानमे भी वृद्धि होगी और तुम्हारा जीवन अपेक्षाकृत व्यवस्थित हो जायेगा।

सोराबजी और उनके व्यवहारको भूल जाना। सोचकर देखो, तो हलवेकी घटना मनोरंजक है। इस प्रकारकी निन्दासे तुम्हे मनोरजन करना सीख लेना चाहिए।

लगता है, हरिलाल फिर बहक गया है[1] या गाडी रास्तेपर आई ही नही थी और वह सिर्फ दम्भ करता हुआ ही आया था। किन्तु उसपर इतना गम्भीर आरोप लगाने के बदले मै यह मान लेता हूँ कि अब वह बहक गया है। अभी तो यह मेरा वहम है। बादमे जो हो सो सही, जो होगा वह थोडे दिनोमे सामने आ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३९) से। सी० डब्ल्यू० १२५१ से भी, सौजन्य सुशीला गांधी

१. देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", ३-७-१९३५।

## ३४२. पत्र : लीलावती आसरको

६ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा वहुत विचित्र और दु खद पत्र मिला। दो दिन पहले ही तेरा आशा-भरा पत्र मिला था जिससे मेरे मनपर यह छाप पडी थी कि तू विलकुल स्वस्थ हो गई है। किन्तु आजके पत्रसे तो ऐसा लगता है, मानो यह किसी दूसरी ही लीलावतीने लिखा हो। दो ही दिनमे इतना उलट-फेर कैसे हो गया? तू राजकोटमे अपनी इच्छासे रही है। मैंने तो तुझे बम्बईमे रहकर भी पढनेका सुझाव दिया था। मैंने सदा यह चाहा है कि तू अपनी सामर्थ्यसे अधिक कुछ भी न करे। एकाएक इतनी अधिक निराशाका कौन-सा कारण आ पडा है? तुझे वहाँका वातावरण स्वार्थपूर्ण दिखाई देता है तो अन्यत्र भी वह मुश्किलसे ही भिन्न मिलेगा। अत वातावरण तो तू स्वय जैसा बनाना चाहेगी, वैसा ही बनेगा और वैसा ही रहेगा। धीरज रखना और शान्त हो जाना। किन्तु यदि तू धीरज और शान्ति खो चुकी हो तो राजकोट अवश्य छोड देना। तू सर्वथा स्वतन्त्र है। मेरे साथ किसीका सम्वन्ध होनेसे उसके पंख कटते नही बल्कि पख न हो तो उसके नये पख निकल आते हैं। अत तुझे जिधर उडना हो, उधर उड सकती है। मेरे पास यहाँ रह सकने की वात एक अलग प्रश्न है। मौका आनेपर हम दोनो इस बारेमें विचार कर लेगे। नारणदासका आश्रय तू कभी मत छोड़ना। यदि उसका आश्रय छोडेगी तो पछतायेगी। इससे अच्छा पथ-प्रदर्शक मैं तुझे नही बता सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३४) से। सी० डब्ल्यू० ६६०९ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

## ३४३. पत्र : नारणदास गांधीको

६ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथके पत्रोंको पढ़कर तदनुसार आवश्यक व्यवस्था कर लेना। लीलावतीको क्या हुआ है? उसकी आकुलताकी कोई सीमा ही नहीं है। वह भली लड़की है किन्तु उसपर विश्वास करके कुछ भी नही किया जा सकता फिर भी तुम उसके पास हो अत. मैं निश्चित हूँ।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६० से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

## ३४४. पत्र : प्रभाशंकर पट्टणीको

६ जुलाई, १९३५

सुज्ञ भाईश्री,

यह पत्र मैं बायें हाथसे लिख डालना चाहता हूँ। चाहे जो हो किन्तु हमारी झोंपड़ियाँ तो यहाँ [भारतमें] ही शोभाप्रद हो सकती है। बाहर जाकर कही सुख थोड़े ही मिलनेवाला है? यह अच्छा हुआ कि इतनी परेशानियोंके बावजूद आप दो बार हरिजन-कथा पढ गये। अब जो होना हो सो भले हो। आप अपने स्वास्थ्यका तो ध्यान रखते है न? चिन्ता करने से परेशानी दूर नही होगी। आप यह जानते हैं न कि रमाबहन[2] आपके पार्श्वमे है? यह अन्तिम वाक्य मैं कुछ और तरहसे लिखना चाहता था किन्तु इस प्रकार लिखा गया। किन्तु यह अच्छा लगता है इसलिए मैं इसे बदलता नही। वे एक प्रकारकी दार्शनिक है किन्तु जिस प्रकार हम अपने पास बैठे हुए ईश्वरको नही पहचानते उसी प्रकार सच्चा आश्वासन देनेवाले मित्रको भी प्रायः हम नही पहचान पाते। अत. यदि उनकी उपस्थितिसे आपको

१. देखिए पिछला शीर्षक भी।

२. प्रभाशंकर पट्टणीकी पत्नी।

आश्वासन न मिलता हो तो जैसा मैंने ऊपरके वाक्यमें लिखा, उनके होते हुए चिन्ता किस बातकी है। आपके दु:खमें हिस्सा बँटानेवाली वे सही महिला हैं।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९४३) से। सी० डब्ल्यू० ३२६० से भी, सौजन्य : महेश प्र० पट्टणी

## ३४५. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
७ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

अब तुम्हारे लिए हरिलालको और क्या समझाना बाकी रह गया है? किसीसे बलात् पुण्य थोड़े ही कराया जा सकता है? इसलिए मुझे लगता है कि पत्रोंके आदान-प्रदानके अतिरिक्त फिलहाल तुम्हारे करने को और कुछ रह ही नहीं गया है। जब ऐसा समय आये कि उसे फिर पश्चात्ताप हो तब देखना कि तुम क्या कर सकते हो।

कनुका[1] बुखार तो कबका उतर गया। तुम यह मानना कि वह यहाँ बिलकुल निश्चिंत है। कनुके बारेमें तुम्हें, जमना या पुरुषोत्तमको तनिक भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मेरी नजरके सामने उसका सारा कामकाज चलता रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६१ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

## ३४६. पत्र : अमृतकौरको

सोमवार, ८ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

मैंने तुम्हें जो कागज भेजा था, उसका शेषांश साथमें भेज रहा हूँ। मेरे बारेमें अखबारोंमें जो खबरें छपती हैं, उनपर तबतक विश्वास न करो जबतक यहाँसे उनकी पुष्टि न करा लो। मैं ४५ मिनटतक दर्दसे चीखता तो जरूर रहा। लेकिन दर्द बन्द होनेपर मुझे तनिक भी कमजोरी महसूस नहीं हुई और न मेरा वजन घटा। यह नीमकी पत्तियाँ अधिक लेनेसे हुआ था। मैं प्रयोग करके यह जानने की कोशिश कर रहा था कि वे अधिकसे-अधिक कितनी ली जा सकती हैं। ऐसे प्रयोग अपने

१. नारणदास गांधीके पुत्र।

ऊपर ही किये जा सकते हैं। मेरे प्रयोगोसे मुझे कभी कोई स्थायी हानि नही हुई है। मैंने अपने और अपने साथियोके कामकी बहुत-सी महत्त्वपूर्ण खोजे की है। शुरूके दिनोमे मेरे दाँतोको नुकसान पहुँचा, लेकिन उस प्रसगमे भी प्रयोगमे कोई दोष नही था। वह तो मेरे प्रारम्भिक दिनोके अज्ञानके कारण हुआ था। यदि हमारे डॉक्टरोको देशी आहार और औषधोकी विशेषताओका ज्ञान होता तो मुझ-जैसे लोगोका रास्ता सरल और आसान हो जाता।

मैं तुम्हारे लिए और कागज तैयार करवा दूँगा।

सच मानो, मैं बिलकुल ठीक हूँ।

आज, सोमवारको मुझे लिखने का काम खुद करना पडा।

तुम सबको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६३४९ से भी

## ३४७. पत्र : क० मा० मुंशीको

८ जुलाई, १९३५

भाई मुंशी,

तुम्हारा लेख अच्छा है, लेकिन यह हिन्दीमे होना चाहिए। अंग्रेजीमे उसका अनुवाद होना चाहिए। ऐसा नही किया जाता तो वह एक गलत शुरुआत होगी। उत्तर भारतके लेखक अंग्रेजीको बर्दाश्त नही करेंगे। क्या तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह मासिक पत्रिका[1] हिन्दीमे छापी जायेगी? आशा है, अन्य भाषाओके लेख भी देवनागरी लिपिमे ही छापे जायेंगे। यदि मेरी यह मान्यता ठीक हो तो तुम्हे अपने लेखमे इसे स्पष्ट करना चाहिए।

परामर्श-समितिका विचार मुझे पसन्द आया। यदि मुझे इसका पदेन अध्यक्ष बनाया जाता है तो स्वीकृति या अस्वीकृतिका प्रश्न ही नही उठता। यदि मुझे नये सिरेसे अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है तो निश्चय ही उसे स्वीकार करने मे मुझे झिझक होगी। विद्वानोके बीच मेरे लिए क्या स्थान हो सकता है? मै तो अपने क्षेत्रमे ही रहना पसन्द करता हूँ।

यदि नये अध्यक्षका चुनाव सम्भव हो तो शान्तिनिकेतनके विधुशेखर शास्त्री या कर्वे विश्वविद्यालयके श्री जोशी इस सम्मानके उपयुक्त पात्र है। मैंने सुना है कि श्री जोशी बहुत बड़े विद्वान् हैं। मै उनको व्यक्तिगत रूपसे नही जानता। मेरे इस सुझावपर तटस्थ भावसे विचार करना। मेरे इस संकोचका कारण झूठी विनय तो

१. हंस।

तनिक भी नही है। मेरी साहित्यिक योग्यता नही के बराबर है। मुझे सामान्य बुद्धि मिली है, इसलिए मुझमे जो थोड़ी-बहुत योग्यता है उसका ठीक उपयोग कर सकता हूँ। जब पुस्तिका भेजोगे तो उसकी एक छोटी-सी प्रस्तावना[1] लिख दूँगा। विज्ञापनके बारेमे यह कहना है कि अभी तो मैं उन्हे देखना चाहूँगा। हम उसपर धीरे-धीरे मर्यादाएँ लगाने की सोचेंगे। खुद मैं यह चाहूँगा कि सिर्फ पुस्तके, शिक्षा आदिके ही विज्ञापन दिये जायें। साबुन या हाथकी बनी छड़ी या खादीसे किसी विशुद्ध साहित्यिक पत्रिकाका क्या सम्बन्ध हो सकता है। हाथकी बनी कलमो या कागज अथवा तसवीरोके विज्ञापन देना तो ठीक रहेगा। विदेशी पुस्तकोके विज्ञापन हम निस्संकोच स्वीकार कर सकते हैं। लेकिन मेरा यह आग्रह नही है कि इस विषयमे मेरे विचारोके अनुसार ही बरता जाये। जो मर्यादाएँ लगानेपर मैं तुम लोगोको बुद्धिपूर्वक समझाकर राजी कर पाऊँगा, वही मर्यादाएँ हम लगायेंगे। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७८) से; सौजन्य: कन्हैयालाल माणेकलाल मुंशी

## ३४८. पत्र: सैयद कासिम अलीको

वर्धा
८ जुलाई, १९३५

भाई कासिम अली,

मै लाचार हूं। नाटकसे नही लेकिन मूक सेवासे ही ग्रामसुधार हो सकता है। नाटक मेरे पास देखने मे नही आता है। मुझको रजिस्टर भेजा था? मै खोज कर रहा हू। तुम्हारी माली हालत यदि खराब है तो तुम्हारे कुछ-न-कुछ उद्योग वही करना चाहिए। साहित्यसे पैसे पैदा करना यों भी उचित बात नही है।

मो० क० गांधी

सैयद साहब कासिम अली, विशारद
बैतूल

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५२) से।

१. देखिए "सन्देश: 'हंस' को", ५-८-१९३५।

## ३४९. पत्र : भी० रा० अम्बेडकरको

वर्धा
९ जुलाई, १९३५

प्रिय डॉ० अम्बेडकर,

आपको शायद मालूम होगा कि राजाराम भोले अभी मेरे साथ है। उसे क्या करना चाहिए, इस सम्बन्धमें वह मेरी सलाह चाहता है। उसके बुरे स्वास्थ्यका खयाल रखते हुए मैंने यह सलाह दी है कि अगर वह अपने खाने-कपड़ेके लिए . . .[1] लेकर कुछ हरिजन-सेवा करने में सन्तोष माने तो बेहतर होगा। दूसरा विकल्प है व्यवसायका रास्ता अपनाना। उसके यह राह अपनाने के रास्तेमें मुझे कठिनाई दिखाई देती है। उस हालतमें उसे नियमित रूपसे कुछ घंटे काम करना पड़ेगा और अधिकसे-अधिक काम करनेके लिए तैयार रहना होगा, लेकिन जिस आदमीको बराबर क्षय रोगसे ग्रस्त हो जानेका भय लगा हो उसके लिए ऐसा करना घातक होगा। किन्तु मैंने उससे कहा कि उसे आपकी सलाह लेनी चाहिए और आपसे ही मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। उसका कहना है कि वह आपको पहले ही लिख चुका है। मैं जानता हूँ कि समयपर उसे आपका उत्तर मिल जायेगा। लेकिन मैं चाहूँगा कि आप मेरी खातिर उत्तर भेजनेमें जल्दी करें, ताकि मैं राजारामको बतला सकूँ कि वह क्या करे।

हृदयसे आपका,

डॉ० अम्बेडकर

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ३५०. पत्र : नारणदास गांधीको

मगनवाडी, वर्धा
९ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। हरिलालके आखिरी पत्रके बाद ही मैं तो आशा छोड़ बैठा था। मुझे भय है कि उसने पीना तो पहलेसे ही शुरू कर दिया था। जब उसने मलेरियाके बहाने ब्रांडी पीनेकी अनुमति माँगी थी तभीसे मैं यह मान बैठा था कि उसने फिर पीना शुरू कर दिया होगा। इसलिए मुझे गहरा या हलका धक्का पहुँचनेका प्रश्न ही नहीं उठता। वह मेरे पास आया इसलिए मैंने उसपर विश्वास

१. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

कर लिया, और अब भी विश्वास करूँगा, किन्तु इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकता।

तुमने तार न देकर अच्छा ही किया। उसे यहाँ भेजकर पैसे मत बरबाद करना। उसका जो होना होगा सो होगा।

लीलावतीका पत्र तो मैंने तुम्हें भेजा ही है, और उसका उत्तर भी भेजा है।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६२ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

## ३५१. पत्र : लीलावती आसरको

९ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

आशा है, अब तू शान्त हो गई होगी। तू किस कारण अशान्त हो गई थी? यदि तू अपने स्वभावकी सीमाओंके बाहर जाकर कुछ न करे तो इतनी अधिक बेचैन नही रहेगी। भगवान् तुझे सुबुद्धि दे। प्रतिदिन प्रातः उठनेपर और रातको सोते समय उससे मानसिक स्थिरताकी याचना करना।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३५) से। सी० डब्ल्यू० ६६१० से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

## ३५२. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

१० जुलाई, १९३५

भाई हरि गोविल,

तुमारे तरफसे पुस्तक मिल गई है। तुमारी धर्म-पत्निको धन्यवाद। दिल चाहे तब वह लिखें।

शब्दकोशके बारेमें और एक हिंदी शिक्षकके बारेमें जो कुछ कहते हो योग्य है। कुछ बन सकेगा तो करूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२२) से।

१. देखिए "पत्र : लीलावती आसरको", ६-७-१९३५।
२. देखिए "पत्र : लीलावती आसरको", ६-७-१९३५ भी।

## ३५३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
१० जुलाई, १९३५

भाई सतीशबाबु,

तुम्हारा खत मिला है। वरकामताके विषयमे मैं हस्तक्षेप नही करू ऐसा तो कैसे हो सकता है? जब चर्खा सघके पास खादी-कामके बारेमे कुछ भी शिकायत आ जाय तो उसका फैसला तो करना ही पडता है। शकरलाल बिमार है और इस झगडेसे उनको गभराहट[1] भी हो गयी है। ऐसी हालतमे उन्होंने मुझे लिखा। अन्नदाके पत्र भी आने लगे है। इसलिए इस झगडेमे कुछ-न-कुछ करना तो होगा ही। मेरी सलाह है कि एक स्टेटमेन्ट तुम्हारे तरफसे भेजी जाय और एक अन्नदाके तरफसे। और उसके उत्तर एक-दूसरे दे दे। उसपर से दोनोको बुलाने पडे तो बुलाऊगा। अन्यथा वैसे ही निर्णय दे दूगा। यह तो ठीक है न? हड्डीके बारेमे तो मुझे इन्दौरकी[2] पध्धति[3] अच्छी लगती है। थोडा-सा नाईट्रोजन जाता है उसमे क्या हर्ज है? संभाल रखकर हड्डीको अग्नि दी जाय तो आरामसे सामान्य चक्कीमें पीसने लायक हो जाती है। चूना पीसने की चक्कीमे सैकडो मन आटा बन सकता है और यह खाद बाजारमे जानेके लायक हो सकती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७११) से।

१. घबराहट।
२. अप्रैलमें गांधीजी इस उद्योगको देखने गये थे।
३. पद्धति।

## ३५४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

वर्धा
११ जुलाई, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र अभी-अभी मिला। यह पत्र तेरी वर्षगाँठके दिन लिखा गया है, इस-लिए आशीर्वाद तो ले ही ले।

कैसी है? कौन-सी वर्षगाँठ है, यह तो तू लिखती ही नही। तेरी शुभकामनाएँ अवश्य पूरी होगी। शुभ प्रयत्न करनेवालो के प्रयत्न कभी निष्फल नही होते और अशुभ प्रयत्न करनेवालो के कभी फलते नही। यदि फलते दीखें तो वह केवल आभास-मात्र है।

शेष फुरसतमे लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७५) से। सी० डब्ल्यू० ६८१४ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कटक

## ३५५. पत्र : लीलावती आसरको

११ जुलाई, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू छुट्टियोमें अवश्य आना। तब हम सोच-विचार कर लेगें। वेतनके[1] बारेमें मै नारणदासको लिख रहा हूँ। क्या तू जानती है कि मेरे साथ रहने का क्या मतलब है? इसका मतलब है मजूरिन बनकर रहना। मजदूरी करते हुए जो-कुछ सीखा जा सके, सो सीखना और जो खानेको मिले, सो खाना। यदि तू इसमें प्रसन्न रह सके तो चली आना। यहाँ तुझे अलगसे कोठरी नही मिलेगी। मेरे, बा या अन्य किसीके लिए भी यहाँका रहन-सहन कठोर है। किन्तु जब तू यहाँ आयेगी तो सब-कुछ स्वय देख लेना। फिलहाल तो वहाँ रहते हुए शान्तिपूर्वक निर्धा-रित सेवा-कार्य करती रह।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०७) से; सौजन्य . लीलावती आसर

१. देखिए अगला शीर्षक।

## ३५६. पत्र : नारणदास गांधीको

११ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालको तो अब हाथसे गया ही समझो। . . .[1] लीलावतीके पत्र मिलते रहते हैं। और उसके लिए एक पत्र इसके साथ है।[2] यदि शालाके कोषमें से उसे वेतन दिया जा सकता हो तो दे दो। यदि यही उसके सन्तापका कारण हो तो उसका उपाय करना।

मैथ्यूसे शारीरिक श्रमका काम अवश्य लेना। प्रत्येक कक्षा कितने समयकी होती है?

कनु आनन्दपूर्वक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

## ३५७. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

मगनवाडी, वर्धा
१२ जुलाई, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

अब तो अम्बालालभाई वहाँ पहुँच गये होंगे। वे एक बन्धन-जैसे बन गये हैं किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि मौका आनेपर उन्हें भिक्षाकी झोली भर देनेसे मुक्ति मिल गई है। इसलिए तुम जाना और उन्हें पूरा बजट समझा देना। वे जो दें सो ले लेना और जो कहें सो मुझे लिखना। शंकरलालके आनेपर मैं उनसे बात करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन०, ३९९०) से। सी० डब्ल्यू० १२६ से भी, सौजन्य : परीक्षितलाल ल० मजमूदार

१. साधन सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

## ३५८. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

१२ जुलाई, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारा लबा खत मिला। आनंद हुआ। इसके सिवा मैं तुमारा मानस नही समज सकता था। तुमारे खतमे क्रोध, आवेश और अभिमान है। ऐसा कहना कि चर्खा-सघके सचालकोने बिगाडा है, प्रतिष्ठान ही ने सब-कुछ किया है तो भी प्रतिष्ठानको ही सब-कुछ सहना पड़ा है, अन्नदा इत्यादि द्वेष करते है — यह सब अनुचित विचार है और अभिमानजन्य है। इन सब बातोका उत्तर मैं खतसे नहि दूगा। तुमारे यहा आ जाना है। तब तुमको शाति मिलेगी और मुझको भी। साथमे सतीशबाबुको लाना। वे न आ सके तो कोई हरज नही। जो निर्णय करेगे वह आवश्यकता होनेसे उनको बतायेगे और अमल करेगे। जितनी जल्दी से आ सकती है आ जाओ। यहा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१२) से।

## ३५९. सलाह : किशूको[1]

[१३ जुलाई, १९३५ के पूर्व]

निश्चय ही यह कपडा आपके लिए स्वदेशी है, पर यह वह कपडा नही है, जो आपको हिन्दुस्तानमे खरीदना चाहिए। 'जैसा देश वैसा भेस' यह कहावत कुछ निरर्थक नही है। जिस देशका हम नमक खाते हो, वहाँके रहन-सहन और रीति-रिवाजोके अनुसार चलने का हमे जरूर प्रयत्न करना चाहिए। जब मै दक्षिण आफ्रिकामें था, तब जहाँतक मुझसे हो सकता था, आफ्रिकाकी बनी हुई चीजोको काममे लानेकी कोशिश किया करता था। इसलिए अगर आपको कोई खास आपत्ति न हो तो मैं

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक-पत्र) से उद्धृत। पत्रमें महादेव देसाईने बताया है कि आश्रममें किशू नामक एक जापानी भिक्षु ठहरे हुए थे। उन्हें कुछ कपडेकी जरूरत हुई तो वे बाजारसे सस्ता जापानी कपडा खरीद लाये। कपडेका बडल देखकर गांधीजी ने उन्हें यह सलाह दी थी। देखिए "भाषण: वर्धा आश्रममें", २०-७-१९३५ के पूर्व।

तो आपसे खादी पहनने के लिए ही कहूँगा। खादी कुछ महँगी तो जरूर मिलती है, लेकिन तब आप जरूरतसे कुछ कम कपड़ेमें काम चलानेकी कोशिश कर सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

# ३६०. आदर्श और व्यवहार[1]

हमारे अन्दर प्रकाश और अन्धकार, सत्य और असत्य, राम और रावणके बीच शाश्वत संग्राम चल रहा है। यह युद्ध तो हमें अपनी ताकत-भर जारी रखना ही है, पर हमें अपनी मर्यादाओंका हमेशा ध्यान रखना होगा। अर्जुन अपनी मर्यादाओंको भूलने ही वाला था कि भगवान् कृष्णने उसे ऐसा करने से रोका। अहिंसा जीवन का नियम है, पर यदि मैं साँपसे डरता हूँ तो उस समय मेरा क्या कर्त्तव्य है? मनसे तो मैं पहले ही साँपका वध कर चुका, सिर्फ मेरी शारीरिक निर्बलता ही बाधा दे रही है। उस समय मेरा धर्म कहता है कि 'उसे मार डाल। उसे मारनेसे बचने का तेरा जो यह मिथ्या प्रयत्न है वह त्याग दे।' यही बात ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रमके विषयमें भी है। *आजीवन ब्रह्मचर्य* एक ऐसी वस्तु है जिसकी कामना हमें अपनी समस्त श्रद्धाके साथ करनी चाहिए, पर जो अपनी विषय-वासनाको काबूमें नहीं रख सकता, जिसका मन और इन्द्रियाँ कामतृप्तिके लिए तडप रही हैं, वह तो निश्चय ही गृहस्थाश्रममें प्रवेश करके शुद्ध गृहस्थ-जीवन बिताये। उसके लिए आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रतका प्रयास व्यर्थ है। आदर्शमें तो वह वही अखण्ड श्रद्धा रखेगा पर उस आदर्शतक वह आत्मसंयमकी क्रमिक साधनाके द्वारा धीरे-धीरे ही पहुँचनेका प्रयत्न करेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

१. यह महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से लिया गया है। इसके लिखे जानेका प्रसंग समझाते हुए महादेव देसाई कहते हैं: "जीव-मात्र एक हैं", २२-६-१९३५ शीर्षकसे लिखे लेखमें गांधीजी ने उन सभी प्रश्नोंके उत्तर दे दिये हैं जो उनके विश्वास और आचरणके बीच दिखनेवाले सतही अन्तरको लक्ष्य करके पूछे गये थे। उनसे निजी तौरपर पूछे गये ऐसे ही प्रश्नोंका एक उत्तर उन्होंने [शायद "पत्र: कृष्णचन्द्रको", ३-७-१९३५] भेजा जिससे उनकी और जिज्ञासुओंकी स्थिति — यदि उसके और भी स्पष्ट किये जाने की गुंजाइश थी तो — स्पष्ट हो गई है।"

## ३६१. पंजाबके हरिजन और कुएँ

ऊपर दिया गया पत्र[1] मैं खुशीसे छाप रहा हूँ। पजाव हरिजन सेवक संघके मन्त्री लाला मोहनलालसे इस पत्रके सम्बन्धमे यथोचित कार्रवाई करने के लिए कह रहा हूँ। कुओके सम्बन्धमे हरिजनोकी जो भी जरूरते सघकी नजरमे आयेगी, उन सबको पजाब सफाई बोर्डके ध्यानमे अवश्य लाया जायेगा। हरिजन सेवक संघकी नीति सरकार द्वारा किये कार्यको दुबारा करने की नही, बल्कि जहाँ कही सम्भव हो, उससे रह गई कमीको पूरा करने की है। जहाँ जरूरत महसूस होती है, संघ वही कुएँ खुदवा रहा है। यहाँ मैं इस बातका उल्लेख कर दूँ कि ब्रिटिश भारतमे कानूनी तौरपर तो हरएक जगह हरिजनोको यह अधिकार है कि सार्वजनिक कुओका प्रयोग दूसरोके साथ-साथ वे भी कर सकते है, लेकिन व्यावहारिक रूपमें होता यह है कि सवर्ण हिन्दू और कभी-कभी दूसरे लोग भी हरिजनोको इनका इस्तेमाल करने से जबर-दस्ती रोक देते है। हरिजन लोग यदि इन कुओका इस्तेमाल करने का साहस करें तो उन्हे सवर्ण हिन्दुओके हाथो कठोर शारीरिक दण्डका भागी बनना पड़ता है। जहाँतक मेरी जानकारीका सम्बन्ध है, पंजाबमें स्थिति इससे भिन्न नही है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १३-७-१९३५

## ३६२. मानक मजदूरीकी आवश्यकता

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघने अपने एजेंटो और दूसरे लोगोके नाम निम्न-लिखित प्रश्नावली भेजी है, जिसके उत्तर प्रधान कार्यालय, वर्धाके पास आगामी १ अगस्तसे पहले पहुँच जाने चाहिए:

> यह प्रस्ताव किया गया है कि अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके आश्रयमें बनने या बिकनेवाली तमाम चीजोंके सम्बन्धमें हमें यह आग्रह रखना चाहिए कि उनको बनानेवाले ग्रामीण कारीगरोंको अपने श्रमका पूरा पारिश्रमिक मिले। इसके लिए कामकी मजदूरीका एक मानक निश्चित करना जरूरी होगा। यह मानक कामकी समान मात्राके लिए, स्त्री-पुरुष दोनोंके लिए, एक ही होना

१. पंजाब सफाई बोर्डके सेक्रेटरी के० ए० रहमानका २८ जून, १९३५ का पत्र यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है। पत्र-लेखकने २७ जून, १९३५ के सिविल एण्ड मिलिटरी गजटमें पंजाबके हरिजनोंके लिए पीनेके पानीके विषयमें प्रकाशित एक लेख पढ़कर बताया था कि "गाँववालों को पीनेका पानी उपलब्ध करानेके लिए हालके वर्षोंमें लाखों रुपये खर्च किये गये हैं" और इस सम्बन्धमें "हरिजनों व गैर-हरिजनोंमें कोई भेदभाव" नहीं किया गया है।"

चाहिए। उसका आधार न्यूनतम निर्धारित उत्पादनके साथ आठ घंटेका कार्य-दिन माना जा सकता है। यह मजदूरी मालकी लागतमें शामिल हो जायेगी और कीमत इसके लिहाजसे मुकर्रर की जानी चाहिए। आम तौरपर शायद हम होड़वाले बाजारमें कीमतें तय न कर सकें, परन्तु उन चीजोंके लिए हम ऐसा कर सकते हैं, जो प्रतियोगिताके क्षेत्रमें नहीं आतीं और साथ ही उस मालके लिए भी हम ऐसा कर सकते हैं, जो अपने ऐसे विशेष गुणोंके कारण, जिनकी ग्राहक कद्र करते हैं, पसन्द किया जाता है।

यह प्रश्नावली नीचे लिखे मुद्दोंपर आपकी राय प्राप्त करने के लिए भेजी जाती है :

१. क्या आपको न्यूनतम दैनिक मजदूरी नियत कर देना और क़ीमतें तय करके मजदूरोंको वह मजदूरी प्राप्त होते रहने की निश्चित व्यवस्था कर देना व्यावहारिक प्रतीत होता है?

२. क्या हमें अपना अन्तिम मानक तय करके उसकी ओर बढ़ना चाहिए या एक न्यूनतम मानक अपनाकर काम शुरू कर देना चाहिए। और तब जैसे-जैसे सफलता मिलती जाये उसे बढ़ाते जाना चाहिए?

३. यह मानक किस आधारपर निश्चित किया जाये? क्या आप फिल-हाल केवल भोजनका विचार करके और यह समझकर कि कपड़ा अपने-आप तैयार कर लिया जाये, कोई निर्वाह-योग्य मजदूरी सुझा सकते हैं? क्या आध आना फी घंटा बहुत कम होगा?

अखिल भारतीय चरखा संघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोप-कारी संस्थाओंके लिए इस व्यापारिक नियमका अनुसरण करना ठीक नही है कि सबसे सस्ता खरीदे और सबसे महँगा बेचे। चरखा संघने अवश्य ही सबसे सस्ता खरीदने की कोशिश की है। परन्तु इसकी चर्चा अन्यत्र की जायेगी।[1] खादीके विकासके अपने अनुभवका लाभ ग्रामोद्योग सघको देने की इच्छासे मैंने उसके प्रभावमें काम करने-वाले कारीगरोको मिलनेवाली मजदूरीके बारेमे चर्चा छेड़ी। उसीके परिणामस्वरूप यह प्रश्नावली जारी की गई है।

यह तो पता लग ही चुका है कि एजेंटोमे जरूरत की चीजे यथासम्भव कमसे-कम मूल्यमे तैयार करानेकी मनोवृत्ति होती है। काट-छाँट कारीगरोकी कमाईमें न की जाये तो और किसकी कमाईमे की जाये? इसलिए यदि एक न्यूनतम दर तय न कर दी जायेगी तो ग्रामीण कारीगरोको नुकसान पहुँचनेका पूरा डर है, हालाँकि उन्हीकी खातिर ग्रामोद्योग सघ कायम किया गया है।

धीरजके साथ सब-कुछ बर्दाश्त करनेवाले गरीब ग्रामवासियोका हम बडे लम्बे अर्सेसे शोषण करते रहे है। ग्रामोद्योग संघको परोपकारकी आड़मे उस शोषणको और भी तीव्र नही कर देना चाहिए। उसका लक्ष्य यह नही है कि गाँवकी चीजे

१. देखिए अगला शीर्षक।

सस्तेसे-सस्तेमे' तैयार की जायें, वल्कि यह है कि जीनेके लिए काफी मजदूरीपर वेकार ग्रामवासियोको काम दिया जाये।

यह दलील दी जाती है कि ऐसे किसी कदमसे, जिससे गाँवोमें बनी हुई वस्तुओ की कीमत बढ सकती है, वह हेतु विफल हो जायेगा जिसके लिए ग्रामोद्योग सघकी स्थापना हुई है। इसका कारण बताते हुए यह कहा जाता है कि कीमत बहुत ज्यादा होगी, तो गाँवोमे बनी चीजोको कोई नही खरीदेगा। किसी चीजकी वह कीमत ऊँची कैसे समझी जा सकती है जिस कीमतसे उत्पादकको केवल निर्वाह-योग्य मजदूरी मिले? हमे ग्राहकोको यह शिक्षा देनी होगी कि वे लोगोकी दुरवस्थाको समझें। यदि हमे करोडो मेहनतकशोके साथ न्याय करना है, तो उन्हें अपने कामकी उचित मजदूरी देनी ही होगी। हमे इतनी मजदूरी उन्हे देनी ही चाहिए, जिससे उनका निर्वाह हो सके। हमे उनकी वेवसीका लाभ उठाकर ऐसी मजदूरी नही देनी चाहिए, जिससे एक वार भी उन्हें मुश्किलसे भरपेट खानेको मिले।

यह विलकुल स्पष्ट है कि सघको मिलके मालसे स्पर्धा करने से इनकार कर देना चाहिए। जिस खेलमे हम जानते है कि हमारी हार होगी, उसमे भाग लेनेसे क्या लाभ? जहाँ बात पैसे की होगी वहाँ तो उत्पादको और व्यापारियोंकी बडी-बड़ी पेढ़ियोंके मण्डल, चाहे वे स्वदेशी हो या विदेशी, मनुष्यके हाथोसे बनी वस्तुओको होड़मे कभी भी टिकने न देगे। सघ जो करना चाहता है वह यही कि झूठे और मानव-कल्याणका खयाल न करनेवाले अर्थशास्त्रके स्थानपर सच्चे और मानव-हितका खयाल करनेवाले अर्थशास्त्रको प्रतिष्ठित किया जाये। मानवका धर्म विनाशकारी स्पर्धा नही, बल्कि जीवनदायी सहयोग है। सहृदयताकी अवहेलना करना यह भुला देना है कि मनुष्यकी भावनाएँ भी होती है। यदि हम ईश्वरके प्रतिरूप है, तो चन्द आदमियोकी भलाई नही, अधिकाश की भलाई भी नही, वल्कि सबकी भलाई हमारे जीवनका लक्ष्य होना चाहिए।

ग्रामोद्योग सघ-जैसी परोपकारी संस्था उन समस्याओपर विचार करने से बच नही सकती, जो इस प्रश्नावलीमे उपस्थित की गई है। यदि सच्चा हल अव्यावहारिक दिखाई देता हो, तो संघका प्रयत्न उसे व्यावहारिक बनाने का होना चाहिए। सत्य सदा व्यावहारिक होता है। इस तरह सोचे तो संघके कार्यक्रमको प्रौढ़-शिक्षणकी सज्ञा देना उचित ही होगा।

और यदि सघको अपने तत्त्वावधानमे काम करनेवाले कारीगरोको निर्वाह-योग्य वेतन दिलाना है, तो उसे कारीगरोके घरके आय-व्यय पर नजर रखनी होगी और यह देखना होगा कि एक-एक पाईका, जो उन्हें दी जाती है, क्या और कैसे उपयोग होता है।

सबसे कठिन प्रश्न तो न्यूनतम या निर्वाह-योग्य मजदूरी तय करने का है। मैंने यह सुझाया है कि किसी अच्छी योग्यतावाले कारीगरके बनाये हुए किसी खास माल की निश्चित मात्राको उसके आठ घटेका कठिन परिश्रम मानकर उसकी आठ आने मजदूरी दी जाये। आठ आने एक सूचक-मात्र है. जो जीवनके लिए आवश्यक वस्तुओ

की· एक निश्चित मात्राका संकेत करता है। यदि पाँच आदमियोंके परिवारमें दो पूरे काम करनेवाले हैं तो वे प्रस्तावित दरसे ३० रुपये मासिक कमायेंगे। इसमें छुट्टी या बीमारीका एक भी दिन हिसाबमें नहीं लिया गया है। पाँच खानेवालों के लिए ३० रुपये माहवार कोई बहुत बड़ी आमदनी नहीं है। इस प्रस्तावित प्रणालीमें स्त्री-पुरुष या छोटी-बड़ी उम्रका कोई भेद अनिवार्यत· नहीं रखा गया है। परन्तु जिनके पास प्रश्नावली भेजी गई है, वे अपने अनुभवके आधारपर इन प्रश्नोंके उत्तर दें।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

## ३६३. अखिल भारतीय चरखा संघ

जो बात अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके तत्त्वावधानमें काम करनेवाले कारीगरों पर लागू होती है, वही अ० भा० चरखा संघके प्रवृत्ति क्षेत्रमें काम करनेवाले कारीगरों पर भी लागू होती है। अन्तर केवल इतना ही है कि ग्रामोद्योग संघको पहलेकी किसी परम्परा-परिपाटीकी बाधाके बिना काम करना है। चरखा संघको अगर तमाम कारीगरोंके लिए समान मजदूरीका नियम चलाना है तो उसे इन पन्द्रह वर्षोंसे चली आ रही परम्परा-परिपाटीको मिटाना होगा। अगणित कतैयोंकी सहायता करने में उसे बुनकरों, जो कतैयोंके दसवें भागके बराबर हैं, और उनके बाद धुनियों, ओटनेवालों और दूसरे कारीगरोंकी समस्यासे निबटना होगा। प्रत्येक वर्गकी मजदूरीकी दरमें अन्तर है। बुनकरकी कमाई और कतैयेकी कमाईमें इतना अधिक अन्तर है कि उनमें समानता लाना असम्भव-सा मालूम होगा। कतैयेको जहाँ एक घंटेमें २ पाइयाँ मिलती हैं, वहाँ बुनकरको कमसे-कम एक आना और कभी-कभी दो आने भी मिलते हैं। कतैयेकी मजदूरीका दो पाईसे बारह पाईपर लाना बहुत बड़ा सवाल है — खासकर जब हमारा इस बातपर ध्यान जाता है कि कतैयोंकी संख्या करीब डेढ़ लाख है।

मगर चरखा संघको अगर अपने विरदके योग्य बनना है तो उसे उचित काम करनेके लिए अपने अन्दर साहस जुटाना ही पड़ेगा। कठिनाइयाँ देखकर हमें हिम्मत नहीं हारनी है, बल्कि बहादुरीसे उनका सामना करना है। जो लोग दरिद्रनारायणके प्रति अपने प्रेमके कारण खादी खरीदते हैं, उनके बारेमें हमें यह भरोसा रखना चाहिए कि आजतक खादीकी जो कीमत उन्होंने दी है उससे अब अधिक भी देंगे। अगर यह साबित हुआ कि लोगोंपर हमारा ऐसा भरोसा करना गलत था तो खादीकी बिक्री चाहे जितनी गिर जाये, उसके लिए हमें तैयार रहना चाहिए। जो लोग खादीके प्रेमी हैं वे, खादी कितनी ही महँगी हो जाये, उसे जरूर खरीदेंगे — यदि उन्हें यह मालूम है कि खादी खरीदने में लगाये सौ रुपयेमें से पचानवे रुपये दरिद्रनारायणकी जेबमें जाते हैं।

पर अन्तमें देखा जाये तो खादीका व्यापारिक उपयोग उसका गौण और छोटेसे-छोटा उपयोग है। ऐसे एक करोड़से अधिक मनुष्य, यानी नगर-निवासी नहीं निकलेंगे, जिन्हें खादी खरीदने की जरूरत पड़ेगी। इतने मनुष्योंको तो पूरा समय काम करनेवाले बीस लाख कारीगर आसानीसे और मजेसे उनकी जरूरतका कपड़ा दे सकते हैं। खादीका पहला ध्येय तो यह है कि किसानोंका वह एक पूरक उद्योग बन जाये। उन लोगोंको यह सिखाना है कि अपने उपयोगके लिए वे खुद अपना सूत कात लिया करें, और उसका कपड़ा भी खुद ही या तो बुन लें अथवा बुनकरोंसे बुनवा लिया करें। जिस तरह वे खुद अपना खाना पकाते हैं और खुद ही उसे खाते हैं, उसी तरह खुद ही खादी तैयार करें और खुद ही उसे खरीदें, अथवा यों कहिए कि खुद ही उसका उपयोग करें। इस काममें हमने अभीतक शायद ही सच्चे दिलसे हाथ लगाया हो। श्री बैंकर चुपचाप धीरे-धीरे इस प्रकारका परिवर्तन कर रहे हैं। जब कि उधर यह परिवर्तन किया जा रहा है, हमें कतैयेको उसका पर्याप्त पारिश्रमिक देकर उसके प्रति अपना फर्ज पूरा करना चाहिए। उन्हें मजदूरीमें नित्य आठ आने दिये जायें या इससे कम? चाहे जो सीमा बाँध दी जाये, पर उतना पैसा पानेकी योग्यताके लिए कतैयेको प्रति घंटा कितना सूत कातकर देना चाहिए? यही प्रश्न ओटनेवालों, धुनियों, बुनकरों और खादीके दूसरे तमाम कारीगरोंके सम्बन्धमें हमें हल करना है।

खादीमें जो लोग दिलचस्पी लेते हैं, और खादी-शास्त्रका जिन्हें जरा भी ज्ञान है, क्या वे मजदूरीकी दरमें इस प्रस्तावित परिवर्तनके सम्बन्धमें अपनी सम्मति भेजने की कृपा करेंगे? यदि वे इस परिवर्तनके पक्षमें हों, तो वे यह भी लिखें कि मजदूरी की कमसे-कम क्या दर वे निश्चित करते हैं।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

## ३६४. सदस्य सचेत हो जायें

श्रीयुत कुमारप्पाने मेरे पास निम्नलिखित सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है:

**साधारण सदस्योंको याद दिलाया जाता है कि उन्हें संघके ११ वें उपनियमके अनुसार बराबर हर तीसरे महीने अपने कामकी रिपोर्ट मन्त्रीके पास भेजनी है। वह उपनियम यह है :**

**"संघके प्रत्येक साधारण सदस्यको अपने कामकी तिमाही रिपोर्ट मन्त्रीके पास इस तरह भेजनी होगी कि सम्बन्धित तिमाही की अवधि पूरी होनेके बाद एक महीनेके अन्दर प्रधान कार्यालयमें पहुँच जाये। यदि किसी साधारण सदस्यके कामकी रिपोर्ट लगातार तीन तिमाहियोंतक न आयेगी, तो वह संघका सदस्य नहीं रह जायेगा।"**

जिन साधारण सदस्योंने अबतक रिपोर्ट न भेजी हो, उनसे यह प्रार्थना है कि वे ३० जून, १९३५ तकके कामकी रिपोर्ट तुरन्त भेज दें।

श्रीयुत कुमारप्पा एक सजग मन्त्री हैं, और वैसे ही सघके अध्यक्ष श्री जाजूजी भी है। वे दोनो यह मानते है कि किसी भी सस्थाके नियमोका या तो कड़ाईके साथ पालन होना चाहिए या फिर उन्हें रद कर देना चाहिए। इस उचित नियमके रद किये जानेकी चूँकि जरा भी सम्भावना नही है, इसलिए मुझे आशा है कि सघके सदस्य इस नियमका शब्दश और भावनात. भी पालन करे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-७-१९३५

## २६५. पत्र : छगनलाल जोशीको

वर्धा
१३ जुलाई, १९३५

चि० छगनलाल (जोशी),

तुम्हारा पत्र स्वागतके योग्य है। मैं यह मानता था कि अब तुममें और नारणदासमे ठीक पटने लगी है। किन्तु देखता हूँ कि यह मेरी भूल थी। यह बहुत ही अच्छा हुआ कि तुमने साफ-साफ पत्र लिखा। वहाँकी पाठशालाके सम्बन्धमे मेरे पास एक पत्र आया है। मैं जाँच-पड़ताल कर रहा हूँ। तुम्हारे मनमे जो-कुछ है, क्या उसे तुमने नारणदासके सामने रखा? तुम्हारे पत्रसे मैं देखता हूँ कि तुम्हारा झुकाव छोड़कर चले गये शिक्षकोकी ओर है। क्या तुम यह जानते हो कि उनकी माँग क्या है? क्या तुमने इस सबके बारेमें भाई नानालालके साथ विचार-विमर्श किया है?

बापा[1] लिखते है कि अब तुममे और भाई जीवणलालमे अच्छा समझौता हो गया है। किन्तु तुम्हारे पत्रसे सन्देह होता है। जो हो सो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३२) से।

१. अमृतलाल वि० ठक्कर।

## ३६६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१३ जुलाई, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला है। अच्छा है। मुझे तो कहीं गलती प्रतीत नही होती है। लेकिन मुझे पूरा डर है कि जब कुछ शर्तें करने लगेंगे तब कुछ नही होगा। जैसे कैदीयोको छोड़ना, डेटेन्यूको छोड़ना, अडामान बंध करना, सत्याग्रहीयोकी जमीन वापिस करना, आज ऐसी बाते करना शायद अनुचित माना जाय। यह सब जिसको [illegible] करे वह भले करे। आजका वायुमण्डल कायम रहेगा तो मुझे समझौताकी कोई आशा नही हैं। तुमारे [illegible] बाते करते है उसमें इतना अव्यवहार्य वहम मालुम होता है कि वस्तुस्थिति जैसी है वह ऐसे ही स्वीकृत होगी। यदि यह डर सच्चा है तो समझौताका होना असंभव है। इससें अधिक इस वखत नही कह सकता हूं। इसका यह अर्थ नही है कि जो प्रयत्न कर रहे हो उसे छोड़ दिया जाय। तुमारा प्रयत्न तो चलना ही चाहिये; जैसे चल रहा है। परिणाम तो ईश्वर के ही हाथमें है। तबियत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ७९७२ से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

## ३६७. पत्र : लक्ष्मीनिवास बिड़लाको

१३ जुलाई, १९३५

चि० लक्ष्मीनिवास,

तुमारा खत मिला है। पिताजी पर खत इसके साथ है। एरमेलसे[1] भेज दो। सब अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०११ से, सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. हवाई डाक।

## ३६८. पत्र : हीरालाल शर्माको

वर्धा
१४ जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

इसके साथ मी० ग्रेगका खत है। उससे पता चला कि वहा कैसे हाल है। इसकी कुछ चिन्ता नही है। फी देना पडेगा तो देंगे। यहा एक भाई आये थे। वह कहते है आजकल कैलागकी ख्याति इतनी नही है जितनी दूसरोकी। मै उनके नाम ठाम इत्यादि [का पता] करूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५१) से।

## ३६९. पत्र : लेसीको

वर्धा
१५ जुलाई, १९३५

प्रिय श्री लेसी,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। आपका प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण है कि मैंने उस विषयपर आपके नामका उल्लेख किये बिना 'हरिजन' में एक लेख प्रकाशित करने का साहस किया है। मै उस लेखकी एक अग्रिम प्रति इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। शनिवारको इसके प्रकाशनके पहले आप सार्वजनिक रूपसे इसका कोई उल्लेख नही करेंगे, ऐसी मै आशा करता हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ३७०. पत्र : प्रभावतीको

१५ जुलाई, १९३५

चि० प्रभावती,

तेरे दोनों पत्र मिले। बाबूजी की अनुमति लेकर तू जबतक चाहे तबतक वहाँ रहना। अब तू जल्दी ही मिलनेवाली है इसलिए अधिक नहीं लिखता। तुझे-वहाँसे क्या लाना चाहिए, ऐसी किसी चीजका नाम मुझे नहीं सूझ रहा है। वल्लभभाईसे तो अवश्य मिलेगी न? रामदास भी बम्बईमें है। उसका पता है: १ ऐग लेन, फोर्ट।[1]

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बा दिल्लीमें है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४४७) से।

## ३७१. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१५ जुलाई, १९३५

भाई खम्भाता,

तुमने अस्पतालके बारेमें जो पत्र लिखा है, उसकी नकल मुझे भेज देना। आशा है, दिन-दिन तुम्हारा स्वास्थ्य सुधरता जा रहा होगा।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६१०) से। सी० डब्ल्यू० ४४०० से भी; सौजन्य : तहमीना खम्भाता

१. पता अंग्रेजीमें है।

## ३७२. पत्र : लीलावती आसरको

१५ जुलाई, १९३५

१. जब 'हैव'का अर्थ प्राप्त करना हो तो अनेक स्थानों पर 'गैट'का प्रयोग किया जा सकता है; जैसे, "आई मस्ट हैव इट" या "आई मस्ट गैट इट"।

२. 'मस्ट' और 'हैव'के प्रयोगमे कुछ बहुत अन्तर नही है।

३ "इफ यू हैड डन दिस" अथवा "हैड यू डन दिस" भी कह सकते हैं, अर्थात् यदि हम 'इफ'के बदले 'हैड'का प्रयोग करे तो उसका भी वही अर्थ होगा। प्रयोग करने से यह और अच्छी तरह समझमे आ जायेगा।

४. जिस सज्ञासे गिनी जा सकनेवाली वस्तुका बोध होता है उसके पहले 'आर्टिकल' (उपपद) अवश्य लगाना चाहिए। 'ए'का अर्थ हम 'एक' मानें, इसलिए 'द'का प्रयोग बहुवचनमे किया जा सकता है।

जहाँ 'दैट'का प्रयोग हो वहाँ 'द'का प्रयोग किया जा सकता है; जैसे 'द' या "दैट मैन हूम यू नो इज हीअर"से यदि बहुत लोग हों तो 'द' या "दोज मैन हूम यू नो आर हीअर।"

आशा है, अब तेरा मन शान्त हो गया होगा। एक दिन नीमके पत्तोका रस अधिक ले लेनेके कारण मेरा पेट थोड़ी देर दुखता रहा। किन्तु वह तुरन्त जाता रहा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०१ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

## ३७३. पत्र : नारणदास गांधीको

५ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

अब तो हरिलालको बिलकुल भूल जाओ। मैं तो लगभग भूल गया हूँ।

लीलावतीका पाठ[१] इसके साथ है।

वजुभाईने एक पत्र और भेजा है। किन्तु तुम्हारा उत्तर मिलने के बाद यदि आवश्यक लगेगा तो तुम्हे भेज दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

धीरूकी माँगके बारेमें तुम क्या सलाह देते हो? तुम्हें यह ध्यान है न कि वह शान्तिनिकेतन जाना चाहता है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६४ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

## ३७४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

१५ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

देवशर्माजी के पत्रका यह अंश तुमसे सम्बन्धित है। मेरा सुझाव यह है कि इस भाईको तुम रख लेना। इससे हिन्दी शिक्षककी तुम्हारी माँग कुछ हदतक पूरी हो जायेगी। उन्हें सीधे पत्र लिख देना :

गांधी सेवाश्रम
डा० गुरुकुल काँगड़ी
जिला – सहारनपुर (सं० प्रा०)

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८५) से।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

# ३७५. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
१६ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला था। आशा है, तुम्हारी तबीयत लगातार सुधर रही होगी। यदि तुम एक चाकू, बाँस, टूटी स्लेटका एक टुकड़ा और एक परकार ले लो तो तुम खुद तकली बना सकती हो। परकारकी सहायतासे तुम उस स्लेटका गोल टुकड़ा काट सकती हो और फिर चाकूकी नोक या कीलसे स्लेटके उस गोल टुकड़ेमे एक सीधा छेद कर सकती हो। मनोरंजनके तौरपर इसे बनाने की कोशिश करो। त्रिमूर्ति यही है: मेरी सी०[1], मेरी आई (अर्थात् इचम)[2] और सुमित्रा। मेरी सी० की शिकायत है कि मैंने उसे दहीके आहारपर रखा है, इससे उसे जुकाम हो गया है।

सस्नेह,

बापू

श्री मेरी बार
वेनलेस टी० बी० सेनिटोरियम
मिरज

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५३) से। सी० डब्ल्यू० ३३८३ से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

१. मेरी चेजली, कनाडाकी एक क्वेकर।
२. ये मेरी चेजलीकी सलाहपर भारतमें ग्रामोद्धार-कार्य करने के लिए इंग्लैंडसे आई थीं।

## ३७६. पत्र : के० वी० रत्नम्‌को

१६ जुलाई, १९३५

प्रिय रत्नम्,

श्री कुमारप्पाके द्वारा आपने मुझे जो कलम भिजवाई है, उसके लिए धन्यवाद। कलम मुझे मिल गई है और मुझे ऐसा लगता है कि बाजारोंमें जो विदेशी कलमें मिलती हैं, उनकी जगह यह बहुत अच्छी चीज है।

आपका,
मो० क० गांधी

के० वी० रत्नम् एण्ड ब्रदर्स
रत्नम् फाउन्टेन पेन वर्क्स
राजामुन्द्री

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८१६) से।

## ३७७. पत्र : भाईलाल पटेलको

१६ जुलाई, १९३५

भाई भाईलाल,

तुम्हारा पत्र और मनीआर्डर मुझे मिल गये थे। तुम अच्छा काम कर रहे हो। तुम्हारा पत्र मैं 'हरिजनबन्धु'को[1] भेज रहा हूँ।

बापूके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३३०१) से।

१. यह पत्र "एक हरिजन-कार्यकर्ताके अनुभव" शीर्षकसे हरिजनबन्धु, २१-७-१९३५ के अंकमें प्रकाशित हुआ था।

## ३७८. पत्र : कमलनयन बजाजको

१६ जुलाई, १९३५

चि० कमलनयन,

पिताजी से सुना कि . . .[1] अब तुझसे शादी नही करना चाहती, इस कारण कल ही उसे मुक्ति दे दी। हमे यही शोभा देता है। आशा है, तू स्वस्थ होगा। तेरा नसीव अच्छा ही है। इस कारण तुझे योग्य स्त्री ही मिलेगी। फिलहाल तो तू अपने अध्ययन और अपने चरित्रके गठनमें जी-जानसे लग जा। मुझे पत्र लिखना तो बाकी है ही। अपनी अंग्रेजी सुधारना। रुचिपूर्वक अध्ययन करना, शरीर मजबूत बनाना। मजदूरी करते हुए ऊबना मत, उसमे शर्मकी तो बात ही क्या है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०५०) से।

## ३७९. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

वर्धा
१८ जुलाई, १९३५

प्रिय चार्ली,

मुझे खुशी है कि तुम्हारे दिमागसे किताबका बोझ उतर गया है।[2] बेशक, शिमला इसके लिए ठीक जगह थी।

खम्भाताके बारेमे तुम्हारी बात समझता हूँ।[3]

जहाँतक नौजवान बंगालीका सम्बन्ध है, कुछ सीखने की इच्छाकी बात छोड़ दी जाये तो प्रस्तावित पुस्तक[4] यदि बहुत ही श्रेष्ठ कोटिकी न होगी तो उसका

१. नाम छोड़ दिया गया है।

२. सी० एफ० एन्ड्र्यूजने हालमें अपनी पुस्तक इंडिया एण्ड ब्रिटेन समाप्त की थी।

३. देखिए "पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको", ३०-६-१९३५।

४. सी० एफ० एन्ड्र्यूज और गिरिजा मुखर्जी द्वारा लिखित द राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ कांग्रेस इन इंडिया; १९३८ में जॉर्ज एलेन एण्ड अनविन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित; देखिए "पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको", २९-७-१९३५ भी।

कोई महत्त्व नही होगा। तुम्हे यह भी बता दूँ कि डॉ० पट्टाभि कांग्रेसका इतिहास[1] लिख रहे हैं।

हाँ, जवाहरलालकी रिहाई[2] एक महत्त्वपूर्ण घटना होगी। यदि जोर-जबर्दस्तीकी बात न रहे तो समाजवादका सिद्धान्त सचमुच बहुत आकर्षक रहेगा।

सस्नेह,

मोहन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९०) से।

## ३८०. पत्र : अमृतकौरको

१८ जुलाई, १९३५

प्रिय अमृत,

यह पत्र केवल अपनी यह शुभकामना व्यक्त करने को लिख रहा हूँ कि पूनामें तुम्हारा समय आनन्दपूर्वक बीते।

कहने की जरूरत नही कि बाकीके ४०० रु० के बारेमें तुम वही करो जो ऐसी परिस्थितिमे तुम इस रकमका करती। मैं तो इतना ही कहना चाहता-था कि जब तुम्हें सन्देह हो तभी तुम मेरी सलाहके लिए रुकी रहो।

एक या दो अगस्तको तुम्हारे आनेकी राह देखूंगा।

इसके साथ चार्लीके लिए एक पत्र[3] भेज रहा हूँ।

सस्नेह,

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६८७३ से भी

१. बादमें हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस शीर्षकसे प्रकाशित।

२. कमला नेहरूकी बीमारीके कारण कैदकी अवधि समाप्त होनेसे पहले ही वे अल्मोड़ा जेलसे २ सितम्बर, १९३५ को रिहा कर दिये गये थे।

३. देखिए पिछला शीर्षक।

## ३८१. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

१८ जुलाई, १९३५

चि० हेमप्रभा,

तुमारे बीमार तो नही पड़ना चाहीये। अगर मेरे खतोंके कारण बीमार हुई है तो तुमारी आज्ञाकितताको[1] हानि होती है। मेरे कुछ भी कहने का तुमारे दु:ख मानना नही है। शीघ्र अच्छी हो जाना है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१३) से।

## ३८२. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
१९ जुलाई, १९३५

प्रिय अम्बुजम्,[2]

तुम्हारे पत्रोसे मैं कभी ऊब नही सकता, क्योकि तुम्हारी सच्ची खुशीमे मेरी दिलचस्पी है।

तुम किसी आते-जातेके हाथ वह थोड़े बड़े आकारवाला कुकर भेज सकती हो। अभी उसकी कोई जल्दी नही है।

तुम्हें अच्छी पुत्रवधू मिली, यह जानकर मुझे खुशी हुई।

जब यह सुन लूंगा कि किचीकी अँगुली बिलकुल ठीक हो गई है तब मुझे तसल्ली होगी।

आशा है, पिताजी स्वस्थ होगे।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[3]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०३) से; सौजन्य : एस० अम्बुजम्माल

१. आज्ञाकारिता।

२ और ३. साधन-सूत्रमें सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

## ३८३. पत्र : एफ० मेरी बारको

१९ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

इलाजका जो नतीजा निकल रहा है, उसके बारेमें मेरी कोई खास राय नही है। लेकिन यह तो मेरा स्पष्ट मत है कि जब एक बार वहाँ चली गई हो तो और किसी कारणसे न सही, कमसे-कम डॉक्टरोंके प्रति न्याय करने के लिए ही इलाज पूरा करवाओ। आखिरकार, हमे उनपर इतना भरोसा तो करना ही चाहिए कि वे क्या कर रहे है, यह उन्हें मालूम है। तुम उतावली मत करो। मुझे आशा है, अन्यथा तुम ठीक होगी। दोनो मेरी यहीपर अनुभव प्राप्त कर रही है।

यहाँ रोजाना हलकी वर्षा हो रही है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५४) से। सी० डब्ल्यू० ३३८४ से भी; सौजन्य : एफ० मेरी बार

## ३८४. भाषण : वर्धा आश्रममें[1]

[२० जुलाई, १९३५ के पूर्व]

अपने मेहमानोकी विदाईके समय मैं शायद ही कभी कुछ कहता हूँ, पर आज मैं कुछ कहूँगा। इसका पहला कारण तो यह है कि हमारे ये अतिथि जापान देशके हैं, पर दूसरा और मुख्य कारण यह है कि ये भाई जिस ढंगसे हमारे यहाँ रहे हैं, उसके कारण उन्होने हमारे सामने एक सुन्दर उदाहरण कायम कर दिया है।[2] ये हमारे यहाँ चार-पाँच महीने रहे, पर इन्होने जितनी निष्ठा और आत्मत्यागकी वृत्तिसे काम किया है उतनी निष्ठा और आत्मत्यागकी वृत्तिसे किसीने नही किया। ये इस तरह चुपचाप काम करते रहते थे कि हमे शायद ही कभी इनकी उपस्थितिका पता चलता था। इनकी प्रार्थनाकी एकाग्रता देखकर तो कोई भी मुग्ध रह जायेगा। एक ही मन्त्रका दिनमें चार घटेतक, और यो ही जैसे-तैसे पिण्ड छुडानेके लिए नही, किन्तु उत्साह, प्रेम और एकाग्रताके साथ जप करना कोई साधारण बात नही है।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

२. गांधीजी ने यह भाषण जापानी भिक्षु किशूकी विदाईके अवसरपर दिया था। देखिए "सलाह : किशूको", १३-७-१९३५ के पूर्व भी।

जब ये यहाँ आये, तब ये न तो भारतकी कोई भाषा जानते थे और न अग्रेजी ही। इसलिए इन्हे अवश्य ही लगा होगा कि वे कहाँ इस देशमे अजनबी-से आ पडे। पर ये अजनबी बने रहने को तैयार न थे। ये हिन्दी पढने लगे, और थोडे ही दिनोमे इन्होने हमारे साथ कुछ बोल लेने लायक हिन्दी सीख ली। पर जिस आनन्दोल्लासके साथ इन्होने इतने दिन हमारे यहाँ विताये है, उसकी मै सबसे ज्यादा कद्र करता हूँ। आप लोग कल्पना करे कि आप एक ऐसे अनजाने देशमे जा पड़े हो, जहाँ आपकी जान-पहचानका कोई भी नही, जहाँकी भाषा और रीति-रिवाज सभी आपके लिए एकदम नये है; अब आप अपने मनसे पूछिए कि जिस तरह ये हमारे यहाँ रहे है, उस तरह आप भी वहाँ रह सकते है? मुझे लगता है कि मै तो नही रह सकता, न आप लोगोमे से ही कोई रह सकता है। इसलिए मै कहूँगा कि ये भाई अपनी आत्मासे ही आनन्द-रस प्राप्त करते रहते थे। क्योकि जिस परिवेशमे ये आ पडे थे, उसमे इन्हे ऐसा आनन्द मिल ही नही सकता था। किसीने इन्हें कभी क्षुब्ध या रुष्ट होते नही देखा। ये जिधर भी जाते, आनन्द-ही-आनन्द बिखेरते रहते थे। हम इनकी इस बातकी बड़ी कद्र क़रते है। यही कारण है कि इनका बिछोह हम सबको खलेगा। हम इन्हें अपने हार्दिक सद्भावके साथ विदा करते है, और आशा करते है कि जितनी जल्दी इनसे हो सकेगा, ये हमारे यहाँ फिर आयेगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

## ३८५. तीसरे दरजेमें यात्राके सम्बन्धमें कुछ उक्तियाँ[1]

[२० जुलाई, १९३५ के पूर्व]

ऊँचे दरजेके गद्दे-तकियेपर आपको अच्छी साफ सीट मिल ही नही सकती। धूल, कचरा और पसीना वगैरा जितना इन गद्दे-तकियोमे जज्ब होता है उतना और किसीमे नही होता। और चूँकि ये गद्दे बैठने मे आरामदेह होते है इसलिए लोग इन बातोका खयाल किये बिना उनपर सहज ही बैठ जाते है। तीसरे दरजेकी सीट तो प्रतिदिन धुलती रहती है या धोई जा सकती है, और उसे आप खुद भी जितनी बार साफ करना चाहे उतनी बार साफ कर सकते है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्रके अनुसार गांधीजी के एक मित्रने तीसरे दरजेमें कभी यात्रा नही की थी, लेकिन अब इस खयालसे कि तीसरे दरजेमें यात्रा किये बिना उसमें यात्रा करनेवाले यात्रियोंकी कठिनाइयाँ दूर नहीं की जा सकतीं, उन्होंने तीसरे दरजेमें यात्रा करने का *निश्चय किया था। इसी* प्रसंगमें जब गांधीजी से उन्होंने चर्चा छेड़ी तो गांधीजी ने उपर्युक्त बातें कही।

# ३८६. अहिंसाका अर्थ

एक अंग्रेज मित्रने मुझे नीचे लिखा पत्र भेजा है:

'मद्रास मेल' में प्रकाशित एक रिपोर्टकी नकल मै इसके साथ भेज रहा हूँ। क्या आप उसे देखने की और मुझे यह बतलाने की कृपा करेंगे कि उसमें आपके शब्दोंको ठीक-ठीक उद्धृत किया गया है या नहीं? और यदि किया गया है तो क्या आप कृपाकर यह समझायेंगे कि यहाँ आपने जो मत प्रकट किया है, उसकी संगति, आप आम तौरपर जो बातें कहते रहते हैं, उनसे कैसे बैठती है? मुझे तो ऐसा लगता है कि आजतक जितने सिद्धान्तोंका उल्लेख मिलता है, उनमें यह सबसे भयंकर है। यह तो किसी भी मनुष्यको कानून अपने हाथमें ले लेने और हत्या या दूसरी किसी भी तरहकी हिंसा करने का आमन्त्रण देता है — बहाना सिर्फ यह रहेगा कि वह या तो खुद डरता है, या फिर उसके लिए हिंसाका एकमात्र विकल्प कायरताका मार्ग है जो हिंसासे भी बुरा है। अगर यह बात है तब तो बोलो जनरल डायरकी जय!

इस महीनेके ७ तारीखके 'मद्रास मेल' की वह कतरन निम्न प्रकार है:

एक प्रसिद्ध कांग्रेसीने श्री गांधीको लिखी अपनी चिट्ठीमें आन्ध्र देशके एक गाँवके हिन्दू-मुसलमानोंकी तनातनी और मुसलमानोंकी कथित सीनाजोरीका वर्णन किया था, और साथ ही यह सलाह चाही थी कि ऐसी हालतमें क्या करना चाहिए। उसके उत्तरमें वे अपने एक निजी पत्रमें लिखते हैं:

"प्रिय मित्र,

आपके द्वारा वर्णित यह स्थिति शोचनीय है। लोग अगर अपने मुसलमान भाइयोंसे डरते हैं तो उन्हें शारीरिक बलका प्रयोग करके अपनी रक्षा करने का पूरा अधिकार है।

"ऐसा न करना कायरताका काम समझा जायेगा। कायरता किसी भी तरह अहिंसा नहीं कही जा सकती। कायरता तो खुली हुई और सशस्त्र हिंसासे भी बुरी प्रकारकी हिंसा है।"

मेरे पास उस पत्रकी नकल नही है, तो भी जिसे मेरे पत्रकी नकल कहा गया है, उसमे मेरे विचारोका सार आ जाता है। पत्र-लेखकका न तो मुझे नाम याद है, न मैं उसे पहचानता हूँ। अगर वह कोई प्रसिद्ध कांग्रेसी है तो मेरा खयाल है कि मै उसे जानता होऊँगा। जैसाकि 'मद्रास मेल' के संवाददाताने कहा है, मेरा वह पत्र एक प्रश्नके उत्तरमे लिखा हुआ निजी पत्र था। इसलिए जिन परिस्थितियोंके

लिए मैने वह जवाब लिखा था, उन परिस्थितियोंको दृष्टिमे रखकर ही उसे पढना चाहिए। मैंने वह पत्र अगर अपने पास रखा होता तो उसके मुख्य अश मै अवश्य यहाँ उद्धृत करता। वह खासा लम्बा पत्र था। लेखकने उसमे गाँवके लोगोकी परिस्थितिका विस्तारके साथ वर्णन किया था और लिखा था कि यहाँके हिन्दू असहाय और भयभीत हो गये है। अहिंसा क्या चीज है, यह वे बिलकुल ही नही जानते। गाँवके मुसलमानोका जोरोजुल्म दिन-दिन बढता ही जा रहा है, और दूसरे गाँवोके मुसलमान आ-आकर इस अत्याचारको और भी शह दे रहे है। पत्र-लेखक जानना चाहता था कि ऐसी परिस्थितिमे गाँववाले क्या करे। उसे मैंने वही सलाह दी जो ऐसी परिस्थितियोमे मैंने हमेशा दी है। सन् १९२० मे जब मै अली बन्धुओके साथ यात्रा कर रहा था, तब मेरे पास यह खबर आई कि बेतियाके पास एक गाँवमें पुलिसने निरंकुशताके साथ मारपीट और लूटपाटकी है। इस विषयपर बेतियाके अपने सार्वजनिक भाषणमे[1] मैंने अपने विचार व्यक्त किये थे, और १५ दिसम्बर, १९२० के 'यंग इंडिया' मे इस सम्बन्धमे एक लेख भी लिखा था, जिसका प्रासंगिक भाग इस लेखके अन्तमे उद्धृत किया जा रहा है।

जो आदमी मरने से डरता है और जिसमें प्रतिरोधकी शक्ति नही है, उसे अहिंसाका पाठ नही पढाया जा सकता। असहाय चूहेको हम सिर्फ इसीलिए अहिंसक नही कह सकते कि वह हमेशा बिल्लीके मुँहका ग्रास बना रहता है। उसमे अगर ताकत होती तो वह उस हत्यारी बिल्लीको खुशीसे खा जाता, पर वह तो बिल्लीको देख कर भाग खड़ा होता है। हम उसे कायर नही कहते, क्योंकि प्रकृतिने उसका स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि वह इससे भिन्न व्यवहार नही कर सकता। मगर जो मनुष्य खतरा देखकर चूहे-जैसा व्यवहार करता है, उसे अगर कायर या नामर्द कहे तो ठीक ही है। उसके दिलमे हिंसा और घृणा भरी हुई है, और खुद मार खाये बिना अगर वह शत्रुको मार सके तो उसे मारना भी चाहता है। ऐसा मनुष्य अहिंसासे लाखो कोस दूर है। उसे अहिंसाका उपदेश देना बिलकुल ही अकारथ है। वीरताका लेश भी उसके स्वभावमे नहीं है। वह अहिंसाको समझ सके, इससे पहले उसे अपने उस जबर्दस्त हमलावरका, जिसके द्वारा उसे परास्त कर देनेकी पूरी सम्भावना है, सामना करना और उसके आक्रमणसे अपनी रक्षा करते हुए जानतक दे देना सिखाना है। इससे भिन्न कुछ करते है तो यह उसकी कायरताको और भी पुख्ता करना होगा और तब वह अहिंसासे और भी दूर जा पड़ेगा। यह सही है कि मै किसीको प्रत्याघात करने में मदद नही दूंगा, लेकिन अगर कोई तथाकथित अहिंसाकी ओटमे अपनी कायरताको छिपाता है, तो मै उसे यह नही करने दूंगा। अहिंसा किन तत्त्वोसे बनी हुई है, इस बातसे अनभिज्ञ बहुत-से लोग सच्चे दिलसे ऐसा मानते है कि जब कोई खतरा आये — और खासकर जिसमें जान जानेका डर हो — तब सामना करने के बजाय पीठ दिखाकर भाग जाना अधिक श्रेयस्कर है। अहिंसाके एक शिक्षककी

1. देखिए खण्ड १९, पृ० ९०-९३ और १२०-२२।

हैसियतसे मेरा यह कर्त्तव्य है कि मुझसे जहाँतक बन पड़े, ऐसे पुंसत्वहीनता-भरे विश्वासको जड़ न पकड़ने दूँ।

अहिंसा मानव-जातिके हाथोमे सबसे बडी शक्ति है। मनुष्यकी बुद्धिने जो प्रचण्डसे-प्रचण्ड अस्त्र-शस्त्र बनाये हैं, उनसे भी प्रचण्डतर यह अहिंसाकी शक्ति है। संहार कोई मानव-धर्म नही है। मनुष्य अपने भाईको मारकर नही, बल्कि जरूरत हो तो उसके हाथसे मर जानेको तैयार रहकर ही स्वतन्त्रतासे जीवित रहता है। हत्या या अन्य प्रकारकी हिंसा, फिर चाहे वह किसी भी कारणसे की गई हो, मानव-जातिके विरुद्ध एक अपराध है।

किन्तु मै यह बिलकुल स्पष्ट देखता हूँ कि अहिंसा-विषयक यह सत्य दुर्बल और असहाय मनुष्योको नही समझाया जा सकता। उन्हें तो आत्म-रक्षा करने की ही बात समझानी चाहिए।

इसपर शकाशील लोग यह दलील देगे. 'आप दुर्बल मनुष्यको अहिंसा नही सिखा सकते, और बलवानके पास उसे ले जानेका आपका प्रस्ताव नही। तो फिर यह क्यो नही मान लेते कि अहिंसा एक निरर्थक सिद्धान्त है?' इसका जवाब यह है कि अहिंसा आचरण द्वारा ही कारगर ढंगसे सिखाई जा सकती है। जब उसकी शक्ति और क्षमताका अचूक प्रदर्शन होगा, तब दुर्बल अपनी दुर्बलता छोड़ देंगे, और बल-वानोको अपने बलकी निरर्थकताका उसी क्षण पता चल जायेगा और वे नम्र बनकर अहिंसाकी सर्वोत्कृष्टता स्वीकार कर लेगे। मै यह दिखाने का प्रयत्न विनम्रताके साथ कर रहा हूँ कि सामूहिक प्रवृत्तिमे भी हम इस लक्ष्यको प्राप्त कर सकते है। यह बताने का मेरा नम्र प्रयत्न है। इन अग्रेज मित्र-जैसे आलोचकोसे मेरी यह प्रार्थना है कि वे जरा धीरज रखे।

आन्ध्रके पत्र-लेखकको मैंने जो उत्तर दिया था, उससे इन अंग्रेज मित्रने जो निष्कर्ष निकाला है, वह मेरी रायमें निराधार है। जिस पत्रका मैंने जवाब दिया था, उस पत्रके बिना भी इतना तो स्पष्ट ही है कि जब पुलिसकी सहायता सुलभ है तब तो किसीको अपनी रक्षा आप करने की जरूरत ही नही रह जाती। पुलिस अगर अपना कर्त्तव्य-पालन करती है, तो खुले-आम हमला या मारपीट वह होने ही नही देगी। आत्म-रक्षाके लिए प्रतिरोध करने की कानूनमें इजाजत है। मैंने जिन परि-स्थितियोकी चर्चा की थी, उनके सम्बन्धमे यह मानकर चला था कि वे पुलिस या कानूनकी पहुँचसे बाहर है।

वे अपराध कम ही रोकते है और उसका पता तो और भी कम लगा पाते है, वे तो अपराधका दण्ड ही अधिक देते है। इसलिए जहाँ शरीर होम देनेकी तत्परता न हो, वहाँ आत्म-रक्षा करते हुए जूझना ही एकमात्र सम्मानजनक मार्ग है।

> और यदि भविष्यमें या जब भी ऐसी घटनाएँ हों, वे अपनी रक्षाके लिए तैयार रहें। इस प्रकारकी स्थितिमें वे अपने शरीरको या सम्पत्तिकी रक्षामें चोट पहुँचानेके बजाय यदि मर्दोंकी भाँति उत्पीड़न सह सकें और अपनेको लुट जाने दें तो बहुत अच्छा होगा। यह वस्तुतः उनकी सबसे बड़ी विजय

होगी। किन्तु उतनी सहनशक्ति केवल बलसे आ सकती है, दुर्बलतासे नहीं। जबतक यह शक्ति वे अपने अन्दर पैदा नहीं कर पाते, तबतक उन्हें अन्यायीका सामना [शारीरिक] शक्तिसे करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जब पुलिसका कोई सिपाही किसीको गिरफ्तार करने के लिए नहीं, बल्कि तंग करने के लिए आता है, तब वह अपने अधिकारका अतिक्रमण करता है। तब नागरिकका यह एक अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वह उसे लुटेरा माने एवं उससे वैसा ही व्यवहार करे। इसलिए वह उसको लूटपाट करने से रोकने के लिए पर्याप्त शक्तिका उपयोग करे। वह अपनी महिलाओंके सम्मानकी रक्षाके लिए निश्चय ही शक्तिका डटकर प्रयोग करे। अहिंसाका सिद्धान्त कमजोरों और कायरोंके लिए नहीं है; वह तो वीर और शक्ति-सम्पन्नोंके लिए है। सबसे अधिक वीर तो वह पुरुष होता है जो मारता नहीं है, बल्कि कोई उसे मारे तो स्वेच्छासे मृत्युका वरण करता है। वह किसीको मारने से, चोट पहुँचाने से अपना हाथ इसलिए रोकता है कि वह जानता है कि किसीको चोट पहुँचाना गलत काम है। चम्पारन के ग्रामीण ऐसे नहीं हैं। वे तो पुलिसको देखते ही भागते हैं। यदि उन्हें कानूनका भय न हो तो वे पुलिसके सिपाहीपर चोट कर देंगे और उसे मार भी डालेंगे। इसलिए उन्हें अहिंसाका श्रेय नहीं मिलता; बल्कि इसके विपरीत कायरता और अपौरुषका लांछन मिलता है। वे सरकार और मनुष्य दोनोंकी नजरोंमें निन्दनीय हैं।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २०-७-१९३५

## ३८७. पत्र : आनन्द टी० हिंगोरानीको

वर्धा
२० जुलाई, १९३५

प्रिय आनन्द,

यह क्या बेहूदगी है! तुमसे कह दिया कि तुम आ सकते हो, तुम्हें और विद्याको[1] इससे ज्यादा और क्या प्रोत्साहन चाहिए था? जब चाहो तुम दोनों या कोई एक यहाँ आ जाओ। मुझसे जितना लेना सम्भव हो, लो।

दोनोंको स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म से; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

१. आनन्द टी० हिंगोरानी की पत्नी।

## ३८८. पत्र : केवलचन्द के० मेहताको

२० जुलाई, १९३५

भाई केवलचन्द,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे डर है कि मै बिजलीके बारेमे कुछ नही समझता और तात्कालिक उपाय तो मेरे हाथमे है नंही। आज देशमे ऐसे बहुत-से काम हो रहे है जिन्हे रोकने का कोई उपाय नही सूझता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७) से।

## ३८९. पत्र : वसुमती पण्डितको

२० जुलाई, १९३५

चि० वसुमती,

गंगाबहनके साथ सफाईके कामके लिए अवश्य निकलना। जो विद्यार्थी आये, उन्हे भी कुछ समयके बाद इस काममे साथ देनेके लिए कहा जा सकता है। सफाईके काममे मेहनत ज्यादा नही है और बहुत अधिक समय भी उसमे नही लगाना पडता।

लगता है, अब तू स्वस्थ हो गई है।

प्रभा[1] बम्बई पहुँचकर बीमार पड गई इसलिए यहाँ नही आई है।

लक्ष्मी अभी यही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०४) से। सी० डब्ल्यू० ६५० से भी; सौजन्य : वसुमती पण्डित

१. प्रभावती।

## ३९०. पत्र : हीरालाल शर्माको

२० जुलाई, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत आया था। जो हो सो हो, अमरीका जाना तो है ही।[1] कलकत्ते से खत आया है ता० दस [अगस्त]को जहाज जायगा। तुमारे कलकत्ता जलदी पहोचना है। इसलिये यहा २५ ता०को आ जाओ। यहां दो-तीन दिन रहकर कलकत्ता जाना अच्छा होगा। वहासे ज्यादा सामान नही लाना। आवश्यक अवश्य लाओ।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७४ और १७५ के बीच प्रकाशित अनुकृतिसे

## ३९१. पत्र : गोविन्दलाल साहको

२० जुलाई, १९३५

भाई गोविंदलालजी,

तुमारा खत बहुत दिनोके बाद आया। जब म्युनिसीपालीटीसे वादा कर लिया है तो कुछ कहने का ही नही है। यो भी हरिजन सेवक संघ उस जमीन व मकानका कबजा नही ले सकते है। म्युनिसीपालिटीको देना ही बेहतर है।

तुम सबका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६७७) से। सी० डब्ल्यू० ९७५८ से भी; सौजन्य . उ० प्र० सरकार

१. हीरालाल शर्माने अपने पत्रमें सुझाया था कि यदि खर्च बहुत ज्यादा पड़ने वाला हो तो यात्रा रद कर देना ही बेहतर है।

## ३९२. पत्र : एक ग्राम-सेवकको[1]

[२१ जुलाई, १९३५ के पूर्व]

तुम्हारा पत्र कल ही मिला। पत्र अच्छा है। इसी तरह मुझे कामका विवरण भेजते रहना। इसी आवासको अपनी झोपडी, गुफा या जो-कुछ कहना चाहो सो मानकर यदि तुम लगातार वर्षोंतक जमे रहोगे तभी सचमुच कुछ काम हो सकेगा। फिलहाल किसीको भी अपने साथ रहने की अनुमति मत देना। ऐसे लोगोंसे माफी माँग लेना। यह हो सकता है कि भली-भाँति स्थिर हो जानेके बाद कोई आकर तुम्हारे पास कुछ समय रह जाये। फिलहाल तो यदि कोई व्यक्ति वहाँ आयेगा तो उससे तुम्हारे काममें विघ्न ही पडेगा। इससे बचना। अपने स्वास्थ्यका भली-भाँति ध्यान रखना। यदि तुम बीमार पड जाओ तो किसी आश्रमवासीके साहचर्यकी इच्छा या आशा मत करना। वहाँ जो है, वही तुम्हारा साथी है। वह भी तुम्हारी सेवा करेगा और यदि न करे तो हरिइच्छा। जहाँ भी जाओगे हरि तो सदा तुम्हारे साथ रहेगा।

[गुजरातीसे]
*हरिजनबन्धु*, २१-७-१९३५

## ३९३. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

वर्धा
२१ जुलाई, १९३५

चि० जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र अच्छा है। तुम जो चाहती हो सो मदालसासे धीरजके साथ करना। चिढकर कोई काम कराने का वक्त गया समझ लो। अभी तो दोनों वहीं[2] रहना। जितना पढ़ सको, उतना पढना। और जितना लिख सको, उतना लिखना।

रणजीत और सरूपको अपने बच्चे मानकर वहाँ रखना। कोई तुम्हारी स्वतन्त्रता में दखल दे सके, ऐसा तो है नहीं।

१. पत्र-लेखकने अत्यन्त निष्ठापूर्वक अपना काम आरम्भ किया था और सहयोगीके रूपमें किसी व्यक्तिको साथ रखने की इच्छा दृढतापूर्वक त्याग दी थी।

२. अलमोडामें।

यहाँ सब ठीक ही है। ओम् अपने-आपमें मगन है और रामकृष्ण टिकट इकट्ठे करता है और मौज कर रहा है। अब तो वह मेरी बगलमें नहीं सोता, और यह ठीक ही है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७३)से।

## ३९४. पत्र : मदालसा बजाजको

२१ जुलाई, १९३५

चि० मदालसा,

तेरे पत्रमें अनुचित कुछ नहीं है। तेरा कार्यक्रम मुझे पसन्द है। यदि तूने पढ़ना छोड़ दिया तो कोई बात नहीं। तुझे जो अच्छा लगे, सो निःसकोच खानेका निश्चय ठीक है। उसमें से तू अपने लायक उचित खुराक खोज सकेगी।

जानकीबहनके गुस्सेसे घबराना नहीं। उसमें जो सार हो, उसकी ओर ध्यान देना।

शरीर गरम रहना ही चाहिए। प्रार्थना और पढ़ते-लिखते समय सीधे तनकर ही बैठना चाहिए। कभी सिर झुकानेकी जरूरत नहीं। वहाँ तुझे पूरे कपड़े अवश्य पहनने चाहिए।

इन सभी बातोंपर ध्यान देना। अब तो तुझे न्याय मिला न?

यह अच्छा है कि तू रणजीतसे पढ़ती है। जबतक चाहे, वहीं रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
**पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१७**

## ३९५. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

२१ जुलाई, १९३५

भाई खम्भाता,

अब अस्पतालको भूल जाना चाहिए। वहाँ तुम चंगे हो गये इस बातको याद करके ईश्वरका आभार मानते हुए जिस तरह भी हो सकती हो, उस तरह प्राणिमात्रकी सेवा करना। मेरे हाथको आरामकी जरूरत थी।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६११)से। सी० डब्ल्यू० ४४०१ से भी, सौजन्य : तहमीना खम्भाता

## ३९६. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

२१ जुलाई, १९३५

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे आँकडोंसे मुझे मदद मिलेगी। आजकल मैं इस सम्बन्धमे अच्छी तरह विचार-विमर्श कर रहा हूँ। अपना स्वास्थ्य फिर पहले-जैसा बना लेना। यदि तुम पूरे धड़की मालिश करवाओ तो अच्छा हो।

क्या वाडजसे तुम्हारा सम्बन्ध घनिष्ठ होता जा रहा है? क्या तुमने केवल अपना सूत बुनवाकर देखा है? उसे बुननेपर बुनकर ने उसके बारेमे क्या राय दी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३८९)से; सौजन्य: भगवानजी पु० पण्ड्या

## ३९७. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२१ जुलाई, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। देवशर्मा जिस व्यक्तिको भेजे उसका उपयोग हिन्दीके प्रचारमें विद्यापीठके बाहर भी किया जा सकता है।[1] उस अँगीठीमें हम बहुत ज्यादा कोयले नही झोक सकते।

वेलचन्दका[2] मामला मैं अब सरदारके साथ तय कर दूँगा।

यदि जोशी खादी न पहनता हो तो वह हममें नही खप सकता। इसके अतिरिक्त क्या तुम्हे नारणदासके स्पष्टीकरणसे सन्तोष हुआ?

यदि भास्करराव अब भी तुमसे न मिला हो तो आश्चर्य है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८७) से।

१. देखिए "पत्र: नरहरि द्वा० परीखको", १५-७-१९३५।

२. वड़ौदाके वेलचन्द बेकर; देखिए "पत्र: नरहरि द्वा० परीखको", २३-८-१९३५ भी।

## ३९८. पत्र : जेठालाल जी० सम्पतको

२१ जुलाई, १९३५

भाई जेठालाल,

वच्ची झटपट अच्छी हो जाये।

तुम्हारे हृदय-मन्थनके वर्णनकी प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारे सुझावोको मै समझ गया हूँ। मै उतावली नही करूँगा। तुम इतने पास हो, इसलिए क्या वर्धा होकर अनन्तपुर जाना ठीक नही होगा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९८५३) से; सौजन्य : नारायण जे० सम्पत

## ३९९. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

२१ जुलाई, १९३५

भाई मूलचद,

पतिकी कमाई [मे] मा पत्निका एक-सा हिस्सा है। लेकिन इसका अर्थ यह नहि कि पत्नि दिल चाहे ऐसे द्रव्यका उपयोग कर सकती है। इसलिए हिसाब रखने का तुमारा निर्णय योग्य है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३८) से।

१. मूलचन्द अग्रवालने अपने पत्रमें व्ययके सम्बन्धमें अपनी पत्नीके साथ अपने मतभेदका उल्लेख किया था। देखिए "पत्र : जानकीदेवी अग्रवालको", ५-७-१९३५ भी।

## ४००. बातचीत : मेरी-चेजली और मीराबहनके साथ[1]

[२२ जुलाई, १९३५ के पूर्व][2]

गांधीजी : लेकिन आपको इसपर आपत्ति क्या है?[3]

मेरी चेजली : यह कि यह अंग्रेजी पोशाक है।

गा० : लेकिन अंग्रेजी पोशाकमे जो-कुछ अच्छा है, उसे हम क्यो न अपनाये? अंग्रेज लोग भले ही भारतीय पोशाकको घृणाकी दृष्टिसे देखें और उसमे से किसी भी चीजको अपनानेको तैयार न हो, पर मुझे तो, अंग्रेजी पोशाकमे जो चीजे अच्छी है, उन्हे अपनानेमे कोई आपत्ति न होगी।

मे० चे० : मगर वह कितनी कलाशून्य है। आधी आस्तीनके लटकते हुए भारतीय कुरतेसे अंग्रेजी जाँघिया बिलकुल मेल नहीं खाता।

गा० : तब तो अगर मैं लोगोसे सोला टोप पहनने को कहूँ तो मेरा खयाल है, आप घबरा ही उठेंगी।

अब अपनी सहेलीकी ओरसे मीराबहन जवाब देने लगीं। उन्होंने कहा कि मैं तो निश्चय ही ऐसी सलाह सुनकर भौचक्की रह जाऊँगी। सोला टोप बड़ा कीमती होता है और बड़ा गैर-आरामदेह और बेसँभाल भी।

गा० : इससे तो यही जान पड़ता है कि इंग्लैंडमे रहते हुए तुम जो टोप पहनती होगी, वह बिलकुल ठीक नही आता होगा।

मीराबहन : नहीं, ऐसी बात नहीं है। उन दिनों मेरे पास अच्छेसे-अच्छे टोप थे, लेकिन मुझे वे कभी पसन्द नहीं आये। उनको पहननेपर सिर बिलकुल दबा-दबा-सा रहता है और उसमें दर्द होने लगता है।

गा० : तब शायद तुम्हारा सिर ही बेडौल रहा होगा। मगर मुझे वास्तवमे ऐसा लगता है कि सोला टोपसे धूपसे बहुत अच्छा बचाव होता है।

मी० : पहनना ही पड़े तो मैं तो टोपके बजाय हिन्दुस्तानी पगड़ी पहनना ज्यादा पसन्द करूँगी। धूपसे तो यह भी बचाव करती है।

गा० : नही, नही करती।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत।

२. मेरी चेजली वर्धासे २२ जुलाई, १९३५ को रवाना हुई थीं। देखिए "पत्र : एफ० मेरी बारको", २५-७-१९३५।

३. मेरी चेजली ने, जो कुछ दिन आश्रममें ठहरी थीं, आश्रमवासियों द्वारा काम करते वक्त पहनी जानेवाली पोशाकपर आपत्ति की। इसीपर यह चर्चा हुई थी।

मी० : ठीक है, मगर यह जाँघिये बहुत खराब है। आप जो कच्छा पहनते हैं और ये जो जाँघिये पहनते हैं, इन दोनोंमें स्वर्ग और नरकका अन्तर है।

गां० : ऐसा! तब तो तुमको मुझे समझाना पड़ेगा कि यह इतना ज्यादा क्यों खटकता है।

मी० : मैं शायद कुछ ज्यादा कड़े शब्दोंका प्रयोग कर रही हूँ; मैं तो कहूँगी कि इन दोनोंमें वही अन्तर है जो दिन और रातमें है।

मे० चे० : पर मेरी आपत्तिका कारण यह नहीं है। मुझे तो [हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी पोशाकोंकी] इस अजीब-सी खिचड़ीसे चिढ़ है। आपका कच्छा हिन्दुस्तानी है। वे ऐसी ही कोई चीज क्यों नहीं पहनते। या तो पूरी हिन्दुस्तानी पोशाक हो या फिर पूरी अंग्रेजी।

गां० : पूरा अंग्रेज बनने के लिए तो मुझे शराबकी दुकानपर भी जाना चाहिए न? जहाँतक मेरे कच्छेकी बात है, मैं जानता हूँ कि वह जाँघियेसे बहुत अच्छा है। लेकिन अगर ये सबके-सब उसे पहनने लगेंगे तो लोग उनपर यह कहकर हँसेंगे कि ये तो महात्माजी की तरह दिखना चाहते हैं।

मे० चे० : लेकिन कुरतेके निचले हिस्सेको वे जाँघियेके नीचे तो दबा सकते हैं?

गां० : हाँ, आप लोग तो यही करते हैं। लेकिन स्वास्थ्यके लिए यह बुरा है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

## ४०१. तार : हीरालाल शर्माको

वर्धागंज
२२ जुलाई, १९३५

डॉ० शर्मा
खुर्जा

वे चाहते हैं, तुम जल्दी कलकत्ता पहुँचो। तुरन्त आ जाओ।

बापू

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७४ और १७५ के बीच प्रकाशित अंग्रेजीकी अनुकृतिसे

## ४०२. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

२२ जुलाई, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम दोनोंके पत्र मुझे मिल गये हैं। बा का पत्र दिल्ली भेज दिया है। वह और मनु वहाँ हैं। आज-कलमें लक्ष्मीके प्रसवका समाचार मिलना चाहिए।

लगता है, रामदासने हालमें कुछ पैसा गँवाया है। ठोकर खाकर ही उसे अक्ल आयेगी।

हरिलाल आखिरी हदतक पहुँच गया है। सारे दिन नशेमें धुत होकर पड़ा रहता है। इस बार उसने सभी सीमाएँ तोड़ दी हैं।

नारणदास और कुसुम राजकोटमें हैं। नीमू और उसके बच्चे यहाँ हैं। वे स्वस्थ रहते हैं।

जमनालाल यहाँ पहुँच गये हैं। जानकीबहन और मदालसा अलमोड़ामें हैं।

कान्ति और कनु यहीं हैं। आजकल वर्षा और ज्वरका मौसम होनेके कारण सभीको सावधान रहना पड़ता है। उपवास इसकी रामबाण दवा सिद्ध हुई है। सभी मामलोंमें यह भले कारगर न हो, किन्तु नुकसान कभी नहीं पहुँचाती। उपवास या तो आंशिक अथवा पूर्ण हो सकता है। आंशिक उपवासमें प्रोटीन और स्टार्चवाली चीजें नहीं लेनी चाहिए। दाल और दूधमें प्रोटीन होता है। स्टार्च चावल, गेहूँ और आलू आदिमें होता है। अतः आंशिक उपवासमें रसीले फल और हरी सब्जियाँ खाई जा सकती हैं। बुखारमें हरी सब्जियाँ भी नहीं खानी चाहिए। उस समय सिर्फ नारंगी, अंगूर आदिके रसपर रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४०)से। सी० डब्ल्यू० १२५२से भी; सौजन्य: सुशीला गांधी

## ४०३. पत्र : मनु गांधीको

२२ जुलाई, १९३५

चि० मनुड़ी,

मेरे पत्रका उत्तर तूने अभीतक नहीं दिया। इस तरह कैसे बात बनेगी? मैंने तो पूरे दिनका कार्यक्रम माँगा है न?

यहाँ रोज थोडी-सी वर्षा होती है जिससे अच्छी ठंडक है। मुश्किलसे सूर्यके दर्शन होते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

नैटालका पत्र इसके साथ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४४) से, सौजन्य . मनुबहन एस० मशरूवाला

## ४०४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
२३ जुलाई, १९३५

भाई वल्लभभाई,

लाहौरमें क्या हो रहा है? कुछ समझमें आता है? किसका दोष है? बीमा-कम्पनियोंकी तो बाढ आ गई है। मुझे तो जरा भी पसन्द नहीं है। परन्तु क्या किया जाये? कांग्रेसके नामपर बट्टा लगे, यह खतरनाक बात है। परन्तु इस चीजको टुकुर-टुकुर ताकते रहने के सिवा और क्या किया जा सकता है? . . .[1]

.[2] स्वच्छ आदमी है। हम ऐसे कामोंमें मानापमान का तो विचार भी कैसे कर सकते हैं?

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७६ ।

१ और २. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड दिया गया है।

## ४०५. पत्र : लीलावती आसरको[1]

वर्धा
२४ जुलाई, १९३५

१. इन पदार्थोंके पहले 'आर्टिकल' (उपपद) नही लगता क्योकि ये गिने नही जा सकते, मापे ही जा सकते है।

२. तूने 'वुड' के जो अन्य अर्थ बताये है, वे सही है। उनका इसी तरह प्रयोग करने की रूढि है। अग्रेजीमे ऐसे रूढ प्रयोगोको 'ईडियम' (मुहावरा) कहते है।

३ फिलहाल पाठमालाके अभ्यास जारी रखना लाभदायक होगा।

४. तेरा पत्र मगनभाईको दे दिया है।

बापू

[पुनश्च :]

तू शान्त हो गई है तो अब शान्त ही रहना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०२ से भी, सौजन्य : लीलावती आसर

## ४०६. पत्र : नारणदास गांधीको

२४ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

मैंने लीलावतीको वेतन देनेका सुझाव दिया था किन्तु तुम उस सम्बन्धमे लिखना भूल गये हो। यदि उसे वेतन दिया जा सकता हो तो देना।

यदि धीरूको अहमदाबाद या भावनगर भेजना हो तो भेज देना। यदि वह स्वीकार करे तो दोनो जगह लिखकर पूछ लेना।

१. लीलावतीने पूछा था : "(१) क्या द्रव्यवाचक संज्ञाके पहले 'आर्टिकल' (उपपद) लगाना चाहिए, जैसे घी, दूध, गुड, शक्कर, पानी आदि? (२) मैं सिर्फ इतना ही जानती हूँ कि 'वुड' 'विल' का भूतकाल है किन्तु कई बार वर्तमानकालमें भी इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे 'आई वुड लाइक टु डू दिस'। कभी-कभी भूतकालमें भी 'वुड' का प्रयोग किया जाता है। 'हु जतो' की अंग्रेजी 'आई वुड गो' होती है। इस वाक्यमें 'वुड' का क्या अर्थ लेना चाहिए? (३) पाठमालामें जो वाक्य दिये गये हैं, क्या उनका गुजरातीसे अंग्रेजीमें अनुवाद करना मुझे जारी रखना चाहिए? (४) क्या मुरब्बी मगनभाईके नाम लिखा मेरा गुजराती पत्र उन्हें मिल गया?"

यदि खाँसी हो तो उसे अभी मत भेजना। भले वह थोडे दिन वही रहकर जितना सम्भव हो, उतना काम करे और अपना स्वास्थ्य सुधारे। यदि माणेकलाल उसका खर्च उठा सके तो उसे अवश्य उठाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

इन दिनों जो जोशी नामक शिक्षक है, क्या वह खादी नही पहनता?

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४६५ से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

## ४०७. पत्र : लुइसेत गियसको

२५ जुलाई, १९३५

प्रिय वहन,

मीराको लिखा आपका लम्बा पत्र पढा। अगर वह भारतीय व्यापारी आपके पास न आया हो तो इससे मालूम होता है कि आपके काममे उसकी रुचि नही है। आपको भूलाभाई देसाईको लिखने की जरूरत नही है। मै उन्हीसे यह जानने की कोशिश करूँगा कि उनके क्या इरादे है। प्रो० वाडियासे कोई आशा न रखे। वे शायद ही कोई सहायता कर सके। मेरी तो पक्की सलाह है कि किसी भी कारणसे कर्जेमें न पड़े; तव अगर प्रकाशित न कर सके तो प्रकाशन वन्द कर दें।[1] सिवाय समाचार और साहित्य प्राप्त करने के और किसी भी तरहसे भारतसे सहायता मिल सकनेपर निर्भर न रहे। यदि यह छोटा-सा बोझ उठानेवाले साधन-सम्पन्न फ्रासीसी भी पर्याप्त संख्यामे न हो तो आपको यह काम बन्द करके खुद अपने निजी श्रमका सहारा लेना चाहिए। ईश्वर किसीसे भी, जो सम्भव नही है, उसकी अपेक्षा नही रखता। आप जो भी करे, उसीके लिए और उसीके नामपर करे। फिर आप जो भी करेगी, उसके लिए आप नही, बल्कि वही जिम्मेवार होगा। हालाँकि यहाँ कई मित्रोका विचार अन्यथा है, परन्तु मेरा यह निश्चित मत है कि हमें विदेशोमे प्रचार करनेपर कोई पैसा खर्च नही करना चाहिए। हममे जितनी योग्यता और अच्छाई होगी, उसका प्रचार तो अपने-आप होगा; और उससे आगे जो-कुछ किया जायेगा, वह हमारी दुर्बलता छिपाने के लिए ही होगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य : नारायण देसाई

१. लुइसेत गियसने अपनी पत्रिका नुवेल द लेंद के लिए आर्थिक सहायता माँगी थी। इसके प्रकाशनमें उनपर ५,००० फ्रांकका कर्ज चढ गया था।

## ४०८. पत्र : एफ० मेरी बारको

वर्धा
२५ जुलाई, १९३५

चि० मेरी,

खुद मैं तो एक पैसा भी नहीं भेज सकता, क्योंकि किसीको देनेके लिए मेरे पास अपना तो कुछ है नहीं। लेकिन जमनालालजी ५० रुपये भेज देंगे। तुम्हारा पत्र उनको दिखाया तो उन्होंने तुरन्त कहा कि वे भेज देंगे। जहाँतक आहारका सम्बन्ध है, तुम्हें अपनी जरूरतोंमें कोई कटौती नहीं करनी है। सेवाके निमित्त स्वस्थ होनेपर पूरा ध्यान दो।

दोनों मेरी सोमवारको सुमित्राके साथ चली गईं। मेरी 'सी' और सुमित्राकी आपसमें नहीं बनती है। लेकिन सुमित्रा अपने वादेके मुताबिक छह महीनेकी वह अवधि पूरी कर देनेपर दृढ़ है।

डॉ० प्रेमनाथने मुझे पत्र नहीं लिखा है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५५) से। सी० डब्ल्यू० ३३८५ से भी; सौजन्य: एफ० मेरी बार

## ४०९. पत्र : अब्बास के० वरतेजीको

२५ जुलाई, १९३५

चि० अब्बास,[1]

तुम्हारा सुझाव ठीक है। उसपर अमल करनेकी व्यवस्था की जा रही है। कत्तिनोंकी मजदूरी कुछ बढनी ही चाहिए। यदि इस काममें तुम्हारी मददकी जरूरत हो तो क्या तुम्हें वहाँसे मुक्ति मिल सकेगी?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६३११)से।

१. साबरमती आश्रममें कताई-बुनाईके शिक्षक।

## ४१०. पत्र : क० मा० मुंशीको

२५ जुलाई, १९३५

भाईश्री मुशी,

तुम्हारा पत्र और अन्य वस्तुएँ मिल गई है।

तुम्हारी विज्ञापन-सूची मुझे तो बहुत अटपटी लगी। हम दोनोका दृष्टिकोण ही अलग है। मै उसकी वारीकियोमे नही पडूँगा। यदि मै तुम्हे इस वातके लिए राजी कर सकूँ तो कहूँगा कि तुम्हे केवल पुस्तकोके ही विज्ञापन लेने चाहिए। किन्तु इस मासिक पत्रिकाके प्रवन्धके मामलेमे मुझे दखल देनेका अधिकार नही है। अत. सिर्फ इतना ही कहता हूँ कि इसपर जितना नियन्त्रण लगाया जा सके, उतना लगाना।[1]

गुरुदेवको लिखे तुम्हारे पत्रसे देखता हूँ कि तुमने सलाहकार-मण्डलकी वात छोड़ दी है। यदि ऐसा ही हो तो मुझे यह वात पसन्द है।

जहाँतक मै समझता हूँ, देशी रियासतोके वारेमे भूलाभाई देसाईने जो राय दी[2] वह रियासतोके सरकारसे सम्वन्धके वारेमे लागू होती है, न कि जनताके रियासतसे सम्वन्धके वारेमें। यदि मेरी यह मान्यता सही हो तो भूलाभाईकी रायमे मुझे कोई दोष नजर नही आता। मुझे लगता है कि उनकी रायमे बारीकी है और वह है भी सही। देशी रियासतो और वहाँकी जनताका सम्बन्ध तथा देशी रियासतो और ब्रिटिश भारतकी जनताका सम्वन्ध, ये दो अलग बाते है। भूलाभाईके सामने यह सवाल नही था। भूलाभाईकी राय जव पहली वार अखवारोमे प्रकाशित हुई थी तभीसे मै यह मानता आया हूँ। उनकी राय और काग्रेसकी नीतिमे मुझे तनिक भी विरोध नजर नही आता। देशी रियासतोकी जनता अपने अधिकार अग्रेज सरकारसे नही वल्कि रजवाड़ोसे माँगेगी।

गुरुदेवको जल्दी ही पत्र भेज दिया जायेगा। उक्त पत्र महादेव लिखेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५७९) से, सौजन्य : क० मा० मुंशी

१. देखिए "पत्र: क० मा० मुंशीको", ८-७-१९३५।

२. भूलाभाई ने वकील की हैसियत से देशी राज्योंके कुछ राजाओं को संघ (फेडरेशन) में शामिल होने के सवालपर अपनी राय दी थी; यहाँ आशय सम्भवत: उसी राय से है।

## ४११. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

२५ जुलाई, १९३५

भाई हरि गोविल,

तुमारी किताव पढनेको प्रयत्न तो कर रहा हू। अखवार पढ लिये हैं। उसमें वहूत अतिशयोक्ति पाता हूं। जितनी सस्था नैर्सागिक उपचारके लिये तुमने देखी है उसका नाम-ठाम मुझे भेजीयें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२३) से।

## ४१२. पत्र : कमलनयन बजाजको

२५ जुलाई, १९३५

चि० कमलनयन,

तुमारा स्वच्छ खत मुझे मिला है। अपने दोषोका स्वीकार कर लेता है सो तो वहूत अच्छा है। अव [एक] कदम आगे जाओ। दोषोको दूर करने का वड़ा प्रयत्न करो। रोजनिशीमे[1] नित्यकर्म दे सकता है। प्रार्थना दो वार तो कर ही सकता है। रामघुन तो है ही। आलस्य छोडने के लिए सवसे अच्छी वात यह है कि नित्य नियम वना लेना और उसपर कायम रहना, भले कम काम हो। व्यायामको नित्य-कर्मका अनिवार्य हिस्सा माना जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०५१) से।

१. डायरीमें।

## ४१३. पत्र : केवलरामको

वर्धा
२६ जुलाई, १९३५

चि० केवलराम,

मुझे जिन बातोका डर था, वे सब सच साबित हुई। वास्तवमे देखा जाये तो निजी या सार्वजनिक बेइज्जती-जैसी कोई चीज नही होती। उसमें भी [मुझ-जैसे] सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके लिए। मेरी बेइज्जती जनताकी और जनताकी बेइज्जती मेरी बेइज्जती है। हम ही जनता है और जनता ही हम है। विश्व और व्यक्तिमे भेद कहाँ है?

चाहे तुम भाग्यशाली हो या भाग्यहीन, तुम गँवा तो इसीलिए सकते हो न कि कोई तुम्हे उधार देनेवाला है? तुम मेरी सलाह माँगते हो। तुम दो नियमोका पालन करो:

१. तुम कुछ भी नही करोगे।

२ स्वतन्त्र रूपसे कोई काम-धंधा नही करोगे।

तुम्हारी स्वतन्त्रता तुम्हारी परतन्त्रता है। किसीके यहाँ स्वेच्छासे नौकरी करने मे परतन्त्रता कहाँसे आ गई? तुम जब किसीको नौकर रखते हो तो क्या उसकी स्वतन्त्रता छीन लेते हो? नौकर और मालिक तो मनुष्यके बनाये हुए भेद है। नौकरीका तात्पर्य है कुछ नियमोका पालन और मालिक अर्थात् स्वच्छंदता। इनमें से तुम किसे पसन्द करोगे? ये सीख मै तुम्हें कबतक देता रहूँगा? तुम्हारी भूलोको मुद्दा बना कर भी यदि मै किसीकी कुछ सहायता कर सकूँ तो यह केवल [आत्मप्रशंसा][1] है। लेकिन इसमे मुझे कोई सार नजर नही आता। अच्छा तो यह हो कि तुम इन गलतियोसे हमेशाके लिए कुछ शिक्षा ले लो।

वढवाणका इलाज अच्छा है। वहाँ तुम्हारा घर है, तुम्हारे उदार पिता है। वहाँ जाओ और अपना स्वास्थ्य सुधार लो। उपवाससे तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

१. यहाँ साधन-सूत्रमें शब्द स्पष्ट नहीं हैं।

## ४१४. सलाह : आश्रमवासियोंको[1]

[२७ जुलाई, १९३५ के पूर्व]

हमारी योग्यताको जितना छोटीसे-छोटी बातोसे परखा जाता है उतना बडी-बडी बातोसे नही। आप जरा अच्छे कागजपर और अधिक साफ-साफ लिख सकते थे। और निश्चय ही अंग्रेजीमे लिखनेका तो आपके पास कोई कारण नही था, जब कि आप यही बात गुजराती या हिन्दीमे लिख सकते थे और जैसा कि जाहिर है, आप अंग्रेजी उतनी अच्छी तरह नही जानते। 'पाई-पाईका खयाल करो तो रुपया अपने-आप जुड जायेगा' — यह नियम केवल अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे ही उपयोगी नही है। यह एक नैतिक नियम भी है। आपको चाहे जितना छोटा काम करना हो, उसे आप अपने तईं अच्छेसे-अच्छे ढगसे करे। उसे उतने ही मनोयोगसे करें जितने मनोयोगसे आप वह काम करेगे जिसे आप अधिकसे-अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। कारण, आपकी योग्यताकी परख उन छोटे-छोटे कामोसे ही होगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

## ४१५. आरम्भ कैसे करें

खादीके कारीगरोके लिए मजदूरीकी मानक दर स्थिर कर दी जाये या न्यूनतम मजदूरी दर, मगर कोई परिवर्तन निश्चित प्रतीत होता है। एक विरोधी मतके सिवा, अबतक जो बहुत-सी राये मिली है उनमे से किसीने भी बंधी हुई दर निश्चित करनेके मेरे प्रस्तावका विरोध नही किया है। आठ आनेवाले प्रस्तावका[2] अभीतक कोई समर्थक नही मिला है। कुछ लेखक आठ आनेवाले प्रस्तावको खादीके लिए घातक समझते है। वे कहते है कि उस सूरतमें खादीकी कीमत इतनी अधिक बढ जायेगी कि उसके बहुत थोड़े-से ग्राहक रह जायेंगे। कुछ भी हो, किसी भी उल्लेखनीय परिवर्तनमे कुछ शर्तें तो पूरी करनी ही होगी। इसलिए समय रहते ही चेत

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। इन दिनों गांधीजी ने आश्रममें दालके स्थानपर खलीका प्रयोग शुरू करवाया था। उन्होंने प्रत्येक आश्रमवासीसे इस परिवर्तनके सम्बन्धमें अपनी प्रतिक्रिया लिखकर बताने को कहा था। तीन व्यक्तियोंने इस परिवर्तनसे असहमति प्रकट की थी, तो दालका प्रयोग तो-तुरन्त फिरसे आरम्भ करा दिया गया, लेकिन उन्होंने अपने-अपने हस्ताक्षरोंके साथ कागजके जो टुकड़े दिये थे उनसे गांधीजी के लिए "सीख देनेका एक मौका निकल आया।"

२. देखिए "मानक मजदूरीकी आवश्यकता", १३-७-१९३५।

जाना और जहाँ भी सम्भव हो नीचे लिखी बातोपर तुरन्त अमल शुरू कर देना समझदारीका काम होगा :

१. कार्यकर्त्ताओको कपास चुनने से लेकर बुनाईतक की सब प्रक्रियाओमें पारंगत हो जाना चाहिए, ताकि वे दूसरोको सिखा सकें।

२. संगठन करनेवालो को अपने-अपने हल्के या इलाकेके तमाम पीजनेवालो, कतैयो, बुनकरो आदि की सूची तैयार करनी चाहिए।

३. उन्हें मालूम होना चाहिए कि उनके कतैये कौन-सी रुई काममे लाते है और फिर उन्हें इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उससे जितने नम्बरका सूत कत सकता है उससे ऊँचे नम्बरका सूत वे न काते।

४ कतैयो और दूसरे कारीगरोको चेतावनी दे देनी चाहिए कि अगर वे अपने-अपने घरोमे खादी इस्तेमाल नही करेगे तो उन्हें कोई काम नही मिलेगा।

५ जिन कारीगरोको यह चेतावनी दी जाये उनके लिए ऐसी सुविधाएँ कर दी जाये जिससे वे अपने परिश्रमके बदलेमे हमेशा खादी ले सके।

६. सूतकी एक-एक गुडी जो मिले उसकी समानता और कस की जाँच की जाये और जैसे कम सिकी रोटी नही ली जाती वैसे ही असमान और कमजोर सूत भी न लिया जाये।

७. आम तौरपर प्रत्येक कतैयेका सूत अलग जमा किया जाये और जब एक थानके लायक हो जाये तब अलग ही बुना जाये। इससे खादीके टिकाऊपन, उसकी बनावट तथा उसके स्वरूपमे निश्चित तौरपर सर्वांगीण सुधार होगा।

८ इस प्रकार तैयार हुए सब थानोपर कागज चिपका होना चाहिए, जिसपर ओटनेवालो, पीजनेवालों, कातनेवालो और बुननेवालों के नाम, यदि ये सारे काम अलग-अलग लोगोने किये हो तो, दिये जाये।

९. जहाँ कारीगर गृहस्थ हो, वहाँ सम्बन्धित परिवारोको सारी प्रक्रियाएँ अपने ही घरोमे करने के लिए राजी और प्रोत्साहित किया जाये। जब मजदूरी समान या लगभग समान हो जायेगी तब यह काम आसान होगा।

१०. जो परिवार कार्यकर्त्ताओके प्रभावमे आये उनके जीवन और आय-व्ययका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाये और जो अपनी कमाई विवेकपूर्वक खर्च करते है उन्हें मदद दी जाये।

११. सघ जिन कारीगरोकी सेवा करता है उनकी सख्याको ग्राहकोकी कमीके कारण यदि कभी घटाना जरूरी हो जाये, तो पहले उन्हे अलग किया जाये जिनके पास आजीविकाके दूसरे साधन हो। मुझे मालूम हुआ है कि आजकल कई प्रान्तोमे कातने का काम सिर्फ वही बहनें नही करती जो सबसे ज्यादा जरूरतमन्द है, बल्कि खाते-पीते घरोकी वे जुगती स्त्रियाँ भी करती है जिन्हे अधिक अच्छे भोजन या कर्ज चुकानेके बजाय अपने लिए छोटी-मोटी चीजे खरीदनेको थोडा-सा रुपया चाहिए।

१२. हर जगह कार्यकर्त्ताओको धुनकियो और चरखोकी ध्यानपूर्वक परीक्षा करनी होगी। खास तौरपर उन्हें देखना होगा कि चरखोके तकुए कैसे है और वे कैसे

घूमते है। कारण, मजदूरीमे प्रस्तावित वृद्धि विशुद्ध वृद्धि ही नही होगी। कुछ हदतक तो वह वृद्धि उतने ही समयमें पहलेसे ज्यादा और बेहतर माल तैयार करने का परिणाम होगी और कुछ अशोमे विशुद्ध रूपसे वृद्धि ही होगी। अगर खादीकी माँग न बढी तो ऐसे किसी भी कतैयेकी मजदूरीमें, जो अपने कामके ढंगमें सुधार नही करेगा, वृद्धि होनेकी सम्भावना नही है।

१३. पिछले अनुच्छेदसे यह निष्कर्ष निकलता है कि पहली बार तो संघ आसान शर्तोंपर नये यन्त्र या पुर्जे मुहैया करेगा। माल और तकुओमे परिवर्तन करने से बहुत-से कतैये तो सहज ही अधिक मात्रामे ज्यादा अच्छा सूत कातने लगेंगे।

ये सब शर्तें तभी पूरी हो सकती हैं जब कार्यकर्त्ता अच्छी तरह समझ ले कि उनके सामने एक बडा लक्ष्य है और वे अध-भूखी अवस्थामे या ठीक भोजन न पानेवाले कारीगरो और मजदूरोके एक विशाल परिवारके ही मामूली सदस्य हैं।

मैंने कपासके उत्पादनकी कोई चर्चा नही की है। आजतक मैं बाजारके लिए तैयार की जानेवाली खादीकी ही बात करता आया हूँ। स्वावलम्बी खादीके कुछ और नियम होगे। यदि कतैये अपनी जरूरतकी कपास खुद पैदा न करेंगे या अगर लगभग हरएक गाँवमें कपास पैदा न की जाने लगेगी तो यह कभी सफल नही होगी। इसका मतलब यह हुआ कि जहाँतक स्वावलम्बी खादीका सम्बन्ध है, कपासकी खेतीका विकेन्द्रीकरण करना होगा। इसके लिए हमे उन गाँवोके सम्बन्धमे आवश्यक आँकड़े एकत्र करने होगे जिनमे खादी-सेवा की जा रही है। कारण, प्रत्येक कतैये या बुनकरके पास तो जमीन (बहुत थोडी जमीन भी) होगी नही, जिसमे वह अपनी जरूरतकी कपास पैदा कर सके। स्वावलम्बी खादीका सवाल बहुत बडा है और केवल इसीको हल करने के लिए अखिल भारतीय चरखा संघके अस्तित्वका औचित्य ठहराया जा सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जिसमे संघने अबतक कोई उल्लेखनीय कार्य नही किया है।

[अंग्रेजीसे]

**हरिजन**, २७-७-१९३५

## ४१६. टिप्पणियाँ

### नियमोकी पाबन्दीकी जरूरत

प्रान्तोमें हरिजन सेवक सघकी जो अनेक अत्यन्त उपयोगी शाखाएँ खुल गई है उनकी समुचित व्यवस्थाके लिए बनाये गये नियमोके पालनकी आवश्यकतापर जोर देते हुए केन्द्रीय बोर्ड समय-समयपर प्रान्तीय सघोको गश्ती चिट्ठियाँ लिखता रहता है और प्रोफेसर मलकानी उनकी नकले कृपापूर्वक मुझे भी भेजते रहते है। जबतक ये शाखाएँ सभी नियमो और केन्द्रीय बोर्ड द्वारा समय-समयपर जारी किये गये तमाम निर्देशोका पालन न करेगी तबतक ये अच्छी तरहसे या आपसमे एक-दूसरेके साथ तथा केन्द्रीय बोर्डके साथ तालमेल रखते हुए काम नही कर सकेगी। बजटसे सम्बन्धित शर्तो या हिसाब-किताब तैयार करने के बारेमे की जानेवाली अपेक्षाओ को पूरा न करनेपर वित्त-व्यवस्था गडबड हो जायेगी और यह बात इस बोर्डके लिए, जिसकी अनेक शाखाएँ हैं और जिन शाखाओमे से प्रत्येकके अधिकारमे बडी-बडी राशियाँ है, बहुत बुरी होगी। यदि किये गये कार्योके विवरण नियमित रूपसे नही भेजे जायेगे तो केन्द्रके सामने कोई तसवीर ही नही रहेगी और इससे सारा काम अव्यवस्थित हो जायेगा। यदि सदस्य बैठकोमे भाग लेने उपस्थित न होगे तो सघका काम अटक जायेगा, जिससे एक प्रकारका गतिरोध पदा हो जायेगा और अन्तमे कामका सारा सिलसिला ही टूट जायेगा। जब व्यापारिक पेढियोके लिए नियमो और निर्देशोका ठीक-ठीक ध्यान रखा जाना जरूरी माना गया है तब यह सहज ही समझा जा सकता है कि किसी स्वैच्छिक, परमार्थी या प्रायश्चित्तके निमित्त सस्थापित सस्थाके लिए यह कितना अधिक आवश्यक है। इसलिए यह आशा करना उचित ही होगा कि सघके सभी घटक केन्द्रकी अपेक्षाएँ पूरी करने को प्रयत्नशील रहेगे और इस तरह नियमानुसार व्यवहार करके ऐसी स्थिति उत्पन्न करेगे जिससे अस्पृश्यताका यह महाविकार हमारे बीचसे शीघ्र ही मिट जाये।

### श्लीलताके सम्बन्धमें निवेदन

एक भाईने, जो खुद सम्पादक है, एक अखबारकी कुछ कतरने भेजी है। उसके मालिक या व्यवस्थापक एक सुयोग्य लोक-सेवक माने जानेवाले सज्जन है। एकको छोड़कर ये सभी कतरने दवाओके बारेमे थी। मेरे विचारसे ये सबकी-सब बहुत आपत्तिजनक थी, उनमे अश्लील बाते थी — मनुष्यकी पाशविक वासनाको जगाने और भडकानेवाली। ये विज्ञापन उस अखबारके हालके अकोसे लिये गये थे। उन सबमे सुझाई गई दवाओका सेवन करनेवालो के लिए फिरसे जवानी और ताजगी पानेका दावा किया गया था। उनमे जो वर्णन दिये गये थे वे पढनेवालो के मनको घृणासे भर देते थे। उनमे से कुछ तो सरासर झूठ थे।

पत्र-लेखकने मुझे बताया है कि इस अपराधका दोषी अकेला वही अखबार नही है जिससे ये कतरनें ली गई हैं। वे मुझे दूसरे ऐसे अखबारोंसे भी, जिन्हें लोक-प्रिय और प्रतिष्ठित पत्र माना जाता है, इस तरहकी कतरनें भेजने को तैयार हैं।

ऐसे अखबारोके मालिकोको शायद यह पता नही होता कि उनमे अश्लील विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। उन्होने शायद उनको पढा भी न हो। मैं आशा करता हूँ कि सम्पादक और व्यवस्थापक अपने-अपने अखबारोंके विज्ञापनोका अध्ययन करेंगे और ऐसे विज्ञापनोको छाँट देंगे जो निस्सन्देह आपत्तिजनक हैं। मैं यह भी मानता हूँ कि प्रान्तोंके पत्रकार संघ इस मामलेको हाथमे लेंगे और अखबार-मालिकोंको विज्ञापन स्वीकार करने मे संयम और विवेकसे काम लेनेपर राजी करेंगे। उनसे ऐसी अपेक्षा रखना अनुचित न होगा कि वे ऐसे सभी विज्ञापनोको छाँट देंगे जिनसे सार्वजनिक नैतिकताके नियमोंके दूषित होने या श्लीलताकी भावनाको चोट पहुँचने की सम्भावना है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-७-१९३५

## ४१७. पत्र: जॉन हाईनीज होम्सको[१]

वर्धा
२७ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

यह पत्र श्री हीरालाल शर्माका आपसे परिचय करानेके निमित्त है। ये अमेरिकाके लिए बिलकुल अजनबी है। ये रोगोकी प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए अमेरिका जा रहे हैं। डॉ० केलॉगके बैटिल क्रीक सेनीटोरियमने इनका ध्यान आकर्षित किया है। मुझे अब डॉ० केलॉगके एक प्रतिनिधिसे मालूम हुआ है कि उन्होंने शिष्य बनाना बन्द कर दिया है। मैं तो श्री शर्माके पथ-प्रदर्शकके रूपमे आपसे अच्छे किसी आदमीके बारेमें सोच नही सकता। ये वहाँ एक बहुत ही गरीब आदमीकी तरह रहना चाहते हैं। ये बहुत परिश्रमी हैं। यदि किसी प्रकार ये अपनी शिक्षा और भोजनके निमित्त कुछ काम प्राप्त कर सकें तो उन्हें भी पसन्द होगा और मुझे भी। यदि यह न हो सका तो एक मित्र इनकी सहायता करेंगे और इनका तमाम खर्च वही उठायेंगे। आपसे जो भी सहायता बन पडे, इनको देनेकी कृपा कीजिए। मै श्री शर्माको कोई और परिचय-पत्र नही दे रहा हूँ — हरिदासके नाम भी नही। इस सम्बन्धमें आप जो-कुछ भी आवश्यक समझें, करने की कृपा कीजिए। मै जानता हूँ कि जो कष्ट मैं दे रहा हूँ, उसको आप कष्ट नही मानेंगे। आपको

१. इस पत्रकी एक नकल हीरालाल शर्माको भी दे दी गई थी।

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री शर्मा यह अध्ययन केवल रोगी लोगोकी सेवाकी खातिर ही कर रहे है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७६-७७

## ४१८. पत्र : छगनलाल जोशीको

२७ जुलाई, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै नही चाहता कि तुम्हारे और नारणदासके बीच जो भी थोडी-बहुत मिठास है वह भग हो जाये। अत मै तुम्हे पाठशालाके इस झगडेसे मुक्त रखूंगा। किन्तु तुम्हारे पत्रसे मै देखता हूँ कि तुम दोनोमे आपसमें भयकर स्वभावगत भेद तो बना ही हुआ है। तुमने एक प्रकारकी सहिष्णुता विकसित कर ली है। इतना ही काफी है कि तुम्हारा काम आसानीसे चलता रहे। जिस चीजके बारेमें तुम मेरा ध्यान आकर्षित करना चाहो उसके सम्बन्धमे मुझे लिखते रहना। उसका जिस तरह उपयोग करना मुझे उचित जान पडेगा वैसा मै करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

रमासे पूछना कि क्या उसके पत्रकी आशा करना ज्यादती है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२२) से।

## ४१९. पत्र : हरिगोविन्द गोविलको

२७ जुलाई, १९३५

भाई गोविल,

भाई हिरालाल शर्मा यह खत दगे। वह नैसर्गिक उपचारका अधिक ज्ञान पानेके लिये अमेरिका जा रहे है। वहूत गरीवीसे रहना चाहते है। हो सके तो अपने परिश्रमसे आजीविका भी पैदा करना चाहते है। उनको सेनेटोरियमके नामठाम दिया जाय, और भी जो परिचय दे सकते है दिया जाय। भाई शर्मा कभी हिन्दुस्तानके वाहर नही गये है।

वापुके आशीर्वाद

श्री हरिगोविन्द गोविल
५४, चौरगी, कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२४) से।

## ४२०. प्रश्नोत्तर[1]

२७ जुलाई, १९३५

प्रश्न : किसी आदर्श गाँवके लिए सफाई तथा आटा, चावल, गुड़, तेल आदि खाने-पीनेके सुधारोके अतिरिक्त और कौन-कौनसी वातें आवश्यक है?

उ० : हरएकमें देखना चाहिये।[2]

प्र० : यदि मुझे यह ठीक पता हो कि माता-पिता आदि सम्वन्धी केवल मोहके कारण ही मुझे किसी सर्वहितकारी कार्यमें सम्मिलित होनेसे रोकते है तो क्या मुझको उनकी इस आज्ञाको मानकर वैठ रहना चाहिए?

उ० . तव नही मानना धर्म हो सकता है।

प्र० : अपने गुरुजनों (माता, पिता, गुरु तथा शासक वर्ग) की ऐसी आज्ञाका मानना जिससे सत्य, अहिंसा आदि व्रतोंमें से किसी एक व्रतका विरोध पाया जाता हो, ठीक होगा अथवा नहीं?

उ० : नही।

१. २५ जुलाई, १९३५ को अवधेशदत्त अवस्थी द्वारा पूछे गये प्रश्नोंके उत्तर।

२. अर्थात् यह तो अलग-अलग गाँवोंकी जरूरतें देखकर तय करने की बात है।

प्र० : आर्यसमाजके दस नियमोंमें एक नियम यह भी है कि "प्रत्येक हितकारी नियम पालन करनेमें स्वतन्त्र तथा सर्वहितकारी नियम पालनमें परतन्त्र रहना चाहिए।" क्या यह ठीक है?

उ० : ठीक समजमे नही आता। क्या इसका यह अर्थ नही होगा कि किसी समाजमे कोई बुरी प्रथा है उसका मिटाना आवश्यक है लेकिन जबतक कुल समाज अथवा बहुमत मिटाने के पक्षमें न हो तवतक प्रथाको मानना चाहिए अर्थात् अकेले ही उस प्रथाका सक्रिय विरोध न करना चाहिए। हाँ, दूसरे प्रयत्न भले ही करता रहे।

प्र० : एक साधारण व्यक्तिके लिए क्या उचित होगा यही बताया जाय। महान् पुरुष जो भी करेगा उसके पीछे तो बहुमत हो ही जाता है।

उ० : व्यक्तिको कर्त्तव्यपर डटे रहना।

प्र० : आपने यह बताया है कि जेलके उसी नियमको न मानना चाहिए जो सचमुच स्वाभिमानके विरुद्ध हो। इसलिए यह बताया जाये कि "जोड़े-जोड़ेसे गिनती देना, मार तथा गाली खाते हुए काम करते रहना, हथकड़ी पहनकर बाल बनवाना, प्रार्थना न करना, टिकट लेकर परेडपर खड़े होना, परेड लगाना, सायं-प्रातः अनुचित ढंगसे तलाशी देना" इन सात बातोंमें सचमुच कौन बातें स्वाभिमानके विरुद्ध है। क्योंकि इन्हीं बातोंपर प्रायः जेलोंमें हर जगह झंझट पैदा होते थे।

उ० : जिसमे हम धर्म-हानि माने सो नही करना।

प्र० : आपने यह बतलाया है कि पत्नीका पालन करना और जहाँतक वह सहधर्मिणी रह सकती है उसका साथ देना पतिका धर्म है। सो यदि पत्नी सहधर्मिणी न हो, विरोधी विचारवाली हो तो पतिका पत्नीके प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। और ठीक ऐसी ही दशामें पतिके प्रति पत्नीका कर्त्तव्य क्या होगा?

उ० . दोनोका अलग रहना और पतिका आजीविका देना धर्म है।

प्र० : यदि मेरी मौजूदगीमें किसी मौकेपर (विशेषकर दरिद्रनारायण तथा हरिजन) रियासतका किसी भाईको पुलिसका सिपाही अथवा कोई मिथ्याभिमानी (विशेषकर सवर्ण) मनुष्य किसी कारणसे गाली देने अथवा मारने लगे, जैसाकि प्रायः हुआ ही करता है, तो ऐसे मौकेपर मेरा क्या कर्त्तव्य होगा?

उ० : अन्यायीसे रुक जानेका विनय करना, मजलुमको अहिंसक सहाय देना।

प्र० : एक पागल हाथी (अथवा कुत्ता) जो किसी प्रकार काबूमें नहीं आता है और अनेकों जानें ले चुका है तो क्या उसको मार देना उचित न होगा? यदि उचित है तो ऐसे ही स्वार्थ तथा काम-क्रोध आदिसे पागल मनुष्योंके लिए ऐसी ही अथवा इससे मिलती-जुलती व्यवस्था (राज्यसे) करना उचित ही होगा।

उ० : पागल हाथीपर भी यदि सच्चा प्रेम है तो सम्भव है वशमे आये। पागल मनुष्यके लिए स्टेट तो है ही।

प्र० : क्या स्त्रीसे पुरुषमें प्राकृतिक रूपसे कुछ श्रेष्ठता मानी जा सकती है?

उ० : नही।

प्र० : प्राय: स्त्रियाँ पुरुषोंकी पोशाक पहननेमें संकोच नहीं करती हैं जबकि पुरुष स्त्रीकी पोशाक पहनना ग्लानिकी बात समझता है। इसका क्या कारण है?

उ० : मेरी समझसे तो स्त्रियाँ पुरुषत्वको कुछ श्रेष्ठ समझती हैं। क्योंकि पुरुष स्त्रीको दुर्बल मानता है।

प्र० : आपके अंगारसे पके हुए अन्न न लेनेका क्या कारण है?

उ० : हिंसा, खर्च, समयका बचाव, आरोग्य इत्यादि।

प्र० : कुछ कारणोंसे मेरी यह धारणा हो गई है कि जबतक विद्योपार्जन करना अभीष्ट हो तबतक राष्ट्रीय अथवा सामाजिक आंदोलनसे सर्वथा पृथक् ही रहे। क्या यह धारणा ठीक है?

उ० : इसका निर्णय तुमारे करना है।

बापु

प्रश्नोत्तरोंकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२१) से।

## ४२१. हिंसा बनाम अहिंसा

'हरिजनबन्धु'का एक पाठक लिखता है :[1]

हिंसा-अहिंसाका द्वन्द्व अनादि है और अनन्त कालतक बना रहेगा। सभी लोग दोनों शब्दोंका अलग-अलग अर्थ करेंगे और अपनी इच्छा तथा सामर्थ्यके अनुसार उसपर आचरण करेंगे। अतः ऐसा लगता है कि इस बहुचर्चित विषयकी और अधिक चर्चा हमें कुछ बहुत आगे नहीं ले जा सकती। किन्तु दुर्बलतासे ग्रस्त हमारे आजके वातावरणमें अहिंसाको मैं जिस दृष्टिसे देखता हूँ, वह दृष्टिकोण नया-सा जान पड़ता है और इस कारण अहिंसाके भक्तोंको कभी-कभी आघात भी पहुँचता है। अहिंसा वीर पुरुषका लक्षण है। कायरता और अहिंसामें घोर शत्रुता है। हमारे भयसे घिरे हुए होने और अहिंसाको विपरीत ढंगसे देखनेके अभ्यस्त हो जानेके कारण हम उसका सही रूप नहीं देख पाते।

उपर्युक्त पत्रपर विचार करनेके लिए इतनी प्रस्तावना आवश्यक जान पड़ती है।

हमारे सामने ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि जहाँ अधिक साँप मारे जाते हैं, वहाँ औसतन अधिक लोग मरते हैं। बल्कि इसके विपरीत जहाँ एकमत होकर लोगोंने साँपको मारना अपना कर्त्तव्य मान लिया है वहाँ मुश्किलसे ही साँप देखनेको मिलते हैं। किन्तु इस प्रमाणके आधारपर हिंसाको धर्म सिद्ध नहीं किया जा सकता। अहिंसाको प्रमाण देकर ही सिद्ध किया जा सकता है। मारनेकी प्रथा तो चलती ही आई है। इस दृश्यको देखकर ही किसी वीर पुरुषको ग्लानिका अनुभव हुआ होगा और वह बोल उठा होगा : "यह धर्म नहीं, अधर्म है। अहिंसा ही सच्चा और शाश्वत धर्म है।"

१. पत्रका अनुवाद यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने लिखा था कि वह साँपोंके भयसे मुक्त नहीं हो सका है, हालाँकि वह यह जानता है कि अहिंसा ही जीवनका धर्म है।

यदि मैंने किन्ही विशेष परिस्थितियोमे साँपको मारने का सुझाव दिया हो तो वैसा मैंने अहिंसा-धर्मकी उन्नतिके लिए ही किया है, न कि उसका विनाश करने के लिए। अहिंसा मानसिक वृत्ति है। यदि मै भयवश किसी साँपको मारूँ किन्तु मेरा प्रयत्न उससे मैत्री करने का हो तो इसमे मेरी अहिंसाको लज्जित होनेका कोई कारण नही है। यदि मैं पूरी तरहसे प्रयत्न करूँगा तो मेरा वह प्रयत्न सफल भी हो सकता है।

सर्पादिको न मारनेमे हम दयाका उपयोग नही करते वल्कि रूढिसे वँधे होनेके कारण हमें उसमें अहिंसाका आभास मिलता है, इसलिए साँपको नही मारते। हम ऐसा नही कह सकते कि मनुष्य जिनसे डरता है उनपर वह दया दिखाता है। जो बलवान होगा वही निर्बलपर दया दिखा सकता है। साँपसे डर लगता है, इसलिए उसे पकडकर दूर छोड आनेमे दया कहाँ है? ऐसा करते हुए हमारे मनमें सामान्यत. इस वातका विचार तक नही आता कि किसी दिन हम साँपसे मित्रता करेगे। अहिंसा तो जाग्रत मनुष्यका धर्म है। अहिंसाके उपासकको उसका प्रतिक्षण ज्ञानपूर्वक उपयोग करना पड़ता है, क्योकि हम चारो ओरसे हिंसासे घिरे हुए है। इस विकट परिस्थिति-मे से सवको यथाशक्ति अपना रास्ता बनाना पडता है।

अव हम साँपको न मारनेकी क्रियाकी जाँच करे। यदि साँप हमपर हमला करने आए तो हम उसे अवश्य मार डालेगे बशर्ते कि हममे वैसा करनेकी हिम्मत हो। सामान्यत हम उसे नही मारते, क्योकि वह हमपर हमला नही करता। वह अपने रास्ते जाते हुए भूले-भटके हमारे घरमें पहुँच जाता है। इसलिए हम उसे पकडकर दूर फेक आते हैं और वह हमपर हमला न करे इस बातकी सावधानी वरतते हुए उसे जितना दु ख देना आवश्यक हो उतना दु ख देते हैं। इसके पीछे दया काम नही करती, बल्कि अहिंसाके स्वीकृत धर्मका पालन न करनेके कारण अगले जन्ममे मिलनेवाले दण्डका भय काम कर रहा है। हमने साँपको न मारकर कोई बहादुरी नही दिखाई, और उसे मार देनेमें कोई पराक्रम भी न होता। [मारने और न मारने] दोनो कामोके पीछे भयकी प्रेरणा है। यदि मुझमें सच्ची दया होगी तो मै साँपको पकडकर उससे मित्रता करूँगा और अन्य लोगोको भी उसके भयसे मुक्त करूँगा। यह ठीक है कि ऐसा करनेवाले साधुओके किस्से हम सुनते हैं। सम्भव है कि ये सव गप्प हो, इनमे अतिशयोक्ति हो। किन्तु यदि अहिंसा सच्ची वस्तु है तो साँप और मनुष्यके बीच ऐसी मित्रता होना असम्भव नही है।

यदि उपर्युक्त बाते पाठकको स्पष्ट हो गई हो तो वह समझ जायेगा कि जिस वाक्यके बारेमे शका उठाई गई है उसमें शकाकी कोई गुंजाइश नही है।[1] किन्तु

१. पत्र-लेखकने १४-७-१९३५ के हरिजनबन्धुमें प्रकाशित महादेव देसाईके अनुवाद "आदर्श और व्यवहार" से निम्न वाक्य उद्धृत किया था : "अहिंसा जीवनका नियम है, पर यदि मैं साँपसे डरता हूँ तो उस समय मेरा क्या कर्त्तव्य है? मनसे तो मैं पहले ही साँपका वध कर चुका; सिर्फ मेरी शारीरिक निर्बलता ही बाधा दे रही है। उस समय मेरा धर्म कहता है कि 'उसे मार डाल। उसे मारने से बचने का तेरा जो यह मिथ्या प्रयत्न हैं, वह त्याग दे'।"

इसका यह मतलब नही कि जबतक साँपका भय चला न जाये तबतक उन्हें देखते ही मार देना चाहिए। किन्तु जहाँ साँपोका भय बना ही रहता है वहाँ उन्हे मारनेमे सकोच करनेकी आवश्यकता नही है, क्योकि उक्त भयके पीछे मनकी अतल गहराईमें उन्हे मारनेकी इच्छा बनी ही हुई है। यदि कोई साँपको मार देता है तो वह निर्भयता अनुभव करता है। अहिंसक व्यक्तिके लिए इससे अधिक दयनीय अवस्थाकी कल्पना मैं नही कर सकता। सर्पादिको मित्र बनानेका प्रयास करनेवाला व्यक्ति ऐसी समस्याओको रिवाजके माफिक सुलझाकर ही सन्तुष्ट नही रहेगा, बल्कि ऐसे हिंस्र प्राणियोकी किसी भी तरहसे हिंसा न करके उनके भयसे मुक्त होनेका प्रयास करेगा।

सुन्दर स्त्रीका उदाहरण यहाँ बिलकुल नही घटता। यदि किसीके मनमे सुन्दर स्त्रीके प्रति विकार उत्पन्न हो जाय और वह उसे क्रियान्वित करनेका प्रयत्न करना चाहे तो बहुत-से लोग उसे मारनेको तैयार हो जायेंगे। मनुष्य ऐसे विकारोका शमन करता है अथवा जान-बूझकर विकारोको पोसकर अपनी मौत खुद बुलानेका उपाय करता है। सर्पके साथ तुलना तो इस प्रकार हो सकती है। मैं किसी स्त्रीपर मोहित हो जाऊँ और अपने मोहको क्रियान्वित करनेकी कोशिश करूँ, इसकी अपेक्षा मुझे अपने मनमे रहनेवाले सर्पका नाश करना चाहिए, अर्थात् मुझे कुँएमें डूब मरना चाहिए। यह सच्ची अहिंसा होगी और पराक्रमका काम माना जायेगा। इस जगत्में सर्पादि हमारे लिए प्रतीकस्वरूप हैं। हमारे मनके विकार बुराईके प्रतिबिम्ब हैं। यदि हम अपने मनके विकारोपर विजय पानेका भगीरथ प्रयास करे तो हम अपने मनमें रहनेवाले सर्पादि-रूप बन्धुओके भयसे मुक्त हो जायेंगे। किन्तु जबतक हम इस भयको नही छोड़ पाते तबतक मैत्रीकी इच्छा रखनेके बावजद जो उचित समझे सो करे।

[गुजरातीसे]
**हरिजनबन्धु**, २८-७-१९३५

## ४२२. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२८ जुलाई, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ हरिलालका पत्र है। जैसा मैंने लिखा था वही बात थी न? क्या अब भी वही हाल है? वह कहाँ रहता है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

साथका पत्र मैं इस खयालसे भेज रहा हूँ कि उसमें शिक्षाकी दृष्टिसे चरखेकी उपयोगितापर विचार किया गया है। पत्रमें जो-कुछ कहा गया है वह हमारे सोचने-समझने लायक है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८४६६ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

## ४२३. पत्र : एल० आर० डूचाको

वर्धा
२९ जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

खादीके बारेमें दिये मेरे सुझावोंके सम्बन्धमें आपने जो बातें कही हैं, उनके लिए आपका धन्यवाद।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एल० आर० डूचा
समाज-सेवक
३२२४/ए लिंगमपल्ली
हैदराबाद, दक्षिण

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७४२) से, सौजन्य : एल० आर० डूचा

## ४२४. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२९ जुलाई, १९३५

प्रिय चार्ली,

अगर तुमने १७ तारीखके लिए टिकट लिया हो तो तुम्हे शान्तिनिकेतनसे अब बहुत जल्द ही चल देना चाहिए। अन्यथा अन्तमें बडी भागदौड होगी। वेरियरके साथ एक दिन बितानेकी बात तो ठीक है, लेकिन तुम्हारे पास कोडाई [कनाल] जानेका समय नही है। एस्थरकी समस्या बहुत कठिन है। मेरा विचार यह है कि मेननको भारतमे तो अवश्य जमे रहना चाहिए, लेकिन तजौरमे नही। सच्चे कौशल का मूल्य तो हर जगह मिलता है।[1]

× × ×

श्रीमती अम्बालाल अहमदाबादमे है। वे लोग अभी हालमें ही लौटे है। वे भली-चंगी है।

अगर तुम यूरोपीय पाठकोके लिए काग्रेसके बारेमे कुछ सारपूर्ण चीजे लिख सको तो अच्छा है। लेकिन, वह चीज स्वतन्त्र रूपसे लिखी हुई होनी चाहिए और लेखकके रूपमें केवल तुम्हारा ही नाम होना चाहिए। तुम गिरिजा या किसी औरके नामके साथ अपना नाम जोड़ो, यह नही हो सकता।[2]

[पुनश्च :]

तुम्हे बताया या नही कि सुधीरको मैंने तुरन्त पत्र लिख दिया था?
आम्रकाशके बारेमे बताना।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९१) से।

१. इससे आगेकी दो पंक्तियोंके कई शब्द पढ़े नहीं जा सके, जिससे उनका आशय स्पष्ट नहीं हो पाया। अतः उनका अनुवाद नहीं दिया जा रहा है।

२. देखिए "पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको", १८-७-१९३५।

## ४२५. पत्र : पद्माको

२९ जुलाई, १९३५

चि० पद्मा,

यदि मैं रगीन कागजका टुकडा काममे लाऊँ तो एक पैसा खर्च अधिक बैठेगा और फिर वह हाथका बना कागज भी नही होगा। बीमार तो पड़ना ही नही चाहिए। क्या तेरे पास मगनचरखा है? यह बहुत अच्छी बात है कि शीला हरिजन पाठशाला मे पढती है। क्या अन्य सभी कातते हैं? यहाँ तो आजकल जरूरतसे ज्यादा वर्षा हो रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१५२) से। सी० डब्ल्यू० ३५०८से भी, सौजन्य · प्रभुदास गाधी

## ४२६. पत्र : क० मा० मुंशीको

२९ जुलाई, १९३५

भाई मुंशी,

विज्ञापन-सम्बन्धी मेरे सुझावके प्रति तुम्हारी अनुकूलताके कारण मै उलझनमें पड़ गया हूँ क्योकि इससे मेरा बोझ बढ जाता है और मुझे ऐसा भय होने लगता है कि मेरे विचारोके अनुसार काम करने की तुम्हारी आदतका मुझसे जाने-अनजाने कही दुरुपयोग न हो जाये और इस प्रकार मै तुम्हारे जैसे साथीको कही खो न बैठूँ। वैसे इसमे कोई सन्देह नही कि इस तरहके सयमसे 'अखबारकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मै भी यह मानता हूँ कि भूलाभाईका सुझाव[1] बहुत प्राविधिक है।

सलाहकार-मण्डलके बारेमें मै समझ गया।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९५८०) से; सौजन्य. क० मा० मुंशी

१. देखिए "पत्र : क० मा० मुंशीको", २५-७-१९३५ भी।

२. देखिए "पत्र : क० मा० मुंशीको", ८-७-१९३५ भी।

## ४२७. पत्र : प्रभुदास गांधीको

२९ जुलाई, १९३५

चि० प्रभुदास,

तेरा पत्र मिला। मुझे तो तेरा बनाया हुआ चरखा पसन्द आया। इसलिए मैंने काफी मेहनत करके उसपर अधिकार भी कर लिया। मैंने उसमे कुछ सुधार भी किये जो मुझे सूझे। लेकिन तेरा बजट पास नही हो सका। दो व्यक्ति मैं कहाँसे लाऊँ? यदि मारुति[1] अथवा लक्ष्मीदासके[2] मनमे उत्साह पैदा कर सके तो बात बन सकती है। लेकिन आप मरे बिना स्वर्ग नही दीखता। इसलिए मुझे तो लगता है कि तुझे अकेले ही जूझना पडेगा। मुझसे जो हो सकेगा सो करूँगा।

तेरा क्षेत्र निश्चित कर दिया गया है और फिलहाल तू गुलरिया नही छोड सकता। वहाँ जो हो सके सो करना। तेरा पत्र मैं ईश्वरलाल, विनोबा और काकाको पढवा दूँगा। तुझे तनिक भी बेचैन नही होना चाहिए। कताईके बारेमे मेरे आँकडे सही है।

ग्रामोद्योगके बारेमे तू भ्रममे है। जितने उद्योग तूने गिनाये है उनमे यदि उतने ही और जोड दिये जाये तो भी तू यह सिद्ध नही कर सकता कि किसी खास पैमाने के अनुसार मजूरीमे घट-बढ हुई है। जो विषमता है वह स्त्रियो और पुरुषोके बीच है। यह उस सिद्धान्तके अनुसार नही है कि जितनी अधिक जोखिम, उतनी अधिक तनख्वाह। प्रकृतिने सबकी आवश्यकता एक-जैसी रखी है, उनकी सभी उद्योगोंमे एक-जैसी मजूरी होनी चाहिए। तूने विषमतामे समता देखी है। यह निरा भ्रम है। इसपर पुन: विचार करना। मैं यह मानता हूँ कि जो लोग आज अधिक वेतन पा रहे है वे कम नही लेगे। इसका मुझे दुःख नही है। कम वेतन लेनेवालो को यदि न्याय मिल जाये तो मुझे सन्तोष हो जायेगा। यदि सभी लोग बुद्धिमान या भले बन जाये तो वे हर कामके लिए समान वेतन स्वीकार कर लेगे। फिर काम यज्ञका रूप ले लेगा। किन्तु वह युग अभी बहुत दूर है। यदि हम उस ओर बढे तो यह काफी होगा।

गोपीनाथजी का लेख मिल जानेपर मैं उसे जाँचकर तुझे वापस भेज दूँगा। मैं नही जानता कि तू जो इसकी प्रशसा करता है वह कहाँतक उचित है। मैंने तो इससे उलटा कुछ सुना था। किन्तु मैंने उसपर कोई ध्यान नही दिया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

१. मारुति शर्मा।

२. लक्ष्मीदास आसर।

## ४२८. पत्र : अम्बा गांधीको

२९ जुलाई, १९३५

चि० अंबा,

तुम्हारा खत अच्छा है। उसमे निराशाकी बू आती है सही, लेकिन हम निराश न बनें। हमारे तो कैसा भी सकट हो उसके बीचमे सेवा करनी है और वह भी प्रसन्न चित्त और श्रद्धासे। लोग सुने तो भी सही न सुने तो भी सही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ४२९. पत्र : एस० सी० डिलार्फको

वर्धा
३० जुलाई, १९३५

प्रिय मित्र,

टॉल्स्टॉय उन शिक्षकोमें से थे जिनके आगे मेरा सिर सहज ही झुक जाता था।

बस इतना ही लिखकर भेज सकता हूँ। मैं जो अकसर अपने सामानमे से गैर-जरूरी चीजोकी छँटनी करता रहता हूँ उसीके दौरान बहुत-से विदेशी पत्र नष्ट कर दिये। टॉल्स्टॉयके पत्र भी इसके अपवाद नही रहे। मैं अपनी कोई तसवीर नही रखता।

हृदयसे आपका,

एस० सी० डिलार्फ
'स्वोवोदा'
रू ६ सेप्टेम्बर, एन० ५
सोफिया (बल्गारिया)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य : प्यारेलाल

## ४३०. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

३० जुलाई, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुमने जो फोटो भेजा है, सुन्दर है। लडकीका चेहरा मुझे बड़ा अच्छा लगा। वह भोला और निर्दोष है। उनका जीवन पिताजी और माताजी के जीवनको तो भरेगा ही, मै चाहूंगा कि तुम भी अपने जीवनके अवकाशको उससे उसी तरह भर जाने दो। आशा है, किचीकी उँगली बिलकुल ठीक होती जा रही होगी।

कुकर कल ही आया।[1] बहुत अच्छा है। कीमत तुमने नही बताई। फल भी समयसे मिल गये थे।

इस बार कुछ ऐसा हुआ कि फल बडे मौकेसे आये, क्योकि इन दिनो यहाँ कई लोग बीमार है। मगर इसका मतलब यह न समझना कि मै तुमसे और भी फल भेजनेको कह रहा हूँ। अभी यहाँ काफी फल पडे हुए है, क्योकि मुलाकाती लोग कई टोकरे ले आये है।

स्नेह।

बापूके आशीर्वाद

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०४) से, सौजन्य . एस० अम्बुजम्माल

## ४३१. पत्र : जी० सीताराम शास्त्रीको

३० जुलाई, १९३५

प्रिय शास्त्री,

अदला-बदलीकी प्रणाली-विषयक निबन्धके[2] बारेमें मै चुप नही बैठा हुआ हूँ। प्रो० शाहने श्री वैकुण्ठनाथ मेहताका नाम सुझाया है। के०[3] लखनऊके प्रो० रगाका नाम सुझाते है। ये लखनऊके प्रो० राव कौन है? क्या वे आन्ध्रके है? अगर

१. देखिए "पत्र : अम्बुजम्मालको", १९-७-१९३५।

२. कृष्णा जिला-स्थित गुणाडला खद्दर संस्थानम्के यू० वेंकट कृष्णैयाने विनिमयकी प्रणालीपर सर्वोत्तम निबन्ध लिखनेवाले के लिए पुरस्कारकी घोषणा की थी।

३. शायद जे० सी० कुमारप्पा।

सबसे अच्छा और सबसे अधिक कायल करनेवाले तर्कोंसे युक्त निबन्ध अदला-बदली की प्रणालीके खिलाफ हो तो भी क्या पुरस्कार दिया जाना चाहिए?

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९१७३) से, सौजन्य : जी० सीताराम शास्त्री

## ४३२. पत्र : भगवानजी ए० मेहताको

३० जुलाई, १९३५

भाई भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मैं जमनालालजी को भेज रहा हूँ। मैं जब उनसे मिलूँगा तो अवश्य बात करूँगा। जिस सगाईके बारेमें तुमने बधाई दी है वह टूट गई है। कमलनयन कोलम्बोमें लन्दनकी मैट्रिककी परीक्षाकी तैयारी कर रहा है। यह कहना अनुचित है कि काठियावाडमें ऐसा कोई नही है जो पवित्र जीवन बिताते हुए त्यागवृत्तिसे काम कर सके। इस कथनको सिद्ध नही किया जा सकता। यह कहना जितना सही है कि यथा राजा तथा प्रजा, उतना ही यह कहना भी सही है कि यथा प्रजा तथा राजा। आप भला तो जग भला। क्या तुम छगनलाल जोशीको जानते हो? वह तो गाँवोका दौरा कर रहा है न?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२५) से। सी० डब्ल्यू० ३०४८ से भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

## ४३३. पत्र : कोतवालको

३० जुलाई, १९३५

भाई कोतवाल,

तुम्हारा मिथ्या लोभ अभीतक क्यो नही जाता? जिसने सेवा की क्या उसकी वह सेवा ही पुरस्कार और प्रमाणपत्र नही है? जिनसे मैं सर्वथा अपरिचित हूँ उन्हे क्या प्रमाणपत्र दूं? तुम्हे तो ऐसी झझटोसे मुक्त हो जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५९९) से।

# ४३४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

३० जुलाई, १९३५

चि० नरहरि;

विद्यालयके बारेमे लिखा तुम्हारा पत्र मै पढ गया। जयाबहनको कितना वेतन दिया जाता है? क्या तुम यह नही मानते कि हमारी शिक्षा-पद्धतिमे कोई ऐसा दोष अवश्य है कि जिससे, हालाँकि हमारे यहाँ कमसे-कम पच्चीस बहने होगी, हम एकको भी वैसा नही बना सके जैसा कि तुम लिखते हो। यदि ऐसा हो तो बाहरसे किसी ऐसी बहनके मिलने की आशा कैसे कर सकते है जो हमारे ढाँचेमे ठीक बैठ सके? मुझे तो लगता है कि जैसा हमने बोया होगा वैसा हमे काटना पडेगा। तुम अपने मनमे इस बातका वहमतक मत रखना कि शिष्टाचारके कारण मै अपनी गिनती 'हम लोगो' मे करता हूँ। मै अपनी कमीको भली-भाँति समझता हूँ। मै स्वयंको शिक्षक तो मानता ही हूँ किन्तु 'निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' की तरह ही। यह सब लिखकर मै यही कहना चाहता हूँ कि तुम्हे यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जैसी तुम चाहते हो वैसी बहन हमे अपनेमे से ही तैयार करनी है। किसी दिन उक्त प्रयास सफल होगा। बाहर से ऐसी कार्यकर्त्री प्राप्त करने का प्रयत्न बेकार होगा। यदि इस प्रयत्नमे सफलता मिलने की सम्भावना हो तो भी उसे छोड़ देनेमे ही हमारा भला और हमारी सेवाकी सफलता है।

क्या तुम बालिकाओको तकलीपर नये ढगसे कताई करना सिखाते हो? यह ढग बहुत ही आसान है। यह देखने मे आया है कि पन्द्रह दिनमे ही छोटी बालिकाएँ आध घटेमे ८० तारकी गतिसे कातने लगती है क्योकि यह ढग बिलकुल आसान है। समय-समयपर लडकियोकी चरखे और तकलीपर कातने की गति जाँचते रहना।

फिलहाल मै विद्यापीठके बारेमे कुछ नही लिख रहा हूँ।

गोशालाके बारेमे मै लगातार सोचता रहा हूँ। मुझे अब भी यह लगता है कि या तो हमे किसी पिंजरापोलको अपने अधिकारमे ले लेना चाहिए और वहाँ बेकार पशुओको रखना चाहिए या फिर दुग्धालयके साथ-साथ पिंजरापोल भी बनाना चाहिए। ऐसे पशुओको वीडजमे या ऐसी ही किसी अन्य जगहपर रखा जा सकता है। पारनेरकरकी भरवाड़ोसे सहयोग प्राप्त करने की योजना मुझे अधिकाधिक आकर्षित कर रही है। मै बडे पैमानेपर उसका यहाँ प्रयोग करना चाहता हूँ। डाह्यालालके तैयार होने-भर की देर है। शायद टाइटस आये। उसका तार आया था। पारनेरकरसे मै जो समझ पाया हूँ वह यह कि भरवाडोके पशुओपर हमें पूरा नियन्त्रण रखना चाहिए। हम जैसा कहें वैसा चारा वे पशुओको दे, वैज्ञानिक ढगसे पशुओको दुहे

और उनका पालन-पोषण करें। उनसे जो दूध मिलेगा उसे हम बेच देंगे। यदि अंतिम दोनो बातें सम्भव न हों तो बात आगे मत बढ़ाना।

फिलहाल तो वनमालाको अलोना खानेका अपना व्रत समाप्त करना पड़ेगा। यदि वह कोई अन्य व्रत ले ले तो अच्छा होगा। तुम शायद भास्कररावसे परिचित हो। वह पहले आश्रममें था और फिर विनोबाजीके पास रहा। मामाकी निगरानीमें भी रहा है। वह बड़ौदामें है। वह अपने माता-पितासे बहुत दूर रहना नहीं चाहता। वह गुजराती, संस्कृत और मराठी जानता है। बहुत करके अंग्रेजी भी जानता है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए उसे सिर्फ पच्चीस रुपये महीना चाहिए। मेरा सुझाव है कि तुम उसे विनय मन्दिर या हरिजन आश्रममें रख लो। विनोबा मानते हैं कि यदि हम उसे ले लेंगे तो वह हमारे कामका सिद्ध होगा। वह बहुत कर्मपरायण व्यक्ति है। शायद तुम्हें जानता भी हो। यदि तुम विद्यापीठ या हरिजन आश्रममें उसका उपयोग कर ही न सको तो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८४) से।

## ४३५. सन्देश : लीग कौंसिल, लंदनको[1]

वर्धा
[१ अगस्त, १९३५ या उसके पूर्व][2]

मैं शान्तिके लिए प्रार्थना और उसकी आशा ही कर सकता हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २-८-१९३५

१. इतालवी-अबीसीनियाई संकटके सिलसिलेमें अपनी बैठकके पूर्व अविलम्ब सन्देश भेजने के लिए किये गये लीग ऑफ नेशन्सके अनुरोधके उत्तरमें।

२. तारीख "वर्धा, १ अगस्त," १९३५ के अन्तर्गत, "हमारे विशेष सम्वाददाता" की ओरसे भेजी गई सामग्रीके रूपमें प्रकाशित।

## ४३६. वक्तव्य : इतालवी-अबीसीनियाई संकटके सम्बन्धमें

[१ अगस्त, १९३५ या उसके पूर्व][1]

मुझे मालूम हुआ है, लोगोंके पूछने पर गांधीजी ने यह स्पष्टकर दिया है कि उन्होंने चन्देके लिए ऐसी कोई अपील जारी नहीं की है।[2] गांधीजी इतालवी-अबीसीनियाई संकटके सिलसिलेमें किसीसे भी मुलाकात नहीं करना चाहते, जिसका कारण वे यह बताते हैं, यदि वे अपनी रायपर अमल नहीं कर सकते तो मात्र मौखिक रूपसे उसे व्यक्त करना कोई महत्त्व नहीं रखता।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २-८-१९३५

## ४३७. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको

वर्धागंज

१ अगस्त, १९३५

रायटर एजेंसी द्वारा लॉर्ड जेटलैंडके नामसे प्रसारित इस वक्तव्यको[3] पढ़कर मुझे आश्चर्य हो रहा है कि श्री एम० आर० मसानीने मेरे प्रस्तावका[4] विरोध करते हुए हिंसाकी वकालत की थी। मेरा प्रस्ताव था कि कांग्रेसके सिद्धान्त-पत्रमे "वैध तथा शान्तिपूर्ण" शब्दोके स्थानपर "सत्यनिष्ठ तथा अहिंसात्मक" शब्द रखे जायें।

मेरे मनमें उस अवसरकी स्मृति बड़ी स्पष्ट है और मै निश्चित तौरपर कहता हूँ कि उनके भाषणमे हिंसाकी वकालत-जैसी कोई भी बात नही थी। अन्य अनेक व्यक्तियोकी भाँति उनको भी राजनीतिक सिद्धान्त-पत्रमे बहुत-कुछ धार्मिक किस्मकी शब्दावलीके प्रयोगपर आपत्ति थी।

१. "वर्धा, १ अगस्त," १९३५ की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत प्रकाशित।

२. साधन-सूत्रमें बताया गया था कि "देशमें तो इसकी कोई जानकारी नहीं, पर लगता है विदेशोंमें ऐसी अफवाह फैल गई है कि गांधीजी ने अबीसीनियामें रेडक्रास सेवाके भारतीयोंका एक स्वयंसेवक दल तैयार करनेके लिए चन्देकी अपील जारी की है। लगता है, यह अफवाह लन्दनसे चलकर अमेरिका पहुँच गई है और ऐसा कदम उठानेके लिए अमेरिकासे बधाईका एक तार पाकर गांधीजी को आश्चर्य हुआ है।"

३. भारत-मंत्री; एम० आर० मसानीका पासपोर्ट जब्त किये जानेके सम्बन्धमें कॉमन्स सभामें लॉर्ड फैरिंगडन द्वारा पूछे गये प्रश्नके उत्तरमें तत्कालीन भारत-मन्त्री द्वारा दिया गया।

४. बम्बईमें २६ अक्तूबर, १९३४ को हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके वार्षिक अधिवेशनमें। देखिए खण्ड ५९ पृ० २५२।

इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सम्राट्के अधीन सबसे अधिक जिम्मेदारीके एक पदपर आसीन लार्ड जेटलैंड वैसी दो टूक भाषा प्रयोग करना स्वय पसन्द नही करेगे जैसी भाषाका प्रयोग करते वे बताये गये है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २-८-१९३५

## ४३८. पत्र : हीरालाल शर्माको

१ अगस्त, १९३५

चि० शर्मा,

यह क्या बात है कि तुमारे तरफसे कोई खत नही है? श्री ब्रजमोहनके खत से पाता हू अमरीकाका खर्च बहुत है। इतना होना नही चाहीये। वहा जाकर देखोगे। मजदूर बनकर रहने मे खर्च कम होना ही चाहीये। सब ठीक चल रहा होगा। सब हाल दे दो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृति से।

## ४३९. पत्र : आप्रकाशचन्द्र मेहताको

वर्धा

२ अगस्त, १९३५

प्रिय आप्रकाश,

इस उम्रमें तुम्हारी कसौटी हो, यह बात तुम्हारे लिए अत्यन्त पीड़ाजनक क्यो होनी चाहिए? बल्कि यो कहें कि इस नये प्रयोगमे उम्र तुम्हारे विरुद्ध है। किसी अजनबीके लिए, चाहे वह जितना योग्य हो, यह कसौटीकी बात मानी जा सकती है। खास तौरसे यह बात ऐसे व्यक्तिपर लागू होती है जो तुम्हारी तरह किसी नये उपक्रममे लगे। ऐसा क्यो मान लेना चाहिए कि दुनिया हमे वैसा ही समझे-जाने जैसा हम स्वय अपने को समझते है? हर प्रार्थनामें प्रतिदिन हम जिन ग्यारह प्रतिज्ञाओको[1], दुहराते है उन्हें याद रखना। वह श्लोक इस विनतीसे समाप्त होता है कि हम उन प्रतिज्ञाओका पालन पूरे विनयसे करे। विनय शान्ति और सच्चे आनन्दकी कुजी है।

तुम्हारे अनुभवके बारेमें तुम्हारे प्रथम पत्रकी प्रतीक्षा मैं किंचित् अधीरतासे कर रहा हूँ।

१. देखिए "पत्र : कृष्णचन्द्र को", १४-५-१९३५।

वहाँ अमलाको[1] ढूँढकर उससे मिलना और मैत्री करना।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य . प्यारेलाल

## ४४०. पुर्जा : अवधेशदत्त अवस्थीको[2]

२ अगस्त, १९३५

लिखा करो और उत्तर देनेकी चेष्टा करूंगा। जब आनेका दिल हो तब लिखो। मैं यहीं हूंगा तो मैं सम्मति भेजने का प्रयत्न करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन०' ३२२३)से।

## ४४१. टिप्पणियाँ

### एक देश-सेवकका स्वर्गवास

पुरुलियाके निवारणबाबू, जिनका अभी हालमे स्वर्गवास हो गया है, बहुत विनम्र स्वभावके अत्यन्त सज्जन पुरुष थे। वे हरिजनोके सच्चे सेवक थे और उसी तरह समस्त दीन-हीनके सच्चे बन्धु थे। अहिंसाकी अनुपम सुन्दरताका उन्होने खूब गहरे जाकर साक्षात्कार किया था और उसे अपने जीवनमे उतारने का वे अहर्निश प्रयत्न करते रहते थे। उनका जीवन उनके अनेक मित्रो और अनुयायियोके लिए प्रेरणाप्रद था, और वे भारीसे भी भारी सकटके समय निवारण बाबूसे पथ-प्रदर्शन तथा आश्वासन की आशा रखते थे। उनके मित्रो और अनुयायियोको उनके जीवनकी स्मृति सदा शक्ति और सन्मार्गपर उत्तरोत्तर प्रगति करने की स्फूर्ति देती रहे।

### सर्वस्व-दान

महान् हरिजन-सेवक श्री ज्वालाप्रसाद मडेलिया अब इस लोकमे नही हैं। केन्द्रीय हरिजन सेवक सघके वे कोषाध्यक्ष थे। और जिस ध्येयको लेकर वे चल रहे थे, तथा जिसके प्रति उनका प्रेम अनुपमेय था, उसके वे कैसे अद्भुत सरक्षक थे! आजकल प्राय· जिस अर्थमे धनी शब्दका प्रयोग होता है वह वैसे धनी नहीं कहे

१. मार्गरेट स्पीगल।

२. यह अवधेशदत्त अवस्थीको लिखे पत्रपर ही एक ओर लिखा गया था। अवस्थी आश्रम छोड़ने वाले थे।

जा सकते थे। पर वे बिडला मिल्स, दिल्लीके सेक्रेटरी थे, और वहाँ उन्होने जो-कुछ कमाया, जो-कुछ उनके पास था, वह सब वे दान कर गये है। अपने जीवनकालमें भी उन्होने परोपकारी कार्योमे दिल खोलकर पैसा दिया। वे एक जन्म-सिद्ध सुधारक थे। विधवाओका उद्धार-काय उन्हे उतना ही प्रिय था जितना कि हरिजनो का, और अपनी वसीयतमे वे इन्ही दोनोके लिए अपना सर्वस्व दान कर गये है। उनके इस दानका व्यय उनके मूल स्थान पिलानीमे किया जायेगा।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ३-८-१९३५

## ४४२. वस्त्र-स्वावलम्बन

शहरवाले तो खादी-उत्पादनकी किसी भी क्रियामे हाथ लगाना नही चाहते या लगा नही सकते अतः उनके लिए बनाई जानेवाली खादीकी सफलताकी शर्तें एक प्रकारकी है जब कि वस्त्र-स्वावलम्बनके प्रयोगकी सिद्धिके लिए उससे भिन्न ही प्रकारकी परिस्थितियाँ अपेक्षित है। बेचने के लिए जो खादी बनाई जाती है उसमे कपास बोने और उसकी फलियाँ चुनने से लेकर सूत बुननेतक की प्रत्येक क्रिया अनेक आदमियोके बीचमे आसानीसे बाँटी जा सकती है। खास करके जहाँ मजदूरी सबको करीब-करीब एक-सी दी जाती हो, वहाँ तो क्रियाओका यह विभाजन और भी आसान हो जाता है। विभिन्न मनुष्योको विभिन्न क्रियाओमे किसीकी देख-रेखमे, और सहकारिताके आधारपर लगाया जाये तो परिणाम अधिक अच्छा आयेगा। लेकिन जहाँ कोई चीज अपने घरेलू उपयोगके लिए ही बनानी हो, वहाँ तो एक ही कुटुम्ब या एक ही व्यक्तिमे सारी क्रियाओका केन्द्रीकरण जितना अधिक होगा समय और धनकी उतनी ही बचत होगी। किसी मनुष्यके पास यदि ऐसी थोडी-सी भी जमीन हो, जिसे वह कम ही सही पर पर्याप्त समयतक अपनी कह सके, और उसपर वह नित्य परिश्रम करे तो वह अथवा उसके कुटम्बके आदमी फुरसतके समय सिर्फ थोडे हाथ-पैर चलाकर अपनी जरूरत-भरकी खादी बना सकते है। उसे केवल इतना ही बता देनेकी जरूरत है कि हरएक मनुष्य करीब-करीब मुफ्तमे ही अपनी जरूरत-भरकी खादी किस तरह बना सकता है। खादी-उत्पादनमे यदि मजदूरी देनी पड़े, और मजदूरीकी दर प्रति घटेके हिसाबसे समान रखी गई हो, तब सबसे अधिक पैसा कताई-की क्रियापर बैठेगा। कारण यह है कि एक गज खादीके लिए सूत कातने मे जितना समय लगता है वह कताईसे पहलेकी या बादकी किसी भी क्रियासे अधिक होता है। कोई मनुष्य अगर कपास खुद ही ओट ले, खुद ही धुन ले और खुद ही कात ले — और इतना तो वह आसानीसे कर सकता है — तो उसे खादी करीब-करीब उसी कीमतपर मिल जायेगी जिस कीमतपर मिलका कपडा। किसी पदार्थकी लागत उसके उत्पादनपर खर्च किये गये श्रमकी कीमतसे गिनी जाती है। इसलिए जब सारा श्रम स्वय उपभोक्ताका ही हो और वह भी फुरसतके समय किया गया हो,

तब लागत लगभग कुछ भी नही होती। स्वावलम्बी खादी बिचौलियोको बिलकुल उडा देती है। यह गाँवोके करोडो अधभूखे लोगोकी आमदनी प्रत्यक्ष रूपमे बढानेका सबसे सरल उपाय है।

परन्तु क्या ग्रामवासी कभी स्वावलम्बी खादीको अपनायेगा? हाँ, यदि हममें श्रद्धा के साथ-साथ वैज्ञानिक कौशल हो या ऐसी सजीव श्रद्धा हो जो पहाडोको हिला दे और हम मजदूरको उसके कामके लिए आवश्यक सारी कुशलता प्रदान करें। यह बेशक कठिन है। परन्तु कठिन हो या आसान, उसका अभीतक किसी बडे या सगठित पैमानेपर अथवा किसी सुकल्पित योजनाके अनुसार प्रयत्न नही किया गया। जबतक कोई सुकल्पित, भारतव्यापी प्रयत्न गाँववालो को यह शिक्षा देने का न होगा कि वे अपना कपडा आप तैयार कर ले और इस तरह उनके देहात में जो थोड़ी-बहुत संपत्ति बाकी है उसका अनावश्यक रूपमे वहाँसे चला जाना रोका नही जायेगा, तबतक चरखा संघका अस्तित्व उचित नही माना जायेगा। कारण, जैसा मै कुछ समयसे इस पत्रमे आग्रह कर रहा हूँ, खादीका सन्देश यही है कि स्थानीय उत्पादन और स्थानीय उपयोगके द्वारा वह देहातमें सर्वत्र काम आने लगे। प्रत्येक गाँवमें, उन गाँवोमे भी जहाँ पहले कपास कभी नही बोई गई हो, कपासकी खेती कराकर कार्यारम्भ करना पडेगा। कपासकी खेतीके विकेन्द्रीकरणके बिना देहातमें खादीकी सार्वत्रिक उत्पत्ति सम्भव नहीं होगी। हमारे पास इसके प्रामाणिक उदाहरण है कि ज़मीनके विवेकपूर्ण सुधार और सँभालसे मरुस्थल भी लहलहाते उद्यान बन गये है। इसलिए प्रत्येक ग्राममें वहीके उपयोगके लिए काफी कपास उगा लेना असम्भव नही होना चाहिए। इससे खादी ग्रामवासियोके लिए सस्ती ही नही हो जायेगी, परन्तु खादीका टिकाऊपन भी बढ जायेगा। अनुभवने अन्तिम रूपसे प्रमाणित कर दिया है कि सूतकी मजबूती और पैदावारपर काममे लाई जानेवाली रुईकी किस्मका और कपासको चुनने, साफ करने, ओटने, धुनने और कातने की पद्धतिका प्रभाव पडता है। जिस रुईसे ढाकाकी प्रसिद्ध मलमल तैयार हो सकी थी उसपर होनेवाली तमाम प्रक्रियाओमें कोमलता रहनी चाहिए। तभी तो वह 'शबनम' मे बदली जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-८-१९३५

## ४४३. उद्गार : शरीर-श्रमके विषयमें[1]

जो लोग शरीर-श्रम नही करते, उनसे तुम ईर्ष्या क्यो करते हो? दुनियामे हरएक आदमी अपने पसीनेकी ही कमाई खायेगा ऐसी कल्पना तो मैंने कभी नही की। मैंने तो एक स्वर्ण-नियम-भर बतला दिया है। उसपर चलने के लिए तुम खुद तैयार हो या नही? यदि हाँ, तो जिस मनुष्यमे इस नियमपर चलने की तैयारी या शक्ति नही है उसके प्रति तुम्हें द्वेष नही रखना चाहिए। मै तो दूध और फल खाता हूँ उन्हे अगर शुद्ध शरीर-श्रम करके प्राप्त नही करता तो इसका यह अर्थ हुआ कि मै दयाका पात्र हूँ, इससे शरीर-श्रमके उक्त नियममे कोई न्यूनता नही आती। ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन थोडे-से इने-गिने लोग ही करते होगे पर इससे क्या उन्हे ब्रह्मचर्यका पालन न कर सकनेवाले करोड़ो मनुष्योके प्रति द्वेष करना चाहिए? वे तो द्वेषके नही, दयाके पात्र है। . . मैंने तो जिस आदर्शतक हमें पहुँचना है वह वतलाया है। हरएक मनुष्य उसका यथाशक्ति पालन करे। अगर आपसे किसी भी तरहका शारीरिक श्रम नही हो सकता तो उसके लिए आप दु:ख न करे। आप दूसरा जो शुद्ध धन्धा कर सकते हो वह करे, और इतना ध्यान रखे कि आपके लिए जो लोग पसीना बहाते है उनका आप शोषण न करे। आप यह मानते है कि डॉक्टरो आदिको शारीरिक श्रम करने के लिए फुरसत नही मिलती, तो उनके लिए आप चिन्ता न करे। ये लोग यदि शुद्ध सेवा-भावसे समाजकी सेवा करेगे तो समाज इतना ध्यान तो रखेगा ही कि उन्हे भूखो न मरना पडे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३-८-१९३५

## ४४४. पत्र : नारणदास गांधीको

३ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे दोनो पत्रोके उत्तरमे अभी तो मैं कुछ नही लिखना चाहता। मै ये पत्र सम्बन्धित व्यक्तियोको भेज रहा हूँ। फिलहाल तो मैंने वे सरदार और नरहरि को पढने को भेजे है, क्योकि उन्हे भी वैसे ही पत्र मिले थे। इस मामलेमे उन्हे

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र)से उद्धृत। अपने इस लेखमें गांधीजी के उक्त उद्गारोंको गूँथते हुए महादेव देसाईने प्रस्तावनाके रूपमें लिखा था: "गांधीजी जो कि बहुत ही सादीसे-सादी बातें कहते है वे भी कुछ लोगोंको पहेली-सी मालूम होती हैं। इनमें से एक है गांधीजी का शरीर-श्रमका आग्रह।" देखिए "श्रमयज्ञ", २९-६-१९३५ भी।

कुछ नही कहना है। जोशीकी पोशाकके बारेमे जो बात थी वह मैने तुमसे पहले ही पूछ ली थी। उसका पत्र अभी मुझे नही मिला है। उसपर क्या आरोप था? यदि ऐसे सहायक शिक्षक शालामे खादी पहनकर आये तो वह पर्याप्त माना जायेगा। उनसे अधिककी आशा नही की जानी चाहिए। यदि उनकी खादीपर श्रद्धा हो तो अच्छा होगा।

फिलहाल तो मेरा काम बहुत बढ गया है क्योकि बुजुर्ग साथी इकट्ठे हुए है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४६७ से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

## ४४५. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

३ अगस्त, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारे इतने गहरे पानीमे जाना नही। जितना हो सके इतना करो। खोटा रुपैया तो महादोष था। दूसरेमे भी निर्बलता तो थी ही। निर्बल तो हम सब है। भगवान हमको बचाये रखे। यहा आजकल तो काफी ठडक है। बारीस बंध होनेसे गरमी होगी ही। मेरा कुछ अभिप्राय है कि तुमारे आलमोडे-जैसे स्थानमें स्थिर होना होगा। वहा भी सेवाक्षेत्र तो काफी है। यहा कुशल।

बापुके आशीर्वाद

श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाला
कटरा खुशालराय
दिल्ली

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३७) से।

## ४४६. पत्र : जमनालाल बजाजको

वर्धा
३ अगस्त, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम थैलीके लिए द्रव्य एकत्र करने इदौर जा रहे हो। इस सिलसिलेमे तुमने मुझसे तीन बाते जानना चाही है — (१) यह रुपया किस प्रकार खर्च किया जायगा, (२) कोई अकित दान इसमे लिया जाय या नही? और (३) इसके खर्चके लिए कोई ट्रस्ट या कमिटी आप बनाना चाहते है या क्या व्यवस्था सोची है?

इनके सम्बन्धमें मेरा खुलासा यह है कि मेरी माग मुख्यतः दक्षिण भारतमे हिन्दी-प्रचारके लिए है, किन्तु आवश्यकता देखकर दूसरे प्रान्तोमे भी जैसे बगाल, आसाम, सिन्ध, गुजरात, पंजाब आदि जहाँ हिन्दी भाषाका प्रचार या प्रवेश नही है मै इस रकमको लगाना चाहता हू। इनमे से किसी प्रान्तके कार्यके लिए अथवा इस कार्यके लिए आवश्यक प्रचारक तैयार करने के लिए कोई दाता अंकित रकम देगे तो थैलीके लिए उसे स्वीकारने मे कोई आपत्ति न होनी चाहिए।

अब रही बात ट्रस्ट या कमिटी की। सो सब रुपया मिल जानेपर ट्रस्ट या कमिटी बनाकर अथवा किसी रजिस्टर्ड संस्थाके द्वारा मेरी देख-रेखमे रुपया खर्च करने का मेरा इरादा है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७४)से।

## ४४७. पत्र : सत्यदेवको

३ अगस्त, १९३५

भाई सत्यदेव,

आप तो नया सप्रदाय चला रहे है। उसमे मेरी चोच नही डूबेगी। इसलिए मै आपको यहा आनेका कष्ट क्यो दू? आप लाहौरसे अवश्य बोध करते रहिये।

मैंने आपका अगला पत्र ठीक सुन लिया था। उसके बाद ही उत्तर दिया था। 'विशाल भारत' मे अश्लील बाते मैंने नही पाई है। मैंने उसको सच्चा आदमी पाया है। उनके सब विचारोसे मै सहमत नही हू। लेकिन यह कोई दोषकी बात नहीं है। आपके सिवाय और किसीकी तरफसे मैंने उनके बारेमें शिकायत नही सुनी है। आप उनको मानते है।

मेरे इर्द गिर्दमे रहनेवालो मे से किनको आपने सच्चे और ईमानदार नही पाये? आप सचोट प्रमाण दे तो उनका त्याग करुगा। शायद महादेवको छोड़कर औरोको तो आप जानते भी नही होगे।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य प्यारेलाल

## ४४८. पत्र : ईश्वरदासको

३ अगस्त, १९३५

भाई ईश्वरदास,

तुम्हारा दोनो खत मिले है। मै देखता हू तुमको प्रश्न पूछने का व्याधि है। इसलिए मै उत्तर नहिं दुगा। जो-कुछं 'हरिजन' और 'हरिजनसेवक' से मिले उससे सतुष्ट रहो। और यथाशक्ति उसमे से जो पसन्द आवे उसका पालन करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ४४९. पत्र : वालजी गो० देसाईको

वर्धा
४ अगस्त, १९३५

चि० वालजी,

बगालकी खादी-विषयक तुम्हारा लेख मैंने अस्वीकार कर दिया है। मुझे कुछ ऐसा खयाल है कि मैंने इस सम्बन्धमें तुम्हे लिखा है। गायका दूध बढाने के सुझावके बारेमे मै देखूँगा। ग्रामोद्योग सघका पैसा आदि बैंकमे रहे इसमे फिलहाल मुझे कोई बुराई नजर नही आती।

लोगोको जीवाणुविहीन बनाने के बारेमे मैं कोई पक्की राय नही दे सकता। मेरा रुख उसके विरुद्ध है। अपने पापोका फल भोगने के सिवा और कोई चारा नही है। ऐसा जबरदस्ती किया जाये तो उसमे बहुत अनर्थ बढने और अत्याचार होनेका भय है। अपविकासका सिद्धान्त मुझे तो निराधार लगता है।

गोविन्दलालने गोविन्दनगरके बारेमे मुझे लिखा था। वह मामला ऐसा नही है जिसमे हम हाथ डाले। भले वह नगरपालिकाके पास जाये।

तुम्हे कौन-सी पुस्तके चाहिए? यदि मुझे उनकी सूची भेज दो तो मै उन्हे मँगवानेकी व्यवस्था करूँगा। किन्तु मै तुम्हें आँखोको दाँवपर लगाकर रतजगा नही करने दूँगा। आशा है, तुम सब कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७३)से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

## ४५०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

४ अगस्त, १९३५

भाई घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला है। अगले भी सब मिले है। मेरे खतमे ऐसा भाव तो नही था कि तुमारे केस रजु करनेमे कुछ भी गलती थी। जहातक मुझे स्मरण है मेरे कहनेका मतलब यह था कि तुम तो सब-कुछ ठीक ही कर सके लेकिन मुझे डर रहा है कि समझौताके अर्थ करनेमे अनेक दिक्कत पैदा होनेवाली है। लेकिन मै निश्चिन्त हू। जो होनेका है सो होगा ही। हम अपने कर्त्तव्यका निडरतासे पालन करे। तुमारा काम हो जानेसे अवश्य आ जाना। वहा बेकार बैठना भी अच्छा नही लगेगा। हा, शरीर अच्छा करनेके लिये रहना उचित लगे तो अवश्य रहना।

हरिजन सघकी सब बाते तो मिला करती होगी।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०१३ से; सौजन्य : घनश्यामदास बिडला

## ४५१. पत्र : लक्ष्मीनिवास बिड़लाको

४ अगस्त, १९३५

चि० लक्ष्मीनिवास,

तुमारा खत मिला है। अगले सब खत मिले थे। पिताजीके लिये खत तो भेजता हू। अगर वे निकल चुके है तो मुझे लिखो अथवा तार दो।

सब कुशल होगे।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८०१८ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

## ४५२. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

४ अगस्त, १९३५

भाई मूलचद,

तुमारे दोनो खत मिले है।

बहिष्कार मिटानेका इलाज बहिष्कारका दुख ही नही मानना।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५७) से।

## ४५३. सन्देश : 'हंस' को

वर्धा
५ अगस्त, १९३५

'हंस' हिन्दुस्तान-भरमें अनोखा प्रयत्न है। यदि हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनना है तो ऐसे मासिककी अत्यावश्यकता है। प्रत्येक प्रान्तकी भाषामें ये लेख लिखे जाते हैं उसका परिचय राष्ट्रभाषा द्वारा सबको मिलना चाहिये। बहुत खुशीकी बात है कि अब ऐसा परिचय दिल चाहे उनको 'हंस' द्वारा प्रतिमास आधा रुपयेमें मिल सकेगा।

मो० क० गांधी

सी० डब्ल्यू० ७५८२ से; सौजन्य : क० मा० मुंशी

## ४५४. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

५ अगस्त, १९३५

चि० अमला,

तुम अकारण ही सन्देहशील हो रही हो। और अब तो पाँच शिष्योंकी दाढी बन जानेपर तुम महादेवकी, मेरी और अपने सभी स्नेहियोंकी उपेक्षा कर ही सकती हो। मैंने सतीशबाबू से कह दिया है कि तुमको तुरन्त पूनियाँ भेज दें। मुझे आशा है कि अबतक वे तुमको मिल भी गई होंगी। मुझे इस बातकी खुशी है कि अब तुमको अपना जीवन ठीकसे जमता दिख रहा है।

स्नेह।

बापू

श्री अमलाबहन स्पीगल
शान्तिनिकेतन, बरास्ता बोलपुर

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स; सौजन्य . नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ४५५. पत्र : क० मा० मुंशीको

५ अगस्त, १९३५

भाई मुंशी,

पत्रक तो तुमने बहुत आकर्षक निकाला है। तुम भला साज-सज्जामें कोई कसर क्यों रखने लगे। यदि पत्रककी तरह आकर्षक लेख भी हमें मिलते रहें तो फिर और क्या चाहिए।

अपना सन्देश[1] इसके साथ भेज रहा हूँ। इसका 'ब्लॉक' बनवाने का लोभ मत करना।

लेख-सम्बन्धी तुम्हारी माँग पूरी करना शायद मेरे लिए मुश्किल हो। यदि समय मिला तो कुछ लिख डालूँगा। क्या तुम कुछ सुझा सकोगे?

पहलेसे ही पर्याप्त ग्राहक बना लेनेका ध्यान रखना।

टंडनजी से थोडी बातें हुई थीं और सो भी अनायास ही। मुझे उनसे कुछ विशेष नहीं कहना था। मेरे कहने का तात्पर्य यही था कि उन्हें सूचित करते रहना आवश्यक था।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८१) से; सौजन्य : क० मा० मुंशी

## ४५६. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
६ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

जहाँतक हृदयजी[2] की बात है, अन्त भला सो सब भला। उन्होंने विकेन्द्रीकरणका सुझाव दिया है। मुझे कार्यकारिणीकी सदस्य-सूची भेज दो और लिखो कि किन-किनके आनेकी सम्भावना है। हृदयजी यदि मण्डलके सदस्य न हों तो उनको आमन्त्रणपत्र भेज देना।[3]

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१६) से।

१. देखिए "सन्देश : 'हंस' को", ५-८-१९३५।
२. हृदयनाथ कुँजरू।
३. हरिजन सेवक संघ बोर्ड।

## ४५७. पत्र : शिवप्रसाद गुप्तको

[६ अगस्त, १९३५][1]

प्रिय शिवप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। अपनी बीमारीमें भी तुम अपने देशको नहीं भूले। कांग्रेस से मेरे अलग होनेके बाद कार्य-समितिकी बैठक पहली बार यहाँ हुई। यहाँ हो या कहीं और, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुमने पूछा है कि कांग्रेससे अपनेको अलग कर लेनेके बाद भी मैं उसमें इतनी रुचि क्यों लेता हूँ और मैं उसको सलाह-मशविरा और अपनी राय क्यों देता रहा हूँ। मेरा खयाल है कि तुमको मालूम ही होगा कि मैंने कांग्रेससे अपने-आपको अलग करते समय ही कह दिया था कि यदि मुझसे किसी विषयमें पूछा जायेगा तो मैं अपनी राय अवश्य दूंगा। कांग्रेसका नियन्त्रण करना एक बात है और कांग्रेसजनोंको राय देना बिलकुल ही दूसरी बात। कांग्रेस कमेटीकी बैठकें यहीं हुई थीं, पर मैं उनमें कभी शरीक नहीं हुआ। उसकी सारी कार्रवाईके बारेमें मुझे अबतक बिलकुल कोई जानकारी नहीं है। जब भी सदस्य लोग मुझसे सलाह करना या मेरी राय लेना चाहते थे तो वे मेरे आवासपर आ जाते थे और मैं बड़ी खुशीसे उनको अपनी सलाह दे देता था। ऐसा न करने का मुझे कोई कारण नहीं दिखाई पड़ता। मैं कांग्रेसके हितके लिए ही उससे बाहर आ गया हूँ। मैं कांग्रेसके आदर्शोंको तो नहीं त्याग सकता। इसलिए यदि मैं जान-बूझकर उसको अपनी सलाह देनेसे इन्कार कर दूं, तो अपने धर्मसे च्युत हो जाऊँगा।

अब परिषद्-प्रवेशकी बात लें। मैं समझता हूँ कि इस समय परिषदोंमें प्रवेश करना धर्म है, हालाँकि वह मेरा धर्म नहीं है, क्योंकि मैंने अपना जीवन किसी और ध्येयके लिए अर्पित कर दिया है। इन दिनों कानूनकी अहिंसात्मक अवज्ञा ही मेरी साधना है। मेरे इस ध्येयकी पूर्तिमें परिषद्-प्रवेश बाधा सिद्ध होगी। तुम जानते ही हो कि एक व्यक्तिका भोजन दूसरेके लिए विष हो सकता है।

आशा है, मैंने तुम्हारे सभी प्रश्नोंके उत्तर दे दिये हैं और ये तुमको सन्तुष्ट कर सकेंगे।

परिषद्-प्रवेशकी समस्या मुझपर छोड़ दो और तुम खुद ग्रामोद्योग तथा हिन्दी-प्रचारके काममें पूरी तरहसे जुटे रहो। इनमें तन-मनसे जुट जानेपर तुमको अन्य

1. शिवप्रसाद गुप्तके उत्तरसे जो मूल पत्रके साथ ही प्रकाशित हुआ था।

समस्याओंके बारेमें सोचने का समय ही नहीं मिलेगा। ईश्वर तुमको शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ दे।[1]

बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]
सर्चलाइट, ६-९-१९३५

## ४५८. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

वर्धा
७ अगस्त, १९३५

चि० अमला,

तुम्हारा पत्र कमालका है। किसीको भी विश्वास नहीं था कि तुम अपना सिर घुटाने जा रही हो और यदि तुम घुटा-चुकी होगी तो अब फिरसे केश जमने लगे होंगे। आशा है कि नाती-पोते[2] भले-चंगे होंगे।

सस्नेह,

बापू

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. हिन्दू, ३०-८-१९३५ के अनुसार श्री गुप्ताने उत्तरमें लिखा था: "मेरे मनमें तो यह बात एक क्षणके लिए भी नहीं जम पाती कि आप परिषद्-प्रवेशकी हिमायत कैसे कर सकते हैं, जब कि परिषदोंमें प्रत्येकको सम्राट्के प्रति वफादारीकी शपथ लेनी पड़ती है और पता नहीं आप कांग्रेसके लाहौर तथा कराची-अधिवेशनों द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों की इसके साथ कैसे पटरी बैठाते हैं।"

गांधीजी के सचिव, श्री महादेव देसाईने पत्रकी प्राप्ति-स्वीकृति देते हुए लिखा था: "आपका पत्र बापूजी को मिल गया। जहाँतक शपथवाली बात है, बापूजी का कहना है कि परिषद्-प्रवेशका निर्णय अपने देशकी वर्तमान स्थितिको देखते हुए किया गया था और जो लोग शपथ लेंगे, उनका सरकारके खिलाफ कोई काम करना ठीक नहीं होगा। स्वराज्य-प्राप्तिके संघर्षका यह भी एक दौर है और वह इस दौरको अत्यावश्यक मानते हैं।"

२. उनके शिष्य; देखिए "पत्र : मार्गरेट स्पीगलको", ५-८-१९३५।

## ४५९. पत्र : जी० ए० गवईको[1]

[८ अगस्त, १९३५ के पूर्व][2]

प्रिय गवई,

आप मेरे पास जो एक दिलचस्प दस्तावेज छोड़ गये थे उसे मैं पढ़ गया हूँ। मेरी राय है :

सभी नियमोंकी व्याख्या इस ढंगसे की जानी चाहिए कि उससे उनके उद्देश्यको आगे बढ़ानेमें सहायता मिले। इस मामलेमें उद्देश्य है — हरिजनोंका हित। इसलिए चारका चुनाव अनिवार्य तो नही है, परन्तु यदि चारसे अधिक उम्मीदवार हों तो निर्वाचक-मण्डलको चारका चुनाव करना ही पड़ेगा। नाम तो निश्चय ही हर अवस्था में वापस लिये जा सकते हैं। हरिजनोंमें से खड़े होनेवाले प्रत्येक उम्मीदवारको आम निर्वाचन-मण्डलसे खड़े होनेका भी अधिकार है। यदि पृथक् निर्वाचक-मण्डल रखने में बड़ा झमेला-सा महसूस हो, तो हरिजन लोग जब भी चाहे लगभग सर्वसम्मतिसे अपने इस विशेषाधिकारको त्याग सकते हैं। समझौतेमें ही ऐसी व्यवस्था कर दी गई है।

कहने की जरूरत नही कि मेरी राय किसी भी तरहसे विधि-विशेषज्ञकी राय नही मानी जा सकती। यह तो एक ऐसे व्यक्तिकी राय है जिसने समझौता सम्पन्न कराने में हाथ बँटाया था।

मो० क० गां०

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी; सौजन्य : नारायण देसाई। बॉम्बे क्रॉनिकल, ११-८-१९३५ से भी

१. बॉम्बे क्रॉनिकलके अनुसार (दलित वर्गोंकी ओरसे) विधान-परिषद्के सदस्य जी० ए० गवईने वर्धामें गांधीजी के साथ अपनी एक भेंटके दौरान "पूना-समझौतेकी अपनी व्याख्या और प्राथमिक निर्वाचनके प्रश्नके सम्बन्धमें मध्य प्रान्त परिसीमन समितिके सदस्यों द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण उनको समझाया था।"

२. महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीमें इस पत्रको अगले शीर्षक ("पत्र : एक विद्यार्थीको", ८-८-१९३५) के पहले स्थान दिया गया है।

## ४६०. पत्र : एक विद्यार्थीको[1]

८ अगस्त, १९३५

मैदान छोड़कर भागना अगर शर्मनाक है, तो व्यक्ति शरीरसे कितना ही कमजोर क्यो न हो, वह अपने स्थानपर डटा रहेगा और वही जान दे देगा। यही अहिंसा और वीरता होगी। वह चाहे कितना ही दुर्बल क्यो न हो, वह अपनी समूची शक्तिसे अपने विरोधीपर चोट करेगा और इस कोशिशमें काम आ जायेगा। यह वीरता तो है, पर अहिंसा नही। खतरेका सामना करना जब उसका कर्त्तव्य हो, तब पीठ दिखाना कायरता होगी। पहलेवाली स्थितिमे तो व्यक्तिके हृदयमें प्रेम या कल्याणकी भावना होगी। और दूसरी तथा तीसरी स्थितियोमें व्यक्तिके मनमे घृणा या अविश्वास तथा भय ही रहेगा।

आपका,
मो० क० गां०

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य: नारायण देसाई। हरिजन, १७-८-१९३५ से भी

## ४६१. पत्र : वसुमती पण्डितको

वर्धा
८ अगस्त, १९३५

चि० वसुमती,

तेरे दोनो पत्र मिल गये। यह प्रसन्नताकी बात है कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अब तू जो-जो काम कर सके वे किया कर। गंगाबहनसे कहना कि

१. महादेव देसाईने अपने "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) में विवरण दिया था:

"हरिजनके नियमित पाठक एक विद्यार्थीने गांधीजी से पूछा था कि उसका अपना आचरण यहाँ बताई गई परिस्थितिमें कायरतापूर्ण माना जायेगा या सहज माना जायेगा। उसमें परिस्थितिका वर्णन इस प्रकार किया था · "शरीरसे मैं बड़ा दुर्बल हूँ, और मैं जब भी लम्बे-तगड़े, अकड़-भरे बदमाशोंको देखता हूँ तो सहज ही उनसे कतरा जाता हूँ। जिसके सामने हम कभी ठहर ही नहीं सकते, उस दैत्यके सामने पड़नेसे बचना कायरतापूर्ण क्यों समझा जाये? बिल्लीके सामने पड़ने से भागनेवाले चूहेको क्या कायर कहा जायेगा?"

उसका पत्र मिल गया है। उसमें ऐसी कोई विशेष बात नही है जिसका उत्तर देना आवश्यक हो। वह मुझे जब-तब लिखती रहे और जब कुछ पूछना आवश्यक हो तो पूछ लिया करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०५) से। सी० डब्ल्यू० ६५१ से भी, सौजन्य: वसुमती पण्डित

## ४६२. पत्र: नारणदास गांधीको

८ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

मैथ्यू जिस पत्रकी बात लिखता है वह मुझे नहीं मिला। उसकी माँग हमारे सिद्धान्तके विरुद्ध है। काफी चेतावनी देनेके बावजूद वह माँग करता है। फिलहाल तो हम उसके माता-पिताके लिए कुछ भेजनेमें असमर्थ हैं, और न उसे अभी मेरे पास आना चाहिए। जबतक खाने-पीनेका खर्च-भर लेकर रह सके तबतक वह अपनेको स्थायी मान सकता है। जब उसपर हम पूरी तरह विश्वास करने लगेंगे तो उसकी योग्यतानुसार माता-पिताके लिए भी हम कुछ दे सकेंगे। किन्तु यह अभी बहुत दूर की बात है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४८६ से भी, सौजन्य: नारणदास गाधी

## ४६३. एक पत्र[1]

८ अगस्त, १९३५

तुम्हारे पास ऐसा कौन-सा विशेष सन्देश है जिसके कारण अखबार निकाल रही हो? यो तो आजकल अखबार निकालना एक पेशा बन गया है। क्या तुम्हारे पास इससे बेहतर कोई और पेशा नही रहा? इसे छोडो।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई

१. यह एक महिलाके पत्रके उत्तरमें लिखा गया था। यह पत्र १७-८-१९३५ के हरिजनमें भी छपा था।

# ४६४. पत्र : लीलावती आसरको[1]

९ अगस्त, १९३५

१. 'व्हैन' वाला उपवाक्य [मुख्य उपवाक्यके] पहले आ सकता है और वादमे भी। 'व्हैन' का प्रयोग सभी कालोमे किया जाता है, जैसा कि गुजरातीमे किया जाता है; जैसे "व्हैन यू कम, वी शैल प्ले"।

२ "बिफोर यू कम, आई शैल हैव गान"। 'बिफोर' पहले। "सिन्स यू हैव कम, वी हैव वीन आल वेल"। तुम आये हो तवसे . 'सिन्स'—तवसे या क्योकि। स्वतन्त्र वाक्य वनानेमे 'एगो' का प्रयोग नही किया जाता। 'लाग एगो' वहुत समय पहले, 'इयर्स एगो'—वरसो पहले, इस तरह, 'एगो' का प्रयोग काल सूचित करने के लिए किया जाता है।

३. 'लार्ज' का प्रयोग निर्जीव पदार्थोके लिए ही किया जाता है; 'ए लार्ज वैसल'—वडा वर्तन, किन्तु 'ए विग बॉय'।

'विग' का प्रयोग दोनो स्थितियोमे किया जा सकता है। 'स्माल' और 'लिटिल' के प्रयोगके वारेमे भी यही नियम लागू होता है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०३ से भी; सौजन्य · लीलावती आसर

१. लीलावती आसरने लिखा था · (१) "पाठमालाका यह चौदहवाँ पाठ पूरा हो गया अब पन्द्रहवाँ शुरू करना है। यह अपूर्ण भूतकालके वारेमें है। उससे मैं एक उदाहरण दे रही हूँ: "व्हैन आई केम यस्टर्डे यू वर राइटिंग"। यहाँ 'व्हैन' वाला वाक्य पहले आया है। दूसरा वाक्य नीचे लिखे अनुसार है: "वी वर कमिंग टु स्कूल व्हैन द वैल रैंग"। अब पहले वाक्यमें 'व्हैन' पहले आया है और दूसरे वाक्यमें बादमें है। क्या इन दोनों प्रयोगोंमें कोई अन्तर है? क्या इस सम्बन्धमें कोई नियम है कि 'व्हैन' पहले कव आता है और बादमें कब? क्या 'व्हैन' का प्रयोग सदा भूतकालमें ही किया जाता है? (२) एक बात और। मैं 'सिन्स' का सही प्रयोग नहीं जानती। 'सिन्स', 'बिफोर' और 'एगो' इन तीनोमें क्या अन्तर है? (३) 'लार्ज' और 'विग' ये दोनों क्या समानार्थक शब्द हैं? क्या इन दोनोंका एक ही स्थानपर प्रयोग किया जा सकता है? इसी प्रकार 'स्माल' और 'लिटिल' के वारेमें भी बतायें।

## ४६५. पत्र : लीलावती आसरको

९ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

तुझे अपनी लिखावट और अधिक सुधारनी चाहिए। तू नियमका पालन नही करती यह उचित नही है।

तूने अपना खर्च कम करके अच्छा ही किया। धीरजसे सब-कुछ अवश्य ठीक हो जायेगा। अपना खर्च इतना कम मत कर देना कि भविष्यमें निर्वाह न कर सके। जो-कुछ करे, सोच-समझकर करना।

तेरे हल किये हुए पाठोमे मैं जो सुधार करता हूँ यदि वे समझमें न आये तो पुन. पूछ लेना। यदि तू एक ही तरहका और एक ही आकारका कागज काममे लाये और सुधारोंके लिए जगह रखे तो उन पाठोको सँभालकर रखने में सुविधा होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०३) से; सौजन्य: लीलावती आसर

## ४६६. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
९ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

कल मैंने तुम्हें बहुत उतावलीमे पत्र[1] घसीट मारा था। साथमें लीलावती और मैथ्यूके लिए पत्र हैं। मैथ्यूका पत्र ध्यानसे पढकर उसे दे देना। तुम भी उससे दृढतापूर्वक बात करना। यदि वह तुम्हें परेशान करे तो उसे छुट्टी दे देना। यदि वह ध्यानसे और मन लगाकर पढाये तथा किसी तरहका शारीरिक काम करे तभी उसे रखना। वह खाने-पीनेकी क्या व्यवस्था करता है?

क्या हरिलालका किराया तुमने चुकाया? जूनागढमें शराब क्यो नही मिलेगी? वह कोई भी काम ढगसे सीधा रहकर नही करेगा। हाँ, इतना अवश्य है कि इससे तुम्हें वहाँ कम परेशानी होगी बशर्ते कि वह लौट न आये।

राधा और सन्तोकके बारेमे समझ गया। प्यारेलालके बारेमे तुम्हारा सुझाव ठीक है। वह दे देनेमे ही हमारा निस्तार है।

१. देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", ८-८-१९३५

वजुभाईका एक अन्य पत्र साथमें है। इसमें कुछ विशेष नही था इसलिए मैंने तुम्हे नही भेजा था। उसे शालाका काम-काज नही सौपना चाहिए। शालाको तो तुम्हे ही गढना है। मै अभीतक उसे तुम्हारा पत्र ही नही भेज पाया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## ४६७. चर्चा : खादी-उत्पादनके पुनर्गठनके सम्बन्धमे[1]

[१० अगस्त, १९३५ के पूर्व]

**प्रश्न : बिहारमें आज करीब पाँच हजार स्त्रियाँ चार-चार, छह्-छह् पैसेके लिए भी दस-दस मीलसे हमारे खादी-केन्द्रोंमें आती हैं। खादी हम अधिक खपा सकें तो और भी अधिक स्त्रियाँ सूत कात-कातकर लायेंगी। खादीकी खपत आज अगर बन्द हो जाये तो बेचारी उन गरीब स्त्रियोंकी क्या दशा होगी?**

गाधीजी. बात बिलकुल सही है। बगाल और दक्षिण भारतके गाँवोमें भी ऐसी ही स्थिति है, यह मै जानता हूँ। पर मै आपकी बातको उलटे ढगसे रखता हूँ। फर्ज कीजिए कि आप आज कत्तिनोको प्रति घंटा दो पाई देते है। दो पाईकी जगह अगर आप मजदूरीमें एक पाई देने लगें तो आप पाँच हजार नही बल्कि दस हजार स्त्रियों को काम दे सकेगे। और मान लीजिए कि उन असहाय स्त्रियोने आपकी दी हुई एक पाई भी लेना स्वीकार कर लिया तो क्या उन्हे एक पाई देनेका आप साहस कर सकेगे? मै कहता हूँ कि आपकी हिम्मत कभी नही पड़ेगी। इसका मतलब यह हुआ कि आपको ऐसी एक सीमा तो निश्चित करनी ही पडेगी कि जिससे नीचे फिर आप जा ही नही सकते। आप चाहें तो उसे 'लाचारीकी सीमारेखा' कहें। पर उस सीमाको अगर निश्चित करना ही है, तो क्यो न उसे एक बार स्थायी रूपसे निश्चित कर दे? भले ही उसके कारण खादी-उत्पादनमे लगे हुए कुछ लोगोको फिलहाल नुकसान ही क्यो न होता हो। जहाँ खरीदारोकी सख्या मर्यादित है, और उत्पादकोकी सख्या अमर्यादित, वहाँ आपको कुछ उत्पादक तो कम करने ही पडेगे। तो फिर विचारपूर्वक कमसे-कम मजदूरीकी ऐसी एक राशि क्यो न निश्चित कर दी जाये कि जिससे इन गरीब कत्तिनोको पेट भरने लायक तो पैसा मिलने लगे? नही तो हम आज अनजानमे उनका जो शोषण कर रहे है, उसका कभी अन्त नही आनेका।

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र)से उद्धृत। पत्रमें महादेव देसाई सूचित करते है कि जबसे गाधीजी ने "मानक मजदूरीकी आवश्यकता", १३-७-१९३५ पर लेख लिखा तबसे यह प्रश्न सर्वत्र चर्चाका मुख्य विषय बन गया था। उस दिन कांग्रेस कार्य-समितिके राजेन्द्रप्रसाद, वल्लभभाई पटेल, जयरामदास दौलतराम, जमनालाल बजाज, पट्टाभि सीतारमय्या, गंगाधरराव देशपाण्डे, जे० बी० कृपलानी आदि सदस्य जब गांधीजी के समक्ष उपस्थित हुए तो इस विषयपर स्वभावत: चर्चा छिड गई।

कागज तैयार करनेवाला एक भाई हमें एक जगहसे कागज भेजा करता है। वह अपने मजदूरोंको डेढ़ आना रोज देता है। उसे आशा है कि अभी और भी सस्ता कागज बन सकता है। मैंने उसे लिख दिया है कि मुझे तो तुम्हारा ऐसा सस्ता कागज नहीं चाहिए।

**तो अब आप खादीकी परिभाषा बदल देंगे? 'हाथका कता और बुना हुआ कपड़ा' इस व्याख्यासे अब काम नहीं चलने का। अब तो खादी उस कपड़ेको कहना चाहिए जो हाथका कता और बुना हो, और जिसकी कताई-बुनाईकी मजदूरी अमुक दरसे दी गई हो।**

इसमें तो कोई शंका ही नहीं। दुःखकी बात यह है कि इस चीजका आपको इतनी देरीसे पता लगा।

**पर कताई तो एक पूरक धन्धा है। आप इतने बरसोंसे संसारको यही सन्देश देते आये हैं। कतैया अपने फुरसतके समयमें ही कातता है।**

इसका जवाब 'हाँ' और 'नहीं' दोनों ही है। मुझे यह मालूम है कि हजारों स्त्रियाँ ऐसी हैं जो सारे दिन कातती हैं। कातना उनका सहायक धन्धा नहीं, किन्तु मुख्य धन्धा है। और मान लीजिए कि उनका वह मुख्य धन्धा नहीं है; तब भी दूसरा कोई भी काम एक घंटा करने की आप जितनी मजदूरी देते हैं उतनी मजदूरी सूत कातनेवाली स्त्रियोंको क्यों न दें?

**आपको शायद यह पता न होगा कि गुंटूर जिलेमें कितनी ही जगह लोग कताई का काम छोड़कर चावल कूटनेका काम करने लगे हैं, क्योंकि उसमें उन्हें ज्यादा मजदूरी मिलती है।**

मुझे मालूम है। पर आपने जो यह कहा है उससे तो मेरी ही बातकी पुष्टि होती है। लोग तो वह काम पसन्द करेंगे ही जिसमें उन्हें ज्यादा पैसा मिलेगा। तब कताईके कामके लिए भी दूसरे कामोंके जितनी ही मजदूरी देकर क्यों न हम उसे एक प्रतिष्ठित धन्धा बना दें?

**इसे अमलमें लाना बहुत ही मुश्किल है। न जाने कितनी कठिनाइयाँ आयेंगी। कत्तिनें कभी हमारी शर्तें माननेवाली नहीं। आप उनका बाकायदा रजिस्टर रखनेके लिए कहते हैं। आप उनसे अमुक नम्बरका, अमुक समानताका और अमुक ही मजबूतीका सूत कतवाना चाहते हैं। यह सब कैसे हो सकेगा?**

इन कठिनाइयोंको तो पार करना ही होगा। यह क्या मैं नहीं जानता कि अभी बहुत समयतक तो हमें अनेक तरहकी शिकायतें सुननी पड़ेंगी? कुछ लोग यह कहेंगे कि अपने कपड़े लायक सूत खुद ही कात लेनेकी बात हम कत्तिनोंके गले नहीं उतार सकते, तो कुछ यह कहते आयेंगे कि जितना हमें चाहिए उतना सूत कातकर कत्तिनें हमें देतीं ही नहीं।

**पर मान लीजिए कि वे हमारे नियम स्वीकार कर लें, और जिन चरखों और तकुओंसे वे काम चलाते हैं उनसे बढ़िया चरखे और तकुए उन्हें हम दे दें, तो यह**

स्पष्ट है कि वे अधिक सूत कातेंगे और जितना पैसा उन्हें आज मिलता है उससे दूना या दूनेसे भी ज्यादा पैसा वे सहजमें कमा लेंगे।

सो तो वे सहजमें ही कर लेंगे — आपकी किसी खूबीके कारण नही। अधिक उत्पादनका मतलब अधिक कमाई है, यह तो स्पष्ट ही है। लेकिन हमने उन्हे जिस न्यायसे वचित रखा है उनके साथ वह न्याय करनेकी दृष्टिसे हम क्या करने जा रहे है?

हमे यह विचार ही अपने दिलसे निकाल देना चाहिए कि खादीको मिलके कपडेके साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। मिलका कपडा मिलका कपडा है, और खादी खादी है। मिलका कपडा पैदा करनेवालेको तो यही धुन सवार रहा करती है कि कपडा सस्तेसे-सस्ता कैसे तैयार किया जाये। हमे यह धुन रहनी चाहिए कि खादी-उत्पादकके साथ न्याय किस तरह हो और उसे यथोचित मजदूरी किस तरह मिले। इन दोनोका मुकाबला हो ही नही सकता। आप कहते है कि इस सलाहको अमलमें लानेमे कठिनाई पडेगी, तो मेरा यह कहना है कि अपने कर्मचारी कम कर दें, विज्ञापन देना बन्द कर दे, और प्राइवेट व्यापारके लिए खादी-उत्पादकको आप जो प्रोत्साहन देते है वह न दे। जिन लोगोने केवल खादी ही पहननेकी दृढ प्रतिज्ञा कर ली है, उनकी इसमे परीक्षा हो जायेगी। वे या तो खादी खुद अपने हाथसे बना ले या जो कारीगर खादी तैयार करते है उन्हे पेट भरने लायक मजदूरीका पैसा दे। यह खादीधारियोकी आत्मशुद्धिका प्रश्न है। हमे यह नही भूलना चाहिए कि हमारा ध्येय दरिद्रनारायणकी सेवा है। कठिनाइयाँ तो आयेंगी ही, उन्हे हम धीरे-धीरे हल कर सकते है।[1]

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १०-८-१९३५

## ४६८. बम्बईका खादी-भण्डार

बम्बईका खादी-भण्डार चरखा सघका सबसे बडा खादी-भण्डार है। यह किसी एक व्यक्तिकी सम्पत्ति नही है। वह तो चरखा सघकी सम्पत्ति है और चरखा सघ दरिद्रनारायणका ट्रस्टी है। अत: दरिद्रनारायणका हितसाधन ही उसका मुख्य कर्त्तव्य है। यद्यपि मध्यम वर्गके कुछ लोगोको एक प्रतिष्ठित काम दिलानेमे वह साधनरूप रहा है तथापि उसे उन्हे नौकरी दिलानेवाला महकमा नही समझना चाहिए। चूंकि खादीके सम्बन्धमे अब नयी नीति अपनाई जा रही है, इसलिए नयी नीतिकी आव-

१. महादेव देसाईने अपने लेखमें इस चर्चाका उपसंहार करते हुए लिखा है: "सबकी साधारणतया इस एक बातपर सहमति थी कि जहाँ-जहाँ हो सके वहाँ यह प्रयोग शुरू कर दिया जाये, और कत्तिनोको भले ही भिन्न-भिन्न स्थानोंमें भिन्न-भिन्न दरसे मजदूरी दी जाये, पर आज जिस दरसे उन्हें मजदूरी दी जाती है, वह तो अवश्य ही बढा दी जाये।"

श्यकता अनुसार कर्मचारियोकी सख्या घटाई जा रही है। श्री जेराजाणीजी अपनी शोधक बुद्धिसे सोच-सोचकर नये-नये डिजाइनोकी खादी वहाँ मँगवाते थे; भारतवर्षके तमाम भागोसे आई हुई इस खादीकी बिक्री बढाने का असाधारण प्रयत्न वहाँ होता रहा है। परन्तु इस प्रयत्नसे व्यवस्था-खर्च इतना अधिक बढ़ गया कि उसकी तुलनामे दरिद्रनारायणकी दृष्टिसे परिणाम बहुत कम आया और इससे प्रान्तीय कार्यकर्त्ताओका ध्यान अपने मुख्य कार्यसे हट गया। उनका काम तो यह था कि वे खादीको अपने-अपने प्रान्तमे स्वावलम्बी या लोकप्रिय बनाये। खादीका सार्वत्रिक मिशन सच्चे प्रान्तीय प्रयत्नके बिना पूरा नही किया जा सकता। वह खादीको यथासम्भव असख्य उत्पत्ति-केन्द्रोमे बाँटने से ही हो सकता है। बेशक, कुछ खादीकी जरूरत बम्बई-जैसे बडे नगरोके लिए सदा रहेगी, क्योकि वे खुद उसे कभी पैदा नही करेंगे। यह एक स्वस्थ माँग होगी और वह असाधारण प्रयत्नके बिना पूरी की जा सकेगी। शहरकी खादीकी दुकानोमे हमें जो तरह-तरहके नमूने दिखाई देते है, वे इसीलिए सम्भव हुए कि सघने शहरी जनताकी विविध रुचियो को पूरा करने की कोशिश की। परन्तु यदि खादीको अपना मिशन पूरा करना है तो वह समय आ गया है जब उत्पत्ति-केन्द्रोकी तरफ ध्यान मोडा जाये। परन्तु वे बहुत ही थोड़े है। जैसे प्रत्येक घर पकाये हुए भोजनकी उत्पत्तिका केन्द्र है, उसी तरह प्रत्येक घरको नही तो प्रत्येक गाँवको खादीकी उत्पत्ति का केन्द्र बनना पडेगा। रसोईघरकी अर्थव्यवस्था किताबोकी अर्थव्यवस्थासे बिलकुल भिन्न है। खादीकी अर्थव्यवस्थाकी भी यही बात है। तब प्रस्तावित परिवतनका अर्थ यह है कि चरखा सघके द्वारा या उसकी तरफसे चलाये जानेवाले बडे भण्डारोके कर्मचारियोमें काफी कमी की जाये। इसका यह अर्थ भी है कि प्रमाणित खानगी उत्पादक बिलकुल खत्म चाहे न किये जायें पर उनकी सख्या जरूर कम हो जाये। अभी यह कहना कठिन है कि यह-सब कैसे होगा। श्री शकरलाल बैंकर मनोयोगपूर्वक इसे अमलमे लानेकी योजना बना रहे है और खास इसी उद्देश्यसे वे सारे भारतका दौरा कर रहे है।

पर इस बीचमे खादी-प्रेमियो और दरिद्रनारायणके भक्तोको इतना तो जान ही लेना चाहिए कि खादी इससे कुछ महँगी जरूर हो जायेगी, और खादी-सेवकोंको अपना कौशल और भी अधिक बढाना होगा, एव खादीकी उत्पत्ति तथा बिक्रीसे सम्बन्ध रखनेवाले तमाम वर्गोंके बीच स्वार्थत्यागकी भावना और भी अधिक विकसित करनी होगी। खादीकी कीमतोमें उत्तरोत्तर जो कमी हुई है, उसे खादी-भण्डारोने अपने लिए हर्षका विषय माना है। मुझे वह दिन याद है जब मैंने बहुत ही मोटी खादीका पहला थान एक रुपया गजसे भी ऊपर बेचा था। आज तो वैसी खादी कोई दो आनेमें भी नही लेगा। खादी-भण्डार उसे बेचेंगे भी नही। इसमे सन्देह नही कि खादीके हरएक विभागने जो बढती हुई कार्यकुशलता प्राप्त की है उसीसे खादी इतनी सस्ती हुई, पर इसमें सबसे ज्यादा बेचारी कत्तिनका पेट काटा गया है। लेकिन यह कत्तिन ही तो दरिद्रनारायणकी प्रत्यक्ष मूर्ति है — सारे हिन्दुस्तानमें सबसे कम मजदूरी उसीको दी जाती है। चरखा संघने यह अच्छा किया जो एक जमानेसे

बेकार पड़े हुए लोगोके लिए अपनी शक्तिके अनुसार बहुत बड़े पैमानेपर कामका एक जरिया तो तलाश दिया। एक घटेकी मजदूरी एक पाई ही क्यो न मिलती हो, पर कुछ मिलने तो लगा। लेकिन अगर संघको अपने ट्रस्टका दायित्व पूरा करना है तो उसे कत्तिनको कमसे-कम इतनी मजदूरी तो देनी ही होगी कि जिससे वह अपना पेट भर सके। अगर वह प्रतिदिन आठ घटे काम करती है तो कताईकी प्रति घटा इतनी मजदूरी तो उसे मिले कि जिससे वह अपनी गुजर-बसर कर सके। कितना पैसा दिया जाये आज यह प्रश्न नही है। अभी तो हमारे सामने यह प्रश्न है कि कत्तिनोको जिस दरसे मजदूरी दी जाती है उसमे वृद्धि होनी ही चाहिए। चरखा सघकी रिपोर्टोंमे अब यह उल्लेख नही रहना चाहिए कि खादीकी कीमतमे पहलेसे कितनी कमी हो गई है, बल्कि अब सघको अपनी रिपोर्टोंमे यह दिखलानेमे गर्व होना चाहिए कि कताईकी मजदूरी की दर पहलेसे कितनी बढा दी गई है। न चरखा सघको तबतक सन्तोष होगा और न मुझे ही, जबतक कि कताईकी प्रति घटेकी मजदूरी बुनकरकी मजदूरीके बराबर नही हो जाती। और खरीदारोको यह याद रखना चाहिए कि वे उस महान् ट्रस्टके सदस्य है, भले ही उनका नाम कागज पर दर्ज न हो, और कत्तिनोका हर तरहसे खयाल रखना उनका धर्म है। एक बार यह सम्बन्ध हृदयसे जान लिया जाये तो फिर खादीकी नित नयी उन्नतिमे कोई कठिनाई आ ही नही सकती। क्या ही अच्छा हो कि तमाम खादी-प्रेमी अपना कर्त्तव्य समझ ले और उन अश्रद्धालु खादी-कार्यकर्त्ताओकी शका निर्मूल कर दे जिनका यह खयाल है कि जनता कभी इतनी महँगी खादी खरीदेगी ही नही।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १०-८-१९३५

## ४६९. पत्र : भुजंगीलाल छायाको

वर्धा
१० अगस्त, १९३५

चि० भुजंगीलाल,

तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहे और अपनी सामर्थ्यके अनुसार तुम जो कर सको सो करना। अन्य लोग जो कहें वह धर्म नही है, हम जो माने वही धर्म है। अन्य लोग हमारे मनको कैसे पहचान सकते है? अतः तुम भगवान्से पथ-प्रदर्शनकी प्रार्थना करना। वही एक सच्चा पथ-प्रदर्शक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६०७) से।

## ४७०. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

१० अगस्त, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

तुम्हारे पत्र मिलते रहे है। तुम चन्दा अच्छा उगाह रहे हो। मैंने शकरलालसे भी वात की थी। बापाके आनेपर उनसे भी बात करूँगा। हम तो ईश्वरपर भरोसा रखकर काम करते रहे।

यह दु खकी वात है कि हरिजनोको सतानेकी घटनाएँ घटती रहती है। ऐसा लगता है कि ऐसे मामलोको अदालतमे ले जानेपर ही निस्तार होगा। ऐसे हर मामलेमे स्थानीय रूपसे आन्दोलन तो होना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सरदारका कहना है कि हरिजन पाठशालाओके लिए ताल्लुका बोर्डसे आर्थिक सहायता माँगना हमारा कर्त्तव्य है और माँगनेपर सहायता मिल सकती है। इस सुझावपर विचार करना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०२८)से। सी० डब्ल्यू० १२८ से भी, सौजन्य . परीक्षितलाल ल० मजमूदार

## ४७१. पत्र : मनु गांधीको

१० अगस्त, १९३५

चि० मनुडी,

डाक निवटा देनेके वाद तेरा पत्र मिला। वा की बीमारीकी खबर तो मुझे कल ही मिल गई थी अत आज पत्र लिखा है। आशा है, तू आनन्दपूर्वक होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४६) से, सौजन्य . मनुबहन एस० मशरूवाला

## ४७२. पत्र : काशी गांधीको

१० अगस्त, १९३५

चि० काशी (गाघी),

वानप्रस्थमे से गुजरते ही हमारी कसौटी शुरू हो जाती है। यह अशान्ति क्यो? अगर हमने सब-कुछ कृष्णार्पित कर दिया हो तो उसकी एक निशानी यह है कि हमसे हमारा आन्तरिक आनन्द कोई नही छीन सकता। ऐसे अर्पणमें यदि अभी भी कुछ शेष रह गया हो तो जीवनके इस नये चरणमे प्रवेश करते हुए हम उसको भी अर्पित कर दे। नीमूके बच्चे मेरे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०७०६) से; सौजन्य · छगनलाल गाधी

## ४७३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१० अगस्त, १९३५

चि० ब्रजकिशन,

तुमारा खत मिला। पनचक्कीके चावल यदि अक्षत हो तो कोई दोप नही है।

मुझे गाली मिलती है सो अच्छा लगता है। इसका बडा लाभ यह है कि सब बिगाड दूर हो जायेगा। मेरी पूजा करना और मेरा कहना नही करना उससे मुझे गाली देना मैं बहूत अच्छा समजता हू। पूजारी कभी कुछ नही करेगे क्योकि उनको नही करने की आदत हो गई है। गाली देनेवाले तो दिलसे मुझको बुरा मानते है जब उनका भ्रम टूट जायेगा तब सब-कुछ करेगे।

कृष्णनको बलात्कारसे भेजने मे क्या लाभ हो सकता है। उसको मुक्त किया तब तो वह निकला। यदि जिनको सिपुर्द किया था वे नहिं चलाते है तो क्या उसे चलाने का तुमारा धर्म नही है? अच्छा तो वही होगा।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३६) से।

## ४७४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
११ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिल गया। सरकारकी अनुमति लेकर शुरूसे आजतक का सारा पत्र-व्यवहार छाप देना चाहिए। कमेटीकी[1] नियुक्ति करनेवाला पत्र भी छाप देना चाहिए। यह सब छापकर हमे तो सबूत जुटाने मे लग जाना चाहिए। यदि लल्लूभाई-का[2] शरीर काम देने लायक हो गया हो तो अच्छा ही है। वे गहराईमें उतर सकते है या नही, इसके बारेमें मुझे पूरा सन्देह है। यदि कुँजरू आ जाये तो मुझे अच्छा लगेगा। गिल्डर और बहादुरजी हो, तो काफी होगा। तीसरे जरा कमजोर हो तो भी हर्ज नही।

बलवन्तरायके बारेमें मै समझ गया। हम तो जो उचित है सो करते रहें। 'सर्वेण्ट' [ऑफ इंडिया] के लेखपर मैंने नजर डाली थी। पूरा पढ़ने का समय भी नही था। राजेन्द्रबाबू वह लेख ले गये है।

...[3] का पता मालूम हो सके तो साथका पत्र उन्हे भेज देना।

महादेवके लिए तो इसके साथ मै सब-कुछ भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यदि विट्ठलभाई वाले रुपयोके बारेमें कुछ सूझा हो तो लिखना।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७६-७७

१. वल्लभभाई पटेलके निदेशनमें बोरसदमें प्लेग-राहत कार्य किया गया था; सरकारका कहना था कि यह कार्य वैज्ञानिक ढंगसे नहीं किया गया, उक्त कमेटी इसी आरोपकी जाँचके लिए नियुक्त की जा रही थी।

२. सर लल्लूभाई शामलदास।

३. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

## ४७५. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
१२ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

साफ दीख रहा है कि तुमने सचिवकी हैसियतसे कोई खास काम नही किया है, नही तो तुम अपनी डाक मेरे पास न भेजते। तुमको शायद मालूम न हो कि दक्षिण आफ्रिकाके अपने प्रवासके उस पूरे कालमे मैंने सचिवके कार्यके अतिरिक्त अन्य कुछ किया ही नही था। इसलिए मुझे तुमसे सहानुभूति है। पर तुमको जब-तब अनेक मालिकोसे मिलनेवाली निराशा और झिड़कियोके बीच भी अपनी शान्ति कायम रखनी होगी और विनोदशीलता बनाये रखनी पडेगी। स्वयसेवक होनेसे कोई फर्क नही पडता बल्कि स्वयसेवक हो तो उसे और भी ज्यादा फटकारे सुननी-सहनी पड़ेगी और उसपर भी कहना पडेगा 'धन्यवाद, श्रीमान्'। ससारमे जितने भी उल्लेखनीय सचिव हुए है वे ऐसी ही खरी धातुके बने हुए थे। तुमको भी उन्हीकी श्रेणीका बनना है। मिलनेपर और अधिक बाते होगी।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च·]

साथका पत्र बा के लिए है।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१०) से।

## ४७६. पत्र : द्रौपदी शर्माको

१२ अगस्त, १९३५

चि० द्रोपदी,

आज शर्मा[1] रवाना होगे। वह जबतक कलकत्तेमें भी था तो मुझे कुछ चिन्ता तुमारे लिये नही थी। अब तुमारे हाल जानते रहना मेरा कर्त्तव्य हो गया है। मुझे तुमारे और लड़कोके हाल बताओ। तुमारे रहन-सहनकी बात लिखो। तुमरा रोजका कार्यक्रम लिखो। तुमारे मददगार कौन है सो भी लिखो।

बापुके आशीर्वाद

१. द्रौपदी शर्माके पति, हीरालाल शर्मा; जो अमेरिका जा रहे थे

[पुनश्च :]

वहां कुछ किताव कन्या आश्रमकी रही है?

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८४ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## ४७७. पत्र : श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको

१२ अगस्त, १९३५

भाई सातवलेकर,

प्रेमवश होकर जो पत्र मुझे लिखा है उसके लिए मैं आभारी हू। मेरा ख्याल है कि वह सापमे विष ही नही था। पायलेगावकरजी[1] ने भी कहा था वहुत विषैला नही है। कट्वाने की कोशीग करते हुए भी किसीको नही काटा। तो भीं तुमारी चेतावनी विलकुल योग्य है।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७७७) से; सौजन्य : श्री० दा० सातवलेकर

## ४७८. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

वर्धा
१३ अगस्त, १९३५

चि० प्रेमा,

पत्रोको निवटाने के लिए आज मैंने अढाई घटेका मौन लिया है। पत्रोको एकके-बाद-एक निवटाते हुए तेरा ९-७-१९३५ का पत्र मेरे हाथमे आया है।

केलकरसे[2] मिलकर वहुत अच्छा किया। यदि तू उन्हे अपना काम दिखाने ले जाये तो अच्छा हो।

गन्दे कामका वही हाल है जो तूने लिखा है। महारोवाला अश मैं 'हरिजन-वन्धु' में दे रहा हूँ। तेरा नाम-पता नही दूंगा।

पूनाके प्रस्तावपर अमल होनेपर मुझे लिखना। हिटलरके विषयमे दूसरी पुस्तक कौन-सी है?[3]

१. साँपोंको वशमें करने की अपनी शक्तिके लिए प्रसिद्ध एक साधु। नागपंचमीके दिन (४ अगस्त, १९३५) को उन्होंने एक साँप गांधीजी के गलेमें डाल दिया था।

२. एन० सी० केलकर।

३. बापुना पत्रो – ५: कु० प्रेमाबहेन कंटकने, पृ० २३०-३२ पर प्रेमाबहन लिखती हैं कि हिटलरकी लिखी माई स्ट्रगल नामक पुस्तक उन्होंने और गांधीजी ने पढ़ी थी, किन्तु दूसरी पुस्तकके नामका उल्लेख उन्होंने नहीं किया।

अब तेरा प्रश्न। रूसके उदाहरणका नमूनेके तौरपर उपयोग करनेमे खतरा है। एक तो यह है कि हमे उसका प्रत्यक्ष अनुभव नही है, दूसरा यह कि उसे अभी बहुत समय नही हुआ है, तीसरा यह कि वहाँ जो-कुछ होता है वह जबरन कराया जाता है। इसलिए हम रूसको अलग करके सोचें। हमारे लिए अपने बीच इतना करना अनिवार्य है। हिंसाके द्वारा न तो कुछ करना चाहिए, न कराना चाहिए। इसलिए धनिकोसे न्याय प्राप्त करनेका सबसे आसान उपाय यह है कि वे अपने प्राप्त किये हुए धनका अच्छेसे-अच्छा उपयोग करे। इससे यह परिणाम निकल सकता है कि ऐसा करते हुए वे बहुत अधिक धन उपार्जन करनेका लालच ही छोड़ दे। यह परिणाम निकले तो कोई हानि नही और न निकले तो भी ठीक ही है। उलटे इतना धन सँभालकर रखनेकी झझट किये बिना उसका लाभ मिल जाता है। और यदि बहुत-से धनिक न्यासी बन जायें, तो हमारे लिए कहनेको कुछ नही रह जाता। तेरे तर्कके मूलमे यह शका निहित है कि धनिक कभी अपनी सम्पत्तिके न्यासी नही बनेंगे। यदि यह शका सच हो तो भी चिन्ता नही, क्योकि अन्तमे तो सत्यकी विजय है ही। जो लोग अपनी जरूरतसे ज्यादा सम्पत्ति रखते है वे चोरी करते है। और चोरीका धन कच्चा पारा है। वह पच नही सकता। अन्तमे वह चोरका नही रहेगा, यह विश्वास रखकर हम तो अहिंसक उपाय ही करते रहें।

यदि अब भी समाधान न हुआ हो तो फिर पूछना। तेरा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है, और यदि अहिंसाको तूने पूरी तरह समझ लिया होगा तो मेरा उत्तर तुझे पूर्ण लगना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

लक्ष्मी बारडोली गई है। प्रभावती और अमतुस्सलाम भी यही है। बा दिल्लीमे है। लक्ष्मीके लड़का[1] हुआ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७६) से। सी० डब्ल्यू० ६८१५ से भी, सौजन्य : प्रेमाबहन कटक

## ४७९. पत्र : रामदास गांधीको

१३ अगस्त, १९३५

चि० रा[मदास],

तेरा पत्र मिला। अन्तमे तो सबको भाग्य जहाँ ले जाता है वहाँ जाना ही पड़ता है इसलिए उसीके अनुसार तू भी बरतेगा। लेकिन जिस तरह भाग्य है उसी तरह पुरुषार्थ भी है। पुरुषार्थ अपने बसकी बात है इसीलिए शास्त्र हमे भाग्यपर भरोसा न करनेकी शिक्षा देते है। इसीसे "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"[2]

१. राजमोहन देवदास गांधी।

२. भगवद्गीता, २/४७।

वाला श्लोक रचा गया। इसका अर्थ बेशक ऐसा किया जा सकता है: "तुझे पुरुषार्थ करने का ही अधिकार है, भाग्यको जानने का कदापि नहीं। पुरुषार्थ करके जैसे राम रखे वैसे रह।" कभी-कभी 'गीता' का मनन करता है या नहीं? 'राम-गीता' पास रखता है या नहीं?

गुजरातीकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य प्यारेलाल

## ४८०. पत्र: एफ० मेरी बारको[1]

वर्धा
१४ अगस्त, १९३५

मेरे नये सचिवके बारेमें तुम्हारा क्या खयाल है?

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५६) से। सी० डब्ल्यू० ३३८६ से भी, सौजन्य: एफ० मेरी बार

१. गांधीजीने अपनी कलमसे अमृतकौरके पत्रके अन्तमें इतना जोड़ दिया था। वर्धासे भेजे गये इसी तिथिका वह पत्र निम्न प्रकार था:

"बापूको तुम्हारा ११ तारीखका पत्र मिल गया है। उनको खुशी है कि तुम्हारे स्वास्थ्यमें संतोषजनक प्रगति हो रही है। नीम और इमलीकी पत्तियोंको त्याग देनेकी सूचना बिलकुल गलत है। मुरब्बा अच्छा है, इसकी गवाही मैं दे सकती हूँ, और अच्छा हो यदि तुम अगली बार यहाँ आते समय उसकी विधिकी जानकारी लेती आओ। बापू कहते हैं कि तुमने बड़ा अच्छा किया कि अपनी "स्वास्थ्य-परीक्षा" स्वयं ही करना सीख रही हो। तो अब अस्पतालके लोगोंको कष्ट देनेकी जरूरत तुमको नहीं रह जायेगी। अफसोस! अब मुझे यहाँ एक सप्ताह ही और रहना है। यहाँ सब-कुछ बड़ा अच्छा रहा। मेरी और बापूकी ओरसे स्नेह।"

## ४८१. पत्र : हीरालाल शर्माको

१४ अगस्त, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। अच्छा किया सब तारीख दी है। मैंने द्रौपदीको खत[1] लिखा है।

तुमारे रवाना होनेका तार व्रजमोहनजी से मिल गया था। तुमारे अगले खत मिल चुके थे। तुमारे जहाजके अनुभवका बयान अब मिलेगा।

कन्या आश्रमकी कुछ किताब तुमारे पास थी क्या? छोटेलालने यह यादि[2] भेजी है। अगर मुझको कुछ तुमने कहा है तो मैं भूल गया हू।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

लिस्ट पीछे दिया है।

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८६ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## ४८२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

१४ अगस्त, १९३५

भाई सतीशबाबु,

तुमारा खत मिला। मैं कुछ समजा हूं। मेरे पर कुछ उसका बोज-सा प्रतीत होता है। इतनी कमिटी, इतनी किताब, इतनी प्रवृत्ति एक व्यक्तिपर लादना अच्छा हो सकता है? लेकिन इस बारेमे मैं कुछ अभिप्राय निश्चित नही कर सकता हू। मुझें प्रतिष्ठानमे रहना चाहीयें। बगैर अनुभवके कुछ भी टीका करने का मुझे अधिकार नही है। यहा आओगे तब थोडी बाते कर लेगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१४) से।

१. देखिए "पत्र : द्रौपदी शर्माको", १२-८-१९३५।

२. सूची।

## ४८३. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

१४ अगस्त, १९३५

चि० अम्बुजम,

आज तुमको हिंदी खत लिखता हू। पढ सकती है या नही, लिखो। आपत्ति हो तो इग्रेजीमे लिखुगा।

किचीकी देखभाल हम क्या करनेवाले हो सकते हैं? अतमे तो ईश्वर ही सभाल सकता है।

नीमु आजकल मेरे साथ रहती है। कानु बीमार है। बहूत दुर्बल हो गया है। लक्ष्मी बारडोली गई है। कुमारप्पा बीमार थे लेकिन अब अच्छे है। उनकी बहिन यहा दस दिन रह गई। अब यहा राजकुमारी अमृतकोर और खुरशेद बहिन हैं। प्रभावती और अमुतुल तो है ही।

तुमारे फल मिल गये हैं। शहद भी अच्छा। जब दिल चाहे तब फल व शहद भेजो लेकिन दोनो सस्ते हो। क्योकि ये ही चीज नित्य चलती तो है ही।

मेरा खुराक दूध, नीम और दूसरी पत्तीयां और फल है। कोई वार फल छोडता हू।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ४८४. पत्र : निर्मलकुमार बोसको

वर्धा
१५ अगस्त, १९३५

प्रिय निर्मलबाबू,

आपका इसी ५ तारीखका पोस्टकार्ड मिला। आखिर मैं आपका लेख आवश्यक सुधारोके साथ भेज पा रहा हूँ। विलम्बके लिए खेद है। आशा है, सुधारोको पढनेमे आपको कठिनाई नही होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५०९) से।

## ४८५. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१५ अगस्त, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

कही डाक न निकल जाये इसलिए बहुत जल्दीमे यह घसीटे दे रहा हूँ। यहाँ सब कुशल-मगल है। आजकल मैं बहुत व्यस्त हूँ। एक मिनट खाली नही मिलता। कहा जा सकता है कि हरिलाल शराबके कुडमे पडा रहता है। यह खयाल कि उसमे सुधार हुआ है सब गलत सावित हुआ। वह जैसा था उससे कही ज्यादा विगड गया है। किन्तु 'जवतक साँसा तवतक आसा' के अनुसार हमे मान लेना चाहिए कि यदि बचा रहा तो किसी दिन सुधर जायेगा।

बा और मनु दिल्लीमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४१) से। सी डब्ल्यू० १२५३ से भी, सौजन्य : सुशीला गाधी

## ४८६. पत्र : रसिक देसाईको

१५ अगस्त, १९३५

चि० रसिक,

चाहे जो कारण रहा हो तूने पत्र तो लिखा।

हर तरहसे आश्रमका गौरव वढाना। क्वेटाका पैसा भेजने का सबसे सहज उपाय इन्स्योर्ड रजिस्ट्री पत्र द्वारा भेजना है। यह रकम तू सेठ जमनालाल वजाजको वर्धा भेज सकता है। आशा है, तेरी गाडी ठीक चल रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री रसिक देसाई
शामलदास कॉलेज छात्रावास
भावनगर, काठियावाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६२१) से।

## ४८७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। दूसरा कोई-न-कोई मिल ही जायेगा। हमे बहुत जल्दी नही है। महादेवकी जबतक जरूरत हो तबतक रख सकते हो। यहाँ तो जैसे-तैसे काम चला लूंगा। राजकुमारी और खुर्शेद यथाशक्ति सहायता कर रही हैं। अधिकाश अग्रेजी पत्र राजकुमारी निपटा देती है। वह २१ तारीखको यहाँसे जायेगी। खुर्शेद-बहन तो अभी यहाँ है ही।

राजेन्द्रबाबू आज चले गये। साथमे मथुराबाबू और गोरखबाबू थे ही। खगोल-शास्त्री आज शामको उधर आ रहे हैं।

सातके बजाय चौदह पुडियाँ लेकर भी (पीलिया रोगसे) सर्वथा मुक्त हो जाओ तो अच्छा ही है। जो करना हो उसे पूरी तरह करना ही ठीक है।

एन्ड्रयूजको दूसरे दर्जेमे भेजा, यह ठीक किया। हमने यहाँ उन्हें भूखा रखा तभी तो वहाँ तुम खिला सके। अगर यहाँ खिलाया होता तो आज वे खटियामे पडे होते जैसे इलाहाबादमे पडे हुए थे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७७-७८

## ४८८. पत्र : बलवन्तसिंहको

वर्धा
१५ अगस्त, १९३५

चि० बलवन्तसिंह,

चार दिन हुए जेठालाल अनन्तपूर गये। उनको रास्तेके लिये घीके मोणकी भाखरी चाहिये थी। स्टेशनोसे कुछ लेते नही है। अमतुलसलामने मुझे पूछा मैंने कहा हा भाखरी बना दो। तुमारा किस्सा याद आया। तुमको तो मैंने डाटा।[1] स्मरणने मुझे दु:ख दिया। मैं जानता हू तुमारा तो भला ही हुआ लेकिन मेरा दोष

१. तीन महीने पूर्व, जब बलवन्तसिंह वर्धा छोड़ रहे थे।

मिथ्या नही हो सकता है। मेरा हेतु निर्मल था लेकिन यह बात मुझे मुक्त नही कर सकती। क्षमा करना। ऐसा अपूर्ण बापु है। बाकी तो कि०[1] ने लिखा है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७९) से।

## ४८९. पत्र: रावजीभाई एन० पटेलको

वर्धा
१६ अगस्त, १९३५

चि० रावजीभाई,

मैंने चचलसे बात की थी। किन्तु वह यहाँसे हिलना नही चाहती। कर्मठ है इसलिए सब उसे चाहने लगे है। मेहनती है इसलिए जल्दी-जल्दी सीखती जा रही है। वह निश्चितको छोड़कर अनिश्चितको अपनाना नही चाहती।

ऐसी स्थितिमें वहाँ जानेके लिए मैं तो उसपर जोर नही डालूंगा। यह अच्छा होगा कि ऐसी ही कोई लडकी वहाँ जाये जो सहज ही हरिजन आश्रम जानेको लालायित हो।

डाहीबहनको कुछ-न-कुछ होता ही रहता है। देहका दण्ड भोगनेपर ही छुटकारा होगा। क्या तुम्हारे घी की किस्ममे कुछ सुधार हुआ? हम लोगोने तो बाहरसे घी मँगाना बन्द ही कर दिया है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रावजीभाई पटेल
ग्रामोद्योग कार्यालय
लिंबासी, मातर ताल्लुका

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००५) से।

१. तात्पर्य शायद बलवन्तसिंह द्वारा अपनी पुस्तक बापूकी छायामें, पृ० १२२-२६ पर उद्धृत किशोरलाल मशरूवालाके पत्रसे है।

## ४९०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१६ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। . . [1] के बारेमें . . [2] को लिख रहा हूँ। ऐसी घटनाएँ मनुष्यको नास्तिक बना देती है। इसका इलाज यही है कि जो जाग्रत हैं, वे अधिक जाग्रत बनें।

जयकरने [3] अभी पूनामें भाषण दिया था। उसमें तिलक स्वराज कोषकी कड़ी आलोचना की गई है। उसकी रिपोर्ट हरिभाऊने [4] भेजी है। मैंने जयकरसे पुछवाया है कि क्या यह रिपोर्ट सही है? जवाब आने पर लिखूँगा।

उस श्रमजीवीका पत्र और उसका जवाब साथमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

. . . [5] के नामका पत्र साथमें है। उनका पता तलाश करके इसे उन्हें भेज देना।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७८

## ४९१. विकेन्द्रीकरण ?

हरिजन सेवक संघकी कार्यकारिणी समितिकी इसी माहकी तारीख ३० को होने वाली बैठकमें जिन कई महत्त्वपूर्ण विषयोंकी चर्चा होगी उनमें से एक विषय यह है कि क्या संघके कार्यकी व्यवस्थाका विकेन्द्रीकरण करने की जरूरत है। कुछ प्रान्तीय बोर्ड यह महसूस करते हैं कि विकेन्द्रीकरण कर देनेसे संघका ध्येय और भी अच्छी तरह सम्पादित होगा।

सेठ घनश्यामदास बिड़ला और श्री अमृतलाल ठक्करका आग्रह था कि व्यवस्था केन्द्रीकृत होनी चाहिए। इसका मुख्य कारण यह था कि पैसे तो केन्द्रने ही इकट्ठे किये थे, प्रान्तीय बोर्डोंके अध्यक्षोंको सेठ घनश्यामदासने निर्वाचित किया था और संघकी नीति भी क्रमशः केन्द्रीय बोर्डने ही बनायी थी।

१, २ व ५. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिये गये हैं।
३. मुकुन्दराव रा० जयकर, नरम दलके नेता।
४. हरिभाऊ फाटक, पूनाके कांग्रेसी कार्यकर्ता।

संघके कारोबारको एक ही केन्द्रसे चलाने की नीतिसे मैं सहमत रहा हूँ, तो भी मेरी इच्छा हमेशा ही यह रही है कि उपयुक्त अवसर आते ही यह कारोबार सघकी विभिन्न शाखाओमें विभक्त कर दिया जाये। मुझे इसमे सन्देह नही कि केन्द्रीय बोर्डकी भी यही इच्छा रही है। पर यह तो तभी हो सकता है, जब प्रान्तीय बोर्ड अपनी जरूरतका पैसा स्वय इकट्ठा कर लेनेके लिए तैयार और समर्थ हो। गाँव-गाँवमे हरिजन सेवक सघ हो, और उसके लिए हर गाँव खुद पैसा इकट्ठा कर लिया करे इससे अधिक प्रिय मुझे और क्या हो सकता है? ऐसा दिन जब आयेगा, तब अस्पृश्यताका सर्वथा नाश भी हो गया होगा। आज तो बदकिस्मतीसे यह मानना पडेगा कि अब भी इस आन्दोलनको सारे देशमे जो इने-गिने थोडे-से सच्चे सुधारक है वही चला रहे है। इन सबमें अपने-अपने कार्यक्षेत्रसे पैसा इकट्ठा कर लेनेकी शक्ति नही है, और किस तरहकी नीतिसे काम चलाना चाहिए इसका भी सबको पूरा पता नही है। 'नीति' शब्दका मै जान-बूझकर उपयोग कर रहा हूँ। क्योकि ध्येय क्या है यह तो सभी जानते है, पर सच्चे सुधारकोको कैसी-कैसी सख्त मर्यादाओके अन्दर काम करना पडता है इस बातका सबको पता नही है। निर्णय करने मे जरा-सी भूल हो गई, या उतावलीमे कोई काम कर बैठे, या बिना सोचे-समझे कोई बात ही कह दी, तो सारा किया-कराया काम मिट्टीमे मिल सकता है। इसलिए सघके कार्यकी नीति उन्ही थोड़े-से आदमियोको अपने नित्यके कार्यानुभवके आधारपर काफी सावधानीके साथ बनानी होती है, जिनके मनमे हरिजनोकी सेवा करने और हिन्दू-धर्मका अस्पृश्यता-रूपी यह महान् कलंक धो डालने के अतिरिक्त दूसरा कोई विचार ही नही।

हरिजन-सेवकोको यह जानकर दु:ख होगा कि प्रधान कार्यालयके बही-खातोमें ८०,००० से अधिक ही रकम बतौर पेशगीके प्रान्तीय बोर्डोके नाम पडी हुई है। इसका मतलब यह हुआ कि जिन प्रान्तीय बोर्डोके नाम यह रकम पेशगी पडी हुई है, वे अपने निर्धारित हिस्सेका पैसा इकट्ठा नही कर सके। यह भी एक दु:खकी बात है कि अधिकाश प्रान्तीय बोर्डोने आँकडे और तथ्य सघ द्वारा निश्चित किये हुए रूपमे नही भेजे। तीसरी उल्लेखनीय बात यह है कि सघके मन्त्रियोके सतत जागरूक रहते हुए और उनके कई बार दौरा करनेपर भी, जिला सघो ने, उन्हे जिस तरह काम करना चाहिए था उस तरह नही किया। यह सब कहने का अर्थ यह नही है कि प्रान्तो तथा जिलोके हरिजन-सेवकोने कुछ किया ही नही। निस्सन्देह 'हरिजन' मे समय-समयपर जो रिपोर्ट निकलती रहती है उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि हरिजन सेवक सघकी शाखाओको काम आरम्भ किये अभी थोडा ही समय हुआ है, पर इतने ही समयमें उन्होने कितनी अद्‌भुत प्रगति की है। मगर इस वक्त तो मेरा हेतु उधार नामा जाँचना है कि जिससे हरिजन-सेवक एक सच्चे निर्णयपर पहुँच सके। यह भी सम्भव है कि मैंने जिन त्रुटियोकी ओर ध्यान आकर्षित किया है वे त्रुटियाँ केन्द्रीकरणकी नीतिपर आवश्यकतासे अधिक आग्रह रखने का परिणाम हो। अगर एसा है तो जो लोग विकेन्द्रीकरणके पक्षमे है उन्हे अपना मामला साबित करना पडेगा। केन्द्रीय बोर्डको अगर इसकी जरूरत महसूस हुई होती, तो वह यह कभी का कर

चुका होता। आगामी बैठक केन्द्रीय बोर्डकी कार्यकारिणी समितिकी है। उसमे केवल सात सदस्य है, और अध्यक्ष उसमे उपस्थित नही हो सकेगा। अत प्रत्येक प्रान्तके हरिजन-सेवकोसे मेरा यह निवेदन है कि वे इस विषयपर अपनी निश्चित राय सघ-के मन्त्रियोके पास भेज दे, साथ ही अपनी रायके समर्थनमें तथ्य और आँकडे भी सक्षिप्त रूपमे भेजे। हरिजन-सेवाका कार्य दया-धर्मका कार्य है, और इसमें एक प्राचीन धर्मके जीवन-मरणका प्रश्न अन्तर्निहित है। इसलिए इस कार्यको आगे बढ़ाने के लिए हमे अपनी शक्ति-भर एक भी उपाय नही छोडना चाहिए। ऐसे विषयोमे व्यक्तिगत दृष्टिसे विचार करने का कोई मूल्य ही नही।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १७-८-१९३५

## ४९२. मिश्र खाद

इन्दौरमे 'इन्स्टिट्यूट ऑफ प्लाट इंडस्ट्री' नामकी एक वैज्ञानिक सस्था है। जिनकी सेवा करने के लिए वह कायम की गई, उनके लिए वह समय-समय पर पत्रक प्रकाशित करती है। इनमे से पहला पत्रक खेतकी बेकार समझी जानेवाली चीजोसे कपोस्ट (मिश्र खाद) बनाने के तरीको और उसके फायदोका बयान करता है। गोबर और मैला उठाने, साफ करने या फेकने का काम करनेवाले हरिजनो और ग्रामसेवको के लिए वह बहुत उपयोगी है, इसलिए मै कम्पोस्ट बनाने की प्रक्रियाके वर्णनके साथ उसके फुटनोटोको भी जोड़कर लगभग पूरे परचेकी[1] नकल नीचे देता हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १७-८-१९३५

## ४९३. सर्प-विष

हॉफकिन इन्स्टीट्यूटके निदेशक डॉ० सोखीने मुझे भारतीय सर्पोके बारेमे एक विवरण भेजने की कृपा की है। चूँकि अब गाँवोमे हमारे सहकर्मी फैलते जा रहे है और चूँकि दुर्भाग्यवश वहाँ शहरी सुविधाएँ सुलभ नही है, इसलिए उनको ऐसी बातोके बारेमे जानकारीसे लैस करना बहुत जरूरी हो गया है जिनका सामना गाँवोमे आम तौरपर करना पडता है। इनमे सबसे खतरनाक है साँपका काटना, जो तुरन्त ही आवश्यक उपचार न हो पानेपर अनेक बार प्राण-घातक सिद्ध होता है। मै उस विवरण के महत्त्वपूर्ण अश नीचे दे रहा हूँ।[2] पूरे विवरणमे साँपोंकी पहचानके

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है; यह हरिजन में प्रस्तुत और बाद के अंकमें क्रमशः प्रकाशित हुआ था।

२. देखिए परिशिष्ट १।

बारेमे उपयोगी जानकारी दी गई है। पर सारा विवरण पारिभाषिक शब्दावलीसे इतना लदा है कि ग्राम-कार्यकर्त्ता उसे समझ नही पायेगे। इसलिए म विवरणके उस अशको छोड रहा हूँ।

चूँकि दसमे से नौ साँप जहरीले नही होते और वे चूहोसे खेतोकी रक्षा करने आदिमे बड़े उपयोगी रहते है, इसलिए जहरीले साँपोको गैर-जहरीले साँपोसे अलग करके पहचानने की यदि कोई सरल विधि मिल जाये तो बड़ा उपयोगी रहेगा। इसमे रुचि रखनेवाले पाठक तबतक नीचे दिये इस बहुत ही सादा-से इलाजपर गौर करे.[1]

कर्नल सोखीने तो मुझे आगाह किया है कि सर्प-विषमारक दवा की सुइयाँ लगाने के अलावा जहरीले साँपोके काटने का दूसरा कोई भी अचूक इलाज नही है, फिर भी मैं 'रिटर्न टु नेचर' [प्रकृतिकी ओर लौट चलो] के लेखक जुस्टके अनुसार उनके द्वारा सफलतापूर्वक प्रयुक्त इस इलाजको यहाँ बतलाने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हूँ। मैंने भी सर्प-दशके दो या तीन मामलोमे और बिच्छूके डक मारने के अनेकानेक मामलोमे इसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। इलाज यह है कि काफी मात्रामे मिट्टी लेकर दशके स्थानपर उसकी पट्टी-सी लेप दी जाये। यथा-सम्भव अधिकसे-अधिक साफ मिट्टी लेकर शीतल जल मिलाकर ठण्डी पुलटिस बना ली जाये। फिर उसकी एक इच मोटी तह फैलाकर जिस अगपर दश लगा हो उसपर लेप दी जाये और एक गीले कपडेकी पट्टी बाँध दी जाये। यदि एडीमे काटा हो, तो उस पैरमे घुटनेतक पुलटिस लगानी चाहिए और यदि अँगुलीमे काटा हो तो पूरे हाथमे पट्टी बाँधनी चाहिए। जितने अधिक स्थानपर हो, उतना ही अच्छा। उपर्युक्त विवरणमे बताये गये अन्य सब इलाज भी निस्सन्देह किये जानें चाहिए। और यदि दवाकी सुई लगा दी जाये तो फिर मिट्टीका यह इलाज अनावश्यक होगा। मुझे विश्वास दिलाया गया था कि यदि समय रहते सुई लगा दी जाये तो निश्चय ही वह विषको मार देगी। मिट्टी द्वारा किया जानेवाला इलाज सोलहो आने कारगर ही है, ऐसा भी मैं नही कह सकता। कारण मैंने इसके प्रयोगसे जिन लोगोको ठीक किया है उनके बारेमे मुझे यह ठीक-ठीक जानकारी नही रही है कि उनको अत्यधिक विषैले साँपोने ही काटा था। मिट्टीका यह इलाज हानिरहित है और गाँवोमे बडी सरलतासे किया जा सकता है और फिर लेखकने इसकी बडी प्रशसा की है, इसी-लिए मै इसे सुझा रहा हूँ।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १७-८-१९३५

१. देखिए परिशिष्ट १।

## ४९४. पत्र : ना० र० मलकानीको

वर्धा
१७ अगस्त, १९३५

प्रिय मलकानी,

इसी महीनेकी १५ तारीखका तुम्हारा पत्र आज मिला है, लेकिन नये न्याससे सम्बन्धित दस्तावेज और कागजात नही आये हैं।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६४)से।

## ४९५. पत्र : लीलावती आसरको

१७ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

तेरी प्रसादी मिली। तू स्थिरचित्त बन, सीख और सेवा कर।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३६) से। सी० डब्ल्यू० ६६११ से भी, सौजन्य : लीलावती आसर

## ४९६. पत्र : निरंजन स्वामीको[1]

१७ अगस्त, १९३५

भाई निरजन स्वामी,

तुम्हारे लेखोमे छापने-जैसा मुझे तो कुछ मिला नही। फिर भी तुमने इतना लिखने और सोचने-विचारनेकी जो मेहनत उठाई है वह बिलकुल बेकार तो कभी नही जायेगी।

१. उर्फ़ मकनजी गोपालजी।

चि० वल्लभसे[1] मैं क्या कहूँ? उसके बारेमें विनोबा सोच लेंगे। वहाँके प्रबन्धमें मैं हस्तक्षेप कर ही नहीं सकता, किन्तु इतना मैं जानता हूँ कि नालवाडी आश्रमके संचालनका काफी बोझ वल्लभ पर है।

बापू

श्री निरंजन स्वामी
ओलपाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४६६) से।

## ४९७. पत्र : नारणदास गांधीको

१७ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालके बारेमें हम क्या कर सकते हैं? वह सभी चीजोंको सन्देहकी दृष्टिसे देखता है और स्वयंको निर्दोष मानता है। जूनागढ़में वह कोई तमाशा खड़ा न करे तो अच्छा हो।

मैथ्यूके बारेमें तुमने इतना अधिक सन्तोष व्यक्त किया है, उससे मुझे प्रसन्नता होती है। यदि वह दत्तचित्त होकर अपना काम करेगा तो वहाँ भी अपना नाम रोशन करेगा। तुम्हें पूरी तरहसे विश्वास हो जानेपर यदि तुम उसे अधिक दे सको तो देना। किन्तु उससे शारीरिक श्रम तो लेना ही चाहिए, और उसे हिन्दी भी अवश्य सीखनी चाहिए।

साबरमतीसे जो पैसा उन्होंने मँगाया है सो भेज देना।

वजुभाईने अपने अन्तिम पत्रमें जो पता दिया है वह मुझे भेज देना; मुझे उसकी जरूरत है। मैं अभी उसे पत्र नहीं लिख सका हूँ।

प्राध्यापक जोशीका पत्र वापस लौटा रहा हूँ। यदि उसे खादीपर श्रद्धा है तो वह खादीकी धोती क्यों नहीं लेता? अब तो बहुत महीन धोतियाँ मिल जाती हैं। यदि वह स्वयं ही काते तो बहुत सस्तेमें धोती बन सकती है। उसे छुट्टी दे देनेकी तो कोई वजह ही नहीं है। उसका पत्र मुझे पसन्द आया। यदि तुम उक्त पत्र नरहरिको भेज दो तो अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७० से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. वल्लभ स्वामी।

## ४९८. पत्र : ईश्वरदासको

१७ अगस्त, १९३५

भाई ईश्वरदास,

तुमने जो श्लोक बनाये है वह तो गुरु शिष्यके बारेमें है। और वह भी ऐसे मौकेपर जब दोनो एक स्थानपर रहते है। न मैं गुरु हू न तुम शिष्य हो। मैंने किसीको शिष्य नही बनाया है। सो तो तुम्हे मालूम है न? तुम्हारे प्रश्नमे एक प्रकारका आलस्य पाता हू। प्रश्न ऐसे रहते है जिनका प्रश्न मेरे लेखोमे आ ही गये है। लेकिन वाचन, मनन चाहिये ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य : प्यारेलाल

## ४९९. सेवाकी रीति

एक बहन एक गाँवमे करीब एक सालसे रहती है, और वहाँ ग्रामवासियोकी सेवा करती है। धीरे-धीरे वह अपना सेवा-मार्ग तय कर रही है। कठिनाइयोके बहुत-सारे पहाड वह लाँघ चुकी है। किसानोके साथ हल चलाती है, रास्ता साफ करती है, स्त्रियोको सूत कातना सिखाती है और बालको तथा वयस्कोको पढ़ाती है। वह अपने अनुभव मुझे भेजती रहती है। अभी हालमें उसने जो अनुभव लिख भेजा है उसे अत्यन्त उपयोगी समझकर मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ[1]

> एक दिन महारवाड़ेमें एक बकरी मर गई। महार लोगोंने मुर्दार जानवरका मांस खाना या उसका चमड़ा उतारना दोषास्पद समझकर छोड़ दिया है। . . . मैं चमारवाड़ेमें गई, पर महारकी छुई हुई लाश लेनेके लिए चमार तैयार नहीं थे। . . . तब मैंने कहा कि अब मांगवाड़ा चलना चाहिए। . . . मैंने लाश खुद ही अपने सिरपर रख ली। . . . लोग आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। मैं सीधी माँगवाड़ेमें गई, और मांग लोगोंने वह लाश ले ली और कहा, "बहनजी, तुम खुद ही अपने सिरपर लादकर इसे क्यों लाईं? हमें कहला भेजतीं, तो क्या हम आते नहीं?" मैंने कहा, "मुझे यह बतलाना था कि काम गंदा नहीं होता, मनुष्य गन्दा होता है। मुझे तो कोई शर्म थी नहीं, इसलिए तुम्हें किसलिए कष्ट देती?"

१. यहाँ केवल कुछ अंशोंका ही अनुवाद दिया गया है। पत्र-लेखिका सम्भवत: प्रेमाबहन कंटक थीं; देखिए "पत्र : प्रेमाबहन कंटकको", १३-८-१९३५।

इस उदाहरणसे यह प्रकट होता है कि भाषणोसे काम नही चलता। दूसरोसे हम जो काम कराना चाहते है वह हमे खुद ही करके दिखाना चाहिए, तभी काम चलेगा।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १८-८-१९३५

## ५००. पत्र : भगवानजी ए० मेहताको

१८ अगस्त, १९३५

भाई भगवानजी,

मैंने तुम्हे हाथका बना थोड़ा-सा कागज भेजा है। आशा है, वह मिल गया होगा। उसका बीजक इसके साथ है।

देहाती नरकुल और स्याही तो राजकोटमे जितनी चाहिए उतनी मिल सकती है। बोहरा लोग दोनो चीजे बेचते है। ऐसी चीजे यहाँसे भेजनेकी जरूरत नही। नरकुल तो हमारे खेतोमे होता है। उनमे से कुछ तरहके जो बहुत कडे और चमकदार होते है, सब जगह नही होते। किन्तु बाँस तो जहाँ चाहिए वहाँ मिल जाता है। मुझे याद है कि बचपनमे हम सब भाई शौकिया बाँसकी कलमे बनाकर देखा करते थे। और घरमे नरकुलकी कलमके अतिरिक्त और कुछ नही था। अग्रेजी स्कूलमे जानेके बाद निबवाले होल्डरोने घरमे प्रवेश किया और आपसमे दोनोसे लिखनेकी होड़ चला करती थी।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२६) से। सी० डब्ल्यू० ३०४९ से भी, सौजन्य · भगवानजी अ० मेहता

## ५०१. पत्र : परीक्षितलाल ल० मजमूदारको

वर्धा
१८ अगस्त, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

तुम्हारा पत्र दु.खद कथा पत्रका है। इस मामलेमे अखबारोने [घटनाका] विवरण बढ़ा-चढाकर नही बल्कि सक्षेपमें दिया है। तुमने सरकारी अधिकारियोकी मदद लेकर अच्छा ही किया। अत्याचारियोको सजा मिलनेपर ही निस्तार होगा। इसीमे कमसे-कम हिसा है। जबतक अहिसकोकी सख्या और शक्ति परिमित है तबतक राज्यकी हिंसा सबसे कम दोषपूर्ण मानी जायेगी। सरकारी अधिकारियोकी सहायता लेनेके बावजूद तुम अपने ढगसे अन्य उपाय तो करोगे ही। क्या ऐसा कोई व्यक्ति नही है जो

राजपूतो और बारैयोको समझा-बुझा सके? हममें से किसीको हरिजनोके बीच रहना चाहिए। मैं समझता हूँ, उस विभीषण-रूपी राजपूतको प्रोत्साहन मिलता ही होगा।

पाठशालाओके बारेमे तुमने उपयोगी सूचनाएँ दी हैं। तुम्हारा पत्र मैं सरदारको भेज रहा हूँ। बापाके आनेपर मैं हमारे बजटके बारेमे बातचीत करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०३६)से। सी० डब्ल्यू० १२७से भी, सौजन्य: परीक्षितलाल ल० मजमूदार

## ५०२. पत्र: कस्तूरबा गांधीको

१८ अगस्त, १९३५

बा,

बहुत प्रतीक्षाके बाद तेरा पत्र मिला। तू जल्दी अच्छी हो जा। नीमू आदिकी फिक्र मत करना। नीमू आनन्दपूर्वक है। बच्चे भी यहाँ पहुँचनेके बाद कुछ पनपे हैं। कानो मेरे साथ ही खाने बैठता है। कभी सुमित्रा भी बैठ जाती है और कभी नही बैठती। उषा बढती जा रही है। नीमूका सितार भी थोडा-बहुत बजता रहता है। अमतुस्सलाम खूब सेवा करती है। राजकुमारी अभी यही है। २१ तारीखको यहाँसे रवाना होगी। खुर्शेदबहन तो यहाँ है ही। २२ तारीखको गोसीबहनके आनेकी सम्भावना है। हरिलालके पत्र मिलते रहते हैं। जो उसके मनमे आता है सो लिखता रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १५४६) से; सौजन्य: मनुबहन एस० मशरूवाला

## ५०३. पत्र: मनु गांधीको

१८ अगस्त, १९३५

चि० मनुडी,

तुझे बुखार कदापि नही आना चाहिए था। अब इस तरह रहना कि बुखार आये ही नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४७) से; सौजन्य: मनुबहन एस० मशरूवाला

## ५०४. पत्र : देवदास गांधीको

१८ अगस्त, १९३५

चि० देवदास,

लक्ष्मीकी दाढ़के लिए, यदि गरम पानीमे परमेंगनेट डालकर कुल्ले न कराये हो तो करा देखना। इसका अच्छा असर होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५४८) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

## ५०५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१८ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

साथमें .[1]का पत्र है। इस बेचारेको तो कमेटीके बारेमे कुछ पता ही नही। क्या तुमने कोई कदम उठाया?

किशोरलालने कल बताया कि तुम्हे तो सख्त बवासीर हो गया है और अब खून भी जाने लगा है। ऑपरेशन कराना पडेगा। यह तो शरीरके भीतर इकट्ठी हुई गन्दगीका नतीजा है। मुझे पूरा हाल लिखना। इस हालतमे तुम्हारा ऑपरेशन भी अच्छा तो नही कहा जा सकता। इसलिए उसके बिना काम चल सके तो चला लेना ठीक होगा। गौरीशकर या डॉ० मेहताकी[2] मदद लो तो ठीक होगा। शायद गौरीशकर अच्छी मदद कर सके। बहुत-से लोग केवल पेट ठीक करके ऑपरेशनसे बच जाते हैं। यदि तुम अहमदाबाद वाले नीमहकीमकी गोदमें सिर रख सकते हो तो इस प्राकृतिक नीमहकीमकी गोदमे भी रख सकते हो, फिर भले ही सिर रहे या न रहे। तुम बीमार रहो यह हमे पुसा नही सकता। अमृतलाल कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। यह तुम्हारे पढने लायक है। दोनो मामलोके बारेमें।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १७९

१. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

२. डॉ. दिनशा मेहता।

## ५०६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको[1]

१९ अगस्त, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

आज भी दो-चार शब्द लिखने का ही समय मेरे पास है। क्या मैं तुम्हें लिख चुका हूँ कि देवदासको पुत्र प्राप्त हुआ है? लक्ष्मी और बालक सकुशल हैं। बा और मनु अभी दिल्लीमें ही हैं। नीमू आजकल मेरे साथ है। कानो ज्वरसे पीड़ित है। बुखार उतरता-चढता रहता है। वह जल्दी अच्छा हो जायेगा।

फिलहाल महादेव सरदारके पास बम्बई में है। शायद कल यहाँ पहुँच जायेगा। नवीन यहाँ आ गया है। अभी तो यहाँ रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४२) से। सी० डब्ल्यू० १२५४ से भी, सौजन्य सुशीला गांधी

## ५०७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

वर्धा

१९ अगस्त, १९३५

चि० कृष्णचन्द्र,

तुमारे विह्वल होनेका कोई कारण नही है। सेडीमेन्ट[1] बंद होगा ही। व्यायाम ज्यादा होना चाहीये, कटी-स्नानका अभ्यास रखो, प्राणायाम खुल्ली हवामे करो। नीमकी मात्रा कम कर सकते हो। दूसरी कच्ची भाजी भी लेना। दूध सर्वथा नही छूट सकता है। फल लेना। स्वादकी बात छुट जानेसे आवश्यक खुराक लेनेमे संकोच नही रखना। आखरमे जिम्मेवारी तो मेरे सर पे है। दलीया अवश्य खाओ। रोटीका असर यदि ऐसा है तो उसमे तेल आता है वह कारन हो सकता है। इसका संशोधन आवश्यक है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७७) से।

१. अवसाद; मूल में गांधीजी ने अंग्रेजी शब्दका प्रयोग किया है।

## ५०८. एक पत्र

वर्धा
२० अगस्त, १९३५

प्रिय मित्र,

इसी महीनेकी १९ तारीखका आपका पत्र मिला, जिसके साथ फिलीपीनके समाचार-पत्रकी एक कतरन भी है। उसमें दी गई जानकारी एकदम गलत है। मैंने अबीसीनियाके बारेमें कोई वक्तव्य[1] नहीं दिया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २२-८-१९३५

## ५०९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२० अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। कमेटी अच्छी बन गई। काम तुरन्त निबट जाये, यही आवश्यक है। . .[2]

मोरारजी और चन्दूभाई यहाँ २५ तारीखको सवेरे पहुँच रहे हैं।

तुम्हारे बवासीरका क्या हाल है?

कुमारप्पाके चेहरेपर अब भी बुखारकी हलकी-सी झलक बनी हुई है। सिविल सर्जनको दिखलानेवाला हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८०

१. देखिए "वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको", १-८-१९३५।
२. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

## ५१०. पत्र : तुलसी मेहरको

२० अगस्त, १९३५

चि० तुलसी महेर,

तुमने जो अनुभव पाया है उसका उपयोग वहां होता होगा।

जितने वहाके कागज भेज सकते हैं इतने भेजो। उसे वेच सकुंगा। सब कुशल है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६५४९) से।

## ५११. एक पत्र

२१ अगस्त, १९३५

वैसे मैंने कभी भी इसके बारेमें इस तरहसे नहीं सोचा था जैसे आपने पेश किया है, लेकिन अब जब मुझे उकसाया गया है तो सोचना पड़ रहा है। मुझे सबसे पहला विचार यह आ रहा है कि ऊँचेसे-ऊँचे स्तरके क्रिया-कलापके लिए मनुष्यकी स्वतन्त्रतामें विश्वास करना नितान्त अनावश्यक है। परन्तु आपके दूसरे प्रश्नका उत्तर यह है कि मैं सदासे व्यक्तिकी सापेक्ष स्वतन्त्रताको ईश्वरीय इच्छाकी सर्वशक्तिमत्ताके अधीन मानता आया हूँ। मैं जीवनके कुछ सामान्य अनुभवोंके आधारपर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ। बन्दीको तनहाईकी कोठरीमें भी हिलने-डुलनेकी — चाहे जितनी थोड़ी हो — स्वतन्त्रता तो रहती है और सोचने-विचारने की तो पूरी स्वतन्त्रता रहती है। आपने जो प्रश्न रखा है, उसके अनुसार तो मस्तिष्क तक ईश्वरीय इच्छाके अधीन पूर्ण रूपसे बन्दी है, फिर भी तथ्य यही है कि ईश्वर हमें करोड़ों फालतू बातें सोचने देता है। इससे मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि व्यक्तिको कुछ स्वतन्त्रता तो रहती है, भले ही वह एक छोटेसे-छोटे कण-मात्रके बराबर हो। ईश्वरीय इच्छाकी पूर्ण अधीनता स्वीकार करने की सबसे खरी कसौटी यही होगी कि क्या उस कण-मात्र स्वतन्त्रता तक को पूर्णतः त्याग दिया गया है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी; सौजन्य : नारायण देसाई

## ५१२. पत्र : क० मा० मुंशीको

वर्धा
२१ अगस्त, १९३५

भाई मुशी,

तुम्हारी पुस्तक मिल गई है। पुस्तकका कैसा स्वागत होता है, मुझे लिखना। शेप सव काकाने मुझे वताया है।

बापूके आशीर्वाद

एडवोकेट क० मा० मुशी
रिज रोड, बम्बई

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८४) से, सौजन्य : क० मा० मुशी

## ५१३. पत्र : मदालसा बजाजको

२१ अगस्त, १९३५

चि० मदालसा,

वहुत दिनोके बाद तेरा पत्र मिला। तेरी जो मर्जी हो सो खाना, वशर्ते कि तू वीमार न पडे। तू जो भी सयम पालना चाहे, इस बातका घ्यान रखना कि पालन स्वाभाविक होना चाहिए। कोई जल्दी नही है। क्रोघ त्याग देना और बालक वनकर रहना। आश्रमका जीवन व्यतीत करने से स्वतन्त्रता आती है; उद्दण्डता, अविनय और अभिमान कभी नही आते।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१८

## ५१४. चर्चा : निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरीके सम्बन्धमे – १[1]

[२२/२३ अगस्त, १९३५][2]

गाधीजी · हमे अपनी सीमाएँ जान-समझ लेनी चाहिए। वे ऐसी है कि उनको जानकर हम भौचक्के रह जायेगे। इसके लिए यदि हमको टूली स्ट्रीटके तीन दर्जियो[3] की भूमिका निभानी पडे तो भी कोई परवाह मत कीजिए। हमारे ससाधन अत्यन्त ही स्वल्प तथा सीमित है। हम लम्बी-चौडी योजनाओपर धन नही बहा सकते और हम सभी तरहके साधनोको भी नही अपना सकते। हो सकता है कि हमे कार्य-कर्त्ता और एजेंट न मिल पाये और हमे अपनी शाखाएँ भी इनी-गिनी ही और बहुत दूर-दूर खोलनी पडे। लेकिन मुझे ऐसी कोई जल्दी भी नही है कि समूचे देश-भरमे ऐसी सस्थाओका एक जाल तुरन्त बिछ जाये। हमारी नीति तो किसी ओरसे अपेक्षा किये बिना अपने कर्त्तव्यमे जुटे रहने की है। . . यदि हम पाये कि कोई उद्योग निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजूरी अदा करने में समर्थ नही है तो उसे बन्द कर देना चाहिए। हमे इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हम जिस किसी उद्योगको हाथमे ले उसमें अदा की जानेवाली मजूरी समुचित निर्वाहके लायक हो।

डॉ० प्रफुल्ल : मै जिन दिनों एक वेतनभोगी अधिकारी था, उन दिनों हिसाब लगाकर देखता था कि मेरे नौकरोंको अपने और अपने ऊपर निर्भर रहनेवाले परिवारके सदस्योंके ठीक ढंगसे निर्वाहके लिए कितने रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी और उसीके अनुसार मैं उनको वेतन दिया करता था। वह प्रतिमास बीस रुपये बैठती थी। अब कपड़ों और अन्य आवश्यकताओंको मिलाकर, वह ३० रुपये प्रतिमास बैठेगी।

गाधीजी (हँसते हुए) : तब अगर आप तैयार हो, तो हम बगालके लिए एक रुपया प्रतिदिन न्यूनतम मजूरी निर्धारित कर दे। आप एक अधिकारीकी हैसियतसे पहले जो सब किया करते थे अब वही आपको सघके एक सदस्यकी हैसियतसे करना है। निश्चय ही, मै तो चाहूँगा कि न्यूनतम मजदूरी अधिकसे-अधिक निर्धारित की जा

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके प्रबन्धक-मण्डलकी बैठक वर्धामें हुई थी।

२. सर्चलाइट, ३०-८-१९३५ से।

३. इंग्लैंडके साउथवार्क नगरकी टूली स्ट्रीटके तीन दर्जियोंने एक बार कॉमन्स सभाके नाम अपना एक शिकायतनामा भेजा था, जिसे इस प्रकार आरम्भ किया गया था : "हम इंग्लैंडकी जनता . . .।" इससे एक मुहावरा बन गया है, जिसका आशय है — अपने-आपको समस्त जनताका प्रतिनिधि मानकर, छोटे मुँह, बड़ी बातें बघारनेवाला कोई व्यक्ति।

सके और उसमें परिवारके कमसे-कम एक और सदस्यके निर्वाहके लिए गुंजाइश रखी जाये। पर आप जितना कर सकते हैं उतना ही तो करेंगे।

बम्बईमें प्रान्तीय सहकारी बैंकके प्रबन्ध-निदेशक, श्रीयुत वैकुंठनाथ मेहताने कहा कि इस प्रश्नके सिलसिलेमें जितनी जल्द कुछ किया जाये उतना ही अच्छा; क्योंकि जब हमारा आग्रह है कि बड़े पैमानेपर संगठित उद्योगोंमें मजूरी तथा कामके प्रश्नोंका समुचित हल निकलना ही चाहिए तो असंगठित उद्योगोंमें भी इन प्रश्नोंकी ओर ध्यान देना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। इसकी कठिनाइयाँ बहुत स्पष्ट हैं, लेकिन मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि यदि जनताको भली-भाँति समझा दिया जाये कि इन वस्तुओंकी खरीदपर खर्च होनेवाले उसके धनका ९५ प्रतिशत या इससे कुछ अधिक ही अंश सीधा उत्पादकोंको ही मिलता है तो वह खर्च उसको खलेगा नहीं।

श्रीयुत शंकरलाल बैंकरने संतुलित भोजनमें लेखी जानेवाली न्यूनतम वस्तुओंकी कीमतोंके प्रान्तवार आँकड़े जमा करनेके महत्त्वपर जोर दिया, लेकिन उन्होंने वर्तमान उद्योगोंमें मजूरीके प्रश्नपर अमल करनेकी कुछ कठिनाइयाँ बतलाईं।

गांधीजी ने यह स्पष्ट किया कि हम केवल उन उद्योगोंको ही ले रहे हैं जो ठप हो गये हैं या होते जा रहे हैं और जिनका हम पुनरुद्धार करनेका प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम मौजूदा उद्योगोंमें कोई व्यवधान नहीं डालेंगे। क्या न्यूनतम मजूरी निर्धारित कर देनेसे ग्रामवासियोंकी स्थिति कठिन हो जायेगी? क्या उनको मिट्टीके भाँड़े और दीये-जैसी अपनी रोजमर्राकी जरूरतकी छोटी-छोटी चीजोंके बारेमें कोई फर्क पड़ेगा? इनके लिए शहरी लोगोंको कुछ ज्यादा कीमत देनी पड़े, तो क्या गाँवके लोगोंको भी वही कीमत देनी पड़ेगी? शहरोंसे बिलकुल सटे हुए गाँवोंके लोगोंको तो अपेक्षाकृत दूरके गाँवोंकी तुलनामें अभी भी दूध की कुछ अधिक कीमत देनी ही पड़ रही है। गांधीजी ने कहा :

यह तो अनिवार्य था। पर गाँवोंके लोग अपने यहाँ कीमतोंकी पटरी बैठा लेंगे। इसके अलावा, हमारा संघ ठीकसे चल निकलनेपर जहाँ बढ़ई और लुहारों और कतैयोंको कुम्हारोंसे बर्तन खरीदते वक्त कुम्हारोंकी न्यूनतम मजदूरीके आधारपर निर्धारित कीमत अदा करनी पड़ेगी, वहाँ उनको अपनी तैयार की हुई चीजोंकी भी वही कीमत मिलेगी जो उनकी अपनी न्यूनतम मजूरीके आधारपर निर्धारित की जायेगी, इसलिए उनको कुम्हारोंकी बढ़ी हुई कीमतोंसे कोई शिकायत नहीं रह जायेगी। लेकिन वह तो काफी दूरकी बात है। अभी तो हमको उन वस्तुओंपर ही ध्यान देना चाहिए जो गाँवोंसे शहरोंमें भेजी जाती है और हमें ऐसी वस्तुएँ निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरीके आधारपर निर्धारित मूल्यसे कमपर लेनेसे इन्कार करना चाहिए।[1]

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

१. बैठकमें स्वीकृत हुए प्रस्तावके लिए; देखिए "एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव", ३१-८-१९३५।

## ५१५. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा,
२३ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

वादेके मुताबिक तुम्हारा तार आ गया। और मुझे खुशी है कि तुम्हारी जगह खाली पडी है। मैं जब भी अपने आसनपर बैठता हूँ, तुम्हारी अनुपस्थिति महसूस करता हूँ। तुम इस सबका एक अनिवार्य अग बन गई थी, और तुम अपने पीछे इतनी सारी चीजे छोड गई हो, जो तुम्हारी याद दिलाती रहती है। थर्मस हमेशा तुम्हारी याद दिलाता रहता है। साइट्रोनेलकी शीशी भी मुझे मेजपर पडी मिली। मेरा खयाल है, उसे भी तुम जान-बूझकर छोड गई थी। टोकरियाँ अभी वही है। चुकन्दर लगातार यहाँ पहुँच ही रहा है। मुझे उसे ठीकसे पकानेकी फिर कोशिश करनी चाहिए। देखती हो, तुमने क्या कर दिया है!

आशा है, जैसा मैं चाहता था वैसा प्रमाणपत्र शम्मीने दे दिया होगा।

तुमने कुमारप्पाको दावत दी है कि वह जब भी शिमला जाये तुम्हारे यहाँ मेहमानी करे। सिविल सर्जनने कल उसे देखा था और हलका-सा ज्वर रहनेके कारण उन्होंने उसे एक-दो महीनेके लिए पहाड जानेकी सलाह दी है। मैं उसे आगे जाँच-पडतालके लिए बम्बई भेज रहा हूँ। तुम अगर सचमुच किसी भी तरहकी कोई असुविधा महसूस किये बिना उसे रख सको, तो उसके बाद वह शिमला जानेको तैयार हो सकता है। अगर कर सको तो मुझे तार दे देना। लेकिन तुमको किसी भी तरहकी कोई असुविधा लगे तो मना करनेमे सकोच नही करना चाहिए।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४१) से, सौजन्य. अमतकौर। जी० एन० ६३५० से भी

## ५१६. पत्र : छगनलाल जोशीको

२३ अगस्त, १९३५

चि० छगनलाल,

लगता है, तुम 'हरिजन' नही पढते। यदि तुम हड्डियोकी खाद बना डालो तो वह अवश्य बिक जायेगी। हर गाँवमें एक जगह हड्डियाँ इकट्ठी करके, 'हरिजन'[1] मे बताये अनुसार उन्हे हलका-सा भूनकर आटेकी तरह बारीक पीस लो। फिर तुम उसे जहाँ भेजना चाहो वहाँ भेज सकते हो। तुम इस खादको रियासतके कृषि विभागको बेच सकते हो। जबतक उपयोगमे न आये तबतक तुम उसे गोदाममे सग्रह करके रख सकते हो, क्योकि यह बिगडती नही। माससे खाद कैसे तैयार करनी चाहिए यह भी 'हरिजन' मे बताया जा चुका है। इस खादका पैसा तो एक बडी पेढी भी देती है। माससे खाद बनाने की क्रिया हड्डियोका चूर्ण बनाने की अपेक्षा कठिन है किन्तु फिर भी उसे घरपर तैयार किया जा सकता है। मै उसकी सविस्तार नकल करवाकर तुम्हे भेज दूंगा। आँतोसे ताँत बनती है, इसे जेठालाल बनाता है। शरीरका ऐसा कोई भाग नही जिसका उपयोग न हो सके। रक्तका भी उपयोग किया जा सकता है किन्तु वह प्रक्रिया मै भूल गया हूँ। किन्तु मै उसे प्राप्त कर लूंगा। अभी मै पूरी तरह व्यवस्था नही कर पाया हूँ। मुझे आशा है कि व्यवस्था हो जाने पर उसकी माँगको स्थायी बना सकूंगा। हड्डियोकी खाद या अन्य चीजे काठियावाडसे बाहर भेजने की जरूरत नही होनी चाहिए। जो किसान हमारी सुने उन्हें बहुत कम दामपर ये चीजे बेची जा सकती है क्योकि अभी तो हमे उनकी लागत कीमत बहुत ही कम पडेगी।

यदि मैथ्यू वहाँ भी नही टिक पायेगा तो मै लाचार हो जाऊँगा। उसके लिए मैंने बहुत परेशानी उठाई है।

रमाके बारेमें मैं समझ गया। बच्चोका ठीक विकास हो रहा है, इससे मुझे सन्तोष है।

बा तो दिल्लीमे है। वह बहुत सख्त बीमारी भोग चुकी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५२३) से।

१. इस विषयपर एस० सी० दासगुप्तके लेख हरिजनमें ३०-११-१९३४ और १४-१२-१९३४ के अंकोंमें प्रकाशित हुए थे।

# ५१७. पत्र : लीलावती आसरको

२३ अगस्त, १९३५

चि० लीलावती,

यदि तू अभ्यासार्थ प्रश्नोके अपने हलके साथ ही प्रश्नोके नीचे खाली जगह छोड़ दिया करे तो मेरे सुधारोंको पढ़ने मे तुझे अडचन नही होगी।

प्रश्नो पर क्रम-सख्या डालनी चाहिए। 'आइ विल' भविष्य-कालका सूचक है। मध्यम और अन्य पुरुषमे 'वुड' इच्छाको सूचित करता है। तेरे पाठोमे जहाँ इन शब्दोका प्रयोग नजर आये वहाँ उक्त नियमको लागू करके देखना।

१ इसी वाक्यमे 'इफ' और 'विल' का प्रयोग किया जा सकता है। 'इफ' समुच्चय बोधक है और 'विल' यहाँ क्रियापद है।

२ "यू विल हैव रिसीव्ड माई लेटर।" "आई होप यू आर हैपी।"

३ "दो यू आर गुड, यट विल आई नाट हर्ट यू।" 'स्टिल' और 'यट' के अर्थमे नही के बराबर अन्तर है।

४. "ही मस्ट बी पनिश्ड" का अर्थ है — उसे सजा मिलनी ही चाहिए।

"ही शेल हैव बीन पनिश्ड" का अर्थ है — उसे सजा मिली ही होगी। 'मस्ट और शेल हैव' मे बहुत फर्क नही है। यह ठीक है कि मध्यम या अन्य पुरुषमे व्यवहृत 'शैल' 'मस्ट' का अर्थ देता है।

५ [1]

६. 'दो' और 'यट' या 'स्टिल' का प्रयोग एक ही वाक्यमे किया जाता है। 'यट' या 'स्टिल' 'दो' के पूरक है।

आशा है सभी उत्तर तेरी समझमे आ जायेंगे। यदि कोई समझमे न आये तो दुबारा पूछने में सकोच मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३७) से। सी० डब्ल्यू० ६६१२ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

१. साधन-सूत्रके अनुसार।

## ५१८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२३ अगस्त, १९३५

चि० नरहरि,

यद्यपि तुम्हारा १८ तारीखका पत्र मेरे सामने दो दिनसे पड़ा हुआ है किन्तु मैं उसे आज ही पढ पाया हूँ।

भाई वेलचन्दका रुख मुझे पसन्द है। कुछ थोडे-से कुएँ बनाये जाये और उनपर पण्ड्याके नामका पत्थर भले लगाया जाये। किन्तु मेरे विचारसे उनके नामकी शोभा तो तभी होगी जब वह किसी बहुत कठिनाईसे पूरा होते काम के साथ सम्बद्ध हो। यह काम कैसे किया जाये, यह वे हमपर छोड़ दे। जिस प्रकार तिलक स्वराज्य-कोषने अपने को और लोकमान्य को अमर बना दिया उसी प्रकार पण्ड्या ग्रामोद्धार-कोष अपने को और पण्ड्याको अमर बनाये। भाई वेलचन्द जो रकम अलग निकालना चाहते है उससे उक्त उद्देश्य कुछ तो जरूर पूरा होता है। फिलहाल इससे अधिक रकम तो हम खर्च भी नही कर सकते।

किन्तु यह तो मेरा और तुम्हारा विचार हुआ। सरदारसे मेरी बातचीत हुई थी। वे निश्चय नही कर सके। वे स्वय वेलचन्दको लिखनेवाले थे। लिखने के बाद निर्णय करके मुझे सूचित करेंगे। तबतक हमें प्रतीक्षा करनी होगी। लगता है, अब वहाँ दुग्धालयका काम अच्छी तरह चल रहा है। तुम दूधका क्या उपयोग करते हो? भगतवाला मामला महादेवने मुझे सुनाया। बहुत विचित्र मामला लगता है।

रतिलालके बारेमे भी सुना। लगता है, तुम्हारे पास भरपूर काम है।

सुरेन्द्र वहाँ क्यो पहुँचा है? मुझे इसकी कोई खबर ही नही मिली।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८८) से।

## ५१९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२३ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

'टर्म्स'[1] तो कल ही तैयार कर ली थी और भाई वैकुण्ठके साथ भेजी जा रही है। उनसे बातें भी कर ली है।

साथमें 'साँज' की कतरन लौटा रहा हूँ। इस तरहकी विरोधी हलचलें तो अभी और भी होंगी। कमेटी काम करने लग जाये तो छुटकारा मिले।

कुमारप्पाके हलके ज्वरसे सिविल सर्जन जरा चौंक उठा है। वह बम्बईमें जाँच करानेको कहता है। वे दो-एक दिनमें वहाँ पहुँच जायेंगे। फिर मैं उन्हें शिमला भेजनेकी सोच रहा हूँ। राजकुमारीका निमन्त्रण है। कुमारप्पाकी जाँच डॉ० जीवराजसे करवाना। तुम वहाँ हो इसलिए मैं किसी औरको नहीं लिख रहा हूँ। मैंने तो उसे आपके पास रहनेको कहा था। परन्तु शूरजी यहाँ है, वह उन्हें खींच रहा है। [वर्धाके सिविल सर्जन] साहनी उनके गले और फेफड़ोंकी जाँच करानेको कह रहे हैं।

वेलचन्द जो दान देना चाहते हैं उसके बारेमें यदि तुम किसी निर्णयपर पहुँच सके हो तो सूचित करना। उनका नरहरिके नामका पत्र साथमें है। मेरा तो अब भी यह खयाल है कि उनके दानसे उनकी इच्छानुसार कुछ कुएँ बनवाकर बाकी रकम ग्रामोद्धारमें ही खर्च की जाये। यदि तुम इस रकमको गुजरातमें ही खर्च करना चाहो तो वैसा कर सकते हो। फिर भी तुम अपने स्वतन्त्र विचार मुझे बताना।[2]

विट्ठलभाईवाले पैसोंके बारेमें भी यदि विचार कर लिया हो तो सूचित करना। मोतीलालके[3] नाम लिखा पत्र अच्छा है।

मोरारजी और चन्दूभाई २५ तारीखको आ रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८०-८१

१. प्लेग-निवारण कमेटीके लिए।
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. मोतीलाल सीतलवाड, प्रसिद्ध वकील।

## ५२०. टिप्पणियाँ

### हरिजन और नाटार

यह प्रश्न हमारे सामने अब भी वैसा ही है। उस अत्याचार-पीडित प्रदेशके एक कार्यकर्त्ताने मेरे पास एक लम्बी रिपोर्ट भेजी है। उसे देखने से मालूम होता है कि नाटारोकी मनोवृत्तिमे अधिक सुधार नही हुआ है। जो थोडा-सा सुधार हुआ है, उसका कारण यह नही है कि वे अपने किये अन्यायको महसूस करने लगे है या उनमे समझ आ गई है। उसका बडा कारण तो उनका यह भय है कि अगर उन्होने हरिजनोका कोई नुकसान किया तो कही उनपर फौजदारीका मुकदमा न चल जाये। और इधर हरिजनोमे हरिजन सेवक सघके कार्यकर्त्ताओने जो काम किया है वह भी एक कारण हो सकता है। हरिजनोके दिलमे नाटारोके अत्याचारोका जो डर समाया हुआ था उसे दूर करने के प्रयत्नमे हरिजन-सेवक कुछ सफल तो हुए है। स्थायी सुधार तो तभी सम्भव है जब, जैसाकि रिपोर्टमे सूचित किया गया है, वहाँ हरिजनो और नाटारोके बीच खूब लगकर काम हो। हरिजनोकी अपेक्षा नाटारोको समझानेकी शायद ज्यादा जरूरत है। उनकी अकथनीय असहिष्णुताकी वजह उनकी इतनी ज्यादा दुष्टता नही है, उसका ज्यादा बडा कारण निस्सन्देह उनका अक्षम्य अज्ञान ही है। इसलिए कितनी ही भारी-भारी कठिनाइयाँ आडे क्यो न आये, सघ-वालोको उनसे जरा भी विचलित हुए बिना निर्भयताके साथ अपनी सारी सेवा-शक्ति वहाँ लगा देनी चाहिए। अगर हरिजन-सेवकोकी श्रद्धा अन्ततक अटल बनी रही तो यह हो नही सकता कि उन्हे विजय न मिले।

### बाध्य नहीं

भादरण ताल्लुका (बडौदा-राज्य) के पीपलाव ग्रामनिवासी कुछ बुनकरोने मुझे लिखा है कि.

> दो सालका अर्सा हुआ कि हम लोगोंने मुर्दार मांस न खानका निश्चय किया और इसीसे ढोरोंकी लाशें उठाने और उनकी खाल उधेड़नेका काम भी छोड़ दिया, मगर इस गाँवके चमार और भंगी यह सब काम बराबर करते हैं। गाँवके पाटीदारोंको यह सहन नहीं हुआ। उनकी दृष्टिमें हमने यह भारी गुस्ताखीका काम किया। इसलिए उन्होंने हमारे सख्त बहिष्कारकी घोषणा कर दी, तमाम सामाजिक सम्बन्ध तोड़ दिये। हमारे कुएँका पानी खराब कर डाला और हमारे छप्परोंपर पत्थर फेंकने लगे। अब आप बतायें, ऐसे में हम क्या करें?

अस्पृश्यता-निवारणकी अपनी प्रगतिशील नीतिके लिए बडौदा-राज्य काफी प्रसिद्ध है। मुझे भरोसा है कि तथाकथित सवर्ण हिन्दुओके द्वारा जहाँ भी गरीब असहाय

हरिजन सताये जाये, वहाँ राज्यके अधिकारी आवश्यक हो तो अतिरिक्त प्रयत्न करके भी उनकी मदद करेगें। प्रगतिशील भादरण के सुधारकोका भी यह फर्ज है कि वे इन गरीब बुनकरोको हर तरहसे मदद दे, और पीपलावके पाटीदारोको जाकर समझाये कि अपने बुनकर भाइयोके साथ उन्हे ऐसा अत्याचारपूर्ण बरताव नही करना चाहिए। मुर्दार मांस छोड़ देनेके लिए बुनकर बधाईके पात्र है। पर इसके लिए उन्हे यह जरूरी नही कि वे ढोरोकी लाशे उठाना और उनकी खाल उतारना छोड़ दें। यह तो एक फायदेका और प्रतिष्ठित पेशा है। साथ ही, यह एक आवश्यक समाजसेवा भी है। लेकिन इस कामके लिए वे मजबूर नही किये जा सकते। अगर एक प्रतिष्ठित धन्धा आज अपमानजनक समझा जाता है, तो उसके ऐसे समझे जानेका उत्तरदायित्व सवर्ण हिन्दुओपर ही है। इसमे अचरज ही क्या, अगर पीपलावके बुनकर अपनी अपमानजनक अवस्थाका भान होनेपर उससे छुटकारा पानेके लिए एक ऐसे धन्धेको छोड़ बैठे है, जिसकी बदौलत वे आज तिरस्कृत या पतित समझे जाते है। पीपलाव गाँवके लिए तो यह अच्छा ही है कि वहाँके चमारो और भंगियोमें अभी वर्ग-चेतना का उदय नही हुआ है, और वे अब भी लाशोको उठाने और चमड़ा उधेड़नेका वह धन्धा कर रहे है, जिसे समाजने गलतीसें एक नीच काम मान रखा है। अगर ये उच्च कही जानेवाली जातियाँ अपनेसे किसी भी अन्य जातिके लोगोको नीच समझने की पापपूर्ण प्रथाको समाप्त करनेका अपना स्पष्ट कर्त्तव्य पूरा नही करती, तो निश्चय ही हमारा सारा सामाजिक ढाँचा टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। किन्तु उस अवस्थाके आनेसे पहले अधिकारियो और सुधारकोका यह फर्ज है कि पीपलाव गाँवके गरीब बुनकरोके साथ जिस जालिमाना बरतावके होनेकी खबर आई है, उससे असहाय हरिजनोकी रक्षा करनेमें उन्हें अपनी शक्ति-भर कुछ उठा नही रखना चाहिए।

## झूठे विज्ञापन

अभी कुछ दिन हुए, मैंने इन स्तम्भोमें पाठकोका ध्यान[1] अश्लील विज्ञापनोकी ओर खीचा था। अब कलकत्तेसे एक सज्जनने प्रसिद्ध अखबारोसे कुछ ऐसे विज्ञापन काट-काटकर मुझे भेजे है, जो निरे झूठसे भरे हुए है। मालूम होता है कि आजकल बंगाल और शायद अन्य प्रान्तोमे भी हिन्दुस्तानी चाय पीनेके पक्षमें बड़ा प्रचण्ड प्रचार हो रहा है। चायके एक विज्ञापनका नमूना देखिए। यह बंगलाका अनुवाद है।

'चाय पीओ और हमेशा जवान दिखो'

जलपाईगुड़ी
१५ मई

उतरती अवस्थामें भी जवानी और ताकत कायम रखनेमें चाय मदद देती है। यह बात, लगता है, श्रीयुत नेपालचन्द्र भट्टाचार्यके अनुभवसे प्रमाणित हुई है। भट्टाचार्यजी की अवस्था आज अड़तालीस वर्षकी है, पर देखनेसे उनकी

१. देखिए "टिप्पणियाँ", २७-७-१९३५।

उम्र चौंतीस सालसे अधिक नहीं जँचती। उनका कहना है कि उनकी इस तरुणाईका कारण है चाय पीना। चौदह सालकी उम्रसे उन्होंने चाय पीना शुरू किया था। तबसे वे बराबर बिना नागा चाय पी रहे हैं। और इधर दो सालसे वे करीब ३० प्याले चाय नित्य नियमित रूपसे पीते हैं। इस सम्बन्धमें वे अपनी एक खास विशेषता रखते हैं। चाय तैयार होते ही वे तुरन्त नहीं पीते, उसे कुछ देरतक रखी रहने देते हैं; और सारी ही चाय नहीं पी जाते, थोड़ी-सी चायदानीमें छोड़ देते हैं। एक-एक बार में छह प्यालेसे लेकर दस-दस प्यालेतक चाय भट्टाचार्य पी जाते हैं।

यह तो ऐसे-ऐसे विज्ञापनोकी एक बानगी है। इसे पढते हुए ऐसा मालूम होता है, गोया यह अखबारके अपने सम्वाददाताकी रिपोर्ट हो। चाय पीनेके पक्षमें यह विज्ञापन एक ऐसा दावा हमारे सामने रखता है, जिसे मनुष्यके अनुभवका कही भी समर्थन नही मिलता। देखने मे तो इससे उलटा ही आता है। चायके पक्षमे वकालत करनेवाले भी बहुत ही थोडी चाय पीनेकी सलाह देते हैं। हिन्दुस्तानके लोग अगर चाय न पीयें, तो इससे उनकी कोई हानि तो होगी ही नही। मगर दुर्भाग्यसे यह चाय और अहानिकर कही जानेवाली ऐसी ही दूसरी पीनेकी चीजें, अब हम लोगोमे जड जमा चुकी है। मेरा कहना यह है कि हमे विज्ञापन देते समय सचाईका उचित ध्यान जरूर रखना चाहिए। लोगोकी, खासकर हिन्दुस्तानियोकी यह एक आदत बन गई है कि किताब हो या अखबार, उसमे छपे हुए एक-एक शब्दको वे 'ब्रह्मवाक्य' मान लेते हैं। अतः विज्ञापन बनाने में अधिकसे-अधिक सावधानी रखने की जरूरत है। ऐसी-ऐसी झूठी बाते, जिनकी तरफ उक्त पत्र-लेखकने मेरा ध्यान आकर्षित किया है, बड़ी ही खतरनाक होती है। नित्य तीस-तीस प्याले चाय पी डालना — यह क्या है? इससे शरीर और दिमागमे भला ताजगी आयेगी? इससे तो पाचन-शक्ति कमजोर पड़ जायेगी और शरीर क्षीण हो जायेगा। हलकी-सी चायके दो प्याले पी लेनेमे शायद नुकसान नही होता, और मनुष्यका शरीर इतनी ही चाय पचा सकता है। फिर हिन्दुस्तानमे चायकी पत्तियाँ असलमें उबाली जाती है और इस तरह उनका सारा 'टैनिन' पानीमें खिच आता है। कोई भी डॉक्टर यह प्रमाणित कर देगा कि मेदेके लिए यह 'टैनिन' अच्छी चीज नही है। चाय पीना तो बस चीनी लोग जानते हैं। पत्तियोको वे छन्नीमे रखकर उनपर खौलता हुआ पानी डालते है। पत्तियोको वे चायदानीमे कभी नही डालते। पानीमे पत्तियोका सिर्फ रग उतर आता है। उनकी वह चाय हलके पीले रंगकी दिखती है, ऐसी लाल रगकी नही, जैसीकि हिन्दुस्तानमे साधारण रीतिसे बनाई जाती है। तेज चाय तो जहर है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २४-८-१९३५

# ५२१. ग्रामसेवकोंके प्रश्नोंके उत्तर[1]

१-५. जहाँतक ग्रामोद्योगोंके कार्यक्रमका सम्बन्ध है, देशी राज्योंके और ब्रिटिश भारतके गाँवोमे कुछ भी अन्तर नही है। ग्रामसेवकको किसी भी हालतमें अधिकारियो से संघर्षका अवसर नही आने देना चाहिए।

६-८. ग्रामसेवकको मुख्य बात यह याद रखनी है कि वह ग्रामवासियोकी सेवा करने के लिए ही गाँवमे गया है; और यह न केवल उसका अधिकार बल्कि उसका धर्म है कि वह वहाँ ऐसा उपयुक्त आहार तथा जरूरतकी ऐसी अन्य चीजे अवश्य लेता रहे जिनसे वह अपने शरीरमें सेवा-कार्य करनेके लिए आवश्यक स्वास्थ्य और बल बनाये रखे। यह सही है कि ऐसा करते हुए ग्रामसेवकको अपनी रहनीपर ग्रामवासियोंकी अपेक्षा कुछ अधिक खर्च करना पड़ेगा, पर मेरा ऐसा खयाल है कि ग्रामवासी ग्रामसेवककी जरूरी चीजोको ईर्ष्याकी दृष्टिसे नही देखते। ग्रामसेवकका अन्तःकरण ही उसके आचरणकी कसौटी है। वह संयमसे रहे, स्वादके लिए कोई चीज न खाये, विलासितामें न पड़े, और जबतक जागता रहे तबतक सेवा-कार्यमे ही लगा रहे। फिर भी यह सम्भव है कि उसके रहन-सहनपर कुछ लोग टीका-टिप्पणी करे। पर उस आलोचना या निंदाकी उसे परवाह नही करनी चाहिए। मैंने जिस आहारकी सलाह दी है वह सब गाँवोमे मिल सकता है। दूध आम तौरपर गाँवमें मिल जाता है, और बेर, करौंदा, महुआ वगैरा अनेक फल भी गाँवोंमें आसानीसे मिल जाते है। इन फलोको इसीलिए हम कोई महत्त्व नही देते क्यों कि वे आसानीसे मिल जाते है। गाँवोमे अनेक तरहकी पत्ती-भाजियाँ काफी प्रचुरतासे मिलती है, पर हम

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। किसी काठियावाड़ी राज्यके एक गाँवमें ग्राम-सेवाकी दृष्टिसे बसे हुए कुछ नवयुवकों द्वारा पूछे गये ये प्रश्न इस प्रकार थे: (१) स्वराज्यके कामके लिए किसी देशी राज्यका गाँव पसन्द करना चाहिए या ब्रिटिश भारतका? (२) ग्रामोद्योगोंके कार्यक्रमकी दृष्टिसे इन दो मेंसे कौन-सा गाँव पसन्द करना चाहिए? (३) ब्रिटिश भारतके गाँवोंमें ग्रामोद्धारका काम तुलनात्मक दृष्टिसे क्या अधिक जरूरी नहीं है? (४) यदि हाँ, तो तमाम ग्रामसेवक ब्रिटिश भारतके गाँवोंमें जाकर क्यों न बस जाये? (५) क्या इस विषयमें कांग्रेस कोई निश्चित आदेश नहीं निकालेगी? (६) ग्रामसेवक अपनी रहनीका क्या स्तर रखें? गाँवके लोग जिस तरह रहते हैं, उस तरह तो ग्रामसेवक नहीं रह सकते। आप ग्रामसेवकोंको दूध और फल देनेसे मना नहीं करते। किन्तु ग्रामवासियोंको तो ये चीजें कभी नसीब होती नहीं। तब ग्रामसेवकोंका दिल इन चीजोंको किस तरह ग्रहण कर सकता है? (७) यह एक निर्विवाद बात है कि हमारे देशमें करोड़ों मनुष्य भूखों मर रहे हैं। हम भी अगर भूखें रहें तो उनकी सेवा हम किस तरह कर सकते हैं? भूखे रहकर तो सेवा होती नही। किन्तु कुटुम्बका नियम भिन्न है। कुटुम्बमें एक भाई दूसरे भाईको भूखों नहीं मरने देगा, बल्कि अपने हिस्सेकी रोटीमें से उसे टुकड़ा दे देगा। (८) जीवनकी कमसे-कम आवश्यकताएँ क्या होनी चाहिए?

केवल अपने अज्ञान या आलस्यके कारण उन्हें उपयोगमे नही लाते। मै खुद आजकल ऐसी अनेक प्रकारकी हरी पत्तियाँ खा रहा हूँ जिन्हें मैंने पहले कभी जीभपर नही रखा था। पर अब मुझे ऐसा मालूम होता है कि मुझे ये सब पत्तियाँ पहलेसे ही खानी चाहिए थी। गाँवमें गाय रखना पुसा सकता है और अपना खर्च तो वह खुद निकाल सकती है। मैंने यह प्रयोग किया नही है, किन्तु मुझे लगता है कि यह चीज सम्भव होनी चाहिए। मेरा यह भी खयाल है कि ग्रामसेवकके जैसा आहार ग्रामवासियोको भी मिल सकता है और उसे वे ले सकते हैं, और इस तरह ग्राम-सेवकके जैसा रहन-सहन रखना ग्रामवासियोंके लिए भी कोई असम्भव बात नही है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २४-८-१९३५

## ५२२. वस्त्र-स्वावलम्बन

बिहारके मधुपुर खादी-केन्द्रसे यह खबर आई है कि १० गाँवोमे १९ व्यक्तियोने अपने काते हुए सूतकी १६६॥ गज खादी अपने उपयोगके लिए बुनवायी और २२ गाँवोंमे ८२ व्यक्तियोने अपना काता हुआ सूत देकर उसके बदलेमें ७०९ गज खादी उक्त केन्द्रसे ली। समाचार सुन्दर है।

मलाबारके पय्यानूर और नीलेश्वर गाँवसे यह सुन्दर समाचार आया है कि वहाँ कपासका बीज लोगोको दिया गया और उन्होने स्वयं सूत कातने का सकल्प करके वह बीज बोया। हमारे देशमे खुद सूत कातने के लिए कपास बोनेका चलन जब गाँव-गाँवमें चल जायेगा, तब खादी लोगोको सिर्फ उनकी फुरसतके वक्तमें की हुई मेहनतके मोल पड़ जायेगी। अपने घरोमे कपास बोनेवालो को खादीकी तमाम क्रियाएँ सीखनी होगी। असममे अनेक घरोमे रेशमका काम इसी तरह होता है। रेशमका प्रचार घर-घर नही हो सकता। रूईको हम व्यापक रूप दे सकते है, और एक जमानेमे तो वह सार्वत्रिक थी भी। ऐसा करने का मतलब यह है कि राष्ट्रकी आयमें वृद्धि भी खासी अच्छी हो जायेगी और जो करोड़ो मनुष्य इस देशमे कई महीने बेकार पड़े रहते हैं उन्हें काम देनेके लिए एक सर्वांग सुन्दर योजना भी बन जायेगी।

कहने मे तो यह चीज आसान है, पर इसे व्यावहारिक रूप देना बडा मुश्किल है। मगर यह असम्भव तो किसी भी तरह नही। इसमे कोई भारी पूँजी लगाने की जरूरत नही। जो क्रियाएँ सीखनी है, वे अत्यन्त सरल है। और जिन औजारोकी जरूरत पड़ती है वे सब गाँवमें मौजूद है, या झट बनाये जा सकते हैं। बड़ीसे-बड़ी बाधा तो यह है कि लोग नई लीकपर चलने या बुद्धि लगाने के लिए तैयार नही। कई पीढियोतक मजबूरन बेकार पड़े रहने और उस बेकारीके कारण भूखो मरते रहने से उनमें आज न तो आशा रही है, न शक्ति। उनकी जीनेकी इच्छातक मर गई है। लोगोमे जीवित रहने की भी इच्छा न रहे, इस निराशासे बढकर विपत्ति किसी राष्ट्रके

लिए और हो ही क्या सकती है? पर जिन लोगोमे यह निराशा नही आई है उन्हें अपने ध्येयपर अखण्ड श्रद्धा रखकर पहलेसे भी अधिक उत्साहके साथ काम करना होगा। निश्चय ही उनकी श्रद्धा बड़ेसे-बडे पर्वतोको भी लाँघ जायेगी। इस सुजला-सुफला भूमिमे जहाँ बिना भारी श्रम और सूझके काफी अन्न और वस्त्र पैदा किया जा सकता है, हताश होनेकी कोई जरूरत नही। .

किन्तु इस आशाको हमें खादी-शास्त्रके निरन्तर बढनेवाले ज्ञानके आधारपर प्रगतिशील कार्यमे परिणत करना है। चरखा संघकी ओरसे समय-समयपर जो सूचनाएँ निकलती है, उनका खादी-सेवकोको अनुसरण करना चाहिए, और उन्हें जिन ग्रामवासियोकी सेवा करनी है, उनकी तमाम आपत्तियोको भी पहलेसे ही जान लेना चाहिए। इसके लिए उन्हे ग्रामवासियोके प्रगाढ सम्पर्कमे आना चाहिए। इस सम्पर्कके साथ-साथ उनके हृदयमें ग्रामवासियोके प्रति सहानुभूति और विश्वासकी वृत्ति होनी चाहिए। ग्रामवासियोके सामने उन्हे आश्रयदाताके रूपमे नही जाना चाहिए। उन्हे तो वहाँ उन स्वयसेवकोके रूपमें जाना चाहिए, जो अबतक अपने कर्त्तव्यके सम्बन्धमें असावधान रहे है। इतनी प्रारम्भिक शर्तोका अगर पालन किया जाये, तो बाकीका सारा काम आपसे-आप उस तरह चल निकलेगा, जिस तरह कि नित्य रातके बाद दिन आ जाता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २४-८-१९३५

## ५२३. पत्र : रावजीभाई एन० पटेलको

२४ अगस्त, १९३५

चि० रावजीभाई,

डाहीबहनकी दवा हरिभाई कर सकते है, उनसे दवा कराने मे क्या तुम्हें सन्तोष नही होगा? यदि तुम चचलबहनको समझा सको तो अवश्य समझाना। जब एक ही जैसे दो कर्त्तव्य आ पड़ते है तो बहुत मुश्किल पैदा हो जाती है। तुम वहाँ की स्थितिसे अपेक्षाकृत अधिक परिचित हो तो तुम जैसा ठीक समझो, उस तरह उसका पथ-प्रदर्शन करना।

यदि तुम वहाँ गायका अच्छा और शुद्ध घी तैयार करा सको तो यह काम अवश्य करना। किन्तु घी-उत्पादकको क्या मिलता है, यह पता लगा लेनेके बाद ही उसमे हाथ डालना। हमें उत्पादकोके जीवनमें प्रवेश करना है। अत. वे क्या खाते-पीते है, कहाँ रहते है, कहाँ सोते-बैठते है, कैसा आचरण करते है और क्या करते है आदि बातोकी हमे जानकारी होनी चाहिए। अत· तुमने नमूनेके तौरपर मुझे जो घी भेजा है उसका इतिहास तुम्हें जानना चाहिए। तुम्हारे सभी भण्डारोमे हर वस्तुका इतिहास दिया जाना चहिए, उदाहरणके लिए — "लिंबासीके भरवाड़ मेघराज द्वारा तैयार किया गया, जिसने काममें . . घटे लगाये; . . . दूधकी कीमत . . .;

प्रति घंटा मजदूरी . . .; आढ़तियाका कमीशन . . . ।" और यह सूचना हर ग्राहकको दी जानी चाहिए। मुझसे यह मत कहना कि इसमें बहुत-सा समय चला जायेगा। यदि काम एक बार ढंगपर आ जायेगा तो फिर उतना समय नहीं लगेगा। संघ चाहे जो दर तय करे किन्तु तुम तो दो पैसे प्रति घंटेसे कम मजदूरी मत देना। जिन वस्तुओं का प्रति घंटा औसत उत्पादन निकाला जा सकता है उनमें कामकी मजदूरी तुम्हें घंटेके हिसाबसे तय करनी चाहिए। यह इस प्रकार किया जा सकता है। जैसे यदि एक सामान्य कातनेवाला १५ अंकका ४०० [गज][1] सूत एक घंटेमें कातता हो तो हम उसे १५ अंकके ४०० [गज][2] की दो पैसे मजदूरी दें। आजकल 'हरिजन' में बहुत-सी नयी चीजोंकी चर्चा की जा रही है। मैं चाहता हूँ कि वे सब लेख तुम पढ़ते रहो। दिवालियेपनकी प्रथा चचलके पिता-जैसे लोगोंकी सहायताके लिए आरम्भ हुई थी। बादमें धूर्तोंने उसका दुरुपयोग किया, इससे वह प्रथा बदनाम हो गई। किन्तु मैं तो यह सलाह अवश्य दूँगा कि उन्हें उक्त प्रथाका सहारा लेकर चिन्तासे मुक्ति पा लेनी चाहिए। उसके बाद भले ही वे बाकी बचे कर्जको पटा देनेकी आशा मनमें सँजोये रहें। फिलहाल तो नादान लेनदारोंकी नादानीके कारण वे निश्चिन्ततापूर्वक कोई काम भी नहीं कर सकते।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००६)से।

## ५२४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

वर्धा,
२४ अगस्त, १९३५

बा,

तुझे तो वहाँ भगवान्‌ने ही भेजा था न? फिर वहाँ मनु भी है। इसलिए मैं निश्चिन्त बैठा हूँ। तू सिंहनी है और बीमारियोंसे डरनेवाली नहीं है।[3] अतः तुझसे जो बन सके सो दृढ़तापूर्वक करती रहना। रामकी शरण लेना। मनुसे रोज पत्र लिखवाती रहना। अन्सारी तो वहाँ होंगे ही। इतना काफी है। उनसे अच्छा और कोई डॉक्टर नहीं है। बहुत करके ब्रजकृष्ण भी वहीं है। और फिर प्यारेलालके लोग तो वहाँ हैं ही।

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १५४९)से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

१ और २. मूल में 'तार' ही था, जिसे बाद में गांधीजी ने सुधार दिया था; देखिए "पत्र: रावजीभाई एन० पटेलको", २७-९-१९३५।
३. देवदासको टाइफाइड हो गया था।

## ५२५. पत्र : मनु गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि० मनुडी,

मुझे रोज देवदासके समाचार देती रहना। तेरा पोस्टकार्ड मिल गया है। आशा है, तू अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५५०) से, सौजन्य : मनुबहन एस० मशरूवाला

## ५२६. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। शकरलालने भी मुझे तार दिया था। जो होनेवाला होता है सो तो होता ही है। उसमे किसको दोषी माने? मेरी नजरमें उमियाके[1] लिए एक ही जगह है, वह है तुम्हारे पास अमरेलीमे। अमरेलीमें जिस डॉक्टरकी मदद मिले हमे उसीमे संतोष मानना चाहिए। सभी सामान्य सुविधाएँ वहाँ मिल जायेंगी। बम्बई या किसी अन्य जगह जाना मुझे निरर्थक लगता है। यदि वहाँका अस्पताल अच्छा हो और उसे आसानीसे वहाँ रखा जा सके तो वह वही रहे। मैं समझता हूँ कि उसकी बीमारीमे प्राकृतिक चिकित्सा पर्याप्त होगी, बशर्ते कि उसमें इतनी श्रद्धा और इतना धीरज हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

१. जयसुखलाल गांधीकी कन्या उमिया अग्रवाल।

## ५२७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२४ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई,

एन्ड्रयूज बीमार पड़ गये, इसलिए रुक गये है, . . .[1]

जयकरका जो उत्तर आया, वह साथमे है। अभी तो इसे सँभालकर रख लेना। मैंने पूछा है कि उनकी किससे बाते हुई थी? [तिलक स्वराज फण्डके] प्रबन्धमे क्या दोष देखा?[2] उनका जवाब मिलनेपर तुम्हे भेजूंगा। उनकी मरजी हो वैसा करे।

देवदासका तार साथमे है। कहना होगा, उसने हमें स्तब्ध कर दिया है।[3] मैंने तार किया है कि पूर्ण आराम ले और उपवास करे तो कोई खतरा नही है। राजाजी तो जायेंगे ही। बा और मनु भी वही है। अन्सारी-जैसे डाक्टर है। फिर क्या चाहिए? मै बिलकुल निश्चिन्त हूँ।

कुमारप्पा आज वहाँ पहुँच रहे है। उनके लिए जो करना जरूरी हो वह करना। कल मैंने लिखा है।[4] डॉक्टरी जाँच हो जानेपर वापस भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८२

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अंश छोड़ दिया गया है।
२. देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", १६-८-१९३५।
३. देखिए "पत्र : कस्तूरबा गांधीको", २४-८-१९३५, पा० टि० ३; देखिए अगला शीर्षक भी।
४. देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", २३-८-१९३५।

## ५२८. पत्र : देवदास गांधीको

२४ अगस्त, १९३५

चि० देवदास,

तेरे तारसे मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ। जब मै वहाँ[1] था तभी मैंने तेरा अनियमित जीवन तो देखा ही था। वह मुझे जरा भी नही रुचा। अभी तो तू ऑफिसमे अकेला है। फिर, तुझे लक्ष्मीकी[2] देखभाल भी करनी पडती है और खानेकी अनियमितता बनी रहती है। बा और मनु वहाँ है और फिर ताराकी[3] बीमारी। इतना सब बोझ तेरी शक्तिसे बाहर लगता है। अब भी अगर मेरे तारके अनुसार अमल करने लगा हो तो बहुत है।[4]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य : प्यारेलाल

## ५२९. पत्र : द्रौपदी शर्माको

२४ अगस्त, १९३५

चि० द्रौपदि,

तुमारा खत मिला। ऐसे ही लिखा करो। साथमे शर्माका खत है। उसे पढकर वापिस करो। लड़कोमें से जो लिख सकें उसको लिखने का कहो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८९ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. दिल्लीमें।

२. देवदास गांधीकी पत्नी।

३. देवदास गांधीकी पुत्री।

४. साधन-सूत्रमें पत्र अपूर्ण है।

## ५३०. पत्र : वियोगी हरिको

२४ अगस्त, १९३५

भाई वियोगी हरि,

'हिं० स्व०'[1] में किसने लिखा है? मैंने ऐसी कुछ बात किसीके सामने कही थी नही। उसी दिन मुझे स्मरण है कि महादेवने कहा था कि 'ह० [रिजन] बन्धु' और 'ह०[रिजन] से०[वक]' मे गलतीया आ जाती है इसी [लिए] कैसा अच्छा होना यदि अनुवाद यहासे भेजा जाता। महादेवने गूजरातीके अनुवाद आरम भी कर दिया। गलतीया हो जाती है इसमें दोष किसीका नहि निकाल सकते है। अनुवाद बहूत कठिन कार्य है। दो भाषापर जब एक-सा काबू रहता है तब ही अच्छा अनुवाद हो सकता है। मुझे खेदके साथ कबूल करना पडेगा कि मै तीनमे से एक भी अखबार नही पढ़ पाता हूं। 'हरिजन' की सब वस्तु मेरी दृष्टिसे गुजराती है इसलिये उसमे क्या रहता है मैं जानता रहता हूं। लेकिन दूसरे दो में क्या आता है वह नहिं जानता। महादेव कुछ पढ़ लेता है सही लेकिन हम सब दयाके पात्र है। कामका बोज इतना रहता है कि जितना हो सकता है इससे ईश्वरका अनुग्रह मानकर सन्तुष्ट रहते है।

सासीके[2] बारेमें मलकानीसे बात करने की आशा रखता हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७३) से।

## ५३१. पत्र : नारणदास गांधीको

वर्धा
२५ अगस्त, १९३५

चि० नारणदास,

हरिलालके बारेमे सन्तोषजनक समाचार कैसे मिल सकता है?

मैथ्यूका जो हो जाये सो ठीक। जबतक वह मेरी शर्तोका पालन नही करता तबतक उसे अधिक नही दिया जा सकता।

वजुभाई आदिको लिखे पत्रकी नकल इसके साथ है। आज ही मै यह लिख पाया हूँ।

१. हिन्दू स्वराज; मूलमें ये प्रारम्भिक अक्षर ही दिये गये हैं।

२. उत्तर भारतकी एक जन-जाति।

साँपको गलेमें डालने को मै उत्सुक नही था। मै समझता हूँ कि यह साँप जहरीला नही था। जमनालालजी इस आदमीको अच्छी तरह जानते थे। फिर भी तुम्हारी चेतावनी ठीक है। मुझे इस प्रकार ऐसे प्रयोगोमें नही पड़ना चाहिए।[1]

अम्तुस्सलाम यही है। वह काममें बहुत व्यस्त रहती है इसलिए नही लिखती। मैं अब उससे लिखने को कहूँगा।

शर्माको रवाना कर दिया है। वह प्राकृतिक चिकित्साका ज्ञान प्राप्त करने गया है। उसकी सादगी, सत्यवादिता और उत्साहकी छाप मेरे मनपर पडी है। देखूँ, इस प्रयोगका क्या परिणाम निकलता है।

पिताजी की तबीयतके बारेमें मैं क्या कहूँ? वे दोनो अभी [जीवनकी डोरको] खीचते जा रहे है, यही आनन्द और आश्चर्यकी बात है। उन्हे मेरे दण्डवत् प्रणाम तो तुम हर पत्रमे मान ही लिया करो।

नवीन यहाँ पहुँच गया है। उसे अंग्रेजी और गणित सिखाये जा रहे है। मै उससे बढ़ई आदिका काम भी लेनेवाला हूँ। तुम्हारे पास जो छोटा-सा कारखाना है क्या तुम उसका उपयोग करते हो? यदि न करते हो तो मैं उसे यहाँ ले लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७१ से भी, सौजन्य: नारणदास गांधी

## ५३२. पत्र: अनसूयाबहन साराभाईको

२५ अगस्त, १९३५

चि० अनसूयाबहन,

तुम्हारी वार्षिक प्रसादी मिली है। स्वास्थ्य ठीक रखना। काम बहुत है, हम थोड़े हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (जी० एन० ११५६१) से।

१. देखिए "पत्र: श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको", १२-८-१९३५ भी।

# ५३३. वस्तु-विनिमय प्रणालीके विषयपर निबन्ध-प्रतियोगिता

वर्धा
२६ अगस्त, १९३५

श्री उप्पुलर वेंकटकृष्णय्या बेजवाडाके निकट गुनडालामे १९२७ मे संस्थापित खद्दर संस्थानम्के न्यासी है। उनको वस्तु-विनिमयकी प्रणालीपर बड़ा विश्वास है और वे अपनी सस्थाके आतरिक तथा बाहरी लेन-देनमे, विशेषकर खाद्य तथा वस्त्रोंके उत्पादन एव वितरणके मामलेमे, इसी प्रणालीको कुछ हदतक अमलमे लाते रहे है।

उनका विश्वास है कि वर्तमान वार्षिक मन्दीका एकमात्र इलाज यही है और उनका खयाल है कि यह प्रणाली वर्तमान मौद्रिक प्रणालीके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक बुराइयोको दूर कर सकती है। उनका यह भी विश्वास है कि भारतमे कृषिके विकास, खादी और अन्य हस्त-शिल्पो तथा ग्रामोद्योगोके पुनरुद्धारके लिए और अहिंसाके सिद्धांतके प्रचार तथा व्यवहारके लिए वस्तु-विनिमय प्रणालीको अपनाना अत्यावश्यक है। उनका मत है कि यह प्रणाली अहिंसाके सिद्धान्तमे ही निहित है। यह जानने की उनकी उत्कट अभिलाषा है कि इस प्रणालीके वैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषणकी कसौटीपर उनके विचार कहाँतक खरे सिद्ध होते है। इसलिए उन्होने इस विषयपर लिखे जानेवाले सर्वोत्तम निवन्धपर एक पुरस्कार देनेका आयोजन किया है और अपनी इस इच्छाकी घोषणा कराने के लिए उन्होने मुझे माध्यम बनाना पसद किया है। मैंने भी वस्तु-विनिमय प्रणालीपर निबन्ध आमन्त्रित करने के लिए माध्यम बनने की सहर्ष सहमति दे दी है। पुरस्कार जीतनेवाले को उसकी पसन्दके मुताविक पाँच सौ रुपये नकद या संस्थानम्में ही बुन कर तैयार की गई पाँच सौ रुपयेके मूल्यकी असली टिकाऊ खादी दी जायेगी। नकद राशि मेरे पास जमा कर दी गई है।

निवन्धमे (जो अग्रेजीमे होना चाहिए) वस्तु-विनिमय प्रणालीका आरम्भिक इतिहास, इसके ह्रासके कारण और इसके पुनरुद्धारकी वर्तमान सम्भावनाओपर प्रकाश डालना चाहिए। उसमे यह भी बतलाया जाना चाहिए कि पिछले कालमे इसका क्या काम रहा है और यह विश्वके भावी आर्थिक जीवनमे कौन-सी भूमिका निभा सकती है, विशेष तौरपर यह दर्शाते हुए कि भारतीय ग्राम-जीवनके कुछ या सभी कार्यक्षेत्रोमे इसे कैसे और कहाँतक अपनाया जा सकता है। निबन्धमें इस विषयकी चर्चा होनी चाहिए कि इस प्रणालीके सफल परिचालन तथा विकासके लिए अनुकूल परिस्थितियाँ क्या होगी और उसके लिए किस हदतक सरकारकी सहायता दरकार है और यह भी बतलाया जाना चाहिए कि यदि इस प्रणालीको अपनाया जाये तो

विनिमय किस प्रकारका हो और उसका तरीका क्या हो। निबन्धमें इस बातकी भी चर्चा की जानी चाहिए कि भारतके आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके विकास पर वस्तु-विनिमय प्रणालीके क्या-क्या प्रभाव पड़ेंगे।

प्रोफेसर के० टी० शाह, श्री वैकुण्ठ एल० मेहता और प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पाने परीक्षक बननेकी सहमति देनेकी कृपा की है। प्रोफेसर कुमारप्पा इसके मन्त्रीका काम भी सँभालेंगे। सभी निबन्ध उनके नाम मगनवाड़ी, वर्धाके पतेपर भेजे जाने चाहिए और वे ३१ अगस्त, १९३६ की दोपहरतक उनको मिल जाने चाहिए। यदि कोई भी निबन्ध परीक्षको द्वारा निर्धारित मानदण्डका न हुआ, तो कोई पुरस्कार नहीं दिया जायेगा। परीक्षाके परिणामकी घोषणा ३१ दिसम्बर, १९३६ तक कर दी जायेगी। पुरस्कृत निबन्धका प्रतिलिपि-अधिकार खद्दर सस्थानम्को रहेगा। मुझे आशा है कि पुरस्कारकी राशिके नहीं, बल्कि विषयके महत्त्वके कारण ही इस पुरस्कारको जीतने के लिए एक काफी बड़ी संख्यामें प्रतियोगी आगे आयेंगे।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

## ५३४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

२६ अगस्त, १९३५

चि० अम्बुजम्,[1]

प्रभावती लगभग तीन सप्ताह पूर्व लौट आई थी। वह बिलकुल ठीक है। बा अभी दिल्लीमें ही है और अब देवदासकी परिचर्या कर रही है। देवदासकी हालत काफी खतरनाक है। बीमारीका अन्त पक्षाघातमें भी हो सकता है। राजगोपालाचारी वहाँ जा रहे हैं।

फिलहाल मैं कभी-कभी ही फल लेता हूँ। अनेकानेक लोग मौजूद हैं जिनकी जरूरत मेरे मुकाबले कहीं ज्यादा है।[2] मैं जब-तब सेब या सतरे ले लेता हूँ। मेरे बारेमें चिन्तित मत होना। शरीरके लिए जरूरी होनेपर मैं जरूरतके मुताबिक पर्याप्त फल लूँगा।

तुमने 'रामायण' के सम्बन्धमें लिखी जिस किताबका हवाला दिया है, वह मैंने नहीं पढ़ी है।

१. साधन-सूत्र में सम्बोधन हिन्दी में है।
२. यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ भूल रह गई जान पड़ती है, जिसे सुधारकर अनुवाद किया गया है।

मुझे आशा है कि किची जिस बैंकमे काम सीख रहा है, वही उसे माकूल जगह मिल जायेगी।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद[1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६०५) से; सौजन्य : एस० अम्बुजम्माल

## ५३५. पत्र : सी० आर० श्रीनिवासनको[2]

२६ अगस्त, १९३५

काम इतना अधिक है कि मैं वास्तवमे, और शाब्दिक अर्थोमे भी, जैसे बिलकुल रीत गया हूँ। जब भी माँगा जाये तब एक सन्देश प्रस्तुत कर देनेकी प्रतिभा मुझमें है नही। गाँवोका यह काम इतने अधिक श्रमकी अपेक्षा रखता है और इतना दुष्कर है कि यदि मेरी चले तो सभी किस्मका लिखना-लिखाना बन्द करके, अपने-आपको किसी एक गाँवमें खपा दूँ और अपनी सामर्थ्य-भर वही काम करता रहूँ; और मै चाहूँगा कि यह काम चुपचाप, पूरी शान्तिसे करूँ। इन परिस्थितियोमें यदि मै आपको सन्देश न भेज पा रहा हूँ तो आप मुझे क्षमा करने की कृपा करेगे।

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी; सौजन्य : नारायण देसाई

## ५३६. पत्र : ग० वा० मावलंकरको

२६ अगस्त, १९३५

भाई मावलकर,

मणिवहनके अभी-अभी मिले पत्रसे मालूम हुआ कि तुम्हारी पत्नीको हलका टाइफाइड बुखार हो गया है। आशा करता हूँ, बुखार उतर गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४४) से। एस० एन० २२८६० से भी

१. साधन-सूत्रमें यह हिन्दीमें है।

२. मद्राससे प्रकाशित स्वदेशमित्रन् वाले।

## ५३७. पत्र : देवदास गांधीको

२६ अगस्त, १९३५

चि० देवदास,

आज तार तो भेजा है। तेरे तारकी आशा थी, लेकिन आया नही। तू करे भी तो क्या? और वहाँसे तार भेजने की सूझे किसे? वा का पूरा पत्र आया है, यह अच्छी बात है? वा ने लिखा है कि तू घबरा गया है। लेकिन बीमारीके कारण तू घबराये क्यों? हम अन्तिम परिणाम जानते हैं और उसके लिए तैयार है तो फिर घबराये क्यों? लेकिन तेरे विदा लेनेमें बहुत देर है। लेकिन अभी तुझे इसी देहसे बहुत-सी सेवा करनी है। इसलिए संकल्प करके तू स्वस्थ हो जा। मैं तो तुझे खुराक आदिके बारेमें ही सलाह दे सकता हूँ। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

## ५३८. पत्र : अवधेशदत्त अवस्थीको

२६ अगस्त, १९३५

चि० अवधेश,

जो धर्म तुमारे सामने तात्कालिक पैदा हो उसका पालन करने से सब अच्छा ही होगा।

जो सदस्य अपनी संस्थाके नियमोंको जान-बूजकर भंग करते है उनको उस संस्थामें रहने का कोई अधिकार नही है।

बापुके आशीर्वाद

श्री अवधेशदत्त अवस्थी,
गाँव – रम्पुरवा
पो० बड़वापूर
जि० बहराइच, सं० प्रा०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१८) से।

## ५३९. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
२७ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

चौंको मत। मैं बायें हाथसे लिख रहा हूँ, जिससे कि दाहिना सोमवारको ठीकसे काम कर सके।

तुम्हारे दो पत्र और तार ठीक समयपर आ गये थे। तुम्हारे यहाँ गुंजाइश हो सके, तो शायद देवदास भी पहुँचेगा। बेचारा! उसे पक्षाघात होनेका खतरा है। जमनालालजी ने कल तार दिया था कि अन्सारीने उसे आबोहवा बदलने के लिए शिमला जानेकी सलाह दी है। शिमलाका नाम उन्होंने तुम्हारी वजहसे ही लिया होगा। शिमलामें और ऐसी क्या खासियत हो सकती है? मैं तो सिर्फ इसलिए लिख रहा हूँ कि उसके अनुरोधके लिए तुम पहलेसे तैयार रहो। यदि अनुरोध किया जाये तो तुम पहलेसे तय कर सको कि क्या कहोगी। मैं एक बार फिर तुमको आगाह किये देता हूँ। यदि समझो कि नहीं करना है तो कभी भी मना करने में संकोच मत करना। मैत्री बनाये रखने का यही एक तरीका है। मेरे लिए तुम एक मित्रसे कहीं अधिक प्रिय बन गई हो। लेकिन अगर तुम्हें रानी बिटिया बने रहना है तो मुझे तुम्हारी वफादारीपर अनुचित भार नहीं डालना चाहिए। इसपर भी मेरा जीवन साथी-सँगातियोंसे इतना भरा-पूरा है और सम्बन्धोंमें इतनी प्रगाढ़ता आ जाती है कि मुझसे अन्तरंग सम्बन्ध रखनेवाले हर व्यक्तिको अधिकसे-अधिक भार वहन करना पड़ता है। ईश्वर तुमको अपने ऊपर स्वयं लिया यह भार वहन करने की सामर्थ्य दे!

शम्मीको अब उतनी ऊँचाईसे शिमलासे कुमारप्पाको स्वास्थ्य-सम्बन्धी हिदायतें नहीं भेजनी पड़ेंगी, क्योंकि कुमारप्पाको अब वह अपनी प्रत्यक्ष देखरेखमें रख रहा है। उससे कहना कि मैं उसका भेजा हुआ चुकन्दर रोज नियमपूर्वक खा रहा हूँ। अमतुस्सलामने उसे ठीकसे पकाने का तरीका मालूम कर लिया है।

गोपीचन्दजी के साथ पुरीके बारेमें मेरी कोई ज्यादा बात नहीं हुई। तुम्हारे भेजे प्यारेलालके पत्रसे मुझे लगता है कि शिमलामें उसका मन नहीं रमा। क्या वहाँका ही कोई ऐसा आदमी नहीं जो यह काम सँभाल सके? मैं जी० को लिख रहा हूँ।

चौधरीका दिया कागज तुमको कैसा लगा? तुम जैसे कागज चाहती हो, उनका नाप और रंगोंके नमूने मुझे भेज देना।

मण्डलकी बैठकें[१] काफी अच्छी रही। तुम मौजूद रहती तो बहुत अच्छा होता। लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए चले जाना ही ठीक था। बेशक, तुम यहाँ जब भी आ सको, आओगी और अपना काम सँभाल लोगी।

अपने दोनो विश्वस्त नौकरोको मेरी ओरसे स्नेह देना और कहना कि मुझे दुःख है कि मैं चाहते हुए भी उनका और अधिक परिचय प्राप्त नही कर सका। लेकिन मेरे पास काम इतने रहते हैं कि ऐसी बातोके लिए समय नही मिल पाता।

हम सबकी ओरसे स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४२) से; सौजन्य. अमृतकौर। जी० एन० ६३५१ से भी

## ५४०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२७ अगस्त, १९३५

भाई वल्लभभाई

बाबोके[२] टॉंसिल्सका हाल कल मणिके पत्रसे मालूम हुआ। इतनेसे बच्चेके इतने बड़े टॉंसिल्स? इसका क्या कारण हो सकता है? क्या डॉक्टर कुछ बता सकेंगे? . . .[३]

दरबार[४] और भास्कर बीमार हैं। ऐसी स्थितिमें तुमने क्या मार्ग निकाला? क्या महादेव की जरूरत है?

मोरारजी और चंदूलाल दो-तीन दिन ठहरेंगे। अमेरिकाके स्वामी योगानन्द यहाँ हैं।

देवदासका पत्र ही तुम्हें भेज रहा हूँ। राजा[५] आज यहाँसे गुजरे थे। जमनालालका तार आया है, उससे मालूम होता है कि अभी तो जान खतरेमें नही है।

बापूके आशीर्वाद

१. दे[illegible] “चर्चा: निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरीके सम्बन्धमें”, २२/२३-८-१९३५।
२. विपिन, [illegible]ह्याभाईका बड़ा पुत्र।
३. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड़ दिया गया है।
४. गोपालदास अम्बाईदास देसाई।
५. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

[पुनश्च :]

मोरारजी एक-दो दिनमे वहाँ आयेगे। उन्हे रोक लेना। देवदासका पत्र रामदासको भेज देना।

[गुजरातीसे]
**बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८३**

## ५४१. पत्र : लीलावती आसरको[1]

[२७ अगस्त, १९३५ के पश्चात्][2]

यह कोई नही समझा होगा कि [पत्र] मेरा था। प्रथम पुरुषमें भी 'वुंड' इच्छाको सूचित करता है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१२८ से भी, सौजन्य : लीलावती आसर

## ५४२. पत्र : क० मा० मुंशीको

वर्धा
२८ अगस्त, १९३५

भाई मुंशी,

मैंने तुम्हे जो सन्देश[3] भेजा है, तुम उतने मे ही सन्तोष करना। आजकल तो आश्रममें इतने लोग रह रहे हैं कि मुझे एक मिनटकी भी फुरसत नही मिलती। आज रात तो ११२५ के बाद सोनेको मिला और १५० पर उठ गया हूँ। यह पत्र लिखते समय २.४० हुए हैं। सुबह ६ बजेसे दैनिक कामोमें जुट जाना है।

बापूके आशीर्वाद

एडवोकेट मुंशी
रिज रोड, बम्बई

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५८५) से, सौजन्य क० मा० मुंशी

१ और २. लीलावती आसरके २७ अगस्त, १९३५ के पत्रके हाशियेमें गांधीजी ने ये पंक्तियाँ लिख दी थीं। अपने इस पत्रमें लीलावती आसरने गांधीजी को लिखा था कि उसके द्वारा भेजा गया पिछला एक पत्र उसे वापस लौटा दिया गया है।

३. इसके लिए; देखिए "सन्देश : 'हंस' को" ५-८-१९३५।

## ५४३. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२८ अगस्त, १९३५

प्रिय चार्ली,

गुरुदेवकी जरूरतोका[1] भार तुमको अपने ऊपर ले लेना चाहिए। मैं सोलहो आने सहमत हूँ कि उनको उगाहीके लिए खुद नही निकलना चाहिए। मैं देखूंगा कि मैं इसमे कितना-कुछ कर सकता हूँ।

बेशक, तुमको दौड-धूप बन्द करके लेखन-कार्यमे जुट जाना चाहिए — पत्रिकाओंके लिए नही, बल्कि स्थायी महत्त्वकी चीजें लिखने में।

और तुमको मांड और प्रोटीनयुक्त खाद्योसे बचना चाहिए। तुम्हारे लिए तो फल, कच्चा दूध, बिना उबले अंडे, ये ही चीजें ठीक है।

सस्नेह,

मोहन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५६) से।

## ५४४. पत्र : अमृतकौरको

२८ अगस्त, १९३५

प्रिय अमृत,

जब तुमको कण्ठ-प्रदाह हो गया तो उतनी साफ हवामे तुम्हारे रहने और बढिया शहद तथा ताजे फल खानेका क्या फायदा? आशा है, अब वह सब ठीक हो गया होगा।

मैं तुम्हारा पत्र कुमारप्पाको दे रहा हूँ। मै जानता हूँ कि इसे वहाँ अकेलापन नही सतायेगा।

तुमको यह कागज और आवरण कैसा लगा? सब यही तैयार किया गया है। क्या किनारी ज्यादा खुरदरी है? रंग कैसा लगा?

तुमको चावल और तकली भेजने की याद रखूंगा।

१. विश्वभारतीके लिए चन्दा, देखिए खण्ड ६२, "पत्र : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको", १३-१०-१९३५।

देवदासके बारेमें मुझे कुछ अच्छा समाचार मिला है।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४३) से, सौजन्य: अमृतकौर, जी० एन० ६३५२ से भी

## ५४५. पत्र: एफ० मेरी बारको

वर्धा
२९ अगस्त, १९३५

चि० मेरी,

मेरा खयाल है कि सालके बाकी महीनोंके दौरान मैं वर्धामे रहूँगा। क्या तुम उन कांग्रेसियोंके नामका पता लगा सकती हो, जिन्होने इमारतोको तोडा-फोडा था? यदि वहाँ कांग्रेसियोने ऐसी हरकते की है, तो मैं अपने प्रति मिशनरियोका सदेह समझ सकता हूँ। वे लोग कैसे विश्वास करे कि जहाँ ऐसी हरकते की गई है, मेरी कोई परवाह न करते हुए ही की गई है? यदि पूर्णत नीरोग हो सको, तो तुम्हारा इलाज और लम्बा खिचने की मुझे कोई परवाह नही। मेरी इथम नागपुरके मेयो अस्पतालमें है। सुमित्रा बैतूल अस्पतालमें है। हम उनके लिए प्रार्थना करे। फिलहाल खादीका काम गडबडा गया है।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०५७) से। सी० डब्ल्यू० ३३८७ से भी, सौजन्य: एफ० मेरी बार

## ५४६. पत्र : पुरुषोत्तम एल० बाविशीको

२९ अगस्त, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

तुम्हारे पत्र और बीज मिल गये है। फिलहाल मीराबहनने खेतीका कार्य-भार छोड दिया है। यह सब डाह्याभाईके हाथमें है। तुमसे जितना होता है उतना करते हो, इतना पर्याप्त है। कैक्टसके बारेमें मैं समझता हूँ। कैक्टसके तुम क्या-क्या उपयोग मानोगे? क्या तुमने कभी इसका तजुर्बा किया है?

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२८) से। सी० डब्ल्यू० ४७४९ से भी; सौजन्य : पुरुषोत्तम एल० बाविशी

## ५४७. तार : वाइसरायको

वर्धा
३० अगस्त, १९३५

कमला नेहरूके स्वास्थ्यके बारेमें जर्मनीसे अभी-अभी एक एक्सप्रेस तार मिला है। "लगातार मतली और कै के कारण हालत गम्भीर।" इस गम्भीर समाचारको देखते हुए मैं पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी तुरन्त बिना शर्त रिहाईका अनुरोध करता हूँ, जिससे कि वे यदि सम्भव हो तो अगले मंगलवारको 'डच एयर मेल' का विमान पकड़ सकें।[1]

[अंग्रेजीसे]
लीडर, ५-९-१९३५

१. इसी प्रकारके तार बंगाल और संयुक्त प्रान्तके गवर्नरोंको भेजने का समाचार था। भारत सरकारने भारत-मन्त्रीसे परामर्श करने के बाद २ सितम्बरको जवाहरलाल नेहरूको बिना शर्त रिहा कर दिया। वे ३ सितम्बरको अलमोड़ा जेलसे इलाहाबादके लिए और वहाँसे ४ सितम्बरको जर्मनीके लिए रवाना हो गये।

## ५४८. पत्र : कुँवरजी के० पारेखको

३० अगस्त, १९३५

चि० कुँवरजी,

कान्ति सावली गया है। उसे लिखे तुम्हारे पत्रसे मालूम हुआ कि तुम बीमार पड़े हो। ऐसा कैसे हुआ? तुम कबसे बीमार हो? बली आजकल पत्र कहाँ लिख पाती है? यदि तुम्हे उत्तर नही मिलता तो क्या इसका कारण रामीका आलस्य ही नही हो सकता? क्या रामी जब चाहे तब वापस नही लौट सकती? तुम्हे आरामकी जरूरत है तो क्यो नही राजकोटमे ही आराम लेते?

बापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतशी
झण्डू फार्मेसी
सयानी रोड, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२३) से। सी० डब्ल्यू० ७०३ से भी, सौजन्य : नवजीवन न्यास

## ५४९. पत्र : कान्ति गांधीको

३० अगस्त, १९३५

चि० कान्ति,

तेरी अनुपस्थितिसे रामचन्द्रनको बहुत आश्चर्य और दुःख हुआ। उसका कहना है कि वह तुझसे मिले बिना कदापि नही जायेगा। वह तो कहता है कि "मैं उसके पीछे-पीछे सावली जाऊँगा।" मैंने जब यह कहा कि मैं उसे वापस बुला दूंगा, तभी वह शान्त हुआ। उसका तेरे प्रति असीम प्रेम है। ऐसी स्थितिमें मैं उससे सोमवारसे पहले जानेको कैसे कह सकता हूँ? तू सोमवारको जल्दी ही पहुँच जाना। इससे पहले तो तू पहुँच नही सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३००) से, सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

## ५५०. पत्र : वालजी गो० देसाईको

३० अगस्त, १९३५

चि० वालजी,

चित्रेके बारेमें समझ गया हूँ। लेख मिल गया है। मुशीको मैंने जो प्रमाणपत्र दिया है वह, साहित्यके इतिहासके लिए उन्होंने जो सामग्री जुटाई है, उसके बारेमे है। उसे तुम प्रकाशित पुस्तकमे देख सकोगे। उनके उपन्यासोका कथा-प्रवाह मनुष्यको कहाँ ले जाता है इस दृष्टिकोणसे मुझे उनकी पुस्तके जिस मात्रामे पढनी चाहिए उतनी मैंने नही पढी है। उस दृष्टिकोणसे पढी भी नही जा सकती। वैसे मुशीने तो स्वय यह चाहा ही है कि मैं उनकी पुस्तके पढकर अपनी सम्मति दूं। आशा है, तुम सब कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री वा० गो० देसाई
गोविन्दनगर
नैनीताल (स० प्रा०)

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७४) से, सौजन्य : वा० गो० देसाई

## ५५१. पत्र : बलवन्तसिंहको

३० अगस्त, १९३५

चि० बलवन्तसिंह,

ईश्वरभाई का खत उसे दो, काति का कांति को। तुमारे खत मिले है। हिसाब पढ लिया है। पैसे तो है ना? चाहिये तब लिखो। हिसाव अच्छा है। भाजी इ० की शोध की सो अच्छा किया। मैंने माफी[1] माग ली वह तो आत्मकल्याण के लिये। उसका असर तुमारेपर गहरा पडा यह समजकर मुझे आनद होता है। तुमारे में काम करने की शक्ति तो काफी है ही। सावलीमे तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८८०) से।

१. देखिए "पत्र : बलवन्तसिंहको", १५-८-१९३५।

## ५५२. पत्र : एक ग्राम-सेवकको[1]

[३१ अगस्त, १९३५ के पूर्व]

अगर आप वहाँ अच्छा और शुद्ध गायका घी वनवा सके तो इस उद्योगपर अपना ध्यान अवश्य केन्द्रित कीजिए। मगर पहले तो आपको इस वातका पता लगाना चाहिए कि क्या इससे घी वनानेवाले को गुजारेके लायक मजदूरी मिल जाती है। हमे श्रमिक-वर्गके जीवनमे प्रवेश करके यह पता लगाना चाहिए कि वे क्या खाते-पीते है, कहाँ और कैसे रहते है, उनपर कितना कर्ज है, आदि। इस तरह मुझको आप घी का जो नमूना भेजे, उसका मुझे सारा इतिहास वता सकना चाहिए। आपको अपनी दुकानमे एक वही रखनी चाहिए जिसमे ये सारी तफसीले दर्ज हो : (१) घी वनानेवाले का नाम और ठिकाना; (२) उसे वनाने मे लगनेवाला समय, (३) कितने दूवमे उतना घी वना, (४) उस घी की कीमत, (५) वनानेवाले को प्रतिघटा मिलनेवाली मजदूरी, (६) विचौलियेका हिस्सा और ढुलाई-खर्च। आप अपनी दुकानमे जो भी चीज रखते या वेचते हो, उसकी यह विवरणिका अवश्य लगी होनी चाहिए और जो भी आपसे वह चीज खरीदता है उसे उस विवरणिकाकी माँग करने का अधिकार है। आपको मुझसे यह नही कहना है कि यह तो वड़ा उकतानेवाला काम है और आपके पास इसके लिए समय नही है। जव एक वार सिलसिला शुरू कर दिया जायेगा तो वह नित्यकी एक साधारण वात हो जायेगी और उसमे ज्यादा समय नही लगेगा। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ न्यूनतम मजदूरी चाहे जितनी नियत करे, आप तो किसी भी हालतमे प्रतिघटा आधा आनेसे कम न दें। इस काममे कोई कठिनाई नही होगी। किसी चीजको तैयार करने मे कितने घटे लगे है इसका पता करके उस हिसावसे उसकी मजदूरी और कीमत तय कर दीजिए। उदाहरणके लिए, किसी सामान्य कतैयेको १५ अकका ४०० गज सूत कातने में एक घटा लगता है। इस हिसावसे आप १५ अंकका ४०० गज मजवूत और एकसार सूत कातने के लिए मजदूरीमे आधा आना दीजिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-८-१९३५

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। उक्त ग्राम-सेवकने गांधीजी से पूछा था कि क्या वह खेतीके सहायक उद्योग की तरह घी वनवाने के कामपर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है और अगर कर सकता है तो उसे यह काम किस तरह करना चाहिए। १९-१०-१९३५ के हरिजनमें उसके अच्छा घी प्राप्त करने के अनुभव प्रकाशित हुए थे।

## ५५३. एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

गत सप्ताह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके बोर्डने अपनी नियतकालिक बैठकमें दो दिनोंतक पूरा विचार-विमर्श करने के बाद सर्वसम्मतिसे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :

> चूँकि इस संघके उद्देश्यमें यह बात भी शामिल है कि जो उद्योग मिट गये हैं या मिटते जा रहे हैं, उनके पुनरुद्धारके लिए प्रोत्साहन देकर ग्रामीण जनताका नैतिक तथा आर्थिक उत्थान किया जाये, इसलिए बोर्डका व्यवस्थापक-मण्डल चाहता है कि संघकी देख-रेखमें तैयार की जानेवाली या बिकनेवाली सभी चीजोंके लिए प्रत्येक कारीगरको एक न्यूनतम मजदूरी मिलनी ही चाहिए। यह न्यूनतम मजदूरी इस आधारपर तय की जाये कि कोई कारीगर आठ घंटेतक कुशलताके साथ जितना काम करे, उसकी कमसे-कम इतनी मजदूरी उसे अवश्य मिले कि उससे शास्त्रीय रीतिसे निर्धारित उसकी आहार-विषयक न्यूनतम आवश्यकताएँ पूरी हो जायें। इस बातका ध्यान रखना संघसे सम्बन्धित सभी लोगों और संस्थाओंका कर्त्तव्य होना चाहिए कि जिन उद्योगोंको वे प्रोत्साहन दे रहे हैं, उनमें लगे कारीगरोंको कभी भी निर्धारित मान से कम मजदूरी न मिले, और साथ ही उन्हें इस बातका बराबर खयाल रखना चाहिए कि जब और जैसे-जैसे परिस्थितियाँ अनुकूल होती जायें, मजदूरीके इस मानमें धीरे-धीरे वृद्धि करते जाना है ताकि एक दिन वह इस स्तरतक पहुँच जाये कि कारीगरके परिवारका भरण-पोषण उस परिवारके कमाऊ सदस्योंकी कमाईसे भली-भाँति हो सके।

यदि इस प्रस्तावपर ईमानदारीके साथ अमल किया गया तो निश्चित है कि इसके दूरगामी परिणाम निकलेंगे। इसपर अमल करके हम श्रमिकोंको, चाहे वे सामान्य मजदूर हों या कुशल कारीगर, वह न्याय प्रदान कर सकेंगे जो उन्हें बहुत पहले प्राप्त होना चाहिए था। इस प्रस्तावित मजदूरीका ठीक हिसाब पैसोंमें लगाने में मुश्किल तो पड़नेवाली है ही। सदस्यों और एजेंटोंको तीन तरहकी तालिकाएँ तैयार करनी पड़ेंगी.

१ विभिन्न प्रान्तोंमें अलग-अलग क्षेत्रोंमें मजदूरी करनेवाले पुरुष और स्त्रियाँ प्रतिघंटा कितना पैसा कमाती हैं?

२ मजदूरके रहने और काम करने के अपने-अपने इलाकोंमें उनका नित्यका आहार क्या है और उसपर कितना खर्च बैठता है?

३. विभिन्न प्रदेशोंमे पैदा होनेवाले मुख्य खाद्य पदार्थोको ध्यानमे रखकर प्रत्येक प्रदेशके सम्बन्धमें विशेषज्ञो द्वारा शास्त्रीय विधिसे तैयार कराया गया न्यूनतम आहार-प्रमाण और उसकी लागत।

मुझे जो तथ्य-आँकडे मिले है, उनसे यह प्रकट होता है कि पजाबको छोडकर सारे हिन्दुस्तानमे जनसाधारण जिन खाद्य पदार्थोपर गुजारा करता है, उनसे उसे पर्याप्त पोषण नही मिलता।

न्यूनतम आहार-प्रमाणके विषयमे जो पुस्तिका सबसे अधिक सहायक हो सकती है, वह है बम्बई प्रान्त बाल एव स्वास्थ्य सप्ताह सघ (डिलाइल रोड, बम्बई ११) की ओरसे डॉ० एच० वी० तिलक द्वारा तैयार की गई पुस्तिका। उसका नाम है 'बैलेन्स्ड डाइट' और कीमत चार आने है। मराठी और गुजरातीमे इसका अनुवाद भी हो चुका है। इसमें जिस आहारकी सिफारिश की गई है उसमें सोयाबीन-सहित कई तरहके साबुत अनाज (जिनमें से कुछको भिगोकर अकुर निकलने के बाद खानेको कहा गया है), मलाई-उतरे दूधका चूर्ण और साग-भाजी शामिल है। एक सफेद चूहेको जब अच्छी तरहमे कुटे चावलकी भरपूर मात्रा और थोडे-से साग और दूधपर रखा गया तो उसका वजन १३ ग्राम था। उसी चूहेको जब सन्तुलित आहार दिया गया तो उसका वजन बढते-बढ़ते ५५ ग्रामतक पहुँच गया। इस पुस्तकमें जिस आहारकी सिफारिश की गई है, उसका निर्णय सावधानीपूर्वक अनेक प्रयोग करने के बाद किया गया है। बम्बईमें इस आहारपर ५ रुपये प्रति मासका खर्च बैठता है। इसमें मुझे शका है कि बम्बई-जैसी जगहमें भी गरीबोके आहारमे सोयाबीन और मलाई-उतरे हुए दूधके चूर्णका समावेश किया जा सकता है या नही। डॉ० तिलकने दालोको अकुरित करने और जौ का माल्ट बनाने की जो सिफारिश की है वह गृहस्थोके घर मुश्किल है। गाँवोमें तो इस चीजको दाखिल करना प्राय असम्भव है। मलाई-उतरा हुआ दूध गाँवोमें मिलता नही, और मुझे इस बातका पता है कि सैकड़ो गाँवोमें ताजे दूध या अच्छे घी की एक बूँद भी दुर्लभ है। मै इन कठिनाइयोंका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ कि विशेषज्ञ लोग डॉ० तिलकके तैयार किये हुए इस आहार-प्रमाणके आधारपर अपने-अपने प्रान्तोके गाँवोके लिए ऐसा प्रमाण ढूंढ निकाले जो वहाँके लिए अधिक अनुकूल भी पडे और जिससे वही परिणाम भी निकले जो परिणाम डॉ० तिलक द्वारा निश्चित किये हुए आहारके आये बताये जाते है। जबतक ग्राम-सेवक अपने प्रभावमें आनेवाले मजदूरो या कारीगरोको इस लायक नही बना देते कि वे स्वय अपने और अपने आश्रितोके लिए यथेष्ट आहार जुटा सके तबतक हमें चैन नही लेना चाहिए। चीजोकी कीमतें कम करने के बजाय हमे बराबर इस बातकी फिक्र होनी चाहिए कि उन्हे बनाने मे लगे मजदूरो और कारीगरोको अपने गुजारेके लायक मजदूरी मिल सके। हमें यन्त्र-निर्मित विदेशी या देशी मालसे होड करने का विचार ही मनसे निकाल देना होगा। शक्ति-चालित यन्त्रों द्वारा वस्तुनिर्माण करनेवाले चन्द लोगोको उनकी जरूरतसे ज्यादा मिले और करोडो मजदूर-कारीगर लगभग भुखमरी की अवस्थामें रहें, इस स्थितिको कायम नही रहने देना चाहिए। राजकीय संरक्षणके

अभावमें लोक-मतको ही इस तरह प्रशिक्षित करना चाहिए जिससे लोग देशके मजदूरोके शोषणमे हाथ न बटाये।

विक्रीकी खादी तैयार कराने के काममे जो खादी-सेवक लगे हुए है उन्हे यह समझ लेना चाहिए कि जो बात दूसरे ग्रामोद्योगो पर लागू होती है, वह विक्रीके लिए तैयार की हुई खादीपर भी उतनी ही लागू होती है। कतैयेसे लेकर बुनकर तक खादीके सभी मजदूर-कारीगरोको वह मजदूरी तो मिलनी ही चाहिए जिसकी तजवीज इस प्रस्तावमे की गई है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

## ५५४. हमारा कर्त्तव्य

अस्पृश्यताकी चक्कीमें एक तरहसे गुजरातके हरिजन जितने पिस रहे हैं उतने शायद और कहींके नही। धोलकामे एक हरिजनको एक सवर्ण हिन्दूने मार डाला और वह हत्यारा ३०० रुपये जुर्माना देकर साफ छूट गया। कविठा गाँवके हरिजनोंने एक सार्वजनिक पाठशालामे अपने बच्चे भेजने का साहस किया, तो वहाँके तथाकथित राजपूतोने उन असहाय लोगोको बडी बेरहमीसे मारा-पीटा। काठियावाडमें तो आज यह हाल है कि वहाँ कई क्षेत्रोके अनेक गाँवोमे सवर्ण हिन्दू हरिजनोको बेहद सता रहे है, और सो सिर्फ इसीलिए कि वहाँ ढोरोमे महामारी फैल गई है। लोगोके मनमें वहाँ यह वहम समा गया है कि जादू-टोना करके या अन्य उपायोसे हरिजन ये बीमारियाँ फैलाते है। हरिजनोको हमेशा अपने जान-मालका भय लगा रहता है। सुधारक लाचारी महसूस करते है। राज्य या तो उदासीन है, या फिर ताकतवर सवर्णोके मुकाबलेमे वह भी अपनेको असहाय समझता है। कारण स्पष्ट है। हरिजनो को यह पता ही नही कि इस अत्याचारका आखिर क्या इलाज किया जाये। अपनी रक्षा करने की उनमे इच्छा-शक्ति ही नही है। उन्हे अपनी मानवीय गरिमाका या मानव-बन्धुओसे अपनी रक्षा स्वय कर सकने की अपनी सहज क्षमताका तनिक भी बोध नही है। सुधारकोको वहाँ हरिजनोको सतानेवालो का अज्ञानाधकार दूर करना है। सवर्णोको यह खबर ही नही है कि वे यह सब क्या कर रहे है। पर्चे छपा-छपाकर लोगोमे बाँटे जायें। पर अत्याचार करनेवाले सवर्ण लोग शायद ही कभी अखबार या पर्चे वगैरह पढते है। उनकी एक अपनी ही दुनिया है और वे उसीमे मस्त रहते है। उन्हे समझानेका तो सिर्फ एक रास्ता है, और वह यह कि उनसे व्यक्तिगत रूपसे सम्पर्क स्थापित किया जाये। जरूरत हो तो उनके घरोमे जाकर उनसे मिला जाये। उनके गाँवोमें सभाएँ की जायें। कितनी ही नाराजी प्रकट कीजिए, कितनी ही तकरीरे बघारिए, इससे उनका अज्ञान दूर होनेका नही। जल्दीसे-जल्दी उन लोगोका अज्ञान दूर करने का उपाय तो यह है कि उनमे यह प्रचार किया जाये कि किस तरह ये पशु-रोग छूत लगने से फैलते है और किस प्रकार सावधानीके साथ

उपचार करके उन्हे फैलने से रोका जा सकता है या रोगग्रस्त पशुओको रोगमुक्त किया जा सकता है।

इसका यह अर्थ हुआ कि प्रचारकोको धीरजके साथ लगातार काम करना होगा। और जिन राज्योमे हरिजन सताये जाये, उन राज्योसे भी कहा जाये कि वे उन गरीबोकी रक्षा करे। जहाँ सुधारक अच्छी-खासी सख्यामे हो वहाँ वे हरिजनोके बीच जाकर बस जाये और यदि उनके वहाँ रहनेसे भी हरिजनोका सताया जाना नही रुकता तो हरिजनोपर पडनेवाली मुसीबतोको वे भी उनके साथ-साथ झेले। अज्ञान-निवारणकी इस प्रवृत्तिमे सनातनियोकी भी मदद लेनेकी कोशिश करनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि गुमराह और अज्ञानी सवर्णोके द्वारा बिलकुल बेकसूर हरिजनोपर किये जानेवाले क्रूरतापूर्ण अत्याचारोका कोई भी समझदार सनातनी समर्थन नही करेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-८-१९३५

## ५५५. पत्र : अमृतकौरको

१ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

यहाँ काम सीखनेवाले आजकल जो कागज तैयार कर रहे है उसकी कतरनका एक टुकडा भेज रहा हूँ। यह मैं तुमको कागजकी रगत और उसका पतलापन देखने के लिए भेज रहा हूँ। इसमे सफाई नही है। जल्द ही हम देशमे तैयार होनेवाला बढियासे-बढ़िया कागज बहुत ठीक लागतपर तैयार करने लगेगे। मुझे जितनी उम्मीद थी, उससे पहले ही अब देवदास तुम्हारे पास पहुँच जायेगा। तुम्हारा स्नेह-पत्र मैं देवदासके पास भेज रहा हूँ। कुमारप्पा शायद ४ तारीखको नागपुरसे चलकर ६ को तुम्हारे पास पहुँच जायेगा।

मैंने चावलकी एक बोरी अविनाशीलिंगमके हाथ तुमको भेजी है। चावल सस्ता पर काफी बढिया है। मैंने दूना रेल-भाडा भरा है। इसलिए कि मालगाडीसे भेजने पर महीने-भर बाद कही तुमको मिल पाता और फिर खराब होनेका खतरा अलग। पता नही, मैंने यह ठीक किया या नही। शिमलामें तो चावल खराब नही होना चाहिए, अलबत्ता बिना कुटा चावल अधिक दिनोतक सहेजकर नही रखना चाहिए। यदि भेजे हुए चावलकी मात्रा तुम्हारी जरूरतसे बहुत ज्यादा हो, तो बाकीको बेच देना। इसका बिल अगर भेजा नही गया है तो मैं इसके साथ ही भेज रहा हूँ।

तकली भी अविनाशीलिंगमके हाथ भेजी है।

यदि देवदास आ जाये तो तुमको खादी-प्रचारके लिए उससे काम लेना चाहिए। वह कातना जानता है।

इन दिनो यहाँ काफी भीड है। हरिजन-मण्डलके सदस्य हमारे यहाँ आये हुए है।

जानकीप्रसादने अपने [उपवासके] सत्रह दिन पूरे कर लिये। उसकी दशा असाधारण रूपसे अच्छी रही। उसने शहद, नीबू और पानीके साथ उपवास तोडा।

तुम्हारे भेजे सेब मै नही खा सका। मेरे पास बहुत-से लोग है, जिनकी जरूरत मुझसे कही बड़ी है।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४४) से; सौजन्य. अमृतकौर। जी० एन० ६३५३ से भी

## ५५६. पत्र : छगनलाल जोशीको

२ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

हड्डियोसे खाद बनानेके बारेमें[1] तो तुमने पढ ही लिया होगा। अन्य चीजोंके बारेमें मैंने एक लेख विशेष रूपसे लिखवाया है। उसे ध्यानपूर्वक पढ़ना और तदनुसार स्वयं प्रयोग करना अथवा किसी अन्य व्यक्तिसे कराना। वैसे यह प्रयोग स्वयं किया जा सकता है। तुम किसीको यहाँ भेजकर उसे प्रशिक्षित भी करा सकते हो। लक्ष्मीदास एक आदमीको भेजनेवाला है।

संघका विवरण मैंने पढने की आशासे सँभालकर तो रख ही छोड़ा है किन्तु मैं नही जानता कि उसे कब पढ पाऊँगा। अपनी व्यस्तताको तो सिर्फ मैं ही जानता हूँ।

यह सच है कि मैंने फल खाना छोड दिया है। वे बहुत महँगे हैं। सस्ते फल मैं अवश्य खा सकता हूँ किन्तु आजकल कोई फल सस्ता है ही नही। सन्तरेके छिलके जरूर सस्ते हैं और जब वे बच जाते हैं तो मैं उनका मुरब्बा बना लेता हूँ। इससे मुझे कम गुडकी आवश्यकता पडती है और फल खानेका आधा उद्देश्य पूरा हो जाता है। मैं अभी उसको आजमा रहा हूँ। बाकी तो हरी सब्जियाँ और दूधका सहारा है। इसके अतिरिक्त शहद तो होता ही है। इससे कोई हानि नही पहुँचती। देखा जाये, कहाँतक इस खुराकपर रहा जा सकता है। इस बातका तुरन्त निर्णय नही किया जा सकता। मैं हरी पत्तियोंके अतिरिक्त कुम्हड़ा, लौकी आदि भी खाता हूँ, जो यहाँ बगियामें होती हैं। आजकल भिंडी और कुम्हडा उतर रहा है और भाजी भी उतर रही है।

भणसाली बहुत मर्यादित ढंगसे आचरण कर रहा है। वह मेरे नियन्त्रणको स्वीकार कर लेता है। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखता है और अत्यन्त प्रफुल्लित रहता

१. देखिए "पत्र: छगनलाल जोशीको", २३-८-१९३५।

है। यदि उसपर बहुत अधिक नियन्त्रण लगाऊँ तो मैं उसे गँवा बैठूँगा इसलिए मैं उतना ही नियन्त्रण लगाता हूँ जितना कि वह सहन कर सके। उसने एक अलग ही मार्ग स्वीकार कर लिया है। अतः ऐसी स्थितिमें उससे मेरी अपनी या हम लोगो की तुलना कैसे की जा सकती है? यह कौन जानता है कि कौन सही रास्तेपर है? क्या ऐसा नही हो सकता कि हम दोनो ही सही रास्तेपर हो? एक अन्धा दूसरे अन्धेका इन्साफ कैसे कर सकता है? यदि दोनो खाईमे गिरने से बच जाये तो यह उनके लिए तारीफकी बात होगी। मैंने तुम्हारा संदेश भणसालीतक पहुँचा दिया है। जब वह हँसता है तो कमरा गूंज उठता है। यहाँ आश्रम-जैसा एकान्त नही है। बड़े कमरेमें एक कोना उसका है, जिसमें कान्ति, नवीन तथा दो-चार अन्य लोग है। उसमें जरा भी जगह नही बचती।

यहाँका दृश्य देखने लायक है। जिस कमरेमे मैं हूँ उसमे महादेव, कनु, मीरा-बहन तो स्थायी रूपसे टिके ही हुए है, अन्य लोग भी आते-जाते ही रहते है। एक दूसरे कमरेमे फिलहाल नीमू और उसके तीन बच्चे तथा तीन अन्य बहने रहती है। अमतुस्सलाम अपना पूरा दिन भोजनालयमे बिताती है या फिर मेरे कमरेमें। और जब प्रभावती यहाँ होती है तो वह भी यही करती है। जब वर्षा होती है तो हम सब लोग कमरे या बरामदेमे और जब नही होती तो छतपर खुलेमें सोते है। इससे तुम्हें यहांकी स्थितिका कुछ अन्दाज हो जायेगा। खानेका खर्च औसतन सातसे-साढ़े सात [आने?] है, जिसे हम घटाना चाहते है। जो हो सो ठीक है। हम उसे पाँच तक लानेकी आशा करते है।

जो सज्जन सरकारी पाठशालामें पढ़ाते है यदि वे हमारे आदर्शोके विपरीत व्यवहार न करे तो फिलहाल उनकी सेवा लेनेमें मुझे तनिक भी अटपटा नही लगेगा। इस भाईके चरित्र और खादी-प्रेमके बारेमे मैंने यथासम्भव जाँच-पड़ताल की थी। उनका पत्र भी मुझे सन्तोषजनक लगा था। उनका खादीपर विश्वास है, और अधिक-तर उसीका प्रयोग करते है। वे अभी खादीकी धोतीतक नही पहुँच सके है। खादीकी टोपी और खादीकी पोशाकके बारेमे उनका अपने उच्चाधिकारियोसे झगड़ा भी हुआ था, जिसमें उनकी जीत हुई। जिस बहनके बारेमे आरोप लगाया जाता था उससे उनका सम्बन्ध आज भी बना हुआ है। किन्तु उनका कहना है कि उक्त सम्बन्ध सदा निर्दोष रहा है। उनका पत्र मुझे विश्वासजनक लगा है। मेरी यह जाँच-पड़ताल अभी हालमे पूरी हुई है। मैं तुम्हे इसमें डालना नहीं चाहता था, किन्तु अब यदि तुम इस मामलेपर कुछ प्रकाश डाल सको तो डालना।

इस सम्बन्धमे मैंने सरदार और नरहरिसे पत्र-व्यवहार किया है। इस मामलेमे सरदारके पास कहने को कुछ नही है। ऐसा लगता है कि नरहरिको नारणदासके वक्तव्यसे सन्तोष हो गया है। नारणदासका उक्त वक्तव्य वजुभाई और जेठालालको भी भेजा गया है और उनका उत्तर माँगा है। नारणदासके वक्तव्यमे मुझे कुछ कहने लायक नही लगा। ऐसा लगता है कि वजुभाई और नारणदासके बीच कुछ मूलभूत सैद्धान्तिक मतभेद है किन्तु मुझे वे भी स्पष्ट नजर नही आते, सिवा इसके कि नारण-

दासने उद्योगोंपर ज्यादा जोर दिया हो और शिक्षकोंसे भी वैसी आशा की हो। मैं इसे सैद्धान्तिक मतभेद नहीं मानता। क्या तुमने वजुभाई और जेठालालके पत्र पढ़े हैं? यदि तुम उसमें रस लेने और समय देनेको तैयार हो तो वह वक्तव्य मैं तुम्हें भेज दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

रमा और बच्चोंको आशीर्वाद। आजका पत्र पहले के लम्बे पत्रोंकी याद दिलाता है। सप्ताहमें सोमवारके अतिरिक्त अन्य दिन मैं ज्यादातर बायें हाथसे लिखता हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३३) से।

## ५५७. पत्र : मनु गांधीको

वर्धा
२ सितम्बर, १९३५

चि० मनुड़ी,

तेरे लिए अलगसे यह पत्र है। क्या तू फिर बीमार पड़ गई? यदि बहुत सावधानी से रहा जाये तो बीमार ही क्यों हो? अब तो थोड़े दिनमें तू यहाँ आ ही जायेगी न? कुंवरजी ने तुझे राजकोट भेजने को लिखा है। रामीको उसने बुला लिया है। वह बीमार रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५५१) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

## ५५८. पत्र : नारणदास गांधीको

२, सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा कल्याण ही है। मैं जानता हूँ कि, वहाँ लगातार तुम्हारी कसौटी हो रही है। किन्तु तुममें धीरज है, श्रद्धा है इसलिए सब ठीक ही होगा। वहाँ भी किसीको काम सँभालना ही चाहिए। माता-पिता तो है ही। अत तुम्हें वहाँ आजकल अनायास ही सेवा करने का सौभाग्य मिल रहा है। ऐसा लगता है, मानो भगवान्ने तुम्हारे लिए सभी कर्त्तव्योंको निभाने की व्यवस्था कर दी हो।

हाँ, देवदासको लकवा मार जानेका डर था। अब तो ठीक है। किन्तु दुबला हो गया है। वह शायद बा के साथ शिमला जायेगा। यह सब लिखनेकी बात मुझे मुश्किलसे ही सूझती है।

मैथ्यूके बारेमें मैं समझ गया। यह कागज यहीं तैयार किया गया था। यह पहला ही थान है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७२ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

## ५५९. पत्र: कृष्णचन्द्रको

वर्धा
प्रातःकाल ३ बजे, ३ सितम्बर, १९३५

चि० कृष्णचंद्र,

जब श्रद्धासे मानोगे कि सब कामोंमें परमात्मा साक्षी है और सब काम, सब विचार, सब वचन उसीको अर्पण करोगे तब परम आनंदका अनुभव करोगे और परमात्माकी हसतीका अनुभव अवश्य करोगे। याद करो 'यत्करोषि यदश्नासि' इ०।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२७६) से।

## ५६०. तार: जवाहरलाल नेहरूको

४ सितम्बर, १९३५

ईश्वरको धन्यवाद। आशा है तुम भले-चंगे होगे।[2]

[अंग्रेजीसे]
लीडर, ६-९-१९३५

१. भगवद्गीता, ९/२७।

२. इसके उत्तरमें, जवाहरलाल नेहरूका इसी तिथिका निम्न तार था: "आज शाम शिमलासे जा रहा हूँ। सप्रेम।" देखिए "तार: वाइसरायको", ३०-८-१९३५ भी।

## ५६१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा

४ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम समझ सकते हो कि तुम्हारा तार पाकर मुझे कितनी राहत मिली होगी। हमेशाकी तरह महादेव ही यह पत्र लेकर जा रहा है। काश! मैं खुद आता, लेकिन मुझे नही आना चाहिए। तुम दोनोकी दिलचस्पीकी सभी बातोके बारेमें खुले दिलसे मुझे अपनी राय देना। अगर कोई बहुत ही बड़ी, काबूसे बाहरकी बाधा न हो तो अगले वर्ष तुमको कांग्रेसकी नौकाकी पतवार सभाल लेनी चाहिए। वहाँ पहुँचकर कमलाकी हालतके बारेमें तार जरूर देना। तुम्हारी रिहाईकी खबरसे ही उसको काफी राहत मिली होगी।

आशा है, तुम्हारी सेहत ठीक रही होगी।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ५६२. पत्र : अमृतकौरको

४ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

यहाँ तैयार किया जानेवाला यही सबसे पतला कागज है। तुम देखोगी ही कि इसके दोनो तरफ लिखा जा सकता है। उसने स्याही-सोख भी तैयार किया है। और उसने भरोसा दिलाया है कि इनमे काफी सुधार होंगे। यह कागज-उद्योग वरदान-जैसा साबित हो सकता है। यदि ऐसा हुआ, तो वह इस बातका प्रमाण होगा कि सूझबूझ और मेहनत दोनो हो तो गाँवोके लिए कितना-कुछ किया जा सकता है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी सहायतासे मैं कागज तैयार करनेवालो को आठ आने रोजसे भी कुछ अधिक दिलाने में सफल हो सकूँगा।

तुम्हारे लिए भेजा गया चावल अविनाशीलिंगमके ही पास है। वह कहता है कि उसे तुम्हारा स्थान नहीं मिला। उसने मुझे रेल-भाड़ा अदा नहीं करने दिया। तुम खुद देखोगी कि बोरीकी कीमत मामूली ही है। रेल-भाडा वस्तुकी कीमतसे दूना है। पता नहीं, उतना सारा चावल भेजकर मैंने ठीक किया या नहीं। शायद तुमको पता नहीं था कि एक बोरीमे कितना आता है। बोरियाँ भी तरह-तरह की होती है।

कुमारप्पा और देवदासको अपने यहाँ ठहराने का अनुरोध मैं कर चुका हूँ और अब ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा। बस, यही आशा करता हूँ कि वे तुम्हारे ऊपर भार-स्वरूप नहीं होगें। सचमुच तुमसे यह अपेक्षा बिलकुल नहीं है कि तुम उनपर अपना कुछ समय भी लगाओगी। गरीब आदमियोंके लिए तो पहाडोके फैशनेबल स्थानोमे जानेकी बात सोचनातक मुहाल है। इस शरारतके लिए तुम्ही जिम्मेवार हो। मेरी गरीबी क्या तथाकथित ही है?

गम्मीको सच्चे गरीबोको नही भुलाना चाहिए। नीमकी पत्तीके तत्त्वोका विश्लेषण मुझे मिलना ही चाहिए।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४५) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३५४ से भी

## ५६३. पत्र : कमलनयन बजाजको

४ सितम्बर, १९३५

चि० कमलनयन,

देरसे ही सही किन्तु तेरा पत्र मिला, यह ठीक हुआ।

अरे, यदि रामनामका जप भी नियमसे करेगा तो तेरा भला ही होगा।

तू वहाँ हाथका बना कागज इस्तेमाल नहीं करता, उसकी कोई चिन्ता नहीं। ऐसा करने के लिए तेरे मनमें उत्साह और गरीबोके प्रति अत्यन्त सहानुभूति होनी चाहिए। जब ये तेरे स्वभावका अग बन जायेंगे तो तू स्वत. यह सब करने लग जायेगा। जो-कुछ तू अपने मनके उत्साहमे करेगा वही सार्थक होगा और वही तुझे फलेगा।

वहाँ बैठकर तू ब्रिटिश और अन्य विदेशियोमें भेद करने के फेरमें मत पड़ना।

कपडोके सम्बन्धमें एक बात कह देना चाहता हूँ। यदि तू वहाँ स्वेच्छासे खादी पहनने का आग्रह न रख सके तो उसे छोड देना। तुझे जिसमें सुविधा हो

वही पोशाक पहनना और जिसमे सुविधा लगे उसी कपड़ेकी पोशाक बनवाना। मैं समझता हूँ कि इतने मे तेरे सभी प्रश्नोका उत्तर आ जाता है।

अत· विदेशी या मिल के कपड़ेका ओवरकोट पहना जा सकता है, मोजे और कसरत करने की बनियान आदि पहने जा सकते हैं। यदि ये सब चीजें हाथकी बनी प्राप्त करने का प्रयत्न करे तो उसमे कोई बुराई नही है। यदि वैसा न करे तो कोई पाप नही माना जायेगा।

वहाँ तेरा मुख्य काम मेहनतसे अपनी पढ़ाई करना, निर्भयता, वीरता, दृढ़ता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम आदि गुणोंका विकास करना तथा सादगी और विनम्रता बढाना है। वहाँके जीवनका निरीक्षण करना। पल-पलका सदुपयोग करना। अपनी दैनन्दिनी रखना।

तेरा पत्र मैं वापस लौटा रहा हूँ। यदि कुछ छूट गया हो तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २८६-८७

## ५६४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
५ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

महादेव कल जवाहरलालसे मिलने प्रयागकी तरफ गये, आज जवाहरलालका तार आया है, उससे मालूम होता है कि महादेव उससे मिल नहीं पायेगा; क्योंकि वह आज शामको रवाना हो जायेगा।[1]

बम्बई सरकारने अपने जवाबको जितना जहरीला बनाया जा सकता था, उतना बनाया है। उसका अर्थ स्पष्ट है। सचाईको दबाने का प्रयत्न किया जायेगा। मेरे खयालसे अब हमे पत्र-व्यवहार प्रकाशित नही करना चाहिए। कमेटीकी रिपोर्ट मिल जानेपर उसके साथ प्रस्तावनाके रूपमे कमेटीकी उत्पत्ति बताने के लिए जितना आवश्यक हो उतना ही अंश प्रकाशित करे। इसमे क्या तुम्हें कोई दोष जान पड़ता है? यह वांछनीय है कि कमेटीका काम तुरन्त पूरा हो जाये।

आशा है, बाबा ठीक हो गया होगा। फिलहाल तो मेरे आस-पास एक-न-एक बैठक होती ही रहती है। . .[2]

१. देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", ४-९-१९३५ की पाद-टिप्पणी २। महादेव देसाई द्वारा जवाहरलाल नेहरूको लिखे गये पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट २।

२. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छूटा हुआ है।

महादेव परसों वापस आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८४

## ५६५. पत्र: जयन्ती एन० पारेखको

५ सितम्बर, १९३५

चि० जयन्ती,

यह आश्चर्यकी बात है कि तू मेरे कामको नहीं समझ सका। मैंने तो यह कहा है न कि मेरी सभी गति-विधियाँ स्वराज्यके लिए ही होती हैं। मेरी हर साँस उसके लिए है। उस लक्ष्यको और भी जल्दी प्राप्त करने के लिए मैं कांग्रेस छोड़कर हरिजनोद्धारके काममें पड़ा और अब ग्रामोद्योगोंमें लगा हुआ हूँ। सर्व देवोंको किया गया नमस्कार केशवको ही पहुँचता है।

इस समय कान्तिकी मदद करना तेरा कर्त्तव्य है। तुम दोनों भाई कोई ईमानदारीका धन्धा करके नत्थूभाईको ऋणसे मुक्त करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२६२)से।

## ५६६. पत्र: अमृतकौरको

वर्धा
६ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तो मरीजोंके[1] वहाँ पहुँचनेसे पहले ही तुम्हारी दैनिक डाक-सेवा शुरू हो गई। यह 'शकुंतला' के तुम्हारे रिहर्सल-जैसा ही रहा। अगली बार यहाँ आनेपर यदि सचिवकी हैसियतसे अपने कामसे थोड़ा समय निकाल सको तो तुम अपनी कुछ कला यहाँकी बालिकाओंको भी सिखा देना। मेरा खयाल है कि वहाँ तुम्हारा रिहर्सल अंग्रेजीमें ही हुआ होगा। अनुवाद किसका था? अभिनय किस-किसने किया था?

१. तात्पर्य जे० सी० कुमारप्पा और देवदाससे है।

हाँ, अगर तुम खादीकी एक निश्चित न्यूनतम मात्रा खरीदने और अपने भण्डारमे मिलका कपड़ा विलकुल न रखने की गारटी दो तो तुमको विक्रेता मिल जायेगा और एक निश्चित अवधितक के लिए उसका मौजूदा किराया अदा कर दिया जायेगा। तुम अन्य सभी स्वदेशी वस्तुएँ वेच सकती हो। लेकिन मुझे चिन्ता इस वातकी है कि तुम्हारे कन्धोपर वित्तीय तथा प्रशासकीय दायित्व पहले ही इतना अधिक है कि उसे और वढ़ाना नही चाहिए। यदि ठीक ढगके कार्यकर्त्ता मिल जाये और तुम्हारा वित्तीय दायित्व विलकुल सोलह आने पाव-रत्ती निर्धारित हो जाये तो निश्चय ही तुम स्वदेशीका कारवार चला सकती हो। मै जिन विभिन्न उद्यमोसे सम्वन्धित हूँ उनके क्षेत्र इतने वडे-वड़े है कि उनमे चाहे जितना पैसा लगाया जा सकता है। अवतक यदि ऐसा नही किया गया है तो सिर्फ इसलिए कि वे मेरे कावूसे वाहर न हो जाये। फिर, इनकी रचना भी इस तरह की गई है कि इन्हे सहज ही सुरक्षाकी गारटी प्राप्त है, क्योकि इनमे निजी लाभकी गुजाइश नही रखी गई है। इसलिए मुझे समाजके सवसे निचले और दवे-पिसे लोगोकी सेवाके लिए अर्पित तुम्हारी योग्यता, लगन और आत्माकी पवित्रता ही दरकार है। ईश्वरकी कृपा है कि यह मै पा ही गया हूँ।

विजयसिंहका पत्र मै लौटा रहा हूँ। मुझे वह खास अच्छा नही लगा। लेकिन मुझे उसके वारेमें राय देनेका कोई अधिकार नही। तुम एक-एक पाईका ठीक हिसाव रखने का आग्रह करना।

महादेव एक दिनके लिए जवाहरलालसे मिलने गया है। पर मुझे आशका है कि वह चन्द घण्टे वाद ही पहुँचा होगा। जवाहरलाल उसके अनुमानसे पहले ही विमानपर सवार हो गया था।

आशा है, तुम अपनी सामर्थ्यसे अधिक मेहनत नही कर रही होगी।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४६) से, सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५५ से भी

## ५६७. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

६ सितम्बर, १९३५

चि० अम्बुजम,

मुझे खुशी है कि तुम्हारा थोड़ा घूमना-फिरना हो जायेगा। तुम अपनी प्रवृत्तियाँ हरिजन-कार्य, खादी और हिन्दीतक ही सीमित रखो, यह तुम्हारे लिए बेशक अच्छा होगा। तुम त्रिवेन्द्रम जा रही हो, इसलिए तुम वहाँके जिस सरकारी मधुमक्खी पालन-केन्द्रके बारेमें सुनते हैं, उसे भी देख सकती हो। वहाँके रामचन्द्रको तो जानती हो न? उसे ढूँढ़ निकालना। वह हरिजन सेवक संघका मन्त्री और हमारा एक श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता है।

मुझे आशा है, अगर किचीकी उँगली हमेशाके लिए टेढी रह जाती है तब भी शरीर-रचना-सम्बन्धी कोई खराबी सामने न आयेगी।

मैं बादाम तो लेता हूँ, लेकिन कभी-कभी। जबतक न कहूँ, मुझे बादाम बिलकुल मत भेजना।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ५६८. पत्र : क० मा० मुंशीको[1]

६ सितम्बर, १९३५

भाई मुंशी,

इस मामलेपर विचार करना। यदि तुम्हें लगे कि इसमें हम जीत सकते हैं तो तुम जलगाँव जाना या अन्य किसीको भेज देना। जानेवाले व्यक्तिको रेलके किरायेसे अधिक देनेकी सामर्थ्य इन भाइयोंमें नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५८९)से, सौजन्य : क० मा० मुंशी

१. यह पत्र देवकीनन्दन, खादी-भण्डार, जलगाँवके ११ सितम्बर, १९३५ के निम्न अंग्रेजी पत्रके साथ क० मा० मुंशीको भेजा गया था : "हमारा एक दीवानी मुकदमा अतिरिक्त प्रथम श्रेणीके सब-जज की अदालतमें है, जिसकी सुनवाई २७ सितम्बरको होगी। खादी-भण्डारने यह मामला सरकारके खिलाफ दायर किया है। इस बारेमें हमने महात्माजी की राय ली थी और उन्होंने आपके पास जानेको कहा। मामलेके बारेमें महात्माजी का आपके नाम लिखा पत्र हम साथ भेज रहे हैं, आदि।"

## ५६९. पत्र : गोवामलको[1]

६ सितम्बर, १९३५

भाई गोवामल,

मुझे पद्मावतीका पत्र नही मिला। मुझे आशीर्वादकी बात बिलकुल याद नही है। यदि उसने आशीर्वाद लिया भी होगा तो किन परिस्थितियोंमें लिया था, यह मैं कैसे कह सकता हूँ। तुम्हे ऐसे कामोमे मेरा समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

महात्मा गांधी और जबलपुर, पृ० ४७ पर प्रकाशित गुजराती पत्रकी अनुकृतिसे

## ५७०. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

६ सितम्बर, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

इस हालतमे एक वर्षतक नायर रह सके तो अच्छी बात है। आश्रम न चल सके तो उसे कलकत्तेसे बुला लो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३५)से।

१. गोवामलने पूछा था कि क्या गांधीजी ने केरल की एक लड़की, पद्मावतीके अन्तर्जातीय विवाह पर आशीर्वाद देकर उस विवाहका समर्थन किया था। यह पत्र उसीके उत्तरमें लिखा गया था।

# ५७१. चर्चा : स्वामी योगानन्दके साथ[1]

[७ सितम्बर, १९३५ के पूर्व][2]

गांधीजी . दुनियामे पाप क्यो है, इस प्रश्नका उत्तर देना कठिन है। मै तो वही जवाब दे सकता हूँ जिसे मै एक ग्रामीणका जवाब कहूँगा। जगत्मे प्रकाश है तो अन्धकार भी है। इसी तरह जहाँ पुण्य है, वहाँ पाप होगा ही। किन्तु पाप और पुण्य तो हम मर्त्य मानवोके लिए ही है। ईश्वरके आगे तो पाप और पुण्य-जैसी कोई चीज ही नही है। ईश्वर तो पाप और पुण्य दोनोसे ही परे है। हम अज्ञानी ग्रामवासी उसकी गहन लीलाका वर्णन मनुष्यकी वाणीमे भले करे, पर हमारी भाषा ईश्वरकी भाषा नही है।

वेदान्त कहता है कि यह जगत् मायारूप है। यह भी अपूर्ण मानवकी तोतली वाणीमे ही किया गया निरूपण है। इसीलिए मै कहता हूँ कि मै इन वातोमे पडता ही नही। यदि मुझे ईश्वरके निगूढतम रहस्योमे एक वार झाँकनेका भी अवसर मिले तो भी मै उन्हे झाँककर देखने की कोशिश न करूँ। कारण, मुझे तो पता ही नही होगा कि वह सब जानकर मै क्या करूँगा। हमारे आध्यात्मिक विकासके लिए इतना ही जानना काफी है कि मनुष्य जो-कुछ अच्छा काम करता है, उसमे ईश्वर निरन्तर उसके साथ रहता है। यह भी ग्रामवासीका ही निरूपण है।

**योगानन्द : यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और निस्सन्देह वह ऐसा ही है, तो वह हमें पापसे मुक्त क्यों नहीं कर देता?**

मै इस प्रश्नकी भी उधेडबुनमे नही पडना चाहता। ईश्वर और हम वरावरीके नही है। वरावरीवाले ही एक-दूसरेसे ऐसे प्रश्न पूछ सकते है, छोटे-बडे नही। गाँववाले यह नही पूछते कि शहरवाले अमुक काम, जिसे यदि वे स्वय करे तो निश्चय ही सर्वनाश हो जाये, क्यो करते है।

**आपके कहने का आशय मै अच्छी तरह समझता हूँ। आपने यह बड़ी जोरदार दलील दी है। पर ईश्वरको किसने बनाया?**

ईश्वर यदि सर्वशक्तिमान् है तो अपना सिरजनहार उसे स्वय ही होना चाहिए।

**ईश्वर निरंकुश सत्ताधारी है या लोकतान्त्रिक भावनासे सबका खयाल करके चलनेवाला सत्ताधारी है?**

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र)से उद्धृत। इस "वीकली लेटर" के अनुसार "स्वामी योगानन्द अभी अमेरिकाकी यात्रा करके लौटे ही थे।" राँची जाते हुए वे गांधीजी से मुलाकात करने के लिए वर्धा उतरे थे।

२. गांधी—१९१५-१९४८ : ए डिटेल्ड क्रॉनोलॉजी के अनुसार यह चर्चा २६-२७ अगस्तको हुई थी।

मै इन बातोके बारेमे बिलकुल नही सोचता। मुझे ईश्वरकी सत्तामे तो हिस्सा बँटाना नही है, इसलिए ये प्रश्न मेरे लिए विचारणीय नही है। मै तो, मेरे आगे जो कर्त्तव्य है, उसे करके ही सन्तोष मानता हूँ। जो-कुछ है या हो रहा है, वह क्यो और कैसे, इन सब प्रश्नोकी चिन्तामे मै क्यो पडूँ?

**पर ईश्वरने हमें बुद्धि तो दी है न?**

बुद्धि तो जरूर दी है, पर वह बुद्धि हमें यह समझने मे सहायता देती है कि जिन बातोका हम ओर-छोर नही निकाल सकते उनमें हमें माथापच्ची नही करनी चाहिए। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि सच्चे ग्रामवासीमे अद्भुत व्यावहारिक बुद्धि होती है, और इसीलिए वह कभी इन पहेलियोकी उलझनमें नही पडता।

**अब मै एक दूसरा ही प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप यह मानते है कि पुण्यात्मा होनेकी अपेक्षा पापी होना आसान है, अर्थात् ऊपर चढ़ने से नीचे गिरना आसान है?**

ऊपरसे तो ऐसा मालूम होता है। पर असल बात यह है कि पापी होनेकी अपेक्षा पुण्यात्मा होना सहज है। कवियोने निश्चय ही यह कहा तो है कि नरकका मार्ग आसान है, पर मै ऐसा नही मानता। मै यह भी नही मानता कि ससारमे अच्छे आदमियोकी अपेक्षा पापी लोग अधिक है। अगर ऐसा है तो ईश्वर स्वय पापकी मूर्ति बन जायेगा। पर वह तो अहिंसा और प्रेमका साकार रूप है।

**क्या मै आपकी अहिंसाकी परिभाषा जान सकता हूँ?**

ससारमे किसी भी प्राणीको मन, वचन और कर्मसे हानि न पहुँचाना अहिसा है।

**अब मै दूसरे विषयपर आता हूँ। क्या आप सन्तति-निग्रहके मुकाबले संयमको अधिक पसन्द करते है?**

मेरा यह विश्वास है कि किसी कृत्रिम रीतिसे या पश्चिममे सुझाई मौजूदा रीतियोसे सन्तति-निग्रह करना आत्मघात है। मैने यहाँ जो 'आत्मघात' शब्दका प्रयोग किया है उसका अर्थ यह नही है कि प्रजाका समूल नाश हो जायेगा। आत्मघात शब्दका प्रयोग मै यहाँ ऊँचे अर्थमे कर रहा हूँ। मेरा आशय यह है कि सन्तति-निग्रहकी ये रीतियाँ मनुष्यको पशुसे भी बदतर बना देती है; यह अनीतिका मार्ग है।

**पर हम यह कहाँतक बर्दाश्त करे कि मनुष्य अविवेकके साथ सन्तान पैदा करता ही चला जाये? मै एक ऐसे आदमीको जानता हूँ जो नित्य एक सेर दूध लेता था और उसमें पानी मिला देता था, ताकि उसे अपने तमाम बच्चोंको बाँट सके। बच्चोंकी संख्या हर साल बढ़ती ही जाती थी। क्या इसमें आप पाप नहीं मानते?**

इतने बच्चे पैदा करना कि उनका पालन-पोषण न हो सके पाप तो है ही, पर मै यह मानता हूँ कि अपने कर्मके फलसे छुटकारा पानेकी कोशिश करना तो उससे भी बडा पाप है। इससे तो मनुष्यकी मनुष्यताका नाश होता है।

**तब लोगोंको यह सत्य बतलाने का सबसे अधिक व्यावहारिक मार्ग क्या है?**

सबसे अधिक व्यावहारिक मार्ग यह है कि हम सयमका जीवन बितायें। उपदेश से आचरण ऊँचा है।

**मगर पश्चिमके लोग हमसे पूछते हैं, "तुम लोग अपनेको पश्चिमके लोगोसे अधिक आध्यात्मिक मानते हो, फिर भी हम लोगोंके मुकाबले तुम्हारे यहाँ बालकोंकी मृत्यु अधिक संख्यामें क्यों होती है?" महात्माजी, क्या आप ऐसा मानते हैं कि लोग अधिक संख्यामें सन्तान पैदा करें?**

मै तो यह माननेवाला हूँ कि सतान बिलकुल ही पैदा न की जाये।

**तब तो सारी ही प्रजाका नाश हो जायेगा।**

नाश नही होगा, प्रजाका और भी सुदर रूपातरण हो जायेगा। पर यह कभी होनेका नही, क्योकि हमे अपने पूर्वजोसे यह विषयवृत्तिका उत्तराधिकार युगानुयुगसे मिला हुआ है। युगोकी इस पुरानी आदतको काबूमें लानेके लिए बहुत बडे प्रयत्नकी जरूरत है, तो भी वह प्रयत्न बहुत सरल है। पूर्ण त्याग, पूर्ण ब्रह्मचर्य ही आदर्श स्थिति है। जिससे यह न हो सके, वह खुशीसे विवाह कर ले, पर विवाहित जीवनमे भी वह सयमसे रहे।

**जनसाधारणको संयममय जीवनकी बात सिखाने की क्या आपके पास कोई व्यावहारिक रीति है?**

जैसाकि एक क्षण पहले मैं कह चुका हूँ, वह रीति यह है कि हम पूर्ण सयमकी साधना करे और जनसाधारणके बीच जाकर सयममय जीवन बितायें। अगर कोई भोग-विलास छोडकर सयममय जीवन बिताये तो उसके आचरणका प्रभाव जनतापर अवश्य पड़ेगा। ब्रह्मचर्य और अस्वाद-व्रतके बीच अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहता है, वह अपने प्रत्येक कार्यमें सयमसे काम लेगा, और सदा नम्र बनकर रहेगा।

**मैं समझ गया। जनसाधारणको संयमके आनन्दका पता नहीं, और हमें यह चीज उसे सिखानी है। पर मैंने पश्चिमके लोगोंकी जिस दलीलके बारेमें आपसे कहा है, उसके सम्बन्धमें आपका क्या मत है?**

मैं यह नही मानता कि हम लोगोमे पश्चिमके लोगोकी अपेक्षा अधिक आध्यात्मिकता है। अगर ऐसा होता तो आज हमारा इतना अध पतन न हो गया होता। किन्तु इस बातसे कि पश्चिमके लोगोकी उम्र औसतन हम लोगोकी उम्रसे ज्यादा लम्बी होती है, यह साबित नही होता कि पश्चिममे आध्यात्मिकता है। जिसमे अध्यात्मवृत्ति होती है उसकी आयु अधिक लम्बी होनी चाहिए, यह बात नही है, बल्कि उसका जीवन अधिक अच्छा, अधिक शुद्ध होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

**हरिजन, ७-९-१९३५**

# ५७२. हरिजन सेवक संघके प्रस्ताव

हरिजन सेवक संघके बोर्डकी कार्यकारिणीकी ३० अगस्तसे २ सितम्बरतक होनेवाली बैठकमें कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये। उनमें से एक निम्न प्रकार है :

> विशेष रूपसे आमन्त्रित श्रीयुत हृदयनाथ कुंजरूकी उपस्थितिमें समितिकी इस बैठकमें संघके वित्त और प्रबन्धके विकेन्द्रीकरणके प्रश्नपर चर्चा की गई; संयुक्त प्रान्त (पूर्वी)की स्थिति तथा अन्य प्रान्तोंसे आई सम्मतियोंपर विचार किया गया। चर्चाके अन्तमें पण्डित कुंजरूने अपने प्रान्तीय बोर्ड तथा जिला समितियोंकी सलाहसे प्रयोगके तौरपर संयुक्त प्रान्त (पूर्वी)के लिए एक अलग योजना तैयार करके कार्यकारिणी समितिकी आगामी बैठकके विचारार्थ प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।

बैठकमें पास किया गया दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव निम्नलिखित था :

> हम निश्चय करते है कि १९३५ सितम्बरकी [२४][1] तारीखको, अर्थात् जिस तारीखको पूना-समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे उस दिन, प्रधान कार्यालय, दिल्ली द्वारा तदर्थ जारी किये गये निर्देशोंके अनुसार 'हरिजन दिवस' मनाया जाये।

यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि उस दिन भारत-भरके हरिजन-सेवक हरिजनोंके साथ निकटतर सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे और सभी लोग इस कार्यके प्रति अधिक समर्पणकी भावना अपनायेंगे।

तीसरा महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव इस प्रकार था :

> यह तय किया जाता है कि चरखा, ग्रामोद्योग तथा हरिजन सेवक संघोंकी प्रवृत्तियोंमें सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया जाये और इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए सुझाव यह है कि चरखा संघ तथा ग्रामोद्योग संघसे विधिवत् स्वीकृति लेकर इन तीनों भगिनी संस्थाओंके मन्त्रियोंकी एक संयुक्त समिति बनाई जाये।

ये तीनों प्रवृत्तियाँ रचनात्मक है और तीनोंके क्षेत्र कई बातोंमें एक-दूसरेसे मिलते हैं। इसलिए यदि इनसे सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओंके बीच जहाँ भी सम्भव हो वहाँ यदि अधिक सामंजस्य और तालमेल हो तो बहुत-सा पैसा, समय और शक्ति बचाई जा सकती है और तीनों संस्थाओंके कार्यमें तीव्रता लाई जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-९-१९३५

१. साधन-सूत्रमें "२५" ही है, जिसे बादमें गांधीजी ने सुधार दिया था; देखिए "टिप्पणियाँ", १४-९-१९३५ और २१-९-१९३५।

## ५७३. खानगी खादी-उत्पादक सावधान

कतैयो और खादी-उत्पादनमें लगे अन्य लोगोको पर्याप्त मजदूरी देनेकी जो नीति निर्धारित की जा रही है, उसके साथ ही जिन लोगोको निजी तौरपर खादी तैयार करने के प्रमाणपत्र दिये गये है उनका प्रश्न भी उठता है, जिसपर गम्भीरतासे विचार करना आवश्यक है। ये लोग काफी मात्रामें खादी तैयार करते है। खादी से मजदूरी कमानेवालो के प्रति सघका जितना दायित्व है, इनके प्रति उससे कुछ कम नही है। उनके साथ जो अनुबन्ध हुए है उन्हे तो पूरा करना ही चाहिए। किन्तु इतना कर लेनेके बाद सघका कर्त्तव्य पूरा हो जाता है। चरखा सघका पूरा तन्त्र कतैयोके हकमे काम करनेवाले एक न्यासकी तरह चलाया जाता है या चलाया जाना चाहिए, और इन कतैयोकी अवस्थामे उत्तरोत्तर सुधार करना आवश्यक है। खानगी उत्पादकोको प्रमाणपत्र मुख्यत कतैयोके लाभके लिए ही दिये गये है। उत्पादकोको जो भी मुनाफा कमाना है, कतैयोकी सेवा करके ही कमाना चाहिए, लेकिन आज तो जो स्थिति हमारे देखने मे आती है वह यही है कि वे उनका पेट काटकर मुनाफा कमाते है।

किन्तु ये उत्पादक यदि सघके प्रत्यक्ष एजेंटोकी पक्तिमे आ जानेको तैयार हो तो उनके नाम जारी किये गये प्रमाणपत्रोको वापस लेनेकी जरूरत नही है। लेकिन उनकी पक्तिमे आनेके लिए उन्हे अपनी कार्य-पद्धतिमे आमूल परिवर्तन करना होगा। उन्हे अपने मुनाफेमे कमी करके भी सन्तुष्ट रहना पडेगा, बल्कि हो सकता है, उन्हे नुकसान उठाना पडे। सघकी जरूरतोके मुताबिक उन्हे कतैयो तथा जिन अन्य लोगोको वे काम देते हो, उनके रजिस्टर रखने है। उन्हे मजदूरी अदा करने के प्रमाण देने है और उससे सम्बन्धित आँकडे इकट्ठे करके सघके समक्ष प्रस्तुत करने है। यह काम शायद उनको बहुत भारी लगे। खादीकी कीमतमे होनेवाली सम्भावित वृद्धिसे उनको जो जोखिम है वह शायद इतनी बडी हो कि वे उसे उठा न सके। ये उत्पादक जो मुनाफा कमाते है उसके लिए इन्हे निस्सन्देह बहुत कठिन परिश्रम करना पडता है और इस परसे सघकी उनसे जो अपेक्षाएँ होगी, वे शायद उन्हे बहुत भारी लगे। जिन्हे ऐसा लगता हो उन्हे तो अभीसे अपना-अपना कारोबार समेटना शुरू कर देना चाहिए। जो लोग अपना-अपना खादी-कार्य चालू रखना चाहते हो उन्हे सघकें एजेंटोसे सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। हाँ, उन्हे इतना जान लेना चाहिए कि शर्तोका पालन करने मे तनिक भी चूक होनेसे प्रमाणपत्र रद किये जा सकते है। उन्हे नुकसान हो या न हो, सघके साथ हुए उनके अनुबन्धके कायम रहने की यह अनिवार्य शर्त है कि वे पूरी ईमानदारीसे काम ले। इसलिए इस काममे केवल उन्ही को बने रहना चाहिए जो खादी-प्रेमी हो और दरिद्रनारायणके

भक्त हो। ऐसे लोग तो दरिद्रनारायणके हितका खयाल करके अपने नुकसानकी भी परवाह न करेंगे। जो लोग खुद खादीका उपयोग न करते हो और अपने-अपने घरमे उसका इस्तेमाल न करते हो उन्हे ऐसी आशा नही रखनी चाहिए कि उनके अनुबन्ध कायम रहेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ७-९-१९३५

## ५७४. कोढ़ और उसकी रोकथाम

सावली भी गरीब कतैयो और बुनकरोके बीच रहनेवाले खादी-सेवकोका एक केन्द्र है। सावलीमे कोढ का दौरदौरा है और इसमे आश्चर्यकी कोई बात नही, क्योकि इन मेहनतकशोको सिर्फ दो रोटियाँ जुटाने के लिए भी कडी मशक्कत करनी पडती है, कतैयोको पूरे घटे-भरकी मेहनतके लिए अधिकसे-अधिक दो पाइयाँ मिलती है। महीने-भरके भोजनपर उनका औसत खर्च एक रुपया आता है।

इन सेवकोने पूछा है कि वे उन कोढ़ियोका क्या करे। वे तो बिना किसी रुकावटके सबसे मिलते-जुलते है। उनमे से अनेक अपनी रोजीके लिए या अपने सगे-सम्बन्धियोका हाथ बँटानेके लिए काम करते है। उनकी बनाई हुई वस्तुओका क्या किया जाये? अपने इन अभागे देशवासियोकी सेवा वे किस तरहसे करे?

इडियन कौसिल ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर लेप्रॉसी रिलीफ एसोसिएशन (ब्रिटिश साम्राज्य कुष्ठरोगी सहायता संघकी भारतीय परिषद्)ने 'लेप्रॉसी डायग्नोसिस, ट्रीटमेंट एण्ड प्रिवेन्शन' शीर्षक एक पुस्तिका प्रकाशित की है, जिसका पाँचवाँ संस्करण निकल चुका है। लेखक है—डॉ० म्यूर, एम० डी०। रोकथामसे सम्बन्धित उसके अध्यायसे पर्याप्त उद्धरण दे रहा हूँ[1]

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ७-९-१९३५

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

## ५७५. पत्र : लालचन्द जे० वोराको

वर्धा
८ सितम्बर, १९३५

भाई लालचन्द,

तुम तो ठीक प्रवृत्तियाँ चलाते जान पड़ते हो। सबका सहयोग साधकर और सेवावृत्तिसे ऐसी प्रवृत्तियाँ चलाई जायें तो जरूर लाभदायक साबित होंगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४९७) से। सी० डब्ल्यू० ९१२७ से भी, सौजन्य : लालचन्द जे० वोरा

## ५७६. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
९ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

अभी दाहिने हाथसे ही कुछ पंक्तियाँ तुमको लिख दूँ। वैसे मैं महसूस करता हूँ कि यदि मैं अभी कुछ वर्षोंतक मौनके दिनके लिए अपने दाहिने हाथको लिखने लायक बनाये रखना चाहता हूँ तो मुझे मौन-दिवसके अतिरिक्त सप्ताहके अन्य सभी दिन अपने दाहिने हाथको आराम देना ही चाहिए। ऐसा केवल सावधानीके तौर पर कर रहा हूँ।

तुम्हारे सेब मैं खा रहा हूँ। लेकिन तुम जब भी सेब भेजो उनके साथ हर बार कुछ अनुल्लंघनीय आदेश मत जारी किया करो। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे लिए जब भी आवश्यक होगा मैं फल खानेसे परहेज नहीं करूँगा।

महादेव इलाहाबाद गया था जवाहरसे मिलने, पर वह बादमें पहुँचा और वहाँसे सरदारके बुलावेपर उनके पास चला गया है। इसलिए सचिव का काम खुर्शीद[1] कर रही है। वह पूरा समय दे रही है और आज उसी तरह खट रही है जैसे उस सोमवारको तुमको खटना पड़ा था।

अमतुस्सलामने बीमारीके बाद अभी-अभी खटिया छोड़ी है और पाया कि उसकी जगह मीराने ले ली है।[2] और आज बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। पर मुझे आशा है कि उसकी बीमारी गम्भीर नहीं होगी।

१. दादाभाई नौरोजी की पौत्री।
२. मीराबहन मलेरियासे पीड़ित थी।

बा और देवदास आज तुम्हारे पास पहुँच गये होगे। आशा करता हूँ कि उनके कारण तुमको कोई बहुत परेशानी नही होगी। शम्मी मुझे कुमारप्पा और देवदास दोनोके बारेमे अपनी चिकित्सीय टिप्पणी भेजेगा।

पता नही, तुम्हारी चावलकी बोरी कितने दिन चलेगी। अगली बार तुम अपने आसपास की जगहसे धान मँगा लेना और छिलका उतारने की एक चक्की रखवा लेना। वही तरीका सबसे सस्ता और हमारी ग्राम-भावनाके अनुरूप रहेगा।

निरन्तर फैलते-फूलते परिवारको स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४७) से, सौजन्य. अमृतकौर। जी० एन० ६३५६से भी

## ५७७. पत्र : ना० र० मलकानीको

९ सितम्बर, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुम्हारा कागजोका पुलिन्दा मिल गया। तुम देखोगे कि 'हरिजन'[1] मे तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी कर दी गई है। मैने हरिजी को भी लिख दिया है।[2] मैने पिछले सप्ताह 'गुलिस्ता'[3] को लिख दिया है कि मुझे माफ करे। मै जैसे बिलकुल रीत गया हूँ। तुम जानते ही हो कि मेरे हाथमे कितना काम है। इसलिए तुम्ही मेरी ओरसे सभी 'याचको'को समझा दो कि मुझे माफ करे।

सस्नेह,

बापू

प्रोफेसर मलकानी
हरिजन सेवक सघ, बिडला मिल्स
दिल्ली

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ९२४) से।

१. देखिए "टिप्पणियाँ", १४-९-१९३५।
२. देखिए "पत्र: वियोगी हरिको", २४-८-१९३५।
३. बच्चोंकी एक पत्रिका। अखिल भारतीय बालकनजी बारीके अध्यक्ष शावकराज भोजराज दादाने सन्देश भेजने का अनुरोध किया था।

## ५७८. पत्र : कान्ति एन० पारेखको

९ सितम्बर, १९३५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। व्यापार अवश्य कर। लेकिन भले ही उसमे करोडोका लाभ क्यो न हो, विदेशी वस्तुओके व्यापारसे वचना ताकि देशको नुकसान न हो।

शान्ताके वारेमे मुझे पता नही था। मुझे उसके व्यवहारसे आश्चर्य नही होता। तू पहले चार पैसे कमा ले फिर विवाह करना। यदि उस समय वह मुक्त हो और तुम दोनो चाहो तो उससे विवाह कर सकता है। अन्यथा कोई दूसरा जोडीदार खोज लेना।

मैं यह नही चाहता कि मेरे सभी विचार तुम सवको पसन्द आने ही चाहिए। तुम स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करके तदनुसार आचरण करो, यही तो सत्याग्रह है। कौडी-कौड़ी ईमानदारीसे कमाना। नत्थूभाई इसके सिवा और कुछ कदापि नही चाहेगे। मुझे जव-तव लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैंने तेरा पत्र फाड दिया है। उक्त पत्र और किसीने नही पढ़ा था।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२७०) से।

## ५७९. पत्र : वसुमती पण्डितको

९ सितम्बर, १९३५

चि० वसुमती,

मैंने तेरे दोनो पत्र पढे। तेरा कार्यक्रम ठीक जान पडता है। जव चाहे तव आनेकी छूट तो तुझे मिली ही हुई है तो फ़िर मेरे पत्रकी राह क्या देखना? कही वेटी पितासे घर आनेकी अनुमति माँगती होगी? गगावहनसे कहना कि मुझे समय न मिल पानेके कारण मैं उसे लम्वा पत्र लिखने की अपनी इच्छाको रोक रहा

हूँ। जर्मनी जानेके पहले प्रताप और उसकी पत्नी तारामती मुझसे मिल गये। काफी बातें हुईं। फुरसत मिलनेपर उसके बारेमें लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४०६) से। सी० डब्ल्यू० ६५२ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

## ५८०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

९ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

साथके पत्रपर नजर डाल लेना। मैंने जवाब नहीं दिया। शायद तुम इन्हें पहचान लो। यदि कुछ किया जा सकता हो तो करना। तुम्हारा बोझ कुछ-न-कुछ तो हलका हुआ होगा।

सरकार द्वारा पूना-समझौतेको परोक्ष रूपसे भंग करने की अफवाहें मेरे कानोंमें आ रही हैं। देखें क्या होता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
**बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८५**

## ५८१. पत्र : पी० कोदण्डरावको

वर्धा
१० सितम्बर, १९३५

प्रिय कोदण्डराव,

यह कहना गलत है कि मैंने सविनय अवज्ञाका अपना विचार थोरोकी रचनाओंसे लिया है। थोरोका सविनय अवज्ञा-सम्बन्धी लेख[1] मुझे जब मिला तबतक दक्षिण आफ्रिकामें सत्ताके प्रतिरोधका आन्दोलन काफी आगे बढ़ चुका था। परन्तु उन दिनों उसे निष्क्रिय प्रतिरोध आन्दोलन कहा जाता था। चूँकि वह शब्द अपूर्ण लगता था, इसीलिए मैंने गुजराती पाठकोंके लिए 'सत्याग्रह' शब्द गढ़ा था। फिर जब मैंने थोरोके अत्यन्त सारगर्भित निबन्धका शीर्षक देखा तो अंग्रेज पाठकोंको अपने संघर्षकी बात समझाने के लिए मैंने उसी शब्द-पदका प्रयोग आरम्भ कर दिया। परन्तु मैंने

१. देखिए खण्ड ७, पृ० २१४-१५ तथा खण्ड ४१, पृ० ६०१-२ भी।

पाया कि सविनय अवज्ञा शब्द भी सघर्षके अर्थको सम्पूर्णताके साथ व्यक्त नही कर पाता। इसीलिए मैंने दूसरा शब्द अपनाया — सविनय प्रतिरोध। अहिंसाका सिद्धान्त तो सदासे हमारे सघर्षका एक अविभाज्य अग रहा है।

आपकी सलाहके मुताबिक श्री पियर्सनको एक प्रति भेजी जा रही है। मेरा खयाल है, आपने बहुत ठीक किया है। महादेव फिलहाल बम्बईमें है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत कोदण्डराव[1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२८०) से। गांधी ऐंड द अमेरिकन सीन, पृ० १८-१९ से भी

## ५८२. पत्र : अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

कुमारप्पा के ज्वरको लेकर मुझे कोई परेशानी नही। गम्मीकी देखरेखमें वह एकदम निरापद है।

राजेन्द्रबाबू को मैंने तुम्हारा नाम सुझाया हो, ऐसा मुझे याद नही पडता। यदि तुम सचमुच समझती हो कि तुमसे काम नही सँभलेगा तो निस्सकोच मना कर दो। यदि पुस्तिका कांग्रेसके दृष्टिकोणसे लिखी जानी हो, तो यह काम तुमको हाथमें नही लेना चाहिए। हाँ, यदि महिलाओंके दृष्टिकोणसे अपेक्षित हो, तो मुझे ऐसा कोई व्यक्ति याद नही पडता जो इसे तुमसे ज्यादा अच्छी तरह कर सके। लेकिन तुम कुछ और नये दायित्व अपने ऊपर लो, यह सोचकर खुद मुझे डर-सा लगता है। इसलिए इस दूसरे दृष्टिकोणसे पुस्तक लिखने का दायित्व तुम अपने ऊपर ले लो, यह चाहते हुए भी कहूँगा कि इसका निर्णय तो तुम स्वय ही कर सकती हो कि उतना समय तुम निकाल पाओगी या नही। जरूरी नही कि वह बाकायदा एक पुस्तक ही हो। सुगठित शैलीमें लिखी अठपेजी आकारकी २५ पृष्ठोंकी एक छोटी-सी पुस्तिका काफी ठीक रहेगी। हाँ, यदि तुमको लगे तो अधिक भी लिख सकती हो।

कागज तुमको यथाशीघ्र मिल जायेगा। अबतक नमूने नही मिले।

क्या मैंने तुमको कल लिखा था कि मीराने खाट पकड ली है? उसे अभी-अभी वहीं भेजा गया है जहाँ कुमारप्पाको रखा गया था। कुमारप्पासे कहना कि

1. भारत सेवक समाजके। वे उस समय अमेरिकामें थे; देखिए खण्ड ६०, पृ० १४४।

अमतुस्सलामको अब उसका काम मिल गया है, और वह पूरी तरह सक्रिय है। वह तो भूल भी गई है कि अभी कल ही वह बीमार थी।

बा से कहना कि लक्ष्मीको बँगलेमें ठहराना है।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

देवदासके बारेमें तार अभी-अभी मिला है। ईश्वरको धन्यवाद।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६३५७ से भी

## ५८३. पत्र : गिरिधारीलाल बत्राको

१० सितम्बर, १९३५

प्रिय डॉ० बत्रा,

पुस्तकोंकी पेटियाँ सही-सलामत पहुँचा दी गई हैं। अभीतक उन्हें खोला नहीं गया है और कुछ समय और खोला भी नहीं जायेगा। चित्र भी सुरक्षित पहुँच गये हैं।

मैंने आपको जल्दीमें लिख दिया कि उन्हें पुस्तकालयकी दीवारोंपर टाँगा जायेगा, लेकिन मुझे शीघ्र ही यह दिख गया कि आपका प्रस्ताव मानकर मैंने गलती की। मैंने मित्रोंको बराबर इस बातसे हतोत्साह किया है कि वे भेंटोंके साथ याद-दाश्तकी ऐसी चीजोंको जोड़नेकी इच्छा मनमें न रखें। इससे भी बड़ी बात यह है कि पुस्तकालयके नियमनका काम मैं नहीं, बल्कि न्यासी लोग करेंगे और मैं तो न्यासियोंमें से भी नहीं हूँ।

इसलिए जल्दबाजीमें दिये मेरे उत्तरके लिए क्षमा करेंगे और मुझे उसमें परि-वर्तन करने दें। अगर मैं चित्रोंका कोई अन्य अच्छा उपयोग करूँ तो क्या उससे आपको सन्तोष होगा? मैंने न्यासियोंके साथ आपके प्रस्तावपर चर्चा नहीं की है, हालाँकि श्रीयुत कुमारप्पाके सामने उल्लेख किया था और उन्होंने मेरे विचारसे सहमति प्रकट की।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य : प्यारेलाल

# ५८४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१० सितम्बर, १९३५

चि० प्रेमा,

राखी समयपर मिल गई थी। जुन्नरके कागज मिले। अच्छे थे। पूरी गड्डी मुझसे, जिसे उसकी अधिक आवश्यकता थी, उस खुर्शीदबहनको[1] दे दी। खादी मिल गई। उसका उपयोग करूँगा। सूत इकट्ठा तो हो रहा है। इसपर बहुतोंकी नजर पड़ती रहती है। और मेरी कताई भी कितनी? जिस दिन १६० तार हो जायें वह मेरे लिए आनन्दका दिन होता है।

आजतक तो मैं यही समझता रहा हूँ कि देशी कलमें बहुत आती है। जिससे मै लिख रहा हूँ वह देशी मानी जाती है। मैं पूछताछ करूँगा।

समाजवादियोमें बहुत-से लोग भले हैं, कुछ त्यागी हैं, कुछ तीव्र बुद्धिवाले हैं, कुछ ठग हैं। लगभग सभी पश्चिमके रंगमें रँगे हुए हैं। किसीको भारतके गाँवोका सच्चा परिचय नही, शायद उसकी किसीको परवाह भी नही है।

गनीमत है, तेरी रसोई पसन्द आई।

लक्ष्मीबाई ठुसे[2] का नाम तो याद नही।

काका तुझे भले न्योता दें। लेकिन तेरा कर्त्तव्य तो वही रहने का है।[3] मैंने अपने विचार नही बदले है। तुझे लालच दिया गया, इससे देव अस्वस्थ हो गये हैं। उन्हे मेरी ओरसे आश्वस्त कर देना। तेरी ओरसे तो वे आश्वस्त हैं ही।

हिटलरके बारेमें तू जैसा कहती है लगभग वही मुझे भी लगा है।

यदि मेरी विचारधाराके बारेमें एक बात याद रखी जाये तो सब-कुछ समझमें आ जायेगा। मेरी तटस्थता परिणामके कालके बारेमें है, कार्यके बारेमें कभी नही। परिणामके बारेमें भी नही। धनिक धनको छोड़ें या न छोड़े, यह कहने में परिणामके विषयमें लापरवाही नही है, उसके विषयमे निश्चिन्तता है। हमारा कदम ठीक होगा तो आगे-पीछे एक ही परिणाम निकलेगा। और अवश्य निकलेगा।

बन्दरसे मनुष्यके पैदा होनेकी बात मेरे गले नही उतरती। वैसे, इसमें

१. दादाभाई नौरोजीकी पौत्री।

२. पूना की पुरानी कांग्रेस कार्यकर्त्री।

३. बापुना पत्रो–५ : कु० प्रेमाबहेन कंटकने में प्रेमाबहन लिखती हैं कि काका कालेलकर ने सासवड़ में चल रहे ग्रामसेवा-कार्यको जिम्मेदारी शंकरराव देव को सौंपकर मुझसे वर्धाके महिलाश्रमके संचालनका भार सँभाल लेनेको कहा था।

सन्देह नही कि मनुष्यकी देह धारण करनेवाले जीवने वानरादिकी देह जरूर धारण की है।

आततायीको मारने की बात मुझे पसन्द नही आई। आततायी किसे माना जाये? फिलहाल तो मै यह मानता हूँ कि हत्यारो वगैराको जेलमे डालना पडेगा। परन्तु यह अहिंसा है, ऐसा कभी कहने का मुझे स्मरण नही है, मेरी यह मान्यता तो है ही नही। मैंने यह कहा है कि आजकी परिस्थितिमे यह अनिवार्य हो सकता है। इसका अर्थ इतना ही है कि मेरी अहिंसा अभी बहुत अपूर्ण है और इसलिए ऐसी हिंसाका उपाय मुझे मिला नही है। पतनको पतनके रूपमें देखने मे ही सत्य है।

अहिंसाके बिना प्राप्त की हुई सत्तामे दरिद्रनारायणका स्वराज्य हो ही नही सकता। स्वराज्य-प्राप्तिमे जिस हदतक अहिंसा होगी, उसी हदतक दरिद्रोकी दरिद्रता मिटेगी। पूर्ण अहिंसा तो न मुझमें है, न तुममे या और किसीमे। परन्तु अहिंसाको माननेवाले दिन-दिन अधिक अहिंसक बनेगे और इससे उनका सेवाक्षेत्र बढता जायेगा। हिंसाके पुजारीका क्षेत्र सकुचित होता जायेगा और अन्तमे अपनेतक ही सीमित रह जायेगा।

केलकरको निमन्त्रित करके अच्छा किया।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बा देवदासको लेकर शिमला गई है। देवदास काफी बीमार था। आजकल यहाँ रोगियोकी काफी खाटे है। मीरा बीमार है। अमतुस्सलामको भी बीमार ही कहा जायेगा। नीमू और उसके बच्चे मेरे साथ ही है। लक्ष्मी दिल्लीसे आज आ रही है। वह मद्रास जा रही है। प्रभा यही है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७८) से। सी० डब्ल्यू० ६८१६ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

## ५८५. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको

१० सितम्बर, १९३५

भाई रामेश्वरदास,

तुमारा खत और चेक मिल गये है। अक्टोबरके बाद मैं अब तो आशा नही रखूगा। भीड पडेगी तो हाथ लबाउगा। सरदारको और राजेन्द्र बाबूको देते रहोगे यह यथार्थ है।

. '[1]का खत मुझे नही मिला है। . '[2]के पास गई सो अच्छा है। यदि कोई उसको बचा सके तो वह . . [व][3] ही है। और सच्ची शक्ति लेकर आई होगी तो अवश्य कुछ-न-कुछ असर डाल सकेगी। तब तो विलायत जाना सफल हुआ मानेंगे।

घनश्यामदासको अलग खत नही लिखता हु। उनसे कहो यहा होकर ही कही जाना है जाय। मेरा रहना यही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७९७३) से, सौजन्य : घनश्यामदास बिडला

## ५८६. तार : अंकलेसरियाको[4]

[१२ सितम्बर, १९३५ या उसके पूर्व][5]

दुःख हुआ। कृपया उनसे कहिए उपवास बन्द करे और चगे होकर वहाँ लोगोमे विनम्रताके साथ अपना सन्देश प्रचारित करे। दूसरेके हितोंके लिए उपवास करने से पहले उनको अपनेको उसके योग्य बना लेना चाहिए। मै उनसे पहले ही कह चुका हूँ कि उपवास करने का अभी बिलकुल भी समय नही आया है।

[अंग्रेजीसे]
अमृत बाजार पत्रिका, १३-९-१९३५

१, २ और ३. नाम छोड़ दिये गये है।

४. अंकलेसरियाके उस तारके उत्तरमें, जिसमें उन्होंने रामचन्द्र शर्माके "आमरण अनशन" के बारेमें गाधीजी की सलाह माँगी थी।

५. "वर्धागज, १२ सितम्बर", १९३५ की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत प्रकाशित।

## ५८७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
१२ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

कितना अच्छा रहा कि तुम कमलाके पास पहुँच गये। उसके लिए यही महौषध है। मैं इसके साथ ही उसके लिए एक छोटा-सा पत्र रख रहा हूँ। तुम्हारे भेजे हुए सँदेसे यहाँ ठीक-ठीक मिल रहे हैं। और सरूप भी जो समाचार पाती है यहाँ भेज देती है। हमें आशा करनी चाहिए कि अन्त भला ही होगा। डॉ० अटलको उनके सन्देशो तथा पत्रोके लिए धन्यवाद दे देना। उनसे बड़ी मदद मिली है। मुझे उम्मीद है कि जबतक यह कठिन समय रहेगा, तुम नियमित रूपसे पत्र लिखते रहोगे। टाइपशुदा सामग्री[1] मेरे पास है। समय मिलते ही मैं उसे पढ जाऊँगा।

महादेवको एक जाँचमे वल्लभभाईका हाथ बँटाने बम्बई जाना पडा। वह अभी वही है। राजगोपालाचारी अभी-अभी लक्ष्मी और उसके बच्चेके साथ आये हैं। देवदास बुरी तरह बीमार था। अन्सारीने उसे शिमला रवाना कर दिया है। मुझे मीराकी देखभाल करनी पड रही है। वह बुरी तरह बुखारमे पडी हुई है।

मैं चाहूँगा कि तुम अगले वर्ष अध्यक्ष चुने जानेके लिए राजी हो जाओ। तुम्हारी स्वीकृतिसे कई कठिनाइयाँ हल हो जायेंगी। यदि तुम इसे ठीक मानो, तो मुझे तार दे देना।

क्या इन्दुका सब ठीक-ठाक हो गया?

खुर्शीद यही है। वह तुमको साधारण डाकसे पत्र भेजेगी।

हम सबकी ओरसे प्यार।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. १९३६ में प्रकाशित जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा की।

## ५८८. पत्र : वि० ल० फड़केको

१२ सितम्बर, १९३५

चि० मामा,

तुम्हारे लेखको मैंने रद्दीकी टोकरीमें पधरा दिया है। योग्य पुरुष अथवा स्त्री द्वारा प्रयास करने का कोई निषेध नही है। ऐसे प्रचारक न तो 'हरिजनबन्धु' में विज्ञापन देनेपर मिलेंगे और न वे [हरिजन सेवक] संघके कार्यालयमें फलते है। वे तो तपस्याका प्रसाद होते है। तुम भी वैसे क्यो नही बनते?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३३) से।

## ५८९. पत्र : दिलखुश बी० दीवानजी को

१२ सितम्बर, १९३५

भाई दिलखुश,

तुमने जो प्रश्न किशोरलालको भेजे है उन्हे आज ही पढ गया हूँ। प्रश्न अच्छे है। जो गरीब विद्यार्थी अपने पहनने लायक खादी तैयार करवाने के लिए ही कातते है उनकी कताईकी मजदूरी चाहे जितनी ज्यादा या कम रख सकते हो। यदि इस तरह उत्पादित खादी अपनी जरूरतसे ज्यादा हो तो उसकी दर किसी भी खादी-मण्डलमें प्रचलित दरके मुताबिक रखी जा सकती है। बाजारमें बेची जाये तो वह इस तरह बेची जाये जिससे खादीकी बिक्रीमे मददगार हो सके।

अगर कताई-प्रवृत्ति केवल मिर्च-मसाले, पान-बीडी आदिका खर्च निकालनेके लिए [अंशकालिक] हो तो कीमतें कमसे-कम रखी जा सकती है। लेकिन अगर कताई, घी-दूध वगैरहका खर्च निकालने के लिए की जाती हो तो घंटे-भरकी मजदूरी उसके लिए काफी होनी चाहिए। तुम इसे नया सिद्धान्त मान सकते हो, लेकिन मेरी दृष्टिमें वह नया नही है। पहले मैंने जो-कुछ लिखा है, उससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इसलिए यह कोई नया सिद्धान्त नही है, बल्कि जो-कुछ आधारके रूपमे पहले कहा जा चुका है उससे निकलनेवाला तर्कसगत परिणाम है। अनुभवसे देखने मे आता है कि हजारो बहने केवल कताईसे ही अपनी रोटी कमाती है। इन्हे

कताईकी क्या दर दी जाये, यह प्रश्न मेरे सामने उपस्थित हुआ। तब मुझे कहना पड़ा कि इन्हें ज्यादा नहीं तो इतना तो मिलना ही चाहिए जिससे इनका गुजारा हो सके। ऐसा न कर पायें तो हमें इनको कोई ऐसा धन्धा बताना चाहिए जिससे इनका गुजारा हो सके। इतनेमें तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है। न आता हो तो खुशीसे फिर पूछो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
मोटाना मान, पृ० ७१

## ५९०. पत्र : अमतुस्सलामको

[१२ सितम्बर, १९३५ के पश्चात्][1]

प्यारी बेटी,[2]

कानमका[3] दिल जबतक नहीं जीता है तबतक कुछ नहीं किया।

मेरे पैर छूनेसे मुझे कुछ हो जानेका डर नहीं है। लेकिन इस बुतपरस्तीको टालना चाहता हूँ। मैं अपनेको ऐसा पाक नहीं मानता हूँ।

बाल काटनेसे कोई फायदा मैं महसूस नहीं करता। हाँ, सेवा करनेमें बीचमें आते हैं तो किसीसे भी कटवा ले।

मैं नहीं कहता तू नापाक है। तू अपनेमें कुछ ऐब नहीं पाती है तबतक मुझे क्या डर हो सकता है? कानपुर वगैरा जाना न जाना तेरे दिलकी बात है।

बापू

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१) से।

१. "मेरे पैर छूने से मुझे कुछ हो जानेका डर नहीं है", इस वाक्य से तिथि का अनुमान लगाया गया है। १२ सितम्बर, १९३५ को गांधीजी ने टहलते समय सहारे के लिए किसी लड़की के कन्धेपर हाथ रखने की आदत छोड़ दी थी; देखिए "एक त्याग", २१-९-१९३५।

२. साधन-सूत्रमें यह उर्दूमें है।

३. बापू के पत्र–८: बीबी अमतुस्सलामके नाम में अमतुस्सलाम ने बताया है कि बा शिमला में बीमार थीं, इसलिए रामदास गांधी के पुत्र कानम की देखरेख का भार उन्हें सौंपा गया था।

## ५९१. पत्र : अमतुस्सलामको

[१२ सितम्बर, १९३५के पश्चात्][1]

इसमे मै कुछ बता थोडा सकता हू? वह तो प्रेमसे जीता जा सकता है। यह प्रेम अपने-आप पैदा हो सकता है। यह तो पुरानी बात चली।

लिख देनेकी भी बात नही है। तेरेसे जो हो सकता है अपने आप वही करो।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०८) से।

## ५९२. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

वर्धा

१२/[१३][2] सितम्बर, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला।

जो खर्च कमी करने का तुमने लिखा है सो सही है। कृष्ण नायर को एक वर्ष कलकत्तेमे रहने दो। दरम्यान तुमरो और हरध्यानसिहसे जो हो सके सो करो। एक ही व्यक्तिपर जो वस्तु निर्भर रहती है उसे अन्तमे टूटना ही है और कृष्ण नायरको दिल्लीमे कहा तक रखोगे? इस वखत अनायाससे मैने कृ० ना०मे धनिकोके प्रति छिपी हुई घृणा देख ली। वह भी समझ गया, अभी भी उसे इस चीजको हृदयगत करना बाकी है। इसलिये तुमने जो लिखा है वो सच है। उसका बंगालमे रहना कल्याणकारी है। आस्ते-आस्ते सब चीजको साफ कर लेना। दरम्यान दूसरे आश्रमवासी है उनकी भी परीक्षा हो जायगी। आश्रमवासी उसिको कहा जाय जिसको मात-पिता इ० रिश्तेदारोसे कोई आर्थिक अथवा दूसरा भातिके सबध नही है और जिसकी अन्न-वस्त्रादिको छोडकर और कोई हाजत नही है। और जो अहिंसादि एकादश व्रतके पालनमे तत्पर रहता है। इस वास्ते जिसको कुछ भी बचाने का रहता है वह आश्रम-वासी कभी न माना जाय इस दृष्टीसे किसीको १० रुपयेसे अधिक न दिया जाय, और खाते-पिते १०मे से जो बचे वह आश्रमको वापिस मिले। यदि कोई ऐसे है, जिनकी सेवाकी हमे आवश्यकता है, जो खुद सेवक है लेकिन बाह्य उपाधिया होनेके

१. कानम के उल्लेख के आधारपर; देखिए पिछला शीर्षक।

२. पत्रकी विषय-वस्तु से स्पष्ट है कि गाधीजी ने यह पत्र १२ सितम्बर को लिखना शुरू किया था किन्तु राजगोपालाचारी के पहुँच जाने के कारण लिखनेमें व्याघात पडनेसे वे इसे अगले दिन ही पूरा कर सके थे, देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", १२-९-१९३५ भी।

कारण अधिक लेनेके सिवाय सेवा नहि कर सकता है, उसको तनखा देकर हम रख सकते है; बजटमें हमारे पास जितने द्रव्य रह सकते उससे अधिक खर्च न करे। ये सब बात आज जितने काम करनेवाले है उनको पढा सकते हो। जिससे तुमारे शिरपे बोज नही रहेगा और हमारा काम निपट जायेगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा। मेरा खोराक दूध-भाजी और कभी-कभी फल है। यह खत दो हिस्सेमें लिखा और लिखवाया गया है, लिखते-लिखते कुछ-ना-कुछ विघ्न आता हि रहा। इतने मे कल राजाजी आ गये उनने सुनाया कि तुम बिमार हो गया है, यह कैसे? आशा है की अब तो आरोग्य हो गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३४) से।

## ५९३. पत्र: पुरुषोत्तम एल० बाविशीको

१३ सितम्बर, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। तुम्हारे मनमें जो गाँव है, मुझे उसका नाम लिख भेजो। विनोबाका अभी कुछ पक्का नही हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२७) से। सी० डब्ल्यू० ४७५० से भी, सौजन्य: पुरुषोत्तम एल० बाविशी

## ५९४. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

१३ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। राजाजी मेरे पास बैठे है। तुम्हारा हुक्म[1] सुना दिया। वे कहते है कि अधिकसे-अधिक १७ तारीखको तो उन्हे चले ही जाना चाहिए। पापा मद्रास आयेगी और उसका लडका जो बीमार था, उनकी बाट देख रहा है। वे मानते है कि तुम उनसे काँटोके ताजके[2] बारेमें ही बाते करना चाहते हो।

१. यह कि उन्हें एक सप्ताह वर्धा में रोके रखना चाहिए।
२. कांग्रेस का अध्यक्ष-पद स्वीकार करने के बारे में।

अगर यही बात हो तो वह व्यर्थ है। वे कहते हैं कि उन्होने भूलाभाईको कोई वचन नही दिया। वे यह ताज पहनने की स्थितिमे बिलकुल नही हैं। उन्हे शारीरिक और मानसिक थकावट बहुत है। उनकी सम्मतिसे मैंने जवाहरलालसे पुछवाया है।[1] इसके बावजूद यदि तुम सोमवारतक भी आ सको तो ठीक हो। मंगलवारको उन्हे जाने ही देना होगा। आजकल यहाँकी आबहवा खराब है।

मीरा अच्छी है, मगर दो बजेसें बुखार चढ रहा है। फलोकी कीमत इसलिए जाननी है कि यदि उसी भावमे यहाँ मिल जायें तो यहींसे लेकर काम चला ले।

सिर्दीके[2] बारेमे गलतफहमी हो रही है। हमे लोगोसे जबरदस्ती कुछ भी नही करवाना है। चुपचाप काम ही करते रहना है। शेष मिलनेपर। यदि तुरन्त मिलना नही हो सका तो विस्तारपूर्वक लिखूंगा। जल्दबाजी जरा भी नही करूँगा।

मैं बलसाडवाले [व्यक्ति]के बारेमे समझता हूँ।

कमेटीकी रिपोर्टमे जितनी कम दलीले होगी उतनी ही वह अच्छी होगी। विशेषण तो हरगिज न होने चाहिए। महत्त्वकी बातोपर उसका निर्णय और भविष्यके लिए सूचना, उसे बिल्कुल निर्दोष पुस्तिका बना देंगे। उसे भी बन्द करना हो तो भले ही कर दे। यह मेरी राय है।

भाऊ जमनालालजी की चालमे रहता मालूम होता है। उसे नियमित रूपमे पैसे मिलते रहे इतना ही काफी है।

. . .[3]का किस्सा बडा विचित्र है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८६-८७

१. देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", १२-९-१९३५।
२. देखिए "पत्र : मीराबहनको", २६-५-१९३५ की पाद-टिप्पणी।
३. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

## ५९५. बातचीत : निर्वाह-योग्य मजदूरीके सम्बन्धमें – २[1]

[१४ सितम्बर, १९३५ के पूर्व]

यह तो सघके नामसे ही स्पष्ट है कि हमारा ध्येय उन कतैयोका प्रतिनिधित्व करना, अर्थात् उनकी अवस्था सुधारना है जिन्हे आज मवसे कम मजदूरी मिलती है। इसलिए हमे उनकी अवस्थामें क्रमिक सुधार करके दिखाना है। आपको बिलकुल प्रारम्भमे कही मेरी वह बात याद रखनी चाहिए कि हरएक घरमे एक चरखा हो और हरएक गाँवमे एक या अधिक करघे। वह बात जितनी तत्कालीन परिस्थितिपर लागू होती थी उतनी ही आजकी परिस्थितिपर भी लागू होती है। यही स्वावलम्बी खादीका आदर्श है, और अगर मै आपको अपनी बात समझा सकूँ, तो मै आपसे यह कहूँगा कि कतैयोकी जितनी सेवा आप उनकी खादी बेचकर कर रहे है, उससे अधिक सेवा आप उनसे खुद उन्हीके उपयोगके लिए खादी तैयार कराकर कर सकते है। अपनी रोटियाँ हम अपने घरमे ही बना लेते है, गाँवोमे होटल तो कही है नही, इसी तरह तमाम ग्रामवासियोको अपने लिए खादी खुद ही बना लेनी चाहिए। यह बात नही कि उनमे कुछ लोग अतिरिक्त खादी तैयार नही करेगे, लेकिन उनका अतिरिक्त खादी तैयार करना माँगपर निर्भर होगा। शहरके जो लोग हमारी खादी खरीदना चाहेगे उनसे तो हम आर्डर लेगे ही, और वह खादी हम जिन कारीगरोसे तैयार करायेगे, उन्हे नित्यकी आवश्यकताओके अनुसार प्रति घटा पर्याप्त मजदूरी दी जायेगी। सम्भव है कि इससे खादीका मौजूदा भाव फिलहाल कुछ चढ जाये। लेकिन

१. महादेव देसाईके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। पत्र में खादी-कार्यकर्ताओं की दलीलों का सार निम्न प्रकार दिया गया है: "(१) यह कहना गलत है कि हम गरीब कतैयों का शोषण कर रहे हैं। उलटे, जो लोग जापानी या दूसरा विदेशी कपड़ा आसानी से खरीद सकते हैं, वे हमारी महँगी खादी खरीदते हैं। यह शोषण नहीं देशानुराग है। (२) न्यूनतम निर्वाह-योग्य मजदूरी तय कर देने से यह हो सकता है कि कुछ बहुत ही थोड़े-से कतैयों को थोड़ा पैसा और मिल जाये, पर उन हजारों की क्या हालत होगी जो बेकार हो जायेंगे? (३) खुद कतैये भी पेट भरने लायक किन्तु अनिश्चित मजदूरी के बजाय थोड़ी किन्तु स्थायी मजदूरी अधिक पसन्द करेंगे। अगर इसपर मतसंग्रह किया जाये, तो वे अपनी राय इस पेट भरने-लायक मजदूरी के खिलाफ ही देंगे। (४) हमने कतैयों की मजदूरी नहीं घटाई है, खादीके दाम में जो कमी की गई है उसका कारण यह है कि इधर रुई का भाव गिर गया है, और बुनकरों की मजदूरी भी कम हो गई है। (५) जब राजनीतिक परिस्थितियाँ अनुकूल थीं तब तो इस सम्बन्ध में हम कुछ कर सकते थे, पर आज वातावरण इस परिवर्तनके हक में नहीं है।"

हमे लोगोकी गरीबीका अब और बेजा फायदा नही उठाना चाहिए। मैने यह कभी नही कहा कि शोषण जान-बूझकर किया जाता है। हम लोगोने गत पन्द्रह वर्षोमे जो-कुछ किया है, उसका पूरा उत्तरदायित्व मै अपने ऊपर लेता हूँ। और जो-कुछ हमने किया है वह अनिवार्य था। पर अब हमे एक नयी लीकपर चलना है। सर्वहारा लोगोकी तरफ हमने सदियोसे ध्यानतक नही दिया है, और हमने सरासर बेजा तौरपर यह तो मान रखा है कि हमे उनके श्रमका उपयोग करने का हक है, पर यह बात हमारे ध्यानमे कभी नही आई कि अपनी उचित मजदूरी माँगने का उन्हे भी तो कोई हक है, और जिस तरह रुपया-पैसा हमारी पूँजी है उसी तरह श्रम उनकी पूँजी है। अब वह समय आ गया है जब हमे उनकी आवश्यकताओका, उनके कामके घटोका, उनके अवकाशके समयका और उनके जीवन-स्तरका विचार जरूर करना चाहिए।

यह दलील देना व्यर्थ है कि कतैये बजाय इसके कि थोडे-से लोगोको ऊँची दरसे मजदूरी मिले, यह चाहेगे कि मजदूरी थोडी मिले पर सबको मिले। हर शोषक और हरएक दास-स्वामी यही दलील देता है, और सच तो यह है कि गुलामोमे कुछ ऐसे आदमी थे, जिन्हे गुलामीकी जजीर बडी प्यारी लगती थी। पर आपको यह भय क्यो है कि उनमे से अधिकाश बेकार हो जायेगे? क्या हम उन्हे कोई दूसरा धन्धा नही बतला सकते? आन्ध्रमे सीताराम शास्त्रीने उन्हे कताईके बजाय धान-कुटाईके काममे लग जानेको प्रोत्साहित करने मे तनिक भी आगा-पीछा नही किया है, क्योकि धान-कुटाईमे ज्यादा पैसा मिलता है। हमे अपने-आपको धोखा नही देना चाहिए। उनकी गरजका हमने अबतक नाजायज़ फायदा उठाया है, और उनकी दृष्टिसे हमने इस प्रश्नपर कभी विचार ही नही किया है।

सतीशबाबू को यह डर था कि इस न्यूनतम मजदूरीकी बातसे अनेक तरहकी धोखेबाजीके लिए रास्ता खुल जायेगा। इसपर गांधीजी ने कहा कि यह डर तो हमेशासे ही है। मजदूरीकी दर अभी बढ़ी तो है नही, पर धोखेबाजी आज कहाँ नहीं होती? यह तो एक ऐसा प्रश्न है जिसे स्वतन्त्र रीतिसे ही हल करना होगा। मै इस बातसे पूरी तरह सहमत हूँ कि खादी-कार्यकर्त्ताओंके बीच यह जो प्रतिस्पर्धाका वातावरण है, वह अवश्य दूर हो जाना चाहिए और मुझे विश्वास है कि खादीके पीछे जो यह व्यापारी वृत्ति है, उसके दूर होते ही प्रतिस्पर्धाका वातावरण नष्ट हो जायेगा।

सतीशबाबू को इस बातकी भी चिन्ता थी कि खादीके कारीगरकी मजदूरी किसानकी मजदूरीसे किसी हालतमें ज्यादा नहीं होनी चाहिए। गांधीजी ने कहा कि किसानकी मजदूरी! ऐसी तो कोई चीज ही नहीं है। भारतके अनेक भागोमे किसान को अपनी जमीनसे शायद ही पेट भरने लायक उपज मिलती हो, और जिस किसानके पास अपनी जमीन नहीं है और वह पट्टेकी जमीनपर काश्त करता है, उस बेचारेकी पैदावार तो इतनी भी नहीं होती कि उससे जमीनका लगान ही भर सके। गांधीजी ने कहा:

नहीं, किसानकी स्थितिका तो कोई मानक हो ही नहीं सकता। पेटके लिए रोज रोटी-भर मिलती जाये, यही एकमात्र मानक है। इससे कम मजदूरी देनेका प्रयत्न करना अपराध कहा जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १४-९-१९३५

## ५९६. टिप्पणियाँ

### हरिजन-दिवस

हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय कार्यालयने निम्नलिखित परिपत्र जारी किया है :

हरिजन सेवक संघ सितम्बर मासके अन्ततक अपने अस्तित्वका तीसरा वर्ष पूरा कर लेगा; और सवर्ण हिन्दू तथा हरिजन नेताओं द्वारा सम्मत पूना-समझौते पर पूनामें २४ सितम्बर, १९३२ को हस्ताक्षर हुए थे। इसलिए हरिजन सेवक संघके जीवनमें सितम्बरके अन्तिम सप्ताह, और विशेषकर २४ सितम्बरकी तिथिको महत्त्वपूर्ण मानना सर्वथा स्वाभाविक है। इसीलिए संघकी कार्यकारिणीने हालमें ही वर्धाकी अपनी बैठकमें प्रस्ताव पास किया है कि सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों दोनोंको देश-भरमें २४ सितम्बरका दिन इस प्रकार मनाना चाहिए :

(क) उस दिन सभी हरिजन-सेवक सुबह हरिजन बस्तियोंमें जाकर हरिजनोंके समक्ष सफाईके महत्त्वके बारेमें भाषण करें और उनके लिए व्यक्तिगत तौरपर कुछ-न-कुछ सेवा-कार्य, वह चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अवश्य करें।

(ख) शामको हरिजन और गैर-हरिजन बच्चोंको खेल-कूद तथा मनो-रंजनके लिए खुले स्थानोंमें ले जाया जाये।

(ग) जुलूसों, कीर्तनों या भजन-मण्डलियोंका आयोजन किया जाये। जहाँ भी हो सके, सार्वजनिक सभाएँ आयोजित करके उनमें जन्मजात अस्पृश्यताको मिटाने के हिन्दू-जाति के पवित्र संकल्पको दोहराया जाये।

(घ) संघके सदस्यों-सहयोगियोंकी सूचीमें लोगोंके नाम दर्ज किये जायें।

(ङ) हरिजन कुआँ-कोषके लिए जोश और मुस्तैदीके साथ चन्दा जमा करना — जो इस वर्षके कामका प्रमुख हिस्सा है — जारी रखा जाये।

मुझे आशा है कि हरिजन और गैर-हरिजन दोनों वर्गोंके सभी सुधारक — चाहे वे किसी भी दलके क्यों न हों — संघकी इस अपीलपर तुरन्त कार्रवाई करेंगे।

## हरिजन-मण्डलोंको चेतावनी

श्री मलकानीके पत्रका एक अंश इस प्रकार है:

मेरे पास प्रान्तीय मन्त्रियोंके पत्र आने शुरू हो गये हैं। उनमें कहा जा रहा है कि हरिजन-कल्याण-कार्योंपर होनेवाले व्ययका पच्चीस प्रतिशत भाग भी नये चन्देसे पूरा करना कठिन लगता है। श्रीयुत गोपालस्वामीके पत्रकी संलग्न प्रतिसे प्रकट होता है कि चन्देमें ढिलाई आनेका खतरा है। २२ अगस्तकी तिथितक प्रान्तीय मण्डलोंको दिये गये अग्रिम धनकी बकाया राशि ८१,४५५ रुपये १० आने २ पाई तक पहुँच चुकी थी। मोटे तौरपर देखा जाये तो यह राशि सभी मण्डलों और उनकी शाखाओंके दो महीनेके खर्चके बराबर बैठती है। मुझे लगता है कि अनेक समितियोंने तो आदत-सी बना ली है कि वे नयी उगाही करनेके बदले अग्रिम धनकी राशि खर्च करती जाती हैं। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ने दी गई — और हो सकता है कि अगली १ली अक्तूबरके बाद यह और जोर पकड़े — तो एक बड़ी विषम स्थिति पैदा हो जायेगी और अग्रिम धनकी राशियाँ न मिलने से हो सकता है कि विभिन्न केन्द्रोंमें बकाया की राशियाँ इतनी बड़ी-बड़ी हो जायें कि नित्य-प्रतिका सामान्य काम चलना भी दूभर हो जाये। इस मामलेमें असम सबसे बड़ा अपराधी है और उससे अन्य प्रान्तोंको सबक लेना चाहिए। असममें थैलियोंके रूपमें मिली सारी-की-सारी राशि उसे सौंप दी गई थी। उसमें से कोई कटौती भी नहीं की गई थी; और उसे थैली-कोषमें से कल्याण-कार्योंपर व्यय होनेवाली पूरी राशि और 'क' तथा 'ख' मदोंके लिए दो तिहाई राशियाँ अनुदानोंके रूपमें मिल सकती थीं। फिर भी, उसने अपनी देनदारी बहुत ही अधिक बढ़ा ली है, और अग्रिम राशियाँ खर्च कर डाली हैं। मैं आपका आभार मानूँगा यदि आप हमारी अग्रिम राशियाँ और नई उगाहियोंके सम्बन्धमें सतर्कता बरतनेका महत्त्व बतलाने की कृपा करें।

इसपर अपनी ओरसे कुछ कहने की जरूरत ही नही रह जाती। यदि प्रान्तीय मण्डल, जिला मण्डल और अन्य शाखाएँ अपने हाथमें थोडी रकम देखकर गफलतमें पडी रहेंगी तो एक दिन वे पायेंगी कि उनके पास बिलकुल कोई ससाधन नही रह गये हैं। भाग्य सतर्कता बरतनेवाले का ही साथ देता है, काहिलोका नही। मैं जानता हूँ कि केन्द्रीय कार्यालय इस अत्यन्त ही चोखी नीतिका शब्दश पालन करेगा। इसलिए बडा अच्छा हो, यदि सभी शाखाएँ समय रहते चेत जायें और यह काम जारी रखने के अपने-अपने ससाधन तलाश ले। यदि वे ठोस काम करे तो स्थानीय उगाहीसे ही उनको ऐसे संसाधन मिल जायेंगे। यदि नही करेगे तो वह एक सकेत होगा कि हमें बोरिया-बिस्तर समेट लेना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

## ५९७. भ्रान्तियाँ

घटनाओं और चीजोंको ध्यानपूर्वक देखनेवाले एक सज्जन लिखते हैं

आपके जिस पत्रका मैं जवाब दे रहा हूँ उसमें निर्दिष्ट दिशाओंमें काम करने की काफी ज्यादा गुंजाइश है। गृह-उद्योगोंका अपना एक स्थान है। पर अगर साफ-साफ पूछा जाये तो मैं यह कहूँगा कि मेरे खयालमें ये गृह-उद्योग बड़े-बड़े उद्योगोंका स्थान नहीं ले सकते। इन बड़े-बड़े उद्योगोंके संचालकोंके आर्थिक हितोंको एक तरफ रख दें तो भी मेरा यह खयाल है कि इस प्रकारके जो बड़े-बड़े उद्योग स्थापित हो चुके हैं या स्थापित हो सकते हैं, उन्हें नष्ट करने का प्रयत्न करना देशके हकमें अच्छा नहीं होगा। यन्त्रोंके खिलाफ सबसे बड़ी आपत्ति यही उठाई जाती है कि काम-धन्धेमें लगे हुए आदमियोंका काम ये यन्त्र दिनपर-दिन छीनते चले जा रहे हैं। नतीजा यह होता है कि बेकारी बढ़ती ही जाती है। मुनाफेके वितरणकी जो मौजूदा प्रणाली है, सम्भव है, उसमें फेरफार करने की जरूरत हो। पर फुरसतके समयका अगर सदुपयोग हो सके तो वह और बहुत-सी बातोंसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज होगी। सिर्फ लोगोंको भारी तादादमें काममें लगाने के लिए मेरे विचारमें यह जरूरी नहीं कि हम इन यन्त्रोंको खारिज कर दें, जिनसे पैसेकी बचत भी होती है और काम भी अच्छा और अधिक मात्रामें होता है। इन यन्त्रोंको बहुत-से लोगोंको अवकाश और भोजन दे सकना चाहिए। 'बहुत-से लोगों' में मैं ऐसे लोगोंको भी शामिल करता हूँ, जिनका इस उद्योगके साथ दूरका भी सम्बन्ध नहीं है। भारतकी जन-संख्या एक तो यों ही अधिक है, और वह बराबर बढ़ती ही जा रही है — यह देखते हुए मुझे तो डर है कि ऐसा समय शायद कभी नहीं आयेगा जब यहाँ हरएक आदमीको ठीक-ठीक सुख-सुविधा दी जा सके। ज्यों-ज्यों लोगोंमें शिक्षा और स्वच्छताका प्रचार होगा, त्यों-त्यों उनकी आयु बढ़ेगी और मृत्यु-दरमें कमी होती जायेगी। जन-संख्याकी दृष्टिसे देखें तो स्थिति तब और भी बुरी हो जायेगी। इसलिए माफ करें, मुझे यह कहना ही पड़ेगा कि इस दिन-दिन बढ़ती हुई आबादी के रोकने के उपाय करना ही हमारा सबसे पहला काम होना चाहिए, और यह काम बिना सन्तति-निग्रहके नहीं हो सकता। मैं यह जानता हूँ कि आप इस चीजके खिलाफ हैं। मगर आज चूँकि आप सफाई, आहार-सुधार, ग्रामोद्योग आदिके द्वारा आर्थिक पुनर्रचना पर ही अपना

**सारा ध्यान दे रहे है, इसलिए मै आपसे यह प्रार्थना करता हूँ कि जरा विचार करके देखिए कि क्या यह भी आपके ध्यान देनेकी चीज नहीं है?**

जिन सज्जनने यह पत्र लिखा है, वे ईमानदारीसे विचार करनेवाले व्यक्ति है, तो भी जैसाकि मुझे लगता है, जिन दोनो संघोको ध्यानमें रखकर उन्होंने लिखा है उनके कार्यका लक्ष्य वे बिलकुल नही समझ सके। बडे-बडे उद्योगोको हटाकर उनकी जगह ले लेना या उन्हे नष्ट कर डालना तो इन सघोका लक्ष्य ही नही है, उनका लक्ष्य तो यह है कि मृत या मृतप्राय उद्योगोको पुनरुज्जीवित किया जाये, और उनके द्वारा उन करोडो लोगोको रोजगार दिया जाये, जिन्हे मजबूरन पूरी या आधी बेकारी मे रहना पडता है। यह ध्वसात्मक नही, रचनात्मक कार्यक्रम है। ये बड़े-बड़े उद्योग करोडो बेकार लोगोको कभी भी काम नही दे सकते, और न उन्हे ऐसी कोई आशा ही है। उनका मुख्य उद्देश्य तो अपने चन्द मालिकोके खजाने भरना है, करोडो बेकारोको काम देना उनका सीधा उद्देश्य कभी रहा ही नही। खादी और दूसरे ग्रामोद्योगोके सचालकोंको ऐसी कोई आशा नही है कि निकट भविष्यमे उनकी प्रवृत्तियोका बडे-बडे उद्योगोपर कोई असर पडेगा। यदि वे कोई आशा कर सकते है तो यही कि ग्रामवासियोकी अँधेरी कोठरियोमें — जिन्हे झोपडियाँ कहना भी भाषाका दुरुपयोग करना है — प्रकाशकी एक किरण पहुँचाई जाये। इन सम्माननीय पत्र-लेखक महोदयका कहना है कि फुरसतके समयका अगर सदुपयोग हो सके, तो वह और बहुत-सी बातोसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज होगी, मगर ऐसा कहकर तो, मालूम होता है, उन्होने अपने पक्षका खण्डन स्वय ही कर दिया है। जिन प्रवृत्तियोको वे पसन्द नहीं करते, उन प्रवृत्तियोका उद्देश्य उस ध्येयको ही तो पूरा करना है जो उनकी दृष्टिमें है। निठल्ले पडे हुए करोडो लोगोके फुरसतके समयका सदुपयोग करना ही इन प्रवृत्तियोका ध्येय है।

इसमें यन्त्रोके गलत उपयोग और दुरुपयोग — अर्थात् करोडोको नुकसान पहुँचानेवाले उपयोग — के खिलाफ कोई मुहिम नही चलाई जा रही है। हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोमें फैले हुए ग्रामीण जन-रूपी करोडो जीवित यन्त्रोके विरुद्ध इन जड यन्त्रोको प्रतिद्वन्द्वितामें नही लाना चाहिए। यन्त्रोका सदुपयोग हुआ तो तब माना जायेगा जब वे मानव-प्रयत्नमें सहायक हो और उसे आसान बना दें। आज यन्त्रोका जैसा उपयोग किया जा रहा है, उससे चन्द लोगोमें सम्पत्तिके सिमटते जानेका सिल-सिला उत्तरोत्तर जोर पकडता जा रहा है और उन करोडों नर-नारियोकी पूरी उपेक्षा हो रही है जिनके मुखका ग्रास ये यन्त्र छीनते जा रहे है। अखिल भारतीय चरखा सघ तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ द्वारा चलाई जानेवाली प्रवृत्तियोकी परिकल्पना इस उद्देश्यको ध्यानमे रखकर की गई है कि अत्यन्त सवेदनशील मानव-यन्त्रोसे सरोकार रखने की झझटसे बचते हुए इन निर्जीव यन्त्रोका प्रयोग करके विपुल सम्पत्ति एकत्र करने की सनकका जो कुपरिणाम सामने आ रहा है, उसे जहाँतक बने, शामिल किया जा सके।

पत्र-लेखकको यह भय है कि ऐसा समय कभी नहीं आयेगा कि जब हर आदमीको ठीक-ठीक सुख-सुविधा दी जा सके। जो लोग गाँवोंमें काम कर रहे हैं, उन्हें ऐसा कोई भय नहीं है। बात इससे उल्टी है। गाँववालोंके निकट सम्पर्कमें आने और गाँवोंकी स्थितिसे अधिक परिचित होनेसे उनकी यह आशा बढ़ती ही जा रही है कि अगर ग्रामवासियोंसे उनकी यह पुश्तैनी काहिली छुड़ाई जा सके तो वे सबके-सब ठीक-ठीक सुख-सुविधासे रह सकते हैं और इसके कारण वर्तमान व्यवस्थामें कोई बड़ा उलट-फेर भी न हो। इसमें शक नहीं कि ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनसे सामान्य लोगोंका उत्पीड़न होता है और हमें इनपर काबू पाना होगा। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिन्हें वसमें करना आवश्यक होगा। पर जिसे परम्परा-सिद्ध हितोंवाला वर्ग कहा जाता है, उसकी ओरसे यदि कुछ सहयोग मिले तो यह कार्य भी इस तरह सम्पन्न हो जायेगा जिससे किसीको कोई विशेष कष्ट न होगा।

वर्तमान जन-संख्याके लिए ठीक-ठीक सुख-सुविधाकी व्यवस्था करनेके विषयमें पत्र-लेखकको जो भय है, उससे स्वभावतः उनके मनमें जनाधिक्यका भय पैदा हो गया है। इस दशामें तो संतति-निग्रह ही तर्कसंगत उपाय हो जाता है। मेरे लिए संतति-निग्रह एक अंधकूप है। वह अज्ञात शक्तियोंके साथ खेलने-जैसी बात है। यदि मान भी लिया जाये कि कुछ स्थितियोंमें कृत्रिम उपायोंके द्वारा संतति-निग्रह करना उचित है, तो भी मुझे ऐसा लगता है कि करोड़ों लोगोंके लिए यह चीज बिलकुल ही अव्यवहार्य है। उन्हें गर्भाधान रोकनेके उपायोंसे संतति-निग्रहकी बात समझानेकी अपेक्षा मुझे तो यह ज्यादा आसान मालूम होता है कि उन्हें संयमके साथ रहनेकी बात समझाई जाये। हमारा यह छोटा-सा भूमण्डल कोई कल का बना हुआ खिलौना नहीं है। यह संसार तो न जाने कितने लाख वर्ष पुराना है, लेकिन आजतक तो यह कभी भी जनाधिक्यके कारण कष्टमें नहीं पड़ा है। तब कुछ लोगोंके मनमें एकाएक इस सत्यका उदय कहाँसे हो गया है कि यदि गर्भाधान रोकनेके कृत्रिम उपायोंसे जन्म-दर न रोकी गई तो आहारके अभावमें भू-मण्डलका नाश हो जायेगा। मुझे तो लगता है कि पत्र-लेखक मित्र एक भ्रान्तिसे दूसरी भ्रान्तिमें पड़ते गये हैं, और अन्तमें वे जहाँ जा फँसे हैं वह है, जैसा अबतक कभी नहीं सुना गया है, वैसे व्यापक पैमानेपर गर्भ-निरोधके साधनोंके प्रयोगका दलदल।

[अंग्रेजीसे]
*हरिजन*, १४-९-१९३५.

## ५९८. कुष्ठ-रोगियोंमें प्रजनन

कुष्ठ-रोगी सेवा सस्थाकी भारतीय शाखा (इडियन ऑग्जिलियरी टु द मिशन टु लेपर्स)के अवैतनिक मत्री श्री ए० डोनाल्ड मिलरने मुझे लन्दनसे एक पत्र भेजा है। उसे नीचे दिया जा रहा है।[1] कुष्ठ-रोगियोके उद्धारकी पेचीदा समस्यामे तनिक भी रुचि लेनेवाले सभी मानवतावादी लोग इसे गहरी, दिलचस्पीके साथ पढेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-९-१९३५

## ५९९. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा

१४ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे वक्तके पावन्द, भरे-पूरे पत्र पाना मेरे लिए एक सौभाग्यकी बात है। दो मरीजोको तुम्हारी देखरेखमे सौपकर मुझे तो उनके बारेमे बिलकुल कोई चिन्ता नही रह गई है। प्यारेलालसे कहना कि उसके पत्र मुझे मिल गये है। मैं उसकी वातोको शब्दश सच मानकर चलता हूँ और इसलिए फिलहाल उसको उत्तर न देकर समयकी वचत कर रहा हूँ। महादेव अबतक नही लौटा। शायद सोमवारसे पहले न लौटे।

डॉ० गोपीचन्द भार्गवको तुम्हारा उत्तर बिलकुल ठीक है। मैं तुम्हारी इच्छाके मुताविक पत्र नष्ट किये दे रहा हूँ। जो दायित्व तुम सँभाल नही सकती, उनको अपने ऊपर लेनेसे तुमको साफ इनकार कर देना चाहिए।[2]

मीरा अभीतक पूर्ण स्वस्थ नही हो पाई है। उसकी एक और रात बडी बेचैनीमे कटी। बुखार उतर तो रहा है, पर धीरे-धीरे ही।

राजाजी अभी यही है। वे शायद मगलवारको जायेंगे। लक्ष्मी और नया मेहमान दोनो सकुशल है। ताराको अब भी वार-बार बुखार आ जाता है, और मनुको भी। वे सव जमनालालजी के बँगलेमे टिके है।

१. देखिए परिशिष्ट ३।

२. देखिए "पत्र : अमृतकौरको", १०-९-१९३५ भी।

बा और देवदाससे कहना कि उनको पत्र लिखने का समय मुझे नही मिल पा रहा है। उनको अलगसे लिखे गये पत्रोका काम तुमको लिखे गये मेरे पत्रोंसे चल जाना चाहिए।

सबको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५४९) से; सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५८ से भी

## ६००. पत्र : विश्वनाथको

१४ सितम्बर, १९३५

प्रिय विश्वनाथ,

न तो बाबाको[1] और न माँ को[2] ही तुमपर दबाव डालना चाहिए था। मुझे पत्र लिखने का तुमको पूरा अधिकार है; और अब तो, खैर, तुमने लिखा ही है। मुझपर तो तुम्हारा दोहरा हक है। एक तो ऐसे सगठनका एक सदस्य होनेके नाते जिसका प्रधान मैं हूँ और दूसरा इस नाते भी कि तुम दो ऐसे व्यक्तियोसे[3] सम्बन्धित हो जो अनेक वर्षोसे मेरे हर शब्दको आदेशके रूपमे स्वीकार करते आये है। इसलिए पत्र लिखकर तुमने अपने खरे अधिकारपर आग्रह करने के साथ ही मेरे प्रति अपने एक कर्त्तव्यका निर्वाह भी किया। तुम पत्रमे काफी भटक गये हो, पर इस बातसे तुम्हारे पत्रका महत्त्व किसी भी प्रकारसे या किसी भी रूपमें कम नही होता। उलटे, उसका महत्त्व इससे और बढ़ जाता है कि तुमने मुझसे वह कहने का साहस किया है जिसे तुम खरा सत्य मानते हो, भले ही मैं उसे सत्यके सर्वथा विपरीत ही मानूं। बहुधा हम गलतियोके कुछ थपेड़े खाते हुए ही सत्यतक पहुँचते है, ऐसी गलतियोके थपेडे जो तबतक हमको गलतियाँ नहीं लगती। खादीके प्रति तुम्हारे मोह ने — यह मोह प्रेमसे भिन्न है — तुमको गलतियोके जालमें फँसा दिया है। अखिल भारतीय चरखा संघ प्रधान कार्यालय है और सम्बद्ध सस्थाएँ उसकी शाखाएँ है। प्रधान कार्यालयको जो अधिकार प्राप्त है, वे शाखाओको नही है। और हो भी नही सकते। मुझे किसी समय किन्ही खास परिस्थितियोमे जो नीति बिलकुल ठीक और त्रुटिहीन लगती थी, हो सकता है, बदली हुई परिस्थितियोमे या उन्ही परिस्थितियोकी अधिक गहरी समझ आनेपर, वह नीति त्रुटिपूर्ण दिखने लगे। पर यदि मैं ऊपरी समरूपता बनाये रखने के लिए सस्थाके हितोकी बलि चढ़ा दूँ तो मै संस्थाका प्रधान बनने योग्य नही हूँ। और फिर बाबा और माँ ने अपने साथ और

१, २ और ३ सतीशचन्द्र दासगुप्त और उनकी पत्नी हेमप्रभा दासगुप्त।

अपनी बनाई हुई संस्था के साथ व्यवहार करने के मामलेमें मुझे जितनी छूट दे रखी है, उतनी मैं दूसरोंके साथ शायद नहीं बरत सकता। मुझे ऐसी आशंका कतई नहीं है कि वे कभी भी मुझे गलत समझेंगे। इसलिए तुमको प्रतिष्ठानके सम्बन्धमें किये गये मेरे प्रत्येक कार्यको बाबा और माँ के साथ मेरे सम्बन्धकी पृष्ठभूमिमें रखकर देखना-समझना पड़ेगा। ये सम्बन्ध स्वयं उनके ही बनाये हुए हैं। प्रतिष्ठानके बारेमें बस इतना ही कहूँगा।

अब मेरे नये प्रयोगकी बात लो। चूँकि तुम मानते हो कि खादी-आन्दोलनका प्रणेता मैं ही हूँ, इसलिए उसके विकासका नियमन करने और यहाँतक कि उसे नष्ट करने का भी अधिकार मुझे मिलना ही चाहिए। किसी चीजको बनानेवाला फिर नये सिरेसे भी सृजन कर सकता है। और यदि मुझे लगता है कि अपनी बनाई चीजको अमुक रूप देकर मैंने गलती की है, तो अपनी मर्जीके मुताबिक उसे एक नया रूप देनेका अधिकार मुझे तबतक रहना ही चाहिए जबतक उसकी देखरेखमें हाथ बँटानेवाले अपने सहकर्मियोंका समर्थन मुझे मिल रहा है। तुम यह तो मानोगे ही कि यदि सहकर्मियोंकी आलोचनाके बावजूद मेरा विवेक इस सृजनके सम्बन्धमें किसी चीजको ठीक समझे, तो तुम-जैसे सहकर्मियोंकी आलोचनाके भयसे उसपर अमल न करना मेरे लिए अपने ही सृजनके प्रति गद्दारी करना होगा। मैं समझता हूँ कि तुमने जो मुद्दे उठाये हैं उन सभीका जवाब इसमें आ जाता है। तुम जितनी बार भी चाहो मुझे तबतक लिखते रह सकते हो जबतक मैं तुमको अपनी रायसे सहमत न कर लूँ या फिर तुम इस निष्कर्षपर न पहुँच जाओ कि मैं तुमको कभी भी सहमत नहीं कर सकूँगा।

हृदयसे तुम्हारा,<br>
मो० क० गांधी

[पुनश्च]

तुम्हारी इच्छाके मुताबिक मैं तुम्हारे पत्रको बिलकुल ही निजी पत्र मानूँगा।

श्रीयुत विश्वनाथ<br>
खादी प्रतिष्ठान<br>
सोदपुर, कलकत्ताके निकट

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२९) से।

## ६०१. पत्र : ग० वा० मावलंकरको

१४ सितम्बर, १९३५

भाई मावलकर,

जिस प्रकार तुम्हे गृहस्थ जीवनकी परीक्षाओमे से गुजराना पडता है उसी प्रकार दूसरोको भी गुजरना पडता है। इतना ही आश्वासन हम ले सकते हैं न? किन्तु आशा है, अब तो सब-कुछ ठीक हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४५) से।

## ६०२. पत्र : जी० वी० गुरजलेको

वर्धा
१५ सितम्बर, १९३५

प्रिय गुरजले,

तुम्हारा पत्र मिला। बडा विषादपूर्ण है। तुमको इस तरह हथियार नही डाल देने चाहिए। पर यदि तुमने निराशाके कारण ऐसा नही किया है तो तुम्हारा यह सकल्प सराहनीय है कि तुम आश्रममे बने रहोगे और मित्रो द्वारा भेजी गई सहायता पर ही निर्भर रहोगे। एक अनिवार्य शर्त यह है कि यदि वे एक पाई भी न भेजे, तो भी तुमको प्रसन्नचित्त रहना है। तुम पत्रोके जरिये अपने मित्रोसे अपील कर सकते हो और सस्था चलाने मे अनवरत रूपसे वही लगे रह सकते हो। तुमको मेहनतका कोई ऐसा काम भी करना चाहिए जिससे ग्रामोद्योगोको बढ़ावा मिले और साथ ही तुमको थोडी आमदनी हो जाये। तुम यदि कोई अच्छी योजना सोच सको, तो तुमको छुटकारा मिल जाये। तुम्हारे पत्रमें एक बात है, जिससे मुझे चिन्ता हो गई है। तुमने लिखा है कि तुम्हारे हर काममे हाथ बँटानेवाली तुम्हारी पत्नी अब तुम्हारे खिलाफ हो गई है। इसका क्या मतलब है? वह तुम्हारे खिलाफ क्यो हो गई है?

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत गोविन्दराव गुरजले
कृपा आश्रम
तिरुवणैन्नल्लूर (दक्षिण भारत)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४०३) से।

## ६०३. पत्र : के० जी० राखडेको

१५ सितम्बर, १९३५

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए वहुत धन्यवाद। मैंने श्री त्रिवेदीको सुझाव दिया है कि पैसा मुझे हस्तान्तरित कर दिया जाये। फिर तुरन्त मैं सालुकर स्मारक समितिके निर्माणके काममें लग जाऊँगा, ताकि न्यास कायम किया जा सके।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत के० जी० राखडे
छिंदवाडा

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य . प्यारेलाल

## ६०४. पत्र : नारणदास गांधीको

१५ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

पिताजी को मैं अलगसे पत्र लिख रहा हूँ।

'चरखा द्वादशी'में[1] सम्बन्धित पत्रक अच्छा है, किन्तु उसमें से तुम कितना करा पाओगे यह तो तुम्हारा विस्तृत विवरण मिलनेपर ही पता चल सकेगा। खादीके प्रति आजकल मध्यवर्गकी वहुत श्रद्धा देखने में नहीं आती, हालाँकि कुछ व्यक्तियोंकी श्रद्धा अवश्य वनी हुई है। मुझे तो तभी सन्तोष होगा, जब राजकोट-जैसे शहरमें तुम्हें अच्छी संख्यामें कातनेवाले मिल जायेंगे।

वहाँ कारखानेका जो सामान पड़ा हुआ है यदि तुम उसका उपयोग न करते हो तो मैं यहाँ आसानीसे उसका उपयोग कर सकता हूँ। किन्तु यदि उसका तुम्हारे लिए कोई उपयोग हो तो मैं उसके विना भी काम चला सकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७३ से भी; सौजन्य · नारणदास गाधी

१. भाद्र वदी २, विक्रम सम्वत् के अनुसार गाधीजी का जन्म-दिवस कताई-दिवस के रूप में मनाया गया था; जो १९३५ में २४ सितम्बर को पड़ा था।

## ६०५. पत्र : खुशालचन्द गांधीको

१५ सितम्बर, १९३५

आदरणीय भाईकी सेवामे,

आपकी तपस्या तो फलीभूत हुई। आप और अधिक तपस्या करते रहे और वह फलीभूत होती रहे ताकि मै आपके आशीर्वाद पाता रहूँ।

मोहनदासके दंडवत् प्रणाम

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## ६०६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ सितम्बर, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मणिलालका[1] तार मुझे भी परेशान कर रहा था। मैंने तो आखिर साथकी नकलके अनुसार पत्र लिखा है। अच्छा किया कि तुमने महादेवको रोक लिया। मेरी गाडी तो दिन-दिन अधिक देहाती बनती जा रही है। उसके मोटे-मोटे पहिये और सडकपर तीन-चार इंच मोटी धूलकी तहके बीचसे जब रास्ता तय करना है तो उतावली कैसी? मगर मैं आशा करता हूँ कि अब तो तुम मंगलवारको यहाँ पहुँच ही जाओगे। सिर्फ उसी दिन राजाजी यहाँ रहेंगे। शामको तुम उन्हे मुक्त कर देना।

सिन्धीके बारेमें तुम बेकार ही घबरा रहे हो। इस बारेमें मैं तुम्हे पूरी तरह सन्तुष्ट कर दूंगा।

. . .[2]का मामला निपट जाये तो अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १८९

१. मणिलाल कोठारी।
२. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

## ६०७. पत्र : मीराबहनको

[१६ सितम्बर, १९३५][1]

चि० मीरा,

इसे पढ जाओ और कोई सुझाव हो तो उसके साथ इसे लौटा दो। यदि इतनी मेहनतके लायक शक्ति शरीरमें महसूस न करो, तो मत पढना।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४८१) से, सौजन्य . मीराबहन। जी० एन० ९४८० से भी

## ६०८. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

१६ सितम्बर, १९३५

प्रिय राजेन्द्रबाबू,

मैंने अनिच्छासे अंग्रेजीमें लिखना शुरू कर दिया है। महादेव कल सरदार और घनश्यामदासके साथ लौट रहा है।

आपको चंगा हो जाना चाहिए और तब यदि आ सके तो जल्द ही यहाँ आ जाना चाहिए। देवदास प्यारेलालको नही भेज सकता। यदि आप न आ सकें, तो मुझे महादेवको आपके पास भेजना ही होगा। आप अकेले न छूट जायें। इसलिए तार द्वारा अपनी मंशा बतलाने की कृपा कीजिए।

बापू

[पुनश्च .]

मीराबहनको मलेरियाने बुरी तरह जकड़ लिया था। कलसे उसे बुखार नही रहा। चिन्ताकी कोई बात नही।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६८) से; सौजन्य . राजेन्द्रप्रसाद

१. जी० एन० रजिस्टरके अनुसार यह पुर्जा सितम्बर १९३५ में मौन-दिवसको लिखा गया था। इसके पाठ से स्पष्ट है कि यह मीराबहन के बीमारी से उठने के कुछ ही समय बाद लिखा गया था; देखिए अगले दो शीर्षक भी।

## ६०९. पत्र : अमृतकौरको

१६ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारे प्रिय पत्र मुझे हमेशा ठीक समयपर मिलते रहते हैं। ईश्वर तुमपर कृपालु हो। तुमको अपनी आँखोंपर बहुत ज्यादा जोर नही डालना चाहिए और उनको खराब नही कर लेना चाहिए।

डॉक्टर घरमें ही मौजूद है, इसलिए मेरा यह सुझाव देना उचित न होगा कि देवदास जितना लेना चाहे उससे अधिक भोजनका उससे आग्रह न किया जाये। ज्यादा अच्छा रहेगा कि उसे धीरे-धीरे ही आगे बढने दिया जाये। यह सब सामान्य व्यक्तिका सुझाव ही है और इसपर उतना ही अमल किया जाये जितनेके यह योग्य हो।

दो पत्र साथमें हैं।

सबको स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

मीरा ठीक हो गई है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५०) से। सौजन्य अमृतकौर, जी० एन० ६३५९ मे भी

## ६१०. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१६ सितम्बर, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। आज तो मेरे पास जरा भी समय नही है। एक तरफ मीराबहनकी खटिया पडी है और दूसरी तरफ नीमू, लक्ष्मी आदि भी यही है। और मै तो 'हरिजन'के काममे अन्य सोमवारोकी अपेक्षा अधिक व्यस्त हूँ। राजाजी और किशोरलाल मेरा एक महत्त्वपूर्ण लेख सुधार रहे है। इस बीच मै यह पत्र लिखे दे रहा हूँ। देवदास और बा शिमलामे है। अब देवदास कुछ ठीक है। प्यारेलाल उसकी सेवामे लगा है। चिन्ता करने की कोई बात ही नही है। राजाजी ने नवागत शिशुका नाम राजमोहन रखा है।

सरदार, घनश्यामदास और महादेव कल बम्बईसे यहाँ आ रहे है।

सीता और अरुणकी शिक्षाके बारेमे मै [अपने मतपर] दृढ हूँ। यह निश्चित मानना कि वे तुमसे जो पा सकते है वह उन्हे और कही नही मिल सकेगा। यदि उन्हे भली-भाँति तैयार कर दिया जाये तो बडे होनेपर उन्हे कुछ खास सीखना होगा तो वे स्वय ही सीख लेगे। मणिलाल जिस प्रकार खाने-पीनेके लिए समय निकालता है उसी प्रकार उसे प्रतिदिन एक निश्चित समय उनके लिए भी अवश्य निकालना चाहिए। मनुष्य अपने लिए नियम बना ले तो फिर तदनुसार आचरण करना सहज हो जाता है। जिस प्रकार हर सप्ताह 'इडियन ओपिनियन'का निबटाना तुम अपना कर्त्तव्य मानते हो, उसी प्रकार यदि बच्चोके शिक्षण-कार्य को अपना कर्त्तव्य मान लो तो समय निकल ही आयेगा।

एजेटसे रसाईसे जितनी बातचीत हो सके उतनी करना। यह मानकर कि एजेट का पद अभी बन्द होनेवाला तो है नही, उससे जितना सार्वजनिक काम लिया जा सके उतना लेना चाहिए। हम जैसे है उस अवस्थामे एकाएक कैसे परिवर्तन हो सकता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४३)से।

## ६११. पत्र : लीलावती आसरको

१६ सितम्बर, १९३५

मुझे इस वर्षके अन्ततक कही नही जाना है। अत अक्तूबरमे मै यही रहूँगा। पेंसिलसे लिखने के सम्बन्धमे तेरी शिकायत सही है। अबसे मै स्याहीसे ही सुधार किया करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०१०४ मे भी; सौजन्य लीलावती आसर

## ६१२. पत्र : बलवन्तसिंहको

मगनवाडी, वर्धा
१७ सितम्बर, १९३५

चि० बलवन्तसिंह,

देवीके सामने बकरीयोके भोगका बयान दु:खद है। हम इस सदीओकी भ्रमणा को क्षणमें दूर नही कर सकते, जबतक हमने लोग समझ सकते है ऐसी सेवा नही की तबतक हमारी बात सुनने के लिये उनके हृदय तैयार नही होगे। बुध्धिका विकास इससे भी कठीन है। और अहिंसक प्रवृत्ति-मात्र हृदयस्पर्शी रहती है, बुध्धिस्पर्शी कम हृदय-स्पर्श निस्वार्थ सेवासे बहुत जल्दी हो सकता है। इसलिये आज तो हमारे इन देवीओ को बकरीओका भोग चढानेवालो मे सेवाकार्य करना है। और मोका मिलने से उनका भ्रम दूर करायेंगे। याद रक्खो कि जो दृश्य तुमको अणपढ लोकोमे देखा वही दृश्य पढ़े हुए लोकोमे कलकत्तेमें देखने में आता है, और वहां बहुत पैयमाने मे।

दूसरी घटना भी उसी प्रकारकी[1] समझो, अगरचे इतनी दु:खद, इतनी असह्य नही है। उसमें भी इलाज वही है। मुझे पता नही कि कृष्णदास बीज, इत्यादि ले गया है कि नही, तुम्हारा खत उसके जानेके बाद मेरे हाथमें आया।

हा, जो मरीज दिल्लीसे आये है वह हरिश्चद्र ही है। डा० पिंगले मालीश इ० करते है उनको और हरिश्चंद्र दोनोको उमेद है कि वह अच्छे हो जायेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८८१) से।

१. बलवन्तसिंह ने एक महिला को सोने का एक आभूषण चोरी करने के आरोप में लोगों द्वारा तंग किये जाते देखा था। उनके बीच-बचाव करने और कहने-सुनने पर उसने आभूषण लौटा दिया था।

## ६१३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

मगनवाडी, वर्धा
१८ सितम्बर, १९३५

चि० ब्रिजकृष्ण,

इतने वर्षोंके बाद तुमने जो प्रश्न पूछा है वह आश्चर्य है। पापोके लिए क्षमा [का] अर्थ क्या है? और क्षमा कौन करे? क्यो करे? ऐसी भाषाका प्रयोग होता है सही, लेकिन ऐसी भाषा प्रयोग करते है उनको शका आती ही नही, क्योकि मनुष्य क्षमाका आरोपण करके शुद्ध बन जाता है। तात्विक दृष्टिसे पापका फल भोगना ही है। जो मनुष्य ज्ञानपूर्वक भोगता है वह दुबारा पाप नही करता है और शुद्ध हो जाता है। यही तो क्षमा है। क्षमाका अर्थ तो ऐसा कभी नही है कि मनुष्य पाप करता रहे और क्षमा मागता रहे। जिसके पापकी क्षमा हुई है वह दुबारा पाप करता ही नही, और करता है तो क्षमा हुई नही। दूसरी बात यह है कि हम प्रत्येक दर्दको पापकी सजा क्यो मानें? दर्दोको ईश्वरकी प्रसादी क्यो न समझे? अर्थात् दोनो अर्थ निकाल सकते हैं और दोनो अर्थके मार्फत हम आत्मोन्नति कर सकते हैं।

नायरने मुझे भी लिखा है। अब मैं ज्यादा दखल नही देता हू। तुम ही नायरको लिख दो। आश्रमके लिये उनकी खूब आवश्यकता जचे तो भले अभ्यास मौकुफ करके आ जाये। और आये तो उसको पूर्ण सत्ता दी जाय। और आर्थिक मदद चाहे सो दी जाय, सलाहके रूपमे जो कहना है सो कहा जाय। दिल चाहे सो करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३३) से।

## ६१४. पत्र : लीलावती आसरको

[१९ सितम्बर, १९३५के पश्चात्][1]

चि० लीलावती,

जिस प्रकार तुझसे देर हुई उसी प्रकार मुझसे भी दो दिनकी देर हुई है। तेरा अगला पाठ मैं भेज चुका हूँ। तुम सबने अच्छी मेहनत की है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४) से। सी० डब्ल्यू० १०५० से भी; सौजन्य लीलावती आसर

१. यह पत्र लीलावती आसरके १९ सितम्बर, १९३५ के पत्रके जवाबमें लिखा गया था।

## ६१५. पत्र : अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२० सितम्बर, १९३५

प्रिय अगाथा,

मैं इधर हफ्तोसे तुमको नही लिख पाया हूँ, हाँ, जब-तब दूसरोसे तुमको अपनी ओरसे लिखवाता जरूर रहा हूँ। यह सब उसके अलावा रहा जो महादेव और चन्द्रशंकरने तुमको लिखा होगा। जवाहरलालकी रिहाईके सिलसिलेमे तुम्हारी कार्रवाई बडी ही तत्परतापूर्ण और शानदार रही। तुमने बहुत ठीक कहा है कि वह कार्रवाई राजनीतिक कम और मानवतावादी अधिक थी। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि अधिकारियोने अवसरके अनुरूप चुस्ती दिखाई और पर्याप्त राहत देनेमें मिनट-भरकी भी देर नही होने दी। यहाँ भी हम अपनी ओरसे प्रयत्नमे लग गये थे। और फिर सारा मामला कितनी अच्छी तरह निबट गया। सतहपर दिखनेवाले चारो ओरके अन्धकार और अवसादके बीच जवाहरलालकी रिहाई एक प्रकाश-बिन्दुके समान चमक रही है। मै जानता हूँ कि तुम धन्यवाद नही चाहती। यदि चाहो तो गाडियाँ-भर धन्यवाद तुमको मिल सकते हैं। मै जानता हूँ कि तुमने जैसी पहल की है यदि न की होती तो मुझे घोर निराशा होती। तुमने अपनी ओरसे ऐसी ही तत्परतापूर्ण और निर्णायक कार्रवाई करने की आशा रखने का मुझे अभ्यस्त बना दिया है। फिर भी उन सभी लोगोको धन्यवाद अवश्य देना जिन्होंने तुम्हे सहायता दी और तुम्हारे कठिन उद्देश्यको इतने पूर्ण रूपसे सफल बनाया। विमान द्वारा बेडेनवीलर[1] पहुँचकर तुमने बहुत अच्छा किया। मै वहाँके तुम्हारे विवरणकी राह बडी उत्सुकता से देख रहा हूँ। यदि यह कहा जा सकता हो कि मनुष्य ईश्वरकी योजनाओमे कोई परिवर्तन कर सकता है तो निस्सन्देह कहना होगा कि जवाहरलालकी रिहाई इन सफल प्रयत्नोके परिणामस्वरूप ईश्वरकी योजनामें निश्चय ही कमलाके जीवनके दिन बढ गये है। लेकिन मै इस हदतक तो पुराने विचारोका आदमी हूँ ही कि मानूं कि ईश्वरकी इच्छाके बिना एक पत्ता भी नही हिलता [अर्थात् वही हुआ जो ईश्वरकी इच्छा थी]। उस स्थितिमे भी, यह सोचकर मुझे पर्याप्त सन्तोष प्राप्त होता है कि तुमने और अन्य मित्रोने ईश्वरकी योजना पूरी करने के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न किया और इसलिए जब तुम लोग अपना कर्त्तव्य करने मे लगे थे, अदृश्यमें ईश्वरके दूत कह रहे थे "शाबाश! बहुत अच्छा।"

१. कमला नेहरूको देखने के लिए।

घनश्यामदासको आज सुबह अचानक जाना पड गया। कल उनको एक तार मिला था कि उनकी माँ को बुखार हो गया है। नही तो वे यहाँ कमसे-कम चार दिन और ठहरते। लेकिन उन्होने वहाँके अपने कामका खासा अच्छा विवरण मुझे साराशमे दे दिया था। चार्लीने यहाँकी परिस्थितिके बारेमें तुम्हे सब-कुछ बतला ही दिया होगा। उसने जो बतलाया होगा उससे आगे मै और कुछ नही कह सकता। आशा है, इस समुद्र-यात्रासे उसे कुछ लाभ हुआ होगा। उसे विश्रामकी बडी जरूरत थी। मेरी बडी इच्छा है कि वह यहाँ तैयार की गई योजनाओके अनुसार ही चले, मतलब यह कि वह कैम्ब्रिज या ऐसी ही किसी दूसरी जगह रहे और वहाँ अपने आपको स्थायी किस्म की कोई चीज लिखने मे लगाये और जब कोई ऐसा विषय आये जिसके सम्बन्धमे केवल वही प्रकाश डाल सकता हो या मार्ग-दर्शन कर सकता हो तब वह तुम्हारे लिए सुलभ रहे। मुझे आशा है कि तुम इस योजनाको बढावा दोगी। मै जानता हूँ कि वह तुमको कितना मानता है। इसलिए यदि चाहो तो तुम उसके सम्बन्धमे 'मोहिनी' की भूमिका का सदा सफल निर्वाह कर सकती हो। अब मुझे लिखना बन्द कर देना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९२) से।

## ६१६. पत्र : जी० वी० गुरजलेको

२० सितम्बर, १९३५

प्रिय गुरजले,

तुम्हारा पत्र मिला। मै उसके बारेमे कुछ भी नही कहूँगा। बस, ईश्वरसे प्रार्थना करूँगा कि उन कठिन व्रतोको पूरा करने मे तुम्हारी सहायता करे।[1]

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३८४) से।

[1] देखिए "पत्र : जी० वी० गुरजलेको", १५-९-१९३५ भी।

## ६१७. पत्र : आनन्द टी० हिंगोरानीको

२० सितम्बर, १९३५

प्रिय आनन्द,

अगर मुझे समयसे तुम्हे पत्र भेज पाना है तो बोलकर ही लिखवाना पड़ेगा। विद्यापर बार-बार बीमारीका यह प्रकोप होना, यह बुरी बात है। आशा है, दिल्ली मे जो खास इलाज किया गया उससे उसे फायदा हुआ होगा। अगर तुम वालजीका[1] निमत्रण स्वीकार कर सको तो बेशक अच्छा रहेगा। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि तुम्हे कराचीके अपने हरिजन-कार्यसे उम्मीद है। खुद मै तो हरिजनोको कपड़े देनेका खर्चा लेनेके विरुद्ध हूँ। मै उन्हे गरीब-बेचारा मानने को तैयार नही हूँ। और अगर मुझे पहनने-ओढने की चीजें देनी पडती है तो मै हमेशा खादीका सहारा लेता हूँ। लेकिन सबके लिए एक ही नियम बना देना सम्भव नही है। इसलिए तुम्हे ऐसे हर मामलेमें अपने विवेकसे काम लेना चाहिए और या फिर जैसा तुम्हे ठीक लगे वैसा करना चाहिए या जयरामदाससे[2] पूछना चाहिए। और जब शका हो तो कुछ ऐसा करो जिससे गलती भी हो तो सही दिशामें हो।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

श्रीयुत आनन्द हिंगोरानी
फीरोजपुर

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे; सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टी० हिंगोरानी

१. वालजी गो० देसाई।

२. जयरमदास दौलतराम।

## ६१८. पत्र : भगवानजी ए० मेहताको

२० सितम्बर, १९३५

भाई भगवानजी,

जमनालालजी को लिखा तुम्हारा पत्र मैं उन्हे भेज दूंगा। तुम अपनी लडकियोके लिए छाँट-छाँटकर दौलतमन्द आदमी ही क्यो चुनते हो? देवचन्दभाई के बारेमे तुम्हारा पत्र मिल गया है। यह पत्र उन्हे भेजने से यदि वे तुमसे मिलनेवाले होगे तो भी नही मिलेगे। इसलिए मैंने तो उन्हे अलगसे ही पत्र लिख दिया है। इसका जो परिणाम निकलेगा, वह मैं सूचित कर दूंगा।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२७) से। सी० डब्ल्यू० ३०५० से भी, सौजन्य: भगवानजी ए० मेहता

## ६१९. पत्र : जमनालाल बजाजको

२० सितम्बर, १९३५

चि० जमनालाल,

सुनता हूँ कि तुम्हारे आनेकी तारीख आगे बढती जा रही है। अलमोडामे और अधिक रुकने के लिए बढ रही है, यह मुझे अच्छा लगता है। तुमको आराम करने की बहुत आवश्यकता है। वहाँ बैठे हुए भी तुम पूरा आराम ले सको यह तो सम्भव है नही। पत्र तो लिखने ही पडते होगे। लोग भी वहाँ मिलने-जुलने आते होगे और वहाँका काम तो है ही। उसके बावजूद जो परेशानी तुम्हे यहाँ उठानी पड़ती है वह वहाँ नही है, इस कारण जाडा शुरू होनेतक यदि तुम वहाँ रहो तो भी मुझे अच्छा लगेगा। फिर वहाँका जाडा तो प्रसिद्ध है। इससे भी अधिक अच्छा जाडा शिमलाका माना जाता है; और जाडेमें शिमलाका रहन-सहन वर्धासे भी सस्ता होता है। बगले नाममात्रके किरायेपर मिल जाते हैं। साग-सब्जी, फल वगैरह ढेरके-ढेर और सस्ते मिलते है और चारो ओरका दृश्य अत्यन्त आकर्षक होता है। सर्दी लोगोकी कल्पनामें ही होती है। लाहौरमे जितनी ठंड लगती है उसकी अपेक्षा वहाँ कम लगती है; इसलिए मैं तो तुम्हे सर्दियोमे वहाँ रहने की भी छुट्टी दे दूंगा।

तुम जहाँ रहोगे काम तो वहाँ भी करते ही रहोगे। पूरा एक वर्ष शांतिसे पहाड़पर बिता दो तो मेरा खयाल है कि तुम्हारा कानका दर्द शान्त हो जायेगा। मदालसाका शरीर अच्छा बन जायेगा और जानकी मैया अच्छी घुड़सवार बन जायेंगी बशर्ते कि वे अपनी हड्डियाँ न तोड ले। मै यह अवश्य चाहता हूँ कि तुम चरखा संघकी बैठकमें उपस्थित रहो। पर अगर तुम्हे सन्तोष हो तो मै तुम्हारी उपस्थितिके बिना भी काम चला सकता हूँ। हमने नयी नीतिके बारेमें काफी विचार-विमर्श कर लिया है। तुम्हे जो कहना हो सो तुम वहाँसे लिखकर भेज सकते हो। यदि खादी प्रतिष्ठान, मेरठ और कश्मीरके भंडारके विषयमें विचार करने की बात हो तो इनके बारेमे भी मेरे विचार बन चुके है।

इस सम्बन्धमें भी तुम अपनी राय भेज सकते हो और फिर जो हो जाये उसे सहन करो।

अब रही कांग्रेसकी कार्यसमितिकी बैठक। यदि तुम इसमे भी न आओ तो काम चल जायेगा। इस सबसे मै तुम्हे केवल इस शर्तपर मुक्त कर सकता हूँ कि यह सारा समय तुम किसी पहाडी स्थानपर बिताओगे। अगर तुम नीचे उतरते हो तो फिर दोनो बैठकोमें शामिल होना तुम्हारा धर्म हो जाता है। तुम जालधर जानेवाले थे सो क्या वहाँ नही गये? राधाकृष्ण[1] और सरदार ऐसा समझते है कि शायद तुम नही गये। अब सरदारको वहाँ जाना पडेगा। यहाँ सब ठीक चल रहा है। बालकोबा गौरीशंकरकी देखरेखमे केवल दूधका प्रयोग कर रहे है। अब ठीक है। इसके साथ भगवानजी का पत्र है। तुमने जिस आदमीके बारेमे लिखा था मैंने उससे मिलने को कह दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९७५) से।

## ६२०. पत्र : नारणदास गांधीको

२० सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा 'चरखा द्वादशी' का कार्यक्रम सफल हो। मेरे लिए खादीमे धर्म और अर्थ दोनो समाविष्ट है। और मै खादीका जो अर्थ समझता हूँ उसका वैसा अर्थ जो भी करेगा उसे भी वैसा ही अनुभव हुए बिना नही रहेगा। अत मै तो यह चाहता ही हूँ कि तुम्हारे यज्ञमें जितने अधिक लोग भाग लेगे, उस हदतक वे अपना और देशका कल्याण करेगे।

बापूके आशीर्वाद

१. जमनालाल बजाज के भतीजे।

[पुनश्च]

यदि जमनादास वहाँका काम-काज सभाल ले तो तुम्हारे लिए यहाँ मेरे पास काफी काम है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७४ से भी; सौजन्य . नारणदास गाधी

## ६२१. पत्र : पी० जी० मैथ्यूको

[२० सितम्बर, १९३५][1]

प्रिय मैथ्यू

समयकी इतनी तगी रहते हुए दाहिने हाथसे लिखना कितना कठिन है, यह क्या तुम समझ नही सकते?

बापू

अग्रेजीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## ६२२. पत्र : हीरालाल शर्माको

२० सितम्बर, १९३५

चि० शर्मा,

तुमको कोलबो पत्र भेजा उसके बादमे पत्र भेज ही नही सका हू। यो तो तुमारे अमरीकासे खत आनेके पहले लिखना ही क्या था? लेकिन ऐसा भी नही। मेरे दिलमे तो हमेशा तुमको लिखने का रहता था। मैं वखतके अभावसे भेज ही नही सका। दैव जाने अब यह कब मिलेगा। पोर्ट सुदानका तुमारा खत मिल गया। कोलबोका भी मिला था। दोनो आकर्षक थे। जैसे सुखसे दिन वहाँ कटे ऐसे ही अमरीकामे हो। जो किताब तुम्हे चाहिये उसकी पैरवी करूगा। मेरा कुछ ख्याल है कि अमरीका पहोचने के बाद उस किताबकी आवश्यकता शायद ही हो, तो भी मैं तजवीज करूगा।

1. साधन सूत्रमें यह पत्र नारणदास गाधीको लिखे गुजराती पोस्टकार्ड (देखिए पिछला शीर्षक) के नीचे लिखा हुआ है।

द्रौपदीका मुझे एक बहुत ही छोटा ख़त आया था। उसके बाद कुछ नहीं है। अगरचे मैंने उनको लिखा है। अमतुलसलामको बड़ी शिकायत है कि उसको भी कुछ ख़त नहिं मिलते हैं। तुमको तो मिलते होंगे। कुछ मुझे बताने का हो तो बताइए।

कन्याश्रमकी किताबोंके बारेमें छोटेलालसे बातें करने के बाद मैं लिखुंगा।

तुमारे ख़त तो नियमपूर्वक आते रहेंगे।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १९६-९७के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

## ६२३. टिप्पणियाँ

### एक भूल-सुधार

प्रो० मलकानीने पत्र लिखकर सूचित किया है कि हरिजन-दिवस इस महीनेकी २५ नहीं बल्कि २४ तारीखको मनाया जाना है, क्योंकि पूना-समझौते पर इसी तारीखको हस्ताक्षर हुए थे।[1]

### रेशम और ऊन

हाथके कते और हाथके बुने ऊनी और रेशमी कपड़े शुद्ध खादीसे जुड़े हुए हैं और इसे उनसे सहारा भी मिलता है। उधर इन दोनोंको कुछ-कुछ सहारा चरखा संघसे मिलता है — ऊनको खासकर काश्मीरमें, और रेशमको बंगालमें। अब सवाल यह उठ खड़ा हुआ है कि न्यूनतम मजदूरीका नियम ऊन और रेशमकी कत्तिनों पर कहाँतक लागू होता है। यह नियम तो खादीसे भी अधिक ऊन और रेशमकी कताई पर लागू होता है। ईश्वरकी कृपासे ये उद्योग आज भी अपने पैरोंपर खड़े रह सकते हैं। ऊनी और रेशमी कपड़ोंपर ज्यादा मुनाफा लिया जा सकता है, और इस तरह खादीकी कीमत घटाने में इनसे मदद मिलती है। इसलिए ऊन और रेशमकी कत्तिनोंको उचित मजदूरी देना हमारा एक ऐसा कर्त्तव्य है कि जिससे हम किसी भी कारणसे जी नहीं चुरा सकते। ग्रामोद्योग संघके प्रस्तावके पीछे जो विचार है और चरखा संघ जो प्रयत्न कर रहा है, उसका अर्थ यह है कि इन दोनों संघोंके कार्यक्षेत्रमें काम करनेवाले कारीगरों और मजदूरोंको कमसे-कम इतनी मजदूरी तो दी ही जानी चाहिए जिससे उनका गुजारा हो सके। और यह देखते हुए कि मजदूरीकी जो दर अन्तमें नियत की जायेगी वह न्यूनतम ही होगी, जहाँ भी सम्भव हो वहाँ न्यूनतम दरसे अधिक मजदूरी देनेकी ही प्रवृत्ति होनी चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि ग्रामोद्योग संघ और चरखा संघ किसी भी उत्पादकको प्रमाण-पत्र तब तक नहीं दे सकते जबतक कि वे अपने यहाँके कारीगरों व मजदूरोंका ठीक-ठीक रजिस्टर न रखें और कारीगरों और मजदूरोंको निश्चित दरसे मजदूरी देनेका सबूत

१. देखिए "हरिजन सेवक संघके प्रस्ताव", ७-९-१९३५ और "टिप्पणियाँ", १४-९-१९३५ भी।

न दे सकें। इसका यह भी अर्थ निकलता है कि उन ऊनी और रेशमी कपड़ोको, जो प्रमाण-पत्र प्राप्त उत्पादकोसे न खरीदे गये हो, कोई भी प्रमाणित खादी-भण्डार नही रख सकता।

## स्व० न्यायमूर्ति रानडे और चरखा

एक सज्जनने मेरे पास एक रोचक विज्ञापन भेजा है। स्वर्गीय न्यायमूर्ति रानडेने यह विज्ञापन ९ दिसम्बर, १८८० को भारतीय पत्रोमे प्रकाशित कराया था :

> हमारे देशके अनेक भागोंमें कपासकी खेती होती है, और अनेक जगहोंमें चरखेपर सूत कातने का उद्योग खासे बड़े पैमानेपर चल रहा है, क्योंकि चरखे पर कते सूतकी अब भी काफी ज्यादा माँग है। इन परिस्थितियोंमें, कताईकी रीतिमें अगर सुधार कर दिया जाये तो यह चीज गरीब और मेहनती लोगोंके लिए लाभदायक साबित हो सकती है। इसी उद्देश्यसे कताईके यन्त्रका यह विज्ञापन प्रकाशित किया जा रहा है। उस यन्त्रमें नीचे लिखे सुधार होने चाहिए :
>
> १. रुई साफ करने के लिए एक यन्त्र हो, जो या तो खुद चरखेका एक हिस्सा हो या उससे अलग चीज हो।
>
> २. बजाय एक धागेके उससे पाँच धागे निकलें और इस तरह सूतकी कुल उत्पत्ति पाँचगुनी बढ़ जाये।
>
> ३. सूत एकसार होनेके अलावा कमसे-कम इतना महीन कतना चाहिए जितने महीन सूतकी खादी बुनी जाती है। सूत इससे मोटा न हो।
>
> ४. यन्त्र मजबूत होनेके अलावा सादा होना चाहिए, और ठीक-ठीक तथा अविराम चलने लायक होना चाहिए।
>
> यह यन्त्र किसी संग्रहालयमें बतौर एक नमूनेके रखने के लिए नहीं चाहिए, बल्कि जब चलाया जाये तो वह हमेशा बिलकुल ठीक-ठीक काम दे। ये यन्त्र (ऊपर की गई फरमाइशके अनुसार) १५ मई, १८८१ के पहले आ जायें। उन सबकी जाँच निष्णात व्यक्तियों द्वारा कराई जायेगी। और जिस मशीनको परीक्षक पसन्द करेंगे उसके बनानेवाले को ५०० रुपयेका पुरस्कार दिया जायेगा।
>
> उस यन्त्रके निर्माताको हमारी माँगपर उचित कीमत लेकर २५ मशीनें तक देनेका जिम्मा लेना पड़ेगा, और उसे यह भी गारंटी देनी होगी कि चलने के चार महीनेके अन्दर अगर यन्त्र बिगड़ जायें, तो वह उन्हें ठीक कर देगा।
>
> इसलिए जो लोग इस प्रयोगको आजमाना चाहें, उन्हें तदनुसार इस विज्ञापनके प्रकाशनकी तारीखसे दो महीनेके अन्दर हमें लिखित सूचना दे देनी चाहिए।

श्री हट्टीबेलगलकर (जो नीचे हस्ताक्षर करनेवालोंमें से एक हैं) शुक्रवार पेठ, पूनासे खुद मिलकर अथवा उन्हें जवाबी पत्र लिखकर इस सम्बन्धमें विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

पूना शहर
९-१२-१८८०

(सही) श्रीनिवास शेषो हट्टीबेलगलकर
पेंशनर रिकॉर्ड कीपर, एस० डी०
(सही) महादेव गोविन्द रानडे

भारतके पत्रकारोंसे हमारा अनुरोध है कि इस विज्ञापनको वे अपने-अपने पत्रोंमें एकाधिक बार छापें, ताकि इसपर अधिकसे-अधिक लोगोंकी नजर पड़ सके।

जैसाकि स्व० गोखले कहा करते थे, रानडेकी तीक्ष्ण दृष्टिसे कोई भी चीज बच नही पाती थी, और जिस चीजसे उनके दीन-दुःखी देशवासियोको कोई लाभ पहुँच सकता था, उसे उन्होने कभी अपने मनमे नगण्य नही समझा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २१-९-१९३५

## ६२४. एक त्याग

१८९१ में जब मै इंग्लैंडसे लौटा तो अपने परिवारके बच्चोको लगभग अपनी ही निगरानीमें ले लिया और उनके साथ — बालक-बालिकाओ दोनोके — कन्धोपर हाथ रखकर घूमने की आदत भी डाल ली। ये बच्चे मेरे भाइयोके थे। उनके बड़े हो जानेपर भी यह सिलसिला जारी रहा। और जैसे-जैसे परिवारका विस्तार होता गया, यह सिलसिला भी बढते-बढते इस सीमातक पहुँच गया कि अब इस ओर लोगोका ध्यान खिचने लगा।

जहाँतक याद आता है, अभी कुछ साल पहलेतक मुझे इस बातका कोई एहसास नही था कि इस सिलसिलेको कायम रखकर मै कोई गलती कर रहा हूँ। लेकिन तभी साबरमतीमें एक आश्रमवासीने मुझसे कहा कि इस तरह आपका बडी उम्रकी लडकियो और स्त्रियोके कन्धोपर हाथ रखकर चलना श्लीलताकी लोक-स्वीकृत धारणाओके खिलाफ जाता है। लेकिन इस विषयपर अन्य आश्रमवासियोसे चर्चा करने के बाद मैंने इसे जारी ही रखा। हालमें दो सहयोगी वर्धा आये तो उन्होने कहा कि सम्भव है, आपकी यह आदत दूसरोके लिए एक बुरा उदाहरण बन जाये, इसलिए आप इसे छोड दीजिए। उनकी दलील मुझे जँची नही। फिर भी, मै इन मित्रोकी चेतावनीकी उपेक्षा नही करना चाहता था। निदान मैंने पाँच आश्रमवासियोसे इस पर सोच-विचार कर सलाह देनेको कहा। अभी वे विचार कर ही रहे थे कि एक निर्णायक घटना घटी। किसीने मुझे बताया कि विश्वविद्यालयका एक तेजस्वी छात्र

एकान्तमे एक लडकीके साथ, जो उसके प्रभावमे है, तरह-तरहका अमर्यादित व्यवहार करता है और दलील यह देता है कि वह तो उसे अपनी वहनकी तरह प्यार करता है और कुछ चेष्टाओ द्वारा अपने इस प्यारका प्रदर्शन किये विना उससे रहा ही नही जाता। अपने इस व्यवहारके तनिक भी कलुपित होनेकी वात सुनकर वह विगड उठता है। वह युवक क्या-क्या करता था, इसका वर्णन यदि मै कर पाता तो पाठक वेहिचक कहते कि उसके उस व्यवहारमे कलुप भरा हुआ था। उस पत्रको पढकर मै और उसे पढनेवाले दूसरे लोग इसी निष्कर्षपर पहुँचे कि या तो वह युवक पक्का पाखण्डी है या फिर घोर आत्म-प्रवचनामे पडा हुआ है।

खैर, इस जानकारीने मुझे विचारमे डाल दिया। दोनो सहयोगियोकी चेतावनी मुझे स्मरण हो आई और मनमें यह स्वाभाविक सवाल उठा कि यदि मुझे मालूम हो कि वह युवक अपने बचावमे मेरी आदतकी नजीर पेश कर रहा है तो मुझे कैसा लगेगा। यहाँ मै यह वता दूँ कि जिस लडकीके साथ युवक ऐसी हरकते करता है वह यद्यपि उसे सर्वथा निष्कलुष और भ्रातृवत् मानती है, किन्तु ये हरकते उसे पसन्द नही है, वल्कि इनपर वह आपत्ति भी करती है, लेकिन उसे रोकने का साहस उसमे नही है। इस घटनासे मै जिस आत्म-चिन्तनमे प्रवृत्त हुआ, उसके परिणामस्वरूप उस पत्रको पढने के दो-तीन दिनोके अन्दर ही मैने यह आदत छोड़ दी और इस महीनेकी १२ तारीखको मैने वर्धा आश्रमके निवासियोके समक्ष इसकी घोषणा भी कर दी। ऐसा नही कि यह निर्णय करते समय मेरा मन दुःखी नही हुआ। जव मै उस तरह घूमा करता था उसके दौरान या उस आदतके कारण मेरे अन्दर कभी भी कोई अपवित्र विचार नही जगा। मेरा वह आचरण किसीकी नजरसे छिपा हुआ नही था। मै मानता हूँ कि मेरा वह आचरण पिताके जैसा था और उसके कारण मेरे मार्ग-दर्शन और अभिभावकत्वमे रहनेवाली अनेक लडकियाँ मुझे अपना इतना विश्वास दे पाई जितना उनसे शायद किसीको नही मिला होगा। मै ऐसे ब्रह्मचर्यमे तो विश्वास नही करता जिसके निर्वाहके लिए स्त्रीका पुरुपके स्पर्शसे और पुरुपका स्त्रीके स्पर्शसे बरावर बचते रहना आवश्यक हो और तनिक-सा प्रलोभनका प्रसग आते ही वह भग हो जाये, किन्तु साथ ही मै जैसी आजादी वरतता रहा हूँ उसमे समाये खतरोसे भी मै बेखवर नही हूँ।

इसलिए ऊपर मैने जिस जानकारीका उल्लेख किया है उसके प्राप्त होते ही मुझे यह आदत छोड देनी पडी, चाहे वह अपने-आपमे जितनी भी निष्कलुष रही हो। मेरे हर कामपर हजारो स्त्री-पुरुपोकी निगाह लगी रहती है, क्योकि मै एक ऐसा प्रयोग कर रहा हूँ जिसके लिए लगातार चौकसी रखना जरूरी है। मुझे ऐसा काम करने से वचना चाहिए जिसका औचित्य सिद्ध करने के लिए दलील देनेकी जरूरत पडे। मेरा वह व्यवहार कोई ऐसा उदाहरण नही था जिसका चाहे जो अनुकरण करने लगे। इस युवकके मामलेने मेरे लिए एक चेतावनीका काम किया है। इस चेतावनीको मैने इस आशासे स्वीकार किया है कि जिन लोगोने मेरे दृष्टान्तसे प्रभावित होकर अथवा उससे प्रभावित हुए विना इस दृष्टिसे कोई भूल की होगी वे

मेरे इस त्यागके परिणामस्वरूप उसे सुधार लेंगे। निर्दोष युवावस्था एक अमूल्य निधि है। इसे क्षणिक उत्तेजनाके लिए, जिसे आनन्दकी गलत सज्ञा दी गई है, व्यर्थ नही गँवाना चाहिए। और इस प्रसगमे जिस कमजोर दिल लडकीका उल्लेख हुआ है वैसी लडकियाँ इतना साहस तो अवश्य बटोरे कि वे उन युवकोकी हरकतोका, चाहे वे अपनी हरकतोको जितना भी निर्दोष बताते हो, विरोध कर सके जो या तो घोर कपटी है या जिन्हे यही नही मालूम कि वे सचमुच क्या कर रहे है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २१-९-१९३५

## ६२५. गुड़-परिरक्षण[1]

ध्यातव्य — यह सच है कि गुडको बहुत दिनोतक, खासकर बरसातके मौसममें सुरक्षित रख पाना कठिन है, लेकिन मुझे एक सज्जनने, जिन्हे मेरी समझसे जानकार व्यक्ति मानना चाहिए, बताया है कि राबको, अर्थात् उबालकर गुड बनाने के लिए निकाले गये ईखके रसको, चाहे जितने दिन रखा जा सकता है और ऐसा माना जाता है कि उसे इस तरह सुरक्षित रखने से उसकी गुणकारिता और बढ जाती है। ईखकी फसल शुरू हो, उस समय यह प्रयोग करके देखने लायक है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २१-९-१९३५

१. यह महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक-पत्र) के साथ एक टिप्पणी के रूप में प्रकाशित हुआ था। इस साप्ताहिक पत्र में महादेव देसाई ने एक अनुभवी डॉक्टर से हुई अपनी बातचीत का वर्णन किया है। उक्त डॉक्टर पहले मदिरा-पान, मांस-भक्षण और धूम्रपान किया करते थे, किन्तु समय रहते सचेत हो गये और मदिरा तथा धूम्रपान का पूरा त्याग कर दिया और मांसाहार भी लगभग छोड ही दिया। अब वे अध-कुटे चावल, हाथ-चक्की के पिसे आटे और साग-भाजी तथा ताजे दूधपर रह रहे थे। बातचीत के दौरान उन्होंने सुझाया था कि हरिजन में गुड के महत्त्वपर जोर दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह चीनी से तो हर तरह से श्रेष्ठ है और ग्लूकोज आदि विदेशी चीजों से बहुत सस्ता भी; लेकिन कठिनाई सिर्फ यह है कि हमारी कुछ चीजें ज्यादा दिनोंतक रखी नहीं जा सकतीं।

## ६२६. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
२२ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

ये तीन पत्र लिखकर तुमने बडा अच्छा किया। उनसे हमे कमलाके बारेमें सारी जानकारी ठीक-ठीक मिल गई। मुझे आशा है कि तुम फिलहाल यह सिलसिला जारी रखोगे। मैंने जनताकी माँगको देखते हुए ही तुमको तार दिया था कि हररोज तार भेजते रहना। पर हालतमें कोई परिवर्तन न होनेके कारण तुमने तार न भेजकर ठीक किया, प्रेषक का नाम न देकर भी ठीक ही किया। वहाँ तुम्हारी उपस्थिति जिस प्रकार कमलाके लिए अमृत-स्वरूप है उसी प्रकार तुम्हारे मित्रोको यहाँ उससे बडा सन्तोष मिला है। मैं इस हवाईडाकसे कमलाको अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ।

तुम्हारी पाण्डुलिपि देखना बस शुरू ही करने जा रहा हूँ। सिद्धान्तोके निरूपणके मामलेमे तुमसे सहमत होनेमे मुझे कोई कठिनाई नही दिखती। पर ठोस परिस्थितिके स्तरपर आनेपर हम सामान्यतया उसी भाषाका प्रयोग करते है जो मैंने प्रयुक्त की है। काग्रेस अब एक इतना बडा सगठन बन गया है कि उसका पूरा सचालन किसी भी एक व्यक्तिके बसका नही रह गया है। लेकिन किसीको दायित्व तो सँभालना ही पडेगा। और जनता कुछ-न-कुछ मार्ग-दर्शन चाहती है। मैंने इसीलिए पूछताछ की है।[1] तुम यदि निर्वाचित हो जाते हो, तो वह उस नीति और उन सिद्धान्तोकी खातिर ही होगा जिनके तुम पक्षधर हो। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे बतला दो कि तुम काँटोका यह ताज पहनने के उम्मीदवारके रूपमे अपने नामका प्रस्ताव रखने की अनुमति दोगे या नही।[2]

मैं समझता हूँ कि कमलाकी हालतकी ज्यादा ठीक जानकारी मिलनेतक इंदिरा अभी तुम्हारा इन्तजार करेगी।

मैं काग्रेसका सविधान भेज रहा हूँ।[3] यदि तुम इसपर ध्यान देनेकी स्थितिमे हो, तो मैं चाहूँगा कि तुम इसके बारेमे सोच-विचारकर अपनी आलोचना मुझे लिख भेजो।

१. देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", ४-९-१९३५ और १२-९-१९३५।

२. देखिए परिशिष्ट ४ और ५ भी।

३. इसमें महादेव देसाईने जोड़ा था "संविधान को डाक से भेजने के लिए जरूरी डाक-टिकट खरीदने का समय नही रह गया था। इसे अगली हवाईडाक से भेजा जायेगा।"

जहाँतक कांग्रेसकी वर्तमान नीतिका सम्बन्ध है, मैं उसके ब्योरेवार अमलके लिए तो किसी भी तरह जिम्मेदार नही माना जा सकता, पर उसे यह रूप मुख्यतः मैंने ही दिया है। वह बहावके साथ वह चलनेकी नीति नही है। वह शान्तिपूर्ण कार्रवाईको दृष्टिमे रखकर जनताकी शक्तिको एकजुट करने के एक ही मुख्य विचार पर आधारित हैं। लेकिन तुम्हारी अनुपस्थितिमे हम बस किसी तरह घिसटते रहे हैं। अब चूंकि तुम रिहा हो गये हो, तुमको मार्ग-दर्शन करना है और अपने उन पुराने सहयोगियोको साथ लेकर चलना है जो तुम्हारा हार्दिक समर्थन करे। जहाँतक मैं समझता हूँ, वे जहाँ तुम्हारा अनुगमन नही कर पायेंगे वहाँ भी तुम्हारा विरोध नही करेंगे। तुम वहाँ कमलाकी शुश्रूषामें लगे हुए हो, इसलिए इस तरहकी और अधिक चर्चा करके मुझे तुमको परेशान नही करना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

जवाहरलाल नेहरू
हेम्स वाल्डेक
बेडेनवीलर, बेडेन, जर्मनी

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५; सौजन्य . नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। फाइल सं० ३००१/एच०, पृ० ३/५, पुलिस कमिश्नर कार्यालय, बम्बई से भी

## ६२७. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२२ सितम्बर, १९३५

चि० नरहरि,

रामजीभाई का पत्र इसके साथ है। लगता है कि फिर कही कोई गलतफहमी हुई है। जो आवश्यक हो सो करना और मुझे सूचित करना। आशा है, गोशाला अच्छी तरह चल रही होगी। यदि सरदारको समय मिल जाये तो वेलचन्दके मामले को निबटा लेना। आशा है, वनमाला ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०६८) से।

## ६२८. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
२३ सितम्बर, १९३५

दुबारा नहीं पढ़ा

प्रिय अमृत,

चौधरीको लिखे तुम्हारे पत्रने प्रभाव दिखाया है। उसने पत्रको बहुत ठीक भावनासे ग्रहण किया है। क्षमा-याचनाका तो कोई प्रसग था नही। मगनवाडी तुम्हारा घर है और यदि तुम अपने ही घरमे अपने लोगोसे ही खरी-खरी बातें नही कर सकती, तो फिर कहाँ करोगी? अवसर आनेपर तुमको फिर यही करना चाहिए।

यह आकार विशेषकर तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। लेकिन तुम मुझे इसके बारेमे अपने विचार अवश्य बतलाना। जिनसे बास आने लगी हो, उनके लिए तुमको कोई कीमत नही देनी पडेगी। क्या हवामे रखने और धूप दिखाने से बास चली गई है?

पुरीको अपनी ब्योरेवार आलोचना अविलम्ब भेज देनी चाहिए। यहाँ आने तक नही रुकना चाहिए। मुझे अँधेरेमे नही रखना चाहिए।

मै तुम्हारे भेजे हुए सेब खूब डटकर खा रहा हूँ। मुझे उनकी जरूरत भी थी। सेबो और मुसम्मियोने दवाका काम किया है।

मीराको बुखारसे छुटकारा मिल गया है। लेकिन अब भी बहुत कमजोरी है और उसका पाचन-तत्र जैसा चाहिए वैसा काम नही करता। उसे ईनोज फ्रूटसाल्टकी काफी बडी मात्रा लेते रहनेपर भी पेटकी सफाईके लिए एनिमा लेना पडता है। पर उसके बारेमे चिन्ताकी कोई बात नही।

तुम दोनो जबतक प्यारेलालको दूध और अपने यहाँका उतना बढिया मक्खन लेनेको तैयार नही कर लेते, तबतक न तो तुमको परिचारिकाके और न शम्मीको ही एक अच्छे चिकित्सकके रूपमे पूरे नम्बर दिये जायेंगे।

मैंने 'हरिजन' मे सर्प-दशके बारेमें जितनी-कुछ सामग्री दी है[1] क्या उसमे जोडने के लिए शम्मीके पास और कुछ है? क्या जहरीले और गैर-जहरीले साँपोको अलग पहचानने का कोई आसान तरीका है? क्या वह इस विषयपर किसी पुस्तककी सिफारिश करेगा?

उसके खयालसे कुमारप्पा कबतक स्वस्थ होकर वहाँसे छुट्टी पा सकेगा?

१. देखिए "सर्प-विष", १७-८-१९३५।

तुम्हारे अतिथियो[1] (!) के लिए कुछ पत्र भेज रहा हूँ।

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च :]

तुम पहाड़ोसे नीचे उतरकर कब आनेवाली हो? तुमको बीमारोंकी खातिर शिमलामें अपनी निश्चित अवधिसे अधिक नही रुकना चाहिए।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५१) से, सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६३६० से भी

## ६२९. पत्र : नारणदास गांधीको

२३ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे हर्षके अश्रु-बिन्दु मैं तुम्हारे पत्रमें देख पाता हूँ। आज मेरी जो स्थिति है, यदि मैं उसी स्थितिमें आँखें मूँदूँ तो तुम हर्षके ऐसे और अधिक अश्रु-बिन्दु गिराना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७५ से भी, सौजन्य: नारणदास गांधी

## ६३०. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

२३ सितम्बर, १९३५

चि० पुरुषोत्तम,

तेरा पत्र मिला। यदि मैं तुझे पहचानता न होता तो तेरा पत्र न मिलनेपर मुझे बुरा ही लगता। किन्तु यह मानकर मैं अपनेको सान्त्वना दे लेता हूँ कि तूने किसी सदुद्देश्य — या तो अपना या मेरा समय बचाने — के कारण ही मुझे पत्र नही लिखा। अपने स्वभावके अनुसार तो मैं यह चाहूँगा कि तेरे-जैसे लोग मुझे पत्र लिखते रहें क्योंकि इस प्रकार मैं तुझे कही अच्छी तरह पहचान सकता हूँ और पहचान ही नही सकता बल्कि मदद भी कर सकता हूँ।

१. प्यारेलाल, कुमारप्पा और देवदास।

काठियावाडमें चल रहे हरिजन-कार्यका विवरण अभीतक मैं पढ नहीं पाया हूँ हालाँकि पढने की इच्छा तो है। तूने छगनलालके बारेमें जो लिखा है उससे मैं चौंका हूँ। वहाँका हरिजन-कार्य बिगडना नहीं चाहिए। और इस काममें जीवनलाल की दिलचस्पी घटने की बात भी पुसाती नहीं। क्या तू कोई सुझाव दे सकता है? तेरा पत्र मिलने के बाद अब यह कैसे हो सकता है कि मैं शान्त होकर बैठा रहूँ। तूने जो लिखा है क्या मैं छगनलालको उसकी सूचना दे सकता हूँ?

क्या यह माना जा सकता है कि तू अब बिलकुल स्वस्थ हो गया है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

## ६३१. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

वर्धा
२४ सितम्बर, १९३५

प्रिय सतीशबाबू,

मलकानीके साथ आपका पत्र-व्यवहार मैं पढ गया हूँ। मैं उसके नाम अपने पत्रकी एक प्रति सलग्न कर रहा हूँ। इसीसे सारी बात पता चल जायेगी। शर्माके बारेमें यह है कि हम दोनोंने एक ही दिन एक-दूसरेको अपने-अपने पत्र डाकसे रवाना कर दिये। विश्वनाथको अपने ऊपर काबू पानेमें मदद देनी पडेगी।[1] मैं ऐसा तो नहीं मानता कि मैंने उसे तनिक भी समझ लिया है, पर अन्नदाके साथ हुए पत्र-व्यवहारसे मेरे मनपर कुछ ऐसी छाप पडी है कि उसकी गिनती आपके विश्वस्त कार्यकर्त्ताओंमें है। लेकिन वह बात ठीक हो या गलत, उसके प्रति लापरवाहीके कारण वह भटक जाये ऐसा नहीं होने देना है। इसलिए यदि वह मेरे पास अकेला आनेको तैयार न हो तो चाहे आपको अपने कामकी थोडी उपेक्षा ही क्यों न करनी पड़े, उसे अपने ही साथ ले आइए। लेकिन यह तभी जब आप समझते हो कि मेरे साथ रहने से उसका रोग और बढने की सम्भावना नहीं है। यह आपको सिर्फ यह जतलानेके लिए लिख रहा हूँ कि मैं उसकी मानसिक दशाको लेकर चिन्तित हूँ। उसके लिए कौन-सा इलाज ठीक रहेगा, इसका अन्तिम रूपसे निर्णय तो आपको ही करना चाहिए।

बापू

श्रीयुत सतीशबाबू
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७३०) से।

1. देखिए "पत्र : विश्वनाथको", १४-९-१९३५।

## ६३२. पत्र : बी० जी० खेरको

२४ सितम्बर, १९३५

प्रिय खेर,

यह पत्र तो मुझे जब स्वामी यहाँ था तभी लिखना चाहिए था, लेकिन लिख ही नही पाया और फिर ध्यानसे बिलकुल उतर गया। कल दोपहर बाद स्वामीका याददिहानीका पत्र मिला तो याद आया। जो-कुछ ठक्कर बापाने लिखा है और मैंने स्वामीको बताया है उसके बीच मुझे कोई अन्तर्विरोध नही दिखता। हरिजन सेवक संघ पंढरपुरमें जायदाद रखने का प्रत्यक्ष दायित्व नही ले सकता, लेकिन वह अधिकांश न्यासी मुहैया करेगा और जैसे-जैसे किसी भी कारण से स्थान खाली होंगे, आगे भी करता रहेगा। इसके पीछे विचार यह है कि संघको कोई आर्थिक दायित्व अपने सिर नही लेना चाहिए। जब वह ऐसे न्यासी नियुक्त कर देगा जो जायदादकी व्यवस्था आर्थिक तथा अन्य दृष्टियोसे भी कर सकेंगे तो उसका दायित्व पूरी तरह निभ जायेगा। यह विचार मेरी सलाहपर अपनाया गया। संघको जितनी सम्पत्ति दी जा रही है उसकी देखभाल करने के लिए उसके पास काफी कार्यकर्त्ता नही है। पंढरपुरका यह सुझाव इसलिए विचारार्थ स्वीकार किया गया कि आपकी और स्वामीकी उसमे रुचि है और आप दोनोका दातासे सम्बन्ध है और मै मानता हूँ कि अस्पृश्यता तथा अन्य विषयोमें उसके विचार काफी प्रगतिशील और उदार है तथा वह अस्पृश्यताके विरुद्ध संघके आन्दोलनका पूरा समर्थन करता है। आशा है, बूवाकी दृष्टिसे इतना सन्तोषजनक है और यह सब बता देनेसे बात काफी स्पष्ट हो जाती है। अगर और कुछ स्पष्ट करना जरूरी हो तो लिखने में संकोच न करे। श्री कावड़े दो दिन यहाँ रहे थे और उन्हीसे मालूम हुआ कि अक्तूबरके पहले हफ्तेमे बूवाके वर्धाके आसपास कही रहने की आशा है। अगर ऐसा हो तो आप उससे कहे कि वह कुछ दिन मेरे साथ गुजारे ताकि मै व्यक्तिगत स्तरपर उसे जान सकूँ और पंढरपुरकी धर्मशालाकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे उसकी इच्छा समझ सकूँ। स्वामी और कावड़ेसे मेरी जो बातचीत हुई उसकी दृष्टिसे मै यह सलाह दूंगा कि न्यासका दस्तावेज तैयार करते हुए आपको न्यासियोको रेहन, हस्तान्तरण आदिका पूरा अधिकार देना चाहिए। हाँ, इस बातका ध्यान तो रखना ही होगा कि उसका उपयोग केवल हरिजनोके लाभके लिए ही किया जाये। मैंने स्वामीको समझा दिया है कि मै न्यासियोको यह अधिकार सौंपा जाना दस्तावेजका महत्त्वपूर्ण अंश क्यो मानता हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य प्यारेलाल

## ६३३. पत्र : वालजी गो० देसाईको

२४ सितम्बर, १९३५

चि० वालजी,

बहुत ज्यादा काम होनेके कारण मैं तुम्हें नहीं लिख सका। मुशीकी रचना न आकर्षक है और न अश्लील। उनके द्वारा ब्रह्मचर्यका मजाक उड़ाने में मुझे कोई बुराई नहीं लगी। प्रस्तावना लिखने के पहले मैं लगभग पूरी कृति पढ़ गया था। मुझे उनका प्रयास अच्छा लगा था। बात यह है कि मुशीको मैं व्यक्तिगत रूपसे जानने लगा हूँ इसलिए मैं उनका पक्षपात करने लगा हूँ। उनमें त्यागकी शक्ति है। वे मुझे सच्चे व्यक्ति लगते हैं। किन्तु उसका यह अर्थ नहीं कि मुझे उनकी सभी बातें पसन्द आती हैं। लेकिन हमें सभी लोगोंको अहिंसक अर्थात् उदार दृष्टिसे देखना चाहिए, यहाँतक कि सबको उनकी सीमाके अनुसार आँकना चाहिए। इतनेमें तुम्हें सभी प्रश्नोंके उत्तर मिल गये न? तुम्हारा लेख मिल गया है। आशा है, तुम सब आनन्दपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७४) से, सौजन्य वा० गो० देसाई

## ६३४. सन्देश : जन्म-दिवसपर[1]

[२४ सितम्बर, १९३५ या उसके पश्चात्][2]

अगर हम पूरा वर्ष सोकर गँवा दें तो कुछ समयके लिए इस तरह जोश-जनून दिखाने से क्या फायदा? अब तो प्रत्येक मजदूरको आठ घंटेतक एक विशेष मापदण्डके

१ और २. महादेव देसाई के "वीकली लेटर" (साप्ताहिक-पत्र) से उद्धृत। इस पत्र में महादेव देसाई ने सूचित किया है कि "कुछ वर्ष पूर्व जब गांधीजी को मालूम हुआ कि उनका जन्म-दिन सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है" तब उन्होंने कहा कि 'यह दिन दरिद्रनारायण के हित सूत कातकर मनाया जाये।' तब से इस दिन किसी-न-किसी प्रकार का खादी-कार्य किया जाता रहा है। इस वर्ष उनके हिन्दू [विक्रम] संवत्‌वाले जन्म-दिन और ईस्वी सन्‌वाले जन्म-दिन में नौ दिनों का अन्तर था। लोगों ने उस दिन अपना सारा समय अतिरिक्त कताई करने या खादी बेचने अथवा खादीके लिए चन्दा इकट्ठा करने में लगाया। चूँकि २४ तारीख को (अर्थात् हिन्दू सन् के अनुसार उनके जन्म-दिवस को) हरिजन-दिवस भी पड़ा, इसलिए भारत के कई स्थानोंपर हरिजनों की विशेष सेवा करने की कोशिश की गई। लेकिन गांधीजी इतने से ही सन्तुष्ट होनेवाले न थे। . . ."

अनुसार काम करने के लिए एक न्यूनतम मजदूरी सुलभ कराने का निश्चित आदर्श हमारे सामने है। इसलिए हममें से कुछ लोगोको अकेले-अकेले अथवा कईको साथ मिलकर प्रतिदिन आठ घटे कातने का प्रयत्न करना चाहिए, और साथ ही प्रत्येक व्यक्ति और प्रतिदिनकी कताईका नियमित हिसाब रखना चाहिए, ताकि उसके आधार पर एक मानक औसत कताईका अनुमान लगाया जा सके। . मेरे दीर्घायु होनेकी आपकी कामनाके पीछे जो गहरी भावना है, उसे मैं समझता हूँ। लेकिन आप तो भली-भाँति जानते हैं कि मनुष्य चाहे जितना प्रयत्न करे, सिरजनहारने मेरी जितनी आयु निश्चित कर रखी होगी, उसमें एक क्षण भी नही जुड़ सकता। तथापि, जबतक साँस है, हम एक-दूसरेके कल्याण और दीर्घायुके लिए प्रभुसे प्रार्थना करते रहेंगे और अन्य प्रकारसे भी तदर्थ प्रयत्नशील रहेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १२-१०-१९३५

## ६३५. पत्र : भुजंगीलाल छायाको

मगनवाड़ी, वर्धा
२५ सितम्बर, १९३५

चि० भुजंगीलाल,

तुम्हारे पत्रका उत्तर विलम्बसे दे रहा हूँ। हरिलालसे मिलने का प्रयत्न करना ही नही चाहिए। अपने भविष्यका निर्णय तुम्हें स्वयं ही करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६०५) से।

## ६३६. पत्र : छगनलाल जोशीको

२५ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। बलवन्तराय द्वारा दिखाई गई उपेक्षाकी बात पढकर भी मेरा दुःख हलका नही होता। यदि तुमने उसे मेरा पहला पत्र पढवाया हो तो उससे वैसा कहना या लिखकर सूचित करना। भंगियोके मकान विलम्बके बावजूद सन्तोष-जनक ढंगसे पूरे हो गये, यही बधाईकी बात है।

क्या तुम्हें भावनगरमें दक्षिणामूर्त्ति की मार्फत ऐसा कोई व्यक्ति नही मिल सकता जो भंगियोको ऋणसे मुक्ति दिलाने का काम हाथमें ले सके? वालजी का [भतीजा] रसिक शामलदास कॉलेजमें पढता है। कॉलेजके विद्यार्थी अध्ययन करते हुए मौन

भावसे समाज-सेवा करते दिखाई देते है। जरा रसिकको लुभाकर तो देखो! यदि वह इस काममे हाथ डाले तो शायद अपने साथी मित्रोको भी आकर्षित कर सके।

पन्द्रह मन हड्डियोसे एक टोकरा खाद भी नही निकली, इसका मतलब यह हुआ कि उन्हे आवश्यकतासे अधिक जलाया गया था। हड्डियाँ सिर्फ 'चार'[1] की जानी चाहिए, अर्थात् उन्हे इतना ही जलाना चाहिए कि वे काली पड जाये। कोयला बनाते समय लकडियोको जितना जलाया जाता है उसकी अपेक्षा हड्डियोको कम जलाना चाहिए। ऐसा करने से हड्डियोका वजन मुश्किल से ही कम होता है। मैंने स्वय खाद बनाकर देखी है। इस प्रयोगका प्रदर्शन मगनवाडीमे किया गया था। और अब नालवाडीमे समय-समय पर ऐसा किया जाता है। ईंधनके लिए काटकर निकाली हुई वाडकी सूखी टहनियो-जैसी चीजोका प्रयोग किया जाता है। लकडी इस्तेमाल नही करनी चाहिए, और रहठा (अरहर आदिका जलावन) तो इस्तेमाल किया ही नही जा सकता। घासके तिनकोकी बजाय अधिक टिकनेवाला ईंधन काममें लाया जाता है, ताकि पूरी तरह जल जानेके बावजूद वह हड्डियोको न जला सके। यह याद रखना चाहिए कि हमें हड्डियोका कोयला भी नही बनाना है। 'चार' करने का मतलब हड्डियोको काला-भर करना है। वे धुआँ छोड़ने लगे, इससे थोडा ही और आगे बढना है। इस प्रकार जलाई गई हड्डियोमे से थोडे-से नाइट्रोजनके सिवा और कुछ भी नही उडता। फास्फोरस तो बिलकुल नष्ट नही होता। यदि फास्फोरस निकल जाये तो हड्डियोका सार-तत्त्व ही नष्ट हो जाता है। थोडी-सी हड्डियाँ इकट्ठी कर तुम स्वय दो-चार बार प्रयोग करके निपुणता प्राप्त कर लो। कही तुमने पन्द्रह मन हड्डियाँ एक साथ जलाने का प्रयत्न तो नही किया न?

हड्डियो और आटे आदिकी मिले तो खुलती ही रहेगी और यह भी सही है कि लोग उनपर टूट पडेगे। किन्तु बडी सख्यामे व्यभिचारियोके फैल जानेके बावजूद ब्रह्मचारी मेरुकी भाँति अविचल रहता है न? या इससे भी आगे बढकर देखे तो मृत्यु सभीके सिरपर झूल रही है किन्तु फिर भी सारी दुनिया मौतके दिनको दूर रखने का स्तुत्य प्रयत्न करती है न? इसी प्रकार यदि हम भी प्रयत्न करना अपना कर्त्तव्य समझे, फिर भले हम बार-बार असफल ही क्यो न होते रहे, इसके बावजूद हम निडरता और श्रद्धापूर्वक तथा प्रफुल्लित चित्तसे अपना काम करते ही रहे। लाभाश देनेकी सामर्थ्यमे मिलोकी सफलता निहित है, किन्तु हमारी सफलता हमारे कार्य करने मे ही है। पुरुषार्थी फलकी आशा करता ही नही। रेलगाडीमे बैठकर हरिद्वार जानेवाला तनिक भी पुरुषार्थ नही करता। किन्तु कन्याकुमारीसे जमनोत्री तककी पद-यात्रा करनेवाले के बारेमे यह कहा जा सकता है कि वह कुछ पुरुषार्थ करता है। मैंने यहाँ 'कुछ' विशेषणका प्रयोग किया है क्योकि जमनोत्री पचेन्द्रियगोचर है। ग्रामोद्योग-सम्बन्धी हमारा पुरुषार्थ भी इसी प्रकारका है। सच्चा पुरुषार्थ तो अगोचर वस्तुके बारेमे ही हो सकता है। विमानोका प्रचलन होनेपर भी पैरोकी आवश्यकता बनी ही रहेगी। इसी प्रकार असख्य मिले हो जानेके बावजूद ग्रामोद्योगोकी उपयोगिता

1. झुलसाना; मूल में अग्रेजी शब्द का प्रयोग किया गया है।

बनी ही रहेगी। और जैसे विमानोंकी संख्या बढ़ जानेपर शरीरसे काम न लेना मूर्खता होगी उसी प्रकार मिलोंके बढ जानेपर ग्रामोद्योगोंको छोड देनेमें भी मूर्खता होगी। हम देशको इस मूर्खतासे बचानेके लिए प्रयत्न कर रहे हैं। इसमे हारके लिए कोई स्थान है ही नही।

समढियाला गाँवके किसानोकी स्थितिके विवरणसे यह ज्ञात होता है कि मैंने जो गाँवोंकी सफाईको पहला स्थान दिया है वह उचित ही है। मनुष्यकी शिक्षाके इस प्रथम अंगको भी लोग भूल बैठे हैं, इसका कारण यह है कि उच्च वर्गोने निम्न वर्गोकी उपेक्षा करके घोर पाप किया है।

यदि धीरू तोतारामजी के पास किसान बनने या उनकी सेवा करने के शुभ उद्देश्यसे गया हो तो उसे, तुम्हे और रमाको धन्यवाद। हरिलालको तो मैं अब भूल गया हूँ।

. . . के[1] चरित्रके सम्बन्धमे अपनी जांच-पडतालके बारेमे तो मैं लिख ही चुका हूँ। उनका पत्र मुझे तो बहुत ही निर्मल जान पडा। ऐसा लगता है कि वे राजकोटमें बहुत-सी संस्थाओसे सम्बद्ध हैं। उन्होने अपने पत्रमे यह सुझाव दिया है कि उसमे जिन तथ्योका उल्लेख किया गया है यदि मैं चाहूँ तो उस सम्बन्धमे और अधिक जाँच-पडताल कर सकता हूँ। और इस सम्बन्धमें नारणदासके मनमे कोई सन्देह नही है। भाई जेठालालने मेरे सामने कोई खास सबूत पेश नही किया है, इसलिए मैंने आगे किसी तरहकी जाँच-पड़ताल नही की। किन्तु यदि तुम मेरे सामने कोई खास सबूत पेश करो तो मैं आगे जाँच-पड़ताल करने को तैयार हूँ। क्योंकि वह द्वार अभी खुला हुआ है। लेकिन मैं स्वयं तटस्थ हूँ। न्यायाधीशके सामने पक्ष-विपक्षमें ज्यो-ज्यो प्रमाण इकट्ठे होते जाते हैं त्यो-त्यो उसका निर्णय बदलता जाता है, वही स्थिति मेरी है। नारणदासका पत्र मैंने जेठालाल जोशीको भेजा है। किन्तु उसने उक्त पत्रकी प्राप्ति स्वीकृति तक नही भेजी। यह तुम उसे याद दिलाना और यदि उसे मेरा पत्र न मिला हो तो मुझे लिखना। मैंने नारणदासके पत्रकी नकलतक नही रखी। मेरा पत्र किस दिन डाकमे डाला गया था उसकी तारीख मेरे रजिस्टरमे मिल सकती है। जेठालाल तुम्हारे साथ उसी मकानमे रहता है। इसलिए यदि तुम इस मामलेमें पड़ना चाहो तो अवश्य पड़ना। नारणदासके पत्रमें तुमने देखा होगा कि वह किसी भी दोषको स्वीकार नही करता। इतना याद रखना चाहिए कि हमें . . .[2] के चरित्रकी अथवा वह पूरी तरह खादी पहनता है या नही, सिर्फ इसी बातकी जाँच-पड़ताल नही करनी है। इसमे तो नारणदासका विचार-दोष ही हो तो हो। इस सम्बन्धमे मैं अभी किसी निर्णयपर नही पहुँच सका हूँ। किन्तु खास शिकायत तो पाठशालाके पूरे प्रबन्ध और शिक्षकके रूपमे नारणदासकी योग्यताके बारेमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३४) से।

१ और २. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिये गये हैं।

## ६३७. पत्र : नारणदास गांधीको

२५ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

भाई जमनादासको लिखा पत्र इसके साथ है। कुसुमको भी लिख रहा हूँ। तुम्हारी झोली अच्छी भरी जा रही है। अमतुस्सलामकी प्रेरणासे यहाँ भी काम चल रहा है। एक चरखा प्रतिदिन सोलह घंटे २ तारीख तक चलता रहेगा। कल तो अनायास ही २४ घंटे चला। कान्ति रात होते ही कातने बैठा और ४.४५ तक कातता ही रहा। फिर प्रार्थनाके लिए आया। क्योंकि अठारहों अध्याय तो उसे और महादेवको ही कण्ठस्थ हैं। कन्हैया तो ऐसे कामोंमें जी-जानसे जुट ही जाता है। नवीन भी इसमें जुट गया है। ऐसा लगता है कि उन सबको यह अच्छा लगता है। क्या मैथ्यू इस काममें भाग लेता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४८६ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

## ६३८. पत्र : क० मा० मुंशीको

२५ सितम्बर, १९३५

भाई मुंशी,

तुम दोनोंकी शुभकामनाओंको अन्य अनेक शुभकामनाओंमें जोड़ देता हूँ। किन्तु होगा तो वही न जो भगवान चाहेगा। भाग्यके लिखे को कौन मिथ्या कर सकता है? क्या तुमने इस बातका विचार किया कि मैं साहित्य परिषद्‌में कैसा लगूँगा? ऐसे ही किसी अवसरपर वर्षों पहले जब मेरा नाम सुझाया गया था तो स्वर्गीय रमणभाईने कहा था कि "इन्हें तो मैट्रिकके विद्यार्थीके बराबर भी गुजराती नहीं आती।" उस समय यह टिप्पणी सुनकर उनके इस कथनका मैंने पूरी तरहसे समर्थन किया था। तबतक मेरा युग तो शुरू हो ही चुका था अत: जिन लोगोंने रमणभाईकी यह खरी टिप्पणी सुनी उन्हें दुःख हुआ था। किन्तु मैंने इस टिप्पणीमें शुद्ध हेतु और न्यायबुद्धि ही देखी थी। हम लोगोंकी प्रीति अन्धी होती है। वे ऐसा मानते

है कि यदि कोई व्यक्ति किसी चीजमे कुशल हो तो उसे सभी चीजोमे कुशल होना चाहिए। परिणाम यह होता है कि यदि उसकी समझ अपक्व हो तो उस बेचारेकी मुसीबत ही हो जाये। १९१५-१६में की गई रमणभाईकी उक्त टीका आज भी अक्षरश. सही है। अत: आगामी परिषद्के लिए जबसे मेरे नामका सुझाव दिया गया है तभीसे मैं भयसे सिहर रहा हूँ। क्या तुम यह नही मानते कि परिषद्को गुजरातकी एकता और संस्कृतिका प्रतीक बनाने की आकांक्षा करके तुम उसके कार्य-क्षेत्रको सीमाहीन बना रहे हो? और मेरे सभापति बन जानेसे उक्त आशा फलीभूत होनेकी सम्भावना मुझे तो बिलकुल नजर नही आती। मेरी मानसिक स्थिति हूबहू यही है। यह सब जान लेनेके बावजूद यदि सभीकी यह इच्छा हो कि मुझे ही सभापति होना चाहिए और यदि परिषद्की बैठक अगले वर्ष होनेवाली हो तो उस समय मुझे पुनर्विचार करने का मौका देना।[1] तुम स्वागत-समितिके वकील बनकर मेरे पास आये हो किन्तु अब मेरी तरफसे वकालत करना और स्वागत-समितिको लिख देना कि मेरी दलीलको तुम तो समझ गये हो और यह स्वीकार करते हो कि परिषद्के सभापतित्वसे मुझे मुक्त रखा जाना चाहिए।

'हंस'की सलाहकार-समितिके बारेमें मैं तो समझता था कि जो-कुछ मुझे कहना था वह मैं कह चुका हूँ।[2] किन्तु महादेवने अभी-अभी तुम्हारा संदेसा मुझे दिया। मैं देखता हूँ कि तुमने पन्द्रह भाषाएँ गिनाई हैं, जिनमे से तीनको तुमने भी अस्वीकार कर दिया है, अत: बारह बची। बारह भाषाओंके लिए अधिकसे-अधिक बीस नामोकी मर्यादा निश्चित कर उनमें से तुम्हे जो नाम ठीक लगें उन्हे चुन लो। मुझे चुननेमें दिक्कत होगी, क्योकि मैं सबको पहचानता नही। मुझे जो कहना था वह संख्याके बारेमे ही था, और यदि संख्याके बारेमे तुम्हे मेरा तर्क उचित लगता हो तो उतने नामोंका चुनाव तुम्हे ही करना चाहिए। तुम जो चुनाव करोगे वह मुझे स्वीकार होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७५९२) से; सौजन्य: क० मा० मुंशी

१. गाधीजी ने इसके बारहवें अधिवेशन का सभापतित्व किया था जो ३१-१० से २-११-१९३६ तक अहमदाबाद में हुआ था; उनके अध्यक्षीय और समापन भाषणो के लिए देखिए खण्ड ६३।
२. देखिए "पत्र: क० मा० मुंशी को", ८-७-१९३५।

## ६३९. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

मगनवाडी, वर्धा
२६ सितम्बर, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। इस तरह हिम्मत हारने से थोड़े काम चलनेवाला है। पत्रके द्वारा मैं ज्यादा नही समझा सकता। परीक्षितलाल वहाँ पहुँच जाये तब कुछ समय निकालकर आ जाना।

यह सच वात है कि लडकियोको हम उतना नही दे सकते जितना कि देना चाहिए। किन्तु यह भी सच है कि ऐसा काम करनेवाली स्त्री कार्यकर्त्रियाँ भी हमारे पास नही है। भगवान् कठिनाइयाँ इसलिए पैदा करता है कि हम उन्हे जीत सकें, न कि उनसे घवराकर भाग खड़े हो।

भगवानजी को छुट्टी देकर ठीक किया। पुरातन चाहे तो भले ही गाँवमे जाये। तुम जो सुधार करना चाहते हो उन्हे और उनके अतिरिक्त जिन्हे हम सोच सकते हो, ऐसे सव सुधारोको हम अवश्य कार्यान्वित करे। सिर्फ इतना याद रखे कि जो-कुछ हमने शुरू किया है उसमे जबतक कोई नैतिक बुराई नजर न आये तबतक हम उसे वन्द नही कर सकते। तुम यहाँ आओ इस बीच इस वारेमे सोच-विचार कर लेना। जो छोटी लडकियाँ तुम्हे परेशान करती है क्या अनसूयाबहन उन्हे अपनी निगरानीमे रख सकती है? यदि अनसूयाबहनको जगहकी तगी हो तो क्या वह अपना वालमन्दिर हरिजन आश्रममें ले जा सकती है?

चमडे और दुग्धालयका काम तो तुम वहाँ वैठे हुए भी कर सकते हो। जमीन आदि की जो सुविधा तुम्हे वहाँ है वह अन्यत्र कहाँ मिल सकेगी? वालुजकर यहाँ अपना काम जिस तत्परता और चतुराईसे कर रहा है उससे मुझे आशा बँधती है कि वह थोडे समयमे विभिन्न स्थानोपर चर्मालय चलाने में समर्थ हो जायेगा। नासिकमें ऐसा ही चर्मालय आरम्भ करने की बात उसने स्वीकार कर भी ली है। वहाँ इमारत भी वननी शुरू हो गई है और इमारत पूरी होते ही वहाँ तुरन्त काम शुरू हो जायेगा। जब तुम यहाँ आओगे तो तुम्हे यह भी देखने को मिलेगा। इस काममे कही कोई नुकसान न हो, इसका निश्चय उसने अभीसे कर लिया है और इस सम्बन्धमे विभिन्न योजनाओपर विचार किया जा रहा है। मुझे लगता है कि आर्थिक दृष्टिसे यहाँका काम सतीशवावूवाले कामकी अपेक्षा अधिक सफल होगा। सतीशवावूवाले काममें अवतक काफी पैसा फँस चुका है। आय तो जब होगी तब होगी। वालुजकरके काममे पैसा वहुत-कम लगाया गया है, और तब भी चमड़ा पकाया जाने लगा है, कामके लिए काफी मोची है और सीखनेवाले भी तैयार हो रहे है।

यह याद रखना कि जन-सेवकको सन्तुलित रूपसे चारो गुण प्रदर्शित करने चाहिए — अर्थात्, ब्राह्मणका ज्ञान, क्षत्रियका अपलायनम्, वैश्यका विशुद्ध प्रवन्ध और शूद्रका अश्रान्त शारीरिक श्रम। हम सबमें क्षात्र-वृत्तिकी अत्यधिक कमी है। हमारे मनमें तुरन्त कायरता आ जाती है। हम अकेले खड़े होते ही थरथराने लगते है। कठिनाई-रूपी बाघको देखते ही, हम चाहे अकेले हो या बहुत-से, भागने लगते है। इनमे से कोई आरोप अकेले तुम अपनेपर मत ले लेना। मै जो-कुछ अपने चारो ओर और स्वय अपने मे भी देखता हूँ, उसीकी ओर इशारा कर रहा हूँ। किन्तु मै भागकर आखिर कहाँ जाऊँगा? अत. मेरी स्थिति उस वणिककी-सी है जो घोड़ेपर बँधा हुआ था। यदि तुमने यह कहानी न सुनी हो तो कभी मुझसे पूछ लेना। मै यह कहानी रसपूर्वक कह सुनाऊँगा और यदि तुम जल्दी नही आ सके तो पत्रमे लिख भेजूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८९)से।

## ६४०. पत्र: लीलावती आसरको

२७ सितम्बर, १९३५

**बीसवें पाठमें से: आपके आनेके पहले मैंने अपना पाठ लिख लिया होगा।**[1]

"आई शेल हेव रिटन माई लेसन व्हेन यू विल कम" ('व्हेन यू कम' ज्यादा अच्छा है)। दूसरे वाक्यमे "द ओल्ड वुमन विल हेव फिनिश्ड ग्राइंडिग बाजरा बिफोर द गर्ल्स विल रीच होम।" ('रीच होम' ज्यादा अच्छा है)।

भविष्यमें होनेवाली दो क्रियाओमे से जो पहले पूरी होनेवाली हो उसमें पूर्ण भविष्यके रूपका प्रयोग किया जाता है। अब २०वाँ पाठ करना। पाठमालाका पहला भाग पूरा हो जानेपर सोचूँगा कि क्या किया जाना चाहिए।

अब भविष्यमें पेंसिलका इस्तेमाल नही करूँगा।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५४)से। सी० डब्ल्यू० १०१०६ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

१. लीलावती आसर ने गांधीजी से बीसवें पाठ के कुछ वाक्यों का अनुवाद कर देने का अनुरोध किया था क्योंकि पूर्ण भविष्य उनकी समझ में नहीं आया था।

२. लीलावती आसर ने गांधीजी को सूचित किया था कि पेंसिल से किये गये सुधार स्पष्ट नहीं होते।

## ६४१. पत्र : रसिक देसाईको

मगनवाडी, वर्धा
२७ सितम्बर, १९३५

चि० रसिक,

तेरा पत्र मैंने सँभालकर तो नही रखा किन्तु उसकी भापा इतनी ज्यादा खराब थी कि उसका अर्थ समझने के लिए उक्त पत्र मुझे दो-तीन बार पढ़ना पड़ा। यह स्वाभाविक है कि तुम दोनो जनोका यह तात्पर्य न रहा हो किन्तु उसका अर्थ तो यही था कि तुम्हारा पैसा निश्चित रूपसे सहायता-कार्यमें खर्च करने के लिए ही है, किन्तु मुझे उसका विवरण भेजना चाहिए। और उस विवरणमें यह दिखाना चाहिए कि पैसा इन-इन व्यक्तियोको दिया गया है। यदि कान्तिने तुझे यह लिखा हो कि मुझे मिलनेवाले कोपका उपयोग नही होता तो यह सही नही है। यो कहा जा सकता है कि मेरे पास कुछ कोपोका पैसा पडा हुआ है जिसका अभीतक उपयोग नही हुआ है किन्तु कान्तिने वही लिखा हो जैसा तू मानता है तो क्वेटा सहायता-कोपके लिए पैसा तुझे भेजना ही नही चाहिए था। और यदि तूने अपना कर्त्तव्य समझकर मुझे पैसा भेजा था तो कान्तिके शब्दोको उद्धृत करते हुए यह लिखना चाहिए था कि तेरे पैसोका तुरन्त उपयोग होना चाहिए और ये पैसे मेरे पास पड़े नही रहने चाहिए।

आशा है, अंग्रेजी भापामे लिखने का दोष तो अब तू और भी स्पष्ट देख सकेगा। आश्चर्यकी बात तो यह है कि इतने बरस मेरे साथ रहनेपर भी तू यह नही समझ सका और न इस बातको स्वीकार कर सका कि अंग्रेजी भाषाका चाहे कितना भी अच्छा ज्ञान क्यो न हो, किन्तु लिखने-बोलने मे उसका उपयोग बहुत आवश्यक होने पर ही किया जा सकता है। तेरे पत्रमे अविनय तो कही नही थी इसलिए माफी माँगने की जरूरत नहीं है। किन्तु आश्रममे तूने जो-कुछ सीखा है यदि वह सब गँवा बैठेगा तो अवश्य माफी माँगनी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६२२) से। सी० डब्ल्यू० ४३५४ से भी

## ६४२. पत्र : रावजीभाई एन० पटेलको

२७ सितम्वर, १९३५

चि० रावजीभाई,

पिछली वार तुमने जो थोडा-सा घी भेजा था वह भी वहुत ही खराव निकला था। उसे फिरसे तपाना पडा था। स्वामीने तो चखते ही कहा था कि यह घी आपसे कैसे खाया जायेगा? मालगाडीसे भेजा जाये तो भी घी अच्छा होना चाहिए और यदि अच्छी तरह पैक किया गया होगा तो चूनेका कोई डर नही रहेगा। यदि ऐसा अच्छा घी न मिल सके तो भेजना वन्द कर देना चाहिए। जो लोग घी तैयार करते हैं उनके यहाँ हमारे किसी आदमीको जाकर उन्हे घी वनाना सिखाना चाहिए और जो अच्छा पका हुआ घी हो वही साफ डिव्वोमें पैक करवाना चाहिए। घी को तपाने के लिए भी कलाकी पूरी जरूरत होती है। इस वार तो जो भेजा सो भेजा। उसे जाँचकर देखूँगा और तुम्हे सूचित करूँगा।

'चार सौ तार' के स्थानपर 'चार सौ गज' पढना।[1] वहाँकी दर तुम स्वय ही निश्चित कर सकते हो जिससे कत्तिनको कमसे-कम डेढ पैसा प्रति घटा मिले। प्रतिगज या तार की दर हर प्रान्तमे अलग-अलग हो सकती है किन्तु हर प्रान्तमें युक्ताहारके खर्च-लायक मजदूरी अवश्य मिलनी चाहिए।

डाहीवहनकी आँखोका इलाज आनन्दमें ही हो सका और वह अच्छी हो गई यह एक शुभ समाचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००७)से।

१. देखिए "पत्र : रावजीभाई एन० पटेलको", २४-८-१९३५।

# ६४३. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२७ सितम्बर, १९३५

. . 'के प्रश्नोके[1] तेरे उत्तर बिलकुल ठीक है। ऐसे प्रश्न तो जब चाहे तब पूछे जा सकते हैं। और जब कोई जिम्मेदार आदमी पूछे तो उत्तर देना ही पडता है। ऐसे प्रश्नोके बारेमे समयका बन्धन लागू नही होता। सामान्य व्यक्तियोकी स्मरण-शक्ति सदा कमजोर होती है। किन्तु जनताका सेवक धीरज नही छोड सकता। उन्हे उत्तर देनेको सदा ही तैयार रहना चाहिए। अत मैंने तेरा उत्तर अपने नामसे भेज दिया है।

वर्धामे तो कुछ भी नही चल रहा है। और जब वल्लभभाई यहाँ आये तब भी कुछ नही था। जब घनश्यामदास आये तो वल्लभभाई भी उनकी बाते सुनने चले आये। शायद यह कि इस बातचीतमे घनश्यामदासने विलायतमे जो पराक्रम किया, उसके विवरण और सामान्य गपशपके अतिरिक्त और कुछ नही था। सौभाग्य से यह सच्ची बात तो अखबारवालो की नजरमे ही नही आई, अन्यथा तरह-तरहके अनुमान लगाये जाते और उससे घनश्यामदासको परेशानी होती।

उस समय राजाजी का यहाँ होना तो एक आकस्मिक घटना थी। वे लक्ष्मीको लेकर लौट रहे थे इसलिए उन्हे यहाँ उतरना ही था। क्योकि घनश्यामदास आनेवाले थे इसलिए मैंने उन्हे दो दिन रोक लिया। मुझे याद नही पडता कि किसीने मेरे राजनीतिमे भाग लेनेकी बात भी उठाई हो। .[3] मै यह नही समझ सका कि .[4]ने ऐसी बेसिर-पैरकी बात क्यो कही।

मैंने पुछवाया है। तू उससे क्यो नही पूछता?

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १५९

१, ३ व ४. यहाँ मूल में कुछ अंश छोड दिया गया है।
२. तिलक स्वराज-कोष के बारे में।

## ६४४. पत्र : नारणदास गांधीको

२७ सितम्बर, १९३५

चि० नारणदास,

यह पत्र तो खानापूरीके लिए है।

मैथ्यूको लिखा मेरा पत्र मिल गया होगा; यहाँ एक चरखा लगातार सोलह घंटे चलता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४७७ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी

## ६४५. हिन्दी प्रचार-सप्ताह

ऊपर दी गई सूचनाको[1] मेरी सिफारिशकी दरकार नहीं। संस्था द्वारा किया गया ठोस कार्य ही उसकी अपनी सिफारिश होनी चाहिए। दक्षिण भारतके लोगोंको उसे पर्याप्त वित्तीय समर्थन देकर सिद्ध करना चाहिए कि वे उसकी कितनी कद्र करते हैं।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

## ६४६. 'धर्मान्तरण' के बारेमें

पिछले दिनों फेडरेशन ऑफ इण्टरनेशनल फेलोशिपके सदस्य श्री ए० ए० पॉलने मुझसे इन स्तम्भोंमें अपनी 'धर्मान्तरण' विषयक स्थितिपर प्रकाश डालनेको कहा था। इसपर मैंने उनसे यह कहा था कि जिन बातोंका आप मुझसे उत्तर चाहते

१. यहाँ नहीं दी जा रही है। हरिहर शर्मा द्वारा लिखित इस सूचना में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की उत्पत्ति और प्रगति का विवरण और उसकी कार्यकारिणी परिषद् का यह निर्णय दिया गया था कि "३० सितम्बर से ६ अक्तूबर, १९३५ तक हिन्दी प्रचार-सप्ताह आयोजित किया जाये . . .। जिससे कि हिन्दी का सन्देश दक्षिण भारत के घर-घर में पहुँचाया जा सके और चन्दा जमा किया जा सके।" परिषद्ने "सप्ताह के दौरान सभा के यथासम्भव अधिकसे-अधिक नये सदस्य बनाने" की इच्छा भी व्यक्त की थी।

हों उन्हें प्रश्नोंके रूपमें लिख भेजें। परिणामस्वरूप उन लोगोंकी मान्यताओंकी एक सूचीके साथ उनका यह पत्र आया है

आपको याद होगा कि एक महीनेसे कुछ ऊपर हुआ, मैंने आपको लिखा था कि क्या आप अपने 'धर्मान्तरण' विषयक विचारोंको एक वक्तव्यके रूपमें प्रकाशित कर देंगे। आपने मेरे पत्रके जवाबमें यह लिखा था कि अगर आप अपने विचारोंको प्रश्नों या मान्यताओंके रूपमें लिख भेजें तो मुझे ज्यादा आसानी होगी। मद्रास इंटरनेशनल फेलोशिपकी कार्यकारिणी-समितिके अनुरोधपर हमारे एक ईसाई बन्धुने हमारी मान्यताओंकी यह सूची तैयार कर दी है, और समितिने मुझसे इसे आपके पास इस अनुरोधके साथ भेज देनेके लिए कहा है कि आप 'हरिजन' में इन प्रश्नोंका उत्तर प्रकाशित करनेकी कृपा करेंगे। बेशक, आप यह तो देखेंगे कि ये प्रश्न ईसाई-धर्मकी दृष्टिसे ही तैयार किये गये हैं; पर हमारी समितिका यह खयाल है कि ये प्रश्न प्रचारमें विश्वास रखनेवाले उन अन्य धर्मोंपर भी उतने ही लागू हो सकते हैं जो आज धर्मान्तरणके कार्यक्रममें लगे हुए हैं। तो क्या मैं यह आशा करूँ कि इन प्रश्नोंके सम्बन्धमें आप अपनी विचार-स्थिति स्पष्ट कर देंगे?

मान्यताएँ

१. धर्मान्तरणका मतलब हृदयका पापसे विमुख होकर ईश्वरमें अनुरक्त होना है। यह ईश्वरका कार्य है। पापका अर्थ है, ईश्वरसे बिलगाव।

२. ईसाई यह मानते हैं कि मानव-जातिके कल्याणार्थ ईसा पूर्णावतारके रूपमें प्रकट हुए थे। वे पापोंसे हमारा उद्धार करते हैं। पापीको वही ईश्वरकी शरणमें ले जा सकता है और इस तरह उसे वास्तवमें जीने योग्य बना सकता है।

३. ईसाई लोग, जिनके लिए ईश्वर ईसा मसीहके माध्यमसे एक जीवन्त वास्तविकता और शक्ति बन गया है, ईसाके सम्बन्धमें बोलना और पृथ्वीको वे मुक्तहस्तसे जो वस्तु देने आये थे, उसकी घोषणा करना अपना सौभाग्य और कर्त्तव्य समझते हैं।

४. यदि इस सन्देशको सुनकर किसी मनुष्यका हृदय इतना अधिक प्रभावित हो जाये कि वह अपने पापोंके लिए पश्चात्ताप करके ईसाके शिष्यके रूपमें नया जीवन बिताना चाहे, तो उसे ईसाके अनुयायियोंके सम्प्रदाय — ईसाई-धर्म संघ — में दाखिल कर लेना ईसाई उचित समझते हैं।

५. ईसाई ऐसे सभी मामलोंमें इस बातकी थाह लेनेका भरसक प्रयत्न करेगा कि उस आदमीकी श्रद्धा सच्ची है या नहीं और उससे जितना बनेगा, उसे धर्म-परिवर्तनके परिणाम समझायेगा और ऐसा करते हुए अपने कुटुम्बके प्रति उस मनुष्यका क्या कर्त्तव्य है, इसपर वह खास जोर देगा।

६. ईसाई अपनी शक्ति-भर पूरा प्रयत्न करेगा कि किसीका धर्मान्तरण करने में वह अपने मनमें स्वार्थकी भावना न आने दे और न जिसका धर्मान्तरण करे, वही भौतिक सुख-ऐश्वर्यके लालचके कारण इस तरह अपना धर्म बदले।

७. चूँकि ईसा पूर्ण जीवनका दान देनेके लिए पृथ्वीपर अवतरित हुए थे और यह इतिहास-प्रसिद्ध बात है कि ईसाई-धर्ममें आनेसे अनेकोंका जीवन ऊँचा उठ गया है, इसलिए यदि ईसाई-धर्ममें आनेसे किसीकी सामाजिक उन्नति होती है तो ईसाई-धर्मकी दीक्षा देनेवाले किसी ईसाईपर यह दोषारोपण नहीं करना चाहिए कि उसने उस आदमीको भौतिक प्रलोभन देकर ईसाई बनाया है, क्योंकि कहने की जरूरत नहीं कि ऐसे प्रलोभनका प्रयोग धर्मान्तरणके साधनके रूपमें नहीं किया जायेगा।

८. सच्ची श्रद्धासे ईसाई-धर्ममें आनेवाले के शरीर, मन और आत्माकी सार-सँभाल रखना यदि ईसाई अपना कर्त्तव्य समझता है तो वह ठीक ही करता है।

९. ईसाइयों पर यह दोष लगाना ही नहीं चाहिए कि वे रुपये-पैसेका प्रलोभन देते हैं। जब हिन्दुओंके समाज-दर्शनमें ही कुछ ऐसे तथ्य मौजूद हैं, जिनपर ईसाइयोंका कोई काबू नहीं है और जो अपने-आपमें हरिजनोंके लिए धर्मान्तरणके प्रलोभनका काम करते हैं तो ईसाइयों पर धर्मान्तरणके लिए भौतिक प्रलोभन देनेका आरोप नहीं लगाना चाहिए। (किन्तु इस विषयमें पाँचवीं और छठी मान्यताएँ भी देखिए।)

इन मान्यताओंकी पूर्व-पीठिका समझने के लिए पाठकोंके लिए यह जान लेना जरूरी है कि मुख्य प्रश्न मेरे और श्री ए० ए० पॉलके बीच चल रही एक चर्चाके दौरान उठा था और इस चर्चाका विषय था मुख्य रूपसे या पूर्णत. हरिजनोंसे आबाद एक गाँवके लोगोंका सामूहिक धर्मान्तरण। इस 'धर्मान्तरण' के विषयमें पाठकोको शायद किसी आगेके अकमे ज्यादा पढने को मिलेगा। अभी तो उनके लिए इतना समझ लेना ही काफी है कि इन मान्यताओंकी कसौटीपर सामूहिक धर्मान्तरणकी पद्धतिको ही परखना है।

इन मान्यताओंको मैंने कई बार पढा है, और उन्हे जितना ज्यादा पढता हूँ उतना ही ज्यादा महसूस करता हूँ कि ये व्यक्तिगत सम्पर्कपर ही लागू हो सकती हैं, किसी मानव-समूह पर तो कभी नही। अब पहली मान्यताको ही लीजिए। इसमे पापकी परिभाषा 'ईश्वरसे बिलगाव' बताई गई है। "धर्मान्तरणका मतलब हृदयका पापसे विमुख होकर ईश्वरमे अनुरक्त होना है। यह ईश्वरका कार्य है"—ऐसा कहते है इन मान्यताओंके लेखक। यदि धर्मान्तरण ईश्वरका कार्य है तो उसके हाथो से मनुष्यको वह कार्य क्यो ले लेना चाहिए? और ईश्वरसे कोई कार्य छीननेवाला मनुष्य कौन होता है? वह तो उसके हाथोमें एक विनम्र साधन-मात्र हो सकता है।

इसी तरह वह यह भी तय नही कर सकता कि किसके हृदयमे क्या है। मै तो अकसर सोचा करता हूँ कि क्या हम खुद जानते है कि स्वय हमारे हृदयोमें क्या है। "आदमी, तू अपनेको पहचान" — यह वाक्य किसी आकुल हृदयमे ही अनुगुंजित हुआ होगा। और जब हम स्वय अपने विषयमे इतना कम जानते है तो अपने पडोसियो या बहुत दूरके अपरिचित-अनजाने लोगोके बारेमे कितना कम जानते होगे? हो सकता है, वे अनेक बातोमे हमसे बिलकुल भिन्न हो और यह भी हो सकता है कि इनमें से कुछ बाते अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो। तीसरी मान्यताका सम्बन्ध ईसाइयोके धार्मिक विश्वाससे है, जो उन्हे पीढी-दर-पीढी विरासतमे मिलता आया है। इस विश्वासमें निहित सत्यको हजारो जन्मजात ईसाइयोसे कभी भी स्वय परखकर देखने को नही कहा गया है, जो उचित ही है। मगर इस हालतमे इसे उन लोगोके सामने प्रस्तुत करना जिनका लालन-पालन एक भिन्न धर्मके परिवेशमे हुआ है, निश्चय ही खतरनाक बात है। अगर मै अपने अनपरखे धार्मिक विश्वासको अन्य धर्मावलम्बीके समक्ष, जिसका धर्म मेरी जानकारीकी हदतक शायद उतना सच्चा हो जितना मेरा है, प्रस्तुत करता हूँ तो यह मेरी धृष्टता ही जान पडेगी। बहुत सम्भव है कि मेरा धर्म मेरे लिए काफी अच्छा हो और उसका उसके लिए। जिस प्रकार विषुवदीय क्षेत्रमे रहनेवाले के लिए उसका छोटा-सा कच्छ बहुत ठीक होगा उसी प्रकार ठडे मुल्कमे रहनेवाले के लिए उसका मोटा ऊनी कोट बहुत उपयुक्त होगा।

पहली मान्यताकी तरह तीसरीका सम्बन्ध भी धर्मके निगूढ तत्त्वोसे है, जिन्हे सामान्य जन समझ नही पाते, किन्तु श्रद्धासे ग्रहण कर लेते है। जो लोग उस धर्मके परिवेशमे पीढी-दर-पीढी रहते चले आ रहे है, उनके बीच तो ये पर्याप्त उपयोगी है, किन्तु जो किसी और धर्मके परिवेशमे पले-बढे है उन्हे तो वे सर्वथा अटपटे ही लगेंगे।

अन्य पाँच मान्यताओका सम्बन्ध धर्म-प्रचारक जिनका धर्मान्तरण करना चाहता है, उनके बीच उसके आचरणमे है। मुझे तो इन मान्यताओको व्यवहारमे उतारना लगभग असम्भव प्रतीत होता है। जब प्रारम्भ ही गलत है तो उसके बाद जो-कुछ किया जायेगा वह सब आवश्यक रूपसे गलत ही होगा। उदाहरणके लिए, कोई ईसाई अपने श्रोताओकी नवोदित श्रद्धाकी सचाईको कैसे परख सकेगा? क्या उनसे हाथ उठवाकर? या कि व्यक्तिश उससे बातचीत करके? अथवा कुछ थोडी देरकी परीक्षाके आधारपर? हम चाहे जिस कसौटीके बारेमे सोचे, वह एक न्यूनतम सीमातक भी सही परिणाम नही प्रकट कर सकेगी। मनुष्यके हृदयमे क्या है, यह तो केवल ईश्वर ही जानता है। क्या ईसाइयोको स्वय अपने शरीर, मन और आत्माके इतना अधिक शुद्ध और सक्षम होनेका पूरा भरोसा है कि "सच्ची श्रद्धासे ईसाई-धर्ममे आनेवाले के शरीर, मन और आत्माकी सार-सँभाल रखना" अपना उचित कर्त्तव्य मानने मे उनके मनमे कोई दुविधा न हो?

सबसे महत्त्वपूर्ण है अन्तिम मान्यता, जिसे पढकर स्तब्ध रह जाना पड़ता है। कारण, इसमे यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दी गई है कि शेष आठोका प्रयोग

बेचारे हरिजनो पर पूरी तरहसे करना है। लेकिन वास्तविकता यह है कि वह पहली मान्यता ही कतिपय महानतम मनीषियो और तत्त्ववेत्ताओंके लिए आजतक एक गुत्थी बनी हुई है। मूल पाप क्या है, वह कौन बता सकता है? कौन कह सकता है कि ईश्वरसे बिलगावका मतलब क्या है? और ईश्वरके साथ ऐक्य प्राप्त करने का अर्थ क्या है? क्या ईसा मसीहके सन्देशका प्रचार करने का साहस करनेवाले सभी लोगोको पूरा भरोसा है कि वे स्वयं ईश्वरसे ऐक्य प्राप्त कर चुके है? अगर उन्हे ऐसा भरोसा नही है तो इन गूढ विषयोके सम्बन्धमे हरिजनोके ज्ञानकी परीक्षा कौन करेगा?

उपर्युक्त मान्यताओके प्रति तो मेरी प्रतिक्रिया यही है। आशा है, इसे पढनेवाले कोई भी ईसाई भाई इसका बुरा नही मानेगे। अगर मै इन मान्यताओके सम्बन्धमे अपनी सच्ची स्थिति न बताता तो मै अपने अनेक ईसाई-मित्रोके साथ अप्रामाणिक व्यवहार करने का दोषी बनता।

अब कुछ शब्दोमे खुद अपनी निष्पक्ष राय भी बता दूं। मै मानता हूँ कि धर्मान्तरणका जो स्वीकृत अर्थ है उस अर्थमे मनुष्यको एक धर्मसे दूसरे धर्ममे दीक्षित किया ही नही जा सकता। यह तो बिलकुल निजी विषय है — सम्बन्धित व्यक्ति और उसके ईश्वरके बीचका विषय। अपने पडोसीके धर्मके प्रति मेरा बुरी नीयत रखना मुनासिब नही होगा, बल्कि मुझे उसका उतना ही आदर करना चाहिए जितना स्वय अपने धर्मका करता हूँ। कारण, मै मानता हूँ, मेरे लिए जितना सच्चा मेरा धर्म है, विश्वके अन्य महान् धर्म भी कमसे-कम अपने-अपने अनुयायियोके लिए तो उतने ही सच्चे है। मैने ससारके सभी धर्मग्रन्थ श्रद्धापूर्वक पढे है, इसलिए उन सबकी खूबियोको पहचानने में मुझे कोई कठिनाई नही होती। जिस प्रकार मै खुद अपना धर्म बदलने की कल्पना नही कर सकता, उसी प्रकार किसी ईसाई या मुसलमान, अथवा पारसी या यहूदीसे अपना धर्म बदलने को कहने की कभी सोच नही सकता। मगर इससे जिस प्रकार खुद मेरे सहधर्मियोके दोषोकी ओरसे मेरी आँखे बन्द नही हो जाती उसी प्रकार उन धर्मोके अनुयायियोकी त्रुटियोकी ओरसे भी मेरी आँखे बन्द नही होती। और यह देखते हुए कि अपने आचरणको अपनी श्रद्धाकी ऊँचाईतक ले जानेमें मेरी पूरी सामर्थ्यकी कसौटी हो रही है, दूसरे धर्मावलम्बियोके बीच उसका प्रचार करने की मै कल्पना ही नही कर सकता। 'दूसरोके मुसिफ न बनो, नही तो कभी खुद भी इसाफकी तराजूपर तोले जाओगे' — यह एक ऐसा सुनहला नियम है जिसका आचरण अपने जीवनमे हर-एकको करना चाहिए। मुझे दिन-प्रतिदिन इस बातकी अधिकाधिक प्रतीति होती जा रही है कि बड़ी-बडी और समृद्ध ईसाई धर्म-प्रचारक सस्थाएँ भारतकी सच्ची सेवा तो तभी कर पायेगी जब वे अपने मनको इस बातपर राजी कर ले। उन्हे अपनी प्रवृत्तियाँ केवल मानव-दयासे प्रेरित सेवा-कार्यतक ही सीमित रखनी है और उनके पीछे भारतको या कमसे-कम भारतके भोले-भाले ग्रामीण लोगोको ईसाई बना लेनेका उद्देश्य नही रखना है, क्योकि ऐसा करके तो वे उसके उस सामाजिक ढाँचेको ध्वस्त कर देंगे जो अपने तमाम दोषोके

बावजूद न जाने कितने युगोसे बाहर और अन्दरसे होनेवाले प्रहारोको झेलकर भी आजतक ज्योका-त्यो खड़ा है। वे, यानी ईसाई धर्म-प्रचारक, और हम चाहे या न चाहे हिन्दू-धर्ममे जो-कुछ असत्य है, उसे तो एक-न-एक दिन नष्ट होना ही है। जीवित रहने के लिए प्रत्येक जीवन्त धर्ममें समय आनेपर अपने अन्दर नयी ताजगी और स्फूर्तिका सचार करने की शक्ति होनी चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

## ६४७. सोयाबीन

कहते है, सोयाबीनमे बहुत अधिक पोषक तत्त्व होते है। इसलिए बॉम्बे प्रेसिडेन्सी बेबी एड हेल्थ वीक एसोसिएशन (बम्बई प्रान्तीय बाल एव स्वास्थ्य सप्ताह संघ) द्वारा प्रकाशित पुस्तिका सख्या ७ का निम्न अश[1] उद्धृत कर रहा हूँ, ताकि आहार-सुधारक प्रयोग करके देख सके।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

## ६४८. आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय और कतैयोंका कल्याण

खादी-प्रतिष्ठानमे आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रायकी गहरी रुचि रही है और अपनी बचतमे से वे उसे मुक्तहस्त होकर दान देते रहे है। अब उन्होने प्रतिष्ठानसे कतैयोकी मजदूरीमे वृद्धि करने और उसकी मुख्य प्रवृत्ति खादीको स्वावलम्बी बनाने की योजनाकी सिफारिश करते हुए मुझे नौ तथ्यपूर्ण बाते[2] लिख भेजी है। ये बातें अपने-आपमे तो महत्त्वपूर्ण है ही, इनसे यह भी प्रकट होता है कि खादीमे उनकी कैसी गहरी श्रद्धा बनी हुई है और इस उम्रमे भी इसमें उनकी कैसी सक्रिय रुचि है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

१. यहाँ नहीं दिया जा रहा है।
२. देखिए परिशिष्ट ६।

## ६४९. पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
२८ सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

इस पत्रको बोलकर लिखाना ही ज्यादा अच्छा रहेगा। देवदासकी सेहतमे आनेवाले इन उतार-चढावोसे मैं तनिक भी चिन्तित नही होता। मै जानता हूँ कि उसकी हालत वहाँ सुधारपर है। और मैं यह भी जानता हूँ कि उसकी चिकित्सा अच्छेसे-अच्छे हाथोमें है। प्यारेलालको वह खबर देनेवाले ने कोई भला नहीं किया। सच तो यह है कि वास्तवमे मैंने इतना अच्छा पहले कभी महसूस नही किया था।

तुमने पिछली वार जो सेब भेजे थे, लगभग सारे मैंने ठिकाने लगा दिये थे। साथमे मै मुसम्बियाँ भी ले रहा था। इसलिए इस मामलेमे भी चिन्ताकी कोई बात नही है। फल लेनेकी जरूरत मुझे जब भी महसूस होगी, मैं जरूर लूँगा। हरी पत्तियाँ लेना भी मैंने छोडा नहीं है। कुछ दिनोतक नीमकी पत्तियाँ लेनेकी गुंजाइश ही नही रह गई थी। इसलिए उनको छोड़ दिया था। लेकिन उन दिनो फलो और फलोके मुरब्बोके सेवनके कारण सभी भाजियाँ छोड़ देनी पडी थीं। पर अब मैंने नीमकी पत्तियाँ फिर शुरू कर दी है। मैं कब्जसे बचनेके लिए उबली हुई भाजीका सेवन करता रहा हूँ, पर सेब शुरू करनेपर मैंने उसे बन्द कर दिया था। इसलिए तुम मेरी सेहतके बारेमे कोई चिन्ता मत करो।

अब वा के बारेमे। वह यदि वहाँ खुश न हो और यदि उसके बिना वहाँका काम चल सकता हो, तो मै समझता हूँ उसे वहाँ रखना ठीक नही। मुझे पूरा भरोसा है कि तुम्हारी देखभाल और परिचर्याके चलते देवदासको वहाँ उसकी उपस्थितिकी जरूरत नही है। इसलिए यदि वह वर्धा आना चाहे तो तुम आने देना। वह अकेली बखूबी सफर कर सकती है। उसे सहायता उन स्टेशनोपर दरकार होती है जहाँ वह उतरती है। सो तुम कालका, अम्बाला और दिल्लीके स्टेशनोपर इसका इन्तजाम बडी आसानीसे कर सकती हो। स्टेशनपर कोई उसे मिल जाये और ठीक डिब्बेमे बैठा दे, बस।

मै तुम्हारे उस पत्रके इन्तजारमे हूँ जिसमे तुम अपना कार्यक्रम मुझे लिखोगी। यदि देवदास और कुमारप्पाके कारण तुमने अपने कार्यक्रममें कोई रद्दोबदल की तो मुझे बडा बुरा लगेगा। यदि वे तुम्हारे चले आनेके बाद वहाँ मेनरविलेमें न रह सकते हो और उनका ज्यादा लम्बे अर्सेतक ठहरना जरूरी हो तो उनको किसी और जगह या किसी दूसरे पहाडी स्थानपर चले जाना चाहिए। और मेरा अपना खयाल है कि दोनोको यदि नवम्बर नही तो कमसे-कम अक्तूबरके अन्ततक उस

स्वास्थ्यप्रद जलवायुमे रहना ही चाहिए। देवदासको तो शायद कुछ ज्यादा ही अर्से तक रहने की जरूरत पड़े।

तुम्हारे सेव और पत्र अभी-अभी आये हैं। बा यदि अपना टिकट इस्तेमाल करने का अधिकार खो देती है, तो उसे, अर्थात् देवदासको किराया भरना चाहिए।

सस्नेह,

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५२) से; सौजन्य · अमृतकौर; जी० एन० ६३६१ से भी

## ६५०. पत्र : छगनलाल जोशीको

२८ सितम्बर, १९३५

चि० छगनलाल,

चरखा द्वादशीके दिन लिखा तुम्हारा पत्र मिला। राष्ट्रीय शालामे चलनेवाले अखण्ड चरखा कार्यक्रममे तुम भाग ले रहे हो यह तो बहुत ही अच्छा लगता है। अमतुस्सलामके प्रयाससे यहाँ भी प्रतिदिन १६ घंटे चरखा चल रहा है। इसमें १६ व्यक्ति एक-एक घंटा देते हैं। चरखा प्रात ५ बजेसे रातके ९ बजेतक चलता है। लगभग ३,५०० तार सूत निकलता है। मैंने इस कार्यक्रममें कुछ सुधारोका सुझाव दिया है और प्रतिदिन नियमपूर्वक अखण्ड चरखा चलाने के मेरे सुझावपर भी चर्चा हो रही है।

ऐसा लगता है कि तुम मेरे उस लेखको[1] भली-भाँति नही समझे हो। मैंने उक्त त्याग लोगोंके दबावके कारण नही किया।

जब मोरारजी और चन्दुलाल अपनी भावनाएँ प्रकट करने यहाँ आये तो उस समय मुझपर उसका कोई असर नही हुआ और यदि हुआ भी हो तो उक्त त्याग करने लायक नही हुआ। किन्तु जब युवकको बचाने का प्रश्न मेरे सामने उठ खड़ा हुआ तो मेरा हृदय उसी क्षण बदल गया। दूसरोको बचाने के विचार से मैंने अपने जीवनमें बहुत-कुछ किया है।

किन्तु मैंने अपना यह सिद्धान्त भी नही बनाया है कि लोगोकी भावनाओके दबावको कदापि स्वीकार न किया जाये। हालाँकि यह भी सच है कि लोक-भावनाओ के वशीभूत होकर कोई काम करने के पक्षमे मैं नही हूँ। मेरा नियम तो यह है · जहाँ

१. देखिए "एक त्याग", २१-९-१९३५।

लोगोंकी भावनाओके वशीभूत होनेसे किसी प्रकारकी अनीति या मानहानि न होती हो वहाँ परेशानी उठाकर भी लोगोकी भावनाओके अनुसार काम करना चाहिए। उदाहरणके लिए, यदि लोगोकी भावनाओका प्रश्न न हो तो मै बहुत करके सर्वथा नग्नावस्थामें रहूँ। मेरे अपने स्वास्थ्यके लिए लाभदायक होनेके अतिरिक्त इसमें मुझे और भी बहुत-से नैतिक लाभ नजर आते है। इससे मेरी सयम-वृत्तिको अधिक पोषण मिलेगा। इसके बावजूद मै केवल लोक-भावनाओके वशीभूत होकर यह स्तुत्य कदम नही उठाता।

जीवनलालके त्यागपत्रका तो मुझे तुम्हारे पत्रसे ही पता चला। इस सम्बन्धमे तुम्हे और अधिक प्रकाश डालना चाहिए था। इस सम्बन्धमें यदि मुझे आखिरकार निर्णय देना ही पड़ा तो उस स्थितिमें तुम जो-कुछ लिखोगे उससे मुझे अवश्य सहायता मिल सकेगी। अब तो यह प्रश्न जब मेरे सामने आयेगा तब तुमसे यदि कुछ पूछना आवश्यक हुआ तो मै स्वय ही पूछूंगा। आशा है, मेरा इससे पहलेका पत्र[1] तुम्हे मिल गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५३५) से।

## ६५१. पत्र: प्रेमाबहन कंटकको

२८ सितम्बर, १९३५

चि० प्रेमा,

आज तो बोलकर ही लिखाना पडेगा। दायाँ हाथ केवल सोमवारको 'हरिजन' के लिए काममे लेता हूँ। बाकी दिनोंमे बायें हाथसे लिखता हूँ। ऐसा करने में समय तो लगता है। इसके सिवा तेरे पत्रका उत्तर तुरन्त देना चाहिए। १६ तारीखके आसपास जरूर आना। थोड़ा-थोड़ा करके जितना समय तुझे चाहिए उतना दूंगा। घूमते हुए समय दूं तो ठीक होगा न? तू यहाँ रहने का समय तय करके न आये तो अच्छा होगा। दो दिन अधिक लगें तो भले ही लग जायें। यहाँ फैले हुए सब काम तू धीरे-धीरे देखे तब अच्छा होगा और बाते भी अलग-अलग समयमें होगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मेरा सूत प्रभावतीने इकट्ठा कर रखा है। भेजने को भी मैंने उससे कह रखा है। तेरी प्रेरणासे हिटलरकी पुस्तक पढ रहा हूँ। लेनिनके विषय मे मैक्स्टनकी लिखी हुई पुस्तक[2] भी पढी। हिटलरके बारेमें एक और पुस्तक मँगा रखी है। तेरा कोठरीका वर्णन आकर्षक है। तुझसे द्वेष करने के बहुत-से कारण है। मुझे

१. देखिए "पत्र: छगनलाल जोशीको", २५-९-१९३५।

२. जेम्स मैक्स्टन की पुस्तक लेनिन; १९३२ में प्रकाशित हुई थी।

विश्वास है कि मेरे त्यागका[1] सारा हाल जब तू जानेगी तब तू भी मुझसे सहमत हो जायेगी।

जमनालालजी बहुत करके दूसरी या तीसरी तारीखको आ जायेंगे। मुझे तो ऐसा याद है कि तेरे दोनों प्रश्नोंके उत्तर मैं अपने पिछले पत्रमें दे चुका हूँ। लेकिन तेरे इस पत्रमें उक्त पत्रकी प्राप्तिका कोई उल्लेख नहीं देखता। मैं दुबारा संक्षेपमें उत्तर दे रहा हूँ। कोढ आदि रोगोंसे ग्रस्त लोगोंको जबरन नपुंसक बनाने की प्रथाको अपनाने में बहुत-सी मुश्किलें आती हैं। इससे अनेक प्रकारके अनर्थ पैदा होनेकी सम्भावना है। फिर किसी भी रोगको असाध्य मान लेना भी ठीक नहीं। संयमका प्रचार करके जो परिणाम निकले उतनेसे सन्तुष्ट रहना ही मुझे तो निरापद लगता है। पग-पगपर मुझे कायरताकी गन्ध आती है। कायर कतैया सूतमें पड़ी हुई गाँठको चाकूसे सुलझायेगा। कुशल कतैया धीरज और कलासे गाँठ खोलेगा और सूतको अविच्छिन्न रखेगा। अहिंसक मनुष्य असाध्य मानी जानेवाली व्याधिसे पीड़ित लोगोंके लिए ऐसा ही कुछ उपाय करेगा।

विदेशोंमें हमारा नियमित प्रचार-कार्य मुझे तो रेलगाड़ीके साथ बैलगाड़ीकी प्रतियोगिता-जैसा लगता है। हम यदि प्रचार-कार्यमें सच्ची बातपर एक हजार खर्च कर सकते हों, तो प्रतिपक्षी करोड़ खर्च करने की सामर्थ्य रखता है। इसलिए मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हमें अपने-आप होनेवाले प्रचार-कार्यसे सन्तोष मान लेना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७७) से। सी० डब्ल्यू० ६८१७ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक

## ६५२. एक प्रमाणपत्र

वर्धा
३० सितम्बर, १९३५

श्री के० एस० सावन्त लगभग एक सप्ताहतक मेरे साथ रहे हैं। ये हरिजन हैं और पेशेसे मूर्तिकार। इन्होंने बॉम्बे स्कूल ऑफ आर्टमें पूरी शिक्षा ली है। मैं इनके इस आग्रहको टाल नहीं सका कि इनको मेरे कमरेमें किसी भी तरहसे मेरा बिलकुल भी ध्यान बँटाये बिना बैठकर अपने कामकी अनुमति दी जाये। यह इनकी हार्दिक इच्छा थी और इन्होंने इस सुविधाका भरपूर उपयोग किया है। इनकी कलाका मूल्यांकन तो विशेषज्ञ ही कर सकते हैं। परन्तु मैंने देखा है कि श्री सावन्त विविध प्रतिभाओंके धनी हैं। इन्होंने इन दिनों मेरे साथ रहते हुए बड़ा अध्यवसाय

१. तात्पर्य हरिजनबन्धु, २२-९-१९३५ के अंकमें प्रकाशित "एक त्याग" शीर्षक लेख से है।

दिखाया और अपने काममें पूर्णतः दत्तचित्त रहे। हमने इनको पूरा मिलनसार पाया है और ये आते ही हमारे साथ घुलमिल गये। ये कला-प्रेमियो और धनाढ्योकी ओरसे प्रोत्साहन पानेके लिए सुपात्र हैं। मैं इनकी सफलताकी कामना करता हूँ।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २८३२) से।

## ६५३. पत्र : अमृतकौरको

३० सितम्बर, १९३५

प्रिय अमृत,

पक्की बात है कि तुमने जो मेव भेजे हैं वे तुम्हारे अपने बगीचेके नही हैं। जानती हो, उनका रेल-भाडा कितना पड़ा? यह तो एक अच्छी चीजमें अति करना है। मुझे तो यहाँ बाजारमें मिलनेवाले फलोपर ही बस करने दो। यदि दवाके रूपमें उनकी जरूरत होती, तो मैं तुमको और भेजने के लिए लिख देता लेकिन वैसी जरूरत नही है। मेरा खयाल है कि बीमारोके लिए मुझे एक ही फलकी जरूरत है — सतरे या मुसम्बियाँ। और ये लगातार मिलते रहे, इसका प्रबन्ध मैंने कर लिया है। हो सकता है, यह भी मेरा खयाल ही हो, लेकिन मुझे यदि कमसे-कम दवाओपर निर्भर रहना है तो ऐसा लगता है कि मुझे शहद और सतरे लेते रहना चाहिए। और तुमको मै विश्वास दिलाता हूँ कि इन चीजोका मै लगभग जी खोल कर इस्तेमाल कर रहा हूँ। इसलिए मेरी खातिर सेव खरीदना बन्द कर दो। तुम्हारे अपने बगीचेमे अगली बार सेव आनेपर मैं बडी खुशीसे अपना हिस्सा ले लूँगा।

आज शाम बा के आनेकी उम्मीद कर रहा हूँ। मुझे उससे देवदास और कुमारप्पाके बारेमें सारे ताजे समाचार मिल जायेंगे, हालाँकि मै समझता हूँ कि तुम मुझे जितनी पूरी, विस्तृत सूचना देती रही हो, उसमे वह अधिक कुछ जानकारी जोड नही पायेंगी।

कुमारप्पाके भाई, जे० एम० यहाँ आये हैं। वे आज शाम बम्बई जा रहे हैं। दोनो एक ही साँचेमें ढले हैं — शक्ल-सूरत और जीवनके प्रति अपने उदार दृष्टिकोण तथा देश-प्रेममें दोनो कितने समान हैं!

आशा है, तुम भली-चगी होगी। यह कहने का तो कोई फायदा नही कि सामर्थ्यसे अधिक श्रम मत करना। मैं समझता हूँ कि तुमने अपने-आपको ऐसे किसी भी अनुरोध, परामर्श या आदेशपर भी अमल करने के सर्वथा अयोग्य बना लिया है।

बापू

[पुनश्च :]

मीरा अब बिलकुल स्वस्थ हो गई है। मैंने तुमको बतलाया था या नहीं कि हमने कुमारप्पाके अपने कार्यालयवाले कमरेके ठीक पीछे उसके लिए एक छोटा-सा केबिन बना दिया है। कल वह उसमें चली भी गई और अब काफी खुश है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५५३) से; सौजन्य : अमृतकौर; जी० एन० ६३६२ से भी

## ६५४. पत्र : मनोरंजन चौधरीको

३० सितम्बर, १९३५

प्रिय मित्र,

श्री किरणप्रभादेवी[1] द्वारा उगाये कपासके पौधेके सम्बन्धमें आपने जो जानकारी मुझे दी है, मैं उसका उपयोग कर रहा हूँ। आप मुझे उनकी रुईका नमूना भेज दें तो अच्छा होगा। मैं उसे स्वयं कातूँगा और यदि सुलभ हो तो उसके बीज भी भेज दें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री मनोरंजन चौधरी
बी० पी० हिन्दुनिसा
२११, बहूबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६९) से।

१. मनोरंजन चौधरीकी पत्नी।

## ६५५. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

३० सितम्बर, १९३५

चि० अम्बुजम,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर वह आ गया है। तुमने जो फल भेजे थे उनकी पहुँच सूचित करते हुए तुम्हे लिखा[1] तो था।

तुम्हे जल्दी शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। तुम अपने शरीरके साथ खिलवाड़ नही कर सकती। वह ईश्वरकी सेवाके लिए सौंपी गई थाती है।

रामचन्द्रनके देहान्तका समाचार पाकर दु.ख हुआ। इसका मतलव परिवारका एक सदस्य खो बैठना है। ऐसा पुराना और निष्ठावान् सेवक खो बैठने का मतलव क्या है, मै समझता हूँ।

मीरा अब बिलकुल ठीक है। बा आज शिमलासे लौटेंगी। अभी इतना ही।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे : अम्बुजम्माल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## ६५६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

३० सितम्बर, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

सीता दुर्घटनाग्रस्त हुई किन्तु ऐसा तो होता ही रहता है। इस कारण हमे शकुन या अपशकुनका अनुमान नही करना चाहिए। यदि तुम दोनोंको उसका स्कूल जाना ही ठीक लगता हो तो वैसा करना ही उचित होगा। हालाँकि मै तो अपनी राय पर दृढ़ हूँ। तुम्हारे पास जो-कुछ है वह सब सीताको देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। जब वह समझदार हो जायेगी तो उसमें इच्छानुसार वृद्धि कर लेगी। किन्तु तुम्हारे विचारोके सामने मै अपने विचारोको निरर्थक मानता हूँ। क्योकि आखिर उसका भविष्य तो तुम्हे ही बनाना होगा। अपनी कठिनाइयो और महत्त्वाकांक्षाओंको भी तुम्ही अच्छी तरह समझते हो। अतः यह उचित होगा कि मेरे विचारोको जितना महत्त्व तुम देना चाहो उतना महत्त्व देकर अपनी इच्छानुसार ही चलो।

१. देखिए "पत्र : एस० अम्बुजम्मालको", १४-८-१९३५।

बा आज साँझको शिमलासे आ रही है। देवदास ठीक होता जा रहा है। रामदास थोडा दुबला हो गया है, किन्तु बम्बई छोडना नही चाहता। हरिलाल शराबकी गगामे अपनी हड्डियोको पावन कर रहा है। फिलहाल तो नीमू और उसके बच्चे मेरे ही पास रह रहे है।

किशोरलाल यथारीति कभी बीमार, कभी अच्छे रहते है। कान्ति, कनु और नवीन यहाँ काममे और पढाई-लिखाईमे लगे रहते है।

आज तो इतनेसे ही संतोष करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८४४) से। सी० डब्ल्यू० १२५६ से भी; सौजन्य : सुशीला गाधी

## ६५७. पत्र : रतिलाल सेठको

३० सितम्बर, १९३५

भाई रतिभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे लिए नववर्ष सुखदायी हो और तुम्हारी सेवा-शक्ति बढे। तुमने अपने परिवारके समाचार देकर अच्छा किया। यदि खर्चे-भरको ईमानदारीकी कौडी मिलती रहे तो अधिक [सम्पत्ति]का लोभ क्यो किया जाये? यदि कान्तिलाल सन्तोषजनक रूपसे काम कर रहा हो, तो तुम्हारी इतनी चिन्ता कम हो गई। छगनके बारेमे मै समझता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१७५)से। सी० डब्ल्यू० ४६७१ से भी; सौजन्य. नारणदास गाधी

## ६५८. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

३० सितम्बर, १९३५

दीर्घायु होओ और सत्य तथा अहिसाका अनुसरण करते हुए सेवा करते रहो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३१३) से; सौजन्य : भगवानजी पु० पण्ड्या

## ६५९. पत्र : हरजीवन कोटकको

३० सितम्बर, १९३५

चि० हरजीवन,

तुम हठ कर रहे हो। जो हठपर उतर आया हो उसे कोई नही समझा सकता। तुम्हारे व्यवहारसे प्रकट होता है कि तुम नियमका पालन कर ही नही सकते। जैसा तुम चाहो वैसा हो तो हो, नही तो तुम आपा खो बैठते हो। यह मेरे साथ वर्षो रहनेका ही परिणाम है क्या? तुम्हें क्रोध है, मुझे दु:ख। क्या पता, क्रोध करने में ज्यादा दोष है या दु:ख करने में? दु:ख आसक्तिकी निशानी है। आसक्ति और क्रोध रजोगुणकी निशानी हैं। मेरा दु:ख बहुत दिनोतक नही टिकेगा। तुम्हारा क्रोध भी क्षण-भरको प्रकट होकर शमित हो जाये तो कितना अच्छा हो?

[बापूके] आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

## ६६०. पत्र : शारदाबहन एच० कोटकको

३० सितम्बर, १९३५

चि० शारदा,

तू भी वहाँ[1] ठीक चल रही जान पड़ती है।

[बापूके] आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स, सौजन्य: प्यारेलाल

१. श्रीनगर में।

# परिशिष्ट

## परिशिष्ट १

### सर्पदंशके सम्बन्धमें डॉ० सोखेकी टिप्पणियोंके अंश[1]

#### विषोंके प्रकार

नाग और करैतका विष मुख्यत मस्तिष्क और सुषुम्नापर असर करता है, जिससे मस्तिष्कमे स्थित श्वास-केन्द्र जड हो जाता है और मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है।

साधारण सॉपका विष हृदय और रक्तपर असर करता है, और इसमे मृत्यु रक्तसचारको चालू रखनेवाले केन्द्रके जड हो जाने, अधिक और सतत रक्तस्रावके फलस्वरूप हुई थकावट, या घावके सड जाने के कारण रक्तके विषाक्त हो जाने से होती है।

#### विष चढ़ने के लक्षण

*नाग-विष :* सबसे पहला शारीरिक लक्षण यह है कि आदमी मदहोशीकी हालतमे पहुँच जाता है। बादमे शरीर पैरोकी तरफसे जड होने लगता है और यह जडता घडसे होकर ऊपर चढते हुए सिरतक पहुँच जाती है। सिर एक ओरको झुक जाता है, और पलको, होठो, जीभ तथा गलेको लकवा मार जाता है। मुँहसे लार गिरने लगती है और बोलना उत्तरोत्तर अधिकाधिक कठिन होता जाता है। बार-बार मतली और उबकाई आती है। साँस लेना अधिकाधिक कठिन होता जाता है और अन्तमे बन्द हो जाता है। चेहरा विवर्ण और दु खार्त्त हो जाता है। निगलना असम्भव हो जाता है। हृदयपर कोई असर नही होता और साँस रुक जाने के बाद भी वह धड़कता रहता है। मृत्यु सामान्यत· डेढ से छह घटेके अन्दर हो जाती है।

*करैतका विष :* मृत्यु मुख्यत दम घुटने से होती है, लेकिन इसके अतिरिक्त जठर और अँतड़ियोकी रक्त-धमनियाँ फट जा सकती है, और कई बार बहुत तेज पेट-दर्द भी होता है।

*सामान्य साँपोंका विष :* रक्तका जमाव रुक जाता है और रक्त-धमनियोकी अन्दरकी परते नष्ट हो जाती है, जिससे शरीरके अनेक भागोमे अन्दर-ही-अन्दर रक्तस्राव होने लगता है। जहाँ घाव लगता है वहाँ पीडा होती है, और वह हिस्सा बहुत सूज जाता है। रक्तस्राव बहुत अधिक हो जाता है, और रक्तका रग भी बदल जाता है। शरीरपर चकत्ते उभर आते है, जिनमे रोगाणु पड़ जाने की सभावना रहती है। मतली और उलटी बार-बार आती है, लेकिन फालिज नही मारता।

१. देखिए पृ० ३६४-६५।

## उपचार

विषैले साँपके दंशको देखकर स्पष्ट पहचाना जा सकता है। अगर दस मिनट के अन्दर कुछ नही होता है तो ऐसा माना जा सकता है कि साँप विषहीन था, क्योकि विषैले साँपके दंशसे बहुत जल्दी जलन होने लगती है और जहाँ वह दश लगाता है वह स्थान शीघ्र ही सूज जाता है। बीचमें खूब पसीना और उलटियाँ भी आ सकती है। कहने की जरूरत नही कि इन लक्षणोके प्रकट होनेतक उपचार हो चुकना चाहिए — खास कर एंटीवीनन सीरम दिया जा चुकना चाहिए। यह सीरम दशित व्यक्तिकी स्थितिके नाजुक दौरमे पहुँचने के पहले ही दिया जा सकता है। जितनी जल्दी दिया जा सके उतना ही अच्छा रहेगा। चूँकि चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता सामान्यत: तुरन्त सुलभ नही हो पाती है, इसलिए उपचार शायद निम्न क्रमसे सम्भव हो :

१. **घावके स्थानको बाँधना :** अगर दंश हाथ-पैरमें कही लगा हो तो जहाँ लगा हो उसके ऊपर एक डोरी कसकर बाँध देनी चाहिए। बन्धन ऐसा होना चाहिए जिससे सभी स्नायु एक ही हड्डीके साथ बँध जाये; उदाहरणके लिए यदि दश उँगलीपर लगा हो तो बन्धन उँगलीके मूलपर बाँधना चाहिए, और एक दूसरा बन्धन कुहनीके ऊपर भी बाँधा जा सकता है। अगर दश अंगूठेमें लगा हो तो एक बन्धन अगूठेके मूलपर बाँधिए और दूसरा घुटने के ऊपर बाँधना चाहिए। बन्धन लगभग हर दस मिनट बाद ढीला कर देना चाहिए और विषको निम्न प्रकार चूसना चाहिए। ऐसा बन्धन आधे घंटेसे बहुत अधिक देरतक नही बाँधे रखना चाहिए, लेकिन थोड़े समयका अन्तराल दे-देकर यांत्रिक रीतिसे विष चूसने की क्रिया चालू रखनी चाहिए।

२. **चीरा :** आडा-खड़ा चीरा लगाकर जहाँ दंश लगा हो उस स्थलको खोल देना चाहिए। चीरा काफी गहरा होना चाहिए, लेकिन चीरा ऐसी सावधानीसे लगाना चाहिए जिससे हड्डीसे ऊपरकी नाजुक खालको नुकसान न पहुँचे और कोई नस न कट पाये। चीरा लगाने के लिए सेफ्टी रेजरके ब्लेडका इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर सम्भव हो तो उसे आगकी लपटपर शीघ्रतासे जीवाणुशून्य (स्टरिलाइज) कर लिया जाये।

३. **चूसना :** सम्भव हो तो चूसनेवाली प्याली लगाकर अन्यथा होठोसे (जिसमे कोई खतरा नही है, यदि मुँहमे कोई जख्म न हो) विष चूसा जाये।

४. **एंटीवीनन सीरमकी सुई :** चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता मिलते ही यह सुई लगवाई जा सकती है। यह सीरम कसौली का सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट बेचता है।

५. **अनुपूरक :** हलके-से पोटाश परमैंगनेट (जो हलके गुलाबी रंगका होता है) का पतला घोल बनाकर चीरेसे लगे घावको धोना अच्छा रहेगा। परमैंगनेटके कण सीधे घावपर न लगायें, और न कास्टिक तेजाबका इस्तेमाल करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

*हरिजन*, १७-८-१९३५

## परिशिष्ट २

## जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

आनन्द भवन, इलाहाबाद
६ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

मैं यह पत्र आनन्द भवनसे लिख रहा हूँ, जहाँ आपसे मिलने की आशा में अन्य आधे दर्जन लोगोंके साथ मैं भी भागा-भागा आया, लेकिन उन्हीं की तरह मिलने में विफल रहा। सरूपबहनका ३ तारीखका तार, जिसमे सूचित किया गया था कि आप डच एयर मेल पकड़नेवाले हैं, ४ तारीखको वर्धा पहुँचा। आपका भी ३ का तार उसी दिन मिला। उसी क्षण बापूने तय किया कि मैं उसी शामको इलाहाबाद रवाना हो जाऊँ और चाहे जितनी थोड़ी देरके लिए हो, आपसे मिलने की कोशिश करूँ। सरूपबहनका वह तार जिसमे उन्होंने सूचित किया था कि आप प्रस्थान कर चुके हैं, कल वर्धा पहुँचा, लेकिन तबतक मैं इलाहाबादका आधा रास्ता तय कर चुका था। यह बहुत दुःख पहुँचानेवाली निराशा थी, लेकिन मुझे यह सोचकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आप एक दिन पहले प्रस्थान कर सके। मैं आशा करता हूँ और प्रभुसे अपनी इस आशाको फलीभूत करने की प्रार्थना करता हूँ कि आप कमला बहनको पूर्ण स्वस्थताकी अवस्थामे साथ लेकर वापस आये।

साथमे बापू और खुर्शेदके पत्र भेज रहा हूँ। प्रेमोपहारकी तरह बापूने हमारे ही यहाँका हाथका बना कागज, हाथका ही बना एक पेपर-कटर तथा एक चम्मच भेजा था। इन्हे वहाँ भेजने मे तो कोई तुक नही दिखती। आपके लौटने तक हम इससे बहुत अच्छे स्तरकी चीजे बनाने लगेंगे, ऐसी हमारी आशा है। आपके वर्धा आने पर आपको उनके नमूने दिये जायेंगे।

बापूके मैं दो महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया था · (१) एक तो यह कि बापू चाहते हैं, आप अगले वर्ष कांग्रेसका दायित्व सँभाले तो अच्छा हो। कार्यसमितिके समक्ष यह सुझाव उन्होंने रखा तो उसने उसे सर्वसम्मतिसे स्वीकार कर लिया। आम तौरपर सदस्योका खयाल यह था कि इसी रास्तेसे समितिकी बहुत-सी कठिनाइयो और आजके कटु विवादोसे बचा जा सकता है, और आपकी नीति और कार्यक्रमको ईमानदारीके साथ और बिना किसी प्रकार की विघ्न-बाधाके आजमाकर देखा जा सकता है। नया सविधान आपको अपनी मर्जीके सहयोगी चुनने का अधिकार देता है, और बादमे जो लोग बाहर चले जायेंगे वे आपको यथासम्भव अपना सहयोग देंगे, लेकिन

1. देखिए पृ० ४१८।

आपके रास्तेमे बाधा बिलकुल नही डालेगे। (२) दूसरी बात यह है कि यूरोपमे भी आपको कोई भाषण या वक्तव्य नही देना चाहिए। बापूका विश्वास है कि यदि आप फरवरीतक अथवा वापस आने तकके लिए कोई भाषण आदि न देने का व्रत ले ले तो इससे आपकी और भारतकी भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

इन दो सन्देशोके अतिरिक्त, निम्न विषयोपर आपके विचार, जो सामान्यतया बिलकुल दो-टूक और बेलाग होते हैं, जानने को वे बड़े उत्सुक थे: (१) ग्रामोद्योग संघका कार्य, जिसमें इन दिनो बापूका सारा समय खप रहा है; (२) कौंसिल-प्रवेशके सम्बन्धमे बापूके विचार, (३) कांग्रेसका वर्तमान सविधान। खुद बापूको पूरा यकीन है कि यह हमारी प्रगतिका बहुत प्रभावशाली साधन है, और यद्यपि आँकड़ोंके जोड-तोड़ आदिके रूपमे उसमे काफी भ्रष्टाचार है, फिर भी वह ऐसी चीज है जिसका उपयोग स्वतन्त्रता-प्राप्तिके अन्तिम और सफल प्रयासके लिए देशको तैयार करने के निमित्त किया जा सकता है; (४) न्यूनतम मजदूरीका प्रश्न तथा (५) समाजवादियोका कार्यक्रम और उनके काम करने के तरीके।

यद्यपि रचनात्मक कार्यक्रमकी प्रगतिकी रफ्तार धीमी है, किन्तु बापूका यह विश्वास अधिकाधिक दृढ होता जा रहा है कि इसके अतिरिक्त और किसी भी साधनसे हम अन्तिम और सफल सत्याग्रह करने की योग्यता प्राप्त नही कर सकते, क्योंकि जबतक हम जनसाधारणके हृदयको नही जीतते तबतक कोई बडा काम करके नही दिखा सकते और जबतक हम जनसाधारणके बीच ऐसा गहन रचनात्मक कार्य नही करते जिससे उसकी कमाईमे बढ़ोतरी हो सके और वह ज्यादा बेहतर जिन्दगी जी सके तबतक हम उसके हृदयको नही जीत सकते।

लगभग इतनी बाते आपतक पहुँचाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी। हम आशा करेगे कि कमलाबहनसे मिलते ही उनकी हालतके बारेमे आप तार भेजेंगे। जबतक वे ठीक न हो जायें, इसका उत्तर देने की बात मत सोचिए, और अगर आपको जल्दी लौटने की उम्मीद हो तो इसका उत्तर आप न दे तो भी कोई हर्ज नही।

ढेरसे स्नेह-सहित,

आपका,
महादेव

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## परिशिष्ट ३

## ए० डोनाल्ड मिलरका पत्र[1]

[१४ सितम्बर, १९३५ के पूर्व]

आपने २ जुलाईको श्री शार्पको जो पत्र लिखा था वह उन्होने मेरे पास भेजा है। उसमे आपने कुष्ठ-पीड़ित लोगो द्वारा सन्तानोत्पत्तिके बारेमे उनकी राय माँगी है, और आपने नैनी, इलाहाबाद आश्रमका उल्लेख किया, जहाँ श्रीमती हिगिनबॉटमसे आपने यह जानकारी प्राप्त की कि कुष्ठरोगी सन्तानोत्पत्ति कर सकते है।. . .

इस बातको आपसे ज्यादा अच्छी तरह और कौन जानता है कि इस चीजसे कितने सारे सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक तथा चिकित्सा-सम्बन्धी प्रश्न जुड़े हुए है। आदर्श स्थिति और व्यवहारगत स्थिति दोनो हमेशा समान ही नही होती। हमारा जो आदर्श है उसके अनुरूप बनी दुनियामे नही, बल्कि वह वास्तवमे जैसी भी है, उसी दुनियामे हमे यथासम्भव अच्छीसे-अच्छी स्थितिको प्राप्त करना है। . . .

इलाहाबादके मिशनके तत्त्वावधानमे आयोजित एक सम्मेलनमे, जिसमे चिकित्साशास्त्रके विशेषज्ञ और बडे-बडे कुष्ठ आश्रमोके प्रबन्धक आये हुए थे, चिकित्सा-समिति ने निम्नलिखित निष्कर्ष पेश किये थे, जिनका अनुमोदन सम्मेलनने किया था :

(क) यह सिद्ध नही हो पाया है कि यह रोग जन्मत होता है, लेकिन इसकी छूत लगने की सबसे अधिक सम्भावना बचपनमे ही रहती है। ऐसा पाया गया है कि जिन बच्चोको अपने कुष्ठरोगी माता-पिताओसे जन्मके समय ही अलग कर दिया गया और उसके बाद उन्हे छूतकी सम्भावनासे बचाकर रखा गया, उन्हे यह रोग नही हुआ। इन बातोसे प्रकट होता है कि जिन कुष्ठ-पीडित माता-पिताओका रोग सक्रामक किस्मका है उनसे उनके शिशुओ और बच्चोको यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र अलग कर देना नितान्त वाछनीय है।

(ख) कुष्ठरोगियोमे, विशेष रूपसे कुष्ठ-पीडित महिलाओमे, प्रजनन-क्षमता काफी होती है और कुष्ठरोगियोके बच्चोको इस रोगकी छूत लगने की अत्यधिक सम्भावना रहती है, और इस रोगके कायम रहने मे इन दोनो बातोका बहुत बडा योग है, इसलिए जहाँतक सम्भव हो, ऐसे स्त्री-पुरुषका एक-दूसरेसे अलग रहना वाछनीय है। जहाँ यह सम्भव न हो वहाँ विवाहित कुष्ठरोगियोको इसी शर्तपर साथ रहने देना चाहिए कि उनके जो सन्तान होगी उसे यथासम्भव छोटीसे-छोटी आयुमे उनसे अलग कर दिया जायेगा। कुशल उपचारसे जिनके रोगमुक्त होने की अच्छी सम्भावना हो, ऐसे माता-पिताको एक-दूसरेसे अलग रखना विशेष रूपसे वाछनीय है। इसका

१. देखिए पृ० ४५१। यहाँ कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

एक कारण तो यह है कि इस तरह स्वस्थ पति या पत्नीको उपचाराधीन जीवन-साथीके रोगकी छूत लगने का खतरा भी मिट जायेगा और दूसरा यह कि गर्भावस्थामे अक्सर यह रोग तेजीसे उभरता है। . . .

इधर हालकी जाँच-पड़तालसे इस धारणाको और भी बल मिला है कि कुष्ठ-पीडित माता तथा उसके बच्चे दोनोंके हकमें यह जरूरी है कि ऐसे माता-पिता द्वारा सन्तानोत्पत्तिको प्रोत्साहन नही मिलना चाहिए। इस अवस्थामे माताके शरीर पर बहुत जोर पड़ता है जिससे रोगको बढने का मौका मिलता है; और उधर यदि माताका रोग सक्रामक स्थितिमे रहता है तो जबतक बच्चा उसके साथ है तबतक उसे छूत लगने का गम्भीर खतरा बराबर बना रहता है। . . .

जब हम आध्यात्मिक पक्षके विषयमे सोचते है तो ऐसे धरातलपर आ जाते है जहाँ सहज ही आचरणका कोई कठोर सिद्धान्त निर्धारित नही किया जा सकता। फिर भी, मै समझता हूँ कि जो समस्या उठाई गई है उसका सबसे श्रेष्ठ समाधान आध्यात्मिक क्षेत्रमे ही मिल सकता है। सुन्दरतर भविष्यके निर्माणके लिए किसी-न-किसी प्रकारका त्याग सबसे अपेक्षित है, व्यक्तिगत त्याग तो सामूहिक कल्याणका असली मर्म है। और कुष्ठ-पीडित स्त्री या पुरुषसे, जो ईश्वरकी कृपापर भरोसा रखता है और उसकी इच्छा जानने को उत्सुक रहता है, जिस त्यागकी अपेक्षा की जाती है वह यह है कि व्यक्तिगत सुख-सन्तुष्टिके पीछे पड़कर वह भावी प्राणियोको आपद्-ग्रस्त न बनाये।

गरज यह कि हम इस निष्कर्षपर — और मुझे लगता है कि निश्चित रूपसे इस निष्कर्षपर — पहुँचते है कि आदर्शगत दृष्टिसे देखे तो आश्रमोमें रहनेवाले साधनहीन कुष्ठ-रोगी सहवास करे, जिससे सन्तानोत्पत्ति हो — यह बात न तो चिकित्सा-शास्त्रकी दृष्टिसे और न सामाजिक अथवा आध्यात्मिक नजरियेसे अच्छी है।

लेकिन मैं तो कह ही चुका हूँ कि "आदर्श स्थिति और व्यवहारगत स्थिति दोनो हमेशा समान ही नही होती", और इसलिए सचाई यह है कि यद्यपि कुष्ठ-सेवा मिशनकी यह निश्चित नीति है कि जो लोग स्वेच्छासे हमारे यहाँ आते है, अथवा जो हमारे मेहमान है उन्हे विवाहित दम्पतिवाली आवास-सुविधा न दी जाये, फिर भी कभी-कभी परिस्थितिवश इस नीतिका पूरा पालन असम्भव होता है।

आपने अपने पत्रमे इलाहाबाद आश्रमका उल्लेख किया है। यहाँ जो लोग पहलेसे ही दाम्पत्योपयोगी आवासोमें रहते आये है वे तो अब भी रह रहे है, लेकिन प्रमाणोसे यह साबित होता है कि ऐसे आवास अधिकतम भलाईके हकमे नही है, और इसलिए नये दाखिल होनेवालो के आवासकी व्यवस्था या तो सिर्फ स्त्रियोके रहने के हलकेमे या केवल पुरुषोंके रहने के हलकेमें की जाती है।

जब रोगी कानूनी विवशताके कारण किसी आश्रममे आये तब बात कुछ और बदल जायेगी — कमसे-कम सामाजिक दृष्टिसे। तब वह समाज द्वारा दूसरोके जीवन का नियमन करने की जिम्मेदारी निश्चित तौरपर अपने सिर लिये जाने का मामला हो जाता है। लेकिन भारतमे इस मिशनके जितने आश्रम है, उन सबमे रोगी स्वेच्छा

से आते है और हमारे कैदी नही, बल्कि अतिथि होते है। और जिस प्रकार आपके पुराने साबरमती आश्रममे अधिकसे-अधिक कल्याण साधने की दृष्टिसे मेहमानोके लिए कुछ नियम बने हुए थे जिनका पालन उन्हे करना पडता था, उसी प्रकार अपने आश्रमोमे ऐसी नीतिका पालन करके जिससे, जहाँतक सम्भव हो, कुष्ठरोगियोको सन्तानोत्पत्तिके लिए प्रोत्सोहन न मिले, हम अधिकसे-अधिक कल्याण साधने के लिए प्रयत्नशील है।

क्या अब हमारी कठिनाइयाँ और हमारे आदर्श आपके सामने स्पष्ट है? मै तो आशा करता हूँ कि वे स्पष्ट हो गये होगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १४-९-१९३५

## परिशिष्ट ४

## जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

वर्धा
२५ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

बापूजी आज बहुत व्यस्त है, इसलिए लिख नही सकते। उनके बदले मैं लिख रहा हूँ। कुछ दिनोसे आपका कोई समाचार नही मिला है, और हम मानते है कि किसी प्रकारका समाचार न आने का मतलब यह है कि सब कुशल है। प्रगति तो दुःखद रीतिसे धीमी होगी ही, लेकिन हमे विश्वास है कि आपकी उपस्थिति अचूक दवाका काम करेगी। और इन्दुको इससे कितनी अधिक राहत मिली होगी, क्योकि आपके बिना वह इस बोझको शायद ही बर्दाश्त कर पाती!

आपसे मिलने के लिए जल्दीमे मेरा इलाहाबाद पहुँचना बेकार नही गया, क्योकि मैं साथमे आपकी वह महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि लेकर आया। उसके तीन भाग (लगभग २७५ पृष्ठतक) मैं रास्तेमे ही पढ गया और उनको पढकर मैं आनन्द-विह्वल हो उठा। यहाँ काममे लगे रहने के कारण आगे पढने का अवसर नही मिल पाया है, लेकिन खुर्शेद उसे पूरा पढ गई है और अब बापूने आरम्भ किया है। पहला भाग उन्होने आज समाप्त कर दिया और जल्दी ही पूरी चीज पढ जाने की आशा रखते है। कहने की जरूरत नही कि वे यह सारा अध्ययन उसी स्थानमे करते है जिसे 'लाइब्रेरी' (यानी शौचालय) कहते हैं। आपको यह दिलचस्प बात बताऊँ कि शौचालयके शेल्फपर आपकी पाण्डुलिपिके साथ सिर्फ एक और पुस्तक हिटलरकी

1. देखिए पृ० ४७३।

जीवनी रखी रहती है। हिटलरकी आत्मकथा ('माई स्ट्रगल') उन्होंने कुछ दिन पूर्व खत्म की।

सस्नेह,
महादेव

[पुनश्च :]

साथमें कांग्रेसका संविधान भेज रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३५; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

## परिशिष्ट ५

## जवाहरलाल नेहरूके नाम महादेव देसाईका पत्र[1]

वर्धा
२९ सितम्बर, १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

लगता है, बापू आजकी हवाई डाकके लिए भी पत्र नही लिख पायेंगे। बहुत-से मुलाकाती आते रहे हैं और अभी, जब डाक भेज दी जानी चाहिए थी, वे कातते हुए एक मुलाकातीसे बातें कर रहे हैं। लेकिन क्षण-भरको बातोंका सिलसिला भंग करके उन्होंने मुझसे कहा कि २० सितम्बरको लिखे आपके उस महत्त्वपूर्ण पत्रकी पहुँच आपको सूचित कर दूँ जो यहाँ कल मिला। उन्होंने आपको यह बतानेको कहा है कि आप अपना निर्णय[2] सूचित कर पाये है, इसकी उन्हे कितनी अधिक खुशी है। इससे अच्छा पत्र और नही हो सकता था, और आपने जिस तरह साफ-सीधे शब्दोमें लिखा है वैसा न लिखा होता तो यह आपके योग्य न होता। बापू आपकी आत्मकथा नियमित रूपसे पढ रहे हैं और आज उन्होंने दूसरा भाग समाप्त कर लिया है। आठ भाग है, लेकिन उपाध्यायने मुझे सात ही दिये हैं। इलाहाबादसे मैं रवाना हुआ, उस समय तक आठवाँ तैयार नही हुआ था। १० तारीखको अ० भा० च० संघकी बैठकमें भाग लेने कृपलानी यहाँ आ रहे हैं। वे आठवाँ भाग साथ लायेंगे।

सस्नेह,
महादेव

१. देखिए पृ० ४७३।
२. कांग्रेसके अध्यक्ष-पदको स्वीकार करते हुए।

[पुनश्च.]

दूसरा पत्र भी, जिसमें कमलाके स्वास्थ्यका पूरा हाल बताया गया है, कल मिल गया। कैसी सलीब आप ढो रहे हैं! ईश्वर आपको शक्ति दे।

महादेव

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

## परिशिष्ट ६

### कत्तिनोंका कल्याण[1]

बंगालमे खादी-कार्यको समर्पित खादी प्रतिष्ठानको स्वेच्छा-कताई कार्यके साथ-साथ कत्तिनोको (क्रमश अधिकाधिक मजदूरीपर) काम देना और उनके सूतकी बिक्रीकी व्यवस्था करना क्यो जारी रखना चाहिए, उसके कुछ कारण इस प्रकार है·

१. खादीका प्रयोजन कभी भी मशीन (अर्थात् मिल) के बने कपडोसे होड करने का नही है।

२. खादी 'वापस गाँवोकी ओर चलो' के नारेका प्रतीक है।

३. ग्राम-जीवनका मतलव सादगी और 'सभ्य तथा परिष्कृत' शहरी जीवन-पद्धतिसे, अर्थात् सिनेमा, रेस, जूआ तथा ऐसी ही अन्य निरर्थक चीजे जिसके प्रतीक है उससे, अछूतापन।

४. मिलोमे मजदूरोको ज्यादा अच्छी मजदूरी मिलती है, लेकिन वास्तवमे वे मनुष्य नही रह जाते, बल्कि यत्र-जीव और गुलाम बन जाते है।

५. चरखा चलाकर दो रोटी-भरके लायक कमानेवाली स्त्रियाँ (सामान्यत. विधवाएँ) इसके सहारे स्वावलम्वी बनती है और अपने पुरुष सगे-सम्बन्धियोपर, जो वास्तवमें निठल्ले बैठे रहते हैं तथा अपनी आश्रित स्त्रियोसे गुलामोकी तरह काम करवाते हैं, निर्भर रहने से उन्हे मुक्ति मिल जाती है। इस तरह इन स्त्रियोको वास्तवमे खून-पसीना एक करनेवाले श्रमसे छुटकारा मिल जाता है।

६. चरखा चलानेवाली स्त्रियाँ यह काम कभी भी पूरे समय नही करती हैं या करती भी है तो ऐसी स्त्रियोकी सख्या बहुत विरल है। घरके कामकाजसे फुरसत मिलने पर अपने खाली समयमे ही वे कातती है। इसलिए उनके खाली समयके इस श्रमकी तुलना मिलोमे खून-पसीना एक करके काम करनेवाले लोगोकी मेहनतसे करना गलत होगा।

१. देखिए पृ० ४९५।

७ बंगालके अधिकांश हिस्सोंमें एक ही फसल (आमन धान) होती है। इससे किसानोंको सालमें मुश्किलसे तीन महीने काम मिल पाता है। जहाँ दूसरी फसल पैदा की जाती है और फलतः जहाँ दो महीने या इससे कुछ अधिक समयके लिए और काम मिल जाता है वहाँ भी वे सात महीनेतक बेकार बैठे रहते हैं। इसलिए अगर लोगोंको चरखा चलाने के लिए राजी किया जा सके तो उन्हें एक और धन्धा, यानी समय पड़ने पर काम देनेवाला एक और सहारा मिल जायेगा। इस प्रकार सूखे या बाढ़ (जिसका प्रकोप कमसे-कम बंगालपर बहुधा होता है) के कारण फसलके नष्ट हो जाने पर चरखा चलाना 'वरदान' साबित हो सकता है। फिर लोगोंको भूखों नहीं मरना पड़ेगा, या राहत-केन्द्रों, भाग्यवश कभी-कभी मिल जानेवाले मुट्ठी-भर अनाज या दो रोटियोंपर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

८. इससे सिर्फ कत्तिनोंको ही लाभ नहीं होगा; उनके साथ-साथ बुनकरोंकी एक विशाल संख्याको भी रोजगार मिलेगा। सच तो यह है कि कामके हर दिन — खासकर गाँवके हाटवाले दिन — खादी-केन्द्रोंके बुनकर धोतियाँ तथा कुरते आदिके कपड़े लेकर आते हैं और बड़ी उत्सुकतासे पैसेकी राह देखते हैं। इसके अलावा, सहायक कारीगरोंको भी लाभ पहुँचेगा — जैसे चरखा बनानेवाले बढ़ई आदि को।

९. अतराल और तलोराके केन्द्रों (जिनका निरीक्षण आपने १९२५ में किया था) में एक अद्वितीय प्रयोग चल रहा है। बारह वर्षके कठिन परिश्रम, खर्च और फिर बहुत-से स्वयंसेवकोंके त्यागके बाद अब यहाँ यज्ञ-भावसे कातनेवालों का एक समूह तैयार हो गया है। अपना कता सूत लेकर आनेवाली बहनें उसके बदले साड़ियाँ, अँगियाँ और बच्चोंके लिए चादर पाने की राह किस आतुरतासे देखती हैं, यह सरस और हर्षजनक दृश्य मैंने अपनी आँखों देखा है।

प्र० च० राय

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २८-९-१९३५

# सामग्रीके साधन-सूत्र

गाधी स्मारक सग्रहालय, नई दिल्ली : गाधी साहित्य और सम्बन्धित कागजातका केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय, देखिए खण्ड १, पृ० ३५५।

नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

सावरमती संग्रहालय, अहमदावाद . पुस्तकालय तथा आलेख संग्रहालय, जहाँ गाधीजी से सम्बन्धित कागजात सुरक्षित हैं; देखिए खण्ड १, पृ० ३५५।

'अमृतवाजार पत्रिका' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'गुजराती' . वम्वईसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'वॉम्वे क्रॉनिकल' : वम्वईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'लीडर' . इलाहावादसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'वीणा' (श्रद्धाजलि अंक), अप्रैल-मई, १९६९ इन्दौरसे प्रकाशित मासिक पत्रिका।

'सर्चलाइट' (अग्रेजी) : पटनासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हरिजन' · आर० वी० शास्त्री द्वारा सपादित अग्रेजी साप्ताहिक, जो ११ फरवरी, १९३३ को सर्वप्रथम पूनासे प्रकाशित हुआ था।

'हरिजनवन्धु' : चन्द्रशकर शुक्ल द्वारा सपादित गुजराती साप्ताहिक जो १२ मार्च, १९३३ को सर्वप्रथम पूनासे प्रकाशित हुआ था।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' : नई दिल्लीसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' : मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'गाधी एण्ड द अमेरिकन सीन' (अग्रेजी) · जी० शेषाचारी, नचिकेता पब्लिकेशन्स लि०, वम्वई, १९६९।

'गुजरात एण्ड इट्स लिटरेचर' (अग्रेजी) . के० एम० मुशी, भारतीय विद्याभवन, वम्वई, १९६७।

'पाँचवें पुत्रको वापूके आशीर्वाद' द० वा० कालेलकर द्वारा सपादित, जमनालाल वजाज सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

'वापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) : मणिवहेन पटेल द्वारा संपादित, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदावाद; १९५७।

'बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) . द० बा० कालेलकर द्वारा संपादित; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो – ६. गं० स्व० गंगाबहेनने' (गुजराती) : द० बा० कालेलकर द्वारा संपादित; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) . मथुरादास त्रिकमजी; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष' : हीरालाल शर्मा; ईश्वरशरण आश्रम, इलाहाबाद; १९५७।

'बापूज लेटर्स टु मीरा' (अंग्रेजी) : मीराबहन द्वारा संपादित; नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४९।

'महात्मा गांधी और जबलपुर'. नगरनिगम, जबलपुर; १९६९।

'मोटाना मान' (गुजराती) : ईश्वरभाई देसाई, हकूमत देसाई एवं कल्याणजी मेहता द्वारा संपादित, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, १९७२।

प्यारेलाल पेपर्स : प्यारेलाल, नई दिल्ली।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी . स्वराज्य आश्रम, बारडोलीमें सुरक्षित।

# तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(२५ अप्रैल से ३० सितम्बर, १९३५ तक)

२५ अप्रैल · गांधीजी वर्धामे थे।

२६ अप्रैल क्षयसे ग्रस्त एफ़० मेरी बारको पत्र लिखकर उनके इलाजका खर्च उठानेकी सूचना दी।

२७ अप्रैलके पूर्व : जे० पी० भणसालीसे बातचीत की।

११ मईके पूर्व एक मिशनरी नर्सको मुलाकात दी।

२१ मई या उसके पूर्व . वर्धासे ट्रेन द्वारा बम्बई रवाना। रेलगाड़ीमे ह्यू पियरे सेरेसोलसे बातचीत।

२२ मई . बम्बईमे 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिसे भेंट; प्रार्थना-सभामे भाषण।

२३ मई या उसके पश्चात् : बोरसद गाँवमे कई सभाओमे भाषण दिये।

२५ मई · हरिजन कूप-कोषके निमित्त एक लाख रुपया इकट्ठा करनेके लिए 'हरिजन' मे अपील जारी की।

३१ मई नडियाद विट्ठल कन्या विद्यालय और फूलचन्द शाहकी स्मृतिमे बने बाल-मन्दिरके उद्घाटनके अवसरोपर भाषण दिये।

अहमदाबादकी साबरमती जेलमे अब्दुल गफ्फार खाँ से मुलाकात की।

समाचार-पत्रोको मुलाकात दी। ज्योति सघके सदस्योके प्रश्नोके उत्तर दिये।

१ जून · बोरसदमे आर्य कन्या विद्यालय देखने गये।

३ जून : वर्धा पहुँचे।

६ जून · क्वेटाके भूकम्पके बारेमे वक्तव्य जारी किया।

१३ जून · कांग्रेस-अध्यक्ष राजेन्द्रप्रसादसे क्वेटाकी स्थितिके बारेमे चर्चा की।

१५ जूनके पूर्व : एक हरिजन-सेवकसे बातचीत की।

१६ जूनके पूर्व चित्तरंजन दास स्मारक-भवनके उद्घाटनपर सन्देश भेजा।

१८ जून बम्बईके खादी-भण्डारके एजेन्ट और कर्मचारियोके झगडेका पंच फैसला सुनाया।

१९-२१ जून अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके अधिवेशनमें भाग लिया।

२२ जून · क्वेटासे आये हुए एक मुलाकातीसे प्रार्थनाकी उपयोगितापर चर्चा की। एक बातचीतमे बताया कि ग्रामोद्योग-आन्दोलनका उद्देश्य मशीनको उखाड़ फेंकना नही है।

१३ जुलाई : 'हरिजन' मे प्रकाशित "मानक मजदूरीकी आवश्यकता" शीर्षक लेखमे आठ घंटेके कठिन परिश्रमके लिए आठ आने मजदूरी देनेकी सलाह दी।

२० जुलाईके पूर्व : वर्धा आश्रममे, केशूके कलकत्ता जाते समय किये गये आयोजनके अवसरपर बोले।

२० जुलाई . 'हरिजन' मे प्रकाशित "अहिंसाका अर्थ" शीर्षक लेखमे तर्क देकर अपनी इस मान्यताका समर्थन किया कि "जहाँ शरीर होम देनेकी तत्परता न हो, वहाँ आत्मरक्षा करते हुए जूझना ही एकमात्र सम्मानजनक मार्ग है।"

१ अगस्त या उसके पूर्व : लीग कौंसिलको भेजे गये एक लेखमे उन्होंने कहा . "मै शान्तिके लिए प्रार्थना और उसकी आशा ही कर सकता हूँ।"
इतालवी-अबीसीनियाई संकटपर एक वक्तव्य देकर इस अफवाहका खण्डन किया कि अबीसीनियामे काम करनेके लिए रेडक्रास संगठनके निमित्त भारतीयोका एक स्वयसेवक दल तैयार करनेके लिए उन्होंने चन्दा देनेकी अपील जारी की है।

१ अगस्त : एम० आर० मसानीका पासपोर्ट जब्त किये जानेके संबंधमे कॉमन्स सभामे लॉर्ड जेटलैडसे लॉर्ड फैरिंगडन द्वारा पूछे गये प्रश्नके उत्तरका एक प्रेस वक्तव्य जारी करके खण्डन किया।

५ अगस्त · 'हंस' को दिये गये एक सन्देशमे कहा कि "यदि हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनना है तो ऐसे मासिककी अत्यावश्यकता है।"

१० अगस्तके पूर्व : खादी-उत्पादनके पुनर्गठनके सम्बन्धमे कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योसे चर्चा की।

२२-२३ अगस्त · अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके प्रबन्ध-मण्डलकी बैठकमे "निर्वाह-योग्य न्यूनतम मजदूरी" के सम्बन्धमे चर्चा की।

३० अगस्त · वाइसरायको तार देकर कमला नेहरूके चिन्ताजनक स्वास्थ्यके कारण जवाहरलाल नेहरूकी बिना शर्त रिहाईका अनुरोध किया।

२ सितम्बर · अलमोडा जेलसे जवाहरलाल नेहरू बिना शर्त रिहा किये गये।

१४ सितम्बरके पूर्व खादी-कार्यकर्त्ताओसे "निर्वाह-योग्य मजदूरीके सम्बन्धमें" बातचीत।

२४ सितम्बर या उसके पश्चात् · गांधीजी का ६७ वाँ जन्म-दिन मनाये जानेके सम्बन्ध मे चर्चा।

२८ सितम्बर . धर्मान्तरणके बारेमे 'हरिजन' मे लिखे लेखमे फेडरेशन ऑफ इण्टरनेशनल फेलोशिपके सदस्य श्री ए० ए० पॉल की सामूहिक धर्मान्तरण-सम्बन्धी मान्यताओ का विवेचन किया।

# शीर्षक-सांकेतिका

## विविध

---

# सांकेतिका

## घ



## च

ठ



ड



त



थ



द

ध



न

### प

भ

य



र



ल

### व



### श

## स

## ह